મળવાનું ઠેકાણું
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ગરેડિયાકુવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
પાસે રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by
Shri Akhil Bharat S. S.
Jain Shastroddhara Samiti
Garedia Kuva Road RAJKOT
(Saurashtra) W. Ry. India



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्द

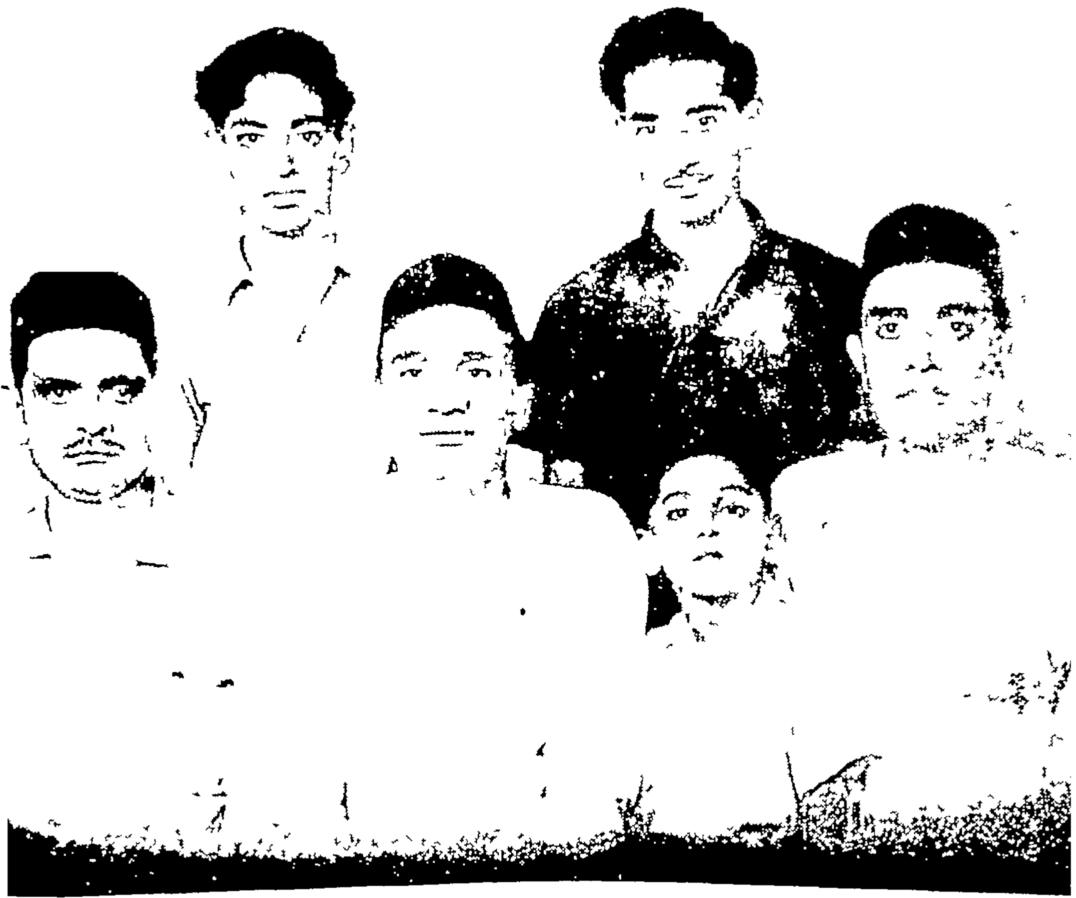


करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान में यह लायगा ॥ १ ॥

મૂલ્ય રૂ. ૧૦-૦૦

પ્રથમ આવૃત્તિ : પ્રત ૧૨૦૦
વીર સંવત : ૨૪૯૨
વિક્રમ સંવત ૨૦૨૨
ઇસવીસન ૧૯૬૬

: મુદ્રક :
[illegible] મોહનલાલ શાહ
નીલકમલ પ્રીન્ટરી, ઘીકાંટારોડ
અમદાવાદ



श्रीमान् सेठ सा. चीमनलालजी सा. ऋषभचंदजी सा. अजीतवाले (सपरिवार)

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



(સ્વ) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર-અમદાવાદ.



શેઠશ્રી રામજીભાઇ શામજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.



વચ્ચે બેઠેલા
લાલાજી કિશનચંદજી સા. જોહરી
ઉભેલા સુપુત્ર ચિ. મહેતાબચંદજી સા. જૈન
નાના-અનિલકુમાર જૈન (દોયત્તા)

આ મુરબ્બીશ્રીઓ



શ્રી વ્રજલાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.



કોઠારી હરગોવિંદ બેચરભાઈ
રાજકોટ





શેઠશ્રી મિઠાલાલજી લાલચંદજી સા. લુણિયા
તથા શેઠશ્રી રેવતરાજજી લાલચંદ સા.



(સ્વ.) શેઠશ્રી પારશીભાઈ [illegible]
મોરબી



સ્વ. શ્રીમાન શેઠશ્રી મુકનચંદજી સા.
બાફણા પાલી મારવાડ

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



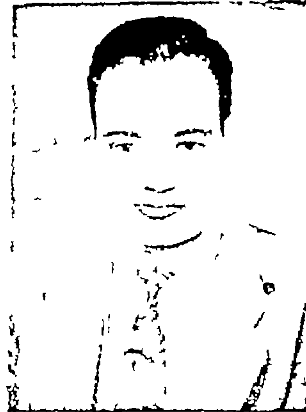
(સ્વ.) શેઠશ્રી હરખચંદ કાલીદાસ વારિઆ
ભાણવડ.



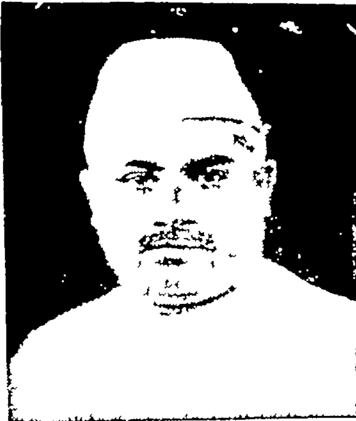
(સ્વ.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ.



શ્રી વિનોદકુમાર વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



શેઠશ્રી જેસિંગભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ.



સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.



સ્વ. ડૉ. શ્રી હરિદાસ અનોપચંદ શાહ
ખંભાત



स्व. श्री ताराचन्दजी साहब गलडा
मद्रास



૧ સ્વ. શેઠ માણાભાઈ શ્રીમાન મૂલચંદજી
જવાની ચાતરજી ખરડિયા
૨ સ્વ. [illegible] આપાભાઈ ... ખરડિયા
૩ [illegible] નાનાભાઈ ... ખરડિયા



श्रीमान नथी
र्वीमगमजी सा पागडिया

राजप्रश्नीय सूत्र भाग दूसरे की

विषयानुक्रमणिका

॥ समाप्त ॥



शुद्धि पत्र

सुज्ञ पाठकगण,

सविनय निवेदन है कि शास्त्रों में प्रुफ और प्रिंटिंग सम्बन्धी कई गल्तीयां होना सम्भवित है, जो सुज्ञ वाचकवृन्द नीरक्षीरन्याय से समझ कर पढ़लेंगे, पर जो शास्त्रीय गलती रह गई है जो देखने में अगर सुज्ञ वाचकजन द्वारा दृष्टिगोचर हुई है, उनका शुद्धिपत्र देने में आता है।

सूत्र का नाम	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
समवायाङ्ग सूत्र	१६४	(५)	रामः खलु बलदेवो द्वादशवर्ष सहस्राणि सर्वायुष्कं	रामः खलु बलदेवो द्वादशवर्षशतानि सर्वायुष्कं
,,	,,	१६	बारह हजार वर्ष	बार सौ वर्ष
,,	,,	२८	બાર હજાર વર્ષ	બારસો વર્ષ
ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र भा २	२६१ ,,	१	पहली पंक्ति पूरी होने पर	'त्रैमासिकीं' पद छूट गया है सो 'त्रैमासिकीं' यह पद बढ़ाके पढ़ें
,,	,,	११		आठवीं भिक्षु प्रतिमा के अनन्तर 'प्रथम सात दिनरात प्रमाणवाली नववीं भिक्षु प्रतिमा' यह पाठ छूटा है सो 'नववीं भिक्षु पडिमा' यहाँ इतना जोड के पढ़ें
ज्ञातधर्मकथाङ्गसूत्रभा ३,	२९७	१७	प्रवचनसिद्ध	प्रवचनविरुद्ध
,,	,,	२१	પ્રવચનસિદ્ધ	પ્રવચન વિરુદ્ધ
ज्ञातधर्मकथाङ्गसूत्रभा २	१४७	१७	*मद्यपान में आसक्त–*	निद्राजनक द्रव्य में आसक्त
,,	,,	२९	મદ્યપાનમાં આસક્ત	નિદ્રાજનક દ્રવ્ય માં આસક્ત
ज्ञातधर्मकथाङ्गसूत्रभा ३	३३४	३	भगवताऽऽवश्यक–	भगवताऽनुयोगद्वार
,,	,,	१७	आवश्यक सूत्रमें–	अनुयोगद्वारसूत्रमें
,		१९	આવશ્યક સૂત્રમાં–	અનુયોગદ્વાર સૂત્રમાં

अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र	२९५	१०	दसदस	दसअट्ठ
,,		११		'सत्तमवग्गे तेरसउद्देसगा' इतना पाठ छूट गया है सो वहां समझ लेवें
आचाराङ्गसूत्रभा. २	१२२	८	नेत्तपरिण्णाणा अपरिहीणा फरस परिण्णाणा अपरिहीणा	नेत्तपरिण्णाणा अपरिहीणा जीहपरिण्णाणा अपरिहीणा फरिस परिण्णाणा अपरिहीणा
आचाराङ्गसूत्रभा-२	२८१	१४	निन्यानवे	अट्ठानवे
,,		२६	નવ્વાણુ	અઠ્ઠાણુ
दशाश्रुतस्कध	४३०	२०	कालकर के ग्रैवेयक—आदि	कालकरके देवलोकमें से
,,		२९	કાલકરીને ગ્રૈવેયક આદિ—	કાલકરીને દેવલોકમાના
ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रभा.२	७३०	२१	ગુણુશિલક ચૈત્ય (જૈન દેરાસર)	ગુણાશલક ચૈત્ય (ઉદ્યાન બગીચો)
उत्तराध्ययनसूत्रभा.३	१८०	१-२	..तृतीय देवलोके— गतः ततश्चुतो महाविदेहे केवलिभूत्वा सिद्धिगतिं गमिष्यति	मोक्षं गतः
,,	,,	१२,१४,१५	वे चक्रवर्ती तृतीयदेवलोकमें गये वहांसे चवकर महाविदेहमें केवलीहोकर सिद्धि पदको प्राप्त करेंगे	वे चक्रवर्ती मोक्ष गये
,,	,,	२३-२४.	તે ચક્રવતી મરીને ત્રીજા દેવલોકમા ગયા અને ત્યાંનુ આયુષ્ય પુરૂં કરી ત્યાની ચવી ને મહાવિદેહમા કેવલી થઇને સિદ્ધિ પદ પ્રાપ્ત કર્યું	તે ચક્રવતી મોક્ષમા ગયા
उत्तराध्ययनसूत्रभा.४	९२	१४	संयमयोगोंका उल्लंघन होताहै—	संयम योगों का उल्लंघन नहीं होता है
..		२४	સંયમ યોગોનું ઉલ્લંઘન થાય છે	સંયમ યોગોનુ ઉલ્લંઘન થતુ નથી

भगवतीसूत्रमा ३	८००	३	त्रिभागोन	त्रिभागोन
,,	,,	३	२ पल्योपम	पल्योपमद्वय
,,	,,	१३	तृतीयभागकम एक पल्योपम की	तृतीयभाग कम दो पल्योपम की
,,		२८	– એક પલ્યોપમ કરતા ત્રિભાગ ન્યૂન છે	તૃતીય ભાગ કમ બે પલ્યોપમનો છે
भगवतीसूत्रमा ३	८००	५६	બે પલ્યોપમ કરતા ત્રિભાગ અધિક	તૃતીય ભાગ અધિક બે પલ્યોપમ
उत्तराध्ययन	४३८	७	तपकृत्वा तृतीय भवे मुक्ति गत	तपः कृत्वा तस्मिन्नेव भवे मुक्ति गत ।
,,	,,	१३	तृतीय भव में मुक्ति लाभ किया	उसी भव में मुक्ति लाभ किया
,,	,,	२५	ત્રીજા ભવમા મુક્તિ નો લાભ કરેલ છે	તેજ ભવમા મુક્તિ નો લાભ કરેલ છે.
दशाश्रुतस्कन्ध	१७३	२	यतस्ते स्वकृष्टार्द्ध पुद्गल	यतस्तेऽत्कृष्टदेशोनार्धपुद्गल
,	१७४	१२	देशऊन पुद्गल	देशऊन अर्ध पुद्गल
,	१७४	१२	દેશઉન પુદ્ગલ	દેશઉન અર્ધપુદ્ગલ

दशाश्रुत स्कन्ध के दसवें अध्ययनमें हिंदी एवं गुजराती में दसों निदानों के प्रकरण में जहां जहां ग्रैवेयक शब्द है वहां वहां 'सौधर्म' ऐसा पाठ सुधारकर पढना चाहिए.

श्रीमान् सेठ साहब चिमनलालजी-रिखबचन्दजी 'जीरावलाका' परिचय

भारतीय संस्कृति के निर्माण में ओसवाल जाति का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस जाति की बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, शूरवीरता और आत्मबलिदान के कारण भारत के उज्ज्वल इतिहास का निर्माण हुआ है। भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम में भी इस जाती ने असाधारण योग प्रदान किया है। उदयपुर, जोधपुर बीकानेर सिरोही, किसनगढ आदि रियासतों के इतिहास इस जाति द्वारा प्रदर्शित दूरदर्शिता, राजनीतिज्ञता और वीरता से भरी हुई गाथाओं से ओतप्रोत है। इस जाति के वीरोंने अपने देश समाज और धर्म के प्रति जिस भक्ति का परिचय दिया है वह इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षर से अंकित है। अपने देश और स्वामी के प्रति वफादार रहनेवाले और उनके लिए सर्वस्व अर्पण करनेवाले व्यक्तियों की नामावली में सर्व प्रथम नाम भामाशाह का आता है। इस जैनमंत्री की विपुल सम्पत्ति की सहायताने महाराणा प्रताप को नया जीवन प्रदान किया था, और मेवाड के गौरव की रक्षा की थी।

इसी गौरव पूर्ण जाति में श्रीमान् चिमनलालजी एवं रिखबचन्दजी का जन्म हुआ। आप प्रसिद्ध दोसी परिवार के हैं। दोसी यह ओसवाल जाति का एक गोत्र है। कहा जाता है कि वि. संवत् ११९७ में विक्रमपुर में सोनागरा राजपूत हरिसेन रहता था। आचार्य श्री जिनदत्तसूरिने इसे जैन-धर्म का प्रतिबोध देकर ओसवाल जाति में मिलाया और दोसी गोत्र की स्थापना की। इस गोत्र के नाम को समुज्ज्वल करने वाले अनेक नररत्न हो गये हैं। दोसी परिवार में श्रीमान् भिक्खूजी बडे प्रसिद्ध हुए। आपने महाराणा राजसिंहजी (प्रथम) का प्रधानपद सम्भाला था। आपकी निगरानी में उदयपुर का मशहूर राजसमुद्र नामक तालाब का काम जारी हुआ एवं पूर्ण हुआ। इस तालाब के बनवाने में १०५०७६०८) रुपये खर्च हुए। इस तालाब का पूर्ण होने पर महाराणाराजसिंहजी ने राजसमुद्र के उद्घाटन उत्सव के अवसर पर दोशी भिक्खुजी को एक हाथी और सिरोपाव प्रदान कर उनका सम्मान बढाया था। दोसी पद्मोजी ने धर्मस्थानों का उद्धार किया था। बादशाह के फरमान

ने उत्पन्न हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि दोनों परिवार पहले से ही धार्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में उदारतापूर्वक तन मन धन से सेवा करता आ रहा है। श्रीमान् सेठ चिमनलालजी एवं रिखबचन्दजी सा को इसी गौरवशाली गोत्र में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन सीधे सादे दोनों भाइयों को देखकर यह कभी अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि ये एक बड़े श्रीमन्त होंगे। तथा श्रीमन्ताई के साथ बड़े दानवीर भी होंगे। नागदा के इस दानी परिवार की प्रसिद्धि अन्य श्रीमन्तों की तरह चाहे न हो पाई हो पर सेठ साहब चिमनलालजी एवं रिखबचन्दजी जैन समाज के गुदड़ी में छिपे लाल हैं। अपनी सम्पत्ति का उपयोग परोपकारी कार्यों के करने में परम उदार हैं।

श्रीमान् चिमनलालजी सा० के पूर्वजों का राजघराने के साथ अच्छा सम्बन्ध रहा है। आप के दादा श्रीमान् गुलाबचन्दजी जोधपुर के समीप पिचाना तहसील के कोटड़ी नामक गाँव में रहते थे। आप ठिकाने के कोठार के काम को सम्भालते थे, राजकीय जीम्मेदारी के पद पर रहते हुए भी धार्मिक व सामाजिक जनसेवा के कार्यों में भी पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहते थे। आपकी राजघराने में एवं समाज में अच्छी प्रतिष्ठा थी। आप 'जीरावला' के उपनाम से प्रसिद्ध थे। आप बड़े मधुरभाषी एवं मिलनसार प्रकृति के उदारचेता सज्जन थे। आपको एक पुत्र हुआ जिसका नाम प्रेमचन्द रखा। प्रेमचन्दजी की उम्र अभी कोई ज्यादा नहीं हुई थी कि पिताजी की मृत्यु हो गई। पिताजी के अचानक स्वर्गवास से इनपर सारे परिवार के निर्वाह की जिम्मेदारी आ पड़ी। ये बड़े बहादुर थे। पिता के परम्परानुसार चलने वाले कुशल व्यापारी थे। इन्होंने अल्प समय में ही पिता की जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त करली और कोठार का काम भी सम्भाल लिया वि० सं० १९६४ में इनका शुभलग्न जूनाडा निवासी श्रीमान् साचब लालजी की सुपुत्री सेतुबाई के साथ सम्पन्न हुआ। सेतुबाई एक आदर्श महिला एवं सती साध्वी स्त्री है। सेतुबाई जैसी आदर्श पत्नी को पाकर श्रीमान् प्रेमचन्दजी बड़े सुखी थे। इनके दो पुत्र हुए श्री चिमनलालजी और रिखबचन्दजी। किन्तु इस सुख को विधाता नहीं देख सका जब चिमनलालजी पांच वर्ष के थे एवं श्री रिखबचन्दजी २॥ वर्ष के थे तब अचानक ही प्रेमचन्दजी साहब का स्वर्गवास हो गया। इनके स्वर्गवास से

सारा परिवार शोक निमग्न हो गया। बालक और परिवार के सदस्य विलाप विलाप कर रोने लगे। श्रीमती खेतुबाई पर पति वियोग का वज्रपात हुआ। ऐसे भयंकर संकट के समय खेतुबाईने असाधारण धैर्य का परिचय दिया। रोने देने में अपना बहुमूल्य समय नष्ट न कर दोनों बालकों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का विचार करने लगी। इधर पति के मृत्यु से आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गई। कोठार के काम से जो थोडी बहुत आमदनी होती थी वह भी अब समाप्त हो गई। कर्म की गति बडी गहन है। एक आपत्ति का अन्त नहीं हुआ था कि यह दूसरी आपत्ति का आरंभ हो गया। ऐसी विकट स्थिति में भी खेतुबाईने हिम्मत न छोडी किन्तु बडे लाड प्यार से बच्चों का लालनपालन करने लगी। अपने चन्द्र जैसे आनंदप्रद बच्चों को देख कर अपना सारा दुःख भूल जाती थी। वह अपने को अपने बच्चों के सुनहरे स्वप्न में खोजाती थी।

ये दोनों बालक बडे होते जा रहे थे। माता की ये ही आशा थे। बच्चों का पढना लिखना भी परिस्थिति के अनुकूलतानुरूप होता था। जब श्रीमान चिमनलालजी दस वर्ष के हुए तब इन्हें अपने पारिवारिक जीवन का भान हो आया। इन्होंने माता के इस बोझ को हलका करने का विचार किया। कोठडी एक छोटा गांव है इसलिये इसमें व्यापार की कोई गुंजाइश नहीं थी। अतः बालक चिमनलालने बाहर जा कर अर्थ उपार्जन का निश्चय किया। माता की आज्ञा प्राप्त कर दस वर्ष के चिमनलाल जी अपने सम्बन्धियों के साथ व्यापार करने के लिए चल पडे। ये कर्णाटक के 'हिराकेरी' गांव में पहुंचे। इतनी छोटी उम्र में माता का वात्सल्य को छोडकर अकेलेही अनजाने प्रदेश में पहुंच जाना कम हिम्मत का काम नहीं है। ये वहां की कन्नडी भापा से अनभिज्ञ थे। बात बात पर मुश्किले आती थीं किन्तु इन्होंने हिम्मत नहीं छोडी अल्प समय में ही इन्होने स्थानीय कन्नडी भापा सीख ली। नोकरी से व्यापार में लगे खूब श्रम किया किन्तु भाग्यदेवताने इनका साथ नही दिया अन्ततः निराश होकर अपने गांव कोठडी चले आये। यहां भी आपने कम परिश्रम नहीं किया। कई तरह के व्यापार करने पर भी आप पल्ले असफलता ही पडी। अशुभ कर्म का अभी उदय था। अन्त में हार थक कर पुनः कर्नाटक के हलगेरी नामक गांव में जाकर कपडे की दुकान करली। इस दुकान से आपको लाभ नहीं मिला। कमाने के स्थान में आपको लाभ में

नुकसान ही उठाना पडा यहां तक कि आप कर्नदार हो गये। धन चला गया किन्तु आप में नीति कायम थी। धन से भी आपने नीति को विशेष महत्ता दी। आप को साहुकारों का कर्ज शूल की तरह चुभने लगा। आपने हर परिस्थिति में कर्ज से मुक्त होने का निश्चय किया। कर्ज चुकाने के लिए आपने यहां नोकरी करली। कर्जा चुका देने पर आप फिर से अपने गांव कोठडी चले आये।

वि स १९८४ में श्री चिमनलालजी का शुभविवाह सम्पतनिवासी हिम्मतलालजी सुराणा की सुपुत्री श्री प्यारबाई के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह के बाद वि स १९८८ में आप कमाने के लिए अहमदाबाद पधार गये। आप क साथ आप के छोटे भ्राता रिखबचन्दजी साहब भी चले आये थे प्रारम में दोनों भाइयोंने दस रुपये प्रतिमास पर नौकरी करली। धीरे धीरे अपनी योग्यता व अपनी प्रतिभा के बल स दोनों भाइयोंने साधारण पूजी से कपडे की दुकान खोली। आप इस व्यवसाय में साहसपूर्वक अग्रसर हुए, थोडे ही वर्षों में आप की गणना नगर के प्रतिष्ठित लक्षाधिपति व्यापारियों में एव प्रमुख व्यक्तियोंमें होने लगी।

आप के लघु भ्राता श्रीमान् रिखबचन्दजी का शुभविवाह 'अजित' निवासी श्री अनराजजी साहब की सुपुत्री पानबाई क साथ सम्पन्न हुआ। आप दोनो का पारिवारिक जीवन बडा सुखी है। आपके घर में रूप और लक्ष्मि का एकसा आदर है। आप दोनो भाइयो का आपसी प्रम राम लक्ष्मण क प्रम का स्मरण दिलाता है। परिवार क इस सुखमय जीवन का देखकर श्रीमती सेतुबाई फूली नहीं समाती। ऐसा आनन्द का अवसर ससार की कम माताओं को ही प्राप्त होता है। इस समय सेतुबाई शरीर स (७) वष की वृद्धा है, किन्तु हृदय स युवा है। अब भी समय समयपर अपने परिवार को उत्तम जीवन क मुख्य अनुभवो स मार्ग दर्शक रहती हैं। सामायिक प्रतिक्रमण मुनिदर्शन आपक दैनिक जीवन क अग हैं। आपका प्राय समय धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत होता है। आपका परिवार इस प्रकार है—

आप के दो पुत्र हैं श्रीमान चिमनलालजी सा एव रिखबचदजी सा श्रीमान चिमनलालजी साहब की पाच पुत्रियां हैं जिनके नाम य हैं—१ पदामबाई २ रमाबाई ३ कमुबाई ४ मायबतीबाई ५ एव भानुबाई। श्रीमान

रिखबचन्दजी साहब के श्री दीपचन्दजी, शंकरलालजी सुगनराजजी एवं महेन्द्रकुमारजी ये चार पुत्र एवं सौभाग्यबाई तथा पुष्पाबाई ये दो पुत्रियां हैं।

इस परिवार का वंश वृक्ष इस प्रकार है—

गुलाबचन्दजी सा० (दादा)

प्रेमचन्दजी सा० (पिता)

चिमनलालजी सा० — पांच पुत्रियां: बदामबाई, खमाबाई, जम्मुबाई, सरस्वतीबाई, धापुबाई

रिखबचन्दजी सा. — (पुत्र): दीपचन्दजी, शंकरलालजी, सुगनराजजी, महेन्द्रकुमार; (पुत्रिया): सौभाग्यबाई—

धार्मिकजीवन—

व्यापारिक जीवन के अतिरिक्त आप भातृद्वय-दोनों भाइयों का सार्वजनिक एवं धार्मिक जीवन विशेष सराहनीय है। आपने सार्वजनिक कार्यों के लिये बहुत अधिक दान दिया है। आपने सर्वसाधारण के लिये समय समय पर अकाल रोग बाढ आदि के अवसरो पर भी काफी सहायताएं दी है। आपने कंई व्यक्तियों को आर्थिक सहायता देकर धंधे में लगाया है। विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग देकर अपनी विद्याप्रियता का परिचय दिया है। पर्युषणपर्व आदि धार्मिक उत्सव के अवसर पर आसन, पूंजनियां माला आदि धर्मोपकरण के साथ साथ अन्य कंई उपयोगी वस्तुओ की भी प्रभावना करते रहते हैं। आपने निजी खर्च से वि.सं. २००४ में दीक्षा भी दिलवाई है।

साहित्यप्रेम—

जैनसाहित्य प्रकाशन कार्य में आपकी बडी दिलचस्पी है। कंई ग्रन्थो के प्रकाशनों में आपका आर्थिक सहयोग रहा है। आप ने अभी अभी अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन शास्त्रोद्धारसमिति राजकोट को दानार्थ ५०००) पांच हजार रुपये प्रदान कर समिति के सन्माननीय सदस्य बने हैं। आपका यह साहित्य प्रेम सराहनीय है। साहित्यशिक्षा के प्रति आप उदार चेताओं का कितना ध्यान है यह उपरोक्त ज्ञान दान बता रहा है।

आपकी दैनिक जीवनचर्या में सामायिक प्रतिक्रमण व्रत, पच्चक्खाण मुनिदर्शन आदि आवश्यक अंग हैं। इन कामों में आप कभी प्रमाद नहीं करते। प्रतिवर्ष बाहर जाकर मुनिदर्शन का भी समय समय पर लाभ लेते रहते हैं। आप की उदारता सर्वतोमुखी है। आप अपनी जन्मभूमि कोठडी में निजी खर्च से अस्पताल बनाकर सरकार को अर्पण करने की भी उत्कट इच्छा रखते हैं। आपका इस समय निवास मारवाड में अजित गांव जि जोधपुर में है। आपने वि स २०१३ की साल में कोठडी छोड दिया था। आपकी धार्मिक भावना इसी प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ती रहे यही शुभ कामना है।

राजप्रश्नीयसूत्र भा. २ दूसरेका शुद्धि पत्रक

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पंक्ति
मडंचसि	मडंचंसि	१	१२
कर्वटे	कर्वटे	२	२
ञेने	ञेनी	२	२७
વસ્તીમ	વસ્તીમાં	२	२८
देवजुई	देवजुई	३	१३
भग्यतामुपगता	भोग्यतामुपगता	४	३
कवट	कर्वटे	४	९
मचन्धिकं	गंम्बन्धिकं	४	१७
अमंतत्ता	आमंतत्ता	४	२२
जणयाए	जणवाए	५	१
नयरा	नयरी	५	१
सेयावयाए	सेयवियाए	५	२
दृप्ययचउप्पय मियपपसु	दृप्पयचउप्पयमियपसु	५	१२
भगवतम्	भगवंतम्	५	१५
केशिवामी	केशिस्वामी	६	७
निवास्थानभृत	निवासस्थानभूत	६	११
चडे	चंडे	८	२४
અપદ	આ	८	२९
उत्कोच-लांच	उत्कोचन	९	४
ઉત્કોચ લાચ	ઉત્કોચન	९	१९
पटं जड	पउंजइ	१०	१९
चहत्वेन	बहुत्वेन	११	२
व्यापारतेन	व्यापारस्तेन	१२	३
इष्टान्	इष्टान्	१२	२५
तस्म ण	तस्स णं	१२	२९
अनुरक्ता	अनुरक्ता	१३	७
प्रमयुत्ता	प्रेमयुक्ता	१३	७
पुत्त	पुत्ते	१३	११
यावत् शब्द प्रकट	यावत् शब्द यह प्रकट	१४	१३

અવપુરુષ	અવપુરુષ	१५	२६
घासहामति	ग्राहेहामति	१०	१
કમજ	કર્મજ	१०	२६
નિશ્ચેભ	નિશ્ચેમાં	१७	३१
कार्या में	कार्यों में	१८	१०
कपा	कृपा	१८	१७
નિશ્ચકપણે	નિઃશ્ચકપણે	१८	२५
સકલાધ નો	સકલાર્થનો	१९	२५
आगायप्रयोगः	आयोगप्रयोगः	२०	२
सप्रयुक्त	सम्प्रयुक्ता	२०	४
मोत्रनावक्षिप्त	मोम्रनावक्षिप्टे	२०	५
ह्रुभ्पादि	ह्रुभूपादि	२१	१७
અદૃષ્ટ	અદૃષ્ટ	२१	२५
तेण	तेण	२२	१
समृद्ध	समृद्ध	२२	१८
जितशत्रु र्नाम	जितशत्रुर्नाम	२३	२
उत्तरपोरस्त्ये	उत्तरपौरस्त्ये	२३	१०
प्रियसत्	प्रियसत्त्व	२३	१७
जितशत्र	जितशत्रु	२३	१९
जसा	जैसा	२३	२१
अन्तवासाव	अन्तेवासीव	२४	१
बिप्सघस्स	पियसगुस्स	२४	८
सूत्रर्थ—	सूत्रार्थ	२४	१८
मितशत्रा	मितशत्रो	२५	२
रायकन्नागय	रायकन्नागिय	२५	२०
वयासा	वयासी	२६	८
पच्चप्पिणह	पच्चाप्पिणह	२६	१०
महत्य आप	महत्थ आप	२७	८
अभ्मितरिया	अभ्भितरिया	२७	८
त महत्य	त महत्थ	२७	११
पाउग्घट	पाउग्घर	२८	१६
અનેત	અનેક	३०	२५
પરમ સૈમનસ્વિન	પરમ સૌમનસ્વિત	३२	२५

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पंक्ति
काडुम्बक पुरुषान्	कौडुम्बिकपुरुषान्	३३	२
सकङ्कठावतंसकं	सकङ्कटावतंसकं	३३	८
शरशतद्वात्रिंशत त्तूण	शरशतद्वात्रिंशत्तण	३३	२०
दोनो और"	दोनों ओर"	,, ३४	३० १
स तारणवर युक्त	स तोरणवरयुक्त	३४	२
सा है	ऐसा है	३५	१४
यारे	ज्यारे	३५	२४
दूध्यक्षत दर्वाङ्करादीनि	दध्यक्षतदुर्वाङ्कुरादीनि	६६	२
आरापण किया	आरोपण किया	३६	११
आयुध दसे	आयुध पदसे	३७	१३
यत्रैत्र	यत्रैव	३८	३
केकयाद्ध	केकयार्द्ध	३८	१३
जितश	जितशत्रू	३८	२१
जियसत्तस्स	जियसत्तुस्स	३९	४
मावत्थाए	सावत्थीए	३९	६
० १०६	विहरइ सू०	३९	१४
स्य	तस्य	४०	१
श्रावत्स्या	श्रवस्त्या	४०	४
उपाग ति	उपागच्छति	४०	५
आद्	आदि	४०	६
कुशल प्रश्नादि	कुशलप्रश्नादि	४०	८
सारहि	सारहिं	४०	२१
चउग्घंटं	चाउग्घंटं	४०	२९
जिमितभुक्तात्तराग	जिमितभुक्तोत्तराग	४१	२
प्रतोच्छति	प्रतीच्छति	४२	२२
एवं	एव	४२	२२
टीकार्थ	टीकार्थ	४२	३१
पञ्चविधन्	पञ्चविधान्	४३	३
जियम	जियमाए	४३	९
जेणव	जेणेव	४३	१७

ओयसी	ओयसी	४४	१२
विधा पानो	विद्याप्रधानो	४५	२
भाक्स्ती गरी	श्रवस्तीनगरी	४५	५
यप्रव	यत्रैव	४५	६
क्षान्तिप्रधन	क्षान्तिप्रधान	४५	९
सत्यपधान	सत्यप्रधान	४	१३
सुहण	सुहेम	४५	१०
वृक्ो	वैवृको	४६	८
भावती	श्रावस्ती	४६	१२
तथ	तथा	४७	७
निक्रपटः	निष्कपटः	४८	१
वय	वय	४९	८
लपरोहित्य	लेपराहित्यं	५१	७
ब्य	द्रव्य	५१	३१
શીઘ્ર છે	શીઘ્ર છે	૫૧	૩૨
सिंघाडग	सिंघाडग	५४	६
ઉદયાવસ્થા	ઉદયાવસ્થા	૫૪	૨૧
ધાદિકોને	ક્રોધાદિકોને	૫૪	૨૩
महापपपथ-पु	महापथपथेपु	५५	१२
अनात्कलिकेति वा	अनोत्कलिकेति वा	५५	१३
अनोर्मिरिसवा	अनोर्मिरिति वा	५५	१४
सारथि त	सारथिस्त	५६	१
लगों क	लोगों के	५६	७
निमि	निमित्ते	५७	२८
महर्द्धिमहद्धि	महद्धिमहद्धि	५८	१
चतुपथ	चतुष्पथ	५९	१९
मनुर्या	मनुष्यों	५९	२०
લાભે	લાભો	૫૯	૨૦
इत्यारम्य	इत्यारम्य	६०	१
पमलि	पञ्जलि	६०	१२
गतोप्रोमपु	गतोप्रेमपु	६१	४

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पंक्ति
वदाविदएहिं	वंदावंदएहिं	६४	४
करतलपरिगृहीतं	करतलपरिगृहीतं	६४	१०
श्रावत्यां	श्रावस्त्यां	६४	११
देवनुप्रिय !	देवानुप्रिय !	६५	२
ञगाख्यातपायमिति	व्याख्यातप्रायमिति	७०	२
सव्व ओ	सव्वाओ	७०	६
दिसि	दिसिं	७०	८
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१८
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१८
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१९
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१९
श्रूत्वा	श्रुत्वा	७२	६
अवितहमेय	अवितहमेयं	७३	३
धन्न	धन्नं	७३	८
चत्त सारही	चित्ते सारही	७३	१७
केशिन	केशिनं	७३	२२
गिहिधम्म	गिहिधम्मं	७३	१६
पाव्वयणं	पावयणं	७४	२९
विच्छर्ध	विच्छर्द्ध	७६	१
शक्नोम्मि	शक्नोमि	७६	३
मैं ता	मैं तो	७६	१७
सातत शिक्षा	सात शिक्षा	७६	१८
न्देहरारतम्	सन्देहसहितम्	७९	१
एव	एवं	७९	१०
अश्वदिको	अश्वादिको	७९	१९
परिस्थिति	परिस्थिति	८०	१८
प देशाशिक	देशावकाशिक	८१	१३
પ્રાણુતપાતથી	પ્રાણુાતિપાતથી	૮૧	૨૨
ઇચ્છા પરારમાણુ	ઇચ્છા પરિમાણુ	૮૧	૨૩
अश्वरथस्तैव	अश्वरथस्तत्रच	८२	१०

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
गषण्य	गषण्य	८२	२
अहिमिअपेमाशु–	अहिमिअपेमाशु–	८२	१०
अय	अयं	८२	११
पुछयेर्ण	पुछयेमं	८२	१५
जियसघणा	जियसपुणा	८२	१७
भमनापासको	भमणोपासको	८३	१
अबु	अबु	८३	२६
पावयनाओ	पावयनाओ	८३	२८
निर्ग्रन्थ	निम्र थ	८४	२६
परिपुर्ण	परिपुण्ण	८५	१३
फासुएसाणिज्जेण	फासुएसणिज्जेण	८५	२७
पौपवोपयासैः	पौपधोपवासैः	८६	१
काङ्क्षारहितः	काङ्क्षारहितः	८८	६
चतुर्दश्यष्टमी पौणमाम्यः	चतुर्दश्यष्टमी पौर्णमास्यः	८८	३
पौपध	पौषध	९१	१८
मुहुर्मुहुरवलाकयन्	मुहुर्मुहुरवलोकयन्	९२	६
विहरात	विहरति	९२	६
कयाइ	कयाई	९२	७
सारहा	सारही	९२	११
छत्तण	छत्तेण	९२	१६
भ मंते	अह मंते !	९३	१४
पसिस्स	पपसिस्स	९३	१९
पाउग्गहण	पाउग्गहण	९४	२०
पुरसषग्गु	पुरिसवग्गु	९५	५
पहिले	पहिले–	९७	१७
महत्व	महत्त्व	९९	५
हता	हंता	९९	१०
भमिगमणिज्ज	अभिगमणिज्जे	९९	१०–११
परिवसति	परिषसंति	९९	१२
महार्घ	महार्घं	१००	२

अढाइ	आढाई	१००	७
पयेसिस्स	पएसिस्स	१००	१२
योग	योग्य	१०१	१३
	हंता	१०१	२६
हे चित्ते	हे चित्र	१०२	१०
रीसृपों	सरीसृपां	१०२	११
सो सग्गे	सोपसग्गे	१०२	१४
અભિભમનાય	અભિગમનીય	१०२	२३
	वहूनां द्विपदचतुष्पद—मृगपशुपक्षिसरीसृपाणाम्	१०४	१
	द्विपदादयः	१०४	१
पक्षसरीसृपाणा	पक्षिसरीसृपाणां	१०४	७
तद्वनप्रवेशरूपाऽर्थः	तद्वनप्रवेशरूपोऽर्थः	१०४	१०
कुगारसमणं	कुमारसमणं	१०४	२०
पज्जुवासिस्सति	पज्जुवासिस्संति	१०४	२३
उधामिष्ठः	अधार्मिष्ठः	१०४	२८
पीठलगसेज्जासंफ	पीठफलकसेज्जासं	१०५	१
युमकं	युष्माकं	१०५	५
नमंसि यष्यंति	नमंसिष्यंति	१०५	७
प्रतिहारिकेण	प्रातिहारिकेण	१०५	८
त्तुभं	तुब्भं	१०५	१२
त	तत्र	१०६	१२
सम्मानयियन्ति	सम्मानयिष्यन्ति	१०६	२९
खाद्यं खाद्यं	खाद्यं स्वाद्यं	१०७	३
मज्झ	मज्झ	१०७	१५
थत्रैव	यत्रैव	१०८	६
कुमारमणस्स	कुमारसमणस्स	१०८	२३
કેકર્યાર્દ્ધભા	કેકયાર્દ્ધભા	૧૦૯	૨૯
दुइज्जमाणे	दूइज्जमाणे	११०	६
पडिहारिएणं	पाडिहारिएणं	११०	२७
इत्थादि	इत्यादि	१११	१

मृगवगम्	मृगवनम्	१११	१३
विषयेण	विजएणं	१११	२६
नयरि	नयरिं	११२	१४
यत्रव	यत्रैव	११५	१
वरतरनी सपठचेहिं	वरतरुणी सपठचेहिं	११५	१८
गह	गिहे	११५	२४
वरतरणी सपठचेहिं	वरतरुणी सपठचेहिं	११५	३०
तत्रव	तत्रैव	११६	२
भावस्ती	भावस्तीं	११६	३
समापात्	समीपात्	११७	१
ससुपविष्टः	ससुपविष्टः	११७	१२
	कामभोगान्	११७	१७
	प्रस्पनुभवन्	११७	१७
सावस्थाआ	सावत्थीओ	११८	२
केशीकुमार मणः	केशीकुमारश्रमणः	११८	७
वस्त्या	श्रावस्त्या	११८	८
श्वेताविका	श्वेतविका	११८	९
कसिकुमारसमणे	केसिकुमारसमणे	११८	२१
[illegible]	[illegible]	११८	२४
कुमार मणो	कुमार श्रमणो	११९	४
प्यास्तया	प्यास्त्या	११९	१८
केशाकुमार श्रमण	केशीकुमारश्रमण	११९	१८
[illegible]	[illegible]	११९	२२
श्रङ्गारक	श्रृङ्गारक	१२०	१४
णाम गाय	णाम गोय	१२१	१४
अवकमति	अवक्कमति	१२१	१४
पूर्वानुपूर्वी	पूर्वानुपूर्वी	१२३	४
श्रमण	श्रमण	१२३	१५
विहरइ	विहरइ	१२३	२९
विउल	विउल	१२४	९
गुणमेत्र	गुणामेव	१२४	११

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
सज्झय	सज्झयं	१२४	१३
प्रा दपीठा	प्रासादपीठा	१२५	२
पण	पग	१२५	१८
હૃદયમા	હૃદયમાં	૧૨૫	૨૩
હુષ્ઠ	હૃષ્ટ	૧૨૫	૨૪
पडिविसज्जे	पडिविसज्जेइ	१२६	१८
ભગવનોયદ્યાન	ભગવનોદ્દાન	૧૨૬	૨૫
िउलं जीवियारिहं	विपुलं जीवियारिहं	१२६	३०
ग सने	उसने	१२७	७
पच्चाप्पिणेह	पच्चप्पिणेह	१२७	१०
घंटोंवाले	घंटोंवाले	१२७	१४
हिजए	हियए	१२७	३०
घटोंवाला	घंटोंवाला	१२८	१२
હુષ્ટ	હૃષ્ટ	૧૨૮	૨૦
કયું	કર્યું	૧૨૯	૮
वहुणं	वहूणं	१३०	१३
परससौमनस्थित:	परमसौमनस्यित:	१३०	१९
वहुगणतरम्	वहुगुणतरम्	१३१	१०
आरामगय वा	आरामगयं वा	१३२	३
त चेव	तं चेव	१३२	८
ना लभइ	नो लभइ	१३२	१२
केवलिपन्नत धम्म	केवलिपन्नत्तं धम्मं	१३२	२१
केवलिपन्नत	केवलिपन्नत्तं	१३२	२३
साधस्वाधेन	स्वाधम्याधेन	१३५	१
छत्तण	छत्तेण	१३५	१८
महणं	माहणं	१३५	२१
ण	णं	१३५	२९
आरामगत	आरामगतं	१३६	२
उवस्सगपं	उवस्सगयं	१३६	१९
પ્રયુતાસના	પર્યુપાસના	૧૩૬	૨૫

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
अर्थों	अर्थों	१३७	२७
विजानाहि	विजानीहि	१३८	३
ाम्र	सत्र	१३८	५
क्षीवा जावादि	जीवा मीवादि	१३९	९
पदर्थौं	पदार्थों	१३०	१७
भमण	भमण	१४०	१३
देषत	देषत	१४१	१
महानन	माहनेन	१४१	८
उसका	उसकी	१४१	१३
मरणतायै	भवणताय	१४२	१
धिस	धिसे	१४३	१२
टीकार्थ	टीकार्थ–	१४३	२८
घाउग्घटे	घाउग्घंटे	१४४	४५
दिसि	दिसिं	१४४	५
मानेप्याम	मानेप्यामि	१४४	१०
प्रदेषी	प्रदेषी	१४५	११
सारहिं	सारहिं	१४५	१२
घ मणाइक्खमाणा	घम्ममाइक्खमाणा	१४५	१९
अयम्य	भवग्य	१४७	१९
नि सत्थाने	निवासत्थाने	१४७	२७
एयमाणचिय	एवमाणत्तिय	१४८	१–२
ए होठ	एस होठ	१४८	१२
एत खलु	एतत्खलु	१४९	५
त एएण	त एएण	१४९	१८
त आसे	ते आसे	१४९	१८
त एएण	त एएण	१४९	३०
त आसे	ते आसे	१४९	३०
रा किं	रात्रिक	१५३	१०
रा	रात्रिक	१५३	१९
दव्य	द्रव्य	१५३	२०

शुद्धमावे । ।	शुद्धप्रावेस्यानि	१५४	१६
चि सारथी	चित्र सारथी	१५४	२०
ગથે।	ગયે।	१५४	३०
ख स	खलु स	१५५	२
अत्रय	अत्रैव	१५५	१०
अज्झत्थिए	अज्झत्थिए	१५७	३१
निविणणाणा	निव्विण्णाणा	१५८	२७
निर्विण्णाणं	निव्विण्णाणं	१५८	२७
चि सारथिमेव	चित्रसारथिमेव	१५९	३
मूर्वा	चित्रसारथिमेव	१६२	४
हाता है	होता है	१६२	८
जा	जो	१६२	१४
મસ્તર વાળા	મસ્તકવાળા	१६२	२७
करेति	करोति	१६३	६
जढ	जड्	१६४	१६
વચ	વચ્ચે	१६४	२४
पहीसी राया	पएसी राया	१६५	१४
खल	खलु	१६६	२
पुरि	पुरिसं	१६६	१७
अण्ण जवियत्तं	अण्ण जीवियत्तं	१६६	२१
जीर्ि तं	जीवितं	१६७	३
अन्नजीवितत्वमू	अन्नजीवितत्वं	१६७	११
पवि च्चयं	परिच्चियं	१६७	१५
ज्जड ज्जुपवासद्दि	जडं पज्जुवासति	१६८	२
केशा	केशी	१६८	५
एस्ले	एसे	१६८	१४
केसा कुमारसमणे	केसी कुमारसमणे	१६८	१८
प्रासुकैपणीयान्नमात्र विनः	प्रासुकैपणीयान्न मात्र जीविनः	१७०	५
श्रतज्ञान	श्रुतज्ञान	१७२	१३
प्ररूार	प्रकार	१७४	११
केवलवाणे	केवलणाणे	१७४	१८

त था	तद्यथा	१७५	११
आमिनिबो ज्ञानम्	आभिनिबोधिकज्ञानम्	१७६	४
अ विष्टम्	अङ्गप्रविष्टम्	१७६	५
श्रवज्ञान विपयक	श्रुतज्ञानविपयक	१७६	५
प्रश्प्त	प्रज्ञप्ति	१७६	९
मिनिवोधिक ज्ञान	आभिनिबोधिक ज्ञान	१७६	१३
अवधि म	अवधिज्ञान	१७६	१९
क्षायोपशमिक	क्षायोपशमिक	१७६	२५
श्रुतज्ञानम्	श्रुतज्ञानम्	१७७	४
तत्	तत्	१७७	६
एतद्रूप	एतद्रूप	१७७	८
उपविसामि	उपविसामि	१७८	१२
षिवेण	स्विषेण	१७८	२७
हेतु:	हेतुः	१७९	२
केसीकुमारश्रम	केसीकुमारश्रमण	१८०	१५
मनाऽमः	मनोऽम	१८५	१
करभरवुचि	करभरवुर्ति	१८५	५
घ	त	१८६	२१
अर्घ ण	अधम्मिए	१८६	२२
रथम्यापि	रथस्यापि	१८७	१०
क्षार	शरीर	१८७	२२
सरीर	सरीरं	१८७	२९
ना	नो	१८८	१३
मनाऽम	मनोऽम	१८८	१७
विशेषणावशिष्टो	विशेषणा विशिष्टो	१८९	५
स्तस्ठ	स्तु	१८९	६
पएसि	पएसिं	१८९	१४
गम	गयं	१८९	१४
यव	एव	१८९	१४
सूरियकता	सूरियकंता	१८९	१५
तुम	तुम	१८९	१५

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
ण्हाय	ण्हायं	१८९	१६
च्छित्त	च्छित्तं	१८९	१७
...ंकार भूसिय	सव्वालंकार भूसियं	१८९	१७
	तुमं	१९०	२
...यणं	परियणं	१९०	४
	तं	१९०	६
...म	सम्मं	१९०	११
ण	णं	१९०	१२
लागं	लोगं	१९१	५
पएसि	पएसिं	१९१	१३
पएसि	पएसिं	१९१	१५
देवि	देविं	१९१	१७
प्रदेशन्	प्रदेशिन्	१९२	४
हंडं	डंडं	१९२	१०
हत्थविन्नगं	हत्थ भिन्नगं	१९२	२५
व्यपरापय	व्यपरोपयेत्	१९३	१
शकोति	शक्नोति	१९४	६
शाघ्रमागन्तुं	शीघ्रमागन्तुं	१९५	१
शक्नाति	शक्नोति	१९५	१
शक्नाति	शक्नोति	१९६	३
”	”	”	५
तुम सबात्	तुम इस बात	१९६	१२
मूर्यकाता देवा	सूर्यकान्ता देवी	१९८	१
नि क	निजक	१९९	४
मगर्यामधामिको	नगर्यां मधार्मिको	२००	२
करमरवृत्ति	करभरवृत्ति	२००	३
ना शक्नाति	नो शक्नोति	२००	८
शरारया	शरीरयो	२०१	१
वयासा	वयासी	२०१	५
अह	[illegible]	२०१	१३

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पं
आक्रया	अक्रिया	२०२	४
सरीर	सरीर	२०२	६
भागतु	आगतु	२०२	६
अन्न	अन्न	२०२	८
ना	नो	२०२	१४
वृत्त	वृत्ति	२०४	१
सा कामपादति	सा कामपदिति	२०६	७
इत्यात्राह	इत्यप्राह	२०८	३
पौष	पौत्र	२०८	७
वृत्ति	वृत्ति	२०८	९
"	"	"	१३
त मात्	तस्मात्	२०९	३
दिव्वेहि	दिव्वेहिं	२१०	१४
कामभोगेहि	कामभोगेहिं	"	१४
"	"	"	१७
अज्झावपण्णे	अज्झोपवण्णे	२१०	१७
गधे	गंधे	२११	५
ठाणेहि	ठाणेहिं	२११	७
भिगार कडुच्छुय	भिंगार कडुच्छुय	२११	१९
धार्मिकी	धार्मिको	२१२	२०
पडिसुणेत्ता	पडिसुणेत्तासि	२१२	२५
शीघ्रमागन्तम्	शीघ्रमागन्तुम्	२१३	३
विशेपर्णासे	विशेषर्णोसे	२१३	७
देवलाक	देवलोक	२१३	११
हुमोववन्नए	अहुणोववण्णए	२१३	३०
ठहे	ठन्हे	२१४	१४
दिव्वेहि	दिव्वेहिं	२१४	१८
शक्नाति	शक्नोति	२१५	२
अधुनापपन्नक	अधुनोनोपपन्नक	२१६	२
केश्र	केशी	२१७	१४

लामं	लोगं	२१७	१७
सधिवालेहिं	संधिवालेहिं	२१९	१२
जीवित	जीवितं	२१९	१४
णग्गए	णिग्गए	२१९	२२
अन्न	अन्नं	२१९	२३
भते	भंते	२२०	१
अउक्कुभीए	अउकुंभिए	२२०	१
अन्न	अन्नं	,,	३
अयामयेन	अयामयेन	२२१	३
ौवारिक	दौवारिक	२२०	८
किचित्	किंचित्	२२२	२
जओ ण	जओ णं	२२२	१२
अवादित्	अवादीत्	२२२	५
राएज्जा	रोएज्जा	२२२	२२
समपन्नाः	सम्पन्नाः	२२४	३
माडम्वक	माडम्बिक	२२४	१५
प्रवाव	प्रवाल	२२४	१८
પોયણુ	પોષણુ	२२४	२७
नाम्त	नास्ति	२२८	१
ाकाञ्चत्	किञ्चित्	२२८	१
सुण्ठु	सुष्ठु	२२८	३
भेरिच	भेरिं च	२२९	२६
से तेग	से णूणं	२३०	२८
वह्या	वहिया	२३०	२८
वा जाई	जाव राई	२३०	३१
अंकुण्ठितगतिः	अकुण्ठितगतिः	२३१	१६
सद्द्हाहि	सद्दहाहिं	२३१	२७
सरीर	सरीरं	२३२	१७
ऐ ा	ऐसा	२३३	६
भते	भंते !	२३३	११
जीवयाओ	जावियाओ	२३२	१५

तामयस्कुम्मी	तामयस्कुम्मीं	२३४	१
कमि कुम्मीं मिव	कमि कुम्मी मिव	२३४	१
अण्हाण	जम्हाण	२३४	३०
पस्यमि	पस्यामि	२३६	४
प्रतज्ञा	प्रतिज्ञा	२३६	१३
सु तिष्ठि	सुमतिष्ठिता	२३६	१३
कोसिकु रसमण	कसिकुमारसमण	२३९	१३
सादृस्यम्	सादृस्यम्	२४१	२४१
अवमे प्टक दुदुषण	अपमे एकदुषण	२४३	१६
सा पभू	हंता पभू	२४४	४
भप ज्जषो	अपज्जत्तो	२४४	८
नायमर्थसः मर्थं	नायमर्थः समर्थः	२४५	३
ोरिक्षुएण	कोरिक्षुएण	२४५	२४
जैसे	जैसे	२४६	१३
एग	एग	२४९	९
प्रश्ना	प्रश्ना	२४९	१८
नथी	नथी	२४६	२९
म	मइ	,	२७
परिहिवणए	परिवहित्तए	२५०	३२
मएण	जइणं	२५१	२४
क्यर	क्यन	२५१	३०
प्रश्न	प्रश्नः	२५२	९
जैसा	जैसा	२५२	१७
पएसि	पएसि	२५३	१९
सरुणा	तरुणो	२५५	१
क्षिस्पापगतः	क्षिस्पोपगतः	२५५	१
ना	नो	२५६	२
रोबामम्	राबानम्	२५७	२
बाह्यायामुपस्थानशालाया	बाह्यायामुपस्थानशालायां	२६२	१६
बाह्यायामुस्स्थानशालायां	बाह्यायामुपस्थानशालायां	२६२	२८
पएास	पएसिं	२६३	१७

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
जीयस्स	जीवस्स	२६३	२१
खल	खलु	२६५	२
पएसा	पएसी	२६६	१
एव	एवं	२६६	१
वयासा	वयासी	२६६	१
पदाना	पदानां	२६८	७
अम्ह	अम्हं	२६९	१०
पा इ	पासइ	२७०	४
तसि	तंसि	,,	९
एगत	एगंते	२७०	११
सकपो	संकप्पे	२७०	१३
संकप्प	संकप्पं	२७०	१५
झियायमाण	झियायमाणं	२७१	१
तेसि	तेसिं	२७१	१
उवएमलद्दे	उवएसलद्धे	२७१	१
खाइम	खाइमं	२७१	९
रायं	रायं	२७१	२२
कचित्	केचित	२७२	१
वनापजीविन !	वनोपजीविन !	२७२	१
ज्यातिश्च	ज्योतिश्च	२७२	२
ज्यातिर्भाजनं च	ज्योतिर्भाजनं च	२७२	२
केइ पुरिसो	केइ पुरिसा	२७२	८
विज्झवेत्त	विज्झवेत्ता	२७३	६
झियाइ	झियायइ	२७५	१२
वधइ	वंधइ	२७८	१६
कराति	करोति	२७९	१
अरणि	अरणिं	२७९	१
आर	और	२७९	७
तएण	तएणं	२७९	१४
,,	,,	२७९	२६

त्वामच्छसि	त्वमिच्छसि	२८०	५
अमिपात्	अग्निपात्रे	२८२	१६
पारकर	परिकर	२८५	१५
पर्ि सेस्रपति	परिषेस्रयति	२८६	२
परिप ो	परिपदो	२८७	४
मम्र	मज्ज्रे	२८७	१५
मर्तव्यामर्तव्यनिर्णायकानां–	कर्तव्याकर्तव्यनिर्णायकानां	२८८	३
वक्तम्	वक्तुम्	२८८	९
मवहेलहितुम्	अवहेलयितुम्	२८८	१०
योग्याऽिम	योग्योऽस्मि	२८८	१२
भा :	भावः	२८८	१३
जाणाम	जानामि	२८८	१९
भवस्ज्ञ	भवरज्ञह	२८८	१९
पत्तलाम	पविलोम	२८९	१०
धामधामेन	धाम धामेन	२९२	१
मनष्ट	अनिष्ट	२९२	९
स्य	यस्य	२९३	४
श्रपपरिषदि	भपि परिषदि	२९३	१९
विरुद्धेनत्पर्थ	विरुद्धेनेत्यर्थ	२९३	२९
स	स	२९४	७
अयमे ूप	अयमेवरूप	२९४	११
यात्	यावत्	२९५	१
काबेन	कारणेन	२९५	३–४
यावच्छे म	यावच्छब्देन	२९६	४
प्रतिलाम प्रतिलोमेन	प्रतिलोम प्रतिलोमेन	२९६	५
मन्त्रपाक	मन्त्रयोक्त	२९९	१३
ाक	कि	३०३	२
पपसा	पपसी	३०३	१६
म्पजने	भ्येजते	३०४	३
हस्तामलकव	हस्तामलकवत्	३११	२३
नातिनिपुणाः	नीतिनिपुणाः	३०८	३

धुकुंथू	कुंथू	३१२	२३
हत्ती	हत्ती	३१३	१
णिच्छिड्ड इ	णिच्छिड्डाइं	३१४	८
सर	सतर	३१८	१२
कार शालाथाः	कार शालायाः	३१९	३
काट शालायाः	कार शालायाः	३१९	७
त	तं	३२१	१
अह	अहं	३२१	१
एव	एवं	३२१	३
मोक्ष्मामि	मोक्ष्यामि	३२१	७
समासरणं	समोसरणं	३२१	२७
एव	एवं	३२२	४
अइगाढवंधणवद्ध	अइ गाढवंधणवद्धे	३२३	१९
करेंत	करेंति	३२४	५
तए ण	तए णं	३२५	७
विस्तारवली	विस्तारवाली	३२६	१३
पासति	पासंति	३२७	२५
जाघ	जाव	३२७	२८
सुवहं	सुवहुं	३२८	८
पडिसुणेति	पडिसुणेंति	३२८	१०
तउययारं	तउयभारं	३२८	१३
तत्थण	तत्थणं	३२८	१४
बंध त्तए	वंधित्तए	३२८	१५
वहुाह	वहूहिं	३२९	३१
ग्रारंभ	ग्रारंभ	३३०	१०
दासीदासगामहिगवेलकं	दासीदासगोमहिसगवेलकं	३३१	१
प्राथश्चित्ताः	प्रायश्चित्ताः	३३१	२
मानु॰ कान्	मानुष्यकान्	३३१	४
पचविहे	पंचविहे	३३१	३०
लाह	लोह	३३२	५
उ ागच्छाइ	उवागच्छइ	३३२	१९

त्वाणच्छसि	त्वमिच्छसि	२८०	५
अभिपात्	अग्निपात्रे	२८२	१६
पारकर	परिकर	२८५	१५
पि षेस्रयति	परिवेस्रयति	२८६	२
परिप ो	परिषदो	२८७	४
मम्र	मज्झे	२८७	१५
पर्तव्यापर्तव्यनिर्णायकानां–	कर्तव्याकर्तव्यनिर्णायकानां	२८८	३
वक्तम्	वक्तुम्	२८८	९
अवहेलहितुम्	अवहेलयितुम्	२८८	१०
योग्याऽिम	योग्योऽस्मि	२८८	१२
मा	मावः	२८८	१३
माणाम	जाणामि	२८८	१९
अवस्जम	अवरज्मइ	२८८	१९
पाडल्रोम	पडिलोम	२८९	१०
थामथामेन	थमि थामेन	२९२	१
अनष्ट	अनिष्ट	२९२	९
स्य	यस्य	२९३	४
ऋपपरिषदि	ऋषि परिषदि	२९३	१९
विरुद्वेनत्यर्थ	विरुद्वेनेत्यर्थ	२९३	२९
त	त	२९४	७
अयमे रूप	अयमेतद्रूप	२९४	११
यात्	यावत्	२९५	१
कायेन	कारणेन	२९५	३–४
यावच्छे न	यावच्छन्देन	२९६	४
प्रतिलाम प्रतिलोमेन	प्रतिलोम प्रतिलामेन	२९६	५
मङ्गत्रयाक्त	मङ्गत्रयोक्त	२९९	१३
कि	किं	३०३	२
पएसा	पएसी	३०३	१६
प्यवने	प्येजते	३०४	३
हस्तामलकव	हस्तामलकवत्	३११	२३
नातिनिपुणाः	नीतिनिपुणाः	३०८	३

कीदृशी	कीदृशी	३४४	७
तादिमेन	स्वादिमेन	३४५	८
केसि	कंसि	३४५	१२
ए	एवं	३४६	१
कलल	काउं	३४६	२५
अंतेउर	अंतेउर	३४८	७
परिणनो	परिणतो	३४९	२
म मि	मनसि	३४९	३
इ थमेव	इत्थमेव	३४९	३
प्र लोम	प्रतिलोम	३४९	६
व्याख ा	व्याख्या	३४९	७
श्रे :	श्रेयः	३४९	७
शयन नन्तरं	शयनानन्तरं	३५०	८
ि शुक	किंशुकः	३५०	७
सौमस्यितः	सौमनस्यितः	३५१	१०
वोध्यमिति	वोच्यमिति	३५१	१३
स्वकृत तिकूल	स्वकृत प्रतिकूल	३५१	२२
महातिमहाल्यायां	महाति महालयायां	३५२	११
यज्ञ	मज्ज	३५२	१५
उपदेय	उपदेश	३५२	२२
सुरिकं प मुहाणं	सुरिक्कंतप्पमुहाणं	३५२	२८
पएसिगय	पएसिगयं	३५३	२५
पहान्त्थ	पहारेत्थ	३५३	२५
उवसोमेमाणा	उवसोभेमाणा	३५४	४
हामज्जइ	हसिज्जइ	३५४	७
भदन्द	भदन्त	३५५	२
णडुमल्लाइवा	णडुमालाइवा	३५५	२३
रमणिज्ज	रमणिज्जे	३५५	२३
वनपण्हा	वनपण्डो	३५६	१
ना	नो	३५६	६
ना फलिए	नो फलिए	३५६	८

प म्भे।	पाम्भे।	३३३	२४
अग्रामिकाया	अग्रमिकायाः	३३५	३
समपि	समीपे	३३६	५
स हो	सर्वहो	३३६	११
यर्वन	वर्णन	३३७	५
प्रासादाव्नर्वसकान्	प्रासादावतसकान्	३३७	१२
प्रा भिषा	प्रायभिषा	३३७	१६
घृतद्च्यक्षताः	घृतद्प्यक्षताः	३३७	१६
पिलास्यमानाः	विलास्यमानाः	३३७	२२
प्रत्यनुभवता	प्रत्यनुभवन्तो	३३७	२३
अल्पमस्य	अल्पमूल्ये	३३७	२६
द्वात्रिंशद्वद्वै	द्वात्रिंशद्वद्वैः	३३७	३०
तित्मयः	विस्मयः	३३८	२
दुरा सानम्	दुष्यावसानम्	३३८	५
अहमभि	अहमस्मि	३३८	६
समाद्धवो	तस्माद्धेतो	३३८	११
अन्वराक्त	अनन्तरोक्तः	३३८	१३
त	व	३३८	१७
इच्छाम	इच्छामि	३३८	१७
देवानुप्रि णामन्त्रिके	देवानुप्रियानामन्त्रिके	३३९	१
णमसेज्जा	णमसेज्जा	३३९	९
सा ार	सत्कार	३३९	१२
त्र णामाचार्यार्मा	त्रयाणामाचार्याणां	३४२	२
जनामि	जानामि	३४२	२
वृत्ति	वृत्तिं कल्पयेत्	३४२	५
मदन	मर्दन	३४२	१५
अक्षमर्मि त्वा	अक्षमयित्वा	३४२	४
ममसेज्जा	णमसेज्जा	३४२	०
सा ार	सत्कार	३४२	१२
फशाइमारभमणः	केशीकुमारश्रमणः	३४४	१
प्रदेशा	प्रदेशी	३४४	१

शस्त्र योगेन	शस्त्रप्रयोगेन	३७१	५
मारयित्वा	मारयित्वा	३७१	७
स्थापयेत्वा	स्थापयित्वा	३७१	८
कार नया	कारयन्त्या	३७१	९
कोप	कोपं	३७१	२३
जनपद	जनपदं	३७२	१
आ मगतो	आत्मगतो	३७२	९
पाल तो	पालयतो	३७२	४
सुरियकं । देपी	सुरियकंता देवी	३७३	९
निद्दरा	नि॒रा	३७४	६
दाहकं ते	दाहनकते	३७४	७
विहइ	विहाइ	३७४	७
दुरध स	दुरध्यास	३७४	१५
पाउब्भू ।	पाउब्भूया	३७४	१८
वित्तज्जर परिगयसरीरे	पित्तज्जर परिगयसरीरे	३७४	२०
डुया	कडुया	३७४	१९
ि हरइ	विहरइ	३७४	२०
करिंमश्चित्	कस्मिंश्चित	३७४	२
तस्य	तस्य	३७५	७
नमो थुणं	नमोत्थुणं	३७७	१२
त थ यं	तत्थ गयं	३७७	१४
संपलियंकनिसन्ने	संपलियंक निसन्ने	३७७	२२
न तिए	अंतिए	३७७	३२
त सेव	तस्सेव	३७८	७
प्रा ातिपात	प्राणातिपात	३७८	८
उ८	उष्ण	३७८	१७
परिया	परित्याग	३७८	१९
त इ ाणिं	तं इयाणिं	३७८	२१
प्र याख्यान	प्रत्याख्यान	३७९	१२
उ हें	उन्हें	३७९	१२
सतारक	संस्तारक	३७९	२१

णा	णो	३५६	८
उवसोममाणे	उवसोममाणे	३५६	९
सयाण	सयाण	३५६	१६
"	"	"	२८
अयाण	अयाण	३५६	२९
सयाण	सयाण	३५७	२५
सआ	सया	३५७	२६
पुाध्व	पुम्वि	३५८	२९
कशाने	केशीने	३५९	९
हरिसक । न्य	हरिसक्कारान्य	२५९	२५
अनेक	अनेक	३६१	१६
स्वादिम	स्वादिम	३६३	१०
अतेउर य	अतेउर य	३६४	८
स्वकु	स्वकु	३६६	२
विमक्त,नि	विमक्तानि	३६६	१
यरेनारम्य	यदिनारम्य	३६६	८
अतेउर	अतेउरं	३६६	१२
रज्ञ	रज्ज	३६६	१६
रार्य	राज्य	३६७	१२
अपमिय	अप्पमिय	३६७	२४
केशर्सि सत्य	केशविसत्व	३६७	१९
राज्यभिय	राज्यभिय	३६८	२
सेय	सेय	३६९	७
विपय	विप	३६९	११
पूर्व सुत्रे	पूर्वसुत्रे	३७०	७
न सब	इन सब	३७०	१७
पटेबागरमाणी	पडिबागरमाणी	३७०	२२
अज्मत्थिए	अज्मत्थिए	३७०	२९
बलं= न्य	बल=सैन्य	३७१	१
धा य थापनगृहम्	धान्यस्थापनगृहम्	३७१	२
विहरते	विहरति	३७१	४

		४०९	१६
दढप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४१२	८
तयाहि	तथाहि	४१५	२
नगरमानन्	नगरमानम्	४१८	२
दृढ ि ज्ञं	दृढप्रतिज्ञं	४१९	२२
संमाणेस्संति	सम्माणिस्संति	,,	३०
,,	,,	४२०	२
ज्जोव्वणगमणुपत्ते	जोव्वणगमणुपत्ते	४२२	३
परिपक्क	परिपक्कं	४२४	१४
उम्मुक्तबालभाव	उम्मुक्कबालभावं	४२५	१७
खइयं	खाइयं	४२६	३
पद्मात्पलमित्ति	पद्मोत्पलमिति	४२६	९
दर्ढप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४२६	२५
पउमेइ्वा	पउमेइवा	४२७	१
मेत्स्यते	भोत्स्यते	४२७	२
अ गारितां	अनगारितां	४२७	२
ईर्य्या मिता	इर्य्या समितो	४२७	९
तगा । ओ	अगाराओ	४२७	१७
आजंवसे	आर्जवसे	४२७	१९
वड्ढित	वर्धित	४२७	२९
भग्गेणं	मग्गेणं	४२८	१०
दृढ कुमार	द्रढकुमार	४२८	३०
भणवयण कायजोगे	मणवयण कायजोगे	४२९	२
वस्त्रमोगेष	वस्त्रभागेषु	४२९	४
मविष्यति	भविष्यति	४२९	४
ना	नो	४२९	४
श सहस्र	शतशहस्र	४३०	१
ने पलिप्तं	नोपलिप्तं	४३१	४
सव्वआ	सव्वओ	४३२	८
वृती ।	तृतीया	४३३	२
सवथा	सर्वथा	४३३	२१
	कायोत्सग		

येल	ये लोग ।	३९८	२१
यगृहात्	स्वगृहात्	३९९	२
यडमियाइ	यडमियाहिं	४००	२
पदिसुअमाणे	परिसुजेमाणे	४००	९
परां गज्जमाणे	परगिज्झमाणे	४००	१२
खीर थाइ ए	खीरथाइ ए	४००	२३
बर्भरीम	बर्बरीमिः	४०१	२
यकुशिका मः	बकुशिकामिः	४०१	७
हे—वहलीहिं	बहलीहिं	४०१	२७
घ कञ्चुकि	वरकञ्चुकि	४०२	२
अवपाहिज्जमाणे	अययासिज्जमाणे	४०२	२७
रिक्षिप्तः	परिक्षिप्तः	४०३	२
बहुमकारामिः	बहुमकारामि	४०३	८
गिरिकदरमल्लीण	गिरिकदरमल्लीणे	४०३	२६
युवति मूहः	युवति समूहः	४०४	८
ह वात्	हस्वात्	४०४	१२
अन्यया	अन्यस्या	४०४	१४
	गिरिकन्दरालीन	४०५	२
पाडधारे	पडिधारं	४०६	१
पूह	पूह	४०६	१
दहप्रविश	द्रहमविश	४०६	८
दहपइण्ण	दहपइण्ण	४०६	११
दहप्रविश	द्रहप्रविश	४०६	१२
तिहिकरणकूलवत्त	तिहिकरणमकूलवत्त	४०६	२३
नेप :	नेप्पत्त	४०७	१
दारक	दारक	४०७	१
कणतम	करमतम	४०७	२
तपण	तपण	४०७	८
गणि र हायाओ	गणियप्पहाणाओ	४०७	९
वयवीर्हि	वरयुवीहिं	४०७	१०
वपुरि च	वरयुविज्जं	४०८	१४

गब्भगयसि	गब्भगयंसि	३८९	३
विइक्कताणं	विइक्कंताणं	३८९	६
सुकुमाल पाणपाय	सुकुमालपाणिपाय	३८९	६
पियदंसण	पियदंसणं	३८९	८
दारय	दारयं	३८९	८
मविष्‍ त	भविष्यति	३८९	१०
व्यतिक्कातेपु	व्यतिक्रान्तेपु	३८९	११
दरग्गेसि	दारगंसि	३८९	१५
दारगस	दारगस्स	३८९	१८
द्दिवसे	दिवसे	३९०	६
त	तं	३९१	१
ामत्तणाइ	मित्तणाइ	३९१	३
मगल	मंगल	३९२	२७
भोयणमंडवसि	भोयणमंडवंसि	३९३	९
करेगे	करेंगे	३९३	१२
परिभुजेमाणाा	परिभुंजेमाणा	३९३	२७
परमसुइभू ा	परमसुइभूया	३९३	३१
वन्धि परिजनस्य	सम्बन्धिपरिजनस्य	३९४	१
मित्र—ज्ञात	मित्र—ज्ञाति	३९४	११
त सेव	तस्सेव	३९४	१०
घम्मे	धम्मे	३९४	२५
करिसति	करिस्संति	३९५	२७
सप्राप्ते	संप्राप्ते	३९६	४
फिरने	फिर वे	३९६	२०
ायश्चित्तौ	प्रायश्चित्तौ	३९७	१
म आस्वादन्तौ	आस्वादयन्तौ	३९७	१०
आद	आदि	३९७	१५
इ रेके	दूसरे के	३९७	२०
कथय्यतः	कथयिष्यतः	३९८	८
अिनप्ररूपिते	जिनप्ररूपिते	३९८	१०
दृढ प्रतिज्ञ	दृढप्रतिज्ञस्य	३९८	२१

सपस्यङ्क	सपस्यक	८०	१
ख न	खन्देन	३८०	३
नमस्‍ ा	नमस्कार	३८०	१६
मवान्	मगवान्	३८०	१६
वें	सर्वे	३८१	३
समस	समस्त	३८१	१२
याव ीव	यावज्जीव	३८१	१७
अतिचा ाः	अतिचाराः	३८३	२
सामायिकः	सामायिकः	३८३	४
सूर्यामि	सूर्याभे	३८३	४
देव सेन	देवत्वेन	३८३	५
माप्तम्	समाप्तम्	३८३	६
अधुनपपेम्नक	अधुनोपपन्नक	३८३	१२
मापानन' पर्याप्त्या	मापामन' पर्याप्त्या	३८४	१
सूर्यामदेवेन	सूर्याभदवेन	३८४	८
उपार्ज़ि	उपार्जितः	३८४	१०
इ दि पज्ञचीप	इदियपज्ञत्तीए	३८४	१२
इन्द्रय	इन्द्रिय	३८४	१३
मसे	मते	३८५	१
सेण	से ण	३८५	१८
ण	ण	३८५	२१
सूर्याम स	सूर्यामस्स	३८५	२२
मव त	मवन्ति	३८६	१
आयोगप्रयोगम युक्तानि	आयोगप्रयोगसम्प्रयुक्तानि	३८६	३
ि च्छदि त	पिच्छदि त	३८६	३
अ मस्मिन्	अन्यतमस्मिन्	३८६	४
फुपणि	फुलाणि	३८६	८
अहाइ	अर्हाइ	३८६	८
दिणार	दिणाइ	३८६	८
आ ोग	आयोग	३८६	१४
पा	पार	३८७	१३

दृढप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४०९	१६
तयाहि	तथाहि	४१२	८
नगरमानन्	नगरमानम्	४१५	२
दृढ ति ज्ञं	दृढप्रतिज्ञं	४१८	२
संमाणेस्संति	सम्माणिस्संति	४१९	२२
,,	,,	,,	३०
ज्जोव्वणगमणुपत्ते	जोव्वणगमणुपत्ते	४२०	२
परिपक्क	परिपक्कं	४२२	३
उम्मुक्कवालभाव	उम्मुक्कवालभावं	४२४	१४
खइयं	खाइयं	४२५	१७
पद्मात्पलमिति	पद्मोत्पलमिति	४२६	३
दढंप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४२६	९
पउमेइ्वा	पउमेइवा	४२६	२५
भेत्स्यते	भोत्स्यते	४२७	१
अ गारितां	अनगारितां	४२७	२
ईर्य्या मिता	इर्य्या समितो	४२७	२
तगा । ओ	अगाराओ	४२७	९
आजंवसे	आर्जवसे	४२७	१७
वद्धित	वर्धित	४२७	१९
भग्गेणं	मग्गेणं	४२७	२९
दृढ कुमार	द्रढकुमार	४२८	१०
भणवयण कायजोगे	मणवयण कायजोगे	४२८	३०
वस्त्रभोगेष	वस्त्रभागेषु	४२९	२
मविष्यति	भविष्यति	४२९	४
ना	नो	४२९	४
श सहस्त्र	शतशहस्त्र	४२९	४
ने पलिप्तं	नोपलिप्तं	४३०	१
सव्वआ	सव्वओ	४३१	४
वृती ।	तृतीया	४३२	८
सवथा	सर्वथा	४३३	२
कायात्सर्ग	कायोत्सग	४३३	२१

येल	ये लोग।	३९८	२१
वगृहात्	स्वगृहात्	३९९	२
वहमियाइ	वहमियाहिं	४००	२
पदिमुअमाणे	परिसुजेमाणे	४००	९
पर्रा गळमाणे	परगिळमाणे	४००	१२
खीर धाइ ए	खीरधाइ ए	४००	२३
सर्यरीम	वर्मरीमिः	४०१	२
वकुशिका मः	वकुशिकामिः	४०१	३
हे–वहलीहिं	महलीहिं	४०१	२७
घ कञ्चुकि	घरकञ्चुकि	४०२	२
अवपादिज्जमाणे	अवयासिज्जमाणे	४०२	२७
रिक्षिप्त	परिक्षिप्तः	४०३	२
वहुमकारामिः	वहुमकारामिः	४०३	८
गिरिकन्दरमल्लीण	गिरिकन्दरमल्लीणे	४०३	२६
युवति मूहः	युवति समूह	४०४	८
द तात्	दम्पात्	४०४	१२
अन्यथा	अ पस्या	४०४	१४
	गिरिकन्दरालीनः	४०५	२
पाडघारे	पडिचार	४०६	१
वूह	वूहं	४०६	१
दव्मतिश	द्रव्मतिश	४०६	८
दवपइण्णं	दवपइण्णा	४०६	११
दव्मतिश	द्रव्मतिश	४०६	१२
तिहिकरणकूलच	तिहिकरणमकूलच	४०६	२३
नेः	नेप्पतः	४०७	१
दारक	दारकं	४०७	१
करणतच	करणतच	४०७	२
सएण	सएण	४०७	८
गणि ॰ हाणाभो	गणियप्पहाणाभो	४०७	९
घयवीहिं	घरपुधीहिं	४०७	१०
घपु ज्जें	घरपुविज्ज	४०८	१४

दृढप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४०९	१६
तयाहि	तथाहि	४१२	८
नगरमानन्	नगरमानम्	४१५	२
दृढ ि ज्ञं	दृढप्रतिज्ञं	४१८	२
संमाणेस्संति	सम्माणिस्संति	४१९	२२
			३०
,,	,,	,,	
ज्जोव्वणगमणुपत्ते	जोव्वणगमणुपत्ते	४२०	२
परिपक	परिपक्कं	४२२	३
उम्मुक्कवालभाव	उम्मुक्कवालभावं	४२४	१४
खइयं	खाइयं	४२५	१७
पद्मात्पलमिति	पद्मोत्पलमिति	४२६	३
दढंप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४२६	९
पउमेइवा	पउमेइवा	४२६	२५
भेत्स्यते	भोत्स्यते	४२७	१
अ गारितां	अनगारितां	४२७	२
ईर्य्या मिता	इर्य्या समितो	४२७	२
तगा । ओ	अगाराओ	४२७	९
आजंवसे	आर्जवसे	४२७	१७
वद्धित	वर्धित	४२७	१९
भग्गेणं	मग्गेणं	४२७	२९
दृढ कुमार	द्रढकुमार	४२८	१०
भणवयण कायजोगे	मणवयण कायजोगे	४२८	३०
वस्त्रभोगेष	वस्त्रभागेषु	४२९	२
मविष्यति	भविष्यति	४२९	४
ना	नो	४२९	४
श सहस्त्र	शतशहस्त्र	४२९	४
ने पलिप्तं	नोपलिप्तं	४३०	१
सव्वआ	सव्वओ	४३१	४
तृती ।	तृतीया	४३२	८
सवथा	सर्वथा	४३३	२
कायात्सर्ग	कायोत्सग	४३३	२१

कायगुप्तिर्निगयवे	कायगुप्तिर्निगयते	४३३	३३
हां गे	होंगे	४३५	१२
दोर्ना	दोनों	४३५	२५
समुपपादक	समुपादके	४३७	२
नहीं	नहीं	४३९	२७
कुञ्वर	कुञ्जर	४३९	१०
अर्थात् ईय	अर्थात्–कषाय	४३९	१७
निररवसानम्	निरवसानम्	४४०	८
तज्ञमाः	तज्जनाः	४४३	३
असमद्वाए	असद्भाए	४४३	२१
बपयेरवासे	बंभचेरवासे	४४३	२२
चरिमेर्हिं	चरिमेर्हिं	४४३	३३
आमनः	आत्मनः	४४४	३
करद गे	करेंगे	४४४	१७
इत्यादिकवचनकपा	इत्यादि वचनरूपा	४४५	७
यस्य कुते	यस्य कृते	४४६	३
सेव मते !	सेव भंते !	४४७	१
माग	मार्ग	४४८	१०

॥ समाप्त ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल
व्रतिविरचितया सुबोधिन्याख्यया व्याख्यया
समलङ्कृतम्

श्री राजप्रश्नीयसूत्रम्

(द्वितीयो भागः)

गौतमस्वामी पुनः पृच्छति—

मूलम्—सूरियाभेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई किण्णा लद्धा? किण्णा पत्ता? किण्णा अभिसमन्नागया?, पुव्वभवे के आसी? किं नामए वा किं गोत्ते वा? कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहसि वा संनिवेसंसि वा किं वा, दच्चा, किं वा भोच्चा, किं वा किच्चा, किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सुच्चा निसम्म सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढि दिव्वा देवज्जुई लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया? ॥ सू० ९८ ॥

छाया—सूर्याभेण भदन्त! देवेन सा दिव्या देवर्द्धिः सा दिव्या देवद्युतिः कथं लब्धा कथं प्राप्ता कथम् अभिसमन्वागता? पूर्वभवे क आसीत्?

'सूरियाभेण भंते! देवेण सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा इत्यादि।
सूत्रार्थ—(सूरियाभेणं भंते! देवेण सा दिव्वा देविड्ढि सा दिव्वा देवज्जुई किण्णा लद्धा? किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमन्नागया?) हे भदन्त!

सूरियाभेण भंते! देवेण सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा' इत्यादि
सूत्रार्थ—(सूरियाभेण भंते! देवेण सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई किण्णा लद्धा? किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमन्नागया?) हे भदन्त!

किन्नामको वा? किं गोत्रो वा? कतरस्मिन् वा ग्रामे वा नगरे वा निगमे वा राजधान्यां वा खेटे वा कर्बटे वा मडम्बे वा पत्तने वा द्रोणमुखे वा आकरे वा आश्रमे वा सम्बाधे वा सन्निवेशे वा किं वा दत्त्वा, किं वा

सूर्याभदेवने यह दिव्यदेवर्द्धि यह दिव्य द्युति, कैसे लब्ध की, कैसे प्राप्त की, अर्थात् किस प्रकार से उपार्जित की? किस प्रकार से उपार्जित की गई यह उसने अपने आधीन की, और कैसे उसने अपने आधीन होने के बाद उसे अपने भोग के योग्य बनाया? (पुव्वभवे के आसी? किंनामए वा? किं गोत्ते वा? कयरंसि वा गामंसि वा? नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संबाहंसि वा) तथा पूर्वभव में यह किस जाति का था? क्या इसका नाम था?' गोत्र से यह कौन था? तथा किस ग्राम में–वृतिवेष्टितस्थान में, किस नगर में–अष्टादशकरवर्जित वस्ती में, किसनिगम में–प्रभूततर वणिग्जननिवासस्थान में किस राजधानी में–राजाके निवास से युक्त स्थान में किस खेट में धूलिप्राकारपरिवेष्टितस्थान में किस कर्बट में क्षुल्लकप्राकारपरिवेष्टित स्थान में, किस मडम्ब में सार्द्धक्रोशद्वयान्तर्ग्रामान्तररहित स्थान में किस पत्तन में जलमार्ग युक्तस्थान में, किस द्रोणमुख में–जलस्थलमार्गोपेत जननिवास में, किस आकर में–सुवर्ण रत्ना

सूर्याभदेवे ते दिव्य देवर्द्धि ते दिव्य देवद्युति केवी रीते उपार्जित करीने तेने पोताने अधीन बनावी. अने स्वाधीन बनेली दिव्यदेवर्द्धि वगेरेने तेणे भोग योग्य केवी रीते बनावी? (पुव्वभवे के आसी? किंनामए वा? किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संबाहंसि वा) અને પૂર્વભવમાં તે કઇ જાતિનો હતો? તેનું શું નામ હતું? તેનું ગોત્ર શું હતું? તે ક્યાં ગામમાં–વૃત્તિ વેષ્ટિત સ્થાનમાં, ક્યા નગરમાં–અઢારકર જેમાં લેવામાં આવે નહિ તે વસ્તિમાં, ક્યા નિગમમાં–વણિક લોકો જેમાં વધારે પ્રમાણમાં રહેતા હોય તે નિવાસસ્થાન હોય તે રાજધાનીમાં–રાજા જે નગરમાં રહેતા ક્યા ખેટમાં માટીની દીવાલ જેને

भुक्त्वा, किं वा कृत्वा, किं वा समाचर्य कस्य वा तथारूपस्य श्रमणस्य वा माहनस्य वा अन्तिके एकमपि आर्यं धार्मिकं सुवचनं श्रुत्वा निशम्य सूर्याभेण देवेन सा दिव्या देवर्द्धिः दिव्या देवद्युतिः लब्धा प्राप्ता अभिसमन्वागता? ॥ सू० ९८ ॥

'सूरियाभेण' इत्यादि।

टीका--हे भदन्त! सूर्याभेण देवेन सा दिव्या=देवसम्बन्धिनी देवर्द्धिः=देवसम्बन्धिनी सातिशयविमानादि ऋद्धिः कथ=केन प्रकारेण लब्धा=

दिक की उत्पत्तिवाले स्थान में. किस आश्रम में-तापसनिवास स्थान में, किस संवाह में-किसानों द्वारा धान्य की रक्षा के निमित्त निर्मित दुर्गभूमिस्थान में, अथवा किस संनिवेश में-समागतसार्थवाहादि के निवासस्थानमें, किं वा दच्चा, किं वा भोच्चा, किं वा किच्चा, किं वा समायरित्ता कस्स समणस्स वा तहारूवस्स माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई, लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया) अभयदान, सुपात्रदान, करुणादानादिकों मे से कौन से दान को देकर, आचाम्ल आदि तपों में अथवा अन्य किसी समय में कौन से अरस विरस आदि आहार को खा करके, प्रतिक्रमण, प्रमार्जन आदि किस कृत्य को करके अथवा किस प्रकार के शीलादिक का समाचरण करके किस तथारूप श्रमण-निर्ग्रन्थ साधु के, अथवा किस द्वादशव्रतधारी श्रावक के, पास में एक भी तीर्थंकर प्रतिपादित पापनिवृत्ति-निरवद्य वचन सुनकरके एवं उन वचनों को आदेयरूप मानकर हृदय में

નિવેસમા, કયા આકરમા-સુવર્ણરત્ન-વગેરે જ્યાથી નીકળે છે તેવા સ્થાનમા, કયા આશ્રમમા-તાપસ નિવાસ સ્થાનમા, સંવાહમા-ધાન્યની રક્ષા માટે ખેડૂતોએ જે સ્થાન વિશેષ પર દુર્ગ રચના કરી હોય તે વસ્તીમા, અથવા કયા સંનિવેશમા-સાર્થવાહો જ્યા આવીને રહે તે સ્થાન વિશેષોમા, (किंवा दच्चा, किंवा भोच्चा, किंवा किच्चा किंवा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई, लद्धा, पत्ता अभिसमण्णागया) અભયદાન, સુપાત્રદાન, કરુણાદાન વગેરેમાથી કયું દાન આપીને આચામ્લ વગેરે તપોમાથી અથવા બીજા કોઇ વખતે કયા અરસવિરસ વગેરે આહારો ગ્રહણ કરીને, પૌષધ, પ્રતિક્રમણ, પ્રમાર્જન વગેરે કઇ વિધિ કરીને અથવા શીલ વગેરે કઇ જાતના આચરણોને કરીને કયા તથારૂપ શ્રમણ-નિર્ગ્રંથ સાધુની અથવા કયા દ્વાદશવ્રતધારિ શ્રાવકની પાસેથી એક પણ તીર્થંકર પ્રતિપાદિત પાપનિવૃત્તિ-નિરવદ્ય વચન સાભળીને અને તે વચનોને

उपार्जिता? कथं=केन प्रकारेण प्राप्ता=उपार्जिता सती स्वायत्ती भूता! कथं=केन हेतुना अभिसमन्वागता अभिमुख्येन सम्=साकल्येन अनु=पश्चात् स्वायत्ती भवनानन्तरम् आगता=भोग्यतामुपगता ?, तथा-सा दिव्या देवद्युतिः=देवसम्बन्धिनी शरीराभरणादिकान्तिः कथं लब्धा? कथं प्राप्ता? कथम् अभिसमन्वागता ?, तथा-पूर्व भवे=पूर्वजन्मनि स कः=किंनामीय आसीत्? किंनामको वा स आसीत्? किं गोत्रः=गोत्रेण वा स क आसीत्? तथा--कतमस्मिन् वा ग्रामे-वृतिवेष्टिते नगरे-अष्टादशकरवर्जिते, निगमे-प्रभूततर वणिग्जननिवासस्थाने राजधान्याम्=राज्ञो निवासोपलक्षिते स्थाने वा खेटे-धूलिप्राकारपरिवेष्टिते, कर्बटे-क्षुद्रप्राकारपरिवेष्टिते, मडम्बे-सार्द्धक्रोशद्वयान्त र्ग्रामान्तररहिते, पत्तने,-सर्वमार्गयुक्ते स्थाने, द्रोणमुखे-जलस्थलमार्गोपेते जननिवासे आकरे=सुवर्णरत्नाद्युत्पत्तिस्थाने, आश्रमे तापसनिवासस्थाने, संवाहे-कृषीवलैर्धान्यरक्षार्थं निर्मिते दुर्गभूमिस्थाने, सन्निवेशे-समागतसार्थवाहादिनिवासस्थाने, किं वा-अभयदानसुपात्रदानकरुणादानादिकं दत्वा, किं वा भाषामाम्लादितपस्तु अन्यमभयेऽपि च अरसविरसादिकं भुक्त्वा, किं वा-पौषधप्रतिक्रमणप्रमार्जनादिकं कृत्वा, किं वा-शीलादिकं समाचर्य=विधाय, कस्य वा तथारूपस्य श्रमणस्य=निर्ग्रन्थमाधोर्वा माहनस्य=श्रावक व्रतधारिश्रावकस्य वा अन्तिके=समीपे एकमपि आर्यम्=आर्यसम्बन्धिक-तीर्थकरप्रतिपादितमित्यर्थः, सुवचनं=पापनिवृत्तिरूपं निरवद्यवचनं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=सम्यग्वाक्यमादेयतया हृदयधार्य सूर्याभेण देवेन सा दिव्या देवर्द्धिः दिव्या देवद्युतिर्लब्धा प्राप्ता अभिसमन्वागता? इति ॥ सू ९८

मूलम्—'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं अमंतेत्ता एवं वयासी

एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामं जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं

धारण करके इस सूर्याभदेव ने यह दिव्य देवर्द्धि दिव्य देवद्युति उपार्जित की है? अपने आधीन की है? और अपने भोग के योग्य बनाई है?॥ टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥ सू० ९८॥

આદરરૂપથી સ્વીકારીને હૃદયમાં ધારણ કરીને સૂર્યાભદેવે તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ દિવ્ય દેવ દ્યુતિ મેળવી છે? પોતાને આધીન બનાવી છે? અને પોતાના માટે ભોગ યોગ્ય બનાવી છે" ટીકાર્થ:—આનો સ્પષ્ટ છે ॥ ૯૮ ॥

केय इअड्ढे जणवए सेयवियाणामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा। तीसे णं सेयवियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं मिगवणे णाम उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे सायलाए सुभसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओचेव समणुबद्धे पासाईए जाव पडिरूवे। तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णामं राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ। [अधम्मिए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोई अधम्मपजणणे अधम्मसीलसमुयायारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे 'हणछिंदभिंद'—पवत्तए लोहियपाणी पावे चंडे रुद्दे खुद्दे साहसिए उक्कंचण—वंचण—माया—नियडि—कूड—कवड—साइ सपओगबहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निम्मेरे निपच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खीसिरिसवाणघायाए वहाए उच्छेयणयाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए, गुरूणं णो अब्भुट्ठेइ,] णो विणयं पउंजइ, सयस्स वि यणं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ ॥सू०१९

छाया—गौतम! इति श्रमणो भगवान् महावीरो भगवन्तं गौतमम् आमन्त्य एवमवादीत्—

'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी) हे गौतम! इस प्रकार से श्रमण भगवान् महावीरने भगवान् गौतम को संबोधित करके इस प्रकार कहा—(एवं खलु गोयमा!

'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी) हे गौतम! आ प्रमाणे गौतमने संबोधित करीने भगवाने तेने आ

एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे-द्वीपे भारते वर्षे ककयार्धं नाम जनपद आसीत् ऋद्धस्तिमितसमृद्धः। तत्र खलु केकयार्द्धे जनपदे श्वेतविका नाम नगरी आसीत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत् प्रतिरूपा।

तए णं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामे जणवए होत्था) हे गौतम ! मैं इस विषय में तुम से कहता हूं सो तुम उसे सुनो-बात ऐसा है-इस अवसर्पिणीकाल के चतुर्थ आरकरूपकाल में और केशि स्वामी के विहरण के समय में इस जम्बूद्वीप नामके मध्यजम्बूद्वीप में भारतक्षेत्र में ककयार्द्ध नामका जनपद-देश था तात्पर्य कहने का यह है कि केकयदेश का आधाभाग आर्यजनों का निवासस्थानरूप था और आधाभाग अनार्यजनों का निवासस्थानरूप था इस तरह आर्य अनार्य के निवासस्थानभूत होने से केकयदेश को यहां आधे आधेरूप में पृथक् पृथक् जनपद कहा गया है (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह केकयार्द्ध ऋद्ध-नभस्तलस्पर्शी अनेक भवनादिकों से युक्त था, एवं बहुजनसंकुल था, स्तिमित-स्वचक्र परचक्र के भय से रहित था, एवं समृद्ध-धनधान्यादि से परिपूर्ण था यावत् प्रतिरूप था (तत्थ णं केयइअद्धे जणवए सेयविया णाम णयरी होत्था) उस केकयार्द्ध जनपद में श्वेतविका नामकी नगरी थी (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह नगरी भी ऋद्ध स्तिमित और समृद्ध थी एवं प्रतिरूप-सर्वोत्तम थी (तीसे णं सेयवियाए नयरीए बहिया

प्रमाणे अर्थ-(एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे अद्धे नामे जणवए होत्था) हे गौतम ! आ विषे जे हुं तमने कहुं ते तमे सांभळो. विगत आ प्रमाणे छे के-आ अवसर्पिणी काळना चोथा आरक-रूप काळमां अने केशिस्वामीना विहरणना समयमां आ जम्बूद्वीप नामना मध्य जम्बूद्वीपमां भरतक्षेत्रमां केकयार्द्ध नामे जनपद-देश हतो. तात्पर्य ए छे के केकय देशना अर्धा भागमां आर्यजनो निवास करता हता अने अर्धा भागमां अनार्यजनो रहेता हता. एथी ज आर्यो अनार्योना निवासस्थानरूप ते केकयदेशने अहीं अर्धा रूपमां जुदा जुदा जनपदोना नामे संबोधित करवामां आव्यो छे (रिद्धत्थिमिय समिद्धा जाव पडिरूवा) आ केकयार्द्ध देश ऋद्ध नभस्तलस्पर्शी, घणां भवनो वगेरे थी युक्त हतो, अने बहुजन संकुल हतो. स्तिमित-स्वचक्र परचक्रनी बीकथी रहित हतो अने समृद्ध धनधान्य वगेरेथी परिपूर्ण हतो. यावत् प्रतिरूप हतो. (तत्थ णं केयइअद्धे जणवए सेयविया णाम णयरी होत्था) केकयार्द्ध जनपदमां श्वेतविका नामे नगरी हती (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) आ नगरी पण ऋद्ध स्तिमित अने समृद्ध हती अने प्रतिरूप-सर्वोत्तम हती. (तीसे णं सेयवियाए

तस्या खलु श्वेतविकाया नगर्या बहिः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अत्र खलु मृगवनं नाम उद्यानम् आसीत्-सर्वर्तुक पुष्पफलसमृद्धं रम्यं नन्दनवनप्रकाश-शुभसुरभिशीतलया छायया सर्वत एव समनुबद्धं प्रासादीय यावत् प्रतिरूपम् । तत्र खलु श्वेतविकाया नगर्या प्रदेशी नाम राजा आसीत्-महाहिमवद्-यावद् विहरति। अधार्मिकः अधर्मिष्ठः अधर्मख्यातिः अधर्मानुगः

उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था) उस श्वेतविका नगरी के ईशान कोने में मृगवन नामका उद्यान था (सव्वोउयपुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे, नंदणवणप्पगासे सुभ सुरभिसीयराए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासाईए जाव पडिरूवे) यह उद्यान छहों ऋतुओं के पुष्पों एवं फलों से युक्त था अतः मनोरम था नन्दनवन के जैसा था. शुभ-सुखावह होने से अच्छी, एवं सुरभि-मनोज्ञ एवं शीतस्पर्शवाली ऐसी छाया से सर्वत्र यह समनुबद्ध-युक्त था, प्रासादीय था यावत प्रतिरूप था (तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णाम राया होत्था) उस श्वेतविका नगरी में प्रदेशी नामका राजा था, (महया हिमवन्त जाव विहरइ) इसमें महाहिमवान्, महामलय, मन्दर-(मेरुपर्वत) एवं महेन्द्र के जैसा था (अधम्मिए, अधम्मिट्ठे, अधम्मक्खाई, अधम्माणुए अधम्मपलोई, अधम्म पजणणे अधम्मसीलसमुयायारे, अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे) परन्तु वह धार्मिक नहीं था अधर्माचारी था, अतिशयरूप से अधर्माचरणशील था, अतएव अधर्मद्वारा ही यह जगत में प्रसिद्ध हुआ था अधर्मानुयायी

नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णाम उज्जाणे होत्था) ते श्वेतनगरीना ईशान કોણમાં મૃગવન નામે ઉદ્યાન હતું. (सव्वो उय पुप्फ.फलसमिद्धे रम्मे, नंदणवणप्पगासे सुभसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासाइए जाव पडिरूवे) આ ઉદ્યાન ષડ્ઋતુઓના પુષ્પો તેમજ ફળોથી સમૃદ્ધ હતું. એથી નન્દનવન જેવું મનોરમ હતું. શુભ-સુખાવહ હોવા બદલ સારી, અને સુરભિ-મનોજ્ઞ-અને શીતસ્પર્શવાળી છાયાથી તે સર્વત્ર સમનુબદ્ધ-યુક્ત હતું. પ્રાસાદીય હતું. યાવત્ પ્રતિરૂપ હતું (तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णाम राया होत्था) તે શ્વેતવિકા નગરીમાં પ્રદેશી નામે રાજા હતો. (महया हिमवन्त जाव विहरइ) એમાં મહાહિમવાન, મહામલય, મંદર (મેરુપર્વત) અને મહેન્દ્ર જેટલું બળ હતું (अधम्मिए, अधम्मिट्ठे, अधम्मक्खाई, अधम्माणुए, अधम्मपलोई अधम्मपजणणे, अधम्मसीलसमुयायारे, अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे) પણ તે ધાર્મિક હતો નહિ અધર્માચારી હતો, ખૂબ જ અધર્માચરણમાં પ્રવૃત્ત રહેનાર

एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे-द्वीपे भारते वर्षे केकयार्द्धं नाम जनपद आसीत् ऋद्धस्तिमितसमृद्धः। तत्र खलु केकयार्द्धे जनपदे श्वेतविका नाम नगरी आसीत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत् प्रतिरूपा।

तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामं जणवए होत्था) हे गौतम ! मैं इस विषय में तुम से कहता हूं सो तुम उसे सुनो-बात ऐसी है-इस अवसर्पिणीकाल के चतुर्थ आरकरूपकाल में और ऋषभ स्वामी के विचरण के समय में इस जम्बूद्वीप नामके मध्यजम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र में केकयार्द्ध नामका जनपद-देश था तात्पर्य कहने का यह है कि केकयदेश का आधाभाग आर्यजनों का निवासस्थानरूप था और आधाभाग अनार्यजनों का निवासस्थानरूप था इस तरह आर्य अनार्य के निवासस्थानभूत होने से केकयदेश को यहां आधे आधेरूप में पृथक् पृथक् जनपद कहा गया है (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह केकयार्द्ध ऋद्ध-नभस्तलस्पर्शी अनेक भवनादिकों से युक्त था, एवं बहुजनसंकुल था, स्तिमित-स्वचक्र परचक्र के भय से रहित था, एवं समृद्ध-धनधान्यादि से परिपूर्ण था यावत् प्रतिरूप था (तत्थ णं केयइअद्धे जणवए सेयविया णामं णयरी होत्था) उस केकयार्द्ध जनपद में श्वेतविका नामकी नगरी थी (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह नगरी भी ऋद्ध स्तिमित और समृद्ध थी एवं प्रतिरूप-सर्वोत्तम थी (तीसे णं सेयवियाए नयरीए बहिया

ભાવાર્થ—(एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामे जणवए होत्था) હે ગૌતમ ! આ વિષે જે હું તમને કહું તે તમે સાંભળો. વિગત આ પ્રમાણે છે કે—આ અવસર્પિણી કાળના ચોથા આરકરૂપ કાળમાં અને ઋષભસ્વામીના વિચરણના સમયમાં આ જંબૂદ્વીપ નામના મધ્ય જંબૂદ્વીપમાં ભરતક્ષેત્રમાં કેકયાર્દ્ધ નામે જનપદ-દેશ-હતો. તાત્પર્ય એ છે કે કેકય દેશના અર્ધા ભાગમાં આર્યજનો નિવાસ કરતા હતા અને અર્ધા ભાગમાં અનાર્યજનો રહેતા હતા. એથી જ આર્યો અનાર્યોના નિવાસસ્થાનરૂપ તે કેકયપ્રદેશને અહીં અર્ધા રૂપમાં જુદા જુદા જનપદોના નામે સંબોધિત કરવામાં આવ્યો છે (रिद्धत्थिमिय समिद्धा जाव पडिरूवा) આ કેકયાર્દ્ધ દેશ ઋદ્ધ નભસ્તલસ્પર્શી, ઘણા ભવનો વગેરેથી યુક્ત હતો, અને બહુજન સંકુલ હતો. સ્તિમિત-સ્વચક્ર પરચક્રની બીકથી રહિત હતો અને સમૃદ્ધ ધનધાન્ય વગેરેથી પરિપૂર્ણ હતો યાવત્ પ્રતિરૂપ હતો. (तत्थ णं केयइअद्धे जणवए सेयविया णामं णयरी होत्था) કેકયાર્દ્ધ જનપદમાં શ્વેતવિકા નામે નગરી હતી. (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) આ નગરી પણ ઋદ્ધ સ્તિમિત અને સમૃદ્ધ હતી અને પ્રતિરૂપ-સર્વોત્તમ હતી. (तीसे णं सेयवियाए

तस्या खलु श्वेतविकाया नगर्या बहिः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अत्र खलु मृगवनं नाम उद्यानम् आसीत्-सर्वर्तुक पुष्पफलसमृद्धं रम्यं नन्दनवनप्रकाश-शुभसुरभिशीतलया छायया सर्वत एव समनुबद्धं प्रासादीयं यावत् प्रति रूपम् । तत्र खलु श्वेतविकाया नगर्यां प्रदेशी नाम राजा आसीत्-महाहि-मवद्-यावद् विहरति । अधार्मिकः अधर्मिष्ठः अधर्मख्यातिः अधर्मानुगः

उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था) उस श्वेत विका नगरी के ईशान कोने में मृगवन नामका उद्यान था (सव्वोउयपुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे, नंदणवणप्पगासे सुम सुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासाईए जाव पडिरूवे) यह उद्यान छहों ऋतुओं के पुष्पों एवं फलों से युक्त था अतः मनोरम था नन्दनवन के जैसा था. शुभ-सुखावह होने से अच्छी, एवं सुरभि-मनोज्ञ एवं शीतस्पर्शवाली ऐसी छाया से सर्वत्र यह समनुबद्ध-युक्त था, प्रासादीय था यावत् प्रतिरूप था (तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णाम राया होत्था) उस श्वेतविका नगरी में प्रदेशी नामका राजा था, (महया हिमवंत जाव विहरइ) इसमें महाहिमवान्, महामलय, मन्दर-(मेरुपर्वत) एवं महेन्द्र के जैसा था (अधम्मिए, अधम्मिट्ठे, अधम्मक्खाई, अधम्माणुए अधम्मपलोई, अधम्म पजणणे अधम्मसीलसमुयायारे, अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे) परन्तु वह धार्मिक नहीं था अधर्माचारी था, अतिशयरूप से अधर्माचरणशील था, अतएव अधर्मद्वारा ही यह जगत में प्रसिद्ध हुआ था अधर्मानुयायी

नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णाम उज्जाणे होत्था) ते श्वेतनगरीना ઇશાન કોણમાં મૃગવન નામે ઉદ્યાન હતું. (सव्वोउय पुप्फ,फलसमिद्धे रम्मे, नंदणवणप्पगासे सुमसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासाईए जाव पडिरूवे) આ ઉદ્યાન ષડ્ઋતુઓના પુષ્પો તેમજ ફળોથી સમૃદ્ધ હતુ. એથી નન્દનવન જેવું મનોરમ હતું શુભ-સુખાવહ હોવા બદલ સારી, અને સુરભિ-મનોજ્ઞ-અને શીતસ્પર્શવાળી છાયાથી તે સર્વત્ર સમનુબદ્ધ-યુક્ત હતું. પ્રાસાદીય હતું. યાવત્ પ્રતિરૂપ હતુ (तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णाम राया होत्था) તે શ્વેતવિકા નગરીમાં પ્રદેશી નામે રાજા હતો (महया हिमवंत जाव विहरइ) એમાં મહાહિમવાન, મહામલય, મંદર (મેરુપર્વત) અને મહેન્દ્ર જેટલુ બળ હતું (अधम्मिए, अधम्मिट्ठे, अधम्मक्खाई, अधम्माणुए, अधम्मपलोई अधम्मपजणणे, अधम्मसीलसमुयायारे, अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे) પણ તે ધાર્મિક હતો નહિ અધર્માચારી હતો, ખૂબ જ અધર્માચરણમાં પ્રવૃત્ત રહેનાર

अधर्मप्रलोकी अधर्मप्रजननः अधर्मशीलसमुदाचारः अधर्मेणैव वृत्तिकल्पयन् 'जहि छिन्धि भिन्धि' प्रवर्तक लोहितपाणि पापः चण्डो रौद्र क्षुद्र साहसिकः उत्कञ्चन-वञ्चन-माया-निकृति-कूटकपटसातिसम्प्रयोगबहुलो निःशीलो निर्व्रतो निर्गुणो निर्मर्यादो निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासो बहूनां द्विपदचतु

था, अधर्म का ही निरन्तर चिन्तवन किया करता था, प्रजाजनों में भी वह केवल प्रकर्षरूप से अपने उपदेशों द्वारा अधर्म को ही भरा करता था उसे ही प्रोत्साहित किया करता था, क्योंकि इसके स्वभाव में अधर्म भाव भरा हुआ था, और कार्य भी यह इसी प्रकार के किया करता था- यहांतक कि यह अपनी जीविका भी अधर्म से ही चलाया करता था तथा ('हण छिंद भिंद'-पवत्तए लोहियपाणी पावे चंडे, रुद्दे, खुद्दे, साहसिए उक्कंचण, वंचण माया-नियडि-कूड-कवड-साइ संपओगबहुले, निस्सीले, निव्वए, निग्गुणे, निम्मेरे, निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं) मारो, काटो, दो टुकडे करदो इत्यादि वाक्यों द्वारा जीवों के हिंसात्मक कार्यों में अपने आश्रित जनों को प्रवृत्तिशील बनाया करता था, इसके हाथ सदा रक्त से भरे रहते थे, यह साक्षात् पापका अवतार था क्यों कि पापकर्म में यह सदा परायण बना रहता था, यह बहुत अधिक क्रोधी था, रौद्र-क्रूररूप होने से भयानक था, तुच्छ बुद्धिवाला होने से क्षुद्र था सहसाकर्मकरणशील

હતો. એથી તે અધર્મીના રૂપમાં જ જનતમાં પ્રસિદ્ધ થઈ ગયો હતો. તે અધર્માનુયાયી હતો. તે રાતદિવસ અધર્મનું જ ચિંતન કર્યા કરતો હતો. પ્રજાની સામે પણ તે અધર્માચરણ તરફ પ્રવૃત્ત થવાના ઉપદેશો આપતો રહેતો હતો. તે અધર્મને જ પ્રોત્સાહિત કરતો રહેતો હતો. તેના અણુ અણુમાં અધર્મ જ વ્યાપક થઈ ગયો હતો. તેના બધાં કાર્યો પણ અધર્મથી પ્રેરાઈને થતાં હતાં તે પોતાનું ભરણ પોષણ પણ અધર્મના આધારે જ કરતો હતો. તેમજ (हणछिंद भिंद पवत्तए लोहियपाणी पावे चंडे, रुद्दे, खुद्दे साहस्सिए, उक्कंचण, वंचण, मायानियडि कूड-कवडे साइ संपओगबहुले निस्सीले, निव्वए, निग्गुणे, निम्मेरे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं) મારો, કાપો, બે ટુકડા કરી નાખો વગેરે વાક્યો વડે તે જીવોના હિંસા વગેરે કાર્યોમાં પોતાના આશ્રિતોને પ્રવૃત્તિશીલ રાખતો હતો. તેના હાથો સદા રક્તથી ખરડાએલા રહેતા હતા. તે સાક્ષાત્ પાપનો અવતાર હતો. કેમકે તે સદા પાપ પરાયણ જ રહેતો હતો. અધિક બહુજ ક્રોધી હતો. રૌદ્ર-ક્રૂરરૂપ હોવાથી ભયાનક હતો. તુચ્છબુદ્ધિવાળો હોવાથી ક્ષુદ્ર હતો, સહસાકર્મકરણશીલ

प्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां घाताय वधाय उच्छेदनाय अधर्मकेतुः समुत्थितः, गुरूणां नो अभ्युत्तिष्ठति नो विनय प्रयुङ्क्ते, स्वकस्यापि च जनपदस्य नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति ॥ सू० ९९ ॥

होने से अर्थात् विना विचारे कार्य करनेवाला होने से साहसिक था, उत्कोच-लांच, वंचन-परप्रतारण, माया-परवंचनबुद्धि, निकृतिगूढमाया, कूट-गूढमाया को ढंकने के लिये अन्यमाया करना, कपट-वेष भाषा आदिको बदलना-विपरीत बना लेना, इन सब का जो सातिसंप्रयोग-प्रकर्षरूप से व्यापार उस व्यापार से यह व्याप्त था, तथा, निश्शील-शीलवर्जित था, निर्व्रत-हिंसादिककुकृत्यरूप पापों से विरति का अभाववाला होने से व्रतरहित था, निर्गुण-क्षान्त्यादिक गुणों के अभाव से युक्त होने के कारण निर्गुण था, निर्मर्यादः-मर्यादा रहित था, परस्त्री वर्जनादिरूप मर्यादा से रहित होने के कारण निर्मर्याद था, प्रत्याख्यान, पौषध और उपवास इनसे रहित था, तथा अनेक (दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खी सिरिसवाणघायाए वहाए उच्छेयणयाए, अधम्मकेऊ समुट्ठिए) द्विपद्-मनुष्य वगैरह, चतुष्पद्-मृगादि वगैरह पशु-ग्राम की गाय वगैरह, सरीसृप-भुजपरिसर्प एवं उरःपरिसर्प-नकुल सर्प आदि इन सब की हत्या करने, इन्हें मारने में-चोट पहुंचाने में और प्राण रहित करने के लिये अधर्मरूप केतुग्रह के जैसा उत्पन्न हुआ था, अर्थात् केतुग्रह के उदित होने पर लोक में जिस प्रकार से

હોવાથી એટલે કે વગર વિચાર્યું કાર્ય કરનાર હોવાથી-તે સાહસિક હતો. ઉત્કોચ-લાંચ, વંચન-પર પ્રતારણ, માયા-પરવંચન બુદ્ધિ નિકૃતિ-ગૂઢ માયા, કૂટ-ગૂઢમાયાને છુપાવવા માટે બીજી માયા કરવી, કપટ વેષ ભાષા વગેરે બદલી નાખવા, આ બધા દુર્ગુણોની પ્રકર્ષતા તેમા વિદ્યમાન હતી. તથા તે નિશ્શીલ-શીલ વર્જિત હતો, નિર્વ્રત-હિંસા વગેરે કુકૃત્યરૂપપાપો તરફ પ્રવૃત્તિ રાખનાર હોવાથી તે વ્રત વગરનો હતો, નિર્ગુણ-ક્ષાન્તિ વગેરે ગુણો તેમાં નહોતા તેથી તે નિર્ગુણ હતો, નિર્મર્યાદ-મર્યાદા રહિત હતો પરસ્ત્રી વર્જનાદિરૂપ મર્યાદાથી રહિત હોવા બદલ નિર્મર્યાદ હતો. તે પ્રત્યાખ્યાત, પૌષધ અને ઉપવાસ વગર હતો. ઘણા (दुप्पय चउप्पय मियपसुपक्खी सिरिसवाणघायाए वहाए अच्छेयणयाए, अधम्मकेऊ समुट्ठिए) દ્વિપદ-માણુસ વગેરે ચતુષ્પદ-મૃગ વગેરે, પશુ-ગાય વગેરે, પક્ષી-ચકલીઓ વગેરે, સરીસૃપ-ભુજપરિસર્પ અને ઉર પરિસર્પ-નકુલ સર્પ વગેરે આ બધાને હણવામા, મારવામાં.

'गोयमा !-इति—

टीका—गौतमस्वामिनः प्रश्नं श्रुत्वा श्रमणो भगवान् महावीरो भगवन्तं गौतमस्वामिनं 'गौतम' इति आमन्त्र्य=सम्बोध्य एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-हे गौतम ! एवं खलु त्वम् जानीहि-तस्मिन् काले=अस्या अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकलक्षणे काले, तस्मिन् समये केशिस्वामि विहरणोपलक्षिते समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते वर्षे=भारतक्षेत्रे केकयार्द्ध नाम जनपदो=देश आसीत्। अत्रेदं बोध्यम्-केकयदेशस्य अर्द्धम् आर्यजननिवासस्थानम्, अर्धं च अनार्यजननिवासस्थानम्। आर्यानार्ययो निवासभूतत्वात् केकयस्य अर्द्धद्वयं पृथक्पृथग्जनपदत्वेन विवक्षितमिति। स केकयार्द्धजनपद ऋद्धस्तिमितसमृद्धः-तत्र-ऋद्धः नभःस्पर्शिबहुलप्रासादयुक्तो बहुजनसङ्कुलश्च, स्तिमितः स्वचक्रपरचक्रभयरहितः, समृद्धः=धनधान्यादिपरिपूर्णः, पदत्रयस्य कर्मधारयः। तत्र खलु केकयार्द्धे-जनपदे श्वेतविका नाम नगरी आसीत्। सा नगरी ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत्-प्रतिरूपा। यावत्पदेन-औपपातिकसूत्रोक्तचम्पानगरीवर्णनगतः पदसमूहोऽत्रापि बोध्यः। प्रतिरूपा= सर्वोत्तमा च आसीत्। तस्याः खलु श्वेतविकायाः नगर्या बहिः बाह्यप्रदेशे, उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे अत्र खलु मृगवनं नाम उद्यानम् आसीत्। तद् उद्यानं सर्वर्तुकपुष्पफलसमृद्धम्=षड्ऋतुसम्भविपुष्पफलसमन्वितं रम्यम्

अनेक विप्लव (उपद्रव) होते हैं, उसीप्रकार से इस राजा के शासन होने पर देशभर में त्रास था, (गुरूणं णो अब्भुट्ठेइ, णो विणय पउंजइ, सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेइ) आते हुए मातापितादिरूप गुरुजनों को देखकर यह उनका आदर करने के लिये खडा नहीं होता था, उनके विषय में यह विनययुक्त नहीं होता था, तथा अपने जनपद केकयार्द्ध जनपद के प्रजाजनों की कर लेकर भी पालनरूपवृत्ति यथायोग्य रूप से नहीं करता था ।

વિપ્લવો (ઉપદ્રવો) થાય છે, તેમજ આ રાજાના શાસનકાળમાં સમસ્ત દેશમાં ત્રાસ અને અશાંતિનું વાતાવરણ પ્રસરી રહ્યું હતું (ગુરૂણં णो अब्भुट्ठेइ, णो विणयं पउंजइ, सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेइ) માતાપિતા વગેરે ગુરુજનોને આવતા જોઈને પણ તે તેમનો આદર કરવા માટે ઉભો થતો ન હતો. તેમની સામે તે વિનયશીલ થઈને રહેતો ન હતો. તેમજ પોતાના જનપદ કેકયાર્દ્ધ જનપદની પ્રજા પાસેથી ટેક્સ લઈને પણ તે સરસ રીતે તેમનું પાલન કે રક્ષણ કરતો ન હતો.

मनोरमं नन्दनवनप्रकाशं=नन्दनवनसदृशं, शुभसुरभिशीतलया शुभा=सुखावहत्वेन शुभा सुरभिः=मनोज्ञा शीतला=शीतस्पर्शयुक्ता, पदत्रयस्य कर्मधारयः तथाभूतया छायया सर्वत एव=सर्वप्रदेशावच्छेदेनैव समनुबद्धां=युक्तां प्रासादीया यावत् प्रतिरूपां चासीत्। तत्र खलु श्वेतविकायां नगर्यां प्रदेशी नाम राजा आसीत्। स प्रदेशी राजा महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारो यावद् विहरति। प्रदेशिराजस्य सकलं वर्णनमौपपातिकसूत्रोक्तकूणिकराजवद् बोध्यम्। स प्रदेशी राजा तु-अधार्मिकः-धर्मेण चरति धार्मिकः, न धार्मिकोऽधार्मिकः-अधर्माचारी, अधार्मिकस्तु सामान्यधर्माचरणेनापि भवति, अत आह—अधर्मिष्ठ इति। अधर्मिष्ठः=सातिशयाधर्माचरणशीलः, अधर्मख्यातिः-अधर्मेण ख्यातिर्यस्य स तथा अधर्मद्वारैव जगति प्रसिद्धिं गतः, अधर्मानुगः-अधर्मम् अनुगच्छतीति-अधर्मानुगः-अधर्मानुयायी, अधर्मप्रलोकी-अधर्ममेव प्रलोकते=निरन्तरं विचारयति यः सः-अधर्मविषयकविचारपरायणः, अधर्मप्रजननः-अधर्ममेव प्रकर्षेण जनयति=उत्पादयति लोकेषु यः सः प्रजास्वपि अधर्मभावोत्पादक इत्यर्थः, तथा अधर्मशीलसमुदाचारः- अधर्म एव शील=स्वभावः समुदाचारः=अनुष्ठानं च यस्य स तथा अधर्ममयस्वभावयुक्तः अधर्मानुष्ठानपरायणश्चेत्यर्थः, तथा-अधर्मेणैव वृत्तिं=जीविका कल्पयन्=कुर्वन्, तथा-जीवान् प्रति जहि=मारय, छिन्धि=विदारय भिन्धि=द्विधाकुरु' इत्यादि वाक्यैः प्रवर्त्तकः=स्वाश्रितान् जनान् प्रवर्त्तयिता, अतएव-लोहितपाणिः=रक्तखरण्टितहस्तः, पापः=पापस्वरूपः-सर्वदा पापपरायणत्वात्, चण्डः=चण्डस्वरूपः-तीव्रतरकोपावेशात् रौद्रः=भयानकः=क्रूररूपत्वात्, क्षुद्रः=तुच्छबुद्धित्वात् साहसिकः=सहसा कर्मकरणशीलः-असमीक्षितकारित्वात्, तथा-उत्कञ्चन-वञ्चन-माया-निकृति-कूट-कपट-सातिसम्प्रयोगबहुलः-तत्र-उत्कञ्चनम्=उत्कोचग्रहणम्, 'उत्कोचः'-'लाञ्च' इति भाषा

टीकार्थ—इसका, मूलार्थ - जैसा ही है-श्वेतविका नगरी का वर्णन औपपातिकसूत्र में वर्णित चंपानगरी जैसा ही जानना चाहिये-यही बात यहा यावत्पद से प्रकट की गई है तथा प्रदेशी राजा का भी वर्णन औपपातिकसूत्र में वर्णित हुए कूणिक राजा के जैसा ही समझना ॥ सू. ९९ ॥

ટીકાર્થ—મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે શ્વેતવિકા નગરીનુ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં વર્ણિત ચપાનગરી જેવું જ સમજવુ જોઈએ યાવત્ પદથી એજ વાત અહીં સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે તેમજ પ્રદેશી રાજાનુ વર્ણન પણ ઔપપાતિક સૂત્રમા વર્ણિત કૂણિક રાજા જેવુ જ સમજવુ જોઈએ. ॥સૂ૦ ૯૯॥

प्रसिद्ध । भञ्जन=परमतारण माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृति=गूढमाया, कूटम्=गूढमायाच्छादनार्थमन्यमायाकरणम्, कपट=वेषभाषाविपर्ययकरणम् एतैः सातिसम्प्रयोगः=मधर्पेण व्यापारस्तेन बहुल-व्याप्तः, तथा-निश्शील-शीलवर्जितो ब्रह्मचर्यरहितत्वात्, निव्रत=व्रतरहितो हिंसादिविरत्यभावात्, निर्गुणः=गुणरहितः-क्षान्त्यादिगुणाभावात्, निर्मर्यादः=मर्यादारहितः-परस्त्री परिवर्जनादिरूप मर्यादारहितत्वात्, निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासः=प्रत्याख्यान पौषधोपवास वर्जितः, तथा-बहूनां द्विपद-चतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां, द्विपदाः=मनुष्या-दासीदासादयः, चतुष्पदाः ये मृगाः=आरण्याः, गवादयश्च ते-चतुष्पदमृगपशवः, पक्षिणः-प्रसिद्धाः, सरीसृपाः=भुजोरुभ्यां सर्पणशीला गोधादयः, एषां पदानामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तेषां घ ... घाताय=ताडनाय उच्छेदनाय=निर्मूलनाय अधर्मकेतुः=अधर्मरूपकेतुग्रह समुत्थित=समुद्गतः। केतुग्रहे समुदिते सति लोके विप्लवो भवति, स्मिन नृपतौ शासके सति जनपदे भासो वर्तते। तथा-स गुरून् अभ्युत्तिष्ठति=आगच्छतो गुरुन्=मातापित्रादीन् दृष्ट्वा तेषामादरं कर्तुं अभ्युत्थाता भवति, तेषु=पित्रादिगुरुजनेषु विनयं नो प्रयुङ्क्ते=विनययुक्तो भवति तथा-स प्रदेशी राजा स्वकस्यापि च जनपदस्य=केकयार्द्ध स्य करभरवृत्तिं-करात्=कर गृहीत्वा यो भरः प्रजानां पालन तद्रूपा वृत्तिस्तां सम्यक्=यथातथ्येन न प्रवर्तयति=न विदधाति। स्व रक्षणकर्मणि समुद्युक्तो न भवतीत्यर्थः ॥सू० ९९॥

मूलम्—तस्स णं पएसिस्स रन्नो सूरियकंता नामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ। पएसिणा रन्ना सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे रूवे जाव विहरइ ॥ सू० १०० ॥

छाया—तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता नाम देवी आसीत् सुकुमालपाणिपादा धारिणीवर्णकः। प्रदेशिना राज्ञा सार्धम् अनुरक्ता अविरक्ता इष्टान् शब्दान् रूपाणि यावद् विहरति ॥ सू० १०० ॥

'तस्स णं पएसिस्स रन्नो' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तस्स णं पएसिस्स रन्नो) उस प्रदेशी राजा की (सूरिय कंता नाम देवी होत्था) सूर्यकान्ता नामकी रानी थी (सुकुम ...

तस्स णं पएसिस्स रन्नो' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तस्स ण पएसिस्स रन्नो) ते प्रदेशी राजानी (सूरियकंता देवी होत्था) सूर्यकांता नामे राणी हती. (सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ)

टीका-'तस्स णं' इत्यादि—

तस्य=पूर्वोक्तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता नाम देवी=राज्ञी आसीत्। सा सूर्यकान्ता देवी सुकुमालपाणिपादा-सुकुमाल=सातिशयकोमलं पाणिपादं=हस्तौ पादौ च यस्याः सा तथाभूताऽऽसीत्। सूर्यकान्तायाः सर्वं वर्णनं धारिणीवद् बोध्यम्। एतदेव सूचयितुमाह=धारिणीवण्णओ' इति औपपातिकसूत्रोक्तधारिणीवद् बोध्यम्। सा सूर्यकान्ता देवी प्रदेशिना राज्ञा सार्द्धं=सह अनुरक्ता=सातिशयप्रेमयुक्ता अविरक्ता=प्रातिकूल्यं गतेऽपि पत्यौ स्वयं सदा प्रसन्नवदना सती इष्टान्=अभिलषितान्, शब्दान् रूपाणि यावद्=गन्धान् रसान् स्पर्शांश्चेति पञ्चविधान् मनुष्यान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् प्रत्यनुभवन्ती=उपभुञ्जाना विहरति ॥सू० १००॥

मूलम्—तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था, सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे। से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था, पएसिस्स रन्नो

धारिणीवण्णओ) इसके हाथ पैर आदि अवयव बडे ही सुकुमार थे. इसका पूर्ण वर्णन धारिणी रानी के जैसा ही है. धारिणी का वर्णन औपपातिक सूत्र में दिया गया है। (पएसिणा रन्नो सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे रूवे जाव विहरइ) प्रदेशी राजा के साथ यह सातिशय प्रेम युक्त बने होकर अभिलषित मनुष्य संबंधि कामभोगों को भोगती थी, यदि राजा कभी प्रतिकूल भी हो जाता तो उस समय यह उससे प्रतिकूल नहीं बनती, प्रत्युत सदा प्रसन्नवदन ही रहती, यहां 'शब्दरूप' से रूप गंध, रस और स्पर्श ये पांच प्रकार के कामभोग गृहीत हुए हैं.।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥ सू० १०० ॥

તેના હાથપગ વગેરે અવયવો અતીવ સુકુમાર હતા રાણીનું વર્ણન ધારિણી રાણી જેવુ જ છે ઔપપાતિક સૂત્રમા ધારિણીનુ વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. (पएसिणा रन्नो सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे रूवे जाव विहरइ) પ્રદેશી રાજાની સાથે તે સાતિશય પ્રેમયુકત વ્યવહાર રાખીને અભિલષિત મનુષ્ય સંબંધિ કામ ભોગો ભોગવતી હતી જો કદાચ રાજા કોઈ દિવસ પ્રતિકૂલ થઈ જતો તો તે તેની સામે અનુકૂલ થઈને જ રહેતી હતી તે સદા પ્રસન્ન વદન જ રહેતી હતી. અહીં "શબ્દરૂપ"થી રૂપ, ગંધ, રસ અને સ્પર્શ એ પાંચ પ્રકારના કામભોગોનું ગ્રહણ થયું છે. ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે ॥૧૦૦॥

रज्ज च रट्ठ च बल च वाहणं च कोस च कोट्ठागार च पुर च अंते उर च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥सू० १०१॥

छाया—तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञो ज्येष्ठः पुत्रः सूर्यकान्ताया देव्याः आत्मजः सूर्यकान्तो नाम कुमार आसीत्, सुकुमारपाणिपादो यावत् प्रतिरूपः। स खलु सूर्यकान्तः कुमारो युवराजोऽप्यासीत्, प्रदेशिनो राज्ञो राज्यं च राष्ट्रं च वाहनं च बलं च कोशं च कोष्ठागारं च पुरं च अन्तःपुरं च स्वयमेव प्रत्युत्प्रेक्षमाणः प्रत्युत्प्रेक्षमाणो विहरति ॥ १०१ ॥

'तएणं पएसिस्स रण्णो' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नाम कुमारे होत्था) उस प्रदेशी राजा के पुत्र था, जिसका नाम सूर्यकान्त था यह सूर्यकान्तादेवी से उत्पन्न हुआ था (सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे) इसके हाथ-पग बडेही सुकुमार थे यावत् यह प्रतिरूप-सर्वोत्तम था-यहां यावत् शब्द प्रकट करने के लिये प्रयुक्त हुआ है कि औपपातिक सूत्रोक्त धारिणी के वर्णन में आगत पदसमूह में पुल्लिङ्ग की विभक्तियाँ लगाकर सूर्यकान्त का वर्णन करना चाहिये (से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था) यह सूर्यकान्त कुमार युवराज भी था अतः यह पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे२ विहरइ) प्रदेशी राजा के राष्ट्रादिसमुदायरूप राज्यका, जनपदरूप (देश राष्ट्रका, सैन्यरूप बल का, हस्त्यादि एवं शिबिकादिरूप वाहन

'तएणं पएसिस्स रण्णो' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नाम कुमारे होत्था) ते प्रदेशी राजाने पुत्र हतो. सूर्यकांत नाम हतुं ते सूर्यकांता देवीना गर्भथी उत्पन्न थयो हतो. (सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे) तेनां हाथ पग अहुज सुकोमळ हतां. यावत् ते प्रतिरूप-सर्वोत्तम हतो. अहीं यावत् शब्दनो प्रयोग एटला माटे करवामां आव्यो छे के औपपातिक सूत्रना धारिणीना वर्णनमां जे पदो आव्यां छे तेमां पुल्लिंग नी विभक्तिओ लगाडीने सूर्यकांतनुं वर्णन समजवुं जोईए (से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था) अने सूर्यकांत कुमार युवराज पण हतो. एथी (पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ) प्रदेशी राजाना राष्ट्रादि समुदायरूप राज्यनुं, जनपदरूप राष्ट्रनुं, सैन्यरूप बळनुं, हस्ति वगेरे अने शिबिका वगेरे वाहननुं, भांडागाररूप

टीका—'तस्स णं इत्यादि—

तस्य खलु पूर्वोक्तस्य प्रदेशिनो राज्ञो ज्येष्ठः पुत्रः सूर्यकान्तायाः देव्या आत्मजः=अङ्गजातः सूर्यकान्तो नामकुमार आसीत्, स कुमारः सुकुमालपाणिपादो यावत्प्रतिरूपश्च आसीत्। यावत्पदेन- औपपातिकसूत्रोक्तधारिणीवर्णकग्रन्थः पुँल्लिङ्गत्वेन विपरिणमय्यात्र ग्राह्य इति। स खलु सूर्यकान्तकुमारो युवराजोऽपि आसीत्। स सूर्यकान्तो युवराजः प्रदेशिनो राज्ञो राज्यं=राष्ट्रादिसमुदायात्मकं च, राष्ट्रं=जनपदं, बलं=सैन्यं, वाहनं=हस्त्यादिकं शिविकादिकं च, कोशं=भाण्डागारं कोष्ठागारं=धान्यगृहं पुरं=नगरं, अन्तःपुरं च स्वयमेव प्रत्युत्प्रेक्षमाणः प्रत्युत्प्रेक्षमाणः निरीक्षमाणो विहरति-राज्यराष्ट्रादि सर्वव्यवस्थां पश्यतीत्यर्थः ॥सू० १०१॥

(मूलम्—तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठ भाउयवयंसए चित्ते णामं सारही होत्था अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड भेय उवप्पयाणअत्थसत्थ ईहामइविसारए उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढीपमाणं आहारे आलंबणभूए चक्खुभूए सव्वट्ठाण सव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुराचिंतए यावि होत्था ॥ सू० १०२ ॥

छाया—तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञो ज्येष्ठ भ्रातृ वयस्यकश्चित्रो नाम सारथिरासीत्। आढयो यावद् बहुजनस्य अपरिभूतः साम—दण्डभेदोपप्रदानार्थ

का, भाण्डागाररूप कोश का, धान्यगृहरूप कोष्ठागार का, एवं अन्तःपुर का अपने आप ही समयर पर निरीक्षण अवलोकन करता था.

टीकार्थ स्पष्ट है ॥ सू १०१ ॥

'तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठ भाउयवयंसए' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तस्स ण पएसिस्स रन्नो जेट्ठ भाउयवयसए) इस प्रदेशी

કોશનું, ધાન્યગૃહરૂપ કોષ્ઠાગારનું, નગરનું અને અંતઃપુરનું પોતાની મેળે જ યથા સમય નિરીક્ષણ કરતો હતો એટલે કે તે રાજ્ય રાષ્ટ્ર વગેરેની સર્વ વ્યવસ્થાનું અવલોકન કરતો હતો. ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે ॥૧૦૧॥

'तस्स ण' पएसिस्स रन्नो जेट्ठ भाउयवयसए' ઇત્યાદિ.

સૂત્રાર્થ—(तस्स ण पएसिस्स रन्नो जेट्ठ भाउयवयसए) તે પ્રદેશી રાજાને

राजा का ज्येष्ठ भाइ के जैसा एवं अधिक- उमरवाला (चित्ते णामं सारही होत्था) चित्र नाम का सारथी था। (अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय-उवप्पयाण अत्थसत्थ ईहा मइविसारए) यह चित्र सारथी आढ्य-संपन्न था यावत् बहुजनों द्वारा भी अपरिभूत था यहां यावत् शब्द से 'दित्ते वित्थिण्णविउल-सयणासण जाण-वाहणे, बहुधण-बहुजायरूव-रयए, आओगसंपओगसंपउत्ते, विच्छड्डियविउलभत्तपाणे, बहुदासीदासगोमहिस गवेलयप्पभूए' इस पाठ का संग्रह हुआ है इसका अर्थ इस प्रकार से है- यह चित्र सारथि दीप्त तेजस्वी था, इसके बडे २ अनेक मकान थे, बडे२ अनेक तल्प (शय्या) थे, बडे२ अनेक पीठकादिक आसन थे शकटप्रभृति (गाडी वगैरह) यान थे, अश्वादिकों से यह सदा आकीर्ण युक्त बना हुआ था, विपुल धन का-गणिम आदि द्रव्य का, यह स्वामी था इसके पास विपुल स्वर्ण था, तथा रजत चांदी थी आयोगप्रयोग से यह संप्रयुक्त था, द्विगुणादिलाभके लिये रुपया आदि को कर्ज लेने वालों के लिये देना इसका नाम आयोग है, और इसका उपाय चिन्तन करना सो प्रयोग है अथवा- अपने द्रव्य को दुगा आदि करने की लिप्सा से अधमर्ण-कर्ज लेने वालों को उसे देना इसका नाम आयोगप्रयोग संप्रयुक्त है यह चित्र सारथि इस अधिक द्रव्यों

મોટાભાઇ જેવો ઉંમરમાં તેના કરતાં વધારે (चित्ते णामं सारही होत्था) ચિત્ર નામે સારથિ હતો (अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय उवप्पयाण अत्थ सत्थ ईहा मइ विसारए) એ ચિત્ર સારથિ આઢ્ય-સમૃદ્ધ-હતો. યાવત્ અનેક લોકોથી અપરિભૂત હતો, અહીં યાવત્ શબ્દથી "दित्ते वित्थिण्णविउलसयणासण जाण-वाहणा-इण्णे बहुधण-बहु जाय-रूव-रयय, आओगसपओगसंपउत्ते, विच्छड्डियविउलभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलयप्पभूए' આ પાઠનું ગ્રહણ થયું છે આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે તે ચિત્ર સારથિ દીપ્ત-તેજસ્વી હતો, ઘણાં મોટા મોટા તેને મકાનો હતાં. મોટી મોટી અનેક શય્યાઓ (તલ્પ) હતી. પીઠક વગેરે મોટા મોટા ઘણા આસનો હતાં. શકટ-ગાડી વગેરે ઘણાં વાહનો હતાં. હય-ઘોડાઓ-વગેરેથી તે સદા પરિવેષ્ટિત રહેતો હતો વિપુલ ધનનો-ગણિમ વગેરે દ્રવ્યનો એ સ્વામી હતો તેની પાસે પુષ્કળ સ્વર્ણ હતું, અને ચાંદી પણ હતી. આયોગ પ્રયોગથી એ સંપ્રયુક્ત હતો, બમણા લાભની અપેક્ષાએ જે રૂપિયા વગેરે સિક્કાઓ બીજાને વ્યાજે આપવામાં આવે તેને આયોગ કહે છે અને એના માટે જે યુક્તિ પ્રયુક્તિઓનું ચિંતન કરવામાં આવે છે તેને પ્રયોગ કહે છે અથવા તો પોતાના ધનને બમણું વગેરે કરવાની ઇચ્છાથી અધમર્ણ-કર્જ લેનારને આપવું તેનું નામ આયોગ પ્રયોગ સંપ્રયુક્ત છે એ ચિત્ર સારથિ અધિક ઉપાર્જનરૂપ ક્રિયામાં

शास्त्रेहामतिविशारदः औत्पात्तिक्या वैनयिक्या कर्मजया पारिणामिक्या चतुर्विधया बुद्धया उपपेतः, प्रदेशिनो राज्ञो बहुषु कार्येषु च कारणेषु च कुटुम्बेषु च मन्त्रेषु च गुह्येषु च रहस्येषु च निश्चयेषु च व्यवहारेषु च आपृच्छनीयः प्रतिपृच्छनीयो मेढिः प्रमाणम् आधारआलम्बनभूतश्चक्षुर्भूतः सर्वभूमिकासु लब्धप्रत्ययो वितीर्णविचारो राज्यधुराचिन्तकश्चापि आसीत ॥१०२॥

पार्जनरूप क्रिया में प्रवृत्त था. तथा-विपुल मात्रा में इसके यहां भोजन पान खालेने पर भी बचा रहता था. दासी, दास, गो, महिष एवं गवेलक-मेष ये सब इसके यहां प्रचुरसंख्या में थे. तथा यह चित्र सारथि साम, दंड, भेद और दान इन चार राजनीतियों में अर्थप्राप्ति के साधनों का प्रतिपादन करने वाले शास्त्र में एव ईहाप्रधान बुद्धि में, विशारद निपुण था (उप्पत्तियाए, वेणइयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धिए उववेए) औत्पत्तिकी-स्वाभाविक, वैनयिकी, कर्मजा तथा पारिणामिकी अवस्था इन चार प्रकार की बुद्धियों से युक्त था (पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य, कुडुंबेसु य, मंतेसु य, गुज्झेसु य, रहस्सेसु य, निच्छएसु य, ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे) प्रदेशी राजा के अनेक कार्यों में, कार्य संपादक हेतुओं में, कुटुम्ब के विषय में, कर्तव्यनिश्चयार्थ गुप्तमंत्रणाओं में, गुह्यों में-लज्जा से गोपनीय कामों में, रहस्यों में प्रच्छन्नव्यवहारों में, एवं निश्चयों में-पूर्ण निर्णयों में, एवं व्यवहारों में-बान्धवादिकों द्वारा समाचरित लोकविपरीत आदिक्रियाओं के प्रायश्चित्तों में अच्छी तरह से यह

પ્રવૃત્ત હતો તેમજ એને ત્યાં પુષ્કળ માણુમા લોકો ભોજન-પાન કરતા હતા છતાંએ ભોજન સામગ્રી ખૂબ પડી રહેતી હતી. દાસી, દાસ, ગાય મહિષ અને ગવેલક-મેષ આ બધા એનેત્યા પ્રચુર સંખ્યામાં હતા એ ચિત્ર સારથિ સામ. દંડ, ભેદ અને દાનઆ ચારે ચાર રાજનીતિ-એમાં, અર્થ પ્રાપ્તિના સાધનોનું પ્રતિપાદન કરનારાં શાસ્ત્રોમા અને ઈહા પ્રધાન બુદ્ધિમા વિશારદ-નિપુણ હતો. (उप्पत्तियाए, वेणईयाए. परिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धिए उववेए) ઔત્પત્તિકી-સ્વાભાવિક, વૈનયિકી, કર્મજ અને પારિણામિકી આ ચાર પ્રકારની બુદ્ધિઓથી તે યુકત હતો (पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य, कुडुंबेसु य, मंतेसु य. गुज्झेसु य, रहस्सेसु य, निच्छएसु य, ववहारेसु य, आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे) પ્રદેશી રાજાના અનેક કાર્યોમા, કાર્ય સંપાદક હેતુઓમા, કુટુંબની બાબતમા, કર્તવ્ય નિશ્ચયાર્થ ગુપ્ત મંત્રણાઓમા, ગુહ્યોમા૦શરમને લીધે ગોપનીય કામોમાં, રહસ્યોમા—પ્રચ્છન્ન વ્યવહારોમા અને નિશ્ચયોમ પૂર્ણ નિર્ણયોમા અને વ્યવહારોમ. બાધવો વગેરે વડે લોક વિપરીત આચરણ કરવા બદલ તેમને પ્રાયશ્ચિત્ત કરાવવામા. વારે ઘડીએ

टीका—'तस्स ण' इत्यादि—

तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञा ज्येष्ठभ्रातृकवयस्यकः=ज्येष्ठभ्रातृतुल्यो वयस्यकः तस्य परमादरणीयत्वात् चित्रो नाम=चित्रनामा सारथिः आसीत्। स चित्रसारथिः आढ्यः=समृद्धः 'जाव-यावत्-यावत्पदेन-दित्ते वित्थिण्ण विउल-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरयए आओग सपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय विउलभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलग

बार बार पूछा जाता था-विशेषरूप से पूछा जाता था (मेढीपमाणे आहारे आलंबणभूए, चक्खुभूए, सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुराचिंतए यावि होत्था) जिस प्रकार मेढि का आश्रित करके बैल घूमते हैं उसी प्रकार उसे आश्रित करके मंत्रिमंडल मंत्रकरनेरूप कार्यों में प्रवृत्त होता था अतः वह मेढीरूप था, तथा प्रत्यक्षादिक प्रमाणों की तरह वह हेयोपादेय पदार्थों में प्रवृत्तिनिवृत्तिशाली होने के कारण संशय रहित होकर पदार्थों का परिच्छेदक था इसलिये वह प्रमाणरूप था आधार भूतपदार्थों की तरह वह सब का आश्रयदाता था रज्जु स्तंभादिकों की तरह वह विपत्तिरूप कूप में पतित जनों का उद्धारक होने के कारण अवलम्बनरूप था यहां यह शंका हो सकती है आधार और अवलम्बन में क्या भेद है? इस का उत्तर है कि जिसके सहारे से मनुष्य अपनी उन्नति करता है या स्वस्थावस्थ होता है उसका नाम आधार है तथा जिसके अवलम्बन से विपत्तियां दूर होती है उसका नाम अवल-

---

એની સામે મંત્રણા કરવામાં આવતી હતી અને સવિશેષ રૂપમાં એને પૂછવામાં આવતું હતું (मेढीपमाण आहारे आलंबणभूए सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुराचिंतए यावि होत्था) મેઢિના આધારે જેમ બળદ ફરે છે તેમ એને આધાર માનીને મંત્રિમંડળ મંત્રણા વગેરે કાર્યોમાં પ્રવૃત્ત થતું હતું એથી તે મેઢીરૂપ હતો. પ્રત્યક્ષાદિક પ્રમાણોની જેમ તે હેયોપાદેય પદાર્થોમાં પ્રવૃત્તિ નિવૃત્તિશાલી હોવા બદલ પદાર્થોનો તે નિઃસંશયપણે પરિચ્છેદક હતો. એથી તે પ્રમાણરૂપ હતો. આધારભૂત પદાર્થોની જેમ તે સૌ કોઈનો આશ્રયદાતા હતો. રજ્જુ સ્તંભાદિકોની જેમ વિપત્તિરૂપ કૂપમાં પડેલાઓનું રક્ષણ કરનાર હોવાથી તે અવલંબનરૂપ હતો. અહીં આધાર અને અવલંબનના અર્થ વિષે શંકા ઉત્પન્ન થઈ શકે છે કે એઓ બન્નેમાં શો તફાવત છે? તો સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે જેના સહારે-આશ્રયે માણસ ઉન્નતિ કરે છે કે સ્વરૂપાવસ્થ હોય છે તેનું નામ આધાર છે તેમજ જેના અવલંબનથી વિપત્તિ દૂર થાય છે

ल्पभूए' छाया—दीप्तो विस्तीर्णविपुलशयनासनयानवाहनाकीर्णो बहुधन-बहुजातरूप-रजतआयोगसंप्रयोगसंप्रयुक्तो विच्छर्दितविपुलभक्तपानो बहु दासीदास गोमहिष गवेलकप्रभूतः इतिसंग्राह्यम्, तत्र-दीप्तः=तेजस्वी विस्तीर्ण विपुलभवनशयनासनयानवाहनाकीर्णः-विस्तीर्णानि=विस्तृतानि विपुलानि बहूनि भवनानि=गृहाः, शयनानि=तल्पानि आसनानि=पीठकादीनि, यानानि= शकटप्रभृतीनि, वाहनानि=हयादयस्तैराकीर्ण =व्याप्तःसमुपेतो वा, बहुधन बहु-जातरूपरजत.-बहु=विपुलं धनं=गणिमप्रभृति यस्य स बहुधनः, बहु=विपुलं जातरूपं=सुवर्णं रजतं=रूप्यं च यस्य स बहु जातरूपरजतः-बहुधनश्चासौ बहुजातरूप-रजतश्चेति-बहुधनबहुजातरूपरजतः, तथा आयोगसंप्रयोग-संप्रयुक्तः आसमन्ताद् योजनं=द्विगुणादिलाभार्थं रूप्यादीनामधमर्णा-

---

म्बन है। नेत्र जैसे अपने विषयभूत होने योग्य पदार्थों का प्रदर्शक होता है उसी प्रकार से यह सब सबके लिये सकलार्थ का प्रदर्शक था यदुक्तम्—

"मेधिः प्रमाणं आधारः, आलम्बनं चक्षु."

इस बात की स्पष्ट प्रतिपत्ति के लिये उपमावाचक भूतशब्द इनके साथ जोड कर सूत्रकार ने पुनः इनकी इस प्रकार से आवृत्ति की है—यह मेढि भूत, प्रमाणभूत, आधारभूत एवं चक्षुभूत था अतःसर्वस्थानों में—सन्धि, विग्रह आदिरुप सब जगहों में एवं मन्त्रि—आमात्यादि स्थानरूप सर्वभूमिकाओं में यह यथार्थवादीरुप से माना जाता था और राजा ने भी इसी कारण अन्तःपुरादि जैसे स्थानों में आने जाने की इसे छूट देरखी थी. इसतरह राजा का अतिविश्वास पात्र बना हुआ यह चित्रसारथि सकल राज्यकार्य का प्रेक्षक भी बन गया था.

તેનું નામ અવલેખન છે નેત્ર જેમ પોતાને વિષયભૂત થવા યોગ્ય પદાર્થોનો પ્રદર્શક હોય છે તેમજ તે પણ સૌ માટે સકલાર્થનો પ્રદર્શક હતો.

જેમકે—"મેઢિઃ પ્રમાણ આધારઃ, આલમ્બન ચક્ષુઃ"

એ જ વાતને વધારે સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકારે ઉપમાવાચક 'ભૂત' શબ્દ એમને લગાડીને ફરી આ શબ્દોની આ પ્રમાણે આવૃત્તિ કરી છે-એ મેઢિભૂત, પ્રમાણભૂત આધારભૂત, અને ચક્ષુભૂત હતો એથી બધે-સધિ, વિગ્રહ વગેરે રૂપ બધી જગ્યાએ અને મત્રિ અમાત્યાદિ સ્થાનરૂપે સર્વભૂમિકાઓમા તે સાચી સલાહ આવનાર ગણાતો હતો. એથી રાજાએ પણ અતઃપુર જેવા સ્થાનોમા પણ તેને પ્રવેશવાની છૂટ આપી દીધી હતી રાજાનો અતિવિશ્વાસપાત્ર બનેલો એ ચિત્ર સારથિ આમ સમસ્ત રાજ્ય-કાર્યનો પ્રેક્ષક પણ બની ગયો હતો

क्रिया नियोजनमायोगः, अस्य प्रयोग -प्र=प्रकर्षेण योजनम्=उपायचिन्तनम्, आयोगप्रयोगः, यद्वा आयोगेन=द्विगुणादिलिप्सया प्रयोग =अधमर्णानां सविधे द्रव्यस्य वितरणम् आयोगप्रयोगः, स सम्प्रयुक्त =प्रवर्तितो येन, तस्मिन् वा सम्प्रयुक्त =संलग्नो यः स आयोगप्रयोगसंप्रयुक्त =द्रव्योपार्जनप्रवृत्त इत्यर्थः, तथा विच्छर्दितविपुलभक्तपानः विच्छर्दिते वि=विशेषेण छर्दिते=भोजनावशिष्टे भक्तपाने=भक्त च पान च यस्य सः तथा-बहुदासीदासगोमहिषगवेलक प्रभूतः-दासाश्च दास्यश्च गावश्च महिषाश्च गवेलकाः=उरभ्राश्चेति-दासीदास-गोमहिषगवेलकाः, बहवः=प्रचुरा दासीदासगोमहिषगवेलका यस्य सः, तथा-बहुजनस्य=जातिनिर्धारणैकवचन संबन्धसामान्य षष्ठी, तेन बहुजनैरित्यर्थो बोध्यः, अत्र अपीत्यध्याहाराद् बहुजनैरपि अपरिभूतः=पराभव रहितआसीत्। तथा-स चित्रसारथिः-सामदण्डभेदोपप्रदानार्थशास्त्रेहामतिविशारदः-तत्र-साम =सान्त्व, दण्डो=दमः, भेदो=द्वैधीकरणम् उपप्रदान =दानम्-इत्येतासु चतसृषु राजनीतिषु तथा-अर्थशास्त्र=अर्थप्राप्तिसाधनप्रतिपादक शास्त्रे, ईहा मतौ ईहा= विमर्शस्तत्प्रधाना मतिः=बुद्धिस्तस्यां च विशारदः=निपुणः, तथा औत्पत्ति क्या=स्वाभाविक्या-अदृष्टाश्रुताननुभूतविषयया स्वतः समुत्पन्नया, वैनयिक्या= गुरुसमाराधनसंप्राप्तशास्त्रार्थ संजनितया कर्मजया=कृषिवाणिज्यादिकर्मसंभ- वया, पारिणामिक्या=वयःपरिणामजनितया चेति चतुर्विधया=चतुष्प्रकारया बुद्ध्या उपपेतो=युक्तश्च आसीत। तथा-स चित्र सारथिःप्रदेशिनो राज्ञो बहुषु कार्येषु=कर्तव्येषु प्रयोजनेष्विति यावत कारणेषु=कार्यमात्रसम्पादकहेतुषु कुटुम्बेषु=कुटुम्बविषयये मन्त्रेषु=कर्तव्यनिश्चयाय गुप्तविचारेषु गुह्येषु=अन्यथा गोपनीयेषु व्यवहारेषु रहस्येषु=रहसि=एकान्ते भवा रहस्यास्तेषु प्रच्छन्न व्यवहारेष्विति यावत निश्चयेषु=पूर्ण निर्णयेषु, व्यवहारेषु=व्यवहारप्रश्नेषु, यद्वा-पाण्डवादि समाचरितलोकविपरीतादि क्रिया मार्यविषु च आपृच्छनीयः- आ=ईषत् सकृत् प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, परिप्रच्छनीयः-परि-सर्वतोभावेन असकृत् प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, तथा स चित्रसारथिः-मेधिः=यथा मेधिमाश्रित्य गोमण्डलं भ्रमति, तथैव तमाश्रित्य सकल मन्त्रिमण्डल मन्त्रकार्येषु प्रवर्तते, अतः स मेधिः, तथा-प्रमाणम्=प्रत्यक्षादिप्रमाणवद्धेयोपादेयप्रवृत्तिनिवृत्तिरूपतया सर्व पराभिरपेक्षेन पदार्थ परिच्छेदकः, आधारः=आधारवत्सर्वेषामाश्रयभूतः, आलम्बन =रज्जुस्तम्भादिवद् विपत्कूपपतज्जनोद्धारक तयाऽवलम्बनम्। ननु- आधारालम्बनयोः को भेदः ? इति चेत् यमधिष्ठाय जन उन्नतिं गच्छति स्वस्थानस्थो वा भवति स आधारः, यदवलम्बनेनच विपद्भ्यो विनिवर्तते

तदालम्बनम्—इति भेद गृहाण । चक्षुः=चक्षते-पश्यन्त्यनेनेति चक्षुः=नेत्रं, तद्वत सर्वेषां सकलार्थप्रदर्शकः । यदुक्तम्—

"मेधिः प्रमाणम् आधारः आलम्बनं चक्षुः" इति, तदेव स्पष्टप्रतिपत्तये औपम्यवाचि-भूतशब्दसम्मेलनेन पुनरावर्त्तयति—'मेधिभूतः प्रमाणभूतः आधारभूतः आलम्बनभूतः चक्षुर्भूतश्चासीत् ; तथा—स चित्रसारथिः सर्व स्थानसर्वभूमिकासु—सर्वस्थानानि=सन्धिविग्रहादिरूपाणि सकलकार्याणि च सर्वभूमिकाः=मन्त्रमात्यादिस्थानरूपाश्च तासु लब्धः उपलब्धः प्रत्ययः=प्रतीति यथार्थवादितया येन स तथाभूतः, तथा—वितीर्णविचारः—वितीर्णः=राज्ञा प्रदत्तः विचारः=विचरणम् अन्तःपुरादिषु सर्वत्र यस्मै स तथा राज्ञोऽति विश्वासपात्रमित्यर्थः, तथा—राज्यधुराचिन्तकः=सकलराज्यकार्यप्रेक्षकश्चापि आसीत् ॥सू० १०२॥

इसकी टीका का अर्थ इसी मूलार्थ के साथ कर दिया गया है, फिर भी जिन पदों का अर्थ मूलार्थ में नहीं किया गया है—उनका अर्थ इस प्रकार से है—विमर्शप्रधान मति का नाम ईहामति है. स्वाभाविक बुद्धि का नाम कि—जो अदृष्ट अननुभूत, अश्रुत आदि पदार्थों को विषय करती है और उनमें स्वयं ही उत्पन्न हो जाती है वह औत्पत्तिकी बुद्धि है । इसका नाम "हाजिर जवाबी" भी है. गुरुजनों की सेवा शुश्रूषादि करने से प्राप्त शास्त्रार्थ के चिन्तन से जो बुद्धि प्राप्त होती है उसका नाम वैनयिकी बुद्धि है । कृषिवाणिज्य आदिकर्म करते२ जो बुद्धि प्राप्त होती है उसका नाम कर्मजा बुद्धि है । जैसे२ उमर बढती जाती है वैसे२ जो बुद्धि प्राप्त होती है उसका नाम पारिणामिकी बुद्धि है । अर्थात् वयः परिणाम जनित बुद्धि का नाम ही पारिणामिकी बुद्धि है ॥सू०१०२॥

આનો ટીકાર્થ મૂલાર્થમાં જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. છતાએ કેટલાક પદોનો અર્થ મૂલાર્થમા સ્પષ્ટ થયો નથી તેમનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે વિમર્શ પ્રધાનમતિનું નામ ઇહામતિ છે. અદૃષ્ટ, અનનુભૂત, અશ્રુત વગેરે પદાર્થોને વિષયભૂત બનાવનારી અને તેમા પોતાની મેળે જ ઉત્પન્ન થનારી સ્વાભાવિક બુદ્ધિનું નામ ઔત્પત્તિકી બુદ્ધિ છે. આને 'હાજિર જવાબી' પણ કહે છે ગુરુજનોની સેવા શુશ્રૂષા વગેરેથી પ્રાપ્ત થયેલી અને શાસ્રાર્થ ચિંતનથી પ્રાપ્ત થયેલ વૈનયિકી કહેવાય છે કૃષિ વાણિજ્ય વગેરે કર્મો કરતા કરતા જે બુદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે તેનું નામ કર્મજા બુદ્ધિ છે આયુષ્યની વૃદ્ધિ સાથે સાથે જે બુદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે તે પારિણામિકી બુદ્ધિ છે. એટલે કે વય પરિણામ જનિત બુદ્ધિનું નામ જ પારિણામિકી બુદ્ધિ છે. ॥સૂ૦૧૦૨॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नामं जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नामं नगरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा। तीसे णं सावत्थीए णगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नामं चेइए होत्था, पुराणे जाव पासाईए ४। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पए सिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नामं राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ ॥ सू० १०३ ॥

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणाला नाम जनपद आसीत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धः। तत्र खलु कुणालायां जनपदे श्रावस्ती नाम नगरी आसीत् ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत् प्रतिरूपा। तस्याः खलु श्रावस्त्या नगर्याः बहिः

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तेण कालेण तेण समएणं) उस काल में-अवसर्पिणी के चौथे आरे में और केशिस्वामी के विहार से उपलक्षित उस समय में (कुणाला नाम जणवए होत्था) कुणाला इस नामका देश था (रिद्धत्थिमियसमिद्धे) यह देश ऋद्ध, स्तिमित एवं समृद्ध था यावत् प्रतिरूप-सर्वोत्तम था (तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नाम नयरी होत्था) उस कुणालादेश में श्रावस्ती नामकी नगरी थी (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह नगरी भी ऋद्ध स्तिमित एवं समृद्ध थी और यावत् प्रतिरूप थी (तीसे णं सावत्थीए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नाम चेइए होत्था) उस श्रावस्ती नगरी के बाहिर में ईशानकोने में

"तेण कालेण तेण समएण" इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तेण कालेण तेण समएणं) ते क्षणे-अवसर्पिणीनां चोथा आरामां अने केशिस्वामीना विहारना समये (कुणाला णाम जणवए होत्था) कुणाला नामे देश हतो. (रिद्धत्थिमियसमिद्धे) आ देश ऋद्ध स्तिमित अने समृद्ध हतो यावत प्रतिरूप-सर्वोत्तम हतो (तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नाम नयरी होत्था) ते कुणालदेशमां श्रावस्ती नामे नगरी हती. (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) आ नगरी पण ऋद्ध स्तिमित अने समृद्ध हती अने यावत् प्रतिरूप हती. (तीसे णं सावत्थीए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नाम चेइए होत्था) ते श्रावस्ती नगरीनी बहार ईशान कोणमां

त्तरपौरस्त्ये दिग्भागे कोष्ठको नाम चैत्यमासीत्, पुराणं यावत् प्रासादीयम् ४। तत्र खलु श्रावस्त्यां नगर्यां प्रदेशिनो राज्ञोऽन्तेवासी जितशत्रु र्नाम राजा आसीत् महाहिमवद् विहरति ॥ सू० १०३ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि—

तस्मिन् काले=अस्या अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकलक्षणे काले तस्मिन् समये= केशिस्वामिविहरणोपलक्षिते समये कुणाला नाम जनपदः=कुणालाभिधो आसीत्। स जनपद ऋद्धस्तिमितसमृद्धः आसीत्। तत्र खलु कुणालायां जनपदे श्रावस्ती नाम नगरी आसीत्। सा नगरी ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत् प्रतिरूपा चासीत्। यावत्पदेनात्र—औपपातिकसूत्रोक्तचम्पानगरीवर्णनं सर्वं संग्राह्यम्। तस्याः खलु श्रावस्त्या नगर्याः बहिः=प्रदेशे उत्तरपौरस्त्ये उत्तर-पूर्वयोरन्तराले दिग्भागे=ईशानकोणे कोष्ठको नाम चैत्यमासीत्, तच्चैत्य पुराणं यावत् प्रासादीयं दर्शनीयम् अभिरूपं प्रतिरूपं चासीत्। यावत्प-देनात्र—औपपातिकसूत्रोक्तं सर्वमनुसन्धेयम्। तत्र खलु श्रावस्त्यां नगर्यां प्रदेशिनो राज्ञः अन्तेवासी अन्ते=समीपे वसतीत्येवं शीलोऽन्तेवासी=

कोष्ठक नामका चैत्य था (पुराणे जाव पासाईए४) यह चैत्य प्राचीन था यावत् प्रासादीय था, दर्शनीय था, अभिरूप था और प्रतिरूप था (तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नाम राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ) उस श्रावस्ती नगरी में प्रदेशी राजा का अन्तेवासी जितशत्रु नाम का राजा था. जो महाहिमवान् आदि के जैसा बलवाला था.।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है—श्रावस्ती नामकी नगरी का वर्णन औप-पातिक सूत्र में कथित चंपानगरी के वर्णन जैसा है. चैत्य—उद्यान के वर्णन में भी औपपातिक सूत्रोक्त वर्णन यहां पर ग्रहण करना चाहिये. अन्तेवासी

કોષ્ઠક નામે ચૈત્ય હતું. (पुराणे जाव पासाईए४) આ ચૈત્ય પ્રાચીન હતું યાવત્ પ્રાસાદીય હતુ દર્શનીય હતુ, અભિરૂપ હતુ અને પ્રતિરૂપ હતું। (तत्थ ण सावत्थीए नगरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नाम राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ) તે શ્રાવસ્તી નગરીમા પ્રદેશી રાજાનો અન્તેવાસી જિતશત્રુ નામે રાજા હતો. તે મહાહિમવાન્ વગેરે જેવો બળવાન હતો.

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે ઔપપાતિક સૂત્રમા ચ પાનગરીનું જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામાં આવ્યુ છે તેમજ શ્રાવસ્તી નગરીનું વર્ણન પણ સમજવુ જોઇએ. ચૈત્યનું વર્ણન પણ ઔપપાતિક સૂત્રના વર્ણનની જેમ સમજવુ જોઇએ

शिष्य अन्तेवासमाश्र–अन्तेवासी सम्यगाज्ञापालक इति भावः, तथा पुनो जितशत्रु राजा आसीत्। स जितशत्रू राजा महाहिमवद्–यावद् विहरति। 'जितशत्रु राजा सर्व' मत्र नमौपपातिकसूत्रोक्तकूणिकराजवद् वाच्यमिति ॥सू० १०३॥

(मूलम्—तएण से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छ णं चित्ता! तुमं सावत्थिं नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायनीईओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहित्ति कट्टु विसज्जए ॥ सू० १०४ ॥)

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा अन्यदा कदाचित् महार्थं महार्घं महार्हं विपुलं राजार्हं प्राभृतं सज्जयति, सज्जयित्वा चित्रं सारथिं शब्द

शब्द का अर्थ शिष्य है वह अन्तेवासी के समान अन्तेवासी था अर्थात् उसकी आज्ञा का अच्छी तरह से पालक था जितशत्रु राजा का सर्ववर्णन औपपातिक सूत्रोक्त कूणिक राजाकी तरह से है ऐसा मानना चाहिये॥सू०१०३॥

'तएण से पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ) एक दिन की बात है कि प्रदेशी राजा ने महार्थ विपुल प्रयोजनवाला–सातिशयप्रयोजनयुक्त, महार्घ बहुमूल्य महार्ह–अतिशोभायुक्त विपुल–बहुत बडा ऐसा राजा के योग्य प्राभृत–भेट

અન્તેવાસી શબ્દનો અર્થ શિષ્ય છે તે અન્તેવાસીની જેમ અન્તેવાસી હતો એટલે કે તે સરસ રીતે તેની આજ્ઞાનું પાલન કરતો હતો. જિતશત્રુ રાજાનું બધું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રોક્ત કૂણિક રાજાની જેમજ સમજવું જોઈએ. ॥ સૂ ૧૦૩ ॥

'त एण से पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ) તે પ્રદેશી રાજાએ એક દિવસે મહાર્થ વિપુલ પ્રયોજનવાળી–સાતિશય પ્રયોજન યુક્ત મહાર્ઘ–બહુમૂલ્યવાળી, મહાર્હ અતિશોભાયુક્ત, વિપુલ–પુષ્કળ પ્રમાણમાં રાજાઓના માટે યોગ્ય એવી ભેટ (પ્રાભૃત) તૈયાર કરી.

यति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु चित्र ! त्वं श्रावस्तीं नगरीं जितशत्रोः राज्ञः इदं महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय, यानि तत्र राजकार्याणि च राजकृत्यानि च राजनीतयश्च राजव्यवहाराश्च तानि जितशत्रुणा सार्द्धं स्वयमेव प्रत्युत्प्रेक्षमाणो विहरेति कृत्वा विसर्जितः ॥सू० १०४॥

टीका—'तएणं इत्यादि--

ततः खलु स प्रदेशी राजा अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन्=कस्मिंश्चित् समये महार्थं-महान्=विपुलः अर्थः=प्रयोजनं यस्य स तथा तत्-सातिशयप्रयोजनयुक्तम् महार्घं=बहुमूल्यं महार्हम्=अतिशोभनं विपुलं=बृहत् राजर्हं=नृपयोग्यं प्राभृतम्=उपहारम् सज्जयति=कल्पयति, सज्जयित्वा चित्रं सारथिं शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे चित्र ! त्वं खलु श्रावस्तीं नगरीं गच्छ, तत्र-जितशत्रोः राज्ञः कृते इदं महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय=प्रापय यानि तत्र=श्रावस्त्यां राजकार्याणि=राज्ञो राज्य सम्बन्धीनि कर्त्तव्यानि राजकृत्यानि=राज्ञःस्वविषयाणि प्रतिदिवससम्बन्धिकर्त्तव्यानि, राजनीतयः=साम-दण्ड-भेदोपप्रदानरूपाः राज-

---

सजाया (सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) सजाकर फिर उसने चित्र सारथि को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा (गच्छणं चित्ता ! तुम सावत्थिं नयरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) हे चित्र ! तुम श्रावस्तीनगरी में जाओ वहां जितशत्रु के लिये यह महाप्रयोजन साधक यावत् भेट दे आओ तथा (जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायनीईओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि त्ति कट्टु विसज्जिए) जो वहां पर राजा के राजसंबंधी कर्तव्य हैं राजा के अपने प्रतिदिवस के कर्तव्य हो, राजनीति साम, दंड, भेद एवं उपप्रदानरूप हों एवं राजव्यवहार हों

(सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) तैयार करीने तेणे चित्र सारथीने બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું, (गच्छ णं चित्ता ! तुमं सावत्थिं नयरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) હે ચિત્ર ! તમે શ્રાવસ્તીનગરીમાં જાવો અને જિતશત્રુને આ મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટ આપી આવો, તથા (जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायनीईओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि त्ति कट्टु विसज्जिए) ત્યાં રાજાના રાજ સબંધિ જે કંઈ કર્તવ્યો હોય, રાજનીતિને લગતી સામ, દંડ, ભેદ અને ઉપપ્રદાન રૂપ-બાબતો હોય, રાજકૃત

व्यवहाराः=राजकृत्यन्यायाश्च भवन्ति, तानि सर्वाणि जितशत्रुणा नृपेण सार्द्धं स्वयमेव, प्रत्युत्प्रेक्षमाणो=निरीक्षमाणो विहर=तिष्ठ इति कृत्वा=इत्युक्त्वा च चित्रसारथिस्तेन विसर्जितः ॥ सू० १०४ ॥

मूलम्—तए णं से चित्त सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ—जाव पडिसुणेत्ता तं महत्थ जाव पाहुडं गेण्हइ, पए सिस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, सेयवियां नयरीए मज्झं मज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थ जाव पाहुडं ठवेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबिय पुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, तामाणत्तियं पच्चप्पिणंति। तए णं से चित्ते सारही कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए, एयमट्ठं जाव हियए ण्हाए। कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मिय कवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेविज्जविमलवरचिंधपट्टे गहिया-उहप्पहरणे तं महत्थ जाव पाहुडं गेण्हइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहेइ, बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं सपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेण छत्तेण

राजकृत न्याय हों, उन सब का जितशत्रु राजा के साथ निरीक्षण करते रहो इस प्रकार कहकर चित्रसारथि को उसने विसर्जित करदिया।
टीकार्थ स्पष्ट है ॥सू०१०४॥

ન્યાય હોય આ બધાનું જિતશત્રુ રાજાની પાસે રહીને તમે નિરીક્ષણ કરતા રહો આ પ્રમાણે કહીને તેણે ચિત્ર સારથિને જવાની આજ્ઞા આપી,
આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે ॥ ૧૦૪ ॥

[प]रिज्जमाणेणं महया–भडचडगररहपहकरविंदपरिक्खित्ते साओ [गि]हाओ णिग्गच्छइ, सेयवियाए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गछइ, [सु]हेहिं वासेहिं पायरासेहि नाइविकिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे [व]समाणे केइयद्धस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कुणाला जण-[व]ए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थ जाव पाहुडं गिण्हइ, जेणेव अब्भि-तरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, जिय-सत्तु राय करयलपरिग्गहिय जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, तं महत्थ जाव पाहुडं उवणेइ ॥ सू० १०५॥

छाया--ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवमुक्तः सन् हृष्ट यावत् प्रतिश्रुत्य तत् महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति, प्रदेशिनो राज्ञो ऽन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, श्वेतविकाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वक

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही) उस चित्र सारथिने जब (पएसिणा रण्णा) प्रदेशी राजाने एवं वुत्ते समाणे) उसने ऐसा कहा-तब वह (हट्ठ जाव) बहुत प्रसन्न हुआ यावत्-(पडिसुणेत्ता तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) उसकी आज्ञा के वचनों को स्वीकार करके उस महार्थ-साधक यावत्–प्राभृतको लिया (पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) और लेकर-वह प्रदेशी राजा के पास से निकला (सेयविया नयरीए मज्झं म-ज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) और श्वेतविका नगरी के

સૂત્રાર્થ—(તएणं) ત્યાર પછી (से चित्ते सारही) તે ચિત્ર સારથિને જ્યારે (पएसिणा रण्णा) પ્રદેશી રાજાએ (एवं वुत्ते समाणे) આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી ત્યારે તે (हट्ठ जाव) અત્યંત પ્રસન્ન થયો યાવત્ (पडिसुणेत्ता तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) તેની આજ્ઞાના વચનોને સ્વીકારીને તેણે તે મહાર્થસાધક યાવત્ ભેટને લઇ લીધી, (पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) અને લઇને તે પ્રદેશી રાજાની પાસેથી ઉઠીને બહાર નીકળ્યો, (सेयविया नयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सए

गृह तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तद् महार्घ यावत् प्राभृतं स्थापयति, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति,-शब्दयित्वा एवमवादिषु क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! सच्छत्रं यावत् युद्धसज्जं चातुर्घण्टम् अश्वरथ-युक्तमेव-उपस्थापयत यावत् मत्यर्पयत । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः तथैव प्रतिश्रुत्य क्षिप्रमेव सच्छत्रं यावत् युद्धसज्जं चातुर्घण्टम् अश्वरथयुक्तमेव उपस्थापयन्ति

बीचों बीच से होता हुआ जहां अपना गृह था वहां पर आया (उवागच्छिता त महत्थं जाव पाहुडं ठवेइ) वहां आकर के उसने उस महार्घ महाप्रयोजनसाधक यावत् प्राभृत को एक तरफ रख दिया (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) और अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) उनसे ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, जाव पच्चप्पिणह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही रथ को घोडा जोतकर तैयार करके यहां ले आओ, उसे चार घटाओं से सज्जित करना यावत् फिर हमारी इस आज्ञा को हमें वापिस करना-उस पर छत्र भी लगाना यावत् उसे युद्ध के योग्य सज्जित करना (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति) चित्र सारथि के इस प्रकार वचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने बहुत ही जल्दी छत्रयुक्त करके यावत् चार घटोंवाले उस अश्वरथ को तैयार

गिहे तेणेव उवागच्छइ) अने श्वेतविकानगरीनी वच्चे थईने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां गयो (उवागच्छित्ता त महत्थं जाव पाहुडं ठवेइ) त्यां जईने तेणे ते महार्घ साधक महाप्रयोजन साधक यावत् भेटने એક तरफ मूकीदीधी, (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) अने पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या (सद्दावित्ता एवं वयासी) बोलावीने तेमने कह्यु, (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह) हे देवानुप्रियो ! तमे घोडा जोतरीने शीघ्र रथ तैयार करो, अने अहीं लावो, रथने चार घटाओथी सज्जित करो यावत् आज्ञा प्रमाणे काम पुरु करीने अमने खबर आपो रथनी उपर छत्र होवु जोईए यावत् बधी रीते युद्धना माटे योग्य होय तेम सज्जित करजो, (तएणं कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति) चित्र सारथिना आ प्रमाणे वचन सांभळीने ते कौटुंबिक पुरुषोए एकदम त्वराथी छत्रयुक्त यावत् चार घटोथी युक्त

तामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स चित्रः सारथिः कौटुम्बिकपुरुषाणाम् अन्तिके एतमर्थं यावत् हृदयः स्नातः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः उत्पीडितशरासनपट्टिकः पिनद्धग्रैवेयविमलवरचिह्नपट्टो गृहीतायुधप्रहरणस्तन्महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति, चातुर्घण्टम् अश्वरथं दुरोहति. बहुभिः पुरुषैः सनद्ध-

कर उपस्थित कर दिया (तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति) और चित्र सारथि के पास रथ को तैयार हो जाने की खबर भेज दी. (तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए, उप्पीलियसरासणपट्टिए, पिणद्धगेविज्ज,विमलवरचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) कौटुम्बिक पुरुषों से की गई खबर को सुनकर वह चित्र सारथि बहुत ही अधिक आनंदित एवं संतुष्ट चित्त हुआ-उसने उसी समय उठकर स्नान किया. बलिकर्म (काकआदि को अन्नभाग देनेरूप) किया, कौतुक मंगल एवं प्रायश्चित्त किये, अच्छी तरह से बाधकर कवच पहिरा, प्रत्यंचा चढाकर धनुष को नम्रीभूत किया, ग्रीवा में हार पहिरा, तथा सुन्दर चित्रों से चिह्नित निर्मल वस्त्र धारण किये और खड्गादिक आयुधों को साथ में लिये, इस प्रकार से अच्छी तरह से सज्जित होकर उसने उस महार्थसाधक यावत् प्राभृत को हाथ में लिया और (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ

સજ્જિત કરીને અશ્વરથને ઉપસ્થિત કર્યો. (तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति) અને રથ તૈયાર થઈ જવાની ખબર ચિત્ર સારથિની પાસે પહોંચાડી. (तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए, पिणद्धगेविज्जविमलवरचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) કૌટુંબિક પુરુષોની કામ પૂર્ણ થઈ જવાની ખબર સાભળીને તે ચિત્ર સારથિ ખૂબજ આનંદિત અને સંતુષ્ટ ચિત્ત થયો. તેણે તરતજ સ્નાન કર્યું, બલિ કર્મ કર્યું, કૌતુક મંગલ અને પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં. સરસ રીતે કસીને કવચ પહેર્યું, પ્રત્યંચા ચઢાવીને ધનુષને નમ્ર બનાવ્યું ગળામા હાર પહેર્યો, સુંદર સુંદર ચિત્રોથી ચિહ્નિત નિર્મળ વસ્ત્રો ધારણ કર્યો. અને ખડ્ગ વગેરે આયુધો અને પ્રહરણો સાથે લીધા આ પ્રમાણે સરસ રીતે સજ્જિત થઈને તેણે તે મહાર્થ સાધક યાવત્ ભેટને હાથમાં લીધી અને (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरूहेइ) લઈને તે જ્યા ચાતુર્ઘંટ અશ્વરથ તૈયાર હતો ત્યા ગયો ત્યા જઈને તે રથ ઉપર

यावद्-गृहीतायुधप्रहरणैः सार्द्धं, सम्परिवृतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्तः स्वाद् गृहाद् निर्गच्छति, श्वेतविकाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, सुखैः वासैः प्रातराशैः नातिविकृष्टैः अन्तरावासैः वसन् वसन् केकयार्द्धस्य जनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव कुणाला जनपदो यत्रैव श्रावस्ती नगरी तत्रैव उपागच्छति, श्रावस्त्यां

चातुर्घंट आसरह दुरुहेइ) लेकर जहां वह चातुर्घंट अश्वरथ तैयार खड़ा था वहां पर आया-वहां आकरके फिर वह रथ पर चढ़ा (बहुहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) सम सन्नद्ध यावत् गृहीत आयुध प्रहरणवाले ऐसे अनेक पुरुषों से घिर गया, छत्रधारी द्वारा ध्रियमाण एवं कोरण्टपुष्पमाला से विभूषित ऐसा छत्र उसके ऊपर तान दिया गया, महाभटों के विस्तृत समूह के वृन्दने उसे आकर घेर लिया इस प्रकार की परिस्थिति से युक्त हुआ वह अपने घर से निकला (सेयवियाए णयरीए मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ) और निकलकर वह श्वेतविका नगरी के बीचो बीच से होकर चला (सुहेहिं वासेहिं पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे२ केइयद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणाला जणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार घर से निकला हुआ वह सुखकर रात्रिनिवासों से, प्रातःकालिकलघुभोजनों से-कलेवाओं से, तथा अतिदूर के नहीं ऐसे अन्तरावासों से पड़ावों से-मध्याह्नकालिक विश्राम स्थानों से ठहरता२ केकयार्द्ध जनपद के मध्य मध्य से होता हुआ

સવાર થયો. (बहुहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया-भडचडगरवंदपरिक्खित्ते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) ત્યારે સન્નદ્ધ યાવત્ જેમના હાથોમાં આયુધો છે એવા અનેક પુરુષોથી પરિવેષ્ટિત થઈને તથા કોરંટ પુષ્પમાળાથી વિભૂષિત અને છત્રધારી વડે ધારણ કરેલ છત્ર તેની ઉપર તાણવામાં આવ્યું ત્યારે તેને મહાભટોના વિશાલ સમૂહ વૃંદે આવીને પરિવૃત કરી લીધો. આમ તે પોતાના ઘરથી રવાના થયો. (सुहेहिं वासेहिं पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे२ केइयद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणाला जणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે ઘેરથી રવાના થઈને તે સુખકર રાત્રિનિવાસો, પ્રાતઃકાલિક લઘુભોજનો, અતિ દૂર નહિ એટલે કે નજીકનજીકના અન્તરાવાસો, (મુકામો) મધ્યાહ્નકાલિક વિશ્રામો અને સ્થાન સ્થાન પર મુકામ કરતો તે કેકયાર્ધ જનપદની

नगर्यां मध्यमध्येन अनुप्रविशति, यत्रैव जितशत्रो राज्ञोगृहं यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवरोहति, तत् महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति यत्रैव आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला यत्रैव जितशत्रु राजा तत्रैव उपागच्छति, जितशत्रुं राजानं करतलपरिगृहीतं यावत् कृत्वा जयेन विजयेन वर्द्धयति, तन्महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनयति ॥ सू० १०५ ॥

जहां कुणाला जनपद-(देश) था, और जहां उसमें श्रावस्ती नगरी थी वहां पर आ पहुँचा, (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर वह ठीक बीचोंबीच से होकर उस श्रावस्ती नगरी में प्रविष्ट हुआ और जहां जितशत्रु राजा का प्रासाद था, जहा बाह्य उपस्थानशाला थी वहा आया (तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ) वहा आकर उसने घोडों को रोका, रथ को खडा किया और फिर उस रथ में से वह नीचे उतरा और उसमें से उसने महार्थ साधक उस प्राभृत को लिया (जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव जियसत्तू राया, तेणेव उवागच्छइ. जियसत्तु रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ) और उठाकर जहा आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला थी, जहा जितशत्रु राजा था वहा पर आया. वहा आकर के उसने जितशत्रु राजा को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर एवं उसे मस्तक पर रखकर जयविजय शब्दों का उच्चारण करते

મધ્યમાં થઈને જ્યાં કુણાલા દેશ હતો અને તેમાં પણ જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી ત્યાં પહોંચ્યો. (सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં પહોંચીને તે ઠીક મધ્યમાર્ગથી પસાર થઈને તે શ્રાવસ્તી નગરીમાં પ્રવિષ્ટ થયો અને જ્યાં જિતશત્રુ રાજાનો પ્રાસાદ (મહેલ) હતો, જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી ત્યાં ગયો. (तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ) ત્યાં પહોંચીને તેણે ઘોડાઓને રોક્યા, રથને ઉભો રાખ્યો અને રથમાંથી નીચે ઉતરીને તેણે તે મહાર્થ સાધક ભેટ લીધી (जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव जियसत्तू राया, तेणेव उवागच्छइ, जियसत्तू रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ) અને લઈને તે જ્યાં આભ્યંતરિકી ઉપસ્થાનશાળા હતી જ્યાં જિતશત્રુ રાજા હતો ત્યાં ગયો ત્યાં જઈને તેણે જિતશત્રુ-રાજાને બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને

टीका—'तएण से' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवम्=पूर्वोक्तप्रकारेण उक्तः सन् हृष्ट यावत्—यावत्पदेन—हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो हर्षवशविसर्पद्धृदयः करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्त्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवं देव! तथेति आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति'—इति संग्राह्यम्। अस्य वाक्यस्यार्थोऽस्यैव सूत्रस्य पञ्चमसूत्र टीकातोऽवगन्तव्य इति प्रति श्रुत्य तत् महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति=उपादत्ते, गृहीत्वा प्रदेशिनो राज्ञः अन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य श्वेतविकाया नगर्या मध्य-

हुए बधाया, और बधाकर उस महाप्रयोजनसाधक यावत् प्राभृत को रख दिया, अर्थात् राजा को भेंट किया।

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने जब अपने चित्र सारथि से ऐसा कहा तब हृष्ट हुआ, तुष्ट हुआ एवं चित्त में आनन्दित हुआ प्रीतियुक्त मनवाला हुआ, परमसौमनस्थित हुआ हर्ष के वश से उसका हृदय हर्षित होने लग गया उसी समय उसने करतलपरिगृहीत, दशनखसंयुक्त एवं सिर पर आवर्त्तवाली ऐसी अञ्जलि करके "हे देव! आप जैसे कहते हैं सो मुझे प्रमाण है" इस प्रकार कह कर उनकी आज्ञा को बड़े विनय के साथ स्वीकार किया हृष्ट तुष्ट आदि पदों का अर्थ इस सूत्र के पांचवे सूत्र की टीका से जानना चाहिये। इस प्रकार अपने स्वामी की आज्ञा स्वीकार करके उसने उस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत (भेंट) को अपने हाथ में ले लिया और लेकर वह प्रदेशी राजा के पास से चला आया और श्वेतविका नगरी के मध्यभाग से होकर अपने घर पर आ गया वहाँ आकरके

મસ્તકે મૂકી તે જયવિજય શબ્દોચ્ચારણ કરતાં વધામણી આપી અને ત્યારપછી તે મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટને રાજાની સામે મૂકી—રાજાને તે ભેટ અર્પિત કરી.

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ જ્યારે પોતાના ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે, હૃષ્ટ તુષ્ટ, ચિત્તમાં આનંદિત અને પ્રીતિયુક્ત મનવાળો થયેલો તથા પરમસૌમનસ્થિત થયેલો તે હર્ષાતિરેકથી અતીવ હર્ષિત થઈ ગયો. તેણે તરત જ કરતલ પરિગૃહીત દશનખસંયુક્ત અને મસ્તક પર અંજલિ કરીને કહ્યું—"હે દેવ! જે આપ આજ્ઞા કરો છો તે મારા માટે પ્રમાણરૂપ છે આ પ્રમાણે કહીને તેણે રાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી હૃષ્ટ તુષ્ટ વગેરે પદોનો અર્થ આ સૂત્રની પાંચમાં સૂત્રની ટીકામાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. આ રીતે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞાને સ્વીકારી તેણે મહાપ્રયોજન સાધક યાવત ભેટને હાથમાં લીધી અને લઈને તે પ્રદેશી રાજા પાસેથી આવતો રહ્યો અને શ્વેતવિકાનગરીના મધ્યભાગમાં થઈને પોતાને ઘેર ગયો ત્યાં પહોંચીને તેણે તે

मध्येन व्यतिव्रजन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत् प्राभृतं स्थापयति, स्थापयित्वा कौटुम्बिकपुरुषान्=भृत्यपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-भो देवानुप्रियाः! यूयं क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव सच्छत्र यावत्-यावत्पदेन-सध्वज सघण्टं सपताकं सतोरणवरं सनन्दिघोषं सकिङ्किणीहेमजालपरिक्षिप्त हैमवतचित्रतिनिशकनकनिर्युक्तदारुकं सुसंपिनद्धचक्रमण्डलधुराकं कालायससुकृतनेमियन्त्रकर्माणम् आकीर्णवरतुरगसुसंप्रयुक्तं कुशलनरच्छेकसारथि सुसंपरिगृहीतं शरशतद्वात्रिंशत्तूणपरिमण्डितं सकङ्कटावतंसकं सचापप्रहरणावरणभृतयोधयुद्धसज्जम् इति संग्राह्यम्, अर्थस्त्वेषां पदाना त्रिषष्टितमसूत्रतो द्वितीयाविभक्तिव्यत्ययेना-

---

उसने उस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत को रख दिया, रखकरके फिर उसने नौकरचाकररूप कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया, बुलाकर उसने उस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों! आपलोग शीघ्र ही छत्रसहित यावत्-ध्वजासहित, घण्टासहित, पताकासहित, उत्तमतोरणसहित, नन्दिघोषसहित, किङ्किणीसहित, इत्यादि ६२वे सूत्रोक्त विशेषणों से सहित रथको उपस्थित करो-६२वें सूत्र में उक्त पाठ जो यहां यावत् शब्द से गृहीत हुआ है द्वितीयाविभक्ति का व्यत्यय करके लिया गया है सो इस प्रकार से है—

"सध्वज, सघण्ट, सपताक, सतोरणवरं, सनन्दिघोषं, सकिङ्किणी हेमजालपरिक्षिप्त, हैमवतचित्रतिनिशकनकनिर्युक्तदारुकं, सुसंपिनिद्धचक्रमण्डलधुराकं, कालायससुकृतनेमियन्त्रकर्माणम्, आकीर्णवरतुरगसुसंप्रयुक्तं कुशलनरच्छेकसारथिसुसंपरिगृहीतं, शरशतद्वात्रिंशतत्तूणपरिमंडितं, सकङ्कटावतंसक, सचापप्रहरणावरणभृतयोधयुद्धसज्ज" इस समस्त पाठका अर्थ

મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટને મૂકી દીધી મૂકીને તેણે નોકર-ચાકર વગેરે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા. અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-'હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સૌ સત્વરે છત્રયુક્ત યાવત્ ધ્વજા સહિત, ઘંટા સહિત વગેરે ૬૨ મા સૂત્રોક્ત વિશેષણોથી યુક્ત રથને ઉપસ્થિત કરો ૬૨ મા સૂત્રનો પાઠ જે અહીં યાવત્ શબ્દ વડે ગૃહીત થયો છે તે બીજી વિભક્તિનો વ્યત્યય (વ્યતિક્રમ) કરીને ગ્રહણ કરાયો છે તે આ પ્રમાણે છે—

"सध्वज सघण्टं, सपताक, सतोरणवरं, सनन्दिघोषं, सकिङ्किणीहेमजालपरिक्षिप्त, हैमवतचित्रतिनिशकनकनिर्युक्तदारुकं, सुसंपिनिद्धचक्रमण्डलधुराकं, कालायससुकृतनेमियन्त्रकर्माणम् आकीर्णवरतुरगसुसंप्रयुक्तं, कुशलनरच्छेकसारथिसुसंपरिगृहीत. शरशतद्वात्रिंशतत्तूणपरिमंडितं, सकङ्कटावतंसकं, सचापप्रहरणावरणभृतयोधयुद्धसज्ज" આ પાઠનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—

इसप्रकार से है-सध्वज ध्वजा से युक्त है सघण्ट-दोनों ओर घण्टासहित है, सपताक पताका सहित है, सतोरणवरयुक्त-प्रधानतोरण सहित है, सनन्दिघोष-द्वादशप्रकार के बाजों से युक्त है. सकिङ्किणीहेमजालपरिक्षिप्त-क्षुद्र घंटिकावाले हेमजाल से परिवेष्टित है हैमवतचित्रतिनिशकनकनियुक्तदारुक हिमालय पर्वत पर उत्पन्न हुई तथा विस्मयकारक ऐसी तिनिशवृक्षविशेषकी सुवर्ण खचित लकडी से जो बनाया गया है, सुसंपिनद्धचक्रमण्डलधुराक-अच्छी तरह से जिसमें चक्रमण्डल एवं धुरा बांधे गये हैं, कालायससुकृतनेमियन्त्रकर्मा-उत्तमजाति के कृष्ण लोह से जिसमें नेमियन्त्र कर्मकी रचना की गई है-अर्थात् चक्रान्तभूस्पर्शिभाग की संघर्षण से रक्षा करने के लिये आरकों के ऊपर कृष्ण लोहमय पट्टरूप आवरण जिसमें लगाया गया है, आकीर्णवरतुरगसुसंप्रयुक्त आकीर्णजातिके उत्तम घोडे जिसमें जुते हैं, कुशलनरच्छेकसारथिसुसंपरिगृहीत निपुणपुरुषों में भी चतुरसारथीद्वारा अच्छी तरह से जो परिगृहीत हो रहा है, शरशतद्वात्रिंशत्तूणपरिमण्डित-शतसम्यक शरों के ३२ संख्यक बाणकोषों से जो परिमण्डित है, सचापशरप्रहरणाऽऽवरणभृतयोधयुद्धसज्ज धनुषसहित बाणों से, कुन्त, तोमर, परशु आदि शस्त्रों से एवं कवच आदि उपकरणों से जो परिपूर्ण है, युद्धकारी योद्धाओं के संग्राम के लिये

सध्वज-ध्वजा सहित છે સઘંટ-બંને તરફ ઘંટાઓ છે સપતાક-પતાકાસહિત છે, સતોરણવર પ્રયુક્ત-પ્રધાન તોરણ સહિત છે સનંદિઘોષ-બાર પ્રકારના વાજાઓથી યુક્ત છે. સકિંકિણી હેમજાલ પરિક્ષિપ્ત-ક્ષુદ્ર (નાની) ઘંટિકાવાળા હેમજાલથી પરિવેષ્ટિત છે હૈમવત ચિત્રતિનિશકનકનિયુક્ત દારુક-હિમાલય પર્વત પર ઉત્પન્ન થયેલી વિસ્મય કારક તિનિશવૃક્ષ વિશેષની સુવર્ણ મંડિત લાકડીથી જે તૈયાર કરવામાં આવ્યો છે સુસંપિનદ્ધચક્રમંડલ ધુરાક જેમાં ચક્રમંડળ અને ધુરાઓ સુબદ્ધ છે કાલાયસ સુકૃત નેમિયંત્રકર્મા-ઉત્તમ જાતિના કૃષ્ણ લોઢાથી જેના નેમિયંત્રની રચના કરવામાં આવી છે એટલે કે ચક્રનો જે ભાગ જમીનને અડે છે તેને સંઘર્ષથી રક્ષવા માટે કૃષ્ણ લોઢાની પાટી જેના પર લગાડવામાં આવી છે આકીર્ણવર તુરગસુસંપ્રયુક્ત-આકીર્ણ જાતિના ઉત્તમ ઘોડાઓ જેમાં જોતરેલા છે કુશલનરચ્છેક સારથિ સુસંપરિગૃહીત-નિપુણપુરુષોમાં પણ અતિનિપુણ સારથિ વડે જે સારી રીતે હાંકવામાં આવી રહ્યો છે-શરશત દ્વાત્રિંશત્તૂણપરિમંડિત-સો શરો અને બત્રીસ જેટલા તૂણીરોથી જે પરિમંડિત છે સચાપશરપ્રહરણાઽઽવરણભૃતયોધ યુદ્ધ સજ્જ-ધનુષ સહિત શરોથી, કુંત તોમર, પરશુ વગેરે શસ્ત્રોથી, અને કવચ વગેરે ઉપકરણોથી જે પરિપૂર્ણ છે, યુદ્ધ એરનારાઓ

ऽवसेय इति। एवंविधं चातुर्घण्ट=चतसृभिर्घण्टाभिः शोभितम् अश्वरथं युक्तमेव=योजितं कृत्वैव उपस्थापयत, यावत् प्रत्यर्पयत=मदीय निर्देशानुसारेण सर्वं प्रकल्प्य मां सूचयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः तथैव=यथा चित्र सारथिना समाज्ञप्तं तथैव तदीयवचनं प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य क्षिप्रमेव सच्छत्रं यावत् युद्धसज्जं चातुर्घण्टम् अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयन्ति, ताम् आज्ञप्तिकाम् प्रत्यर्पयन्ति='भवन्निदेशानुसारेण सर्वमस्माभिः सम्पादित'-मिति चित्रसारथये निवेदयन्ति। ततः खलु स चित्रसारथिः कौटुम्बिकपुरुषाणाम् अन्तिके=समीपे एतमर्थं='रथोऽस्माभिः सज्जीकृतः' इत्येतद्रूपम् अर्थं यावद् हृदयः अत्रेदं सगृह्यते, तथाहि-'श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो हर्षवशविसर्पद्धृदयः' इति। अर्थस्त्वेषामुक्त एव, एतादृशः सन् स्नातः=विहितस्नानः कृतबलिकर्मा=स्नाने कृते पशुपक्ष्यार्थं कृतान्नभागः, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव

जो सज्ज-उद्यतीकृत है, चातुर्घंट का अर्थ "चार घंटाओं से शोभित" ऐसा है तथा युक्त शब्द का अर्थ "घोडों ऐसे जुता हुआ" सा है। जब तुम लोग मेरी आज्ञा के अनुसार सब काम कर लो तो हमे इसकी पीछे शीघ्र ही सूचना दो, इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने जैसा कि चित्र सारथि ने उन्हे कार्य करने के लिये आज्ञापित किया था वैसा काम यथा शीघ्र करके उसे सूचना दे दी. "आपकी आज्ञा के अनुसार हमने सब काम कर लिया है', इस प्रकार से दी गई सूचना को सुनकर चित्र सारथि "हृष्ट तुष्ट चित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्धृदयः" इन यावत् पदगृहीत विशेषणों वाला हो गया. इन पदों का अर्थ कहा जा चुका है। उसने स्नान किया, बलिकर्म किया-पशु पक्षी

માટે જે સજ્જિત છે, ચાતુર્ઘંટ-એટલે કે ચાર ઘંટોથી જે સુશોભિત છે તેમજ યુકત એટલે કે જેમા ઘોડાઓ જોતરેલા છે તમે જ્યારે મારી આજ્ઞા મુજબ કામ પુરૂ કરી લો ત્યારે મને કામ સંપૂર્ણ થઇ જવાની ખબર આપો. ત્યાર પછી કૌટુમ્બિક પુરૂષોએ ચિત્ર સારથિની આજ્ઞા પ્રમાણે જ શીઘ્ર કામ પુરૂં કરી દીધું. અને તેને ખબર આપી કે-હે દેવાનુપ્રિય! તમારી આજ્ઞા મુજબ બધું કામ પુરૂં થઇ ગયું છે. આ પ્રમાણેની ખબર સાભળીને ચિત્રસારથિ "हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्धृदय." યાવત્ પદથી ગૃહીત ઉકત વિશેષણોથી તે યુકત થઇ ગયો આ પદોનો અર્થ પહેલા સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. તેણે સ્નાન કર્યું બલિકર્મ કર્યું-પશુપક્ષિ વગેરેને અન્નભાગ અર્પિત કર્યો દુઃસ્વપ્ન વગેરેને નષ્ટ

प्रायश्चित्तानि दुःस्वप्नादिविघातार्थमवश्यकरणीयत्वाद् येन स तथा, तत्र कौतुकानि-मषीतिलकादीनि, मङ्गलानि तु सिद्धार्थदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि। तथा-सन्नद्धबद्धवर्मितकवच-सन्नद्धः शरीरे आरोपणात् बद्धः-गाढतरबन्धनेन बन्धनात्, वर्मितम् अङ्गरक्षार्थं सुष्ठुतया परिहितं कवचं येन सः, तथा-उत्पीडितशरासनपट्टिकः-उत्पीडिता=प्रत्यञ्चारोपणेन नम्रीकृता शरासनपट्टिका धनुर्दण्डो येन सः, अथवा-उत्पीडिता=स्कन्धे स्थापिता शरासनपट्टिका=धनु

आदिकों के लिये अन्न का भाग किया, दुःस्वप्न आदिकों का नष्ट करने के लिये अवश्यकरणीय होने से कौतुक मङ्गलरूप प्रायश्चित्त किये मषी तिलक आदिकों का नाम कौतुक, सिद्धार्थ सरसों, दही अक्षत दूर्वाङ्कुर आदिकों का नाम मङ्गल है। बाद में उसने सन्नद्ध, बद्ध, वर्मित कवच को पहिरा, पहिले उसे शरीर पर आरोपण किया इसलिये वह कवच सन्नद्ध हुआ, बाद में वह गाढतर बन्धन से जकड़कर कस दिया गया इससे बद्ध हुआ, तथा अङ्गरक्षा के निमित्त ही वह धारण किया गया था अतः वर्मित हुआ "उत्पीडितशरासनपट्टिकः" से यह प्रकट किया गया है कि वह शरासन पट्टिका-धनुर्दण्ड जब प्रत्यञ्चा पर आरोपित किया गया तब झुक गया अथवा उत्पीडित शब्द का अर्थ 'कंधे पर रखना भी है। तथाच प्रत्यंचा आरोपित की जाने से झुका दिया है, धनुष दण्ड जिसने अथवा स्कन्ध पर आरोपित किया है धनुर्दण्ड जिसने, ऐसा वह चित्रसारथी हो गया तात्पर्य कहनेका यही है कि उस चित्रसारथीने अपने धनुष पर प्रत्यञ्चा आरोपित करली, अथवा उसे हाथ में न लेकर कंधे पर टाँग लिया अपने कंठ

કરવા માટે અવશ્યકરણીય મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્તો કર્યાં. મષીતિલક વગેરેને કૌતુક, સિદ્ધાર્થ-સર્ષપ, દહીં અક્ષત દૂર્વાંકુર વગેરેને મંગલ કહે છે ત્યારપછી તેણે સન્નદ્ધ, બદ્ધ, વર્મિત કવચ પહેર્યું પહેલાં તે કવચનું તેણે શરીર પર આરોપણ કર્યું એથી તે કવચ સન્નદ્ધ થયું ત્યારપછી ગાઢતર બંધનવડે કસવામાં આવ્યું એથી તે બદ્ધ થયું અને અંગરક્ષા માટે તેને ધારણ કરવામાં આવ્યું હતું એથી તે વર્મિત થયું "ઉત્પીડિતશરાસનપટ્ટિક" એથી આ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે કે તે શરાસનપટ્ટિકા (ધનુષદંડ) પર જ્યારે પ્રત્યંચા ચઢાવવામાં આવી તે શરાસન પટ્ટિકા નમી ગઈ હતી અથવા ઉત્પીડિત શબ્દનો અર્થ "ખભાપર મૂકવું" પણ થાય છે પ્રત્યંચા ચઢાવવાથી જેણે ધનુષ દંડને નમાવી દીધો છે અથવા ખભાપર જેણે ધનુર્દંડ ધારણ કર્યો છે એવો તે ચિત્રસારથિ શોભવા લાગ્યો. મતલબ આ છે કે તે ચિત્ર સારથિએ પોતાના ધનુષ પર પ્રત્યંચા ચઢાવી દીધી હતી. અથવા તે ધનુષને હાથમાંથી ખભાપર લટકાવી દીધું

र्दण्डो येन सः, तथा-पिनद्धग्रैवेयविमलवरचिह्नपट्टः-पिनद्धं=परिहितं ग्रैवेयं= ग्रीवाभूषणं विमलवरचिह्नपट्टं, येन सः, तथा-गृहीतायुधप्रहरणः-गृहीतानि आयुधानि=धनुरादीनि प्रहरणानि=खड्गादीनि च येन स तथा-धृतशस्त्रास्त्र इत्यर्थः, एवम्भूतः सन् तत् महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति. गृहीत्वा यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति=आरोहति। ततः सः सन्नद्ध यावद् गृहीतायुधप्रहरणैः बहुभिःपुरुषैः सार्द्धं=सह संपरिवृतः=संवेष्टितः सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्टपुष्पमालाविभूषितेन-छत्रेण ध्रियमाणेन सह महाभटचटकरप्रकरवृन्दपरिक्षिप्तः-महाभटानां ये चटकरप्रकराः=विस्तृतसमूहास्तेषां यद् वृन्दं तेन परिक्षिप्तः=परिवेष्टितः सन् स्वात्= स्वकीयाद् गृहाद् निर्गच्छति=निस्सरति, निर्गत्य श्वेतविकाया नगर्या मध्य-मध्येन निर्गच्छति। इत्थं निर्गतःसमुखैः=सुखकरैःवासैः=रात्रिनिवासैः प्रात

में उसने ग्रीवा का आभूषणरूप ग्रैवेय हार पहिरा और सुन्दर २ चित्रों से सुशोभित सुन्दर वस्त्र भी पहिरे. धनुष आदिकों को यहां आयुध पद से और तलवार आदिकों को प्रहरण पद से गृहीत किया गया है. इस तरह उसने आयुध और प्रहरणों को अपने साथ ले लिया. इस प्रकार सब तरह से तैयार होकर वह प्राभृत को साथ में लेकर के जहां चातुर्घंट अश्वरथ था वहां पर आया, वहां आकर वह उस रथ पर बैठ गया. रथ में बैठते ही वह सन्नद्ध हुए यावत् गृहीतायुधप्रहरणवाले अनेक पुरुषों से संपरिवृत हो गया. छत्रधारी पुरुषने उसके ऊपर कोरण्टपुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र तान दिया. इस तरह महासुभटों के विस्तृत समूह के वृन्द से परिवेष्टित होकर वह अपने घर से चला. एवं श्वेतविकानगरी के ठीक मध्यभाग से होता हुआ निकला. कितनेक सुखकरवासों से

હતું ગળામાં તેણે આભૂષણરૂપ ગ્રૈવેયક-હાર પહેર્યો હતો અને સુંદર ચિત્રોથી સુશોભિત સુંદર વસ્ત્રો પણ પહેર્યાં હતા. ધનુષ વગેરેને અહીં આયુધપદ અને તલવાર વગેરેને પ્રહરણ પદથી ગ્રહણ સમજવા. આ રીતે તેણે પોતાના આયુધો અને પ્રહરણોને પોતાના હાથમાં લીધા. આ પ્રમાણે બધી રીતે તૈયાર થઈને તે ભેટને લઈને જ્યાં ચાતુર્ઘંટ અશ્વરથ હતો ત્યાં ગયો. ત્યાં જઈને તે રથ પર સવાર થયો રથ પર સવાર થતાંજ તે સન્નદ્ધ થયેલા યાવત્ ગૃહીતાયુધ પ્રહરણવાળા અનેક પુરુષોથી તે સંપરિવૃત્ત થઈ ગયો. છત્રધારી પુરુષોએ તેના ઉપર કોરંટ પુષ્પોની માળાથી સુશોભિત છત્ર તાણી દીધું. આ પ્રમાણે તે મહાસુભટોના વિસ્તૃત સમૂહના વૃન્દથી પરિવેષ્ટિત થઈને તે પોતાના ઘેરથી રવાના થયો અને શ્વેતવિકા નગરીના ઠીક મધ્યભાગમાં થઈને તે કેટલાક સુખકરવાસો, રાત્રે મુકામ કરીને સવારે ત્યાંથી રવાના થતી વખતે કરેલા પ્રાત

षेषै=प्रातःकालिकलघुभोजनैः, तथा-नातिविकृष्टैः=नातिदूरैः अन्तरावासैः मध्याह्नकालिकविश्रामस्थानैः वसन् वसन् केकयार्द्धस्य जनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव कुणाला जनपदो यत्रैव श्रावस्ती नगरी तत्रैव उपागच्छति, श्रावस्त्याः नगर्याः मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव जितशत्रोः राज्ञो गृहं यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान्=अश्वान् विनिगृह्णाति=निरुणद्धि, रथं स्थापयति रथात् प्रत्यवरोहति=अवतरति तद् महार्थं यावत् प्राभृतं गृहीत्वा यत्रैव आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला, यत्रैव जितशत्रू राजा तत्रैव उपागच्छति जितशत्रुं राजानं करतलपरिगृहीतं यावत् कृत्वा जयेन विजयेन वर्द्धयति तद् महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनयति=तस्मै समर्पयति ॥ सू० १०५ ॥

रात्रियों में ठहरने से प्रातराशों से-प्रातःकालिक लघुभोजनरूप कलेवा से तथा बहुत अधिक दूर के नहीं ऐसे मध्याह्नकालिक विश्रामों से युक्त हुआ वह जगह २ ठहरता-केकयार्द्ध जनपद के पास आगया उसके मध्य मध्य से होकर वह निकला और जहां कुणाला जनपद-देश था, और उसमें भी जहां श्रावस्ती नगरी थी वहां जाकर वह उसके ठीक बीचों बीच से होकर उसमें प्रविष्ट हुआ प्रविष्ट होकर फिर वह जहां गया जहां जितशत्रु राजा का राजभवन था, और उसमें भी जहां बाह्य उपस्थानशाला थी वहां पहुँचते ही उसने घोडों को खड़ा कर दिया और रथ को चलने से रोक दिया बादमें वह उस रथ से नीचे उतरा और प्राभृत को साथ लेकर वह आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला में जहां जितशत्रु राजा थे वहां पर पहुँचा, वहां पहुचते ही उसने जितशत्रु राजा को दोनों हाथ जोडकर बडे विनय प्रणाम किया और जय विजय

કાલિક અલ્પભોજનો (નાસ્તાઓ) તથા બધારે દૂર નહિ પણ નજીક નજીક જ મધ્યાહ્નકાલિક વિશ્રામો કરતો કરતો સ્થાન સ્થાન પર પડાવ નાખતો તે કૈકયાર્દ્ધ જનપદની નજીક પહોંચ્યો. અને ત્યારપછી તે જનપદની મધ્યમાં થઈને જ્યાં કુણાલા દેશ હતો અને જ્યા શ્રાવસ્તીનગરી હતી ત્યાં જઈને તે ઠીક નગરીના મધ્યમાર્ગથી જ્યાં જિતશત્રુ રાજાનો રાજમહેલ હતો અને તેમાં પણ જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળા હતી ત્યાં પહોંચ્યો અને પહોંચતાં જ તેણે ઘોડાઓને ઉભા રાખ્યા અને રથને આગળ જતાંથી રોક્યો ત્યારપછી તે રથમાંથી નીચે ઉતર્યો અને ભેટને લઈને આભ્યન્તરિકી ઉપસ્થાન શાળામાં જ્યાં જિતશત્રુ રાજા હતો ત્યાં ગયો. ત્યાં પહોંચીને તેણે જિતશત્રુ રાજાને બન્ને હાથ જોડીને પ્રણામ કર્યા અને જયવિજય શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરીને

मूलम्--तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ, चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ, रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ। तए णं से चित्ते सारही विसज्जिए समाणे जियसत्तुस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ, सावत्थीए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगल पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे पुव्वावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे-पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥ सू० १०६

छाया—ततः खलु स जितशत्रू राजा चित्रस्य सारथेस्तन्महार्थं यावत् प्राभृतं प्रतीच्छति चित्रं सारथिं सत्कारयति सम्मानयति प्रतिविसर्जयति,

---

शब्दों का उच्चारण करते हुए उन्हें वधाई दी. बाद में लाये हुए उस महार्घ आदि विशेषणों वाले प्राभृत को उनके लिये अर्पण किया ।सू.१०५।

'तए णं से जियसत्तूराया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ--(तएणं से जिसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ) तब जितशत्रु राजाने चित्र सारथि से दिये गये महार्थ

તેમણે વધામણી આપી. ત્યારપછી તેણે મહાર્થ વગેરે વિશેષણોવાળી ભેટ રાજાને સમર્પિત કરી. ॥૧૦૫॥

'त एणं से जियसत्तू राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ) જિતશત્રુ રાજાએ ચિત્રસારથિ વડે અર્પિત કરાયેલી મહાર્થ વગેરે

राजमार्गावगाढं च अस्य आवासं ददाति। ततः खलु स चित्रः सारथिः विसर्जितः सन् जितशत्रोः अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति चातुर्घण्टम् अश्वरथं दुरोहति श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव राजमार्गावगाढ आवासस्तत्रैव उपागच्छति तुरगान् निगृह्णाति, रथं स्थापयति रथात् प्रत्यवरोहति, स्नातः

आदि विशेषणों वाले सारथि को जो कि प्रदेशी राजाने प्रेषित किया था ऐसे चित्र (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ) फिर कुशलप्रश्नादि पूछकर उसका सत्कार किया, आसन आदि देकर उसका सन्मान किया और बाद में उसे विसर्जित कर दिया अर्थात् विश्राम करने के निमित्त भेज दिया (रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ) उसे राजमार्ग के पास स्थित घर में ठहराया गया (तए णं से चित्ते सारही विसज्जिए समाणे जियसत्तुस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ—जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) अतः वह चित्र सारथि जितशत्रु राजा द्वारा विसर्जित किया गया होकर उनके पास से चला आया और जहां बाह्य उपस्थानशाला थी, जहां चातुर्घंट अश्वरथ था वहां आकर वह (चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ) उस चातुर्घंट रथ पर सवार हो गया (सावत्थीए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) और श्रावस्ती नगरी के बीचो बीच से होता हुआ जहां राजमार्ग पर स्थित आवास-गृह था वहां पर आया (तुरए

विशेषणोवाणी ओने-के जेने प्रदेशी राजाओ मोकली हती-स्वीकारी लीधी (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ) त्यारपछी कुशलता विषे समाचारो पूछीने तेनो सत्कार कर्यो आसन वगेरे आपीने तेनु सन्मान कर्युं अने त्यारपछी तेने विसर्जित करी दीधो. ओटले के विश्राम करवा माटे मोकली दीधो. (रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ) तेने राजमार्गनी पासेना घरमां उतारो आप्यो. (तए णं से चित्ते सारही विसज्जिए समाणे जियसत्तुस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ—जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) त्यारपछी जितशत्रु राजा पासेथी विसर्जित करायेलो ते चित्रसारथी त्यांथी रवाना थयो अने ज्यां बाह्य उपस्थानशाळा हती ज्यां चातुर्घंट अश्वरथ हतो त्यां आव्यो त्यां आवीने ते (चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ) चातुर्घंट रथ पर सवार थयो. (सावत्थीए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) अने श्रावस्तीनगरीना मध्यमां थईने ज्यां राजमार्ग पर स्थित आवास-गृह-हतुं

कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः शुद्धप्रवेश्यानि मङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितः अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरो जिमितभुक्तोत्तरागतोऽपिच खलु सन् पूर्वापराह्णकालसमये गन्धर्वैश्च नाटकैश्च उपनत्यमानः२ उपगीयमान उपगीयमान उपलाल्यमानः २ इष्टान् शब्द-स्पर्श-रस-रूपगन्धान् पञ्च· विधान् मानुष्यकान कामभोगान प्रत्यनुभवन् विहरति ॥ सू० १०६ ॥

निगिण्हिइ, रह ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ) वहां आकरके उसने घोडोंको रोका रथ को खडा किया और फिर रथ से नीचे उतरा (ण्हाए कय· बलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए) बाद में उसने स्नान किया. बलिकर्म-वायसादिकों के लिये अन्न का भाग दिया, दुःस्वप्नो को नाश करने के लिये कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त किये, बाद में शुद्ध राजसभा में प्रवेश योग्य ऐसे माङ्गलिक वस्त्रों को रीति के अनुसार पहिरा (अप्पमहग्घाभरणालंकिय· सरीरे) फिर उसने अल्प भारवाले बहुमूल्य आभरणों से अपने शरीर को अलंकृत किया और (जिमियभुत्तुत्तरागए वियणं समाणे) जीमने के बाद अर्थात् भोजन करके-फिर वह उपवेशनस्थान में आ गया (पुव्वावरण्हकालसमयंसि) वहा दिवस के तृतीय प्रहर में (गंधव्वेहिं य णाडगेहि य उवणच्चिज्जमाणे, उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे २ उवलालि· ज्जमाणे २) गीतों द्वारा और नाटकों द्वारा बार २ अपना २ विषय सिखा· कर, अपना २ विषय सुनाकर बारबार रिझाया गया, बारबार विलास·

त्या गयो (तुरए निगिण्हिइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ) त्या पहोचीने तेज घोडाओने ऊभा राख्या रथ थोभाव्यो. अने त्यारपछी ते रथमाथी नीचे उतर्यो— (ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए) त्यारबाद तेणे स्नान कर्यु-बलिकर्म कर्यु-कागडा वगेरेने अन्नभाग आप्यो दुःस्वप्नोने नष्ट करवा माटे कौतुक-मंगलरूप प्रायश्चित्तो कर्या. त्यारपछी राजसभामा शोभे एवा स्वच्छ मांगलिक वस्त्रो तेणे धारण कर्या. (अप्प· महग्घाभरणालंकियसरीरे) त्यारबाद तेणे अल्पभारवाळा बहुमूल्य आभरणोथी पोताना शरीरने शणगार्युं अने (जिमियभुत्तुत्तरागए वियणं समाणे) जम्या पछी एटले के भोजन करीने ते उपवेशन स्थान तरफ गयो (पुव्वावरण्हकाल· समयंसि) त्या दिवसना त्रीजा पहोरमा (गंधव्वेहिं य णाडगेहि य उवणच्चिज्ज· माणे. उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे-२ उवलालिज्जमाणे२) त्या गीतो वडे, नाटको वडे वारवार पोतानो विषय सिखावेलो पोतानो विषय सभळावीने प्रसन्न

'तएण स' इत्यादि।

टीका-ततः खलु स जितशत्रू राजा चित्रस्य सारथेः सकाशात् प्रदेशि राजप्रेषितं तद् महार्थं यावत् प्राभृतं प्रतीच्छति=गृह्णाति, चित्र सारथिं सत्कारयति-कुशलप्रश्नादिना, सम्मानयति आसनप्रदानेन, ततस्तं प्रतिविसर्जयति=विश्रामाय संप्रेषयति, तथा च=राजमार्गावगाढं=राजमार्गसमीपस्थितम् आवासं=गृहं तस्य=तस्मै ददाति। अत्र सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु स चित्रः सारथिः जितशत्रुणा राज्ञा विसर्जितः सन् तस्य जितशत्रू राज्ञः अन्तिकात् =प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति=आरोहति, श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव राजमार्गावगाढ-आवासः, तत्रैव उपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति=निरुणद्धि, निगृह्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा रथात् प्रत्यवरोहति=अवतरति। ततः स्नातः=कृतस्नानः कृतब लिकर्मा=स्नानेकृते पशुपक्ष्याद्यर्थं कृतान्नभागः, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः-कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानि=दुःस्वप्नादि विघातार्थमवश्यकरणी यत्वात् येन स तथा, तत्र-कौतुकानि=मषीतिलकानि, मङ्गलानि तु=सिद्धार्थ मय पदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि। तथा=शुद्धप्रावेश्यानि=राजसभाप्रवेशार्हाणि मङ्ग ल्यानि=माङ्गलिकानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितः=यथारीतिपरिधृत अल्पमहार्घा भरणालङ्कृतशरीर-अल्पानि=स्तोकभाराणि यानि महार्घाणि=बहुमूल्यानि आभ रणानि तैः अलङ्कृत=सुशोभित शरीर यस्य सः, तथा=जिमितभुक्तोत्तरा गतः जिमितः=कृतभोजनः, स चासौ भुक्तोत्तरागतः=भोजनोत्तरकालम् उपवे शनस्थाने समागतश्चेति तथाभूतोऽपि च खलु सन् पूर्वापरार्धकालसमय पूर्वश्चासौ अपराह्णश्चेति पूर्वापराह्णः, स एव कालसमयः-कालोपलक्षितः समयस्तस्मिन्-दिवसस्य तृतीये प्रहरे गान्धर्वैः गीतैश्च नाटकैश्च उपनर्त्य

युक्त बनाया गया वह चित्र सारथि (इट्ठ सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ) इष्ट-अभिलषित-शब्द, स्पर्श रस रूप गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यभव संबंधी कामभोगों को अनुभवित करने लगा। टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥ १०६ ॥

કરાવેલો, વારંવાર વિલાસયુક્ત બનાવેલો તે ચિત્ર સારથિ (इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ) ઇષ્ટ-અભિ લષિત-શબ્દ, સ્પર્શ રસ રૂપ ગંધ આ પાંચ જાતના મનુષ્યભવ સંબંધી કામ ભોગોને ભોગવવા લાગ્યો. ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો સ્પષ્ટ છે ॥૧૦૬॥

मानः उपनर्त्यमानः=नृत्तं दर्श्यमानो दर्श्यमानः उपगीयमानः उपगीयमानः—गानं श्राव्यमाणः श्राव्यमाणः, अतएव-उपलाल्यमानः२ विलास्यमानः२ इष्टान्=अभिलषितान शब्द-स्पर्श-रस-रूप-गन्धान पञ्चविध न् मानुष्यकान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान प्रत्यनुभवन् विहरति ॥सू० १०६॥

(मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाइसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे लज्जालाघवसंपण्णे ओयंसी तेयसी वच्चंसी जससी जियकोहे जियमाणे जियमाये जियलोहे जियणिद्दे जिइंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, सावत्थी नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ सू०१०७।)

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन समये पार्श्वापत्यीयः केशीनामकुमारश्रमणो जातिसम्पन्नः कुलसम्पन्नो बलसम्पन्नो रूपसम्पन्नो विनयसम्पन्नो

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ।

(सूत्रार्थ—(तेणं कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय

'तेणं कालेणं तेणं समएण' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तेणं कालेणं तेण समएणं) ते કાળે અને તે સમયે (પાશ્વા-

ज्ञानसम्पन्नो दर्शनसम्पन्नश्चारित्रसम्पन्नो लज्जासम्पन्नो लाघवसम्पन्नो लज्जा लाघवसम्पन्न ओजस्वी तेजस्वी वर्चस्वी यशस्वी जितक्रोधो जितमानो जित मायो जितलोभो जितनिद्रो जितेन्द्रियो जितपरीषहो जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः तपःप्रधानो गुणप्रधानः करणप्रधानः चरणप्रधानो निग्रहप्रधानो निश्चयप्रधानः

में (पासावच्चिज्जे) पार्श्वापत्यीय=भगवान् पार्श्वनाथ की शिष्य परम्परा में स्थित (केसी नाम कुमारसमणे) केशी नामके कुमार श्रमण–जो कि कुमार अवस्था में ही दीक्षित हुए थे और जो (जाइसम्पन्ने) जातिसम्पन्न थे (कुलसम्पण्णे) कुलसम्पन्न थे, (बलसम्पण्णे) बलसम्पन्न थे (रूवसम्पन्ने) रूपसंपन्न थे, (विणयसम्पन्ने) विनयसम्पन्न थे (णाणसम्पण्णे) ज्ञान सम्पन्न थे, (दंसणसंपन्ने) दर्शन सम्पन्न थे (चरित्तसम्पन्ने) चारित्र सम्पन्न थे, (लज्जासम्पन्ने) लज्जा सम्पन्न थे (लाघवसम्पन्ने) लाघव सम्पन्न थे (लज्जा लाघवसम्पन्ने) लज्जा एवं लाघव से संपन्न थे (ओयंसी, तेयंसी, वच्चंसी जसंसी) ओजस्वी थे, तेजस्वी थे वर्चस्वी थे, यशस्वी थे, (जियमाणे) जितमान थे (जियमाए) जितमाय थे (जियलोहे, जियणिद्दे जिइंदिए) जित लोभ थे, जितनिद्र थे, जित इन्द्रिय थे (जियपरीसहे, जीवियासमरणभयविप्पमुक्के) जीने की आशा से और मरण के भय से विमुक्त थे (तवप्पहाणे गुणप्पहाणे) तपप्रधान थे, गुणप्रधान थे (करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे, निच्छयप्पहाणे, अज्जवप्पहाणे, मद्दवप्पहाणे, लाघवप्पहाणे

ण्णे) પાર્શ્વાપત્યીય–ભગવાન પાર્શ્વનાથની શિષ્ય પરંપરામાં સ્થિત (केसी नाम कुमारसमणे) કેશી નામક કુમાર શ્રમણ કે જે કુમાર અવસ્થામાં જ દીક્ષિત થયા હતા–અને જે (जाइसम्पन्ने) જાતિસંપન્ન હતા. (कुलसम्पण्णे) કુલ સંપન્ન હતા. (बलसम्पण्णे) બલ સંપન્ન હતા (रूवसम्पण्णे) રૂપસંપન્ન હતા. (विणयसम्पन्ने) વિનય સંપન્ન હતા. (नाणसम्पण्णे) જ્ઞાન સંપન્ન હતા (दंसणसम्पन्ने) દર્શન–સંપન્ન હતા (चरित्तसम्पण्णे) ચારિત્ર સંપન્ન હતા (लज्जासम्पण्णे) લજ્જા સંપન્ન હતા. (लाघवसम्पण्णे) લાઘવ સંપન્ન હતા (लज्जालाघवसम्पन्ने) લજ્જા અને લાઘવ સંપન્ન હતા. (ओयंसी तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी) ઓજસ્વી હતા, તેજસ્વી હતા વર્ચસ્વી હતા યશસ્વી હતા. (जियकोहे) જિત ક્રોધી હતા. (जियमाणे) જિતમાન હતા. (जियमाए) જિતમાય હતા. (जियलोहे जियणिद्दे जिइंदिए) જિત લોભ હતા જિતનિદ્ર હતા જિતેન્દ્રિય હતા (जियपरीसहे, जीवीयासमरणभयविप्पमुक्के) જીવવાની આશા અને મરણના ભયથી વિપ્રમુક્ત હતા (तवप्पहाणे गुणप्पहाणे) તપ પ્રધાન હતા, ગુણ પ્રધાન હતા. (करणप्पहाणे, चरणप्प

आर्जवप्रधानो मार्दवप्रधानो लाघवप्रधानः क्षान्तिप्रधानो गुप्तिप्रधानो मुक्तिप्रधानो विद्याप्रधानो मन्त्रप्रधानो ब्रह्मप्रधानो वेदप्रधानो नयप्रधानो नियमप्रधानः सत्यप्रधानः शौचप्रधानो ज्ञानप्रधानो दर्शनप्रधानः चारित्रप्रधानः उदारः चतुर्दशपूर्वी चतुर्ज्ञानोपगतः पञ्चभिः अनगारशतैः सार्द्धं संपरिवृतः पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन् सुखसुखेन विहरन् यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं तत्रैव उपागच्छति, श्रावस्तीनगर्या बहिः कोष्ठके

खंतिप्पहाणे, मुत्तिप्पहाणे, गुत्तिप्पहाणे विज्जाप्पहाणे, मंतप्पहाणे, वेयप्पहाणे) करणप्रधान थे, चरण प्रधान थे, निग्रह प्रधान थे, निश्चयप्रधान थे आर्जवप्रधान थे, मार्दव प्रधान थे, लाघवप्रधान थे, क्षान्तिप्रधान थे मुक्तिप्रधान थे, गुप्तिप्रधान थे, विद्या प्रधान थे, मन्त्रप्रधान थे, ब्रह्मप्रधान थे, वेद प्रधान थे, (नयप्पहाणे नियमप्पहाणे, सच्चप्पहाणे, सोयप्पहाणे, नाणप्पहाणे, दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे, ओराले चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए) नयप्रधान थे, नियमप्रधान थे, सत्यप्रधान थे, शौचप्रधान थे, ज्ञान प्रधान थे, दर्शन प्रधान थे, चारित्र प्रधान थे, उदार थे. चौदह पूर्वके धारी थे, और मतिज्ञान आदि चार ज्ञान वाले, थे (पंचहिं अणगारसएहिं संपरिवुडे) पांचसौ अनगारों के साथ (पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी णयरी, जेणेव कोट्ठए चेइए, तेणेव उवागच्छइ) तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विहार करते हुए,

---

हाणे, निग्गहप्पहाणे, निच्छयप्पहाणे, अज्जवप्पहाणे, मद्दवप्पहाणे, लाघवप्पहाणे, खंतिप्पहाणे, मुत्तिप्पहाणे, गुत्तिप्पहाणे, विज्जाप्पहाणे, मंतप्पहाणे वेयप्पहाणे) કરણ પ્રધાન હતા, ચરણ પ્રધાન હતા, નિગ્રહ પ્રધાન હતા, નિશ્ચય પ્રધાન હતા, આર્જવ પ્રધાન હતા, માર્દવ પ્રધાન હતા, લાઘવ પ્રધાન હતા, ક્ષાંતિ-પ્રધાન હતા, મુક્તિ પ્રધાન હતા, ગુપ્તિ પ્રધાન હતા, વિજ્ય પ્રધાન હતા, મંત્ર પ્રધાન હતા, બ્રહ્મ પ્રધાન હતા, વેદ પ્રધાન હતા (नयप्पहाणे, नियमप्पहाणे, सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे, नाणप्पहाणे, दंसणप्पहाणे, चरित्तप्पहाणे, ओराले चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए) નય પ્રધાન હતા, નિયમ પ્રધાન હતા, સત્ય પ્રધાન હતા, શૌચ પ્રધાન જ્ઞાન પ્રધાન હતા, દર્શન પ્રધાન હતા, ચારિત્ર પ્રધાન હતા, ઉદાર હતા, ચૌદપૂર્વના ધારી હતા અને મતિજ્ઞાન વગેરે ચાર જ્ઞાનવાળા હતા (पंचहिं अणगारसएहिं, सद्धिं संपरिवुडे) પાંચસો અનગારોના સાથે (पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव कोट्ठए चेइए, तेणेव उवागच्छइ) તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતા કરતા

चैत्ये यथाप्रतिरूपम् अवग्रहम् अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥ सू० १०७ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि—

तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वापत्यीयः=भगवतः पार्श्वनाथस्य शिष्यपरम्परायां स्थित केशीनामकुमारश्रमणः—कुमारश्चासौ श्रमणश्चेति, कौमार्यावस्थायां प्रव्रजित इत्यर्थः, स कीदृशः ? इत्याह—जातिसम्पन्न—जातिः=मातृपक्षः—तेन सम्पन्नो=युक्तः—उत्तममातृपक्ष सम्पन्न इत्यर्थ, तथा कुलसम्पन्नः—कुलं=पैतृको वंश, तेन सम्पन्न —उत्तमपितृपक्षसम्पन्न इत्यर्थः, तथा—बल

एक ग्राम से दूसरे ग्राम में जाते हुए आनन्द के साथ जहां श्रावस्ती नगरी थी और जहां कोष्ठक चैत्य था, वहां पर आये (सावत्थीनयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावमाणे विहरइ) वहां आकर वे श्रावस्ती नगरी के बाहर प्रदेश में स्थित काष्ठक चैत्य में यथाप्रतिरूप अवग्रह पासकर संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए ठहर गये ।)

टीकार्थ—उस काल और उस समय में पर्श्वापत्यीय भगवान् पार्श्वनाथकी शिष्य परंपरा में स्थित केशीकुमार श्रमण जिन्होंने कौमार्य-बाल्य अवस्था में प्रव्रज्या धारण करली थी तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विहार करते हुए कोष्ठक चैत्य में आकर ठहरे, ये जाति संपन्न थे मातृपक्षका नाम जाति है, उससे ये युक्त थे अर्थात् उत्तम मातृपक्षवाले थे, पैतृक वंशका नाम 'कुल' है, उस से भी ये युक्त थे अर्थात् उत्तम पितृपक्षवाले थे विशिष्ट

એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતાં કરતાં આનંદની સાથે જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી અને જ્યાં કોષ્ઠક ચૈત્ય (ઉદ્યાન) હતું ત્યાં આવ્યા. (સાવત્થી નયરીએ બહિયા કોટ્ઠએ ચેઇએ અહાપડિરૂવં ઉગ્ગહં ઉગ્ગિણ્હિત્તા સંજમેણં તવસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરઇ) ત્યાં જઈને તેઓ શ્રાવસ્તી નગરીની બહાર-કોષ્ઠક ચૈત્યમાં યથા-પ્રતિરૂપ અવગ્રહ પ્રાપ્ત કરીને સંયમ અને તપથી આત્માને ભાવિત કરતાં રોકાયા.

ટીકાર્થ—તે કાળે અને તે સમયે પાર્શ્વાપત્યીય ભગવાન-પાર્શ્વનાથની શિષ્ય પરંપરામાં સ્થિત કેશીકુમાર શ્રમણ-કે જેમણે કૌમાર અવસ્થામાં પ્રવ્રજ્યા ધારણ કરી હતી તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં કરતાં કોષ્ઠક ચૈત્યમાં આવીને રોકાયા. તેઓ જાતિ સંપન્ન હતા. માતૃપક્ષનું નામ જાતિ છે એનાથી તેઓ યુક્ત હતા એટલે કે ઉત્તમમાતૃપક્ષવાળા હતા. પૈતૃક વંશનું નામ કુળ છે એનાથી તેઓ યુક્ત હતા એટલે કે તેઓ ઉત્તમપિતૃપક્ષવાળા હતા. વિશિષ્ટ સંહનનથી સમુત્પ-

सम्पन्नः–बलं=विशिष्टसंहननसमुत्था शक्तिः, तेन सम्पन्नः, रूपसम्पन्नः–रूपम्=सर्वोत्कृष्ट शारीरं सौंदर्यं तेन सम्पन्नः, विनयसम्पन्नः–विनयःप्रसिद्धः, तेन सम्पन्नः, तथा ज्ञानसम्पन्नः=मत्यादिज्ञानयुक्तः, दर्शनसम्पन्नः=सम्यक्त्वयुक्तः, चारित्रसम्पन्नः=चारित्रं=संयमः तेन संपन्नो=युक्तः, लज्जासम्पन्नः-लज्जा=अनुचितानुष्ठानसंवरणात्मिकरूपाः, तया सम्पन्नः=युक्तः, लाघवसम्पन्नः=लाघवं=द्रव्यतोऽल्पोपधित्वं, भावतो गौरवत्यागः, ताभ्यां सम्पन्नः, लज्जालाघवसम्पन्नः=लज्जया लाघवेन च स सततमेव सम्पन्नः। तथा–ओजस्वी––ओजः=आत्मिकं तेजः, तदस्ति यस्य स तथा, आत्मिकतेजःसम्पन्न इत्यर्थः, तेजस्वी–तेजःशरीरप्रभा, तदस्ति यस्य तथा अनुपमशरीरप्रभाविशिष्ट इत्यर्थः, तथा वर्चस्वी=प्रभाववान्, 'वचस्वी'–इतिच्छायापक्षे–प्रशस्तवचनयुक्त इत्यर्थः, तथा–जितक्रोधः=क्रोधजेता, जितमानःमानजेता–

संहनन से समुत्थ शक्ति का नाम बल है, इस बल से ये युक्त थे, सर्वोत्कृष्ट शारीरिक सौन्दर्य का नाम रूप है. इस रूप से ये संपन्न थे, विनय संपन्न थे, मत्यादि ज्ञानों से संपन्न थे, सम्यक्त्व से युक्त थे, संयमरूप चारित्र से युक्त थे, लज्जा से युक्त थे अर्थात्-अनुचित काम करने से सदा दूर रहते थे. लाघव से युक्त थे, लाघव द्रव्य और भाव की अपेक्षा से दो प्रकार का कहा गया है अल्प उपधि रखना यह द्रव्य की अपेक्षा लाघव है तथा गौरव का त्याग करना यह भाव की अपेक्षा लाघव है। लज्जा और लाघव इन दोनों से ये युक्त थे. इनमें आत्मिक तेज पूर्णरूप से भरा हुआ था अतः ओजस्वी थे. शरीर प्रभा का नाम तेज है. यह शारीरिक तेज इनका अनुपम था. इसलिये ये तेजस्वी थे. प्रभाववान् थे इसलिये वर्चस्वी थे अथवा प्रशस्तवचन से युक्त थे. इसलिये वचस्वी थे. क्रोध के विजेता थे अतः जित क्रोध थे.

શક્તિનું નામ બળ છે, આ બળથી એઓ યુક્ત હતા સર્વોત્કૃષ્ટ શારીરિક સૌન્દર્યનું નામ રૂપ છે, આ રૂપથી એઓ સંપન્ન હતા, વિનયયુક્ત હતા, મતિ વગેરે જ્ઞાનોથી સંપન્ન હતા સમ્યક્ત્વથી યુક્ત હતા, સંયમરૂપ ચારિત્રથી યુક્ત હતા. લજ્જાથી યુક્ત હતા એટલે કે–સાવદ્ય કામમાં લજ્જા રાખતા હતા દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ લાઘવના બે પ્રકારો છે અલ્પ ઉપધિ રાખવી એ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ લાઘવ છે તેમજ ગૌરવ ત્યાગ એ ભાવની અપેક્ષાએ લાઘવ છે લજ્જા અને લાઘવ આ બન્નેથી એઓ સંપન્ન હતા, આત્મિક તેજ એમનામાં પ્રચુર પ્રમાણમાં હતું એથી એઓ ઓજસ્વી હતા શરીરપ્રભાનું નામ તેજ છે. એમનું આ શારીરિક તેજ અનુપમ હતું એથી જ એઓ તેજસ્વી હતા, પ્રભાવાન્ હતા એથી જ એઓ વર્ચસ્વી હતા ક્રોધને જીતનાર હતા એથી એઓ જિત-ક્રોધી હતા, માનના વિજેતા હતા એથી જિત

निग्रहः, तत्प्रधान यस्य स तथा, मार्दवप्रधानः-मार्दवम्=मृदुता-नम्रता तत् प्रधान यस्य स तथा लाघवप्रधानः-लाघवम्=लघुता-द्रव्यभावलघुता तत्प्र धान यस्य स तथा, क्षान्तिप्रधान -क्षान्तिः=क्रोधनिग्रह , सा प्रधान यस्य स तथा, गुप्तिप्रधान -गुप्तिः=मनोगुप्त्यादिका, सा प्रधान यस्य स तथा, मुक्तिप्रधान -मुक्तिः=निर्ममता, सा प्रधान यस्य स तथा, सर्वथा निर्लोभ इत्यर्थः विद्याप्रधान-विद्याः=रोहिणीप्रज्ञप्त्यादिदेवताधिष्ठिताः वर्णानुपूर्वीरूपा ता प्रधानानि यस्य स तथा मन्त्रप्रधानः-मन्त्राः-हरिणैगमेष्यादिदेवाधिष्ठिताः ते प्रधानानि यस्य स तथा, ब्रह्मप्रधानः-ब्रह्म=ब्रह्मचर्य मैथुनविरमणलक्षण

स्वीकार करनेरूप निश्चय इनमें था, इसलिये ये निश्चयप्रधान थे। आर्जव नाम ऋजुता (सरलता) का है और यह माया निग्रहरूप होती है। यह इनकी प्रधान थी अतः ये आर्जवप्रधान थे, मार्दव प्रधान इसलिये थे कि इनमें मृदुता-नम्रता प्रधानरूप से थी लाघवप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें द्रव्यभावरूप लघुता (हलकापन) प्रधा नरूप से थी क्षान्तिप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें क्रोध को निग्रह कर नेरूप परिणति प्रधान थी गुप्तिप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें मनोगुप्ति वचनगुप्ति एवं कायगुप्ति ये तीन गुप्तियाँ प्रधान थीं मुक्तिप्रधान थे इस लिये थे कि इनमें निर्लोभता प्रधानरूप में थी, विद्याप्रधान ये इसलिये थे कि रोहिणी प्रज्ञप्त्यादिक देवताधिष्ठित वर्णानुपूर्वीरूप विद्याएं इनमें प्रधान थीं मन्त्रप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें हरिणैगमेषी आदि देवाधिष्ठित मन्त्रप्रधान थे मैथुनविरमणरूप ब्रह्मचर्य का नाम ब्रह्म है अथवा सर्व ही

ભાવ હોય છે એ પણ એમનામાં હતો. એથી એઓ નિશ્ચયપ્રધાન હતા. આર્જવ ઋજુતા (સરલતા)નું નામ છે. અને માયાનિગ્રહરૂપ પ્રવૃત્તિ હોય છે એ પણ એમનામાં પ્રધાનરૂપે હતી એથી એઓ આર્જવ પ્રધાન હતા. માર્દવ પ્રધાન એઓ એટલા માટે હતા કે એમનામાં મૃદુતા-વિનમ્રતા-પ્રધાનરૂપે હતી એમનામાં દ્રવ્યભાવ લઘુતા પ્રધાનરૂપે હતી એથી જ એઓ લાઘવપ્રધાન હતા ક્રોધને નિગ્રહ કરવારૂપ પરિણતિ એમનામાં પ્રધાન હતી એથી એઓ ક્ષાંતિ પ્રધાન હતા. એમનામાં મનોગુપ્તિ, વચનગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ એ ત્રણે ગુપ્તિઓ પ્રધાન હતી એથી એઓ ગુપ્તિપ્રધાન હતા. એમનામાં નિર્લોભતા પ્રધાનરૂપે હતી એથી એઓ મુક્તિપ્રધાન હતા એમનામાં રોહિણી પ્રજ્ઞ પ્ત્યાદિક દેવતાધિષ્ઠિત વર્ણાનુપૂર્વીરૂપ વિદ્યાઓ પ્રધાન હતી એથી જ એઓ વિદ્યાપ્રધાન હતા. એમનામાં હરિણૈગમેષી વગેરે દેવાધિષ્ઠિત મંત્રપ્રધાન હતા એથી એઓ મંત્ર પ્રધાન હતા. મૈથુન વિરમણરૂપ બ્રહ્મચર્યનું નામ બ્રહ્મ છે અથવા સર્વકુશળ અનુ-

मिति सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानं, तत्प्रधानं यस्य स तथा, वेदप्रधानः-वेदः= आगमः-लौकिक-लोकोत्तरकुप्रावचनिकभेदेन त्रिविधः, स प्रधानं यस्य स तथा, स्वसमयपरसमयज्ञानसम्पन्न इत्यर्थः, नयप्रधानः-नयाः=नैगमादयःसप्त त एव भेदप्रभेदतः सप्तशतविधाः, ते प्रधानानि यस्य स तथा विचित्राभिग्रहधारीत्यर्थः, सत्यप्रधानः-सत्यं=सकलप्राणिनामत्यन्तहितकरं वचनम्, तत् प्रधानं यस्य स तथा-हितमितप्रियवचनयुक्त इत्यर्थः, शौचप्रधानः-शौचं=द्रव्यतो लेपरहित्यं भावतो निरवद्याचरणं, तत् प्रधानं यस्य स तथा, ज्ञानप्रधानः-ज्ञानं=मत्यादिकं तत् प्रधानं यस्य स तथा, दर्शनप्रधानः

कुशल अनुष्ठानों का नाम ब्रह्म है इन ब्रह्मप्रधानता वाले वे थे. इसलिये इन्हें ब्रह्मप्रधान कहा गया है। आगम का नाम वेद है, यह लौकिक, लोकोत्तर, और कुप्रावचनिक के भेद से तीन प्रकार का है, यह वेद इनमें प्रधान था अतः इन्हे वेदप्रधान कहा गया है। तात्पर्य यह कि ये स्वसमय के और परसमय के ज्ञान से संपन्न थे नैगम, संग्रह आदि जो सात नय है ये नय ही भेदप्रभेद की अपेक्षा ७०० हो जाते है ये नय इनमें प्रधान थे अर्थात ये बहुत ही सूक्ष्मरूप से नयों के विशेषज्ञाता थे इसलिये इन्हें नयप्रधान कहा गया है। अभिग्रहविशेषों का नाम नियम है अर्थात् ये विचित्र अभिग्रहों के धारी थे सकलप्राणियों के एकान्तरूप से हितकर्ता जो वचन होते है उनका नाम सत्य है इस सत्यप्रधान ये थे अर्थात् ये हित, मित, प्रिय वचन बोलते थे। द्रव्य और भाव की अपेक्षा से शौच दो प्रकार का है-लेपरहित होना यह द्रव्य की अपेक्षा शौच है

ष्ठानोनु नाम ब्रह्म छे એઓ આ બ્રહ્મ પ્રધાનતાથી યુક્ત હતા એથી જ એઓ બ્રહ્મપ્રધાન કહેવાતા હતા, આગમનુ નામ વેદ લૌકિક, લોકોત્તર અને કુપ્રાવચનિક આમ ત્રણુ પ્રકારનો છે, આ વેદ એમનામા પ્રધાન હતો એથી એઓ વેદપ્રધાન કહેવાતા મતલબ આ છે કે એઓ સ્વસમયના અને પરસમયના જ્ઞાનથી સંપન્ન હતા, નૈગમ, સગ્રહ વગેરે જે સાત નયો છે તે નયો ભેદ પ્રભેદની અપેક્ષાએ ૭૦૦ થઇ જાય છે, એ નય પણુ એમનામા પ્રધાન હતા એટલે કે એઓ ખૂબ જ નયના સૂક્ષ્મજ્ઞાતા હતા, એથી જ એઓ નયપ્રધાન કહેવાય છે, અભિગ્રહ વિશેષનું નામ નિયમ છે, એટલે કે એઓ વિચિત્ર અભિગ્રહોને ધારણુ કરનારા હતા, એકનિષ્ઠ થઇને જે સકલ પ્રાણીઓના હિત માટે વચનો કહેવાય છે તે સત્ય છે, એઓ સત્યપ્રધાન હતા, એટલે કે એઓ હિત, મિત અને પ્રિય વચન બોલનારા હતા વ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ શૌચના બે પ્રકારો છે, લેપરહિત થવુ એ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ શૌચ છે, અને નિરવદ્ય આચરણુ કરવુ એ ભાવની અપે-

मानापमानयोस्तुल्य इत्यर्थः, जितमाय =मायया निष्कपट , जितलोभ=लोभजेता, जितनिद्र =वशीकृतनिद्र , जितेन्द्रियः=निगृहीतसकलेन्द्रियः, जितपरीषह = परीषहजेता, तथा-जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः-जीवितस्य=जीवनस्य या आशा तस्या , तथा-मरणस्य=प्राणवियोगस्य यद् भयं तस्माद् विप्रमुक्तः= रहितः जीवनमरणयोः समभावयुक्त इत्यर्थः । तथा तपःप्रधान :=तपसा प्रधानः= सकलमुनीनां मध्ये प्राधान्यत्वं प्राप्तः, अथवा-तप=तपस्या प्रधानं यस्य स महातपस्वीत्यर्थः। गुणप्रधान -गुणैः =क्षान्त्यादिगुणैः प्रधानः=श्रेष्ठः । 'तपः प्रधानगुणप्रधाने' ति विशेषणद्वयेन तपः पूर्वबद्धकर्मणो निर्जराहेतुत्वेन संयमस्य चाभिनवकर्मणोऽनुपादहेतुत्वेन मोक्षोपायत्वा मोक्षार्थिभिस्तावदवश्य

मान के विजेता थे अतः जितमान थे, तात्पर्य मान अपमान में सम थे सर्वथा निष्कपट थे अतः जितमाय थे, लोभ के जेता थे अतः जितलोभ थे निद्रा को वश में कर लिया था इसलिये जितनिद्र थे समस्त इन्द्रियों के निग्रहकर्ता थे-इसलिये जितेन्द्रिय थे-परीषहों पर विजय पा लिया था इसलिये जित परीषह थे, जीने की आशा से एवं मरण के भय से बिलकुल विप्रमुक्त थे-इसलिये जीवन मरण में समभाव वाले थे तपसे सकल मुनिजनों में प्रधानता प्राप्तकरचुके थे के कारण थे तपःप्रधान थे अथवा तपस्या प्रधान थी महातपस्वी थे इसलिये तपः प्रधान थे क्षान्त्यादिक गुणों से श्रेष्ठ होने के कारण गुणप्रधान थे "तपः प्रधान एवं गुणप्रधान" इन दो विशेषणों से यह सूचित किया गया है कि तप पूर्वबद्ध-कर्मों की निर्जरा का हेतु होता है एवं संयम नवीन कर्मों को अनुपादेयता का हेतु होता है अर्थात् नवीन कर्मों के आगमन

હતા અર્થાત્ માન અપમાન બન્ને એમના માટે સરખા હતાં એઓ સર્વથા નિષ્કપટ હતા એથી જિતમાન હતા. લોભને જીતનાર હતા એથી જિતલોભી હતા એમણે નિદ્રાવશ કરી હતી એથી એઓ જિતનિદ્ર હતા બધી ઇન્દ્રિયોને એમણે વશમાં કરી રાખી હતી. એથી એઓ જિતેન્દ્રિય હતા, પરીષહો પર એમણે વિજય મેળવ્યો હતો એથી એઓ જિત પરીષહ હતા. જીવવાની આશાથી અને મરણના ભયથી એઓ એકદમ વિપ્રમુક્ત હતા એથી જીવન મરણમાં એઓ સમભાવશીલ હતા. સકલ મુનિઓમાં તપની અપેક્ષાએ પ્રધાન હોવાથી એઓ તપ:પ્રધાન હતા અર્થાત્ મહાતપસ્વી હતા, ક્ષાન્ત્યાદિક શ્રેષ્ઠ ગુણોથી યુક્ત હોવા બદલ એઓ ગુણ પ્રધાન હતા તપ:પ્રધાન અને ગુણપ્રધાન આ બે વિશેષણોથી એ વાત સૂચિત કરવામાં આવી છે કે તપ પૂર્વબદ્ધકર્મોની નિર્જરાનો હેતુ હોય છે અને સંયમ

मेवोपादेयानिति सूचितम्। सामान्यतो गुणप्राधान्यमुक्त्वा सम्प्रति विशेषत स्तदाह-तथाहि-करणप्रधानः-करणं=पिण्डविशुद्ध्यादि सप्ततिविधम्, तदुक्तम्

'पिंडविसोही (७) समिई (५) भावण) (१२) पडिमा (१२) य इंदियनिरोहो(५)। पडिलेहण (२५) गुत्तीओ (३) अभिग्गहो (१) चेव करणं तु ॥१॥

छाया—पिण्डविशोधिः समिति भावना-प्रतिमा च इन्द्रियनिरोधः।
प्रतिलेखना गुप्तयः अभिग्रहाश्चैव करणं तु ॥ इति॥

तत्प्रधानं यस्य स तथा. चरणप्रधानः-चरणं=महाव्रतादि सप्ततिविधम्, तदुक्तम्-- वय (५) समणधम्म (१०) संजम (१७) वेयावच्चं (१०) च बंभ-
गुत्तीओ (५) णाणाइतियं (३) तवं (१२) कोह निग्गहाई (४)चरणमेयं

छाया--व्रत श्रमणधर्मः संयमो वैयावृत्त्यं च ब्रह्मगुप्तयः।
ज्ञानादित्रिकं तपः क्रोध निग्रहादिः चरणमेतत् ॥इति॥

तत्-प्रधान यस्य स तथा, निग्रहप्रधानः निग्रहः=असदाचारप्रवृत्तेर्निषेधः स प्रधानं यस्य स तथा, निश्चयप्रधानः=निश्चयः=तत्त्वाना निर्णयो विहितानुष्ठानानामव-श्यमभ्युपगमो वा, स प्रधानं यस्य स तथा आर्जवप्रधानः=आर्जवं=ऋजुता माया-

को रोकनेवाला होता है- इसलिये ये दोनों मोक्ष के उपायभूत होते हैं अत मोक्षार्थियों को इन्हें अवश्य प्राप्त करना चाहिये।

अब सामान्यरूप से गुणप्रधानता कहकर विशेषरूप से उसका प्रति-पादन करने के लिये कहा गया है—करण प्रधान इत्यादि पिण्डविशु द्ध्यादि सात प्रकारका है-कहा भी है 'पिंडविसोही' इत्यादि, इन गुणो से ये युक्त थे अतः ये करण प्रधान कहे गये हैं। महाव्रतादि रूप चरण ७० प्रकार का कहा गया है-जैसे 'वय' इत्यादि यह चरण इनमें प्रधान था. अतः ये चरण प्रधान थे. असदाचारप्रवृत्ति के निषेध का नाम निग्रह है यह निग्रह इनमें प्रधान था. अतःइन्हें निग्रह प्रधान कहा गया है। तत्वों का निर्णय करनेरूप निश्चय अथवा विहित अनुष्ठानों का अवश्य

કર્મોની અનુપાદેયતાનો હેતુ હોય છે એટલે કે નવીન કર્મોને રોકનાર હોય છે. એથી જ એઓ બન્ને મોક્ષ માટે ઉપાયભૂત કહેવાય છે એથી મુમુક્ષુલોકોને માટે એ બન્ને અવશ્ય આદરણીય છે.

હવે સામાન્યરૂપથી ગુણપ્રધાનતાને કહીને વિશેષરૂપથી તેનું પ્રતિપાદન કરવા માટે કહે છે કે-કરણપ્રધાન ઇત્યાદિ પિંડવિશુદ્ધ વગેરે રૂપ જે કરણ છે તેના સાત પ્રકારો છે. કહ્યુ છે-'પિંડ વિસોહી' વગેરે આ કારણ એમનામા પ્રધાનરૂપે હતુ. એથી એઓ કરણપ્રધાન કહેવાય છે મહાવ્રતાદિરૂપ ચરણના ૭૦ પ્રકારો કહેવાય છે. જેમકે વય ઇત્યાદિ - આ ચરણ પણ એમનામા પ્રધાનરૂપે હતું એથી એઓ ચરણ પ્રધાન હતા અસદાચારની પ્રવૃત્તિના નિષેધનુ નામ નિગ્રહ છે. આ નિગ્રહ એમનામા પ્રધાનરૂપે હતો એથી જ એમને નિગ્રહ પ્રધાન કહેવામા આવ્યા છે તત્ત્વોના નિર્ણય માટે જે નિશ્ચયાત્મક દૃઢ વૃત્તિ અથવા વિહિત અનુષ્ઠાનોને સ્વીકારવારૂપ જે નિશ્ચયાત્મક

मानापमानयोस्तुल्य इत्यर्थः, जितमाय=मायया निष्कपटः, जितलोभः=लोभजेता, जितनिद्रः=वशीकृतनिद्रः, जितेन्द्रियः=निगृहीतसकलेन्द्रियः, जितपरीषहः=परीषहजेता, तथा-जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः-जीवितस्य=जीवनस्य या आशा तस्याः, तथा-मरणस्य=प्राणवियोगस्य यद् भयं तस्माच्च विप्रमुक्तः=रहितः जीवनमरणयोः समभावयुक्त इत्यर्थः तथा तपःप्रधानः=तपसा प्रधानः=सकलमुनीनां मध्ये प्राधान्यं प्राप्तः, अथवा-तपः=तपस्या प्रधानं यस्य स महातपस्वीत्यर्थः, गुणप्रधानः-गुणैः=क्षान्त्यादिगुणैः प्रधानः=श्रेष्ठः। 'तपःप्रधानगुणप्रधाने' ति विशेषणद्वयेन तपसः पूर्वबद्धकर्मणो निर्जराहेतुत्वेन संयमस्य चागामिनवकर्मणोऽनुपादानहेतुत्वेन मोक्षोपायत्वान्मोक्षार्थिभिस्तावदवश्य

मान के विजेता थे अतः जितमान थे, तात्पर्य मान अपमान में सम थे सर्वथा निष्कपट थे अतः जितमाय थे, लोभ के जेता थे अतः जितलोभ थे, निद्रा को वश में कर लिया था इसलिये जितनिद्र थे समस्त इन्द्रियों के निग्रहकर्ता थे-इसलिये जितेन्द्रिय थे-परीषहों पर विजय पा लिया था इसलिये जित परीषह थे, जीने की आशा से एवं मरण के भय से बिल्कुल विप्रमुक्त थे-इसलिये जीवन मरण में समभाव शाली थे तपसे सकल मुनिजनो में प्रधानता प्राप्त करलेने के कारण थे तपःप्रधान थे अथवा तपस्या प्रधान थे महातपस्वी थे इसलिये तपः प्रधान थे क्षान्त्यादिक गुणों से श्रेष्ठ होने के कारण गुणप्रधान थे "तपः प्रधान एवं गुणप्रधान" इन दो विशेषणों से यह सूचित किया गया है कि तप पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा का हेतु होता है एवं संयम नवीन कर्मों की अनुपादेयता का हेतु होता है अर्थात् नवीन कर्मों के आगमन

હતા અર્થાત્ માન અપમાન બન્ને એમના માટે સરખા હતા. એઓ સર્વથા નિષ્કપટ હતા એથી જિતમાન હતા લોભને જીતનાર હતા એથી જિતલોભી હતા, એમણે નિદ્રાવશ કરી હતી એથી એઓ જિતનિદ્ર હતા બધી ઇન્દ્રિયોને એમણે વશમાં કરી રાખી હતી. એથી એઓ જિતેન્દ્રિય હતા પરીષહો પર એમણે વિજય મેળવ્યો હતો એથી એઓ જિત પરીષહ હતા. જીવવાની આશાથી અને મરણના ભયથી એઓ એકદમ વિપ્રમુક્ત હતા. એથી જીવન મરણમાં એઓ સમભાવશાલી હતા. સકલ મુનિઓમાં તપની અપેક્ષાએ પ્રધાન હોવાથી એઓ તપ:પ્રધાન હતા, અર્થાત્ મહાતપસ્વી હતા ક્ષાન્ત્યાદિ શ્રેષ્ઠ ગુણોથી યુક્ત હોવા બદલ એઓ ગુણ પ્રધાન હતા "તપઃપ્રધાન અને ગુણપ્રધાન" આ બે વિશેષણોથી એ વાત સૂચિત કરવામાં આવી છે કે તપ પૂર્વબદ્ધકર્મોની નિર્જરાનો હેતુ હોય છે અને સંયમ

मिति सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानं, तत्प्रधानं यस्य स तथा, वेदप्रधानः-वेदः= आगमः-लौकिक-लोकोत्तरकुमावचनिकभेदेन त्रिविधः, स प्रधानं यस्य स तथा, स्वसमयपरसमयज्ञानसम्पन्न इत्यर्थः, नयप्रधानः-नयाः=नैगमादयःसप्त त एव भेदप्रभेदतः सप्तशतविधाः, ते प्रधानानि यस्य स तथा विचित्राभिग्रहधारीत्यर्थः, सत्यप्रधानः-सत्यं=सकलप्राणिनामत्यन्तहितकरं वचनम्, तत् प्रधानं यस्य स तथा-हितमितप्रियवचनयुक्त इत्यर्थः, शौचप्रधानः-शौच=द्रव्यतो लेपराहित्यं भावतो निरवद्याचरणं, तत् प्रधानं यस्य स तथा, ज्ञानप्रधानः-ज्ञान=मत्यादिकं तत् प्रधानं यस्य स तथा, दर्शनप्रधानः

कुशल अनुष्ठानों का नाम ब्रह्म है इस ब्रह्मप्रधानता वाले वे थे. इसलिये इन्हें ब्रह्मप्रधान कहा गया है। आगम का नाम वेद है. यह लौकिक, लोकोत्तर, और कुमावचनिक के भेद से तीन प्रकार का है. यह वेद इनमें प्रधान था. अतः इन्हे वेदप्रधान कहा गया है। तात्पर्य यह कि ये स्वसमय के और परसमय के ज्ञान से संपन्न थे नैगम, संग्रह आदि जो सात नय है ये नय ही भेदप्रभेद की अपेक्षा ७०० हो जाते है ये नय इनमें प्रधान थे अर्थात ये बहुत ही सूक्ष्मरूप से नयों के विशेषज्ञाता थे इसलिये इन्हें नयप्रधान कहा गया है। अभिग्रहविशेषों का नाम नियम है अर्थात् ये विचित्र अभिग्रहों के धारी थे सकलप्राणियों के एकान्तरूप से हितकर्ता जो वचन होते है उनका नाम सत्य है इस सत्यप्रधान ये थे अर्थात् ये हित, मित, प्रिय वचन बोलते थे। द्रव्य और भाव की अपेक्षा से शौच दो प्रकार का है-लेपरहित होना यह द्रव्य की अपेक्षा शौच है

ष्ठानोनुं नाम ब्रह्म छे એઓ આ બ્રહ્મ પ્રધાનતાથી યુક્ત હતા એથી જ એઓ બ્રહ્મ પ્રધાન કહેવાતા હતા, આગમનું નામ વેદ લૌકિક, લોકોત્તર અને કુપ્રાવચનિક આમ ત્રણ પ્રકારનો છે, આ વેદ એમનામાં પ્રધાન હતો એથી એઓ વેદપ્રધાન કહેવાતા મતલબ આ છે કે એઓ સ્વસમયના અને પરસમયના જ્ઞાનથી સંપન્ન હતા, નૈગમ, સંગ્રહ વગેરે જે સાત નયો છે તે નયો ભેદ પ્રભેદની અપેક્ષાએ ૭૦૦ થઈ જાય છે, એ નય પણ એમનામાં પ્રધાન હતા એટલે કે એઓ ખૂબ જ નયના સૂક્ષ્મજ્ઞાતા હતા, એથી જ એઓ નયપ્રધાન કહેવાય છે, અભિગ્રહ વિશેષનું નામ નિયમ છે, એટલે કે એઓ વિચિત્ર અભિગ્રહોને ધારણ કરનારા હતા, એકનિષ્ઠ થઈને જે સકલ પ્રાણીઓના હિત માટે વચનો કહેવાય છે તે સત્ય છે. એઓ સત્યપ્રધાન હતા, એટલે કે એઓ હિત, મિત અને પ્રિય વચન બોલનારા હતા વ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ શૌચના બે પ્રકારો છે, લેપરહિત થવું એ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ શૌચ છે, અને નિરવદ્ય આચરણ કરવું એ ભાવની અપે-

निग्रहः, तत्प्रधानः यस्य स तथा, मार्दवप्रधानः–मार्दवम्=मृदुता–नम्रता तत् प्रधानं यस्य स तथा, लाघवप्रधानः–लाघवम्=लघुता–द्रव्यभावलघुता तत्प्रधानं यस्य स तथा, क्षान्तिप्रधानः–क्षान्तिः=क्रोधनिग्रहः, सा प्रधानं यस्य स तथा, गुप्तिप्रधानः–गुप्तिः=मनोगुप्त्यादिका, सा प्रधानं यस्य स तथा, मुक्तिप्रधानः–मुक्तिः=निर्लोभता, सा प्रधानं यस्य स तथा, सर्वथा निर्लोभ इत्यर्थः। विद्याप्रधानः–विद्याः=रोहिणीप्रज्ञप्त्यादिदेवताधिष्ठिताः वर्णानुपूर्वीरूपाः ताः प्रधानानि यस्य स तथा मन्त्रप्रधानः–मन्त्राः–हरिणैगमेष्यादिदेवाधिष्ठिताः ते प्रधानानि यस्य स तथा, ब्रह्मप्रधानः–ब्रह्म=ब्रह्मचर्यं मैथुनविरमणलक्षणं

स्वीकार करनेरूप निश्चय इनमें था, इसलिये ये निश्चयप्रधान थे। आर्जव नाम ऋजुता (सरलता) का है और यह मायानिग्रहरूप होती है। यह इनकी प्रधान थी अतः ये आर्जवप्रधान थे मार्दवप्रधान इसलिये थे कि इनमें मृदुता–नम्रता प्रधानरूप से थी लाघवप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें द्रव्यभावरूप लघुता (हलकापन) प्रधानरूप से थी क्षान्तिप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें क्रोध को निग्रह करनेरूप परिणति प्रधान थी गुप्तिप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें मनोगुप्ति वचनगुप्ति एवं कायगुप्ति ये तीन गुप्तियां प्रधान थीं मुक्तिप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें निर्लोभता प्रधानरूप में थी, विद्याप्रधान थे इसलिये थे कि रोहिणी प्रज्ञप्त्यादिक देवताधिष्ठित वर्णानुपूर्वीरूप विद्याएं इनमें प्रधान थीं मन्त्रप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें हरिणैगमेषी आदि देवाधिष्ठित मन्त्रप्रधान थे मैथुनविरमणरूप ब्रह्मचर्य का नाम ब्रह्म है अथवा सर्व ही

ભાવ હોય છે એ પણ એમનામાં હતો. એથી એઓ નિશ્ચયપ્રધાન હતા. આર્જવ ઋજુતા (સરલતા)નું નામ છે. અને માયાનિગ્રહરૂપ પ્રવૃત્તિ હોય છે એ પણ એમનામાં પ્રધાનરૂપે હતી એથી એઓ આર્જવ પ્રધાન હતા. માર્દવ પ્રધાન એઓ એટલા માટે હતા કે એમનામાં મૃદુતા–વિનમ્રતા–પ્રધાનરૂપે હતી એમનામાં દ્રવ્યભાવ લઘુતા પ્રધાનરૂપે હતી એથી જ એઓ લાઘવપ્રધાન હતા ક્રોધને નિગ્રહ કરવારૂપ પરિણતિ એમનામાં પ્રધાન હતી એથી એઓ ક્ષાંતિ પ્રધાન હતા. એમનામાં મનોગુપ્તિ વચનગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ એ ત્રણે ગુપ્તિઓ પ્રધાન હતી એથી એઓ ગુપ્તિપ્રધાન હતા. એમનામાં નિર્લોભતા પ્રધાનરૂપે હતી એથી એઓ મુક્તિપ્રધાન હતા એમનામાં રોહિણી પ્રજ્ઞપ્ત્યાદિક દેવતાધિષ્ઠિત વર્ણાનુપૂર્વીરૂપ વિદ્યાઓ પ્રધાન હતી એથી જ એઓ વિદ્યાપ્રધાન હતા એમનામાં હરિણૈગમેષી વગેરે દેવાધિષ્ઠિત મંત્રપ્રધાન હતા એથી એઓ મંત્રપ્રધાન હતા. મૈથુન વિરમણરૂપ બ્રહ્મચર્યનું નામ બ્રહ્મ છે અથવા સર્વકુશળ અનુ-

मिति सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानं, तत्प्रधानं यस्य स तथा, वेदप्रधानः-वेदः= आगमः-लौकिक-लोकोत्तरकुप्रावचनिकभेदेन त्रिविधः, स प्रधानं यस्य स तथा, स्वसमयपरसमयज्ञानसम्पन्न इत्यर्थः, नयप्रधानः-नयाः=नैगमादयःसप्त त एव भेदप्रभेदतः सप्तशतविधाः, ते प्रधानानि यस्य स तथा विचित्राभिग्रहधारीत्यर्थः, सत्यप्रधानः-सत्यं=सकलप्राणिनामत्यन्तहितकरं वचनम्, तत् प्रधानं यस्य स तथा-हितमितप्रियवचनयुक्त इत्यर्थः, शौचप्रधानः-शौच=द्रव्यतो लेपरहित्यं भावतो निरवद्याचरणं, तत् प्रधानं यस्य स तथा, ज्ञानप्रधानः-ज्ञानं=मत्यादिकं तत् प्रधानं यस्य स तथा, दर्शनप्रधानः

कुशल अनुष्ठानों का नाम ब्रह्म है इस ब्रह्मप्रधानता वाले वे थे, इसलिये इन्हें ब्रह्मप्रधान कहा गया है। आगम का नाम वेद है, यह लौकिक, लोकोत्तर, और कुप्रावचनिक के भेद से तीन प्रकार का है, यह वेद इनमें प्रधान था अतः इन्हे वेदप्रधान कहा गया है। तात्पर्य यह कि ये स्वसमय के और परसमय के ज्ञान से संपन्न थे नैगम, संग्रह आदि जो सात नय है ये नय ही भेदप्रभेद की अपेक्षा ७०० हो जाते है ये नय इनमें प्रधान थे अर्थात ये बहुत ही सूक्ष्मरूप से नयों के विशेषज्ञाता थे इसलिये इन्हें नयप्रधान कहा गया है। अभिग्रहविशेषों का नाम नियम है अर्थात् ये विचित्र अभिग्रहों के धारी थे सकलप्राणियों के एकान्तरूप से हितकर्ता जो वचन होते हैं उनका नाम सत्य है इस सत्यप्रधान ये थे अर्थात् ये हित, मित, प्रिय वचन बोलते थे। द्रव्य और भाव की अपेक्षा से शौच दो प्रकार का है-लेपरहित होना यह द्रव्य की अपेक्षा शौच है

ષ્ઠાનોનું નામ બ્રહ્મ છે એઓ આ બ્રહ્મ પ્રધાનતાથી યુક્ત હતા એથી જ એઓ બ્રહ્મ પ્રધાન કહેવાતા હતા, આગમનુ નામ વેદ લૌકિક, લોકોત્તર અને કુપ્રાવચનિક આમ ત્રણ પ્રકારનો છે, આ વેદ એમનામા પ્રધાન હતો એથી એઓ વેદપ્રધાન કહેવાતા મતલબ આ છે કે એઓ સ્વસમયના અને પરસમયના જ્ઞાનથી સંપન્ન હતા, નૈગમ, સગ્રહ વગેરે જે સાત નયો છે તે નયો ભેદ પ્રભેદની અપેક્ષાએ ૭૦૦ થઇ જાય છે, એ નય પણ એમનામા પ્રધાન હતા એટલે કે એઓ ખૂબ જ નયના સૂક્ષ્મજ્ઞાતા હતા, એથી જ એઓ નયપ્રધાન કહેવાય છે, અભિગ્રહ વિશેષનુ નામ નિયમ છે, એટલે કે એઓ વિચિત્ર અભિગ્રહોને ધારણ કરનારા હતા, એકનિષ્ઠ થઇને જે સકલ પ્રાણીઓના હિત માટે વચનો કહેવાય છે તે સત્ય છે, એઓ સત્યપ્રધાન હતા, એટલે કે એઓ હિત, મિત અને પ્રિય વચન બોલનારા હતા દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ શૌચના બે પ્રકારો છે, લેપરહિત થવુ એ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ શૌચ છે, અને નિરવદ્ય આચરણ કરવુ એ ભાવની અપે-

दर्शनं=सम्यक्त्वं, तत्प्रधानं यस्य स तथा, चारित्रप्रधानः—चारित्रं=क्रिया, तत्प्रधानं यस्य स तथा, उदारः=शुद्धाशयः, तथाच—'घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे' छाया—'घोरो घोरगुणो घोरतपस्वी घोरब्रह्मचर्यवासी उत्क्षिप्तशरीरः' इति संग्राह्यम्
'तत्र—घोरः=सातिशयदीप्तियुक्तः, घोरगुणः=सर्वोत्कृष्टगुणयुक्तः' घोरतपस्वी=कातरजनदुष्करतपःकारकः, घोरब्रह्मचारी=अल्पसत्त्वानुष्ठेयब्रह्मचर्ययुक्तः, उत्क्षिप्तशरीरः—उत्क्षिप्तम्=उज्झितमिव संस्कारपरित्यागात् शरीरं येन सः, सर्वथा शरीरसंस्कारपरिवर्जित इत्यर्थः। 'तथा—चतुर्दशपूर्वी—चतुर्दशपूर्वधारकः—तथा—चतुर्ज्ञानोपगतः=मति-श्रुतावधिमनःपर्यवेति ज्ञान

और निरवद्य आचरण करना यह भाव की अपेक्षा शौच है, इस प्रकार के शौच प्रधान थे। मत्यादिक ज्ञानों से प्रधान होने के कारण ये ज्ञानप्रधान थे, सम्यक्त्वरूप दर्शन से प्रधान होने के कारण दर्शनप्रधान थे, क्रियारूप चारित्र से प्रधान होने के कारण चारित्रप्रधान थे, शुद्धाशयरूप उदारभाव से प्रधान होने के कारण ये उदार थे, यहां 'घोरे' इत्यादि। सातिशयदीप्ति से युक्त होने के कारण ये घोरगुण वाले थे, कातर—कायर जन जिन तपों को नहीं कर सकते थे—ऐसे कठिन तपों को करने के कारण ये घोरतपस्वी थे, हीन शक्तिवाले जीव जिस ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकते थे, उस ब्रह्मचर्यव्रत को ये धारण करते थे, इसलिये घोर ब्रह्मचारी थे, अपने शरीर का संस्कार करना इन्होंने छोड़ रक्खा था इसलिये ये उच्छूढशरीर थे, चौदह पूर्व के पूर्णरूप से पाठी थे, इसलिये ये चतुर्दशपूर्व धारक थे, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान इन चार ज्ञानों से सहित थे इस

આવો શૌચ છે એઓ શૌચપ્રધાન હતા, મતિ વગેરે જ્ઞાનપ્રધાન હોવાથી એઓ જ્ઞાનપ્રધાન હતા. સમ્યક્ત્વરૂપ પ્રધાન હોવાથી એઓ દર્શનપ્રધાન હતા 'ક્રિયા રૂપ ચારિત્ર પ્રધાન હોવાથી એઓ ચારિત્ર પ્રધાન હતા. શુદ્ધાશયરૂપ ઉદારભાવપ્રધાન હોવાથી એઓ ઉદાર હતા. અહીં ઘોરે વગેરે સાતિશય દીપ્તિથી યુક્ત હોવા બદલ એઓ ઘોરગુણવાળા હતા કાયર લોકો જે તપો આચરી શકે નહિ તે કઠિન તપોનું એઓ આચરણ કરતા હતા. એથી એઓ ઘોર તપસ્વી હતા. દુર્બળ જીવો જે વ્રતના બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરી શકે નહિ તે બ્રહ્મચર્યવ્રતને એઓ ધારણ કરતા હતા એથી એઓ ઘોર બ્રહ્મચારી હતા પોતાના શરીરના સંસ્કારની બધી ક્રિયાઓને એમણે સદંતર ત્યાગ કર્યો હતો એથી એઓ ઉચ્છૂઢ શરીર હતા. ચૌદ પૂર્વના પૂર્ણ પાઠી હતા. એથી એઓ ચતુર્દશપૂર્વધારક હતા મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન.

चतुष्टययुक्तः। एवंविधः सन् पञ्चभिरनगारशतैः=पञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्द्धं=सह संपरिवृतः=संवेष्टितः पूर्वानुपूर्वी चरन्=तीर्थंकरपरम्परया विहरमाणः, ग्रामानुग्रामम्=एकस्माद् ग्रामाद् ग्रामान्तरं द्रवन्=गच्छन् सुखसुखेन विहरन्, यत्रैव-श्रावस्ती नगरी, यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं, तत्रैव उपागच्छति, श्रावस्ती-नगर्या बहिः=श्रावस्ती नगरी बहिःप्रदेशे स्थिते कोष्टके चैत्ये यथाप्रतिरूपं=साधुकल्पानुसारम् अवग्रहम्=वनपालाज्ञाम् अवगृह्य=गृहीत्वा संयमेन=सप्तदशविधेन तपसा=द्वादशविधेन च आत्मानं भावयन्=वासयन् विहरतीति। इदमत्रबोध्यम्-आर्जवादीनां चरणकरणान्तर्गतत्वेऽपि यत्पुनरुपादानं तत् आर्जवादीनां प्राधान्यख्यापनार्थमिति। जितक्रोधत्वादीनाम् आर्जवादीनां चाय विशेषो बोध्यः-जितक्रोधादिपदैः उदयावस्थामाप्तानां

लिये चतुर्ज्ञानोपगत थे, इनके साथ पांच सौ अनगार थे, अकेले नहीं थे, तीर्थंकरपरंपरा के अनुसार ये विहार करने में रत थे-अतः उसी परंपरा के अनुसार ये विहार करते२, एक ग्राम से दूसरे ग्राम में बडे यतना से धर्मोपदेश की वरसा करते२ जहां श्रावस्ती नगरी थी, और उसमें भी जहां वह कोष्ठक चैत्य था वहां पर आये, वहां आकर वे उस नगरी के बाहर बने हुए उस काष्टक चैत्य में साधुकल्प के अनुसार वनपाल की आज्ञा लेकर १७ प्रकार के संयम से और १२ प्रकार के तप से आत्मा को वासित करते हुए ठहर गये. यहां ऐसा समझना चाहिये-आर्जव आदि यद्यपि चरण और करण के अन्तर्गत है-फिर भी यहां जो स्वतन्त्र रूप से उनका उपादान किया गया है-वह उनमें प्रधानता प्रदर्शित करने के लिये किया गया है। जितक्रोधत्व आदि में और आर्जव आदि में

પર્યયજ્ઞાન એ ચારેચાર જ્ઞાનોથી એઓ યુક્ત હતા એથી ચતુર્જ્ઞાનોપગત હતા એમની સાથે પાંચસો અનગાર હતા, એઓ એકલા હતા નહિ તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરવામાં એઓ રત હતા આમ એઓ તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં કરતા એક ગામથી બીજા ગામ ખૂબ જ નિષ્ઠાથી ધર્મોપદેશની વર્ષા કરતા કરતા જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યાં તે કોષ્ઠક ચૈત્ય હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તે નગરીની બહારના તે કોષ્ઠક ચૈત્યમાં સાધુ કલ્પ મુજબ વનપાલની આજ્ઞા મેળવીને ૧૭ પ્રકારના સંયમથી અને ૧૨ પ્રકારના તપથી પોતાના આત્માને વાસિત કરતા તેઓ ત્યાં રોકાયેલા આર્જવ વગેરેનો જો કે ચરણ અને કરણમાં સમાવેશ થાય છે છતાં એ અહીં જે સ્વતંત્રરૂપથી એમનું ગ્રહણ કરાયું છે તે તેમનામાં પ્રધાનતા પ્રદર્શિત કરવા માટે જ છે તેમ સમજવું જિતક્રોધત્વ વગેરેમાં અને

क्रोधादीनां विफलीकरणं सूचितं, मार्दवप्रधानादिपदैस्तेषामुदयनिरोधः सूचितः। अथवा-यत-एव जितक्रोधादिः, अत एव-क्षमादिप्रधान इति हेतुहेतुमद्भावाद् विशेषो बोध्यः इति। यथा-'ज्ञानसम्पन्नः' इत्यादिपदैः ज्ञानादिमत्त्वमात्रं सूचितम्। 'ज्ञानप्रधानः' इत्यादिपदैस्तु ज्ञानादिप्राधान्यं सूचितमिति ॥ सू० १०७ ॥

एवं—तएणं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग—तिय—चउक्क—चच्चर—चउम्मुह—महापहपहेसु महया जणसद्देइ वा जणवूहेइ वा जणबोलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलियाइ वा जणसन्निवाएइ वा जाव परिसा पज्जुवासइ।

तएणं तस्स चित्तस्स सारहिस्स तं महया जणसद्दं च जाव जणसन्निवायं च सुणेत्ता य पासित्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था किंणं अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा

यह अन्तर है कि जो जितक्रोधादि होता है वह उदयावस्थाप्राप्त क्रोधादिकों को विफल बना देता है, और जो मार्दवप्रधानादि पदों वाला होता है वह क्रोधादिकों के उदय का निरोध कर देता है। यही बात सूचित करने के लिये इन पदों को भिन्न२ रूप में रखा गया है। जिस कारण वह जितक्रोधादि होता है, उसी से वह क्षमादिप्रधान होता है—इस तरह हेतुहेतुमद्भाव को लेकर इनमें विशेषता जाननी चाहिये, तथा 'ज्ञानसंपन्न' इत्यादि पदों द्वारा सिर्फ ज्ञानादियुक्तता सूचित की गई है और 'ज्ञानप्रधान' इत्यादि पदों द्वारा उनमें प्रधानता प्रकट की गई है ॥सू० १०७॥

આર્જવ વગેરેમાં આ વિશેષતા છે કે જે જિતક્રોધી વગેરે હોય છે તે ઉદયાવસ્થાપ્રાપ્ત ક્રોધાદિકોને અફળ બનાવી મૂકે છે અને જે માર્દવ પ્રધાનાદિપદોવાળા હોય છે તે ક્રોધાદિકોના ઉદયનો નિરોધ કરે છે એ વાતને સૂચિત કરવા માટે જ આ પદોનું ભિન્ન ભિન્ન રૂપમાં ગ્રહણ કર્યું છે જેને લઈને તે જિતક્રોધાદિ હોય છે તેને લઈને જ તે ક્ષમાદિપ્રધાન હોય છે આ પ્રમાણે હેતુ હેતુમદ્ભાવને લઈને એમનામાં વિશેષતા જાણવી જોઈએ તેમજ 'જ્ઞાનસંપન્ન'' વગેરે પદો વડે ફક્ત જ્ઞાનાદિયુક્તતા સૂચિત કરવામાં આવી છે અને 'જ્ઞાનપ્રધાન'' વગેરે પદો વડે તેમનામાં પ્રધાનતા પ્રકટ કરવામાં આવી છે ॥૧૦૭॥

खंदमहेइ वा एवं रुद्दमहेइ मउंदमहेइ वा वेसमणमहेइ वा नागमहेइ वा भूयमहेइ वा जक्खमहेइ वा थूभमहेइ वा चेइयमहेइ वा रुक्खमहेइ वा गिरिमहेइ वा दरिमहेइ वा अगडमहेइ वा नईमहेइ वा सरमहेइ वा सागरमहेइ वा, जं णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता राइन्ना इक्खगा णाया कोरव्वा जहा उववाइए तहेव अप्पेगइया हयगया जाव अप्पेगइया पायचारविहारेणं महया महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति ? । एवं संपेहेइ संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जेणं इमे बहवे उग्गा जाव णिग्गच्छंति ॥ सू० १०८ ॥

छाया—ततः खलु श्रावस्त्या नगर्याः शृङ्गाटक–त्रिक–चतुष्क–चत्वर–चतुर्मुख–महापथपथेषु महान् जनशब्द इति वा जनव्यूह इति वा जनबोल इति वा जनकलकल इति वा जनोर्मिरिति वा जनोत्कलिकेति वा जनसन्निपात इति वा यावत् परिषत् पर्युपास्ते ।

'तए णं सावत्थीए नयरीए' इत्यादि ।

सूत्रार्थ–(तए णं) इसके बाद (सावत्थीए नयरीए) श्रावस्ती नगरी के (सिंघाडग–तिय–चउक्क–चच्चर–चउम्मुह–महापहपहेसु महया जणसद्देइ वा जणवूहेइ वा, जणबोलेइ वा जणकलकलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलियाइ वा, जणसंनिवाएइ वा, जाव परिसा पज्जुवासइ) शृङ्गाटक में त्रिक में, चतुष्क में, चत्वर में, चतुर्मुख में, महापथ में एव पथ में मिलित मनुष्यों का पर-

---

'तए णं सावत्थीए नयरीए' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारपछी (सावत्थीए नयरीए) श्रावस्ती नगरीना (सिंघाडग–तिय–चउक्क–चच्चर–चउम्मुह–महापहपहेसु महया जणसद्देइवा जणवूहेइवा, जणबोलेइवा जणकलकलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलियाइ वा जणसंनिवाएइ वा जाव परिसा पज्जुवासइ) शृंगाटकोमा, त्रिकोणोमा, चतुष्कोमा, चत्वरोमा, चतुर्मुखोमा, महापथोमा अने पथोमा एकत्र थयेला अने आवंत

ततः खलु तस्य चित्रस्य सारथिनः महान्तं जनशब्दं च यावत् जन संनिपातं च श्रुत्वा च दृष्ट्वा च अयमेतद्रूपः आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत किं खलु अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा स्कन्दमह इति वा रुद्रमह इति वा मुकुन्दमह इति वा वैश्रवणमह इति वा नागमह इति वा भूतमह इति वा यक्षमह इति वा स्तूपमह इति वा चैत्यमह इति वा वृक्षमह

स्परमें आलाप प्रचुररूप से होने लगा और लोक भी इकट्ठे हुवे थे परस्पर में अव्यक्त वर्ण वाली ध्वनि भी, लोगों के, मुख से निकलने लगी, कोलाहल जैसा मच गया लोगों में अपार भीड होने से एक दूसरे का संघर्ष भी होने लग गया, कहीं २ मनुष्यों की थोडी भीड इकट्ठी खडी हो गई, अन्य अन्य स्थानों से आ २ कर उसमें मिलने लगे यावत् परिषदा उनकी पर्युपासना करने लगी।

(तएण तस्स चित्तस्स सारहिस्स त महया जणसद्द च जाव जण सनिवाय च सुणेत्ता य पासित्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प ज्जित्था) इसके बाद उस महान् जनशब्द को यावत् जनसंनिपात को सुनकर एवं देखकर उस चित्र सारथि को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ, (किं ण अज्ज सावत्थीए णयरीए इदमहेइ वा खदमहेइ वा एव रुद्दमहेइ वा-मउदमहेइ वा वेसमणमहेइ वा, नाग महेइ वा, भूयमहेइ वा, जक्खमहेइ वा) क्या आज श्रावस्ती नगरी में

કરનારા લોકોમાં પરસ્પર પ્રચુરરૂપમાં આલાપ થવા માંડયો—વાર્તાલાપ પ્રારંભ થયો—લોકો વધારે સંખ્યામાં એકત્ર થવા લાગ્યા પરસ્પર અસ્ફુટ ધ્વનિમાં પણ લોકોમાં વાતચીત થવા લાગી પરિણામે કોલાહલ જેવું વાતાવરણ થઈ ગયું ત્યાં અપાર ભીડ થવા લાગી અને તેથી એક બીજાની સંઘર્ષિત થઈને જ લોકો અવરજવર કરી શકતા હતા. એવી પરિસ્થિતિ ઉત્પન્ન થઈ ગઈ કેટલાક સ્થાનો પર ઘણા માણસો ટોળાના આકારમાં એકત્ર થઈ ગયા. અને બીજા લોકો પણ તેમની પાસે આવવા લાગ્યા, યાવત્ પરિષદા તેમની પર્યુપાસના કરવા લાગી.

(तए णं तस्स चित्तस्स सारहिस्स त महया जणसद्दं च जाव जण सनिवायं च सुणेत्ता य पासित्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) ત્યારબાદ તે મહાન્ જનશબ્દને યાવત્ જનસંનિપાતને સાંભળીને અને જોઈને તે ચિત્રસારથીને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે (किं ण अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा खंदमहेइ वा एव रुद्दमहेइ वा मउंदमहेइ वा वेसमणमहेइ वा नागमहेइ वा, भूयमहेइ वा जक्खमहेइ वा)

इति वा गिरिमह इति वा दरीमह इति वा अवटमह इति वा नदीमह इति वा सरोमह इति वा सागरमह इति वा, यत्खलु इमे बहव उग्रा उग्रपुत्रा भोगा भोगपुत्रा राजन्याः इक्ष्वाकवो ज्ञाताः कौरव्याः यथा औपपातिके तथैव

इन्द्र को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या स्कन्द को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या रुद्र को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या मुकुन्द को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या वैश्रवण को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या नाग को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या भूतको निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या यक्ष को निमित्त करके उत्सव हो रहा है (थूभमहेइ वा, चेइयमहेइ वा, रुक्खमहेइ वा, गिरिमहेइ वा, दरिमहेइ वा, अगडमहेइ वा, नईमहेइ वा, सरमहेइ वा, सागरमहेइ वा,) या किसी स्तूप को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी चैत्य-उद्यान को निमित्त करसे उत्सव हो रहा है, या किसी वृक्ष को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी पर्वत को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी गुफा को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी-- अवट-कूप को लेकर के उत्सव हो रहा है, या किसी नदी को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी तालाव को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी समुद्र को निमित्त करके उत्सव हो रहा है? (जे णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, राइन्ना, इक्खगा, णाया, कोरव्वा,

---

શું આજે શ્રાવસ્તી નગરીમા ઇન્દ્રના નિમિત્તે કોઇ ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, સ્કંદના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, કે રુદ્રના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, કે મુકુન્દના નિમિત્તે કોઇ ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, કે વૈશ્રવણુના નિમિત્તે કોઇ ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, કે નાગ નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઈ રહ્યો છે, કે ભૂતના નિમિત્તે કોઇ ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે કે યક્ષના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઈ રહ્યો છે. (थूभमहेइ वा, चेइयमहेइ वा, रुक्खमहेइ वा, गिरिमहेइ वा, दरिमहेइ वा, अगडमहेइ वा, नईमहेइ वा, सरमहेइ वा, सागरमहेइ वा) કે કોઇ સ્તૂપના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, કે ચૈત્યના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, વૃક્ષના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઈ રહ્યો છે, કે પર્વતના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે કે ગુફાના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઈ રહ્યો છે, કે કોઇ-અવટકૂપના નિમિત્તે ઉત્સવ ઉજવાઈ રહ્યો છે, કે કોઇ નદીના નિમિ ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, કે તળાવના નિમિતે ઉત્સવ ઉજવાઇ રહ્યો છે, કે કોઈ સમુદ્રના નિમિત્તે ઉજવાઇ રહ્યો છે? (जे ण इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता. भोगा भोगपुत्ता, राइन्ना, इक्खगा, णाया, कोरव्वा, जहा

अप्येकके हयगता यावत् अप्येकके पादचार विहारेण महद्भिर्महद्भिर्वृन्दैर्निर्गच्छन्ति ?, एवं संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य कञ्चुकीयपुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-किं खलु देवानुप्रियाः ! अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा यावत् सागरमह इति वा, यत्खलु इमे बहव उग्रा यावत् निर्गच्छन्ति? ।१०८।

'तएणं' इत्यादि—

टीका—ततः खलु श्रावस्त्या नगर्यां शृङ्गाटक-त्रिक-चतुष्क-चत्वर चतुर्मुख-महापथपथेषु-तत्र-शृङ्गाटक=शृङ्गाटकाकृतिकत्रिकोणो मार्गः, त्रिक=त्रिपथ

जहा उववाइए तहेव अप्पेगइया हयगया) जो ये बहुत से उग्रवंश के मनुष्य, उग्रवंश के पुत्र, भोगवंश के मनुष्य, भोगवंश के पुत्र, राजन्यवंश के मनुष्य, इक्ष्वाकुवंश के मनुष्य, ज्ञातवंश के मनुष्य, कुरुवंश के मनुष्य, जैसा कि इसके आगे औपपातिक सूत्र में कहा गया है उसके अनुसार कितनेक घोडों पर चढ कर (जाव अप्पेगइया पायचारविहारेणं महयार वंदावंदएहिं निगच्छंति) यावत् कितनेक पैदल ही भिन्न२ समूह में होकर निकल रहे हैं। (एवं संपेहेइ) ऐसा उसने विचार किया-(संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ) ऐसा विचार करके उसने कंचुकीयपुरुष को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे कहा-(किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहेइ वा जे णं इमे बहवे उग्गा, जाव निग्गच्छंति) हे देवानुप्रिय ! क्या आज श्रावस्ती नगरी में इन्द्र महोत्सव है या यावत् सागर महोत्सव है कि जिससे ये उग्रवंश के मनुष्य यावत् जा रहे हैं॥

उववाइए तहेव अप्पेगइया हयगया) के जेथी घणा उग्रवंशना पुत्रो भोगवंशना माणसो, भोगवंशना पुत्रो, राजन्यवंशना माणसो, ईक्ष्वाकुवंशना माणसो, ज्ञातवंशना माणसो कुरुवंशना माणसो-पहेला औपपातिक सूत्रमां जे प्रमाणे वर्णन करवामां आव्युं छे ते मुजब केटलाक घोडाओ पर सवार थईने (जाव अप्पेगइया पायचारविहारेणं महयार वंदावंदएहिं निगच्छंति) यावत् केटलाक पगपाळा ज जुदा जुदा समूहोमां भेगा थईने जई रह्या छे (एवं संपेहेइ) आ जातनो तेणे विचार कर्यो. (संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ) आ प्रमाणे विचार करीने तेणे कंचुकीय पुरुषने बोलाव्यो (सद्दावित्ता एवं वयासी) बोलावीने तेने कह्युं- किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागर महेइ वा जे णं इमे बहवे उग्गा जाव निग्गच्छंति) हे देवानुप्रिय ! शुं आजे श्रावस्ती नगरीमां ईन्द्रमहोत्सव छे के यावत् सागर महोत्सव छे के जेथी उग्रवंशना माणसो यावत् जई रह्या छे ?

यत्र त्रयो मार्गाः सम्मिलन्ति तत्, चतुष्कम्=चतुष्पथं यत्र चत्वारो मार्गा मिलितास्तत्, चत्वरम्=अनेकमार्गसंगमस्थानम्. चतुर्मुखं=यतश्चतसृष्वपि दिक्षु पन्थानो निस्सरन्ति तत्, महापथः=राजमार्गः, पन्थाः=सामान्यमार्गः, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तेषु तथोक्तेषु, महान्=प्रचुरः जनशब्द इति वा= जनानां परस्परालापादिरूपः. जनव्यूहः=जनबोलः=जनानामव्यक्तवर्णो ध्वनिः, जनकलकलः=जनानां कोलाहलध्वनिः, तत्र-बोलकलकलयोरयं विशेषः =बोल= अविभाव्यमानवचनविभागः कलकलस्तु विभाव्यमानवचनविभाग इति, जनोर्मिः=जनसम्बाधः, जनोत्कलिका=जनानां लघुतरः संघातः, जनसन्निपातः= जनानाम् अन्योन्यस्थानेभ्य एकत्र मीलनम्. यावत्-पर्यन्त्=उग्रोग्रपुत्रादिरूपा

टीकार्थ—तब श्रावस्ती नगरी के शृंगाटक-सिंघाडे की आकृति जैसे त्रिकोणवाले मार्ग में, त्रिक-तीनमार्ग से मिले हुए मार्ग में, चतुष्पथमें चार मार्गों से मिले हुए मार्ग में, चत्वर में-अनेक मार्गों के संगमवाले स्थान में,चतुर्मुख-जहांसे चारों दिशाओं में मार्ग निकलते है, ऐसे रास्ते में, महा पथ राजमार्ग में, और पथ-सामान्य मार्ग में प्रचुर मात्रा में जनशब्द हुआ, आपस में बातचीत करने की अवाज निकली, जनव्यूह-जनसमुदाय-आकर इकट्ठा होने लगा, जनबोल-मनुष्यों की अव्यक्त वर्णवाली ध्वनि होने लगी जनकलकल-जनों की कोलाहल रूप ध्वनि होने लगी। बोल में और कल-कल में अन्तर इतना ही है.कि बोल में वचनविभाग अविभाव्यमान (अलग२) होता है और कलकल में वचनविभाग विभाव्यमान (अव्यक्त ध्वनि) होता है, जनसम्बाधजनों के जमघट्ट में होने वाले पारस्परिकविमर्द का नाम जनोर्मि है। तथा मनुष्यों का जो लघुतर संघात है वह जनोत्कलिका है. अन्योन्यस्थानों से आगत

ટીકાર્થ —ત્યારે શ્રાવસ્તી નગરીના શ્રૃંગાટક-શિંગોડાની આકૃતિ જેવા ત્રિકોણુ-વાળા માર્ગમા, ત્રિક-ત્રણુ માર્ગો જ્યા એકત્ર થાય તે માર્ગમા, ચતુષ્પથમા-ચાર રસ્તાઓ જ્યા ભેગા મળે તે માર્ગમા, ચત્વરમા-ઘણા માર્ગો જ્યા એકત્ર થાય તે સ્થાનમાં, ચતુર્મુખ-જ્યાથી ચોમેર રસ્તાઓ જતા હોય એવા માર્ગમા, મહાપથ-રાજમાર્ગમા અને પથ-સામાન્ય માર્ગમા-સારે જનશબ્દ થયો માણુસોનો ઘોંઘાટ થયો પરસ્પર વાર્તાલાપ કરવાથી શોરબકોર થયો જનવ્યૂહ-જનસમુદાય-એકત્ર થવા લાગ્યો, જનબોલ-માણુસોની અવ્યકત ધ્વનિ થવા લાગ્યો, જનકલકલ-માણુસોનો કોલાહલરૂપ ધ્વનિ થવા માંડયો બોલમા અને કલરવમા તફાવત આટલો જ છે કે બોલમા વચન વિભાગ અવિભાવ્યમાન હોય છે અને કલકલમા વચનવિભાગ વિભાવ્યમાન હોય છે જનસમ્બાધજનોના જમઘટ્ટમા થનાર પારસ્પરિક વિમર્દનુ નામ છે તેમજ માણુસોનો જે લઘુતર સંઘાત છે તે જનોત્કલિકા છે બીજા ઘણા સ્થાનોથી આવેલ માણુસો

अप्पेगइये हयगता यावत् अप्येकके पादचार विहारेण महद्भिर्महद्भिर्वृन्द वृन्दैर्निर्गच्छन्ति ?, एवं संप्रेक्षते समेक्ष्य कञ्चुकीयपुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–किं खलु देवानुप्रियाः ! अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा यावत् सागरमह इति वा, यत्खलु इमे बहव उग्रा यावत् निर्गच्छन्ति? ।१०८।

'तएण' इत्यादि—

टीका--ततः खलु श्रावस्त्या नगर्या शृङ्गाटक–त्रिक–चतुष्क–चत्वर चतुर्मुख –महापथपथेषु–तत्र–शृङ्गाटक=शृङ्गाटकाकृतिकत्रिकोणो मार्गः, त्रिक=त्रिपथ

जहा उववाइए जहेव अप्पेगइया हयगया) जो ये बहुत से उग्रवंश के मनुष्य, उग्रवंश के पुत्र भोगवंश के मनुष्य, भोगवंश के पुत्र, राजन्यवंश के मनुष्य, इक्ष्वाकुवंश के मनुष्य, ज्ञातवंश के मनुष्य, कुरुवंश के मनुष्य, जैसा कि इसके आगे औपपातिक सूत्र में कहा गया है उसके अनुसार कितनेक घोडों पर चढ़ कर (जाव अप्पेगइया पायचारविहारेण महयार वंदावंदएहिं निग्गच्छंति) यावत् कितनेक पैदल ही मिलर समूह में होकर निकल रहे हैं। (एवं संपेहेइ) ऐसा उसने विचार किया–(संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ) ऐसा विचार करके उसने कंचुकीयपुरुष को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे कहा–(किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहेइ वा जे णं इमे बहवे उग्गा, जाव निग्गच्छंति) हे देवानुप्रिय ! क्या आज श्रावस्ती नगरी में इन्द्र महोत्सव है या यावत् सागर महोत्सव है कि जिससे ये उग्रवंश के मनुष्य यावत् जा रहे हैं।

उववाइए जहेव अप्पेगइया हयगया) के જેથી ઘણા ઉગ્રવંશના પુત્રો ભોગ વંશના માણસો, ભોગવંશના પુત્રો, રાજન્યવંશના માણસો ઇક્ષ્વાકુવંશના માણસો, જ્ઞાતવંશના માણસો કુરુવંશના માણસો–પહેલા ઔપપાતિક સૂત્રમાં જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે મુજબ કેટલાક ઘોડાઓ પર સવાર થઈને (जाव अप्पेगइया पायचारविहारेण महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति) યાવત્ કેટલાક પગપાળા જ જુદા જુદા સમૂહોમાં એકત્ર થઈને જઈ રહ્યા છે (एवं संपेहेइ) આ વાતનો તેણે વિચાર કર્યો (संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ) આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે કંચુકીય પુરુષને બોલાવ્યો. (सद्दावित्ता) एवं वयासी) બોલાવીને તેને કહ્યું– किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागर महेइ वा जे णं इमे बहवे उग्गा जाव निग्गच्छंति) હે દેવાનુપ્રિય ! શું આજે શ્રાવસ્તી નગરીમાં ઇન્દ્રમહોત્સવ છે કે યાવત્ સાગર મહોત્સવ છે કે જેથી ઉગ્રવંશના માણસો યાવત્ જઈ રહ્યા છે ?

जनसमुदायं दृष्ट्वा च अयमेतद्रूपः आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत=समुत्पन्नः। यावच्छब्देन 'चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः' इति पदसमूहः त्र्यशीतितमसूत्रवद् बोध्यः। अर्थोऽप्येषां तत एव गम्य इति। सम्प्रति मनोगतसंकल्पस्वरूपमाह-'किं ण' इत्यादि। किं खलु 'किम्' इति वितर्के, 'खलु' इति वाक्यालङ्कारे, अद्य श्रावस्त्या नगर्याम् इन्द्रमहः— इन्द्रः=शक्रः तन्निमित्तो महः=उत्सवः= इति वा, एवं 'स्कन्दमहः' इत्यारभ्य 'सागरमहः' इत्यन्तानां पदानामपि अर्थोऽनुसन्धेयः। नवरम्-स्कन्दः=कार्ति-

---

महान् जनशब्द को यावत् जनसंपातको सुन करके और देख करके इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ. यहां यावत् शब्द से 'चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत' ये विशेषण संकल्प के ग्रहण किये गये हैं। इनका अर्थ ८३वें सूत्र में स्पष्ट किया गया है। अतः वहीं से वह जानना चाहिये। 'किं णं' इत्यादि 'किं' शब्द वितर्क में और 'खलु' शब्द वाक्यालंकार में आया है। चित्र सारथी को जो संकल्प उत्पन्न हुआ है वही इन शब्दों द्वारा प्रकट किया गया है-क्या आज श्रावस्ती नगरी में इन्द्रमह है ? इन्द्र नाम शक्र का है. इस शक्र को निमित्त करके किया गया मह-उत्सव वह इन्द्रमह है. 'स्कन्दमह' से लेकर 'सागरमह' तक के पदों का अर्थ भी इसी प्रकार से जानना चाहिये. स्कन्द नाम कार्तिकेय

જનશબ્દને યાવત્ જનસંપાતને સાંભળીને અને જોઇને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો. અહીં યાવત્ શબ્દથી "चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत' સંકલ્પ માટે આ વિશેષણોનું ગ્રહણ સમજવું. આ બધાનો અર્થ ૮૩ મા સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે તેથી જિજ્ઞાસુજનોએ ત્યાંથી જાણી લેવું જોઇએ. "किं णं" ઇત્યાદિ "किं" શબ્દ વિતર્ક માટે અને "खलु" શબ્દ વાકયાલંકાર માટે પ્રયુકત થયેલ છે ચિત્રસારથિને જે સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો તેજ આ નિમ્ન શબ્દો વડે પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે કે શું આજે શ્રાવસ્તી નગરીમાં ઇન્દ્રમહ છે ? ઇન્દ્ર શક્રનું નામ છે. આ શક્રના નિમિત્તે ઉજવાયેલ ઉત્સવ ઇન્દ્રમહ છે. "स्कंदमह" થી માંડીને "सागरमह" સુધીના બધા પદોનો અર્થ આ પ્રમાણે જ જાણવો જોઇએ. સ્કંદ

पर्युपास्ते। अत्र 'यावत्'शब्देन-'बहुजणो अन्नमन्नस्स' इत आरभ्य 'अभिमुहा विणएण पंजलिउडा' इत्य तःसर्वोऽपि पाठः औपपातिकसूत्रोक्तचम्पानगरीगत श्री महावीरस्वामिसमागमनवर्णितः सर्वोऽपि ग्राह्यः, नवरम्-अत्र छद्मस्थतीर्थंकरातिशयाः न वाच्याः। तथा-'समणे भगवं महावीरे' इत्यादि भगवन्नाम स्थाने 'पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाईसंपण्णे इत्यादि वाच्यम्। अत्र 'जन शब्द इति वा' इत्यादौ इति शब्दो वाक्यालङ्कारे 'वा' शब्दः समुच्चये इति।

'तए णं तस्स चित्तस्स' इत्यादि-ततः खलु तस्य चित्तस्य सारथेः तं महान्तं जनशब्दं च यावत् जनसन्निपातं च श्रुत्वा-आकर्ण्य च महान्तं

मनुष्यों का जो एक जगह मिलान होता है उसका नाम जनसन्निपात है। यावत् उग्र उग्रपुत्र आदि कों की परिषदाने पर्युपासना की यहाँ यावत् शब्द से 'बहुजणो अण्णमण्णस्स' यहाँ से लेकर अभिमुहा विणएण पंजलिउडा' यहाँ तक का सब पाठ जो कि औपपातिक सूत्र में ३८ वे सूत्र में चम्पानगरीगत श्रीमहावीर स्वामी के आगमन के पाठ में लिखा जा चुका है, ग्रहण किया गया है। उस पाठ गत छद्मस्थिक भाग कि तीर्थंकर प्रकृति के अतिशयरूप हैं यहाँ ग्रहण नहीं करना चाहिये-तथा 'समणे भगवं महावीरे' इत्यादि भगवन्नाम के स्थान में 'पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाइसंपन्ने' ऐसा पाठ कहना चाहिये, जनशब्द इति वा' इत्यादिपाठ में आगत इति शब्द वाक्यालंकार में और 'वा' शब्द समुच्चय में आया है।

'तए णं तस्स चित्तस्स' इत्यादि इसके बाद उस चित्त सारथि को उस

એક સ્થાને જ્યાં એકત્ર થાય છે તેનું નામ જનસન્નિપાત છે યાવત્ ઉગ્ર, ઉગ્રપુત્ર વગેરેની પરિષદાએ પર્યુપાસના કરી. અહીં યાવત્ શબ્દથી 'बहुजणो अण्णमण्णस्स" અહીંથી માંડીને "अभिमुहा विणएण पंजलिउडा" સુધીના ઔપપાતિક સૂત્રના ૩૮ મા સૂત્ર મુજબ ચંપાનગરી ગત શ્રી મહાવીર સ્વામીના આગમનપાઠમાં જે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે-તે બધું અહીં ગ્રહણ સમજવું તે પાઠમાં જે છદ્માસ્થિક કે જે તીર્થંકર પ્રકૃતિના અતિશયરૂપ છે- તેમનું ગ્રહણ અહીં કરવું નહિ તેમજ 'समणे भगवं महावीरे' વગેરે ભગવાનના નામોની જગ્યાએ "पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाइसंपन्ने' આ જાતના પાઠનું ગ્રહણ સમજવું "जन शब्द इति वा" વગેરે પાઠમાં આવેલ ઇતિ શબ્દ વાક્યાલંકારમાં અને 'વા' શબ્દ સમુચ્ચયના રૂપમાં છે

'तए णं तस्स चित्तस्स' इत्यादि, ત્યારપછી તે ચિત્ર સારથીને તે મહાન

जनसमुदायं दृष्ट्वा च अयमेतद्रूपः आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत=समुत्पन्नः। यावच्छब्देन 'चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः' इति पदसमूहः त्र्यशीतितमसूत्रवद् बोध्यः। अर्थोऽप्येषां तत एव गम्य इति। सम्प्रति मनोगतसंकल्पस्वरूपमाह–'किं णं' इत्यादि। किं खलु 'किम्' इति वितर्के, 'खलु' इति वाक्यालङ्कारे, अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमहः— इन्द्रः=शक्रः तन्निमित्तो महः=उत्सवः= इति वा, एवं'स्कन्दमहः' इत्यारभ्य 'सागरमहः' इत्यन्तानां पदानामपि अर्थोऽनुसन्धेयः। नवरम्–स्कन्दः=कार्ति·

महान् जनशब्द को यावत् जनसपातको सुन करके और देख करके इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ. यहां यावत् शब्द से 'चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत' ये विशेषण संकल्प के ग्रहण किये गये हैं। इनका अर्थ ८३वें सूत्र में स्पष्ट किया गया है। अतः वहीं से वह जानना चाहिये। 'किं णं' इत्यादि 'किं' शब्द वितर्क में और 'खलु' शब्द वाक्यालंकार में आया है। चित्र सारथी को जो संकल्प उत्पन्न हुआ है वही इन शब्दों द्वारा प्रकट किया गया है–क्या आज श्रावस्ती नगरी में इन्द्रमह है? इन्द्र नाम शक्र का है. इस शक्र को निमित्त करके किया गया मह–उत्सव वह इन्द्रमह है. 'स्कन्दमह' से लेकर 'सागरमह' तक के पदोंका अर्थ भी इसी प्रकार से जानना चाहिये. स्कन्द नाम कार्तिकेय

જનશબ્દને યાવત્ જનસંપાતને સાંભળીને અને જોઇને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો. અહીં યાવત્ શબ્દથી ''चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत' સંકલ્પ માટે આ વિશેષણોનું ગ્રહણ સમજવું. આ બધાનો અર્થ ૮૩ મા સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે તેથી જિજ્ઞાસુજનોએ ત્યાંથી જાણી લેવું જોઇએ. ''किं णं' ઇત્યાદિ ''किं'' શબ્દ વિતર્ક માટે અને ''खलु'' શબ્દ વાક્યાલંકાર માટે પ્રયુક્ત થયેલ છે ચિત્રસારથિને જે સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો તેજ આ નિમ્ન શબ્દો વડે પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે કે શું આજે શ્રાવસ્તી નગરીમાં ઇન્દ્રમહ છે? ઇન્દ્ર શક્રનું નામ છે. આ શક્રના નિમિત્તે ઉજવાયેલ ઉત્સવ, ઇન્દ્રમહ છે. ''स्कन्दमह'' થી માંડીને ''सागरमह'' સુધીના બધા પદોનો અર્થ આ પ્રમાણે જ જાણવો જોઇએ. સ્કંદ

केयः, रुद्रः=शिवः मुकुन्दः=नारायणः, वैश्रमणः=कुबेरः, नागाः=भवनपतिविशेषः, भूतयक्षौ व्यन्तरविशेषौ, स्तूपः चैत्यस्तूपः शिखरं वा, चैत्यं=चितास्थितस्मारकचिह्नम्, वृक्षाः=अश्वत्थादि, दरी=गुहा, गिरिः=पर्वतः, अवटः=गर्तः, नदी, सरः=सागराः=समुद्राः । 'इति' शब्दः सर्वत्र स्वरूपनिर्देशपरः, 'वा' शब्दः समुच्चये । तस्मात् इन्द्रमहादिषु कश्चिन्महोऽस्ति, यस्मात् इमे बहवः उग्राः=भगवता आदिनाथेन आरक्षकपदस्थापितानां वंशजाताः, उग्रपुत्राः=कुमाराद्यवस्थोपेता उग्रा एव उग्रपुत्राः, भोगाः=आदिनाथेन गुरुपदे स्थापितानां वंशजाताः, भोगपुत्राः-तेषां पुत्रा एव, राजन्याः=भगवताऽऽदिनाथेन वयस्यपदे स्थापि

का है, रुद्र नाम महादेव का है मुकुन्द नाम नारायण का है, वैश्रवण नाम कुबेर का है भवनपतिविशेष का नाम नाग है, भूत और यक्ष ये व्यन्तर विशेष हैं। स्तूप का नाम चैत्य स्तूप अथवा शिखर है चितास्थित स्मारक चिह्न का नाम चैत्य है, पीपल वगैरह के झाड का नाम वृक्ष है, गिरि नाम पर्वत का है, गुफा का नाम दरी है, अवट का नाम गर्त, नदी, सर-तालाब और सागर ये सब अर्थतः प्रतीत ही है। इति शब्द यहां सब जगह स्वरूप निर्देशपरक है 'वा' शब्द समुच्चय में है। इस तरह से उसने विचार किया कि क्या इन्द्रमहादिकों में से आज कोई मह-उत्सव है कि जिसमें ये अनेक उग्र-भगवान् आदिनाथ द्वारा जिन्हें आ रक्षक के पद पर स्थापित किया गया है, उनके वंश के लोग-आ रहे है ये अनेक उग्रपुत्र कुमाराद्यवस्थोपेत उग्ररूप उग्रपुत्र आ रहे हैं, ये भोग आदिनाथ भगवान जिन्हें गुरु के पद पर स्थापित किया उनके वंशके लोग आ रहे हैं, भोगपुत्र-उनके कुमाराद्यवस्थापन्न बालक आ रहे हैं, ये राजन्य-आदिनाथ

કાર્તિકેયનું નામ છે રુદ્ર મહાદેવનું નામ છે મુકુન્દ એ નામ છે નારાયણનું વૈશ્રવણ કુબેરનું નામ છે ભવનપતિ વિશેષનું નામ નાગ છે ભૂત અને યક્ષ એએ વ્યન્તરવિશેષ છે સ્તૂપ નામ ચૈત્યસ્તૂપ અથવા શિખરનું છે ચિતાસ્થિત સ્મારકચિહ્નનું નામ ચૈત્ય છે પીપળ વગેરે ઝાડનું નામ વૃક્ષ છે ગુફાનું નામ દરી છે ગિરિ પર્વતનું નામ અવટ ગર્ત છે, નદી સર-તળાવ અને સાગર આ બધાના અર્થો સ્પષ્ટ જ છે ઇતિ શબ્દ અહીં સ્વરૂપ નિર્દેશપરક છે 'વા'' શબ્દ સમુચ્ચય માટે વપરાયો છે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે શું આજે ઇન્દ્ર મહાદિકોમાંથી કોઇ મહોત્સવ છે ? કે જેથી એએ ઘણા ઉગ્ર-ભગવાન આદિનાથ વડે જેમને આરક્ષપદે પ્રતિષ્ઠિત કરવામાં આવ્યા છે તેમના વંશના લોકો જઇ રહ્યા છે એએ ઘણા ઉગ્રપુત્રો-કુમારાવસ્થોપેત ઉગ્રરૂપ ઉગ્રપુત્રો જઇ રહ્યા છે, એ ભોગ આદિનાથ ભગવાન જેમને ગુરુપદે પ્રતિષ્ઠિત કર્યા છે તેમના વંશના લોકો જઇ રહ્યા છે એ ભોગપુત્રો તેમના કુમારાવસ્થાપન્ન પુત્રો જઇ રહ્યા છે, એ

तानां च वंशजाताः, इक्ष्वाकवः=इक्ष्वाकुवंशोद्भवाः, ज्ञाताः=ज्ञातवंशीयाः, कौरव्याः=कुरुवंशोद्भवाः, 'जहा उववाइए तहेव' इतोऽग्रे 'खत्तिया माहणा' इत्यारभ्य 'चंदणोलित्तगायसरीरा' इतिपर्यन्तः सर्वोऽपि पाठ औपपातिकसूत्रोक्तश्री महावीरस्वामि वन्दनार्थगतोग्रोग्रपु त्रादिवद् विज्ञेयः। अप्येकके हयगताः=अश्वारूढाः, यावत् अप्येकके गजगताः=गजारूढाः, अप्येकके पादचारविहारेण महद्भिः=अतिविशालैः वृन्दवृन्दैः=पृथक् पृथक् समूहभूतैं निर्गच्छन्ति=निस्सरन्ति-इति। एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य कञ्चुकीयपुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवम् अवादीत्=उक्तवान्-किं खलु देवानुप्रियाः। अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा यावत् सागरमह इति वा वर्तते यत् खलु इमे बहव उग्रा यावद् निर्गच्छन्ति? इति ॥ सू० १०८॥

ने जिन्हे मित्रपद पर स्थापित किया उनके वंशके लोग जा रहे है, ये इक्ष्वाकुवंश के लोग जा रहे है, ज्ञातवंशीयजन जा रहे हैं, ये कुरुवंशीय जन जा रहे हैं, 'जहा उववाइए तहेव' यहां से आगे 'खत्तिया माहणा' से लेकर 'चंदणोलित्तगायसरीरा' यहां तकका समस्त पाठ जो कि औपपातिक सूत्र में कहा गया है उस समय, जब कि श्रीमहावीर स्वामी की वन्दना के लिये उग्र-उग्रपुत्रादि कहे गये हैं यहां ग्रहण करना चाहिये. इनमें से कितनेक अश्वपर चढ कर, कितनेक हाथीपर चढ कर और कितनेक पैदल ही चलकर तथा कितनेक अपना २ विशाल समुदाय बना कर पृथक २ रूप से निकल रहे है।

इस प्रकार विचार कर फिर उसने कंचुकीयपुरुष द्वारपाल को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय! आज क्या श्रावस्ती नगरी में

રાજન્યો આદિનાથે જેમને મિત્રપદે પ્રતિષ્ઠિત કર્યા છે તેમના વંશના લોકો જઈ રહ્યા છે, ઈક્ષ્વાકુવંશના લોકો જઈ રહ્યા છે, એ જ્ઞાતવંશીય લોકો જઈ રહ્યા છે, એ કુરુવંશીય લોકો જઈ રહ્યા છે, 'जहा उववाइए तहेव" અહીંથી આગળ 'खत्तिया माहणा" થી માંડીને "चंदणोलित्तगायसरीरा" અહીં સુધીના સમસ્ત પાઠનું-કે જે ઔપપાતિકસૂત્રમાં શ્રી મહાવીર સ્વામીની વંદના માટે ઉગ્ર-ઉગ્ર પુત્રાદિ ગયા હતા-અહીં ગ્રહણ સમજવું તેનાથી કેટલાક અશ્વ પર સવાર થઈને, કેટલાક હાથી પર સવાર થઈને અને કેટલાક પગપાળા જ ચાલીને તેમજ કેટલાક પોતાનો વિશાળ સમુદાય બનાવીને જુદા જુદા આકારમાં ત્યાં જવા નીકળી રહ્યા છે

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને પછી તેણે કંચુકીય પુરુષને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આમ કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિય! શું આજે શ્રાવસ્તી નગરીમાં ઇન્દ્રમહ યાવત્

मूलम्—तए णं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमणगहियविणिच्छए चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी–णो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज सावत्थिए णयरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जे णं इमे बहवे जाव वंदावंदएहिं निग्गच्छंति, एवं खलु भो देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव दुइज्जमाणे इहमागए जाव विहरइ। ते णं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियाए जाव महया महया वंदावंदएहिं णिग्गच्छंति ॥सू० १०९॥

छाया—ततःखलु स कञ्चुकिपुरुषः केशिनः कुमारश्रमणस्य आगमनगृहीतविनिश्चयः चित्रं सारथिं करतलपरिगृहीतं यावत् वर्द्धयित्वा एवमवादीत् नो खलु देवानुप्रिय! अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा यावत्सा

इन्द्रमह यावत् सागरमह है? जो ये बहुत से उग्र, उग्रपुत्र आदि सब के सब अपने २ घर से निकल कर जा रहे हैं? ॥ १०८ ॥

'तएणं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद उस कंचुकी पुरुषने (केसिस्स कुमारसमण०) केशी कुमारश्रमण के आगमन का गृहीत निश्चयवाला होकर चित्त सारहिं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी) चित्रसारथी से बड़े विनय से दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर घुमाकर पुनः जयविजय शब्दों द्वारा उसे बधाई देकर इस प्रकार कहा-(णो खलु देवा

સાગરમહ છે? કે જેથી એ બધા ઉગ્ર, ઉગ્રપુત્ર વગેરે સૌ પોતપોતાના ઘેરથી નીકળીને જઈ રહ્યા છે? ॥ ૧૦૮ ॥

"तए णं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स' इत्यादि

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યાર પછી તે કંચુકી પુરુષે (केसिस्स कुमारसमण०) કેશીકુમાર શ્રમણની આગમનની વાત મનમાં વિચારીને (चित्त सारहिं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी) ચિત્ર સારથિની સામે વિનમ્રતાપૂર્વક બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક પર ફેરવીને અને જયવિજય શબ્દોવડે તેમને વધામણી આપીને આ પ્રમાણે કહ્યું–(णो खलु देवाणुप्पिया!

गरमह इति वा यत् खलु इमे बहवो यावद् वृन्दवृन्दैर्निर्गच्छन्ति, एवं खलु भो देवानुप्रिय! पार्श्वापत्यीयः केशी नाम कुमारश्रमणो जातिसंपन्नो यावत् द्रवन् इहागतो यावत् विहरति। तत्खलु अद्य श्रावस्त्यां नगर्यां बहव उग्रा यावत् अप्येकके वन्दनवृत्तितायै यावत्महद्भिर्महद्भिर्वृन्दवृन्दैर्निर्गच्छन्ति ॥१०९॥

टीका-'तएणं से इत्यादि ततःखलु स कञ्चुकिपुरुषः केशिनः कुमारश्रमणस्य आगमनगृहीतविनिश्चयः--आगमनस्य गृहीतः निश्चयो येन स तथा-ज्ञात केशिकुमारागमनवृत्तान्तः सन् चित्रं सारथिं करतलपरिगृहीतं यावद् वर्द्धयित्वा एवम्-अवादीत् हे देवानुप्रिय! अद्य खलु श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमहादि सागरमहान्तेषु कश्चिद् महो=उत्सवो नास्ति, यत् खलु इमे उग्रादयो यावद् वृन्दवृन्दैर्निर्गच्छन्ति। एवं खलु भो देवानुप्रिय! भवान् जानातु यदद्य खलु पार्श्वापत्यीयः केशीनाम कुमारश्रमणो जातिसम्पन्नो यावत् द्रवन् इह=श्राव-

---

णुप्पिया! अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहेइ वा "हे देवानुप्रिय! आज श्रावस्ती नगरी में न इन्द्र उत्सव है अथवा यावत् न सागर उत्सव है (जेणं इमे बहवे जाव विंदाविंदएहिं निग्गच्छति, एवं खलु भो देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जकेसी नाम कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव दुइज्जमाणे इहमागए जाव विहरइ) परन्तु जो ये बहुत से उग्र उग्रपुत्रादिक अनेक विशाल समुदायरूप में होकर निकल रहे हैं-सो उसका कारण यह है कि पार्श्वापत्यीय केशी नाम के कुमारश्रमण जो कि जातिसम्पन्न आदि पूर्वोक्त विशेषणों वाले हैं तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विहार करते हुए, एक ग्राम से दूसरे ग्राम में धर्मोपदेश करते हुए यहां पधारे हैं यावत्-कोष्ठक चैत्य में विराजते हैं। (तेणं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा, जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियाए जाव महया महया वंदावंदएहिं णिग्गच्छंति)

अज्ज सवत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहेइवा) हे देवानुप्रिय! આજે શ્રાવસ્તી નગરીમા ન ઇન્દ્ર ઉત્સવ છે કે યાવત્ ન સાગર ઉત્સવ છે. (जे णं इमे बहवे जाव विंदाविंदएहिं निग्गच्छति, एव खलु भो देवाणुप्पिया। पासावच्चिज्जकेसीनामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव दुइज्जमाणे इहमागए जाव विहरइ) પણ જે આ બધા ઉગ્ર ઉગ્રપુત્રાદિક ઘણા વિશાળ સમુદાયના આકારમા એકત્ર થઈને જઈ રહ્યા છે તેનુ કારણ એ છે કે પાર્શ્વાપત્યીય કેશી નામે કુમાર શ્રમણ કે જે જાતિસંપન્ન વગેરે પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાળા છે, તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં કરતા એક ગામથી બીજે ગામ ધર્મોપદેશ કરતા અહી પધાર્યા છે. અને યાવત કોષ્ઠક ચૈત્યમા તેઓશ્રી વિરાજે છે. (तें णं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा, जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियाए जाव महया महया वंदा-

स्या नगर्याः कोष्ठके चैत्ये आगतो यावद् तद् खलु अद्य श्रावस्त्यां नगर्यां बहव उग्रा यावत् इभ्यपुत्रा अप्येकके वन्दनवृत्तिकायै वन्दननिमित्त यावत् महद्भिर्वृन्दैर्वृन्दैर्निर्गच्छन्तीति । सू० १०९ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अतिए एय मट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ—जाव—हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव सच्छत्त उवट्ठवेंति। तएणं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते सावत्थी नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ य, ठवित्ता पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिण—पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ॥ सू० ११० ॥

इस कारण आज श्रावस्ती नगरी में अनेक उग्र यावत् इभ्यपुत्रवन्दना करने के निमित्त यावत् विशालसमुदाय के रूप में होकर निकल रहे है ।१०९।

वन्दन निमित्त) એથી આજે શ્રાવસ્તી નગરીમાંથી ઘણા ઉગ્ર યાવત્ ઇભ્યપુત્રો વંદના કરવા માટે યાવત્ વિશાળ સમુદાયના રૂપમાં એકત્ર થઈને જઈ રહ્યા છે ।।૧૦૯।।

छाया—तत खलु स चित्रः सारथिः कञ्चुकिपुरुषस्य अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट-यावद् हृदयः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा, एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! चातुर्घण्टम् अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयत यावत्सच्छत्रम् उपस्थापयन्ति। ततः खलु स चित्रः सारथिः स्नातः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः शुद्धप्रवेश्यानि मङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरप-

'तएण से चित्ते सारही कंचुईपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) इसके बाद जब कि कंचुकी के मुख से इस अर्थ को सुना और उसका हृदय में विचार किया तब हृष्ट यावत् हृदय वाले होकर उस चित्रसारथिने कौटुम्बिकपुरुषों—आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया, (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उसने ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) हे देवानुप्रियो ! आप लोग चातुर्घंट-(चारघंटोंवाले) अश्वरथ को घोडों से युक्त करके शीघ्र ही उपस्थित करो (जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति) अपने स्वामी की इस प्रकार आज्ञा के वचन सुनकर यावत् उत्तम छत्र सहित अश्वरथ को उन्होंने लाकर उपस्थित कर दिया. (तएणं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते) रथ को उपस्थित हुआ जानकर चित्र सारथिने स्नान किया, बलिकर्म किया अर्थात काक

"तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठ" इत्यादि.

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) જ્યારે કંચુકીના મુખથી આ બધી વિગત સાંભળી ત્યારે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો અને હૃષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઈને તે ચિત્રસારથીએ કૌટુંબિક પુરૂષોને—આજ્ઞાકારી પુરૂષોને બોલાવ્યા. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું. (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) હે દેવાનુપ્રિય ! આપ સૌ સત્વરે ચાતુર્ઘંટ (ચાર ઘંટોવાળા) અશ્વરથને સજ્જિત કરીને લાવો. (जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति) પોતાના સ્વામીની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને યાવત તેમણે ઉત્તમ છત્રસહિત અશ્વરથ લાવીને ઉપસ્થિત કર્યો

(तएणं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते) રથને આવેલો જોઈને ચિત્રસારથિએ સ્નાન કર્યું, બલિકર્મ કર્યું અને દુઃસ્વપ્નના નિવારણાર્થ કૌતુક, મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્તની વિધિઓ સંપન્ન કરી. शुद्ध-

रिहितः, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरो यत्रैव चातुर्घण्टो अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन महाभट-चटकरवृन्दपरिक्षिप्तः श्रावस्तीनगर्याः मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं यत्रैव केशिकुमारश्रमणस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य केशिकुमारश्रमणं त्रिःकृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति,

आदि को अन्न का भाग दिया एवं दुःस्वप्न का विनाश करने के लिये कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त किया, (सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) बाद में उसने शुद्ध, परिषदा में प्रवेशयोग्य, मांगलिक, वस्त्रों को अच्छी तरह से पहिरा एवं विशिष्ट कीमतवाले तथा अल्प वजनवाले ऐसे आभूषणों से, अपने शरीर को अलंकृत किया (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ) बाद में वह जहां चारघंटों वाला अश्वरथ खडा था वहां पर आया—वहां आकर वह उस चातुर्घंट अश्व रथ पर बैठ गया (सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ) छत्रधारण करने वालेने उसके ऊपर कोरंट पुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र तान दिया, विशाल भटों का समूह उसके आसपास आकर खडा हो गया इस प्रकार होकर फिर वह श्रावस्ती नगरी के बीचों बीच से होता हुआ निकला (निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए

प्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए, अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) त्यारबाद तेणे सारी रीते शुद्ध, सुनिर्मल स्थामां, प्रवेश योग्य, मांगलिक वस्त्रो धारण कर्यां तथा बहु किंमती अने अल्प भारवाळा आभूषणो पहेरीने पोताना शरीरने अलंकृत कर्यु (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ) त्यार बाद ज्यां चार घंटोवाळो अश्वरथ हतो त्यां गयो त्यां जईने ते चातुर्घंट रथ पर सवार थयो (सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ) छत्र धारण करनाराओए तेमना उपर कोरंट पुष्पोनी माळाओथी सुशोभित छत्र ताण्युं विशाळ भटोना समूहो आवीने तेनी आसपास घेरो घालीने ऊभा रह्या. आ प्रमाणे ते श्रावस्तीना नगरीनी वच्चे थईने नीकळ्यो (निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए

कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा नात्यासन्ने नातिदूरे शुश्रूषमाणो नमस्यन् अभिमुखे प्राञ्जलिपुटो विनयेन पर्युपास्ते ।११०।

चेइए केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) निकलकर वह जहां कोष्ठक चैत्य था और उसमें भी जहां केशीकुमारश्रमण थे वहां पहुँचा (उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणस्स अदूरसामन्ते तुरए णिगिण्हइ) वहां पहुँच कर उसने केशिकुमारश्रमण के स्थान से कुछ थोडी दूर पर घोडों को खडा कर दिया (रहं ठवेइ) रथको खडा कर दिया (ठवित्ता पच्चोरुहइ) खडा करके फिर वह उससे नीचे उतरा (पच्चोरुहित्ता जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) नीचे उतर कर वह जहां केशीकुमार श्रमण थे वहां पर गया (उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) वहां जाकर उसने केशीकुमार श्रमण को तीनवार प्रदक्षिणा की (करित्ता वंदइ, नमंसइ) प्रदक्षिणा करके फिर उसने उनको वन्दना की, नमस्कार किया (वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ) वन्दना नमस्कार करके फिर वह न अधिक दूर और न अधिक पास ऐसे उचित स्थान पर धर्मोपदेश सुनने की इच्छा से बैठ गया. वहां बैठे ही उसने उनके समक्ष विनय से दोनों हाथ जोडकर उनकी पर्युपासना की.।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥११०॥

जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) नीकळीने ते ज्यां कोष्ठक चैत्य हतुं. अने तेमां पण ज्यां केशीकुमार श्रमण हता त्यां गयो, (उवागच्छित्ता केसिकुमार समणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ) त्यां पहोंचीने तेणे केशिकुमार श्रमणना स्थानथी थोडा अंतरे घोडाओने उभा राख्या (रहं ठवेइ) रथने थोभाव्यो. (ठवित्ता पच्चोरुहइ) उभो राखीने पछी ते रथ परथी नीचे उतर्यो (पच्चोरुहित्ता जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) नीचे उतरीने ते ज्यां केशीकुमार श्रमण हता त्यां गयो. (उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) त्यां जईने तेणे केशीकुमार श्रमणनी त्रणवार प्रदक्षिणा करी (करित्ता वंदइ, नमंसइ) प्रदक्षिणा करीने तेणे तेमने वंदन कर्या, नमस्कार कर्या. (वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ) वंदना तेमज नमस्कार करीने ते दूर पण नहि अने वधारे नजीक पण नहि एवा योग्य स्थान पर ते धर्मश्रवणनी इच्छाथी बेसीने ज तेणे तेमनी सामे विनयपूर्वक हाथ जोडीने तेओश्रीनी पर्युपासना करी

टीकार्थ—आ सूत्रनो स्पष्ट ज छे. ॥११०॥

'तएण से' इत्यादि—

टीका-एतत्सूत्रस्थपदानां व्याख्या पूर्वं गता, अतइदं व्याख्यातप्रायमितिसू ११०।

(मूलम्—तएणं से केसिकुमारसमणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महइमहालयाए परिसाए चाउज्जाम धम्मं परिकहेइ, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वओ वहिद्धादाणाओ वेरमणं तएणं सा महइमहालिया परिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।सू १११)

छाया—ततः खलु स केशिकुमारश्रमणः चित्राय सारथये तस्यां महातिमहालयायां परिषदि चातुर्याम धर्मं परिकथयति, तद्यथा—सर्वस्मात् प्राणातिपाताद् विरमणम् १, सर्वस्मात् मृषावादाद् विरमणम्२, सर्वस्मात् अदत्तादानात् विरमणम्३, सर्वस्माद्बहिर्धादानाद् विरमणम्४। ततः खलु सा महातिम

'तएणं से केसिकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं से केसिकुमारसमणे) इसके बाद (केसिकुमारसमणे) केशिकुमार श्रमणने (चित्तस्स सारहिस्स) चित्र सारथि के लिये (तीसे महइमहालयाए) उस अति विशाल (परिसाए) परिषदा में (चाउज्जाम धम्मं परिकहेइ) चातुर्याम धर्म का (परिकहेइ) कथन किया—उपदेश दिया (त जहा—सव्वओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वओमुसावायाओ वेरमण, सव्वओ अदिन्नादाणाओ वेरमण सव्वओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं) वे चातुर्याम ये हैं—१ समस्त प्राणातिपात से विरक्त (निवृत्त) होना, २

'तएण से केसिकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएण से केसिकुमारसमणे) त्यार पछी केशिकुमार श्रमणे (चित्तस्स सारहिस्स) चित्र सारथि माटे (तीसे महइमहालयाए) ते अति विशाळ (परिसाए) परिषदामां (चाउज्जाम धम्मं परिकहेइ) चातुर्याम धर्मनी (परिकहेइ) प्ररूपणा करी एटले के उपदेश कर्यो. (त जहा सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ, मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं) ते चातुर्याम धर्मनी विशेष विगत आ प्रमाणे छे—(१) समस्त प्राणातिपातथी विरक्त (निवृत्त) थवु (२) समस्त मृषावादथी विर-

हालया परिषत् केशिनः कुमारश्रमणस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता ॥ सू० १११ ॥

टीका—'तएणं से इत्यादि—ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्राय सारथये=चित्रं सारथिमुद्दिश्य तस्यां महातिमहालयायाम्=अतिविशालायां परिषदि चातुर्यामं चतुर्णाम्=चतुःसंख्यकानां यामानां=यमा एव यामास्तेषां समाहारश्चतुर्यामं, तदेव चातुर्यामं, तदस्ति यस्मिन् स चातुर्यामस्तं धर्मं परिकथयति=व्याख्याति, तद्यथा-सर्वस्मात् प्राणातिपाताद् विरमणं= सकलप्राणिप्राणवियोजनानुकूलव्यापारतो विनिवृत्तिः१, सर्वस्माद् मृषा-वादाद् विरमणम्=सर्वविधाऽसत्यभाषणाद् विनिवृत्तिः, तथा-सर्वस्मात्

समस्त मृषावाद से विरक्त होना, ३ समस्त अदत्तादान से विरक्त होना और समस्त बहिरादान से विरक्त होना। (तएणं सा महइमहालिया परिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) इस तरह केशिकुमार श्रमण से चातुर्याम धर्मका उपदेश सुनकर और हृदय में उसे धारण कर वह अतिविशाल परिषदा हृष्ट तुष्ट यावत् हृदयवाली होती हुई जहां से आई थी वहां पर पीछी चली गई.

टीकार्थ मूलार्थ के ही अनुरूप है. चातुर्याम धर्मका उपदेश किया-सो इसका तात्पर्य ऐसा है कि चातुर्याम वाले धर्म का उपदेश दिया. सकल प्राणियों के प्राणों को वियोजन (अलग) करने के अनुकूल व्यापार से रहित होना इसका नाम प्राणातिपात विरमण है. इसी तरह समस्त प्रकार के असत्यभाषण करने से दूर रहना-उसका त्याग करना इसका नाम मृषावाद-

कत थवुं. (३) समस्त अदत्तादानथी विरकत थवुं अने समस्त બહિરાદાનથી વિરકત થવુ. (तए णं सा महइमहालिया परिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) આ પ્રમાણે કેશિકુમાર શ્રમણથી ચાતુર્યામ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળીને અને હૃદયમાં તેને ધારણ કરીને તે અતિ વિશાળ પરિષદા હૃષ્ટતુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળી થઈને જ્યાંથી આવી હતી ત્યાં ફરી જતી રહી

ટીકાર્થ—મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે ચાતુર્યામ ધર્મનો ઉપદેશ કર્યો એટલે કે ચાતુર્યામવાળા ધર્મનો ઉપદેશ કર્યો સકળ પ્રાણીઓના પ્રાણોને વિયુકત કરનાર જે વ્યાપાર (કાર્ય) હોય છે તેનાથી રહિત થવુ એટલે કે કોઈ પણ પ્રાણીને કોઇ પણ રીતે પ્રાણ વિયુકત ન કરવું તે પ્રાણાતિપાત વિરમણ છે આ પ્રમાણે જ સમસ્ત પ્રકારના અસત્યાચરણથી દૂર રહેવું—અસત્યનો સર્વથા ત્યાગ કરવો તે મૃષાવાદ વિરમણ છે

'तएण से' इत्यादि—

टीका-एतत्सूत्रस्थपदानां व्याख्या पूर्वं गता, मतश्च व्याख्यातप्रायमिदम् ॥१०॥

(मूलम्—तएणं से केसिकुमारसमणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महइमहालयाए परिसाए चाउज्जाम धम्म परिकहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं तएणं सा महइमहालिया परिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥सू ११॥)

छाया—ततः खलु स केशिकुमारश्रमणः चित्राय सारथये तस्यां महातिमहालयायां परिषदि चातुर्याम धर्मं परिकथयति, तद्यथा—सर्वस्मात् प्राणातिपाताद् विरमणम् १, सर्वस्मात् मृषावादाद् विरमणम् २, सर्वस्मात् अदत्तादानात् विरमणम् ३, सर्वस्माद् बहिर्धादानाद् विरमणम् ४। ततः खलु सा महातिम

'तएणं से केसिकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं से केसिकुमारसमणे) इसके बाद (केसिकुमारसमणे) केशिकुमार श्रमणने (चित्तस्स सारहिस्स) चित्र सारथि के लिये (तीसे महइमहालयाए) उस अति विशाल (परिसाए) परिषदा में (चाउज्जाम धम्म परिकहेइ) चातुर्याम धर्म का (परिकहेइ) प्ररूपण किया-उपदेश दिया (तं जहा-सव्वओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वओमुसावायाओ वेरमण, सव्वओ आदिन्नादाणाओ वेरमण सव्वओ बहिद्धादाणाओ वेरमण') वे चातुर्याम ये हैं-१ समस्त प्राणातिपात से विरक्त (निवृत्त) होना, २

'तएण से केसिकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएण से केसिकुमारसमणे) त्यार पछी केशिकुमार श्रमणे (चित्तस्स सारहिस्स) चित्र सारथि माटे (तीसे महइमहालयाए) ते अति विशाळ (परिसाए) परिषदामां (चाउज्जाम धम्म परिकहेइ) चातुर्याम धर्मनी (परिकहेइ) प्ररूपणा करी एटले के उपदेश कर्यो. (तं जहा सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ, मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ आदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण') ते चातुर्याम धर्मनी विशेष विगत आ प्रमाणे छे-(१) समस्त प्राणातिपातथी विरक्त (निवृत्त) थवु (२) समस्त मृषावादथी विर-

रोयामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते। निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, तहमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे अवितहमेयं निग्गंथे पावयणे, असंदिद्धमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणं, इच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, पडिच्छियमेयं भंते! निग्गंथे, पावयणे, इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, जं णं तुब्भे वदहत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी —जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं, एवं धणं धन्नं बलवाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धणकणगरयणमणि-मोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता दाणं दाइत्ता परिभाइत्ता मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व-यंति, णो खलु अहं ता सचाएमि चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्व-इत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-वइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि। तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंटं आसरहं दुहरुइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥ सू० ११२॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद्-हृदयः उत्थया उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिनः

अदत्तादानात्=सकलविधचौर्याद् विरमण =विनिवृत्तिः, तथा-सर्वस्माद् बहिरादानाद्=धर्मोपकरणातिरिक्तपरिग्रहोपादानाद् विरमणम्। मैथुनविरमणस्य परिग्रहे एवान्तर्भावः, नहि अपरिगृहीता स्त्री परिभुज्यतेऽतो मैथुन-विरमणस्य महाव्रत न पृथगुपात्तमिति। उपलक्षणाद् अगारधर्ममपि परिकथयति। ततः खलु सा महातिमहालया परिषद् केशिनःकुमारश्रमणस्य अन्तिके=समीपे धर्मं श्रुत्वा सामान्यतः, निशम्य=विशेषतो हृदयधा। यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता, तामेव दिश प्रतिगता ॥सू० १११॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिस्स कुमारसमणस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता केसिकुमारसमण तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते! णिग्गथ पावयणं,

---

विरमण है समस्तप्रकार के अदत्तादान से-चौर्यकर्म से दूर रहना उसका त्याग करना इसका नाम अदत्तादानविरमण है, तथा धर्मोपकरण से अतिरिक्त परिग्रह का त्याग करना इसका नाम बहिरादान विरमण है। मैथुन विरमण को यहां स्वतन्त्ररूप से व्रत नहीं माना गया है क्यों कि उसका अन्तर्भाव परिग्रह में ही हो जाता है। क्यों कि जो स्त्री भोग के काम आती है वह अपरिगृहीत हुई नहीं आती है किन्तु परिगृहीत हुई ही आती है। उपलक्षण से उन्होंने आगारधर्म का भी कथन किया इस तरह केशिकुमार श्रमण के पास धर्म का उपदेश सामान्यरूप से सुनकर और उसे विशेषरूप से हृदयमें धारण करके वह महाविशाल परिषदा जहां से आई थी वहीं पर पीछी चली गई ॥ १११ ॥

સમસ્ત પ્રકારના અદત્તાદાનથી-ચૌર્યકર્મથી દૂર રહેવું-તે કર્મનો ત્યાગ કરવો-તે અદત્તાદાન વિરમણ છે તેમજ ધર્મોપકરણાતિરિક્ત પરિગ્રહનો ત્યાગ તે બહિરાદાન વિરમણ છે મૈથુન વિરમણનો અહીં સ્વતંત્રપણે વ્રતરૂપે નિર્દેશ કર્યો નથી કેમકે તેનો પરિગ્રહમાં જ અન્તર્ભાવ કરવામાં આવ્યો છે કેમકે જે સ્ત્રી ભોગ માટે આવે છે તે અપરિગૃહીત થઈને નહિ પણ પરિગૃહીતના રૂપમાં જ આવે છે. ઉપલક્ષણથી તેઓ શ્રીએ અગાર ધર્મનું પણ કથન કર્યું છે આ પ્રમાણે સામાન્યરૂપથી કેશિકુમાર શ્રમણ પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને અને તેને વિશેષરૂપમાં હૃદયમાં ધારણ કરીને તે અતિ વિશાળ પરિષદા જ્યાંથી આવી હતી ત્યાં પાછી જતી રહી ॥૧૧૧॥

रोयामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते । निग्गथं पावयण, एवमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, तहमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे अवितहमेयं निग्गंथे पावयणे, असंदिद्धमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणं, इच्छियमेयं भंते ! निग्गथे पावयणे, पडिच्छियमेयं भंते ! निग्गथे, पावयणे, इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! निग्गथे पावयणे, जं णं तुब्भे वदहत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी —जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं, एवं धणं धन्नं बलवाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धणकणगरयणमणि-मोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता दाणं दाइत्ता परिभाइत्ता मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व-यंति, णो खलु अहं ता सचाएमि चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्व-इत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-वइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि । तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंटं आसरहं दुहरुइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० ११२ ॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद्-हृदयः उत्थया उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिन

कुमारश्रमणं त्रिकृत्वा आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—श्रद्दधामि खलु भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, प्रत्येमि खलु भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, रोचयामि खलु भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, अभ्युत्तिष्ठे खलु भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, एवमेतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, तथैवैतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् अवितथमेतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, असंदिग्धमेतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, इष्टमेतद्

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से चित्ते सारही) वह चित्र सारथि (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म) केशीकुमारश्रमण के पास धर्म को सुनकर और उसे हृदय में अवधारकर (हट्ठ जाव हियए) हर्षित हुआ संतुष्ट हुआ यावत् (उट्ठाए उट्ठेइ) अपने आप उठा—(उट्ठित्ता केसिं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) और उठकर उसने केशिकुमारश्रमण की तीन आदक्षिणप्रदक्षिणा की (वंदइ नमंसइ) वन्दना की नमस्कार किया (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) वन्दना नमस्कार कर फिर वह इस प्रकार बोला—(सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं रोएमि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं अब्भुट्ठेमि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं एवमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं असंदिद्धमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं) हे भदन्त ! मैं निर्ग्रन्थप्रवचन की श्रद्धा करता हूं। हे भदन्त ! मैं निर्ग्रन्थप्रवचन की प्रतीति करता हूं, हे भदन्त ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन को अपनी रुचि का

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्र सारथि (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म) केशीकुमार श्रमणनी पासेथी धर्म सांभळीने अने तेने हृदयमां धारण करीने (हट्ठजाव हियए) हर्षित थयो. संतुष्ट थयो यावत् (उट्ठाए उट्ठेइ) पोतानी मेळे उभो थयो (उट्ठित्ता केसिं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) अने उभो थईने तेणे केशीकुमार श्रमणनी त्रण वार आदक्षिण प्रदक्षिणा करी (वंदइ नमंसइ) वंदना करी नमस्कार कर्या. (वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी) वंदना करीने ते आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो—(सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं रोएमि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं एवमेयं भंते ! णिग्गंथं पावयणं असंदिद्धमेयं भंते ! णिग्गंथं पावयणं) हे भदंत ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचनमां श्रद्धा राखुं छुं हे भदंत ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचनमां प्रतीति करुं छुं, हे भदंत ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचनने

भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, प्रतीष्टमेतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् इष्ट-प्रतीष्टमेतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् यत् खलु यूयं वदथेति कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–यथा खलु देवाणुप्रियाणाम् अन्तिके बहव उग्रा भोगा यावत् इभ्या इभ्यपुत्रास्त्यक्त्वा हिरण्यं त्यक्त्वा सुवर्णम् एवं धनं धान्यं बलं वाहनं कोशं कोष्ठागारं पुरम् अन्तःपुरं, त्यक्त्वा

विषय बनाता हूं. हे भदन्त ! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन को स्वीकार करता हूं. हे भदन्त ! आप जैसा इस निर्ग्रन्थ प्रवचन का प्रतिपादन करते है, वह वैसाही है. हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य है. हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सन्देह रहित है। (इच्छियमेय भंते ! निग्गंथे पावयणे, पडिच्छियमेयं भंते निग्गंथे पावयणे) हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन इष्ट है,– हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन प्रतीष्ट है। (इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे) हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन इष्टप्रतीष्ट दोनोंरूप है. (जं णं तुब्भे वदह, त्ति कट्टु वंदइ, नमसइ) जैसा कि आप कहते हैं इस प्रकार कहकर उसने उनको वन्दना की नमस्कार किया. (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) वन्दना नमस्कार कर फिर उसने ऐसा कहा (जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा, भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, एवं धण धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं) आप देवानुप्रिय के पास जिस प्रकार अनेक उग्र भोग यावत् इभ्य

પોતાની રુચિનો વિષય બનાવું છું હે ભદંત ! હું આ નિર્ગ્રંથપ્રવચનને સ્વીકારૂં છું. હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનનું આપ શ્રી જે પ્રમાણે પ્રતિપાદન કરી રહ્યા છો; અક્ષરશઃ યથાવત્ છે હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન સત્ય છે, હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન સંદેહ રહિત છે. (इच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, पडिच्छियमेय भंते निग्गंथे पावयणे) હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ઇષ્ટ છે, હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પ્રતીષ્ટ છે (इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे) હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ઇષ્ટ અને પ્રતીષ્ટ બન્ને છે. (जं णं तुब्भे वदह, त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ) જે પ્રમાણે આપશ્રી કહી રહ્યા છો તે પ્રમાણે જ છે આમ કહીને તેણે વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યાં. (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે તેઓશ્રીને આ પ્રમાણે કહ્યું–(जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा, भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं. चिच्चा सुवण्णं. एवं धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउर) આપ દેવાનુપ્રિયની પાસે જેમ ઉગ્ર, ભોગ યાવત્ ઇભ્ય અને ઇભ્યપુત્રો

विपुल धनकनकरत्नमणिमौक्तिकशङ्खशिलाप्रवालसत्सारस्वापतेयं विच्छर्द्य विगोप्य दानं दत्त्वा, परिभाज्य मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजन्ति, नो खलु अहं तावत् शक्नोमि त्यक्त्वा हिरण्यं तदेव यावत् प्रव्रजितुम्। अहं खलु देवानुप्रियाणाम् अन्तिके पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रतिपत्तुम्। यथासुखं देवानुप्रिय! मा प्रतिबन्धं कुरु। ततः

और इम्य पुत्र हिरण्य को छोडकर, सुवर्णको छोडकर एवं धन धान्य बल, वाहन, कोश, कोष्ठागार, पुर और अन्तःपुर को (चिच्चा) छोडकर (विउल धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता, विगोवइत्ता, दाणं दाइत्ता) तथा विपुल, धन, कनक, रत्न मौक्तिक शंख शिलाप्रवाल एवं सत्सारस्वापतेय को छोडकर तथा उन सबको विशाल प्रमाण में दीन दरिद्र आदिकों के लिये वितरित कर (परिभाइत्ता) पुत्रादिकों में विभक्त (विभाग) कर (मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति) बाद में मुंडित होकर के अगार अवस्था को धारण करते हैं (णो खलु अहं ता संचाएमि, चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए) वैसा मैं हिरण्य आदि को छोडकर दीक्षा धारण करने के लिये समर्थ नहीं हूं, (अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए) मैं तो आप देवानुप्रिय के पास पांच अणुव्रत वाले एवं सात शिक्षा व्रतवाले इस तरह १२ प्रकार के गृहस्थ धर्म को धारण कर सकता हूं। (अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि) आप

હિરણ્યનો ત્યાગ કરીને અને ધન, ધાન્ય, બળ વાહન, કોશ કોષ્ઠાગાર, પુર અને અંતઃપુર-રણવાસ (ચિચ્ચા) નો ત્યાગ કરીને (विउलधणकणगरयणमणिमोत्तिय-संखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता, विगोवइत्ता, दाणं दाइत्ता) તેમજ વિપુલ ધન, કનક, રત્ન, મૌક્તિક શંખ શિલા પ્રવાલ અને સત્સાર સ્વાપતેય નો ત્યાગ કરીને તેમ જ પુષ્કળ પ્રમાણમાં દીનદરિદ્ર વગેરે લોકોને આપીને (परिभाइत्ता) પુત્રાદિકોમાં વહેંચીને (मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति) ત્યાર બાદ મુંડિત થઈને અગાર અવસ્થામાંથી અનગાર અવસ્થાને ધારણ કરે છે. (णो खलु अहं ता संचाएमि, चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए) તેમ હું હિરણ્ય વગેરેનો ત્યાગ કરીને દીક્ષા ધારણ કરવામાં અસમર્થ છું (अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए) આપની પાસેથી હું તો ફક્ત પાંચ અનુવ્રતવાળા અને અને સાત શિક્ષાવ્રતવાળા આમ ૧૨ પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મને સ્વીકારી શકું છું (अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि) આપ દેવાનુપ્રિયને જે-આપને

खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके पञ्चाणुव्रतिकं यावद् गृहिधर्मम् उपसम्पद्य खलु विहरति। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव प्राधारयद् गमनाय, चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० ११२ ॥

टीका—'त एणं से' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके=

देवानुप्रिय को जिस प्रकार से सुख हो वैसा करो—परन्तु विलम्ब मत करो (तएण से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसपज्जित्ताणं विहरइ) इसके बाद उस चित्र सारथि ने केशिकुमार श्रमण के पास पांच अणुव्रतों वाले एवं सात शिक्षाव्रतों वाले गृहस्थ धर्मको अंगीकार कर लिया (तएणं से चित्ते सारही केसिकुमार समणं वंदइ, नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंट आसरहं दुरुहइ) इसके बाद उस चित्र सारथिने केशिकुमार श्रमण को वन्दना की नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर उसने जहां चातुर्घंट अश्वरथ रखा था उस ओर जाने का निश्चय किया. वहां जाकर वह उस पर चढ गया. (जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए) और जिस दिशा से होकर आया था उसी दिशा तरफ चला गया।

टीकार्थ—इसके बाद चित्र सारथी केशीकुमार श्रमण के पास

सुખ થાય તે કરો પણ વિલંબ ન કરો. (त एणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसपज्जित्ताणं विहरइ) ત્યાર પછી તે ચિત્ર સારથિએ કેશિકુમાર શ્રમણ પાસેથી પાંચ અણુવ્રતોવાળા અને સાત શિક્ષાવ્રતોવાળા ગૃહસ્થધર્મને સ્વીકારી લીધો. (त एणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ, नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ) ત્યાર બાદ તે ચિત્ર સારથીએ કેશિકુમાર શ્રમણને વંદના કરી, નમસ્કાર કર્યા, વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે જ્યાં ચાર્તુઘંટ અશ્વરથ હતો તે તરફ જવાનો નિશ્ચય કર્યો ત્યાં જઈને તે રથ પર સવાર થઈ ગયો. (जामेव दिसिं पाउब्भूए. तामेव दिसिं पडिगए) અને જે દિશા તરફ થઈને તે આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો.

ટીકાર્થ—ત્યાર બાદ ચિત્રસારથિ કેશિકુમાર શ્રમણની પાસે ધર્મ સાંભળીને

समीपे धर्मं श्रुत्वा सामान्यतः, निशम्य=विशेषतो हृदयेऽवधार्य हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः= हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्धृदयः उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्वः= वारत्रयम् आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्–हे भदन्त! खलु=निश्चयेन श्रद्दधामि=एवमेवैतन्नान्यथेति श्रद्धानविषयीकरोमि नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, हे भदन्त! प्रत्ययामि=प्रतीतिविषयीकरोमि खलु नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् हे भदन्त! रोचयामि =रुचिविषयीकरोमि खलु नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् हे भदन्त! अभ्युत्तिष्ठे=अभ्युपगच्छामि खलु नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, हे भदन्त! यथा खलु भवद्भिः प्रतिपादितम्, एतद् नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, एवमेव, हे भदन्त! यथा भवन्तः प्रतिपादयन्ति, एतद् नैर्ग्रन्थं प्रवचनं तथैव=तद्रूपमेवास्ति, हे भदन्त! एतद् नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् अवितथम्=सत्यम् अत एव हे भदन्त! एतद् नैर्ग्रन्थं प्रव

धर्म सुनकर और उसे विशेषरूप से अपने हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट और चित्त में आनन्द संपन्न हुआ उसके मनमें गाढ़ प्रीति जग गई, वह परम सौमनस्यित हो गया हृदय अपार हर्ष के कारण उसका हर्षित होने लगा वह उसी समय खडा हुआ, और केशिकुमार श्रमण को उसने तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण पूर्वक वन्दना की नमस्कार किया वन्दना नमस्कार कर फिर उसने ऐसा कहा–हे भदन्त मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचनको यह ऐसा ही है, इस रूपसे अपनी श्रद्धा का विषय बनाता हूं, हे भदन्त! मैं इस निर्ग्रन्थप्रवचन को अपनी प्रतीति में लाता हूं हे भदन्त! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचनको अपनी रुचि में आकृष्ट करता हूं और मैं हे भदन्त! इसे स्वीकार भी करता हूं। हे भदन्त। जैसा आपने कहा है यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ऐसा ही है। यह निर्ग्रन्थ प्रवचन अवितथ–सर्वथा सत्यरूप है,

અને તેને વિશેષરૂપથી હૃદયમાં અવધારિત કરીને હૃષ્ટતુષ્ટ થયો અને તેનું ચિત્ત અતીવ આનંદિત થયું તેના મનમાં તીવ્ર પ્રીતિ ઉત્પન્ન થઈ તે પરમસૌમનસ્યિત થઈ ગયો. તેનું હૃદય અપાર હર્ષથી તરબોળ થઈ ગયું તે તરત જ ઉભો થયો અને કેશિકુમાર શ્રમણની તેણે આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વન્દના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને પછી તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું–"હે ભદંત! હું આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પર એ એવું જ છે" આ રૂપમાં શ્રદ્ધાશીલ થાઉં છું હે ભદંત! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પર હું સંપૂર્ણપણે પ્રતીતિ કરું છું હે ભદંત! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને હું પોતાની રુચિ તરફ સહજ ભાવે આકૃષ્ટ કરું છું અને હે ભદંત! આને હું સ્વીકાર પણ કરું છું હે ભદંત! આપશ્રીએ જે પ્રમાણે કહ્યું છે તે પ્રમાણે જ આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન છે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન અવિતથ–સર્વથા–સત્યરૂપ છે, એથી જ એ

चनम्, असन्दिग्धम्= सन्देहरहितं खलु भदन्त ! एतद् नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, तथा–हे भदन्त ! एतत् खलु इष्टं प्रतीष्टम् अभिलषितम् प्रतीष्टम्=आभिमुख्येन सम्यक् प्रतिपन्नमेतत्, इष्टप्रतीष्टम्=सर्वथाऽतिशयेनाभिलषितं हे भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, यत् खलु यूयं वदथ–इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्, हे भदन्त ! देवानुप्रियाणाम्=भवताम् अन्तिके=समीपे यथा=येन प्रकारेण खलु बहव उग्रा भोगा यावत् इभ्या इभ्यपुत्रा हिरण्यं=रजतम् त्यक्त्वा, एवम्–अमुनैवप्रकारेण धनं=रूप्यादि, धान्य=शाल्यादि, बलं=सैन्य, वाहनम्=अश्वादिरूपम्, कोश–प्रसिद्धम्, कोष्ठागार=धान्यगृह, पुरं=नगरम्, अन्तःपुरं=स्त्रीनिवासभूतस्थान च त्यक्त्वा, तथा–विपुलं=प्रचुरं धनकनकरत्नमणि मौक्तिकशङ्खशिलाप्रवालसत्सारस्वापतेयं,–तत्र धनं=रूप्यादि कनकं=घटितमघ-

---

इसीलिये यह सन्देह रहित है। इष्ट है और प्रतीष्ट है अर्थात् इसे भव्यजीवों ने अपने जीवनमें उतारा है. अतः यह सर्वथा अतिशयरूप से अभिलषित सिद्ध हुआ है ऐसा कह कर उस चित्र सारथिने केशिकुमार श्रमण की भक्ति के वशवर्ती होकर पुनः वन्दना की नमस्कार किया. और फिर उसने उनसे ऐसा कहा–हे भदन्त ! आप देवानुप्रिय के पास जिस प्रकार से अनेक उग्रोंने उग्रपुत्रोंने भोगोंने यावत् इभ्योने एवं इभ्यपुत्रोंने हिरण्य–रजत को–छोडकर, सुवर्ण को छोडकर, इसी प्रकार, से धन–रूप्यादिकों को, धान्य–शाल्यादिकों को, बल–सैन्य को वाहन–अश्वादिकों को, कोश को, कोष्ठागार–धान्यगृह को, पुर नगर को, अन्तःपुर स्त्रीनिवास भूतस्थानको, छोडकर, तथा विपुल प्रचुर धन रूप्यादिकों को कनक घटित अघटित (घडा हुआ और विना घडा)

सन्देह रहित छे इष्ट छे अने प्रतीष्ट छे. એટલે કે ભવ્ય જીવોએ આને પોતાના જીવનમા ઉતાર્યું છે એથી જ એ સર્વથા અતિશયરૂપથી અભિલષિત - સિદ્ધ થયુ છે." આ પ્રમાણે કહીને તે ચિત્ર સારથિએ ભક્તિવશ થઇને કેશિકુમાર - શ્રમણુની ફરી વન્દના કરી તેમને નમસ્કાર કર્યા અને પછી તેણે તેઓશ્રીને આ પ્રમાણે કહ્યુ– "હે ભદન્ત! આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી જેમ ઘણા ઉગ્રોએ, ઉગ્રપુત્રોએ ભોગોએ યાવત્ ઇભ્યોએ અને ઇભ્યપુત્રોએ હિરણ્ય–સુવર્ણને ત્યજીને, રજત-ચાંદીને ત્યજીને, આ પ્રમાણે ધન–રૂપ્યા વગેરેને, ધાન્ય–શાલિ વગેરેને, બલ-સૈન્યને, વાહન–અશ્વ વગેરેને કોશને કોષ્ઠાગાર–ધાન્યગૃહને, પુર-નગરને, અન્તપુર-રણવાસને ત્યજીને તેમજ વિપુલ પ્રચુર ધન રૂપ્ય વગેરેને કનક–ઘટિત અઘટિત બન્ને પ્રકારના સુવર્ણને, કર્કેતન વગેરે

टित चेति द्विविधं सुवर्णम्, रत्नं कर्केतनादिकम्, मणिः=पद्मरागादिरूपाः, मौक्तिकं=मुक्ताफलं, शङ्खः-रत्नविशेषाः, शिलाप्रवालः=विद्रुमः सत्सार स्वापतेय सद्=पितृपितामहादिपरम्परात्वेन विद्यमानं सारं=प्रधानं यत्, स्वापतेयं=मणिरत्नादिकं द्रव्यं तत् एतेषां समाहारस्तत्,-धनधान्यादि सत्सार स्वापतेयान्तं सर्वं विच्छर्द्य=भावतः परित्यज्य, विगोप्य=तानि सर्वाणि प्रकटी कृत्य दानं दत्त्वा=दीनदरिद्रादिभ्यो वितीर्य, परिभाज्य=पुत्रादिषु विभज्य, मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजन्ति=दीक्षां गृह्णन्ति, नो खलु अहं तथा। अहं यावत् शक्नोमि=समर्थोऽस्मि त्यक्त्वा हिरण्य, तदेव यावत्=सुवर्णा दिकं सर्वं त्यक्त्वा-इत्यर्थः, प्रव्रजितुम्=दीक्षां ग्रहीतुम्। अहं खलु देवानुप्रियाणाम् अन्तिकं=समीपे पञ्चाणुव्रतिकं पञ्च=पञ्चसंख्यकानि अनुव्रतानि= स्थूलात् प्राणातिपाताद् विरमणम् १, स्थूलाद् मृषावादाद् विरमणम् २, स्थूलात्

दोनों प्रकार के सुवर्ण को, कर्केतनादिक रत्नको, पद्मरागादिकरूप मणियों को, मुक्ताफलों को, रत्नविशेषरूप शंखको, शिलाप्रवालविद्रुम को, सत्-पिता पितामह आदिकों की परम्परारूप से विद्यमान सारप्रधान मणिरत्नादिकरूप स्वापतेय को, भावतः छोड करके, तथा प्रत्यक्षरूप में इन सबको दीन दरिद्रादिकों को दान देकर, एवं पुत्रादिकों में इन्हें विभक्त करके अर्थात् पुत्रादिकों को धन आदिका भाग देकर मुंडित होकर अगारावस्था से परे हो दीक्षा धारण करते है, मैं इस प्रकार की परिस्थिति से युक्त हो कर-अर्थात् सुवर्णादिक सब का परित्याग कर भागवती दीक्षा धारण करने में अपने आपको शक्ति संपन्न नहीं मान रहा हू-असमर्थ मान रहा हू अतः आप देवानुप्रिय के पास मैं श्रावक व्रतों को धारण करना चाहता हू-बस ऐसी ही इस समय मुझ में शक्ति है अर्थात्-१स्थूल प्राणातिपात

રત્નને પદ્મરાગ વગેરે રૂપ મણિઓને, મુક્તાફલોને રત્ન વિશેષ શંખને, શિલાપ્રવાલ વિદ્રુમને સત્-પિતા પિતામહ વગેરેની પરંપરાથી વિદ્યમાન સાર પ્રધાન-મણિરત્ન વગેરે રૂપ સ્વાપતેયને ભાવતઃ (અન્તરની ઇચ્છાથી જ) ત્યજીને તેમજ પ્રત્યક્ષરૂપમાં દીન દરિદ્ર વગેરેને દાનમાં આપીને અને પુત્રાદિકોમાં વિભાજિત કરીને એટલે કે પુત્રાદિકોને ધન વગેરેના ભાગ આપીને મુંડિત થઈને-અગારાવસ્થાથી પર એવી ભાગવતી દીક્ષા ધારણ કરે છે. હું પોતાની જાતને આવી પરિસ્થિતિથી મુક્ત થઈને એટલે કે સુવર્ણ વગેરે બધી વસ્તુઓનો ત્યાગ કરીને ભગવતી દીક્ષા ધારણ કરવામાં હું અસમર્થતા અનુભવી રહ્યો છુ એથી આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી હું શ્રાવક વ્રતોને ધારણ કરવા ઇચ્છુ છુ સમયના મારામાં આટલી જ શક્તિ છે એટલે કે એમાં (૧) સ્થૂલ

अदत्तादानाद् विरमणम् ३, स्वदारसन्तोषः४, इच्छापरिमाणः५, इति पञ्चाणुव्रतानि तानि सन्ति यस्मिंस्तम्, तथा-सप्तशिक्षाव्रतिक-सप्तशिक्षाव्रतानि यस्मिन् दिग्व्रतम्,१ उपभोगपरिभोगपरिमाणम्२, अनर्थदण्डविरमणम् ३, सामायिकम् ४, देशावकाशिकम् ५, पौषधोपवासः ६, अतिथिसंविभागः, ७ इति सप्तशिक्षाव्रतानि तानि सन्ति यस्मिस्तम्, इत्येवं द्वादशविध गृहिधर्मं प्रतिपत्तुं=स्वीकर्तुं शक्नोमि। इत्थं चित्रसारथेर्वचनं श्रुत्वा केशिकुमारश्रमणः प्राह-हे देवानुप्रिय! यथा ते सुखं भवेत्तथा कुरु, अत्र अवश्यकर्त्तव्ये कार्ये प्रतिबन्धं=विलम्बं मा कुरु-इति! ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके पञ्चाणुव्रतिकं यावद् गृहिधर्मम् उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहरति। ततः खलु

से विरमण, २ स्थूलमृषावाद से विरमण, ३स्थूलअदत्तादान से विरमण, ४स्वदारसंतोष, और ५इच्छापरिमाण ये पांच अणुव्रत हैं जिसमें ऐसे तथा १दिग्व्रत, २उपभोगपरिभोगपरिमाण, ३अनर्थदण्डविरमण, ४सामायिक, ५देशावकाशिक,६पौषधोपवास, ७अतिथि संविभाग, एवं ये सातशिक्षाव्रत है जिसमें ऐसे गृहिधर्म को स्वीकार करने की मुझ में शक्ति है इसलिये इसे ही मैं धारण करना चाहता हूं-इसका विशेष वर्णन औपपातिक-सूत्र में आनन्द श्रावक के प्रकरण में देखना चाहिये। इस प्रकार चित्र सारथि के वचनकथन को सुनकर के केशिश्रमणने उससे कहा-हे देवानुप्रिय! जैसे तुम्हें सुख हो-वैसा करो परन्तु इस अवश्यकर्तव्य कार्य में ढील मत करो इस प्रकार केशिकुमारश्रमण का हितविधायक वचन सुनकर चित्र सारथिने उनके पास पांच अणुव्रतोंवाले एवं सातशिक्षा व्रतों वाले गृहिधर्म को स्वीकार

પ્રાણાતિપાતથી વિરમણ, (૨) સ્થૂલ મૃષાવાદથી વિરમણ (૩) સ્થૂલ અદત્તાદાનથી વિરમણ (૪) ઇચ્છા પરિમાણ આ પાંચે અણુવ્રતો તેમજ (૧) દિગ્વ્રત, (૨) ઉપભોગ પરિભોગપરિમાણ, (૩) સામાયિક (૪) દેશાવકાશિક (૫) પૌષધોપવાસ, (૬] અતિથિસંવિભાગ અને (૭) અનર્થ દંડ વિરમણ આ સાત શિક્ષાવ્રતો છે એવા ગૃહિધર્મને સ્વીકારવા માટે હુ તૈયાર છું. આનું વિશેષ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રના આનંદ શ્રાવક પ્રકરણમાં કરવામાં આવ્યું છે. આ પ્રમાણે ચિત્રસારથીનું કથન સાંભળીને કેશિકુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું-'હે દેવાનુપ્રિય! તમને જેમ સુખ થાય તેમ કરો પણ આ આવશ્યક કર્તવ્યમાં હવે વાર કરો નહિ' આ પ્રમાણે કેશિકુમાર શ્રમણનું હિત વિધાયક વચન સાંભળીને ચિત્ર સારથિએ તેઓશ્રી પાસેથી પાંચ અણુવ્રતોવાળા તેમજ સાતશિક્ષા વ્રતવાળા ગૃહિધર્મનો સ્વીકારી લીધો ત્યારબાદ ચિત્રસારથિએ તે કેશિકુમાર

स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव प्राधारयत्=निश्चयमकरोद् गमनाय=गन्तुमिति। उपगत्वा चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, दूरुह्य यस्या दिशः प्रादुर्भूतः, तामेव दिशं प्रतिगतः इति ॥सू० ११२।

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही समणोवासए जाए अहिगय जीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंध मोक्खकुसले असहिज्जे देवासुरणागजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुल गंधव्वमहोरगाईहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणि ज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अहिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते 'अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे' ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्ततेउरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्ण मासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे णिग्गंथे फासु एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं वत्थ पडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे, बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपोसहोववासेहिय अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥सू०११३॥

कर लिया इसके बाद चित्रसारथिने उन केशिकुमारश्रमण को वन्दना की नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार करके फिर वह जहां चातुर्घण्ट अश्वरथ रखा हुआ था वहां पर आया वहां आकर वह उसपर बैठ गया और इस प्रकार वह जहां से आया था वहीं से होकर वापिस चला गया ॥ सू० ११२॥

શ્રમણની વન્દના કરી નમસ્કાર કર્યા. વન્દના નમસ્કાર કરીને પછી તે જ્યાં ચાતુર્ઘંટ અશ્વ રથ હતો ત્યાં ગયો ત્યાં પહોંચીને તે તેમાં બેસી ગયો અને આ પ્રમાણે તે જ્યાંથી આવ્યો હતો ત્યાં જ પાછો જતો રહ્યો ॥સૂ૦ ૧૧૨॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः श्रमणोपासको जातः अभिगत जीवाजीव उपलब्धपुण्यपाप आस्रवसंवरनिर्जराक्रियाऽधिकरणबन्धमोक्षकुशलः, असाहाय्यो देवासुरनागयक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषगरुडगन्धर्वमहोरगादिभिः देवगणैः नैर्ग्रन्थात् प्रवचनात् अनतिक्रमणीयः, नैर्ग्रन्थे प्रवचने निश्शङ्कितो निष्काङ्क्षितो निर्विचिकित्सो लब्धार्थो गृहीतार्थः पृष्टार्थः अधि-

'तएण' से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही समणोवासए जाए) अब वह चित्र सारथि श्रमणोपासक हो गया. (अहिगय जीवाजीवे. उवलद्धपुण्णपावे, आसववसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले) जीव और अजीव तत्त्व के वह ज्ञाता बन गये, पुण्य एवं पाप के स्वरूप को जानने लगे, आस्रव. संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध और मोक्ष इनमें कुशल हो गये. अर्थात् इनके स्वरूप का उसे बोध हो गया. (असहिज्जे) कुतीर्थिकों के कुतर्क के खण्डन में पर की सहायता की अपेक्षा वाला नहीं रहा (देवासुरणागजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाईहिं देवगहेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे निस्संकिए) देवों से असुरों से नागों से, यक्षों से राक्षसों से, किंपुरुषों से, गरुडों से, गंधर्वों से, महोरगों से-इन सब देवगणों से-वह निर्ग्रन्थ प्रवचन की श्रद्धा आदि से, अनतिक्रमणीय हो गया अर्थात् ये सब देवगण भी उसे निर्ग्रन्थप्रवचन से थोडा सा भी विचलित करने के लिये समर्थ नहीं हो सके. वह (निग्गंथे पाव-

'तए ण से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए ण से चित्ते सारही समणोवासए जाए) હવે ચિત્ર સારથિ શ્રમણોપાસક થઇ ગયો હતો. (अहिगयजीवाजीवे, उवलद्धपुण्णपावे, आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले) જીવ અને અજીવ તત્ત્વનો તે જ્ઞાતા થઇ ગયો પુણ્ય અને પાપના સ્વરૂપને તે જાણવા લાગ્યો, આસ્રવ, સંવર, નિર્જરા. ક્રિયા, અધિકરણ. બંધ અને મોક્ષમાં તે કુશળ થઈ ગયો એટલે કે આ બધાના સ્વરૂપનું જ્ઞાન તેને થઇ ગયું (असहिज्जे) કુતીર્થિકોના કુતર્કના ખંડનમાં તેને બીજાની મદદની અપેક્ષા ન રહી. (देवासुरणागजक्खरक्खसकिंनर-किंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाईहिं देवगहेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे निस्संकिए) દેવોથી, અસુરોથી, નાગોથી, યક્ષોથી રાક્ષસોથી કિન્નરોથી કિંપુરુષોથી ગરુડોથી ગંધર્વોથી મહોરગોથી-આ બધા દેવગણોથી તે નિગ્રંથ પ્રવચન પર અતીવ શ્રદ્ધાને લીધે-અનતિક્રમણીય થઇ ગયો એટલે કે આ બધા દેવગણો પણ તેને નિગ્રંથ પ્રવચન પરથી જરાએ વિચલિત કરી

गतार्थो विनिश्चितार्थः अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्तः —'इदम् आयुष्मन्! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् अर्थः, अयं परमार्थः, शेषम् अनर्थः' उच्छ्रित-स्फाटिकः अपावृतद्वारः प्रीतिकरान्तःपुरगृहप्रवेशः चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु प्रतिपूर्ण

पणे निस्संकिए) ऐसा निर्ग्रन्थप्रवचन में निःशंकितगुण से युक्त हो गया (निक्कंखिए) अन्यमत की कांक्षा उसके चित्त में थोडी सी भी नहीं रही-ऐसा निष्कांक्षितगुण वाला वह हो गया (निव्वितिगिच्छे, लद्धट्ठे, गहियट्ठे, पुच्छियट्ठे, अहिगयट्ठे, विणिच्छियट्ठे, अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते) फल के प्रति संदेह उसका जाता रहा ऐसा वह निर्विचिकित्स गुण-सपन्न हो गया इसी कारण उसने गुर्वादिकों से यथार्थ निर्ग्रन्थप्रवचन का अर्थ प्राप्त कर लिया, और इसी कारण वह पराभिप्राय के ग्रहण से अवधारित (निश्चित) अर्थतत्त्ववाला बन गया पृष्टार्थ हो गया निर्णीतार्थ हो गया, अभिगतार्थ हो गया, विनिश्चितार्थ हो गया, तथा उसकी अस्थि और मज्जा ये दोनो निर्ग्रन्थ प्रवचनविषयक प्रेमरूपी रंजन द्रव्य से खूब रंग गये अर्थात् रग रग में उसके निर्ग्रन्थप्रवचन का अनुराग भर गया (अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे, अवंगुयदुवारे, चियत्तंतेउरपरघरप्पवेसे) हे आयुष्मन्! यह निर्ग्रन्थप्रवचन ही वास्तविक अर्थ से युक्त है क्यों कि यह मोक्ष का हेतु है यही परमार्थ है क्यों कि जीवों का

થયા નહિ. તે (निग्गंथे पावयणे निस्संकिए) આ પ્રમાણે નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમાં નિઃશંકિત ગુણયુક્ત થઈ ગયો (निक्कंखिए) તેના મનમાં બીજા મત માટે જરાએ ઇચ્છા શેષ ન રહી. આ પ્રમાણે તે નિષ્કાંક્ષિત ગુણયુક્ત થઈ ગયો. (निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे, गहियट्ठे, पुच्छियट्ठे, अहिगयट्ठे, विणिच्छियट्ठे, अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते) ફળ પ્રત્યે તેના મનમાં સંદેહ રહ્યો નહિ આ પ્રમાણે તે નિર્વિચિકિત્સ ગુણ સંપન્ન થઈ ગયો. એથી જ તેણે ગુરુ વગેરે પાસેથી યથાર્થ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનનો અર્થ જાણી લીધો હતો. એથી જ તે પરાભિપ્રાયના ગ્રહણથી અવધારિત અર્થ તત્ત્વવાળો થઈ ગયો પૃષ્ટાર્થ થઈ ગયો નિર્ણીતાર્થ થઈ ગયો અભિગતાર્થ થઈ ગયો, વિનિશ્ચિતાર્થ થઈ ગયો અને તેના અસ્થિ અને મજ્જા બન્ને નિર્ગ્રંથ પ્રવચન વિષયક પ્રેમરૂપી રંજન દ્રવ્યથી ખૂબ જ રંજિત થઈ ગયા. એટલે કે તેના શરીરના અણુએ અણુમાં નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પ્રત્યેની પ્રીતિ વ્યાપ્ત થઈ ગઈ (अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे, अवंगुयदुवारे, चियत्तंतेउरपरघरप्पवेसे) હે આયુષ્મન્! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન જ વાસ્તવિક અર્થ યુક્ત છે કેમકે એ મોક્ષ માટે કારણ મનાય છે એજ પરમાર્થ છે કેમકે જીવોના

पौषधं सम्यक् अनुपालयन् श्रमणान् निर्ग्रन्थान् प्रासुकैषणीयेन अशनपान-खादिम-स्वादिमेन पीठ--फलक शय्या-संस्तारेण वस्त्र--प्रतिग्रह-कम्बलपाद-प्रोञ्छनेन औषधभैषज्येन प्रतिलाभयन् बहुभिः शीलव्रतगुणविरमणपौष-

प्रयोजन इसीसे सिद्ध होता है. इसके अतिरिक्त अन्यतीर्थिक कुप्रवचनादिक कुगतिप्रापक होने से अनर्थरूप है, इस तरह से वह अपने पुत्रादिकों को शिक्षा देने लगा. निर्ग्रन्थप्रवचन की प्रतिपत्ति से उसका अन्तःकरण असद्विचारों से रहित हो जाने के कारण स्फटिक की तरह निर्मल हो गया, भिक्षुक आदिकों का भिक्षाके निमित्त गृह में प्रवेश सरलता से हो जावे इस ख्याल से वह अपने गृहप्रवेश द्वार को सदा अर्गला से रहित रखने लगा अर्थात् दानादि के लिये खुले दरवाजे रखे। राजा के अन्तःपुर में भी उसका प्रवेश शंका रहित होने से प्रीति का जनक बन गया. अर्थात् अतिधार्मिक होने से वह परस्त्री सहोदर (भाई) बन कर रहने लग गया. (चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइम-साइमेणं पीढफलगसेज्जासंथारेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे) चतुर्दशी, अष्टमी, उद्दिष्ट-अमावस्या. एवं पूर्णिमा इन चार तिथियों में अहोरात्र पौषध का पालन करता हुआ, तथा प्रासुक एषणीय-अचित्त और साधुजन को कल्पनीय ऐसे अशन, पान, खादिम, स्वादिमरूप चतुर्विध आहार से,

પ્રયોજન એના વડે જ સિદ્ધ થાય છે બાકીના બધા-અન્યતીર્થિક કુપ્રવચન વગેરે કુગતિ પ્રાપક હોવા બદલ અનર્થ રૂપ છે આ પ્રમાણે તે પોતાના પુત્રો વગેરેને ઉપદેશ આપવા લાગ્યો, નિર્ગ્રંથ પ્રવચનની પ્રતિપત્તિથી તેનું હૃદય અસદ્ વિચારોથી રહિત થઈ ગયું હતું એટલા માટે સ્ફટિકની જેમ નિર્મળ થઈ ગયું હતું. ભિક્ષુક વગેરે ભિક્ષા માટે આવે ત્યારે સરળતાપૂર્વક ઘરમા તેઓ પ્રવેશ મેળવી શકે તે માટે તે પોતાના ઘરનુ બારણું ખુલ્લું જ રાખવા લાગ્યો રાજાના રાજમહેલમા પણ તેનો પ્રવેશ નિઃશંકપણે થવા લાગ્યો એટલે કે તે અતિધાર્મિક થઈ ગયો હતો એથી તે પરસ્ત્રી સહોદર બનીને રહેવા લાગ્યો (चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे, फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढफलगसेज्जासंथारेणं वत्थपरिग्गह कंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे) ચતુર્દશી અષ્ટમી, ઉદ્દિષ્ટ અમાવસ્યા અને પૂર્ણિમા એ ચારેચાર તિથિઓના દિવસે અહોરાત્ર સુધી પૌષધનુ પાલન કરતો હતો તેમજ પ્રાસુક એષણીય અચિત્ત અને સાધુજન માટે કલ્પનીય એવા અશન, પાન, ખાદિમ, સ્વાદિમરૂપ ચતુર્વિધ આહારથી

पापयासै भाग्मान भावयन् यानि तम राजकार्याणि च यावत् राजव्यवहाराम तानि जितशत्रुणा राज्ञा सार्द्धं स्वयमेव प्रत्युत्पेक्षमाणः प्रत्युत्पेक्षमाणो विहरति ॥ सू० ११६ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि—

तत खलु स चित्रः सारथिःश्रमणोपासको जात सन् अभिगत-जीवा जीवः-अभिगतौ=सम्यक् अवगतौ=ज्ञातौ जीवाजीवौ=जीवतत्त्वम् अजीवतत्त्व च येन स तथा-जीवतत्त्वाजीवतत्त्वविषयकसकलज्ञानसम्पन्नः, उपलब्धपुण्य

पीठ, फलक, शय्या संस्तारक से, वस्त्र पात्र कम्बल, पादप्रोञ्छन, से, (चरण को साफ करने का वस्त्रविशेष) एव औषध भैषज्य से श्रमण निग्रन्थों को प्रतिलाभित करता हुआ (बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमण पोसहोववासेहिं य अप्पाणं भावेमाणे जाइ तत्थ रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवे क्खमाणे२ विहरइ) एव अनेक शीलव्रतों, गुणव्रतों, मिथ्यात्व से निवर्तन, प्रत्याख्यान और पौषधों से आत्मा को भावित करता हुआ वह जितने भी उस श्रावस्ती नगरी में राजकार्य थे यावत् जितने वहाँ राज व्यवहार थे उन सब का जितशत्रु राजा के साथ२ वारवार अवलोकन करता हुआ रहने लगा।

टीकार्थ—शुद्धिधर्म के पालन करने से वह चित्र सारथि श्रामणोपासक बन गया जीव-अजीव तत्त्व विषयक सकलज्ञान से वह सम्पन्न हो गया

પીઠ ફલક શય્યા સંસ્તારકથી વસ્ત્ર પાત્ર, કંબલ, પાદ પ્રોચ્છનથી અને ઔષધ ભૈષજ્યથી શ્રમણ નિર્ગ્રન્થોને પ્રતિલાભિત કરતો (बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपोसहोव वासेहिं य अप्पाणं भावेमाणे जाइ तत्थ रायकज्जाणि य जाव रायव वहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे२ विहरइ) અને અનેક શીલવ્રતો, ગુણવ્રતો, મિથ્યાત્વથી નિવર્તન પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોવડે પોતાના આત્માને ભાવિત કરતો તે શ્રાવસ્તી નગરીના સર્વ રાજકાર્યોનું સંચાલન કરતો જિતશત્રુ રાજાની સાથે રહીને વારંવાર રાજકાર્યનું અવલોકન કરતો પોતાના દિવસો પસાર કરવા લાગ્યો

ટીકાર્થ—શુદ્ધિધર્મના પાલનથી તે ચિત્ર સારથિ શ્રમણોપાસક થઈ ગયો જીવ, અજીવ તત્ત્વ વિષયક સકલ જ્ઞાનથી તે સંપન્ન થઈ ગયો. પુણ્ય અને પાપના મર્મ

पापः-उपलब्धे=याथातथ्येन विज्ञाते पुण्यपापे=पुण्यलक्षणं पापलक्षणं च येन स तथा-पुण्यपापयोः यथावस्थितस्वरूपज्ञायकः, तथा-आस्रवसंवर-निर्जराक्रियाऽधिकरणबन्धमोक्षकुशलः-तत्र-आस्रवः=प्राणातिपातादिः, संवरः=प्राणातिपातविरमणादिः, निर्जरा=कर्मणां देशतो निर्जरणं, क्रिया=कायिक्यादिरूपा, अधिकरणम्, खड्गादिकम्, बन्धः=कर्मपुद्गलजीवप्रदेशयोः दुग्ध-जलवत् एकीभावः, मोक्षः=जीवप्रदेशेभ्यः सर्वात्मना कर्मणामपगमनम्, एते-षामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तेषु कुशलः=चतुरः-आस्रवादिस्वरूपाभिज्ञ-इत्यर्थः, तथा-असाहाय्यः=नास्ति साहाय्यं=सहायता यस्य स तथा-कुतीर्थिककुतर्क-खण्डने परसाहाय्यानपेक्ष इति भावः, तथा-देवासुरनागयक्षराक्षसकिन्नर-किम्पुरुषगरुडगन्धर्वमहोरगादिभिः=तत्र-देवाः=वैमानिकाः, असुराः=असुर-कुमाराः, नागाः=नागकुमाराः असुरा नागाः, इमे उभये भवनपतयः, यक्षाः,

---

पुण्य और पाप के यथावस्थित स्वरूप का वह ज्ञाता हो गया, तथा प्राणातिपातादिरूप आस्रव, प्राणातिपातादिविरमणरूप संवर, कर्मों का एकदेश से क्षय होनेरूप निर्जरा, कायिकी आदिरूप क्रिया खड्गादिरूप अधिकरण, दुग्धजल की तरह कर्मपुद्गलों का और जीवप्रदेशों का एक क्षेत्रावगाहरूप बंध, जीवप्रदेशों से सर्वात्मना कर्मों का अपगमरूप मोक्ष इन सब में वह चतुर बन गया, अर्थात् जीव आदि के स्वरूप का वह अभिज्ञ हो गया, कुतीर्थिकजनों के कुतर्क खण्डन में वह किसी की भी सहायता नहीं लेता ऐसा समझदार हो गया, तथा जिनप्रवचन के प्रति उसकी ऐसी अगाध श्रद्धा बढ गई कि जिससे वह देव, असुर, नाग, यक्ष राक्षस, किन्नर, किम्पुरुष आदिकों द्वारा भी उससे किञ्चित् भी चलायमान नहीं किया जासका. वैमानिक देव यहां देवपद से. असुरकुमार जाति के भवनपति असुरकुमारपद

वास्थित स्वरूपने ते जाणवा लाग्यो तेमज प्राणातिपात वगेरे आस्रव, प्राणातिपातादि विरमणरूप संवर, कर्मोनो एकदेशथी क्षय थवा रूप निर्जरा, कायिकी वगेरे रूप क्रिया खड्ग वगेरे रूप अधिकरण, दुग्धजलनी जेम कर्मपुद्गलोनु अने जीव प्रदेशोनु एकक्षेत्रावगाहनरूप बंध, जीव प्रदेशोथी सर्वात्मना कर्मोनु अपगमनरूप मोक्ष आ बधामां ते चतुर हतो एटले के आस्रव वगेरेना स्वरूपनो ते जाणकार थई गयो हतो ते एवो चतुर थई गयो हतो के कुतीर्थिकोना कुतर्कखंडनमां ते कोईनी पण मदद लेतो नहतो तेमज जिनप्रवचन प्रत्ये तेना मनमां एवी अगाध श्रद्धा जामी गई हती के जेथी ते देव, असुर, नाग, यक्ष, राक्षस किंनर, किंपुरुष वगेरे वडे ते जराए विचलित करी शकाय तेम नहोतो वैमानिक देव अहीं देवपदथी, असुरकुमार जातिना भवनपति असुरकुमार पदथी, नागकुमार जातिना भवन-

राक्षसाः, किन्नराः किम्पुरुषाः, एते चत्वारो व्यन्तरविशेषाः, गरुडाः=गरुडध्वजाः सुपर्णकुमाराः भवनपतिविशेषाः, गन्धर्वा महोरगाश्च व्यन्तरविशेषाः तत्प्रभृतिभिरपि देवगणैः नैर्ग्रन्थात् प्रवचनात् अनतिक्रमणीयः=अचालनीयः निर्ग्रन्थप्रवचनात् चालयितुं देवादयोऽसमर्था इति भावः। तथा–निर्ग्रन्थे प्रवचने निःशङ्कितः=अन्यदर्शनापेक्षया श्रेष्ठमिदं न वेति शङ्कारहितः, अत एव–निष्काङ्क्षितः=काङ्क्षारहितः–परमतकाङ्क्षारहितः निर्विचिकित्सः–फलं प्रति सन्देहरहितः अत एव–लब्धार्थः–लब्धः=प्राप्तः अर्थो गुर्वादीनां सकाशाद् येन स तथा–उपलब्धपदार्थ इत्यर्थः, गृहीतार्थः–गृहीतः=स्वीकृतोऽर्थो येन स तथा–पराभिप्रायग्रहणतोऽवधारितार्थतत्त्व इत्यर्थः, पृष्टार्थः–पृष्टोऽर्थो

से, नागकुमार जाति के भवनपति देव नाग शब्द से, तथा यक्ष, राक्षस, किन्नर, एवं किंपुरुष इन पदों से व्यन्तर जाति के इस २ नामके देव गृहीत हुए हैं। गरुड शब्द से गरुडध्वजवाले सुपर्णकुमार जो कि भवन पति जाति के देव विशेष हैं। गृहीत हुए हैं। गन्धर्व और महोरग ये व्यन्तरविशेष हैं। उसके मनमें ऐसी शंका कि यह निर्ग्रन्थ प्रवचन अन्य दर्शनों की अपेक्षा श्रेष्ठ है की नहीं है कभी नहीं उत्पन्न हुई इसलिये यह उसके प्रति निःशंकित था परमत की कांक्षा का अभाव इसके चित्त में सर्वथा हो गया था-इसलिये यह निष्कांक्षित था, फल के प्रति सन्देह से यह रहित था इसलिये निर्विचिकित्स था इसी कारण इसने गुर्वादिकों के पास से प्रवचनगदित अर्थ को अच्छी तरह से जान लिया था इसलिये यह लब्धार्थ था, उसे अच्छी तरह से स्वीकार कर लिया था इसलिये ये गृहीतार्थ था संदेहयुक्त स्थल में परस्पर प्रश्न करने से वह अर्थ

પતિદેવ નાગ શબ્દથી તેમજ યક્ષ, રાક્ષસ, કિંનર અને કિંપુરુષ આ પદોથી વ્યંતર જાતિના દેવોનું ગ્રહણ થયું છે ગરુડ શબ્દથી ગરુડધ્વજવાળા સુપર્ણકુમાર-કે જેઓ ભવનપતિ જાતિના દેવ વિશેષ છે તેનું ગ્રહણ થયું છે ગંધર્વ અને મહોરગ એ બંને વ્યંતરનું વિશેષ છે ચિત્રસારથિના મનમાં નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને લઈને એવી કોઈપણ દિવસે શંકા ઉત્પન્ન થઈ નહોતી કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન બીજા દર્શનો કરતાં શ્રેષ્ઠ છે કે કેમ? એથી તે તે પ્રતિ નિઃશંકિત હતો. પરમત પ્રત્યે તેના મનમાં કયારે કાંક્ષા ઉત્પન્ન થઈ નહોતી એથી તે નિષ્કાંક્ષિત હતો ફળ પ્રત્યે તે સંદેહ રહિત હતો. એથી તે નિર્વિચિકિત્સ હતો. તેણે ગુરુ વગેરે પાસેથી પ્રવચન વગેરે અર્થને સારી પેઠે જાણી લીધા હતા એથી તે લબ્ધાર્થ હતો તે અર્થનો તેણે સારી પેઠે સ્વીકાર કરી લીધો હતો એથી તે ગૃહીતાર્થ હતો સાંશયિક સ્થળ વિષે પરસ્પર પ્રશ્નો કર

येन स तथा-सांशयिकस्थले परस्पर प्रश्नकरणेन निर्णीतार्थः, अधिगतार्थः- अधिगतः=सर्वथा उपलब्धः अर्थो येन स तथा-सर्वप्रकारेणोपलब्धार्थः, अत एव-विनिश्चितार्थः-वि=विशेषेण निश्चितः=निर्णीतोऽर्थो येन स तथा-ज्ञात- वास्तविकार्थ इत्यर्थः, तथा-अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्तः-अस्थिमज्जे प्रसिद्धे ते प्रेमानुरागेण-निर्ग्रन्थप्रवचनविषयकं यत् प्रेम तद्रूपो योऽनुरागो=रञ्जन- द्रव्यं तेन रक्ते इव रक्ते यस्य स तथाभूतः सन् "हे आयुष्मन्! इदं नैर्ग्रन्थं प्रवचनमेव अर्थः=वास्तविकार्थयुक्तः-मोक्षहेतुत्वात्, शेषम्=इतो भिन्नम् अन्यतीर्थिककुप्रावचनादिकम् अनर्थः-कुगतिप्रापकत्वात्"-इत्येवं पुत्रादिकमनुशासत्, तथा उच्छ्रितस्फाटिकः-स्फटिकमिव स्फाटिकम् अन्तः करणम्, उच्छ्रितम्=उद्गतं स्फाटिकं यस्य स तथा-निर्ग्रन्थप्रवचन प्रतिपत्त्या, असद्विचारशून्यत्वात्स्फटिकवन्निर्मलान्तःकरण इत्यर्थः, अथवा- 'उच्छ्रितपरिघः' इतिछाया, एतत्पक्षे: उच्छ्रितः=तत्स्थानादपनीय ऊर्ध्वी

का निर्णेता बन गया था. इसलिये पृष्टार्थ था, सर्वप्रकार से अर्थ का ग्रहण करने वाला बन गया था, इसलिये ये लब्धार्थ था. वास्तविक अर्थ का ज्ञाता बन गया था. इसलिये ये विनिश्चयार्थ था, निर्ग्रन्थप्रवचनविषयक प्रेम- उसकी रोम२ में समा गया था, इसलिये ये अस्थिमज्जाप्रेमानुराग रक्त था. वह अपने पुत्र पौत्रादिकों से यही कहता था कि हे आयुष्मन्! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही मोक्ष हेतु होने से वास्तविक अर्थ से युक्त है अन्य कुवादियों के प्रवचन ऐसे नहीं हैं। क्यों कि वे दुर्गति के प्राप्त कराने वाले हैं। निर्ग्रन्थप्रवचन की प्रतिपत्ति से उसका हृदय स्फटिकमणि के जैसा निर्मल हो गया था 'उसियफलिहे' की छाया जब 'उच्छ्रितपरिघः' ऐसी की जाती है तब इसका अर्थ ऐसा होता है कि इसने घरके द्वार के किवाडों में,

વાથી તે અર્થનો નિર્ણેતા બની ગયો હતો એથી તે પૃષ્ટાર્થ હતો. તે સર્વ રીતે અર્થને ગ્રહણ કરનાર બની ગયો હતો. એથી તે લબ્ધાર્થ હતો તે વાસ્તવિક અર્થનો જ્ઞાતા થઇ ગયો હતો એથી તે વિનિશ્ચતાર્થ હતો. નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન વિષયક પ્રેમ તેના અણુએ અણુમાં રમી ગયો હતો, એથી તે અસ્થિમજ્જાપ્રેમાનુરાગી હતો. તે પોતાના પુત્ર પૌત્ર વગેરેને આ પ્રમાણે જ કહેતો હતો કે હે આયુષ્મન્! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન જ મોક્ષના હેતુ હોવા બદલ વાસ્તવિક અર્થથી યુકત છે. બીજા કુવાદિ- ઓના પ્રવચનો આવા નથી. કારણકે તે કુગતિ તરફ દોરનારા છે. નિર્ગ્રંથ પ્રવચનની પ્રતિપત્તિથી તેનું હૃદય સ્ફટિકમણિ જેમ નિર્મળ થઇ ગયું હતું. 'ઉસીયફલિહે' ની છાયા જ્યારે 'उच्छ्रितपरिघः', આ પ્રમાણે કરવામાં આવે છે ત્યારે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે હોય છે કે તેણે ગૃહપ્રવેશદ્વારના કમાડોમાં અર્ગલા મૂકવાના સ્થાનની

कृता न तु तिरश्चीनः कृतः परिघः=अर्गला यस्य स तथा भिक्षुकादीनां सौकर्येण भिक्षार्थं गृहे प्रवेशो भवतु इति हेतोः कपाट पश्चाद्भागादपनीतार्गल इत्यर्थः। अथवा—उच्छ्रितः=अपगतः परिघः=अर्गला गृहद्वारे यस्यासौ तथा—औदार्यातिशयादतिशयदानदातृत्वाद् भिक्षुकप्रवेशार्थं मनर्गलितगृहद्वार इत्यर्थः। एतावदेव न किन्तु अप्रावृतद्वारः=भिक्षुकादिप्रवेशार्थं कपाटानामपि पश्चात्करणाद् सर्वथा समुद्घाटितद्वार इत्यर्थः। यद्वा—सम्यग्दर्शनलाभे सति कुतश्चिदपि पाखण्डिकाद् भयाभावेन शोभनमार्गपरिग्रहेण च सर्वथा समुद्घाटितशिरस्कोऽसि भावः, तथा—चीयत्त॥

अर्गला को उसके रखने के स्थान से ऊपर कर दिया था, तिरछा नहीं किया था अर्थात् प्रवेशद्वार के किंवाडों में इसने अर्गला नहीं लगाई किन्तु वह ऊंची ही रही सो इसका कारण यह था कि भिक्षुक आदि जनों का प्रवेश घर में भिक्षा के निमित्त सरलता पूर्वक होता रहे। अथवा उच्छ्रित शब्द का अर्थ 'इसने अर्गला बिलकुल नहीं लगाई' ऐसा भी होता है क्यों कि यह उदारता वाला था, तथा अतिशय दान देने वाला था इसलिये भिक्षुकादिकों के प्रवेश के लिये इसने अपने घर के द्वार को अर्गला से रहित ही कर दिया था उतना ही नहीं किन्तु उसने गृह द्वारके कपाटों को खुला कर दिया इसीलिये यह 'अप्रावृतद्वारः' ऐसा कहा है अर्थात् यह सर्वथा समुद्घाटित द्वार वाला प्रकट किया है। अर्थात् दान पुण्य के लिये उनके घरके द्वार सदा खुले थे यद्वा—सम्यग्दर्शन के लाभ होने पर किसी भी पाखण्डिक से उसे भय नहीं था सो इससे

ઉપર જ રાખી. ત્રાંસી મૂકી ન હતી એટલે કે પ્રવેશદ્વારના કમાડોમાં તેણે સાંકળ લગાવી ન હતી પણ તેને ઉંચી જ રાખી હતી એની પાછળ આ હેતુ છે કે ભિક્ષુક વગેરે ભિક્ષા માટે આવે ત્યારે સહેલાઈથી ઘરમાં પ્રવેશી શકે અથવા ઉચ્છ્રિત શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે પણ થાય છે કે તેણે અર્ગલા લગાડી જ નહોતી. તે ઉદાર તેમજ અતિશય દાનદાતા હતો એથી ભિક્ષુક વગેરેના પ્રવેશ માટે પોતાના ઘરને તેણે અર્ગલા વગર જ રાખ્યું હતું આ પ્રમાણે અર્થ કરવો જોઈએ એમ કહી શકીએ કે તેણે અર્ગલાને તેના સ્થાન પરથી ઉંચી પણ નહોતી કરી એટલા માટે 'અપ્રાવૃતદ્વારઃ' પદથી સૂત્રકારે તેને સર્વથા સમુદ્ઘાટિતદ્વારવાળો પ્રકટ કર્યો છે અને સમ્યગ્દર્શનના લાભ થી હવે કોઈ પણ પાખંડીથી તે ભયભીત નહોતો થતો. એથી અને શોભનમાર્ગના

गृहप्रवेशः=प्रीतिकरः प्रीत्युत्पादकः अन्तःपुरगृहे=राज्ञोऽन्तःपुरे प्रवेशो=यस्य स तथा, प्रीतिकरोऽतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीय इति भावः, तथा-चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु तत्र-चतुर्दश्यष्टमीपौर्णमास्यः प्रसिद्धाः, 'उद्दिष्टम्' इत्यमावास्या, एतासु चतसृष्वपि तिथिषु प्रतिपूर्ण=सकलम्-अहोरात्रं पौषधं सम्यक् अनुपालयन्, तथा-प्रासुकैषणीयेन=अचित्तेन साधुजनकल्पनीयेन च अशनपानखादिमस्वादिमेन=अशनादिचतुर्विधेनाहारेण पीठफलकशय्यासंस्तारकेण, वस्त्रप्रतिग्रहकम्बलपादप्रोञ्छनेन-तत्र-वस्त्रं=वसनं, प्रतिग्रहः=भक्त-पानादिपात्रं, कम्बलः-प्रसिद्धः, पादप्रोञ्छनं=पादप्रोञ्छनार्थं वस्त्रम्, एतेषां समाहारः, तेन, तथा-औषधभैषज्येन=औषधम्=एकद्रव्यनिष्पादितं, भैषज्यम्=अनेकद्रव्यनिष्पादितम्, उभयोः समाहारस्तेन च श्रमणान् निर्ग्रन्थान् प्रतिलम्भयन् प्रतिलम्भयन्, तथा-बहुभिः=अनेकसंख्यकैः शीलव्रतगुण-विरमणप्रत्याख्यानपोषधोपवासैः तत्र-शीलव्रतानि=स्थूलप्राणातिपातविरमणा-

और शोभनमार्ग के परिग्रह से वह सर्वदा समुद्घाटित शिरवाला बना रहता था अर्थात् स्वधर्माभिमान वाला था, तथा वह प्रीतिकरान्तःपुरगृहप्रवेश वाला था, अर्थात् राजा के अन्तःपुररूप घर में इसका प्रवेश प्रीत्युत्पादक था, अर्थात् यह अतिधार्मिक था इसलिये प्रीतिकर सर्वत्र अनाशङ्कनीय था तथा चतुर्दशी अष्टमी अमावास्या, और पूर्णिमा इन चारों पर्व तिथियों में यह अहोरात्र को पौषध करता था प्रासुकएषणीय-अचित्त एवं साधुजन कल्पनीय ऐसे अशनपान आदिरूप चार प्रकार के आहार से, पीठ, फलक, शय्या एवं संस्तारक से. वस्त्र, प्रतिग्रह—भक्तपानादिपात्र, कम्बल, एवं पादप्रोञ्छनार्थ वस्त्र से, एकद्रव्यनिष्पादित औषध से तथा अनेक द्रव्य निष्पादित भैषज्य से यह श्रमणनिर्ग्रन्थों को प्रतिलाभित करता था, इस तरह अनेकसंख्यक शीलव्रतों से-स्थूलप्राणा-तिपातविरमण आदिकों से, दिग्व्रत आदिरूप गुणव्रतों से, मिथ्यात्व-

પરિગ્રહથી ને સર્વદા સમુદ્ઘાટિત શિરવાળો થઈને રહેતો હતો. તે પ્રીતિકરાન્તઃ પુરગૃહપ્રવેશવાળો હતો એટલે કે રાજાના રણવાસમાં તેનો પ્રવેશ પ્રીત્યુત્પાદક હતો એટલે કે તે અતિધાર્મિક હતો એથી પ્રીતિકર અને સર્વત્ર અનાશંકનીય હતો. ચતુર્દશી વગેરે ચારે ચાર પર્વતિથિઓમાં તે અહોરાત્ર, પૌષધ કરતો હતો પ્રાસુક એષણીય અચિત્ત અને સાધુજન કલ્પનીય એવા અશનપાન વગેરે રૂપ ચાર પ્રકારના આહારથી પીઠ, ફલક, શય્યા, અને સંસ્તારકથી વસ્ત્ર, પ્રતિગ્રહ—ભક્તપાન વગેરે પાત્ર, કંબલ અને પાદપ્રોંછનાર્થ વસ્ત્રથી એક દ્રવ્ય નિષ્પાદિત ભૈષજ્યથી તે શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને પ્રતિલાભિત કરતો હતો. આ પ્રમાણે ઘણાં શીલવ્રતોથી-સ્થૂલ પ્રાણાતિપાત વિરમણ વગેરેથી, દિગ્વિરતિ વગેરે ગુણવ્રતોથી, મિથ્યાત્વ નિવર્તનરૂપ વિરમણથી,

कृता, न तु तिरश्चीनः। कृतः परिघः=अर्गला येन स तथा 'भिक्षुकादीनां सौकर्येण भिक्षार्थं गृहे प्रवेशो भवतु' इति हेतोः कपाट पश्चाद्भागादपनीतार्गल इत्यर्थः। अथवा—उच्छ्रितः=अपगतः परिघः=अर्गला गृहद्वारे यस्यासौ तथा—औदार्यातिशयादतिशयदानदातृत्वाद् भिक्षुकप्रवेशाय अनर्गलितगृहद्वार इत्यर्थः। एतावदेव न किन्तु अपावृतद्वारः=भिक्षुकादिप्रवेशार्थं कपाटानामपि पश्चात्करणात् सर्वथा समुद्घाटितद्वार इत्यर्थः। यद्वा—सम्यग्दर्शनलाभे सति कुतश्चिदपि पाखण्डिकाद् भयाभावेन शोभनमार्गपरिग्रहेण च सर्वदा समुद्घाटितशिरा निष्कम्पो भाव, ता—भीतिहारः पृ

अर्गला को उसके रखने के स्थान से ऊपर कर दिया था, तिरछी नहीं किया था अर्थात् प्रवेशद्वार के किंवाडों में इसने आगल नहीं लगाई किन्तु वह ऊंची ही रही सो इसका कारण यह था कि भिक्षुक आदि जनों का प्रवेश घर में भिक्षा के निमित्त सरलता पूर्वक होता रहे। अथवा उच्छ्रित शब्द का अर्थ 'इसने आगल बिलकुल नहीं लगाई' ऐसा भी होता है क्यों कि यह उदारता वाला था, तथा अतिशय दान देने वाला था इसलिये भिक्षुकादिकों के प्रवेश के लिये इसने अपने घर के द्वार को अर्गला से रहित ही कर दिया था इतना ही नहीं किन्तु इसने गृह द्वारके कपाटों को खुला कर दिया इसीलिये यह 'अपावृतद्वारः' ऐसा कहा है अर्थात् यह सर्वथा समुद्घाटित द्वार वाला प्रकट किया है। अर्थात् दान पुण्य के लिये उनके घरके द्वार सदा खुले थे यद्वा—सम्यग्दर्शन के लाभ होने पर किसी भी पाखण्डिक से उसे भय नहीं था सो इससे

ઉપર જ રાખી. ત્રાંસી મૂકી ન હતી એટલે કે પ્રવેશદ્વારનાં કમાડોમાં તેણે સાંકળ લગાવી ન હતી પણ તેને ઊંચી જ રાખી હતી એની પાછળ આ હેતુ છે કે ભિક્ષુક વગેરે ભિક્ષા માટે આવે ત્યારે સહેલાઈથી ઘરમાં પ્રવેશી શકે અથવા ઉચ્છ્રિત શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે પણ થાય છે કે, તેણે અર્ગલા લગાવી જ નહોતી. તે ઉદાર તેમજ અતિશય દાનદાતા હતો એથી ભિક્ષુક વગેરેના પ્રવેશ માટે પોતાના ઘરને તેણે અર્ગલા વગર જ રાખ્યું હતું આ પ્રમાણે અર્થ કરવો જોઈએ એમ પણ કહી શકીએ કે તેણે અર્ગલાને તેના સ્થાન પરથી ઊંચી પણ નહોતી કરી. એટલા માટે 'અપાવૃતદ્વારઃ' પદથી સૂત્રકારે તેને સર્વથા સમુદ્ઘાટિતદ્વારવાળો પ્રકટ કર્યો છે અને સમ્યગ્દર્શનના લાભ થી હવે કોઈ પણ પાખંડીથી તે ભયભીત નહોતો થતો એથી અને શોભનમાર્ગના

गृहप्रवेशः=प्रीतिकरः प्रीत्युत्पादकः अन्तःपुरगृहे=राज्ञोऽन्तःपुरे प्रवेशो=यस्य स तथा, प्रीतिकरोऽतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीय इति भावः, तथा-चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु तत्र-चतुर्दश्यष्टमीपौर्णमास्यः प्रसिद्धाः, 'उद्दिष्टम्' इत्यमावास्या, एतासु चतसृष्वपि तिथिषु प्रतिपूर्णं=सकलम्-अहोरात्रं पौषधं सम्यक् अनुपालयन्, तथा-प्रासुकैषणीयेन=अचित्तेन साधुजनकल्पनीयेन च अशनपानखादिमस्वादिमेन=अशनादिचतुर्विधेनाहारेण पीठफलकशय्यासंस्तारकेण, वस्त्रप्रतिग्रहकम्बलपादप्रोञ्छनेन-तत्र-वस्त्रं=वसनं, प्रतिग्रहः=भक्तपानादिपात्रं, कम्बलः-प्रसिद्धः, पादप्रोञ्छनं=पादप्रोञ्छनार्थं वस्त्रम्, एतेषां समाहारः, तेन, तथा-औषधभैषज्येन=औषधम्=एकद्रव्यनिष्पादितं, भैषज्यम्=अनेकद्रव्यनिष्पादितम्, उभयोः समाहारस्तेन च श्रमणान् निर्ग्रन्थान् प्रतिलम्भयन् प्रतिलम्भयन्, तथा-बहुभिः=अनेकसंख्यकैः शीलव्रतगुणविरमणप्रत्याख्यानपोषधोपवासैः तत्र-शीलव्रतानि=स्थूलप्राणातिपातविरमणा-

और शोधनमार्ग के परिग्रह से वह सर्वदा समुद्घाटित शिरवाला बना रहता था अर्थात् मत्वर्मभिमान वाला था। तथा वह प्रीतिकरान्तःपुरगृहप्रवेश वाला था, अर्थात् राजा के अन्तःपुररूप घर में इसका प्रवेश प्रीत्युत्पादक था अर्थात् यह अतिधार्मिक था इसलिये प्रीतिकर सर्वत्र अनाशङ्कनीय था तथा चतुर्दशी अष्टमी अमावास्या और पूर्णिमा इन चारों पर्व तिथियों में यह अहोरात्र का पौषध करता था प्रासुकएषणीय-अचित्त एवं साधुजन कल्पनीय ऐसे अशनपान आदिरूप चार प्रकार के आहार से, पीठ, फलक, शय्या एवं संस्तारक से. वस्त्र, प्रतिग्रह—भक्तपानादिपात्र, कम्बल, एवं पादप्रोञ्छनार्थ वस्त्र से, एकद्रव्यनिष्पादित औषध से तथा अनेक द्रव्य निष्पादित भैषज्य से यह श्रमणनिर्ग्रन्थों को प्रतिलाभित करता था, इस तरह अनेकसंख्यक शीलव्रतों से-स्थूलप्राणातिपातविरमण आदिकों से, दिग्व्रत आदिरूप गुणव्रतों से, मिथ्यात्व-

परिग्रहथी ने सर्वदा समुद्घाटित शिरवाळो थईने रहेतो हतो. ते प्रीतिकरान्तःपुरगृहप्रवेशवाळो हतो एटले के राजाना रणवासमां तेनो प्रवेश प्रीत्युत्पादक हतो एटले के ते अतिधार्मिक हतो एथी प्रीतिकर अने सर्वत्र अनाशंकनीय हतो. चतुर्दशी वगेरे चारे चार पर्वतिथिओमां ते अहोरात्र पौषध करतो हतो. प्रासुक एषणीय अचित्त अने साधुजन कल्पनीय एवा अशनपान वगेरे रूप चार प्रकारना आहारथी पीठ, फलक, शय्या, अने संस्तारकथी वस्त्र, प्रतिग्रह-भक्तपान वगेरे पात्र, कंबल अने पादप्रोंछनार्थ वस्त्रथी एक द्रव्य निष्पादित भैषज्यथी ते श्रमण निर्ग्रंथोने प्रतिलाभित करतो हतो. आ प्रमाणे घणां शीलव्रतोथी-स्थूल प्राणातिपात विरमण वगेरेथी, दिग्विरति वगेरे गुणव्रतोथी, मिथ्यात्व निवर्तनरूप विरमणथी,

दीनि पञ्च, गुणाः=गुणव्रतानि-दिग्व्रतादीनि विरमण=मिथ्यात्वात् निवर्तनम् प्रत्याख्यान=पर्वदिनेषु हरितकायादीनां परित्यागः, पौषधोपवासः=चतुर्दश्यादिपर्वतिथिषु आहारत्यागः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तैः आत्मानं भावयन्=वासयन्, यानि-तत्र=श्रावस्त्यां नगर्यां राजकार्याणि च, यावत् राजव्यवहाराश्च तानि सर्वाणि जितशत्रुणा राज्ञा-सार्द्धं स्वयमेव प्रत्युपेक्षमाणः प्रत्युपेक्षमाणः=मुहुर्मुहुरवलोकयन् विहरति ॥सू० ११३॥

मूलम्—तएणं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छाहि णं तुमं चित्ता! सेयवियानगरिं, पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि, मम पाउग्गहणं जहा भणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहित्तिकट्टु विसज्जिए। तएणं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रन्ना विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ, जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे, तेणेव उवागच्छइ, तं महत्थं जाव ठवेइ, ण्हाए जाव सरीरे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते पायचारविहारेणं महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव कोट्ठए

निवर्तनरूप विरमण से, पर्वदिनों में हरितकायादिकों के परित्याग से, चतुर्दश्यादिपर्वतिथियों में आहारत्याग से आत्मा को वासित करता हुआ वह श्रावस्ती नगरी में जितने भी राजकार्य थे यावत्-राजव्यवहार थे उन सब का जितशत्रु राजा के साथ स्वतः बार बार निरीक्षण करता हुआ रहने लगा ।सू० ११३॥

પર્વના દિવસોમાં હરિતકાય વગેરેના પરિત્યાગથી, ચતુર્દશી વગેરે તિથિઓમાં આહાર ત્યાગથી આત્માને વાસિત કરતો તે શ્રાવસ્તી નગરીમાં જેટલા રાજકાર્યો હતાં યાવત્ રાજવ્યવહાર હતા તે સર્વનું જિતશત્રુ રાજાની સાથે પોતે વારવાર નિરીક્ષણ કરતો રહેવા લાગ્યો. ॥સૂ૦ ૧૧૩॥

चेइए जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, केसिकुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव उट्ठाए जाव एवं वयासी– एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए, तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयंवियं नयरिं ! पासादीया णं भंते ! सेयंविया णयरी, एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयंविया णयरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयंविया णयरी पडिरूवा णं भंते ! सेयंविया णयरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयंवियं णयरिं ॥सू० ११४॥

छाया—ततः खलु स जितशत्रू राजा अन्यदा कदाचित् महार्थं यावत् प्राभृतं सज्जयति, चित्र सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छ खलु त्वं चित्र ! श्वेतविकां नगरीम्, प्रदेशिनो राज्ञ इदं महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय, मम पादग्रहणं यथा भणितम् अवितथम् असन्दिग्धम्, वचन

'तएणं से जियसत्तू राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं से) इसके बाद उस (जियसत्तू राया) जितशत्रु राजाने (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ) महाप्रयोजनसाधक यावत् प्राभृत को सजाया, (सज्जित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) सजाकर फिर उसने चित्र सारथि को बुलाया. (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा–(गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयंवियानयरिं पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) हे चित्र ! तुम जाओ और श्वेतांबिका नगरी में प्रदेशी राजा के पास इस महाप्रयोजन साधक यावत्

'तएणं से जियसत्तू राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं से) त्यार पछी ते (जियसत्तू राया) जितशत्रु राजाए (अन्नया कयाइ) कोई एक वखते (महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ) महाप्रयोजन साधक यावत् भेट (प्राभृत) तैयार करी (सज्जित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) तैयार करीने तेणे चित्र सारथीने बोलाव्यो (सद्दावित्ता एवं वयासी) बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं (गच्छहि णं तुमं चित्ता ! सेयंवियानयरिं पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) हे चित्र ! तमे श्वेतविका नगरीमां प्रदेशी राजानी पासे आ

निवेदयेति कृत्वा विसर्जितः। ततः खलु स चित्रः सारथिर्जितशत्रुणा राज्ञा विसर्जितः सन् तत् महार्थं यावत् गृह्णाति, जितशत्रोः राज्ञोऽन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, यत्रैव राजमार्गमवगाढ आवासः, तत्रैव उपागच्छति, तन्महार्थं यावत् स्थापयति, स्नातो यावच्छरीरः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्तः पादचारविहारेण महापुरुषवागुरापरिक्षिप्तो राजमार्गमवगाढात् आवास

प्राभृत को दे आओ (मम पाउग्गाइं जहा भणिय अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहि त्तिकट्टु विसज्जिए) और उनसे मेरा प्रणाम कहो, तथा मेरी ओर से यथोक्त अवितथ असंदिग्ध वचन कहो, इस प्रकार कह कर उसे विसर्जित कर दिया (तएणं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रण्णा विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ-जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद जितशत्रु राजा द्वारा विसर्जित किये गये चित्र सारथि ने उस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत को उठा लिया, और जितशत्रु राजा के पास से चला आया (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) एवं श्रावस्ती नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर निकला (जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) निकलकर वह जहां राजमार्ग पर स्थित आवासस्थान था, वहां पर आया (तं महत्थं जाव ठवेइ) वहां आकरके, उसने उस प्राभृत को एक ओर रख दिया (ण्हाए जाव सरीरे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंद

મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટ લઈ જાઓ.(मम पाउग्गाइं जहा भणिय अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहि त्तिकट्टु विसज्जिए) અને તેમને મારા પ્રણામ કહેજો અને મારાવતી યથોક્ત અવિતથ અસંદિગ્ધ વચન કહેજો. (त्तिकट्टु विसज्जिए) આ પ્રમાણે કહીને તેને ત્યાંથી જવાની આજ્ઞા કરી (तएणं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रण्णा विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) ત્યારપછી જિતશત્રુ રાજા પાસેથી આજ્ઞાપિત થઈને તે ચિત્ર સારથીએ તે મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટને લઈ લીધી અને જિતશત્રુ રાજા પાસેથી આવતો રહ્યો (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) અને શ્રાવસ્તી નગરીના બરોબર મધ્યભાગમાં થઈને (जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) તે જ્યાં રાજમાર્ગ પર પોતાનું નિવાસસ્થાન હતું ત્યાં આવ્યો. (तं महत्थं जाव ठवेइ) ત્યાં આવીને તેણે તે ભેટને એક તરફ મૂકી દીધી. (ण्हाए जाव सरीरे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं परिज्जमाणेणं महया महया

सात् निर्गच्छति, श्रावस्त्या नगर्या मध्यं मध्येन निर्गच्छति यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं यत्रैव केशी कुमारश्रमणः तत्रैव उपागच्छति, केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा हृष्ट यावत् उत्थया यावदेवमवादीत्–एवं खलु अहं भदन्त ! जितशत्रुणा राज्ञा प्रदेशिने राज्ञे

परिक्खित्ते पायचारविहारेण महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ) स्नान किया यावत् बहुमूल्यवेश एवं अल्पभारवाले आभूषणों से अपने शरीर को अलंकृत किया. पश्चात् छत्रधारी द्वारा ताने गये एवं कोरंटपुष्पों की माला से विभूषित ऐसे छत्र से युक्त हुआ- वह चित्र सारथि विशाल भटों के विस्तृत समूह से युक्त होकर उस राजमार्ग स्थित आवास से पैदल ही निकला साथ में विशाल जनमेदिनी भी थी (सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ) इन सब से घिरा वह चित्र सारथि श्रावस्ती नगरीके बीचों बीच मार्ग से होकर चला (जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) चलते २ वह वहां पहुंचा जहां कोष्ठक चैत्य और उसमें भी जहां केशिकुमारश्रमण थे (केसिकुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव उट्ठाए एवं वयासी) वहां पहुंचकर उसने केशिकुमार श्रमण से धर्म का उपदेश सुना और उसे हृदय में धारण किया सुनकर और हृदय में धारण कर वह आनंद से प्रफुल्लित बन गया, और संतुष्ट चित्त हो गया यावत् उसका हृदय प्रमोद से

भडचडगरविंदपरिक्खित्ते पायचारविहारेण महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ) સ્નાન કર્યું યાવત્ બહુ કિંમતવાળા અને અલ્પભારવાળાં આભૂષણો વડે તેણે પોતાના શરીરને અલંકૃત કર્યું. ત્યારપછી કોરંટ પુષ્પ વડે શોભતું છત્ર છત્રધારીઓ વડે તેના ઉપર તાણવામાં આવ્યું. આ પ્રમાણે-તે ચિત્ર સારથિ વિશાળ ભટોના સમુદાયથી પરિવેષ્ટિત થઈને તે રાજમાર્ગ પર સ્થિત આવાસ સ્થાનથી પગપાળા જ રવાના થયો. તેની સાથે વિશાળ માનવસમૂહ પણ હતો. (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) આ સર્વથી વીંટળાયેલો તે સારથિ શ્રાવસ્તી નગરીના મધ્યમાર્ગ પર થઈને નીકળ્યો. (जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને તે જ્યાં કોષ્ઠક ચૈત્ય હતું અને તેમાં પણ જ્યાં કેશિકુમાર શ્રમણ હતા ત્યાં પહોંચ્યો. (केसिकुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव उट्ठाए जाव एवं वयासी) ત્યાં પહોંચીને તેણે કેશિકુમાર શ્રમણ પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળ્યો અને તેને હૃદયમાં ધારણ કર્યો. ધર્મોપદેશ સાંભળીને અને હૃદયમાં ધારણ કરીને તે આનંદવિભોર થઈ ગયો અને સંતુષ્ટ ચિત્તવાળો થઈ ગયો. યાવત્ તેનું હૃદય પ્રસન્નતાથી ઉભરાઈ ગયું

इदं महार्थं यावत् उपनय इति कृत्वा विसर्जितः तद् गच्छामि खलु अहं भदन्त ! श्वेतविकां नगरीम्। प्रासादीया खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी एवं दर्शनीया खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, अभिरूपा खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, प्रतिरूपा खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, समवसरत खलु भदन्त ! यूयं श्वेतविकां नगरीम् ॥सू० ११४॥

टीका—'तएण से' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिः अन्यदा कदाचित् 'महार्थं यावत्-यावत् शब्दात् 'महार्थं महार्हं विपुलं राजार्हम्' इति संग्राह्यते अर्थस्तेषां पूर्ववद्

मत्त होकर उत्पन्न मना यावत् वह स्वतः उठा और उठकर यावत् उसने इस प्रकार कहा—(एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रण्णा इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नयरिं) हे भदन्त ! मुझे जितशत्रु राजाने 'प्रदेशी राजा के पास हे चित्र ! तुम इस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत को ले जाओ' ऐसा कह कर विसर्जित किया है सो हे भदन्त ! मैं श्वेतविका नगरी को जा रहा हूं (पासाईया णं भंते ! सेयविया नयरी, एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया नयरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नयरी, पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नयरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नयरिं) हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी प्रासादीया है—हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी दर्शनीया है, हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी अभिरूप है, हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी प्रतिरूप है अतः हे भदन्त ! आप उस श्वेतविका नगरी में पधारें।

यावत् ते ऊभो थयो अने ऊभो थईने यावत् तेणे आ प्रमाणे कह्युं-(एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रण्णा इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नयरिं) हे भदन्त ! मने जितशत्रु राजाए प्रदेशी राजानी पासे आ भेट लईने जवा माटे आज्ञा आपी छे के हे चित्र तमे आ महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृतने प्रदेशी राजा पासे लई जाओ तो हे भदन्त ! हुं श्वेतविका नगरी तरफ जई रह्यो छुं (पासाईया णं भंते ! सेयविया नयरी एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया नयरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नयरी, पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नयरी समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नयरिं) हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी अभिरूप छे, हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी प्रतिरूप छे माटे हे भदन्त ! तमे श्वेतविका नगरीमां पधारो।

बोध्य इति, एतादृशं सज्जयति=कल्पयति, सज्जयित्वा चित्रं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-त्वं खलु हे चित्र ! श्वेतविकां नगरीं गच्छ, प्रदेशिनो राज्ञः समीपे इद महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय=प्रापय, मम=मत्कर्तृक पादग्रहणं=प्रणामं यथा भणित=यथोक्तम्-अवितथम्=यथार्थम् असंदिग्धम्=सुस्पष्टं वचनं च विज्ञापय=निवेदय, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा विसर्जितः । ततः खलु स चित्रः सारथिः जितशत्रुणा राज्ञा विसर्जितः=प्रदेशिराजसमीपे गन्तुम् आज्ञप्तः सन् महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृत गृह्णाति जितशत्रो राज्ञः अन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव राजमार्गमवगाढः=राजमार्गस्थितआवासः=प्रासादः तत्रैव उपागच्छति, तत् महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतं स्थापयति, स्थापयित्वा स्नातो यावच्छरीरः-'यावच्छरीर'-पदेन 'कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरः' इति संगृह्यते, अर्थस्त्वेषां पूर्ववद् बोध्यः, तथा-सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन युक्तः महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्तो महापुरुषवागुरापरिक्षिप्तश्च सन् राजमार्गमवगाढात् आवासात् निर्गच्छति । 'सकोरण्ट'-इत्यादि-पदानामर्थः पूर्ववद् बोध्यः। ततः श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं

टीकार्थ--इस सूत्र का मूलार्थ के ही अनुरूप है,-नवरं-'महत्थ जाव पाहुड' में जो यावत् पद आया है उससे 'महग्घ', महार्हं, विपुलं, राजार्हं' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदों का अर्थ यथास्थान लिखा जा चुका है--अतः वैसा ही समझना चाहिये. 'ण्हाए जाव सरीरे' मे जो यावत् पद आया है--उससे 'कृतबलिकर्मा, कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तः अल्पमहार्घाभरणालंकृत' इन पूर्वोक्त पदों का संग्रह हुआ है. इनका अर्थ पहिले के जैसा ही जानना चाहिये, हट्ठ जाव' में जो यावत् पद आया है उससे 'तुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौ-

---

टीकार्थ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ પ્રમાણે જ છે. "नवरं महत्थं जाव पाहुड" મા જે યાવત્ પદ છે તેથી 'महग्घ' 'महार्हं, विपुलं राजार्हं" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોનો અર્થ યથાસ્થાને સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. 'ण्हाए जाव सरीरे' મા જે યાવત્ પદ તેથી 'कृतबलिकर्मा, कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तः अल्पमहार्घाभरणालंकृत' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોનો અર્થ પહેલાની જેમ જ સમજવો જોઈએ "हट्ठ जाव' મા જે યાવત પદ છે તેથી "तुष्टचित्तानन्दितः,

इद महार्थं यावत् उपनय इति कृत्वा विसर्जितः तद् गच्छामि खलु अहं भदन्त ! श्वेतविकां नगरीम्। प्रासादीया खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी एवं दर्शनीया खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, अभिरूपा खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, प्रतिरूपा खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, समवसरत खलु भदन्त ! यूयं श्वेतविकां नगरीम् ॥सू० ११४॥

टीका—'तएण से' इत्यादि—

ततः खलु स जितशत्रुः राजा अन्यदा कदाचित् महार्थं यावत्—याव त्पदेन 'महार्थं महार्घं विपुलं राजार्हम्' इति संग्राह्यं अर्थस्तेषां पूर्ववद्

मत्त होकर उपसमे भगा यावत् वह स्वत उठा और उठकर यावत् उसने इस प्रकार कहा–(एवं खलु अह भंते ! जियसत्तुणा पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए त गच्छामि ण अहं भंते ! सेयविय नयरिं) हे भदन्त ! मुझे जितशत्रु राजाने 'प्रदेशी राजा के पास हे मित्र ! तुम इस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत को ले जाओ' ऐसा कह कर विसर्जित किया है सो हे भदन्त ! मैं श्वेताम्बिका नगरी को जा रहा हूं (पासाईया ण भंते ! सेयविया नयरी, एव दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया नयरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नयरी, पडिरूवा णं भंते ! सेयविया णयरी, समोसरह णं भंते! तुब्भे सेय विय नयरिं) हे भदन्त ! श्वेताम्बिका नगरी प्रासादीया है–हे भदन्त ! श्वेताम्बिका नगरी दर्शनीया है, हे भदन्त ! श्वेताम्बिका नगरी अभिरूप है, हे भदन्त ! श्वेताम्बिका नगरी प्रतिरूपा है अतः हे भदन्त ! आप उस श्वेताम्बिका नगरी में पधारें।

યાવત્ તે ઊભો થયો અને ઊભો થઈને યાવત્ તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું–(एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए त गच्छामिण अहं भंते ! सेय विय नयरिं) હે ભદંત ! મને (જિતશત્રુ રાજાએ પ્રદેશી રાજાની પાસે આમ કહીને અહીં મોકલ્યો છે કે હે મિત્ર તમે આ મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ પ્રાભૃતને પ્રદેશીરાજા પાસે લઈ જાઓ' તો હે ભદંત ! હું શ્વેતામ્બિકા નગરી તરફ જઈ રહ્યો છું (पासाइया णं भंते ! सेयविया नयरी एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया नयरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी, पडिरूवा णं भंते ! सेयविया णयरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयविय नयरिं) હે ભદંત ! શ્વેતામ્બિકા નગરી અભિરૂપા છે, હે ભદંત ! શ્વેતામ્બિકા નગરી પ્રતિરૂપા છે. માટે હે ભદંત ! તમે શ્વેતામ્બિકા નગરીમાં પધારો

मूलम्—तएणं से केसी कुमारसमणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तएण से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थ जाव विसज्जिए, तं चेव जाव समोसरह णं भंते! तुब्भे सेयंवियं णयरिं। तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चंपि तच्चंपि एव वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एव वयासी—चित्ता। से जहानामए वणसंडए सिया किण्हे किण्हो भासे जाव पडिरूवे। से णूणं चित्ता! से वणसंडे वहूणं दुपयच-उप्पयसियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे? हंता! अभिगमणिज्ज। तंसि च णं चित्ता! वणसंडंसि वहवे भिलुंगा नाम पावसउणा परिवसन्ति, जेणं तेसिं वहूण दुपयचउप्पयसियपसु-पक्खिसरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति! से णूणं चित्ता! से वणसंडे तेसि णं वहूणं दुपय जाव सरीसिवाणं अभिगमणिज्जे? णो इणट्ठे समट्ठे! कम्हा? भंते! सोवसग्गे। एवामेव चित्ता! तुज्झंपि सेयंवियाए णयरीए पएसी नामं राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तइ। तं कहंणं अहं चित्ता! सेयंवियाए नयरीए समोसरिस्सामि? ॥सू० ११५॥

छाया—ततःखलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना एवमुक्तः सन चित्रस्य सारथेरेतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, तूष्णीकः सन्तिष्ठते। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं द्वितीयमपि तृतीयमपि

यत्रैव केशीकुमारश्रमणस्तत्रैव उपागच्छति, केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके=समीपे धर्मं श्रुत्वा=सामान्येन आकर्ण्य निशम्य=विशेषतो हृदयधार्यं हृष्टः यावद् हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो हर्षवशविसर्पद्धृदय अर्थ स्त्वेषां पूर्ववद् बोध्यः, उत्थया=उत्थानशक्त्या यावत् यावत्पदेन 'उत्तिष्ठति,उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा'-इति संग्राह्यम्, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-'एवं खलु मम भदन्त ! जितशत्रुणा राज्ञा' 'प्रदेशिनो राज्ञः समीपे इदं महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतम् उपनय' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा विसर्जितः। तत्=तस्मात् कारणात् खलु भदन्त ! गच्छाम्यहं श्वेतविकां नगरीम्। हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु प्रासादीया=दर्शकजनानां मन प्रमोदजनिकाऽस्ति। एवम्=तथा हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु दर्शनीया=प्रेक्षणीयाऽस्ति। हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु अभिरूपा=सर्वकालरमणीयाऽस्ति। हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु प्रतिरूपा=सर्वोत्तमाऽस्ति। अतो हे भदन्त ! यूयं श्वेतविकां नगरीं समवसरत=आगच्छत-इति ॥ सू० ११४ ॥

मनस्यितो, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः' इन पदों का संग्रह हुआ है इनका अर्थ पहिले जैसा ही जानना चाहिये, 'उट्ठाए जाव' में आगत यावत्पद से उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, वन्दते, नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा' इस पाठ का संग्रह हुआ है। दर्शकजनों के मन में प्रमोदजनक है यह प्रासादीय शब्द का अर्थ है। देखने योग्य है यह दर्शनीय शब्द का अर्थ है-सर्वकाल रमणीय है यह अभिरूप शब्द का अर्थ है-सर्वोत्तम है यह प्रतिरूप शब्द का अर्थ है।सू, ११४।

प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितो, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોનો અર્થ પહેલાંની જેમજ સમજવો જોઈએ. 'उट्ठाए जाव' આ જે યાવત્ પદ આવેલું છે તેથી "उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्व आदक्षिणं प्रदक्षिणं करोति वन्दते नमस्यति वन्दित्वा, नमस्यित्वा' આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે દર્શકો માટે જે પ્રમોદજનક છે-એવો પ્રાસાદીય શબ્દનો અર્થ થાય છે દર્શનીય શબ્દનો અર્થ છે. જોવા યોગ્ય. અભિરૂપ શબ્દનો અર્થ થાય છે જે સર્વ કાળ રમણીય છે તે પ્રતિરૂપ શબ્દનો અર્થ સર્વોત્તમ થાય છે ॥સૂ૦ ૧૧૪॥

(मूलम्—तएणं से केसी कुमारसमणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं जाव विसज्जिए, तं चेव जाव समोसरह णं भंते! तुब्भे सेयंवियं णयरिं। तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता। से जहानामए वणसंडए सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे। से णूणं चित्ता! से वणसंडे वहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे? हंता! अभिगमणिज्जे। तंसि च णं चित्ता! वणसंडंसि वहवे भिलुंगा नाम पावसउणा परिवसंति, जेणं तेसिं वहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति! से णूणं चित्ता! से वणसंडे तेसि णं वहूणं दुपय जाव सरीसिवाणं अभिगमणिज्जे? णो इणट्ठे समट्ठे! कम्हा? भंते! सोवसग्गे। एवामेव चित्ता! तुज्झंपि सेयंवियाए णयरीए पएसी नामं राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तइ। तं कहंणं अहं चित्ता! सेयंवियाए नयरीए समोसरिस्सामि? ॥सू० ११५॥)

छाया—ततःखलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना एवमुक्तः सन चित्रस्य सारथेरेतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, तूष्णीकः सन्तिष्ठते। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं द्वितीयमपि तृतीयमपि

एवमवादीत्-एवं खलु भदन्त ! जितशत्रुणा राज्ञा प्रदेशिनो राज्ञ इदं महार्घं यावद् विसर्जित, तदेव यावत् समवसरत खलु भदन्त! यूय श्वेत विकां नगरीम्। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना द्वितीय

तएण से केसी कुमारसमणे' इत्यादि।

(सूत्रार्थ-(तएण) इसके बाद (से केसीकुमारसमणे) उन केशिकुमार श्रमणसे जब चित्र सारथी ने ऐसा कहा-तब (चित्तस्स सारहिस्स) चित्र सारथी का (एयमट्ठ णो आढाइ, णो परिजाणाइ, तुसिणीए स चिट्ठइ) इस अर्थको आदर नहीं दिया, उसे विचार का विषय नहीं बनाया किन्तु चुपचाप ही रहे (तएण से चित्ते सारही केसिकुमारसमण दोच्चं पि तच्चं पि एव वयासी) इसके बाद चित्र सारथीने पुनःदुबारा भी और तिबारा भी उन केशिकुमारश्रमण से ऐसा ही कहा कि (एवं खलु भंते! जिय-सत्तुणा रण्णा पयेसिस्स रण्णो इम महत्थ जाव विसज्जिए त चेव जाव समोसरह ण भंते! तुब्भे सेयवियं नयरिं) हे भदन्त! जितशत्रु राजा के द्वारा मैं ऐसा कहा गया हूं कि हे चित्र! तुम इस महार्घादि विशेषणों वाले प्राभृत (भेट) को लेकर प्रदेशीराजा के पास जाओ सो मैं यहां आ रहा हूं-यह श्वेतांविका नगरी दर्शनीय आदि विशेषणों वाली है अतः यहां पधारे (तएण से केसीकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चं पि तच्चं पि एव

'तएण से केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थः—(तएण) त्यार पछी (से केसीकुमारसमणे) ते केशिकुमार श्रमणने ज्यारे चित्रसारथिए आ प्रमाणे कह्युं त्यारे (चित्तस्स सारहिस्स)चित्र सारथिना (एयमट्ठं णो आढाइ, णो परिजाणाइ, तुसिणीए स चिट्ठइ) आ अर्थने आदर आप्यो नहि तेना कथन पर कोई पण जातनो विचार कर्यो नहि तेओ आ बधुं सांभळीने मौन ज रह्या (तएण से चित्ते सारही केसिकुमारसमण दोच्चंपि तच्चंपि एव वयासी) त्यार बाद चित्र सारथिए बीजी वखत अने त्रीजी वखत पण केशिकुमार श्रमणने आ प्रमाणे ज कह्युं के (एवं खलु भंते! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं जाव विसज्जिए त चेव जाव समोसरह ण भंते! तुब्भे सेयवियं नयरिं) हे भदन्त! जितशत्रु राजाए मने आ प्रमाणे कह्युं छे के हे चित्र! तमे आ महार्घादि विशेषणोवाळी भेटने लईने प्रदेशी राजानी पासे जाओ. एथी हुं त्यां जई रह्यो छुं ते श्वेतांबिका नगरी दर्शनीय वगेरे विशेषणोवाळी छे तेथी तमे पण त्यां पधारो. (तएण से केसिकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे

मपि तृतीयमपि एवमुक्तः सन चित्रं सारथिम् एवमवादीत्-चित्र ! स यथा-नामको वनषण्डः स्यात् कृष्णः कृष्णावभासो यावत्प्रतिरूपः। अथ नूनं चित्र ! स वनषण्डो बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणाम् अभिगमनीय ? हन्त ! अभिगमनीयः। तस्मिंश्च खलु चित्र ! वनषण्डे बहवो भिल्लका नाम पापशाकुनिकाः परिवसन्ति। ये खलु बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां स्थितानामेव मांसशोणितम् आहारयन्ति। अथ नूनं चित्र ! स

वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब इस प्रकार दुबारा तिबारा भी चित्र सारथी के द्वारा विनन्ति किये जानेपर केशिकुमार श्रमणने उन चित्र सारथी से ऐसा कहा (चित्ता ! से जहानामए वणसंडए सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे) हे चित्र ! जैसे कोई एक वनषंड हो और वह कृष्ण-कृष्ण वर्णवाला हो, तथा कृष्ण जैसा दिखता हो (से णूणं चित्ता से वणसंडे बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे) तो हे चित्त ! कहो वह अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु पक्षी और सरीसृप सर्प इन सबके गमन के योग्य होता है न ? (हंता अभिगमणिज्जे) हां भदन्त ! वह इनके गमन के योग्य होता है. (तंसि च णं चित्ता वणसंडंसि बहवे भिल्लगा पावसउणा परिवसंति) यदि उस वनखंड मे हे चित्र ! अनेक पाविष्ठ सील लोग जो कि पारधी होते है रहते हैं (जे णं तेसिं बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारंति) जो कि वहां रहे हुए उन बहुत से द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी और सरीसृपों के मांस शोणित

चित्तं सारहिं एवं वयासी) त्यारे ते प्रमाणे बीजी वखत अने त्रीजी वखत कहेली चित्रसारथिनी वात साभळीने तेने आ प्रमाणे कह्युं (चित्ता ! से जहानामए वणसंडए सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे) हे चित्र ! जेम कोई वनखंड होय अने ते कृष्णवर्णवाळो होय, तेमज कृष्ण जेवो लागतो होय (से णूणं चित्ता से वणसंडे बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे) तो हे चित्र ! कहो ते वन घणा द्विपदो, चतुष्पदो, मृगो, पशुओ पक्षीओ अने सरीसृपो आ बधाना माटे गमन करवा योग्य होय के नहि ?
अभिगमणिज्जे) हा भदंत ! ते तेमना माटे गमन योग्य गणाय छे (तंसि च णं चित्ता वणसंडंसि बहवे भिल्लगा पावसउणा परिवसंति) अने ते वनखंडमां हे चित्र ! जे घणा पापिष्ठ शिकारी भीलो रहेता होय (जे णं तेसिं बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति) अने तेओ त्यां रहेनारा ते घणा द्विपदो चतुष्पदो, मृगो पशुओ अने सरीसृपोना

धनपण्डस्तेषां खलु बहूना द्विपद् यावत्-सरीसृपाणाम् अभिगमनीयः? नो अयमर्थः समर्थः । कस्मात्? भदन्त! सोपसर्गः? एवमेव चित्र! युष्माकमपि श्वेतविकायां नगर्यां प्रदेशी नाम राजा परिवसति, अधार्मिको यावत्, नो सम्यक्करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति । तत् कथं खलु अहं चित्र! श्वेतविकायां नगर्यां समवसरिष्यामि ॥सू० ११५॥

टीका—'तएण से' इत्यादि—

ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना एवम्=उक्तप्रकारेण उक्तः सन् चित्रस्य सारथेः एतमर्थं ='यूयं श्वेतविकायां नगर्यां

का आहार करते हों, क्या ऐसी स्थिति में (से णूण चित्ता! से वण संडे तेसि बहूणं दुपय जाव सरीसिवाण अभिगमणिज्जे? हे चित्र! वह वनषण्ड उन अनेक द्विपद यावत् सरीसृपों के लिये अभिगमनीय हो सकता है? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! ऐसी स्थिति में वह उनके लिये अभिगमनीय नहीं हो सकता है। (कम्हा) हे चित्र! वह उनके लिये अभिगमनीय-प्रवेश के योग्य-क्यों नहीं हो सकता है? (सोवसग्गे) क्यों कि हे भदन्त! वह वनषण्ड विघ्नसहित है।(एवामेव चित्ता! तुज्झ पि सेयवियाए णयरीये पएसी नाम राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तइ--त कहं चित्ता सेयवियाए नयरीए समोसरिस्सामि) इसी तरह से हे चित्र! तुम्हारे लिये श्वेतविका नगरी में प्रदेशी राजा रहता है वह अधार्मिक है यावत् प्रजाजनों से कर लगाकर भी उनका अच्छी तरह से पालन पोषण नहीं करता है। तो हे चित्र! उस श्वेतविका नगरी में हम लोग कैसे आवे?

ગાય અને શોણિતનો આહાર કરતા હોય તો શું એવી પરિસ્થિતિમાં (से णूण चित्ता! से वणसंडे तेसिं बहूणं दुपय जाव सरिसिवाणं अभिगमणिज्जं?) હે ચિત્ર! તે વનખંડ તે ઘણાં દ્વિપદો યાવત્ સરિસૃપો માટે અભિગમનીય અર્થાત્ વિચરણ કરવા યોગ્ય-કહી શકાય? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત! એવી સ્થિતિમાં તે તેમના માટે અભિગમનીય થઈ શકે તેમ નથી (कम्हा) હે ચિત્ર! તે તેમના માટે અભિગમનીય-વિચરણ કરવા યોગ્ય કેમ નથી? (सोवसग्गे) કેમકે હે ભદંત! તે વનખંડ વિઘ્ન સહિત છે (एवामेव चित्ता! तुज्झ पि सेयवियाए णयरीए पएसीनाम राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तइ त कहं णं अहं चित्ता सेयवियाए नयरीए समोसरिस्सामि) આ પ્રમાણે જ હે ચિત્ર! તમારે માટે શ્વેતાંબિકા નગરીમાં પ્રદેશી રાજા રહે છે તે અધાર્મિક છે યાવત્ પ્રજા પાસેથી કર-વેરા લઈને પણ તેમનું પાલન-પોષણ સારી રીતે કરતો નથી તો એવી સ્થિતિમાં હું શ્વેતાંબિકા નગરીમાં કેવી રીતે આવું?

समवसरत'-इत्य रूपम् अर्थम् नो आद्रियते=नो आदरविषयत्वेन हृदिकरोति. अतएव--नो परिजानाति=विचारविषयत्वेन एतमर्थं न स्वीकरोति, तत एव तूष्णीकः=अवलम्बितमौनभावः सन सन्तिष्ठते। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं द्वितीयमपि तृतीयमपि द्वित्रिवारम् एवम् अवादीत् -एवं खलु अह भदन्त ! जितशत्रुणा राज्ञा-इत्यादि-समवसरत खलु भदन्त ! यूयं श्वेतविकां नगरीम् इत्यन्तम्। वाक्यं पूर्वसूत्रे गतम्-अस्यार्थस्तत एव बोध्यः-इति। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्विकृत्वोऽपि त्रिकृत्वोऽपि एवमुक्तः सन् चित्रं सारथिम्-एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-स यथानामको वनषण्डः स्यात्, कृष्णः=कृष्णवर्णः कृष्णावभासः-कृष्ण इव अवभासते न तु वस्तुतः कृष्ण एव। यावत्-यावत्पदेन-'नीलो नीलावभासो हरितो हरितावभासः शीतः शीतावभासः स्निग्धः स्निग्धावभासः तीव्रः तीव्रावभासः कृष्णः कृष्णच्छायो नीलो नीलच्छायो हरितो हरितच्छायः शीतःशीतच्छायः स्निग्धःस्निग्धच्छायः तीव्रः तीव्रच्छायः घनकटितकटच्छायो रम्यो महामेघनिकुरम्बभूतः प्रासादीयो दर्शनीयः अभिरूपः' इति संग्राह्यम्। तथा-प्रतिरूपः। अर्थस्त्वेषामौपपातिकसूत्रस्यास्मत्कृतायां पीयूषवर्षिणीटीकायामवलोकनीयः। अथ नूनं चित्र! वनषण्डो

टीकार्थ इसका इस मूलार्थ के जैसा ही है-नवर - किण्होभासे जाव पडिरूवे)मे आया हुआ यावत पद से यहां 'नीलो, नीलावभासो, हरितो, हरितावभासः, शीतः, शीतावभासः स्निग्ध स्निग्धावभासः, तीव्रः, तीव्रावभासः, कृष्णः, कृष्णच्छायो, नीलो, नीलच्छायो, हरितो, हरितच्छायः, शीतः, शीतच्छायः, स्निग्ध. स्निग्धच्छायः, तीव्रः, तीव्रच्छायः, घन कटितकटच्छायो, रम्यो, महामेघनिकुरम्बभूतः प्रासादीयो, दर्शनीयः अभिरूपः' यह पाठ संगृहीत हुआ है। इन पदों का अर्थ औपपातिकसूत्र की पीयूषवर्षिणी टीका में हमने स्पष्ट किया है अतः वहीं से जान लेना

ટીકાર્થ —આનો મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે 'नवर' 'किण्होभासे जाव पडिरूवे' મા જે યાવત્ પદ આવેલુ છે તેથી અહીં "नीलो, नीलावभासो, हरितो, हरितावभासः, शीतः शीतावभासः, स्निग्धः, स्निग्धावभासः, तीव्रः, तीव्राव-भासः, कृष्णः, कृष्णच्छायो, नीलो, नीलच्छायो, हरितो, हरितच्छायः, शीतः, शीतच्छायः स्निग्धः स्निग्धच्छायः, तीव्रः तीव्रच्छायः, घनकटितकटच्छायो, रम्यो, महामेघनिकुरम्बभूतः प्रासादीयो, दर्शनीयः, अभिरूपः" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે આ પાઠનો અર્થ અમે 'ઔપપાતિક સૂત્ર'ની પીયૂષવર્ષિણી ટીકામાં કર્યો છે

वनषण्डस्तेषां खलु बहूनां द्विपद् यावत्-सरीसृपाणाम् अभिगमनीयः? नो अयमर्थः समर्थः। कस्मात्? भदन्त! सोपसर्गः? एवमेव चित्र! युष्माकमपि श्वेतविकायां नगर्यां प्रदेशी नाम राजा परिवसति, अधार्मिको यावत्, नो सम्यक्करभरवृत्तिं प्रवर्तयति। तत् कथं खलु अहं चित्र! श्वेतविकायां नगर्यां समवसरिष्यामि ॥सू० ११५॥

टीका—'तए णं से' इत्यादि—

ततः खलु स केशीकुमारश्रमण चित्रेण सारथिना एवमुक्तप्रकारेण उक्तः सन् चित्रस्य सारथेः एतमर्थं='एवं श्वेतविकायां नगर्यां

का आहार करते हों, क्या ऐसी स्थिति में (से णूणं चित्ता! से वणसंडे तेसिं बहूणं दुपय जाव सरीसिवाणं अभिगमणिज्जे? हे चित्र! वह वनषण्ड उन अनेक द्विपद यावत् सरीसृपों के लिये अभिगमनीय हो सकता है? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! ऐसी स्थिति में वह उनके लिये अभिगमनीय नहीं हो सकता है। (कम्हा) हे चित्र! वह उनके लिये अभिगमनीय-प्रवेश के योग्य-क्यों नहीं हो सकता है? (सोवसग्गे) क्यों कि हे भदन्त! वह वनषण्ड विघ्नसहित है। (एवामेव चित्ता! तुब्भं पि सेयवियाए णयरीए पएसी नाम राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ—तं कहं चित्ता सेयवियाए नयरीए समोसरिस्सामि) इसी तरह से हे चित्र! तुम्हारे लिये श्वेतविका नगरी में प्रदेशी राजा रहता है वह अधार्मिक है यावत् प्रजाजनों से कर टेक्स लेकर भी उनका अच्छी तरह से पालन पोषण नहीं करता है। तो हे चित्र! उस श्वेतविका नगरी में हम लोग कैसे आवें)

માંસ અને શોણિતનો આહાર કરતા હોય તો શું એવી પરિસ્થિતિમાં (से णूणं चित्ता! से वणसंडे तेसिं बहूणं दुपय जाव सरिसिवाणं अभिगमणिज्जे?) હે ચિત્ર! તે વનખંડ તે ઘણાં દ્વિપદો યાવત્ સરિસૃપો માટે અભિગમનીય અર્થાત્ વિચરણ કરવા યોગ્ય-કહી શકાય? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત! એવી સ્થિતિમાં તે તેમના માટે અભિગમનીય થઈ શકે તેમ નથી (कम्हा) હે ચિત્ર! તે તેમના માટે અભિગમનીય-વિચરણ કરવા યોગ્ય કેમ નથી? (सोवसग्गे) કેમકે હે ભદંત! તે વનખંડ વિઘ્ન સહિત છે (एवामेव चित्ता! तुब्भं पि सेयवियाए णयरीए पएसीनाम राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ तं कहं णं अहं चित्ता सेयवियाए णयरीए समोसरिस्सामि) આ પ્રમાણે જ હે ચિત્ર! તમારે માટે શ્વેતાંબિકા નગરીમાં પ્રદેશીરાજા રહે છે તે અધાર્મિક છે યાવત્ પ્રજા પાસેથી કર-ટેક્સ લઈને પણ તેમનું પાલન-રક્ષણ સારી રીતે કરતો નથી તો એવી સ્થિતિમાં હું શ્વેતાંબિકા નગરીમાં કેવી રીતે જઈ શકું છું?

खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति, पाडिहारिएणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति। तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी अविआइ चित्ता! जाणिस्सामो ॥ सू० ११६ ॥)

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्-किं खलु भदन्त! युष्माकं प्रदेशिना राज्ञा कर्तव्यम्? सन्ति खलु भदन्त! श्वेतविकायां नगर्याम् अन्ये बहव ईश्वरतलवर-यावत्सार्थवाहप्रभृतयः, ये खलु देवानुप्रियं वन्दिष्यन्ति नमस्यिष्यन्ति यावत् पर्युपासिष्यन्ते, विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं प्रतिलम्भयिष्यन्ति, प्रतिहारिकेण पीठ

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

(सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं एवं वयासी) उस चित्र सारथिने केशिकुमारश्रमण से ऐसा कहा—(किं णं भंते! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं) हे भदन्त! आपको प्रदेशी राजा से क्या तात्पर्य है (सेयं वियाए नयरीए अन्ने बहवे ईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति) श्वेतांबिका नगरी में और भी बहुत से ईश्वर तलवर यावत् सार्थवाह आदि है जो आप देवानुप्रिय को वन्दना करेंगे, नमस्कार करेंगे यावत् पर्युपासना करेंगे एवं विपुल, अशन से पान से खादिम से और स्वादिम से आप को प्रतिलाभित करेंगे। (पडिहारेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति) एवं समर्पणीय

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि.

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ते चित्र सारथिએ કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (किं णं भंते! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं) હે ભદંત! આપશ્રીને પ્રદેશી રાજા સાથે શી નિસ્બત છે? (सेय वियाए नयरीए अन्ने बहवे ईसरतलवरजाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति) શ્વેતાંબિકા નગરીમાં બીજા ઘણા ઈશ્વર, તલવર યાવત્ સાર્થવાહો વગેરે છે કે જે આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન કરશે નમસ્કાર કરશે યાવત પર્યુપાસના કરશે અને વિપુલ અશનથી, પાનથી, ખાદીમથી અને સ્વાદિમથી આપશ્રીને પ્રતિલાભિત કરશે. (पडिहारेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति) અને [illegible]ર્પણીય પીઠ ફલક શય્યા

बहूनां द्विपद-चतुष्पद-मृग-पशु-पक्षि-सरीसृपाणाम् अभिगमनीयः=गन्तुं योग्यो भवत ?, इत्थं केशिकुमारश्रमणस्य वचनं श्रुत्वा चित्रः प्राह-हन्त ! अभिगमनीयः=गन्तुं योग्यो भवत्येष वनषण्ड इति। पुनः केशिकुमारश्रमणः पृच्छति-हे चित्र ! तस्मिन्= पूर्वोक्ते च खलु वनषण्डे बहवो भिलुङ्गा'=भिलुङ्गानामकाः 'नाम' इति संभावनायां पापशाकुनिकाः= पापिष्ठा व्याधाः परिवसन्ति, ये खलु तेषां बहूनां द्विपद्चतुष्पदमृगपशु-पक्षिसरीसृपाणां स्थितानामेव मांसशोणितं=मांसानि शोणितानि च आहा-रयन्ति=भुञ्जते। अथ नूनं चित्र ! स वनषण्डः तेषां खलु बहूनां द्विपद्-यावत् सरीसृपाणाम् सर्वेषाम् अभिगमनीयो भवत? चित्रःप्राह नायमर्थः=द्विपदादीनां तदनुप्रवेशरूपोऽर्थः नो समर्थ =न योग्यः, स वनषण्डस्तेषां प्रवेष्टुं न योग्य इति भावः। केशी पृच्छति-कस्मात्=कस्मात् कारणात् स वनषण्डः प्रवेष्टुं न योग्य ! चित्र प्राह-हे भदन्त ! स वनषण्डः=विघ्नसहितः। ततः केशीप्राह-हे चित्र ! यथा स वनषण्डस्तेषां द्विपदादीनां प्रवेष्टुं न योग्यः, एवमेव= अनेन प्रकारेणैव श्वेतविका नगर्यपि प्रवेष्टुं न योग्या। तत्र श्वेतविकायां नगर्यां पुनः प्रदेशी नाम राजा परिवसति, अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्तयति। यावत्पदेन-अधार्मिकः अधर्मानुग इत्यादि पदानि सङ्ग्राह्याणि, तानि च-एकशततमसूत्रे विलोकनीयानि। अर्थोऽपि तत्रैव विलो-कनीय। तत् कथं खलु अहं चित्र ! श्वेतविकायां नगर्यां समवसरि-ष्यामि=आगमिष्यामि ? ॥ सू० ११५ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी किं णं भंते ! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं ? अत्थि णं भंते ! सेयविया नगरीए अन्ने बहवे ईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिइयो जे णं देवाणुप्पिय वंदिस्संति जाव पज्जुवासिस्सति विउलं असणं पाण

आदिये 'अहम्मिए जाव' में आया हुआ यावत् पदसे 'अधर्मिष्ठः अधर्मानुग' इत्यादि पदों का सग्रह किया गया है। इन पदोंका अर्थ १०१ सूत्र में लिखा गया है ॥सू० ११० ॥

એથી જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી અર્થ જાણી લેવો જોઈએ "અહમ્મિએ જાવ" માં જે યાવત્ પદ છે તેથી "અધાર્મિક, અધર્માનુગઃ" વગેરે પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોનો અર્થ ૧૦૧માં સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે ॥૧૧૫॥

खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति, पाडिहारिएणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति। तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी अविआइं चित्ता! जाणिस्सामो ॥ सू० ११६ ॥)

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्-किं खलु भदन्त! युष्माकं प्रदेशिना राज्ञा कर्त्तव्यम्? सन्ति खलु भदन्त! श्वेतविकायां नगर्याम् अन्ये बहव ईश्वरतलवर-यावत्सार्थवाहप्रभृतयः, ये खलु देवानुप्रियं वन्दिष्यन्ति नमस्यिष्यन्ति यावत् पर्युपासिष्यन्ते, विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं प्रतिलम्भयिष्यन्ति, प्रतिहारिकेण पीठ-

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

(सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही केसिंकुमारसमणं एवं वयासी) उस चित्र सारथिने केशिकुमारश्रमण से ऐसा कहा—(किं णं भंते! तुभं पएसिणा रन्ना कायव्वं) हे भदन्त! आपको प्रदेशी राजा से क्या तात्पर्य है (सेयंवियाए नयरीए अन्ने बहवे ईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति) श्वेतांविका नगरी में और भी बहुत से ईश्वर तलवर यावत् सार्थवाह आदि हैं जो आप देवानुप्रिय को वन्दना करेंगे, नमस्कार करेंगे यावत् पर्युपासना करेंगे एवं विपुल, अशन से पान से खादिम से और स्वादिम से आप को प्रतिलाभित करेंगे। (पडिहारेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति) एवं समर्पणीय

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि.

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ते चित्र सारथिए केशिकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं के (किं णं भंते! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं) हे भदंत! आपश्रीने प्रदेशी राजा साथे शी निस्बत छे? (सेयवियाए नयरीए अन्ने बहवे ईसरतलवरजाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति) श्वेतांबिका नगरीमां बीजा घणा ईश्वर, तलवर यावत् सार्थवाहो वगेरे छे के जे आप देवानुप्रियने वंदन करशे नमस्कार करशे यावत् पर्युपासना करशे. अने विपुल अशनथी, पानथी, खादिमथी अने स्वादिमथी आपश्रीने प्रतिलाभित करशे. (पडिहारेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति) अने समर्पणीय पीठ फलक शय्या

फलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयिष्यन्ति । ततः खलु स केशीकुमारश्रमण चित्रं सारथिमेवमवादीत्-अपि च चित्र । ज्ञास्यामः ॥ सू० ११६ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि--

टीका-- ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणम् एवम् वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-किं खलु भदन्त । युष्माकं प्रदेशिना राज्ञा कर्त्तव्यम्=प्रदेशिनो राज्ञः सकाशात् भवतां नास्ति किञ्चित् प्रयोजनमित्यर्थः॥ हे भदन्त । श्वेतम्बिकायां नगर्यां खलु अन्ये बहवः ईश्वरतलवर यावत्सार्थवाहप्रभृतयः सन्ति । अत्र 'यावत्'-पदेन- 'माडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठि-सेनापति-' इति सङ्ग्राह्यम् । ये ईश्वरादयः खलु देवानुप्रिय भवितुं=यन्ते=वन्दिष्यन्ति नमस्यन्ति=प्रणता भविष्यन्ति, यावत् यावत्पदेन—'सत्कारयिष्यन्ति सम्मानयिष्यन्ति, कल्याण मङ्गलं दैवतं चैत्यम्-इति सङ्ग्राह्यम् । त —सत्कारयिष्यन्ति अभिमुखगमनादिना, सम्मानयिष्यन्ति—वसतिप्रदानादिना, तथा-'कल्याण=कल्याणस्वरूपम्, मङ्गलं=मङ्गलस्वरूपम् देवतम्-

पीठफलकशय्यासंस्तारक ग्रहण करने के लिये आपसे प्रार्थना करेंगे । (तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब केशीकुमारश्रमणने चित्र सारथीसे इस प्रकार कहा (अवि आइ चित्ता! जाणिस्सामो) हे चित्र । विचार करेंगे।

टीकार्थ स्पष्ट है नवर 'तलवर जाव सत्थवाह' में आगत यावत् पदसे यहां 'माडंबिक-कौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति' पाठ का ग्रहण हुआ है। 'णम सिस्सति जाव पज्जुवासंति' में आगत यावत् पद से 'सत्कारयिष्यन्ति सम्मानयिष्यन्ति, कल्याण मंगलं दैवत चैत्यम्' इस पाठ का संग्रह हुआ है। अभिमुखगमनादि द्वारा जो सन्मान प्रदर्शित किया जाता है उसका नाम सत्कार है वसति आदि के देने से जो भक्ति प्रदर्शित की जाती है उसका

સંસ્તારક ગ્રહણ કરવા આપને વિનંતી કરશે. (त एण से केसीकुमारसमणे चित्त सारहिं एवं वयासी) ત્યારે કેશિકુમાર શ્રમણે ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (अविआइ चित्ता जाणिस्सामो) હે ચિત્ર! વિચાર કરીશ!

ટીકાર્થ —સ્પષ્ટ જ છે નવરં "तलवर जाव सत्थवाह" માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે, તેથી અહીં 'माडंबिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति' પાઠનો સંગ્રહ થયો છે 'णम सिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति' માં આવેલા યાવત પદથી 'सत्कारयिष्यन्ति, सम्मानयिष्यन्ति, कल्याण मंगलं दैवतं चैत्यम्" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે અભિમુખ ગમન-વગેરે વડે જે સન્માન આપવામાં આવે છે તેનું નામ સત્કાર છે. નિવાસ માટે સ્થાન વગેરે આપીને જે ભક્તિ પ્રદર્શિત કરવામાં આવે

धर्मदेवस्वरूपम्, चैत्यं=चितिः=विशिष्टज्ञान, तया युक्त सर्वथा विशिष्टज्ञानवन्त-मित्यर्थः, इति बुद्धया पर्युपासिष्यन्ते=सेविष्यन्ते। तथा-विपुलं=प्रचुरम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं प्रतिलम्भयिष्यन्ति=प्रदास्यन्ति। तथा-प्रातिहारिकेण=पुनः समर्पणीयेन पीठफलकशय्यासंस्तारकेण-पीठफलकादयः प्राग्व्याख्याताः, तेषां समाहारस्तेन उपनिमन्त्रयिष्यन्ति-प्रातिहारिकं पीठफलकशय्यासंस्तारकं च ग्रहीतुं भवन्तं प्रार्थयिष्यन्ति-इति। ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिम् एवम्=अनेन प्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-'अविआइ'-अपि च चित्र! ज्ञास्यामः=विचारयिष्यामः इति ॥ सू० ११६ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वदइ नमंसइ, केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, जहा सेयंवियाए णयरीए णिग्गच्छइ तहेव जाव वसमाणे कुणालाजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव केइयअद्धे जेणेव सेयविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उज्जाणपालए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी- जया णं देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह, पडिहारिएणं पीढ-फलग जाव उवनिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह।

नाम सन्मान है. श्वेतांबिका नगरी के लोग आप कल्याणस्वरूप है, मंगलस्वरूप है धर्म-देवस्वरूप हैं तथा चैत्य विशिष्ट ज्ञानवान् ऐसा मानकर आपकी सेवा करेंगे। सू. ११६।

छे तेहु नाम सन्मान छे श्वेतांबिका नगरीना लोको आपश्री ते कल्याण स्वरूप, मंगळस्वरूप तेमज चैत्यविशिष्ट ज्ञानवान् मानीने आपनी सेवा करशे. ॥सू. ११६॥

फलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयिष्यन्ति । ततः खलु स केशीकुमारश्रमण चित्रं सारथिमेवमवादीत्-अपि च चित्र ! ज्ञास्यामः ॥ सू० ११६ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि--

टीका-- ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणम् एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-किं खलु भदन्त ! युष्माकं प्रदेशिना राज्ञा कर्तव्यम्=प्रदेशिनो राज्ञः सकाशात् भवतां नास्ति किञ्चित् प्रयोजनमित्यर्थः ॥ हे भदन्त ! श्वेतम्बिकायां नगर्यां खलु अन्ये बहवः ईश्वरतलवर यावत्सार्थवाहप्रभृतयः सन्ति । अत्र 'यावत्'-पदेन- माडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठि-सेनापति-' इति संग्राह्यम् । ये ईश्वरादयः खलु देवानुप्रिय वन्दिष्यन्ते=स्तोष्यन्ति नमस्यन्ति=प्रणता भविष्यन्ति, यावत् यावत्पदेन--'सत्कारयिष्यन्ति सम्मानयिष्यन्ति, कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यम्-इति संग्राह्यम् । तत्र —सत्कारयिष्यन्ति अभिमुखगमनादिना, सम्मानयिष्यन्ति—वसतिप्रदानादिना, तथा-'कल्याणं=कल्याणस्वरूपम्, मङ्गलं=मङ्गलस्वरूपम् दैवतम्-

पीठफलकशय्यासंस्तारक ग्रहण करने के लिये आपसे प्रार्थना करेंगे। (तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब केशीकुमारश्रमणने चित्र सारथीसे इस प्रकार कहा (अवि याइं चित्ता ! जाणिस्सामो) हे चित्र ! विचार करेंगे।

टीकार्थ स्पष्ट है नवर 'तलवर जाव सत्थवाह' में आगत यावत् पदसे यहां 'माडम्बिक-कौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति' पाठ का ग्रहण हुआ है। 'णमंसिस्सति जाव पज्जुवासिस्संति' में आगत यावत् पद से 'सत्कारयिष्यन्ति सम्मानयिष्यन्ति, कल्याणं मंगलं दैवतं चैत्यम्' इस पाठ का संग्रह हुआ है। अभिमुखगमनादि द्वारा जो सन्मान प्रदर्शित किया जाता है उसका नाम सत्कार है वसति आदि के देने से जो भक्ति प्रदर्शित की जाती है उसका

સંસ્તારક ગ્રહણ કરવા આપને વિનંતી કરશે. (तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) ત્યારે કેશિકુમાર શ્રમણે ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (अवि याइं चित्ता जाणिस्सामो) હે ચિત્ર ! વિચાર કરીશું !

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે નવરં "तलवर जाव सत्थवाह" માં જે યાવત્ પદ આવેલું છે, તેથી અહીં 'माडंबिककौटुम्बिकइभ्यश्रेष्ठिसेनापति' પાઠનો સંગ્રહ થયો છે 'णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति' માં આવેલા યાવત પદથી 'सत्कारयिष्यन्ति, सम्मानयिष्यन्ति, कल्याणं मंगलं दैवतं चैत्यम्" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે અભિમુખ ગમન-વગેરે વડે જે સન્માન આપવામાં આવે છે તેનું નામ સત્કાર છે નિવાસ માટે સ્થાન વગેરે આપીને જે ભક્તિ પ્રદર્શિત કરવામાં આવે

धर्मदेवस्वरूपम्, चैत्य=चितिः=विशिष्टज्ञान, तया युक्त' सर्वथा विशिष्टज्ञानवन्त-मित्यर्थः, इति बुद्धया पर्युपासिष्यन्ते=सेविष्यन्ते। तथा–विपुलं=प्रचुरम् अशनं-पानं खाद्यं स्वाद्यं प्रतिलम्भयिष्यन्ति=प्रदास्यन्ति। तथा–प्रातिहारिकेण=पुनः समर्पणीयेन पीठफलकशय्यासंस्तारकेण–पीठफलकादयः प्राग्व्याख्याताः, तेषां समाहारस्तेन उपनिमन्त्रयिष्यन्ति–प्रातिहारिकं पीठफलकशय्यासंस्तारकं च ग्रहीतुं भवन्तं प्रार्थयिष्यन्ति–इति। ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रं सार-थिम् एवम्=अनेन प्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्–'अविआइ'–अपि च चित्र। ज्ञास्यामः=विचारयिष्यामः इति ॥ सू० ११६ ॥

मूलम्——तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ, केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, जहा सेयंवियाए णयरीए णिग्गच्छइ तहेव जाव वसमाणे कुणालाजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव केइयअद्धे जेणेव सेयविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उज्जाणपालए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी– जया णं देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे पुव्वा-णुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह, पडिहारिएणं पीढ-फलग जाव उवनिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह।

नाम सन्मान है. श्वेतांविका नगरी के लोग आप कल्याणस्वरूप है, मंगलस्वरूप ह धर्म-देवस्वरूप हैं तथा चैत्य विशिष्ट ज्ञानवान् ऐसा मानकर आपकी सेवा करेंगे।सू.११६।

છે તેનુ નામ સન્માન છે શ્વેતાંબિકા નગરીના લોકો આપશ્રી તે કલ્યાણ સ્વરૂપ, મંગળસ્વરૂપ તેમજ ચૈત્યવિશિષ્ટ જ્ઞાનવાન્ માનીને આપની સેવા કરશે. ાસૂ. ૧૧૬ા

तएणं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी-तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति ॥सू० ११७॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिकात् कोष्ठकात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव राजमार्गमवगाढः आवासस्तत्रैव उपागच्छति, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः! चातुर्घण्टम् अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयत, यथा श्वेतविकाया-

(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही) उस चित्र सारथीने (केसिकुमारसमणं वंदइ नमसइ) केशीकुमार श्रमण को वन्दना की और नमस्कार किया (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) पश्चात् वे वह केशीकुमार श्रमण के पास से और उस कोष्ठक चैत्य से चला आया (जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) आकर वह जहां श्रावस्ती नगरी थी एवं उसमें जिस तरफ राजमार्गपर स्थित आवास था वहां पर आया (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) वहां आकर के उसने कौटुम्बिक-आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया (सद्दाविता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) हे देवानुप्रियों! तुम लोग शीघ्र चार घंटों वाले अश्वरथ को तयार करके ले आओ (जहा सेयवियाए णयरीए निग्गच्छइ,

स एणं से चित्ते! सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तएणं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्रसारथीએ (केसिकुमारसमणं वंदइ नमसइ) केशीकुमार श्रमणने वंदन तेमज नमस्कार कर्या (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ-कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) त्यार पछी ते केशीकुमार श्रमणनी पासेथी अने ते कोष्ठक चैत्यमांथी बहार आवी गये (जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) आवीने ते ज्यां श्रावस्ती नगरी हती अने तेमां पण ज्यां राजमार्ग पर स्थित निवासस्थान हतुं त्यां आवी गयो. (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) त्यां पहोंचीने तेणे कौटुंबिक पुरुषोने-आज्ञाकारी पुरुषोने बोलाव्या (सद्दाविता एवं वयासी) बोलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्युं (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) हे देवानुप्रियो! तमे शीघ्र चार घंटाओथी युक्त

नगर्या निर्गच्छति तथैव यावद् वसन् कुणालाजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव केकयार्द्धं यत्रैव श्वेतविका नगरी यत्रैव मृगवनम् उद्यानं तत्रैव उपागच्छति, उद्यानपालकान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यदा खलु देवानुप्रियाः। पार्श्वापत्यीयः केशीनामकुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन् इहागच्छेत्, तदा खलु यूयं देवानुप्रियाः! केशिकुमारश्रमणं

तहेव जाव वसमाणे कुणाला जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव केइयअद्धे जेणेव सेयंविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) यहां से आगे चित्र सारथी जिस प्रकार श्वेतांविका नगरी से निकल कर कुणाला जनपद (देश) में स्थित श्रावस्ती नगरी आया, उसी प्रकार वह श्रावस्ती नगरी से भी निकलकर केकयार्द्ध जनपद में स्थित श्वेतांबिका नगरी में पहुंचा. इसलिये यहां पर पूर्वकी तरह से ही समग्र पाठ संगृहीत करना चाहिये. इसी बात को सूचित करने के लिये 'जहा सेयंवियाए णयरीए णिग्गच्छइ' इत्यादि यह पाठ कहा गया है. अर्थात् वह चित्रसारथि जिस प्रकार से श्वेतांविका नगरी से निकलता है, उसी प्रकार से यावत् मार्ग में पडाव डालता हुआ वह कुणाला जनपद के मध्यमध्य से होता हुआ जहां केकयार्द्ध था और जहां श्वेतांबिका नगरी थी और उस में भी जहां मृगवन नाम का उद्यान था वहां आया (उज्जाणपालए सद्दावेइ) वहां आकर के उसने उद्यानपालों को बुलाया. (सद्दावित्ता एवं वयासी) वहां आकर के उसने ऐसा कहा-(जया णं देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे पुव्वा-

---

અરથ તૈયાર કરીને લાવો. (जहा सेयंवियाए णरीए निग्गच्छइ, तहेव जाव वसमाणे कुणाला जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव केइय अद्धे जेणेव सेयंविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) અહીંથી તે ચિત્રસારથી પહેલા જેમ તે શ્વેતાંબિકાનગરીથી નીકળીને કુણાલા જનપદમા સ્થિત શ્રાવસ્તી નગરીમાં આવ્યો હતો, તેમજ તે શ્રાવસ્તી નગરીથી બહાર નીકળીને કેકયાર્દ્ધ જનપદમા સ્થિત શ્વેતાબિકા નગરીમા પહોચ્યો. અહીં તે પ્રમાણે જ વર્ણન સમજી લેવું જોઇએ. એ વાતને બનાવવા માટે જ 'जहा सेयंवियाए णयरीए णिग्गच्छइ' વગેરે પાઠનો ઉલ્લેખ કરવામા આવ્યો છે એટલે કે તે ચિત્ર સારથિ જેમ શ્વેતાંબિકા નગરીથી નીકળે છે, તે પ્રમાણે જ યાવત્ મુકામ કરતો તે કુણાલા જનપદના એકદમ મધ્યમાં પસાર થઇને જ્યા કેકયાર્દ્ધમા શ્વેતાબિકા નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યા મૃગવન નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યો (उज्जाणपालए सद्दावेइ) ત્યાં આવીને તેણે ઉદ્યાન પાલને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું. (जया ण देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे

तएण ते उज्जाणपालगा चित्तेण सारहिणा एव वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहिय जाव एव वयासी–तहत्ति आणाए विणएण वयणं पडिसुणंति ॥सू० ११७॥

छाया—तत खलु स चित्र सारथि: केशिकुमारश्रमण वन्दते नम स्यति केशिन कुमारश्रमणस्य अन्तिकात् कोष्ठकात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव राजमार्गमवगाढ आवासस्तत्रैव उपागच्छति, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! चातुर्घण्टम् अश्वरथ युक्तमेव उपस्थापयत, यथा श्वेतविकाया-

(तएण) इसके बाद (से चित्त सारही) उस चित्र सारथीने (केसि कुमारसमण वदइ नमसइ) केशीकुमार श्रमण को वन्दना की और नमस्कार किया (केसिस्स कुमारसमणस्स अतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) पश्चात् में वह केशीकुमार श्रमण के पास से और उस कोष्ठक चैत्य से चला आया (जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) आकर वह जहां श्रावस्ती नगरी थी एव उसमें जिस तरफ राज मार्गपर स्थित आवास था वहां पर आया (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) वहां आकर के उसने कौटुम्बिक–आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा–(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह) हे देवानुप्रियों ! तुम लोग शीघ्र चार घंटों वाले अश्वरथ को तैयार करके ले आओ (जहा सेयवियाए णयरीए निग्गच्छइ,

'तएण से चित्ते ! सारही' इत्यादि ।

सूत्रार्थ–(तएण) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्रसारथीએ (केसिकुमारसमण वदइ नमसइ) કેશીકુમાર શ્રમણને વંદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા (केसिस्स कुमारसमणस्स अतियाओ–कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) ત્યાર પછી તે કેશીકુમાર શ્રમણ પાસેથી અને તે કોષ્ઠક ચૈત્યમાંથી બહાર આવી ગયો. (जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) આવીને તે જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યાં રાજમાર્ગ પર સ્થિત નિવાસસ્થાન હતું ત્યાં આવ્યો (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) ત્યાં પહોંચીને તેણે કૌટુંબિક પુરુષોને–આજ્ઞાકારી પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एव वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે ચાર ઘંટાઓથી યુક્ત

टीका—'तएणं से' इत्यादि—ततः खलु स चित्रःसारथिःकेशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा केशिनःकुमारश्रमणस्य अन्तिकात् समीपात्, तदनुकोष्ठकाच्चैत्याच्च प्रतिनिष्क्रामति=निस्सरति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव च राजमार्गमवगाढः आवासः, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान्=भृत्यान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—भो देवानुप्रियाः! चातुर्घण्टं=चतुर्घण्टविभूषितम् अश्वरथं युक्तमेव=योजिताश्वमेव उपस्थापयत=उपस्थितं कुरुत। इतोऽग्रे यथाश्वेतविकाया नगर्या निरसृत्य चित्रः सारथिः कुणाला जनपदे श्रावस्त्यां नगर्यां गतः, तथैव स श्रावस्त्या नगर्या अपि निस्सृत्य केकयार्द्धजनपदे श्वेतविकायां नगर्यां च गतः। अतोऽत्र पूर्ववदेव समग्रः पाठः संग्राह्यः। अमुमेवार्थंसूचयितुमाह—'यथा श्वेतविकाया नगर्या निर्गच्छति, तथैव यावत् वसन् कुणालाजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव केकयार्द्धं यत्रैव श्वेतविका नगरी यत्रैव मृगवनम् उद्यानं तत्रैव उपागच्छतीति। तत्र मृगवने उद्याने उपागत्य स उद्यानपालकान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—भो देवानुप्रियाः! यदा खलु पार्श्वापत्यीयः=पार्श्वनाथतीर्थंकरपरम्परायां स जातः केशी नाम कुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्व्या=पूर्वसाधुपरम्परया चरन्=विचरन् ग्रामानुग्रामम्=एकस्माद् ग्रामादनन्तरस्थितं ग्रामं द्रवन्=क्रमेण गच्छन् इह=श्वेतविकायां नगर्याम् आगच्छेत्=आयात्, तदा खलु यूयं देवानुप्रियाः केशिकुमारश्रमणं वन्दध्वं नमस्यत वन्दित्वा नमस्यित्वा, यथाप्रतिरूपं=साधुकल्पानुसारम् अवग्रहं=वसतौ निवासार्थमाज्ञाम् अनुज्ञापयत=अर्पयत,

---

आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेति) चित्र सारथी के द्वारा इस प्रकार कहे गये वे उद्यानपाल हृष्टतुष्ट यावत् हृदय हुए और दोनों हाथ जोडकर बडे विनय के साथ यावत् इस प्रकार से बोले—हे स्वामिन्! आपकी आज्ञा हमें प्रमाण है -अर्थात् आपने कहा है हम वैसा ही करेंगे इस प्रकार अपनी ओर से स्वीकृति के वचन कहकर उन्होंने चित्र सारथी की आज्ञा के वचनों को स्वीकार कर लिया।

एवं वयासी—तहत्ति आणाए विणयेणं वयणं पडिसुणेति) ચિત્રસારથીવડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલા તે ઉદ્યાનપાલકો હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થયા અને બન્ને હાથ જોડીને વિનમ્રતાપૂર્વક આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે સ્વામિન્! આપ શ્રીની આજ્ઞા મારા માટે પ્રમાણરૂપ છે એટલે કે આપશ્રીએ જે પ્રમાણે આજ્ઞા કરી છે અમે યથા સમય ... આચરીશું. આ પ્રમાણે પોતાના તરફથી સ્વીકૃતિના ... કહીને ...

वन्दध्वं नमस्यत, वन्दित्वा नमस्यित्वा यथाप्रतिरूपम् अवग्रहम् अनुज्ञापयत, प्रातिहारिकेण पीठ-फलक-यावत् उपनिमन्त्रयत, एतामाज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयत-। ततः खलु ते उद्यानपालकाः चित्रेण सारथिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्टतुष्ट यावद्धृदयाः करतलपरिगृहीत यावत् एवमवादिषुः-तथेति, आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृण्वन्ति ॥ सू० १७ ॥

णुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दुइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तयाणं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जह) हे देवानुप्रियों! जब पार्श्वनाथ भगवान परंपरा में विचरने वाले केशी नामके कुमारश्रमण पूर्व साधु परम्परा के अनुसार विचरते हुए तथा एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करते हुए यहां पर पधारे, तब तुम हे देवानुप्रियो! केशिकुमार श्रमण को वन्दना करना (नमंसिज्जाह) नमस्कार करना (वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह) वंदना नमस्कार कर फिर तुम उन्हें साधुकल्पानुसार वसति में निवास करने के लिए आज्ञा दे देना (पाडिहारिएणं पीढफलग जाव उवनिमंतिज्जाह) और समर्पणीय पीठफलक आदि जैसा वे चाहें वैसा तुम उन्हें देने की प्रार्थना करना (एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह) बाद में मेरी इस आज्ञा को जब पीछे शीघ्र लौटाना-अर्थात् जब केशि कुमार श्रमण आ जावें-तब तुम उनके आगमनादि के वृत्तान्त की हमें शीघ्र ही खबर देना (तएणं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहिय जाव एवं वयासी-तहत्ति

पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा, तयाणं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जह) हे देवानुप्रियो! पार्श्वनाथ भगवाननी परंपरामां विचरण करनारा केशी नामे श्रमण પૂર્વ સાધુ પરંપરા મુજબ વિચરણ કરતાં કરતાં તેમજ એક ગામથી બીજે ગામમાં વિહાર કરતાં કરતાં અહીં પધારે ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સૌ કેશિકુમાર શ્રમણને વંદન કરજો. (નમંસિજ્જાહ) નમસ્કાર કરજો (વંદિત્તા નમંસિત્તા અહાપડિરૂવં ઉગ્ગહં અણુજાણેજ્જાહ) વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તમે તેમને સાધુ કલ્પાનુસાર વસતીમાં નિવાસ કરવાની આજ્ઞા આપજો (પાડિહારિએણં પીઢફલગ જાવ ઉવનિમંતિજ્જાહ) અને સમર્પણીય પીઠફલક વગેરે જે વસ્તુની તેઓશ્રી માગણી કરે તે વસ્તુ તમે તેમને નમ્રભાવે સમર્પિત કરજો. (एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह) અને જ્યારે આ બધું થઈ જાય ત્યારે તમે મને કેશિકુમાર શ્રમણની અહીં પધારવાની ખબર આપજો (तएणं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहिय जाव

जाव पच्चप्पिणेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ । तएणं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ, चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ । तएणं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठजाव हियए पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दूरूहइ, सेयंवियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, तुरगे णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए जाव उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्दफरिस जाव विहरइ ॥सू० ११८॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः यत्रैव श्वेतांविका नगरी तत्रैव उपागच्छति, श्वेतांविकां नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, यत्रैव प्रदेशिनः राज्ञः गृहं यत्रैव बाह्या उपस्थान शाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्य-

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव उवागच्छइ) वह चित्र सारथि जहां श्वेतांविका नगरी थी—वहां गया (सेयंवियं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुपविसइ) वह उस नगरी में बीचों बीच के मार्ग से होकर प्रविष्ट हुआ (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट होकर वह वहां गया जहां कि प्रदेशी राजा का घर था और जहां प्रदेशी राजा की बाह्य उपस्थानशाला थी (तुरगे निगिण्हइ) वहां पहुंच

'त एण ते चित्ते सारही' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(त एण) त्यार पछी (से चित्ते सारही जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव उवागच्छइ) ते चित्र सारथि ज्यां श्वेतांबिका नगरी हती त्यां गयो. (सेयंवियं नयरिं मज्झंमज्झे ण अणुपविसइ) ते ते नगरीना मध्यमार्गथी थईने प्रविष्ट थयो. (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट थईने ते त्यां गयो ज्यां प्रदेशी राजानुं घर हतुं अने ज्यां प्रदेशी राजानी बाह्य

तथा-प्रतिहारितेन=पुनः समर्पणीयेन पीठफलक यावत्=पीठफलकशय्या संस्तारकेण उपनिमन्त्रयत प्रातिहारिकं पीठफलकादिकं यथा स गृह्णीयात् तथा तं केशिकुमारश्रमणं प्रार्थयतेत्यर्थः। एवं कृत्वा एताम् आज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयत=केशिकुमारश्रमणस्य आगमनादिवृत्तान्तं मह्यं निवेदयतेति। ततः खलु ते उद्यानपालकाः चित्रेण सारथिना एवमुक्ताः सन्तः हृष्टतुष्टयावद्हृदयाः=हृष्टतुष्टचित्तानन्दिताः प्रीतिमनसः परमसौमनस्यिताः हर्षवशविसर्पद्हृदयाः, करतलपरिगृहीत यावत्-यावत्पदेन-'दशनखं शिर आवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा' इति संग्राह्यम्, हृष्टतुष्टेत्यादिपदानां करतलेत्यादिपदानां चार्थः पूर्ववद् बोध्यः, एवम्=अस्य प्रमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवन्तः-तथेति=हे देवानुप्रिय! यथा यूयमाज्ञापयन्ति तथैव करिष्याम इति। एवं स्वीकारवचनमुक्त्वा ते उद्यानपालकास्तस्य चित्रसारथेः आज्ञाया वचनं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति-इति ॥सू० ११७॥

मूलम्—तए णं से चित्ते सारही जेणेव सेयविया णयरी तेणेव उवागच्छइ, सेयवियं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरगे णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं जाव गेण्हइ, जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं करयल–

टीकार्थ मूलार्थ के अनुरूप ही है, मगर 'हट्ठतुट्ठ जाव हियया' में जो यावत् पद आया है उससे यहां 'हृष्टतुष्टचित्तानन्दिताः, प्रीतिमनसः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्हृदयाः' यह पाठ गृहीत हुआ है, तथा 'करतलपरिगृहीत' के यावत्पद से 'दशनखं शिर आवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा' इस पाठ का ग्रहण हुआ है इन पाठों के पदों का पहिले अर्थ कहे हुए अर्थ के अनुसार ही है ॥११७॥

ટીકાર્થ—આ સૂત્રના મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે 'મગર' "હટ્ઠતુટ્ઠ જાવ હિયયા" માં જે યાવત્ પદ આવ્યું છે તેથી "હૃષ્ટતુષ્ટચિત્તાનન્દિતાઃ, પ્રીતિમનસઃ પરમસૌમનસ્યિતાઃ, હર્ષવશવિસર્પદ્હૃદયાઃ" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે તેમજ "કરતલપરિગૃહીત" ના યાવત્ પદથી 'દશનખં શિર આવર્તં મસ્તકે અઞ્જલિં કૃત્વા" આ પાઠ ગ્રહણ થયો છે આ પાઠના પદોનો અર્થ પહેલાં જે પ્રમાણે સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે તે પ્રમાણે જ અહીં સમજવો જોઈએ. ॥સૂ૦ ૧૧૭॥

अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति, चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, श्वेतव्विकाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति. तुरगान निगृह्णाति, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्य-वरोहति, स्नातो यावत् उपरि प्रासादवरगतः स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैर्द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकैर्वरतरुणीसंप्रयुक्तैः उपनर्त्यमानः उपगायमानः उपलाल्यमान इष्टान् शब्दस्पर्श–यावद् विहरति ॥सू० ११८॥

पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठ जाव हियए पएसिस्स रन्नो अंति याओ पडिनिक्खमइ जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार प्रदेशी राजा द्वारा विसर्जित किया गया वह चित्र सारथि हृष्ट यावत् हृदय वाला होकर प्रदेशी राजा के पास से चला आया और जहां चातुर्घंट अश्वरथ था वहा पर आ गया (चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर वह उस चार घंटेवाले अश्वरथ पर सवार हो गया और श्वेताविका नगरी के ठीक मध्यमार्ग से होता हुआ अपने भवन की ओर चल दिया, (तुरगे णिगिण्हइ, रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए) वहां आकर के उसने घोडों को रोका, रथ को खडा किया, फिर रथ से नीचे उतरा, स्नान किया यावत् उत्तम प्रासाद के उपरिभाग में जाकर बैठ गया, (फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्ज माणे२ उवगाइज्जमाणे२ उवलालिज्जमाणे२ इट्ठे सद्दफरिस जाव विहरइ) वहां पर

हियए पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે પ્રદેશી રાજા વડે વિસર્જિત કરાયેલો તે ચિત્ર-સારથિ હૃષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઈને પ્રદેશી રાજાની પાસેથી આવતો રહ્યો અને જ્યાં ચાતુર્ઘંટ અશ્વરથ હતો ત્યાં આવ્યો. (चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नय-रीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં આવીને તે ચાતુર્ઘંટવાળા અશ્વરથ પર સવાર થયો અને શ્વેતાબિકા નગરીના ઠીક મધ્ય માર્ગમાંથી પસાર થઈને પોતાના ભવન તરફ રવાના થયો. (तुरगे णिगिण्हइ, रह ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए) ત્યાં આવીને તેણે ઘોડાઓને ઉભા રાખ્યા, રથ થોભાવ્યો અને ત્યારપછી રથમાંથી નીચે ઉતર્યો સ્નાન કર્યું યાવત્ ઉત્તમ પ્રાસાદના ઉપરિભાગમાં જઈને બેસી ગયો (फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे२ उवगाइज्जमाणे२ उवलालिज्जमाणे२ इट्ठे सद्द

गृह्णाति, यत्र महार्थं यावत् गृह्णाति, यत्रैव प्रदेशी राजा तत्रैव उपागच्छति, प्रदेशिनं राजानं करतल यावद् वर्धयित्वा तन्महार्थं यावत् उपनयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेस्तन्महार्थं यावत् प्रतीच्छति चित्रं सारथिं सत्कारयति सम्मानयति प्रतिविसर्जयति। ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा विसर्जितः सन् हृष्ट यावद्हृदयः प्रदेशिनो राज्ञः

कर उसने घोड़ों को रोका (रहं ठवेइ) और रथ को खड़ा किया। (रहाओ पच्चोरुहइ) फिर वह उस रथ से नीचे उतरा (तं महत्थं जाव गेण्हइ) नीचे उतर कर उसने उस महार्थ आदि विशेषणों वाले प्राभृत को हाथ में लिया (जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ) और जहां प्रदेशी राजा था वहां गया (पएसीरायं करयल जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ) वहां जाकर के उसने प्रदेशी राजा को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर एवं उसे मस्तक पर से घुमाकर नमस्कार किया और जयविजय शब्दों का उच्चारण करते हुए उसे बधाई देकर फिर उसने उसके समक्ष लाये हुए पारितोषिक-भेंट अर्पण किया (तएणं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ) प्रदेशी राजाने चित्र सारथी के उस महार्थ आदि विशेषणों वाले प्राभृत को स्वीकार कर लिया (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ पडिविसज्जेइ) और चित्र सारथी का सत्कार किया एवं सम्मान किया बाद में उसे विसर्जित कर दिया (तएणं से चित्ते सारही

ઉપસ્થાન શાળા હતી (तुरगे निगिण्हइ) ત્યાં પહોંચીને તેણે ઘોડાઓને ઊભા રાખ્યા (रहं ठवेइ) અને રથને ઊભો રાખ્યો (रहाओ पच्चोरुहइ) ત્યાર પછી તે રથમાંથી નીચે ઉતર્યો (तं महत्थं जाव गेण्हइ) નીચે ઉતરીને તેણે તે મહાર્થ વગેરે વિશેષણોવાળી ભેટ પોતાના હાથમાં લીધી (जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ) અને જ્યાં પ્રદેશી રાજા હતા ત્યાં ગયો (पएसीं रायं करयल जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ) ત્યાં જઈને તેણે પ્રદેશી રાજાને બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તક પર ફેરવીને નમસ્કાર કર્યા અને જયવિજય શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરીને તેને વધામણી આપી ત્યાર પછી તેણે પોતાની સાથે લાવેલી ભેટને રાજાને અર્પિત કરી. (तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ) પ્રદેશી રાજાએ ચિત્રસારથિની તે મહાર્થ વગેરે વિશેષણોવાળી ભેટને સ્વીકારી લીધી (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ पडिविसज्जेइ) અને ચિત્રસારથીનો સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને પછી તેને ત્યાંથી વિસર્જિત કરી. (तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना विसज्जिए समाणे हट्ठ जाव

परमसौमनस्यितो हर्षवशात्विसर्पद्हृदयः प्रदेशिनो राज्ञः आन्तकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति=आरोहति, दूरुह्य श्वेतविकाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं=स्वकीयं गृहं तत्रैव उपागच्छति. उपागत्य तुरगान् निगृह्णाति, निगृह्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवतरति। ततः स्नातः=कृतस्नानविधिः यावत् 'यावत्'-पदेन-'कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गल प्रायश्चित्तः सर्वालङ्कारविभूषितः' इति सग्राह्यम्। तत्र-कृतबलिकर्मा=काकादिभ्यो वितीर्णान्नभागः, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः-कृतानि=विहितानि कौतुकानि=मषीतिलकादीनि मङ्गलानि==मङ्गलकराणि दुःस्वप्नादिफलनिवारणार्थं दध्यक्षतादीनि तान्येव प्रायश्चित्तानि-अवश्यकरणीयत्वाद् येन सः, तथा-सर्वालङ्कारविभूषितः समस्ताभरणभूषितशरीरः सन् उपरिप्रासादवरगतः=उत्तमप्रासादोपरिभागे समुपविष्टः स्फुटद्भिः=अतिरभसास्फालनात् स्फुटद्भिरिव मृदङ्गमस्तकैः=मृदङ्गमुखपुटैः. तथा-वरतरुणीसम्प्रयुक्तैः=अतिसुन्दरयुवतीभिरभिनीतैः द्वात्रिंशद्बद्धकैः=द्वात्रिंशत्संख्यकपात्रनिबद्धैः नाटकैः उपनर्त्यमानः=स्वचरित्राभिनयपूर्वमभिनीयमानः, उपगीयमानः=स्वगुणगानपूर्वकं गीयमानः, उपलाल्यमानः=ललितकलाभिः प्रमोद्यमानः इष्टान्=अभिलषितान् शब्दस्पर्श यावत्=शब्दस्पर्शरूपरसगन्धान् पञ्चविधान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन् विहरतीति ॥ सू० ११८ ॥

विसर्पद्हृदयः' इन पदों का ग्रहण किया गया है। 'ण्हाए जाव उप्पिं' में आगत यावत् पद से 'कृतबलिकर्मा, कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तः, सर्वालङ्कारविभूषितः' इन पदों का सग्रह हुआ है. 'कृतबलिकर्मादि पदों का तात्पर्य है काकादिकों के लिये उसने अन्नभाग वितीर्ण किया तथा दुःस्वप्नादिफलों के निवारण के लिये मषीतिलक आदिरूप कौतुक तथा मंगलकर दध्यक्षतादिकरूप प्रायश्चित्त-अवश्य करणीय होने से किये। इससे नीचे के पदों का अर्थ मूलार्थ में लिख दिया गया में ॥ सू० ११८ ॥

प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्हृदयः" આ પદોનું ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે. "ण्हाए जाव उप्पिं" મા આવેલા યાવત્ પદથી "कृतबलिकर्मा, कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तः सर्वालङ्कारविभूषितः' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. કૃતબલિકર્માદિ પદોનો અર્થ છે કાગડા વગેરેને અન્ન ભાગ અર્પવો તેમજ દુસ્વપ્ન વગેરેને નિવારણ કરવા માટે મષી તિલક વગેરે રૂપ કૌતુક તેમજ મંગળકર દહીં અક્ષત વગેરે રૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત-અવશ્યકરણીય હોવાથી કર્યાં એના પછીના પદોના અર્થો મૂલાર્થમાં જ લખવામાં આવ્યા છે. ॥સૂ० ११८॥

टीका—'तएण' इत्यादि—

तत खलु स चित्र सारथिः यत्रैव श्वेतविकानगरी तत्रैव उपागच्छति श्वेतविकां नगरीं मध्यमध्येन=अतिशयमध्यदेशस्थितमार्गेण श्रावस्तीं नगरीम् अनुप्रविशति, यत्रैव याना उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान्=अश्वान् निगृह्णाति=निरुणद्धि रथं स्थापयति रथात् प्रत्यवरोहति=अवतरति, तद् महार्थं यावत्=महार्घत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव प्रदेशी राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य प्रदेशिनं राजानं करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा तद् महार्थं यावत्=महार्घत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतम् उपनयति=प्रदेशिने राज्ञे समर्पयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेः सकाशात् तद् महार्थं यावत्=महार्घत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतम् प्रतीच्छति=गृह्णाति, चित्रं सारथिं सत्कारयति—आसनप्रदानादिना, सम्मानयति—वस्त्राभूषणादिप्रदानेन, ततः प्रतिविसर्जयति=गन्तुमादिशति। ततः खलु स चित्रःसारथिः प्रदेशिना राज्ञा विसर्जितः सन् हृष्ट-यावद् हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः

रहते हुए यह बजते हुए मृदङ्गों की ध्वनिपूर्वक ३२ पात्रों द्वारा अभिनीत किये नाटक को बार बार देखकर और गानों को सुनकर एवं ललितक कामों द्वारा हर्षित होकर अभिलषित शब्द, स्पर्श, रूप रस, गंध इन पांच प्रकार के कामभोगों को भोगते हुए अपने समय का निकालने लगा।

टीकार्थ मूलार्थ के ही अनुरूप है परन्तु जहां पर विशेषता है वह इस प्रकार से है—आसनप्रदान आदि द्वारा प्रदेशी राजाने उस चित्र सारथि का सत्कार किया, एवं वस्त्राभूषण आदि प्रदान द्वारा उसका सन्मान किया, विसर्जित किया का तात्पर्य है, जाने के लिये आज्ञा दिया 'हट्ट जाव हियए' में आगत इस यावत्पद से हृष्ट तुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमना, परमसौमनस्यितः, इन पद

फरिस जाव विहरइ) त्यां रहीने तेणे मृदंगोनी ध्वनि साथे ३२ पात्रो द्वारा अभिनीत कराएला नाटकने वारंवार जोईने अने गीतो सांभळीने अने ललितोवडे हर्षित थईने अभिलषित शब्द स्पर्श रूप रसगंध आ पांच प्रकारना कामभोगोने भोगवतो पोताना समयने पसार करवा लाग्यो.

टीकार्थ—आ सूत्रनो मूलार्थ प्रमाणे ज छे पण ज्यां विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे आसन वगेरे आपीने प्रदेशी राजाए ते चित्रसारथिनो सत्कार कर्यो अने वस्त्राभूषण आपीने तेनु सन्मान कर्यु विसर्जित शब्दनो अर्थ छे जवा माटे आज्ञा आपी 'हट्ट जाव हियए' मां आवेला यावत् पदथी "हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः

नगरी यत्रैव मृगवनमुद्यानं तत्रैव उपागच्छति, यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥ सू० ११९ ॥

टीका--'तएणं केसी' इत्यादि--व्याख्या निगदसिद्धा नवरम्-केशी कुमारश्रमणो मृगवनोद्यानस्थितस्य कस्यचित् पुरुषस्य स्तोककालिकमवग्रहमव गृह्य तिष्ठति। वनपालावग्रहादीनामग्रे वक्ष्यमाणत्वात् ॥ सू० ११९ ॥

मूलम्--तएणं सेयंवियाए नयरीए सिंघाडग० महया जणसद्देइ वा० परिसा निग्गच्छइ। तएणं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्टतुट्ठ जाव हियया जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छंति केसिं कुमारसमणं वंदंति नमंसंति अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति, पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति णामं गोयं पुच्छंति ओधारेंति एगंतं अवक्कमंति अन्नमन्नं एवं वयासी--जस्स णं देवाणु-

---

विहार करते हुए क्रमशः वहां आये जहां केकयार्द्ध जनपद-देश था, उसमें भी जहां वह श्वेतांबिका नगरी थी और उसमें भी जहां वह मृगवन नाम का उद्यान था (अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) वहां आकर वे यथाप्रतिरूप अवग्रह प्राप्त--करके संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

व्याख्या स्पष्ट है-नवरम्-केशीकुमारश्रमण मृगवनोद्यानस्थित किसी पुरुष की कुछ समयतक ठहरने के लिये आज्ञा प्राप्त कर ठहर गये. वनपाल एवं अवग्रहादिकों के विषय में सूत्रकार आगे कथन करेंगे ॥सू०११९॥

મુજબ વિચરણ કરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા અનુક્રમે જ્યાં કેકયાર્દ્ધ જનપદ-દેશ વિશેષ હતો અને તેમાં પણ જ્યાં શ્વેતાંબિકા નગરી હતી અને તેમા પણ જ્યા મૃગવન નામે ઉદ્યાન હતું. ત્યાં પહોંચ્યા. (અહાપડિરૂવં ઉગ્ગહં ઉગ્ગિણ્હિત્તા સંજમેણં તવસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરઇ) ત્યા પહોચીને તેઓશ્રીએ તથા પ્રતિરૂપ અવગ્રહ પ્રાપ્ત કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરણ કરવા લાગ્યા.

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે 'નવરમ્' કેશીકુમાર શ્રમણ મૃગવન ઉદ્યાન પાલકની પાસેથી રહેવાની આજ્ઞા મેળવીને ત્યાં રોકાઇ ગયા. વનપાલ અને અવગ્રહ વગેરેની બાબતમા સૂત્રકાર હવે પછી કહેશે ॥ સૂ० ૧૧૯ ॥

मूलम्—तए णं से केसीकुमारसमणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ। सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पंचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए, जेणेव सेयविया नयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥सू० ११९॥

छाया—ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः अन्यदा कदाचित् प्रातिहारिकं पीठफलकशय्यासंस्तारकं प्रत्यर्पयति। श्रावस्त्या नगर्याः कोष्ठकात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति पञ्चभिरनगारशतैर्यावत् विहरन् यत्रैव केकयार्द्धं जनपदः यत्रैव श्वेतविका

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने किसी एक समय अर्पणीय पीठफलकशय्यासंस्तारक को वापिस कर दिया अर्थात् जहां वे कोष्ठक चैत्य-उद्यान में ठहरे हुए थे—वहां के पुरुषों को उन्होंने सौंप दिया (सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद वे श्रावस्ती नगरी से एवं कोष्ठकचैत्य से निकले (पंचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए जेणेव सेयविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) पांच सौ अनगार इनके साथ थे अतः उनके साथ तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विचरण करते हुए, एक ग्राम से दूसरे ग्राम में

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे अण्णया कयाइं पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ) त्यार पछी केशीकुमार श्रमणे कोइ वखते अर्पणीय पीठफलक शय्या संस्तारकने पाछा आपी दीधा एटले के तेओश्री जे कोष्ठक चैत्यमां मुकाम कर्यो हतो. त्यांना रखेवाळने ते वस्तुओ आपी दीधी.
(सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) त्यारपछी ते केशीकुमार श्रमण ते श्रावस्ती नगरीथी अने कोष्ठक चैत्यमांथी नीकळ्या एटले के विहार कर्यो.
(पंचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए जेणेव सेयविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) पांचसो अनगार तेओश्रीनी साथे हता आम तेओश्री आ बधानी साथे तीर्थंकर परंपरा

लब्धार्थाः सन्तः हृष्टतुष्ट यावद् हृदया यत्रैव केशीकुमारश्रमणः तत्रैव उपागच्छन्ति केशिनं कुमारश्रमणं वन्दन्ति नमस्यन्ति यथाप्रतिरूपमवग्रह-मनुजानन्ति, प्रातिहारिकेण यावत् संस्तारकेण उपनिमन्त्रयन्ति, नामगोत्रं पृच्छन्ति, अवधारयन्ति, एकान्तमपक्रामन्ति, अन्योन्यमेवमवादिषुः—यस्य खलु देवानुप्रियाः? चित्रः सारथिः दर्शनं काङ्क्षति, दर्शनं प्रार्थयति, दर्शनं स्पृहयति, दर्शनमभिलषति, यस्य खलु नामगोत्रस्यापि श्रवणतया हृष्टतुष्ट—

हट्टतुट्ठ जाव हियया जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छति) इसके बाद वे उद्यानपाल जब इस बात से निश्चितमतिवाले हो गये. तब हृष्ट तुष्ट यावत् हृदयवाले होते हुए वे जहां केशीकुमारश्रमण थे—वहां पर आये. (केसिं-कुमारसमणं वंदंति, नमसंति, अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति) वहां आकर उन्होंने केशीकुमारश्रमण को वन्दना की, नमस्कार-क्रिया एवं यथारूप अवग्रह आज्ञा उन्होंने दिया. (पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति) तथा समर्पणीय (प्रातिहारिक) यावत् संस्तारक आदि से उन्हें उपनिमंत्रित किया.(णाम गोयं पुच्छंति ओधारेंति, एगंतं अवक्कमंति, अन्नमन्नं एवं वयासी) नामगोत्र पूछा। उसे हृदय में धारण किया। फिर वे एकान्त में गये और वहां जाकर उन्होंने आपस में इस प्रकार से बातचीत की (जस्स णं देवाणुप्पिया। चित्ते सारही दंसणं कंखेइ दंसणं पीहेइ, दंसणं अभिलसेइ) हे देवानुप्रियो! जिनके दर्शन चित्र सारथि चाहता है, जिनके दर्शन की वह प्रार्थना करता है, जिनके दर्शन की वह स्पृहा रखता है, जिनके दर्शन की वह अभिलाषा रखता

जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छंति) ત્યાર પછી તે ઉદ્યાનવાળો જ્યારે આ બાબતમાં નિશ્ચિત મતિવાળા થયા ત્યારે તેઓ હૃષ્ટ–તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થઈને જ્યાં કેશીકુમાર શ્રમણુ હતા ત્યાં આવ્યા (केसिं कुमारसमणं वंदंति, नमंसंति, अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति) ત્યાં આવીને તેમણે કેશીકુમાર શ્રમણુને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા અને યથા કલ્પનીય વસ્તુઓ તેઓશ્રીને આપી. (पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति) તેમજ સમર્પણીય યાવત્ સંસ્તારક વગેરે અર્પીને તેઓશ્રીને ઉપનિમંત્રિત કર્યા. (णाम गोयं पुच्छंति ओधारेंति, एगंतं अववक्कमंति, अन्नमन्नं एवं वयासी) નામ–ગોત્ર પૂછ્યા અને તેને હૃદયમાં ધારણુ કર્યા. ત્યારપછી તે સર્વે એકાંતમાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરી કે (जस्सणं देवाणुप्पिया! चित्ते सारही दंसणं कंखेइ, दंसणं पत्थेइ, दंसणं पीहेइ, दंसणं अभिलसेइ) હે દેવાનુપ્રિયો! ચિત્રસારથી જેઓશ્રીના દર્શનોની ઇચ્છા ધરાવે છે, જેઓશ્રીના દર્શનો માટે તેઓ પ્રાર્થના કરે છે, જેઓશ્રીના દર્શનોની તે સ્પૃહા ધરાવે છે, જેઓશ્રીના દર્શનોની

पिया ! चित्ते सारही दंसणं कंखइ, दंसणं पत्थेइ, दंसणं पीहइ, दंसणं अभिलसइ, जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवइ से णं एस केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सेयवियाए णयरीए बहिया उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं निवेदेमो पियं से भवउ। अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति, जेणेव सेयविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति, चित्तं सारहिं करयल जाव वद्धावेंति, एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया ! दंसणं कंखति जाव अभिलसति, जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ जाव भवति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ ॥ सू० १२० ॥

छाया—ततः खलु श्वेतविकायां नगर्यां शृङ्गाटक० महान् जनशब्द इति वा० परिषद् निर्गच्छति। ततः खलु ते उद्यानपालका अस्याः कथायाः

'तएणं सेयवियाए नयरीए' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं सेयवियाए नयरीए सिंघाडग० महया जणसद्देइ वा० परिसा निग्गच्छइ) इसके बाद श्वेतविका नगरी में शृङ्गाटक आदि मार्गों के ऊपर उपस्थित हुए अपार जनसमूह में परस्पर बातचीत आदि हुई परिषदा निकली (तएणं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा

'तएणं' सेयवियाए नयरीए' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं सेयवियाए नयरीए सिंघाडग० महया जणसद्देइ वा० परिसा निग्गच्छइ) त्यार पछी श्वेतविका नगरीमां शृंगाटक वगेरे मार्गो पर भेगा थयेला मानवसमाजमां परस्पर वातचीत वगेरे थइ अने परिषद नीकळी (तएणं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया

सारथेर्गृहं यत्रैव चित्रः सारथिस्तत्रैवोपागच्छन्ति चित्रं सारथिं करतल-यावद् वर्द्धयन्ति, एवमवादिषुः—यस्य खलु देवानुप्रियाः दर्शनं काङ्क्षन्ति, यावत्–अभिलषन्ति, यस्य खलु नामगोत्रस्यापि श्रवणतया हृष्ट यावद् भवन्ति स खल्वयं केशीकुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन् इहैव उद्याने मृगवने समवसृतः यावद् विहरति ॥ सू० १२० ॥

टीका–'तएणं सेयवियाए' इत्यादि। व्याख्या निगदसिद्धा ॥सू. १२०॥

इस प्रकार की बातचीत को वे स्वीकार कर लेते हैं। बाद में (जेणेव सेयंविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति) वे जहां श्वेतांविका नगरी थी और उसमें भी जहां चित्र सारथि का गृह था एवं वहां पर भी जहां चित्र सारथी था वहां पर आये (चित्तं सारहिं करयल जाव वद्धावेंति, एवं वयासी) वहां आकर के उन्होंने चित्र सारथि के प्रति बडे विनय के साथ अपने दोनों हाथों की अजलि बनाकर उसे मस्तक पर से घुमाते हुए नमस्कार किया. तथा जयविजय शब्दों का उच्चारण कर उसे बधाई दी और फिर ऐसा कहा–'जस्स णं देवाणुप्पिया! दंसणं कंखंति, जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ जाव भवति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ) हे देवानुप्रिय! आप जिसके दर्शन की चाहना रखते है, यावत् अभिलाषा रखते है तथा जिसके नामगोत्र के भी श्रवण से भी आप हृष्टतुष्ट यावत् हृदय वाले हो जाते हैं वे ये केशीकुमारश्रमण पूर्वानुपूर्वी से विचरते हुए, एक ग्राम से

सेयंविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति) तेओ ज्यां श्वेतांबिका नगरी हती अने तेमां पण ज्यां चित्रसारथी हतो त्यां गया (चित्तं सारहिं करयल जाव वद्धावेंति, एवं वयासी) त्यां पहोंचीने तेमणे चित्रसारथिने बहुज नम्रपणे बन्ने हाथोनी अंजलि बनावीने अने तेने मस्तक पर फेरवीने नमस्कार कर्या तेमज जयविजय शब्दोनुं उच्चारण करीने तेने वधामणी आपी. अने पछी तेने आ प्रमाणे कह्युं. (जस्सणं देवाणुप्पिया! दंसणं कंखंति. जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ जाव भवंति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ) हे देवानुप्रिय तमे जेओश्रीना दर्शनोनी इच्छा धरावता हता, यावत् अभिलाषा राखता हता तेमज जेओश्रीना नामगोत्रना श्रवण मात्रथी ज तमे हृष्ट-तुष्ट यावत हृदयवाळ

पावनहृदयो भवति स खलु एष केशीकुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्वी चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन् इहागतः, इह प्राप्तः, इह समवसृतः, इहैव श्वेतविकाया नगर्या बहिर्मृगवने उद्याने यथाप्रतिरूपं यावद् विहरति, तद् गच्छामः खलु देवानुप्रियाः! चित्रस्य सारथेः एतमर्थं प्रियं निवेदयामः, प्रियं तस्य भवतु। अन्योऽन्यस्यान्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, यत्रैव श्वेतविका नगरी यत्रैव चित्रस्य

है (जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवइ) तथा जिनके नामगोत्र के भी श्रवण से जो हृष्टतुष्ट पावन हृदयवाला होता है (से णं एस केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए) वे ये केशीकुमारश्रमण तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विचरते हुए एवं एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करते हुए यहां आये हैं। (इह संपत्ते) यहां प्राप्त हुए हैं। (इह समोसढे) यहां समवसृत हुए हैं। (इहेव सेयवियाए णयरीए बहिया उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ) इसी श्वेताम्बिका नगरी के बाहर उद्यान में यथाप्रतिरूप अवग्रह प्राप्तकर यावत् विराजते हैं। (तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं से भवउ) सो हे देवानुप्रियो! चलें और चित्र सारथि के इस प्रिय अर्थ का उनसे निवेदन करें, हमारा यह निवेदन उन्हें बहुत ही प्रिय लगेगा (अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति)

તે અભિલાષા રાખે છે (जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवइ) તેમજ જેઓશ્રીના નામ ગોત્રના શ્રવણથી જ જે હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઈ જાય છે (से णं एस केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-गामं दूइज्जमाणे इहमागए) તેઓશ્રી કેશીકુમાર શ્રમણ તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિચરણ કરતા અને એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતાં અહીં પધાર્યા છે (इह संपत्ते) અહીં પ્રાપ્ત થયા છે (इह समोसढे) અહીં સમવસૃત થયા છે (इहेव सेयवियाए णयरीए बहिया उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ) આ શ્વેતાંબિકા નગરીની બહારના ઉદ્યાનમાં યથાપ્રતિરૂપ અવગ્રહ પ્રાપ્ત કરીને યાવત્ વિચરે છે (तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं से भवउ) ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયો! આપણે ચિત્ર સારથિની પાસે જઈને આ પ્રિય સમાચાર વિષે તેમને ખબર આપીએ. અમારી આ ખબર તેમને ખૂબજ ગમશે (अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति) આ પ્રમાણે તેઓ બધા પરસ્પર એક બીજાની વાતને એકમત થઈને સ્વીકારી લે છે ત્યાર પછી (जेणेव

सारथेर्गृहं यत्रैव चित्रः सारथिस्तत्रैवोपागच्छन्ति चित्रं सारथिं करतल-यावद् वर्द्धयन्ति, एवमवादिषुः-यस्य खलु देवानुप्रियाः दर्शनं काङ्क्षन्ति, यावत्-अभिलषन्ति, यस्य खलु नामगोत्रस्यापि श्रवणतया हृष्ट यावद् भवन्ति स खल्वयं केशीकुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्राम द्रवन् इहैव उद्याने मृगवने समवसृतः यावद् विहरति ॥ सू० १२० ॥

टीका-'तएणं सेयवियाए' इत्यादि। व्याख्या निगदसिद्धा ॥सू. १२०॥

इस प्रकार की बातचीत को वे स्वीकार कर लेते है। बाद में (जेणेव सेयंविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति) वे जहां श्वेतांविका नगरी थी और उसमे भी जहां चित्र सारथि का गृह था एवं वहां पर भी जहां चित्र सारथी था वहां पर आये (चित्तं सारहिं करयल जाव बद्धावेंति, एवं वयासी) वहां आकर के उन्होंने चित्र सारथि के प्रति बडे विनय के साथ अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर उसे मस्तक पर से घुमाते हुए नमस्कार किया. तथा जयविजय शब्दों का उच्चारण कर उसे बधाई दी और फिर ऐसा कहा-'जस्स णं देवाणुप्पिया! दंसणं कंखंति, जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ जाव भवंति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ) हे देवानुप्रिय! आप जिसके दर्शन की चाहना रखते है, यावत् अभिलाषा रखते है तथा जिसके नामगोत्र के भी श्रवण से भी आप हृष्टतुष्ट यावत् हृदय वाले हो जाते हैं वे ये केशीकुमारश्रमण पूर्वानुपूर्वी से विचरते हुए, एक ग्राम से

सेयंविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति) तेओ ज्यां श्वेतांबिका नगरी हती अने तेमां पण ज्यां चित्रसारथी हतो त्यां गया (चित्तं सारहिं करयल जाव बद्धावेंति, एवं वयासी) त्यां पहोंचीने तेमणे चित्रसारथिने बहुज नम्रपणे बन्ने हाथोनी अंजलि बनावीने अने तेने मस्तक पर फेरवीने नमस्कार कर्या तेमज जयविजय शब्दोनुं उच्चारण करीने तेने वधामणी आपी. अने पछी तेने आ प्रमाणे कह्युं. (जस्सणं देवाणुप्पिया! दंसणं कंखंति. जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ जाव भवंति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ') हे देवानुप्रिय! तमे जेओश्रीना दर्शनोनी इच्छा धरावता हता, यावत् अभिलाषा राखता हता तेमज जेओश्रीना नामगोत्रना श्रवण मात्रथी ज तमे हृष्ट-तुष्ट यावत हृदयवाळा

मूलम्—तएण से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पाउयाओ ओमुयइ, एगसाडियं उत्तरासगं करेइ, अजलिम उलियग्गहत्थे-केसिकुमारसमणाभिमुहे सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजलिकट्टु एव वयासी-नमोऽत्थुण अरहताण जाव सपत्ताण, नमोऽत्थुण केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वदामि ण भगवत तत्थगय इहगए, पासउ मे तत्थगए इहगय तिकट्टु वदइ नमसइ, ते उज्जाणपालए विउलेण वत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ विउल जीवियारिह पीइदाण दलयइ पडिविसज्जेइ। कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, एव वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घट आसरह जुत्तमेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह। तएण ते कोडुबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्त सज्झय जाव उवट्ठवित्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणति तएणं से चित्त सारही कोडुबियपुरिसाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घटे जाव दुरूहित्ता सकोरट० महया भडचडगर० त चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहा ।सू,१२१।

इमर ग्राम में विहार करते हुए यहां मृगवन नामक उद्यान में आए हुए हैं यावत् तप और संयम से आत्माको भावित करते हुए ठहरे हैं।

इसकी व्याख्या मूलार्थ के जैसी ही है ॥ १२० ॥

सर्व जगो कि तेओश्री केशीकुमारश्रमण पूर्वानुपूर्वी थी विचरण करतां ओक गामथी बीजे गाम विहार करतां अहीं मृगवन नामना उद्यानमां पधारेला छे यावत् तप अने संयमथी पोताना आत्माने भावित करता विराजे छे

आ सूत्रनी व्याख्या मूलार्थ प्रमाणे ज छे ॥१२०॥

छाया--ततः खलु स चित्रः सारथिः तेषामुद्यानपालकानामन्तिके एत मर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट तुष्ट यावद् आसनाद् अभ्युत्तिष्ठति प्रासादपीठा त्प्रत्यवरोहति पादुके अवमुञ्चति एकशाटिकमुत्तरासङ्गं करोति, अञ्जलिमु-कुलिताग्रहस्तः केशिकुमारश्रमणाभिमुखः सप्ताष्टपदानि अनुगच्छति करतल परिगृहीतं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं) इसके बाद वह चित्र सारथि उन उद्यानपालकों के पास से इस अर्थ को-वृत्तान्त को (सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ) सुनकर एवं उसे हृदय में धारण कर बहुत अधिक हृष्ट एवं संतुष्ट चित्त हुआ यावत् वह अपने आसन से उठा. (पायपीढाओ पच्चोरुहइ) और पादपीठ-(चरण रखने का आसन) के उपर पग रखकर वह नीचे उतरा (पाउयाओ ओमुयइ) पादुकाएं उसने उतार दी (एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ) एकशाटिक उत्तरासंग किया। (अंजलिमउलियग्गहत्थे केसिकुमारसमणा भिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ) फिर उसने अपने दोनों हाथों को जोडकर अंजलिरूप में परिवर्तित किया और केशीकुमारश्रमण के अभिमुख होकर अर्थात् जिस ओर केशीकुमार श्रमण विराजमान थे उस ओर सात आठ पग तक आगे जाकर (करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी) वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों की बडे विनय के साथ

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं) त्यार पछी ते चित्रसारथि ते उद्यानपालकोना मुखथी आ अर्थने वृत्तांतने (सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ) सांभळीने अने तेने हृदयमां धारण करीने खूब ज हृष्ट अने संतुष्ट चित्तवाळो थयो यावत् ते पोताना आसन परथी उभो थयो (पायपीढाओ पच्चोरुहइ) अने पादपीठ(पग मूकवानुं आसन विशेष)पर पग मूकीने नीचे उतर्यो (पाउयाओ ओमुयइ) अने पगमां पहेरेली पावडीओ उतारी दीधी (एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ) एकशाटिक उत्तरासंग कर्यो (अंजलिमउलियग्गहत्थे केसिकुमार समणाभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ) त्यार पछी तेणे पोताना बन्ने हाथो जोडीने अंजलि बनावी अने केशीकुमारश्रमणनी सामे मुख करीने एटले के जे दिशा तरफ केशीकुमार श्रमण विराजमान हता ते तरफ सात आठ पग सुधी सामे गया. (करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी)

अञ्जयो यावत्-सम्प्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्रगतमिहगत: पश्यतु मां भगवान् तत्रगत इहगतम् इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, तान् उद्यानपालकान् विपुलेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति सम्मानयति विपुलं जीविताई प्रीतिदानं ददाति प्रतिविसर्जयति। कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, एवमवादीत्-

अंजलि बनाई और उसे मस्तक पर से तीन बार घुमाकर इस प्रकार पाठ पढने लगा-(नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इहगए) अर्हन्त भगवंतों को नमस्कार हो यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए हैं मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक केशीकुमारश्रमण को नमस्कार हो यहां रहा हुआ मैं वहां पर मृगवनोद्यान में विराजमान आपको नमस्कार करता हूं। (पासउ मे तत्थगए इहगयं तिकट्टु वंदइ नमंसइ) वहां रहे हुए वे भगवान् यहां रहे हुए मुझे देखें इस प्रकार कहकर उसने वन्दना की, नमस्कार किया, (ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्ला लंकारेणं सक्कारेइ) इस तरह पराक्रम करके फिर उसने उन उद्यानपालकों का विपुल वस्त्र गंध माला एवं अलंकारों से सत्कार किया (सम्माणेइ) सम्मान किया (विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ) और अन्त में उनके लिये विपुल मात्रा में जीविकायोग्य प्रीतिदान दिया (पडिविसज्जेइ) फिर

त्यां अंजलि तेणे पोताना बन्ने हाथोनी कुंज नमावी अंजलि बनावी अने तेने मस्तक पर त्रण वखत फेरवीने आ प्रमाणे ने पाठनुं उच्चारण करवा लाग्यो— (नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए) अर्हन्त भगवंतोने मारा नमस्कार छे के जेओश्री यावत् सिद्धिगति नामकस्थानने प्राप्त थया छे मारा धर्माचार्य धर्मोपदेशक केशीकुमारश्रमणने नमस्कार छे अहींयां रहुं त्यां मृगवनोद्यानमां विराजमान आपश्रीने नमस्कार करूं छुं (पासउ मे तत्थगए इहगयं त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ) त्यां विराजमान ते भगवान अहीं विद्यमान मने जुवे आ प्रमाणे कहीने तेणे वंदना करी नमस्कार कर्या (ते उज्जाणवालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ) आ प्रमाणे पराक्रम करीने तेणे ते उद्यानपालकोनो विपुल वस्त्र गंध माळाओ अने अलंकारो वडे सत्कार कर्यो. (सम्माणेइ) सन्मान कर्युं (विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ) अने छेवटे तेमने विपुल मात्रामां जीविका योग्य प्रीतिदान आप्युं (पडिविसज्जेइ)

क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! चतुर्घण्टमश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयत यावत् प्रत्यर्पयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् क्षिप्रमेव सच्छत्र सध्वजं यावत् उपस्थापयित्वा तामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयन्ति। ततः खलु स चित्रः सारथिः कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट यावद् हृदयः स्नातः कृतबलिकर्मा यावत्-शरीरः यत्रैव चातुर्घण्टो यावद् दूरुह्य सको रण्ट० महता भटचटकर० तदेव यावत् पर्युपास्ते धर्मकथा ॥सू० १२१॥

विसर्जित कर दिया (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) तदनन्तर उसने अपने आज्ञाकारी सेवकों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही चार घंटों वाले अश्वरथ को घोडाओं से युक्त करके उपस्थित करो, यावत् फिर हमें इसकी खबर दो (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्त सज्झयं जाव उवट्ठवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति) इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने यावत् बहुत ही शीघ्र छत्र एवं ध्वजा से युक्त करके उस चार घटोंवाले अश्व रथ को घोडाओं से युक्त कर उपस्थित कर दिया और पीछे इस खबर को उसके पास दिया. (तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे चाउग्घंटे आसरहे जाव दुरुहित्ता सकोरंट० महया भडचडगर० तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहा) तब उस चित्र सारथिने कौटुम्बिक

ત્યાર પછી તેમને વિસર્જિત કર્યા (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) ત્યાર બાદ તેણે પોતાના આજ્ઞાકારી સેવકોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે ચાર ઘંટોવાળા અશ્વરથને ઘોડાઓથી સજ્જ કરીને અહીં ઉપસ્થિત કરો, યાવત્ પછી અમને ખબર આપો (तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्त सज्झयं जाव उवट्ठवित्ता तामाणत्तियं पच्चप्पिणंति) ત્યાર પછી તે કૌટુંબિક પુરુષોએ યાવત શીઘ્ર છત્ર અને ધ્વજાથી સુસજ્જિત કરીને તે ચાર ઘંટાઓવાળા અશ્વરથને ઘોડાઓથી યુક્ત કરીને ઉપસ્થિત કર્યો અને તેની ખબર પણ તેની પાસે પહોંચાડી દીધી (तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे चाउग्घंटे आसरहे जाव दुरुहित्ता सकोरंट० महया भड चडगर० तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहा) તે ચિત્ર સારથિએ કૌટુંબિક પુરુષોના મુખથી અશ્વરથ તૈયાર થઈ જવાની

तए णं से चित्ते' इत्यादि ।—व्याख्या निगदसिद्धा। नवरम्-चित्रसारथिगमनप्रकारवर्णनमेकादशाधिकशततमसूत्रे, विलोकनीयम् ॥ १२१ ॥

(मूलम्—तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० तहेव एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ, तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरिसिवाणं, तेसिं च बहूणं समणमाहण

पूर्णा के मुख से अश्वरथ के तैयार हो जाने की बात सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हृष्टतुष्ट यावत् हृदय वाले हुए स्नान किया बलिकर्म-अर्थात्-काकआदि पक्षियों के लिए अन्न का भाग दिया यावत् बहुमूल्य अल्पभारवाले आभूषणों से अलंकृत शरीर होकर जहां चार घंटों वाला अश्वरथ था वहां आया यावत् उस पर वह बैठ गया उसके बैठते ही छत्रधारीने उस पर कोरण्टपुष्पों की माला से युक्त छत्र तान दिया विशाल भटों की भीड आकर उसके चारों ओर उपस्थित हो गई यहां पहिले का समस्त कथन करना चाहिए यावत् उसने केशिकुमारश्रमण की पर्युपासना की केशिकुमारश्रमणने धर्मोपदेश दिया।

टीकार्थ—इसकी व्याख्या स्पष्ट है। नवर-चित्रसारथी के गमन का कथन १११ सूत्र में देखना चाहिए ॥ सू १२१ ॥

વાત સાંભળીને અને હૃદયમાં ધારણ કરીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઈને સ્નાન કર્યું બલિકર્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે અન્ન ભાગ અર્પિત કર્યો યાવત્ બહુમૂલ્ય અલ્પભારવાળા આભૂષણોથી પોતાના શરીરને અલંકૃત કર્યું અને ત્યાર પછી તે જ્યાં ચારઘંટાવાળો અશ્વરથ હતો ત્યાં આવ્યો યાવત્ તેમાં બેસી ગયો. તે બેઠો ત્યારે છત્રધારીઓએ કોરંટ પુષ્પોની માળાથી યુક્ત છત્ર તેની ઉપર તાણ્યું તે વખતે વિશાળ યોદ્ધાઓની ભીડ તેની આસપાસ આવીને ઊભી થઈ ગઈ અહીં પહેલાંની જેમજ બધું કથન સમજવું જોઈએ યાવત્ તેણે કેશિકુમારશ્રમણની પર્યુપાસના કરી કેશિકુમારશ્રમણે ધર્મોપદેશ આપ્યો.

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો અર્થ સ્પષ્ટ જ છે. નવર-ચિત્રસારથીના ગમનનું કથન ૧૧૧ મા સૂત્ર પ્રમાણે સમજવું જોઈએ ॥ ૧૨૧ ॥

भिक्खुयाणं तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा, सयस्स वि णं जणवयस्स ॥ सू. १२२ ॥)

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट० तथैव एवमवादीत्—एवं खलु भदन्त! अस्माकं प्रदेशी राजा अधार्मिकः यावत् स्वकस्यापि खलु जनपदस्य नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति तद् यदि खलु देवानुप्रिय! प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यायात् (तदा) बहुगुणतरं खलु भवेत्, प्रदेशिनो राज्ञस्तेषां च बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां, तेषां च बहूनां श्रमणमाहनभिक्षुका-

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से चित्ते सारही) उस चित्र सारथिने (केसिस्स कुमारसमणस्स) केशीकुमारश्रमण के (अंतिए) पास धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ तहेव एवं वयासी) धर्मका उपदेश सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हृष्टतुष्ट चित्त वाला हुआ एवं आनंद से विभोर होकर प्रीतिमनवाला हुआ, इस तरह परमसौमनस्यित होकर वह बोला (एवं खलु भंते! अम्हं पएसी राया अहम्मिए जाव सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) हे भदन्त! हमारा प्रदेशी राजा अधार्मिक है यावत् वह अपने देशके प्राप्त कर से भरणपोषणरूप व्यवहार को ठीक तरह से नहीं चलता है—(तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं होज्जा, पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं) तो

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યાર પછી (से चित्ते सारही) તે ચિત્ર સારથીએ (केसिस्स कुमारसमणस्स) કેશીકુમાર શ્રમણની (अंतिए) પાસેથી (धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० तहेव एवं वयासी) ધર્મ વિષે ઉપદેશ સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને હૃષ્ટ–તુષ્ટ ચિત્તવાળો થયો અને આનંદિત થઈને પ્રીતિયુક્તમનવાળો થયો. આ પ્રમાણે પરમસૌમનસ્યિત થઈને તે બોલ્યો (एवं खलु भंते! अम्हं पएसी राया अहम्मिए जाव सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) હે ભદંત! અમારો પ્રદેશી રાજા અધાર્મિક છે યાવત્ તે પોતાના દેશના લોકો પાસેથી કર મેળવીને પણ પ્રજાનું ભરણ–પોષણ–તેમજ રક્ષણ કરતો નથી. (तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं होज्जा, पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसवाणं)

णाम्। तद् यदि खलु देवानुप्रिय! प्रदेशिनो बहुगुणतर भवेत् स्वक स्यापि च खलु जनपदस्य ॥ सू० १२२ ॥

टीका—'तए णं से चित्ते' इत्यादि—ततः=तदनन्तर खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके=समीपे धर्म जिनोक्त श्रुत्वा=कर्ण गोचरीकृत्य निशम्य=हृदयधार्य हृष्टतुष्ट तथैव=पूर्ववदेव हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्हृदयः, इति संग्राह्यम्। अर्थस्तु पूर्व गतः। एवमवादीत्—किमवादीत्? इत्याह—एव खलु यत् हे भदन्त अस्माकं प्रदेशी राजा अधार्मिकः यावत्—यावत्पदेन—अधर्मिष्ठादीनि सर्वाणि विशेषणानि एकसप्ततमसूत्रोक्तानि सग्राह्याणि, एषामर्थोऽपि तत्रैव विलो

यदि आप हे देवानुप्रिय! उस प्रदेशी राजा को जिनप्रज्ञप्त धर्म का उप देश देवें तो वह उस प्रदेशी राजा के लिये और परलोक में बहुत गुण कारी होगा, तथा अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी एवं सरीसृप-सर्प आदिकों का हितावह होगा (तेसिं च बहूण समणमाहणभिक्खु याण) और उन अनेक श्रमण माहण, भिक्षुओं के लिये बहुत ही अधिक लाभदायक होगा (त जइ ण देवाणुप्पिया! पएसिस्स बहुगुणतर होज्जा, सयस्स वि य ण जणवयस्स) यदि वह धर्मो देश प्रदेशी राजा का हित कारक हो जाता है तो उसके जनपद-देश का इससे बडा भला होगा।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है। 'हट्ठतुट्ठ तहेव एव वयासी' में 'तथैव' पद से 'हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्हृदयः' इस पाठ का ग्रहण हुआ है इन पदों का अर्थ पहिले लिखा जा चुका है 'अहम्मिए जाव' में आगत पद से' अधर्मिष्ठ' आदिक विशेषणों का ग्रहण

જો આપ દેવાનુપ્રિય તે પ્રદેશી રાજાને જિન પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો ઉપદેશ આપો તો તે પ્રદેશી રાજાને આ લોક અને પરલોક અતીવ શુભકારી થાય અને ઘણાં દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી અને સરીસૃપ એટલે કે સાપ વગેરેના માટે પણ હિતાવહ થાય (तेसिं च बहूण समणमाहणभिक्खुयाण) અને તે ઘણા શ્રમણ માહણ ભિક્ષુકોના માટે પણ અતીવ હિતાવહ થાય થાય. (त जइ ण देवाणुप्पिया! पएसिस्स बहुगुणतर होज्जा सयस्स वि य ण जणवयस्स) જો આપનો ધર્મોપદેશ પ્રદેશી રાજા પોતાના જીવનમાં ઉતારે તો તેનું પોતાનું અને તેના જનપદ-દેશનું પણ તેનાથી ઘણું કલ્યાણ થાય તેમ છે

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે "हट्ठ तुट्ठ तहेव वयासी" માં "तथैव" પદથી "हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवश विसर्पद्हृदयः" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે આ સર્વ પદોનો અર્થ પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે 'अहम्मिए जाव" માં આવેલ यावत् પદથી 'अधर्मिष्ठः

कनीयः, स स्वकस्यापि जनपदस्य=देशस्य करभरवृत्ति-करेण भरः-भरणं-पोषणं, तद्रूपां वृत्तिं=व्यवहारं नो सम्यक् प्रवर्त्तयति, तद् यदि खलु हे देवानुप्रिय! प्रदेशिने राज्ञे भवान् धर्मं जिनप्ररूपितम् आख्यायात्-कथयेत् तदा प्रदेशिनो राज्ञः बहुगुणतरम्-इहलोकपरलोकसफलीकरणलक्षणं दया-दानादिरूपं वाऽत्यन्तगुणं भवेत्! तथा बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षि-सरीसृपाणाम्-तत्र-द्विपदाः=दासीदासादयः चतुष्पदाः ये मृगाः=आरण्याः,पशवः =ग्राम्या गोमहिष्यादयः, सरीसृपाः=भुजपरिसर्पाः-गोधादयः उरःपरिसर्पाश्च सर्पादयः, तेषां बहुगुणतरं=पालनरक्षणरूपं भवेत् तथा-श्रमणमाहनभिक्षु-काणाम्-तत्र-श्रमणाः=शाक्यादयः, माहनाः=ब्राह्मणाः, भिक्षुकाः=भिक्षाजीविनः तेषां च बहुगणतरम्=भिक्षालाभरक्षणादिरूपमतिशयगुणं भवेत्। तत् यदि खलु भदन्त! प्रदेशिनो राज्ञो बहुगुणतरं भवेत् तदा तस्य स्वकस्यापि जन-पदस्य=देशस्य बहुगुणतरं योगक्षेमलक्षणं भवेदिति ॥ सू० १२२ ॥

हुआ है। ये सब विशेषण १०१ सूत्र में कहे जा चुके है। वहीं पर उनका अर्थ भी लिखदिया है। 'बहुगुणतरम्' का तात्पर्य उस प्रदेशी राजा को इस लोक एवं परलोक को सफल करनेरूप बहुगुण वाला अथवा दयादा-नादिरूप अत्यन्तगुणवाला होगा। दासीदास आदि द्विपद से, मृगादि चतुष्पद से, ग्राम्य गोमहिष आदि पशुपद से, भुजपरिसर्प गोधादिक, एवं उरः परिसर्प सर्पादिक, सरीसृप पद से गृहीत हुए हैं। इन द्विपदादिकों का पालन रक्षणरूप बहुतरगुणवाला वह धर्मोपदेश होगा. शाक्यादिक श्रमण शब्द से ब्राह्मण माहन शब्द से, तथा भिक्षाजीवी भिक्षुक पद से लिये गये हैं। इन सबके लिये भिक्षालाभ एवं संरक्षणादिरूप अतिशय गुणवाला वह धर्मोपदेश होगा ॥सू.१२२॥

વગેરે વિશેષણોનું ગ્રહણ સમજવુ જોઇએ આ બધા વિશેષણો ૧૦૧ મા સૂત્રમા આવેલા છે. એનો અર્થ પણ તે સૂત્રમા જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. 'बहुगुणतरम्' નો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે તે ધર્મોપદેશ તે પ્રદેશી રાજાના માટે આ લોકને તેમજ પરલોકને સફળ બનાવવા રૂપ બહુગુણવાળો થશે અથવા તો દયા દાન વગેરે રૂપ અત્યંત ગુણવાળો થશે. દ્વિપદથી દાસી દાસ વગેરે ચતુષ્પદથી મૃગ વગેરે, પશુપદથી ગ્રામ્ય ગોમહિષ વગેરે, સરિસૃપ પદથી ભુજપરિસર્પ ગોધાદિક અને ઉર પરિસર્પ-સર્પાદિકનુ 'સરીસૃપા પદથી ગ્રહણ થયુ છે આ દ્વિપદ વગેરેના માટે પાલન રક્ષણરૂપ બહુતર ગુણ-વાળો તે ધર્મોપદેશ થશે શ્રમણ શબ્દથી શાકય વગેરે, માહન શબ્દથી બ્રાહ્મણ તેમજ ભિક્ષુકપદથી ભિક્ષાજીવીનુ ગ્રહણ કરવામા આવ્યુ છે આ સર્વના માટે સંરક્ષણ તેમજ ભિક્ષા લાભ વગેરેથી અધર્મોપદેશ અતિશય ગુણવાળો થશે. ॥સૂ૦ ૧૨૨॥

णाम्। तद् यदि खलु देवानुप्रिय! प्रदेशिनो बहुगुणतरं भवेत् स्वक स्यापि च खलु जनपदस्य ॥ सू० १२२ ॥

टीका—'तए णं से चित्ते' इत्यादि—ततः=तदनन्तरं खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके=समीपे धर्मं जिनोक्तं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य निशम्य=हृदयधार्य हृष्टतुष्ट तथैव=पूर्ववदेव हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्हृदयः, इति संग्राह्यम्। अर्थस्तु पूर्वं गतः। एवमवादीत्–किमवादीत्? इत्याह–एवं खलु भदन्त! अस्माकं प्रदेशी राजा अधार्मिकः यावत्–यावत्पदेन–अधर्मिष्ठादीनि सर्वाणि विशेषणानि एकत्रिंशत्तमसूत्रोक्तानि संग्राह्याणि, एषामर्थोऽपि तत्रैव विलो

यदि आप हे देवानुप्रिय! उस प्रदेशी राजा को जिनप्ररूपित धर्म का उपदेश देवे तो यह उस प्रदेशी राजा के लिये और परलोक में बहुत गुणकारी होगा, तथा अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी एवं सरीसृप–सर्प आदिकों का हितावह होगा (तेसिं च बहूणं समणमाहणभिक्खुयाण) और उन अनेक श्रमण माहण, भिक्षुकों के लिये बहुत ही अधिक आवश्यक होगा (तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा, सयस्स वि य णं जणवयस्स) यदि वह धर्मो देश प्रदेशी राजा का हितकारक हो जाता है तो उसके जनपद–देश का इससे बड़ा भला होगा।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है। 'हट्ठतुट्ठ तहेव एवं वयासी' में ,तथैव' पद से 'हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्हृदयः' इस पाठ का ग्रहण हुआ है इन पदों का अर्थ पहिले लिखा जा चुका है। 'अहम्मिए जाव' में आगत पद से' अधर्मिष्ठ' आदिक विशेषणों का ग्रहण

જો આપ દેવાનુપ્રિય તે પ્રદેશી રાજાને જિન પ્રરૂપિત ધર્મનો ઉપદેશ આપો તો તે પ્રદેશી રાજાને આ લોક અને પરલોક અતીવ ગુણકારી થાય અને ઘણાં દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી અને સરીસૃપ એટલે કે સાપ વગેરેના માટે પણ હિતાવહ થાય (तेसिं च बहूणं समणमाहणभिक्खुयाण) અને તે ઘણા શ્રમણ માહણ ભિક્ષુકોના માટે પણ અતીવ હિતાવહ થાય થાય. (तं जइ ण देवाणुप्पिया! पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा, सयस्स वि य णं जणवयस्स) જો આપનો ધર્મોપદેશ પ્રદેશી રાજા પોતાના જીવનમાં ઉતારે તો તેનું પોતાનું અને તેના જનપદ–દેશનું પણ તેનાથી ઘણું કલ્યાણ થાય તેમ છે

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે "हट्ठ तुट्ठ तहेव वयासी 'માં' तथैव" પદથી "हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्हृदयः" આપાઠનો સંગ્રહ થયો છે આ સવ પદોનો અર્થ પહેલા સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે "अहम्मिए जाव" માં આવેલ યાવત્ પદથી 'अधर्मिष्ठः

[प]डिलाभेइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि० (४) जत्थ वि य णं समणेण [व]ा० अभिसमागच्छइ तत्थवि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता [चि]ट्ठेइ, एएणवि ठाणेणो चित्ता ! जाव केवलिपन्नत्त धम्मं लभइ [स]वणयाए । तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा तंचेव [स]व्व भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कह णं चित्ता! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो?॥सू०१२३॥)

छाया–ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्र सारथिम् एवमवादीत्–एवं खलु चतुर्भिः स्थानैः चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै, तद्यथा– (१) आरामगतं वा उद्यानगतं वा श्रमणं वा माहनं वा नो अभिगच्छति, नो वन्दते, नो नमस्यति, नो सत्करोति, नो सम्मानयति, नो कल्याण मङ्गल दैवतं चैत्यं पर्युपास्ते, अर्थान् हेतून् प्रश्नान् कारणानि व्याकरणानि पृच्छति

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

(सूत्रार्थ–(तए णं से) इसके बाद (केसीकुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (चित्तं सारहिं) चित्र सारथि से (एवं वयासी) ऐसा कहा–(एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए) हे चित्र ! जीव चार कारणों से केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। (त जहा– आरामगयं वा उज्जाणगयं वा, समणं वा णो अभिगच्छइ, णो वंदइ, णो णमंसइ, णों सक्कारेइ, णो सम्माणेइ, कल्लाण मंगल देवयं चेइयं पज्जुवासेइ) जैसे–आराम में आये हुए या उद्यान में आये हुए श्रमण के वा माहण के

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ —(तए णं) त्यार पछी (केसीकुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणे (चित्त सारहिं) चित्रसारथिने (एवं वयासी) आ प्रमाणे कह्युं (एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्त धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए) हे चित्र ! जीव चार कारणोने लीधे केवली प्रज्ञप्त धर्मनुं श्रवण करी शकतो नथी (त जहा– आरामगयं वा उज्जाणगयं वा, समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ, णो वंदइ, णो णमंसइ, णो सक्कारेइ, णो सम्माणेइ, णो कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ) जेमके आराममां पधारेला के उद्यानमां पधारेला श्रमण के माहणनी

मूलम्—तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा, सवणयाए, तं जहा– आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छेइ, एएणं ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए। (१) उवस्सयगयं समणं वा तं चेव जाव एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए। (२) गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा नो जाव पज्जुवासइ,नो विउलेणं असण पाणखाइमसाइमेणं पडिलाभइ० नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता। जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए। (३) जत्थ वि णं समणेणं वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थवि णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणवि ठाणेणं चित्ता। जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं णो लभइ सवणयाए, (४) एएहिं च णं चित्ता ! चउहिं ठाणेहिं जीवे नो लभइ केवलिपन्नत्तं धम्मं सवणयाए। चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं जहा–(१) आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता। जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए। एवं [२] उवस्सगयं० [३] गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेणं जाव

पडिलाभेइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि० (४) जत्थ वि य णं समणेण वा० अभिसमागच्छइ तत्थवि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठेइ, एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जाव केवलिपन्नत्त धम्मं लभइ सवणयाए । तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा तंचेव सव्व भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो?॥सू०१२३॥)

छाया-ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिम् एवमवादीत्-एवं खलु चतुर्भिः स्थानैः चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै, तद्यथा-(१) आरामगतं वा उद्यानगतं वा श्रमणं वा माहनं वा नो अभिगच्छति, नो वन्दते, नो नमस्यति, नो सत्करोति, नो सम्मानयति, नो कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपास्ते, अर्थान् हेतून् प्रश्नान् कारणानि व्याकरणानि पृच्छति

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

(सूत्रार्थ-(तए णं से) इसके बाद (केसीकुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (चित्तं सारहिं) चित्र सारथि से (एवं वयासी) ऐसा कहा-(एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए) हे चित्र ! जीव चार कारणों से केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। (तं जहा-आरामगयं वा उज्जाणगयं वा, समणं वा णो अभिगच्छइ, णो वंदइ, णो णमंसइ, णो सक्कारेइ, णो सम्माणेइ, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ) जैसे-आराम में आये हुए या उद्यान में आये हुए श्रमण के या माहण के

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ —(तए णं) त्यार पछी (केसीकुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणे (चित्तं सारहिं) चित्रसारथिने (एवं वयासी) आ प्रमाणे कह्युं (एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए) हे चित्र ! जीव चार कारणोने लीधे केवली प्रज्ञप्त धर्मनुं श्रवण करी शकतो नथी (तं जहा-आरामगयं वा उज्जाणगयं वा, समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ, णो वंदइ, णो णमंसइ, णो सक्कारेइ, णो सम्माणेइ, णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ) जेमके आराममां पधारेला के उद्यानमां पधारेला श्रमण के महाणनी-

एतेन स्थानेन चित्र! जीव केवलिप्रज्ञप्तं धर्म नो लभते श्रवणतायै। (२) उपाश्रयगतं श्रमण वा तदेव यावत् एतेनापि स्थानेन चित्र! जीव केवलि प्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै। (३) गोचराग्रगतं श्रमणं वा माहनं वा

सन्मुख सत्कार आदि करने के निमित्त जो नहीं जाता है, मधुर वचनों से जो सुखशातादि प्रश्नपूर्वक उनकी स्तुति नहीं करता है, उनके समक्ष अपने मस्तक को जो नहीं झुकाता है, अभ्युत्थानादि द्वारा जो उनका सत्कार नहीं करता है, वसति आदि के देने से जो उनका सन्मान नहीं करता है, तथा कल्याणस्वरूप, मंगलस्वरूप धर्मदेवस्वरूप मानकर एवं विशिष्टज्ञान वाला मानकर जो उनकी पर्युपासना नहीं करता है, (नो अट्ठाइं, हेऊइं पसिणाइं कारणाइं, वागरणाइं पुच्छेइ) अर्थ को-जीवाजीवादिक पदार्थों को, हेतुओं को-अन्यथानुपपत्तिरूप साधनों को, प्रश्नों को, कारणों को, व्याकरणों को, नहीं पूछता है, (एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) इस कारण से हे चित्र! जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। यह प्रथम कारण है। (१) (उवस्सगयं समणं वा तं चेव, जाव एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) उपाश्रय में आए हुए श्रमण के सत्कार आदि करने के निमित्त जो उनके समक्ष नहीं जाता है यावत् उनसे व्याकरणों को नहीं पूछता है, ऐसा जीव इस द्वितीय कारण से भी केवलि प्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। (२)

સામે જે સત્કાર વગેરે કરવા માટે જતો નથી મધુર વચનોથી સુખશાતાદિ પ્રશ્નપૂર્વક તેમની સ્તુતિ કરતો નથી તેમની સામે પોતાનું મસ્તક નમ્ર ભાવે નમાવતો નથી, અભ્યુત્થાન વગેરે વડે જે તેમનો સત્કારતો નથી વસતિ વગેરે આપીને તેમનું સન્માન કરતો નથી તેમજ કલ્યાણ સ્વરૂપ મંગળસ્વરૂપ, ધર્મદેવસ્વરૂપ માનીને અને વિશિષ્ટ જ્ઞાન સપન્ન માનીને જે તેમની પર્યુપાસના કરતો નથી. (नो अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं, पुच्छेइ) અર્થોને-જીવ અજીવ વગેરે પદાર્થોને, હેતુઓને અન્યથાનુપપત્તિરૂપ સાધનોને,પ્રશ્નોને કારણોને, વ્યાકરણોને પૂછતો નથી,(एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) હે ચિત્ર! આ કારણને લીધે જ જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. આ પહેલું કારણ છે (૧) (उवस्सयगयं समणं वा तं चेव जाव एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) ઉપાશ્રયમાં પધારેલા શ્રમણ કે માહનનો સત્કાર વગેરે કરવા માટે જે તેમની સામે જતો નથી યાવત્ તેમને વ્યાકરણો વિષે પ્રશ્ન કરતો નથી આ જાતનો જીવ આ બીજા કારણથી પણ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું

नो यावत् पर्युपास्ते नो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रतिलम्भयति० नो अर्थान् यावत् पृच्छति, एतेन स्थानेन चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्त धर्मं नो लभते श्रवणतायै। (४) यत्रापि खलु श्रमणेन वा माहनेन वा सार्द्धम् अभिसमागच्छति, तत्रापि खलु हस्तेन वा वस्त्रेण वा छत्रेण वा आत्मानमावृत्य तिष्ठति, नो अर्थान् यावत् पृच्छति एतेनापि स्थानेन चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै, एतैश्च खलु चित्र! चतुर्भिः स्थानैर्जीवः नो लभते केवलिप्रज्ञप्त धर्मं श्रवणतायै ॥

(गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा नो जाव पज्जुवासइ, नो विउलेण असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभइ० नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ एएण ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं ने लभइ सवणयाए) गोचरी के लिये-भिक्षा के लिये-गॉव में आये हुए श्रमण के या माहण का जो सत्कार आदि करने के निमित्त उनके समक्ष नहीं जाता है, यावत् उनकी पर्युपासना नहीं करता है. तथा विपुल अशन, पान. खाद्य, स्वाद्यरूप चार प्रकार के आहार द्वारा जो उन्हें प्रतिलाभित नहीं करता है, और जो अर्थ से लेकर व्याकरणतक उनसे नहीं पूछता है वह जीव हे चित्र! इस तृतीय कारण से भी केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है (३) (जत्थ वि णं समणेणं वा माहणेणं वा सद्धिं अभिसमागच्छइ, तत्थ वि णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा, अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि० ठाणेण चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्त धम्मं णो लभइ सवणयाए एएहिं च णं चित्ता! चउहिं ठाणेहिं जीवे नो लभइ, केवलिपन्नत्त धम्मं सवणयाए) इसी

શ્રવણ કરી શકતો નથી. (૨) (गोयरग्गगयं समणं वा महणं वा नो जाव पज्जुवासइ, नो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभइ० नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ एए ण ठाणेण चित्ता! जीवे केवलि पन्नत्त धम्मं लभइ सवणयाए) ગોચરી માટે-ભિક્ષા માટે ગામમા આવેલા શ્રમણ કે માહણ વગેરેનો, સત્કાર વગેરે કરવા માટે જે તેમની સામે જતો નથી, યાવત્ તેમની પર્યુંપાસના કરતો નથી, તેમજ વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યરૂપ ચાર પ્રકારના આહારવડે જે તેમને પ્રતિલાભિત કરતો નથી અને જે અર્થથી માંડીને વ્યાકરણ સુધીના બધા વિષયોના બાબતમા તેમને પ્રશ્નો પૂછતો નથી હે ચિત્ર! તે જીવ આ ત્રીજા કારણવડે પણ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી (૩) (जत्थ वि ण समणेण वा माहणेणं वा सद्धिं अभिसमागच्छइ, तत्थ वि ण हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा, अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि ठाणेण चित्ता! जीवः केवलिपन्नत्त धम्मं णो लभइ सवणयाए एएहिं च ण चित्ता! चउहिं ठाणेहिं जीवे नो लभइ, केवलि पन्नत्त धम्मं सवणयाए) આ પ્રમાણે

एतेन स्थानेन चित्र! जीव केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै। (२) उपाश्रयगतं श्रमणं वा तदेव यावत् एतेनापि स्थानेन चित्र! जीवःकेवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै। (३) गोचराग्रगतं श्रमणं वा माहनं वा

सन्मुख सत्कार आदि करने के निमित्त जो नहीं जाता है, मधुर वचनों से जो सुखशातादि प्रश्नपूर्वक उनकी स्तुति नहीं करता है, उनके समक्ष अपने मस्तक को जो नहीं झुकाता है, अभ्युत्थानादि द्वारा जो उनका सत्कार नहीं करता है, वसति आदि के देने से जो उनका सन्मान नहीं करता है, तथा कल्याणस्वरूप, मंगलस्वरूप धर्मदेवस्वरूप मानकर एवं विशिष्टज्ञान वाला मानकर जो उनकी पर्युपासना नहीं करता है, (नो अट्ठाइं, हेऊइं पसिणाइं कारणाइं, वागरणाइं पुच्छेइ) अर्थ को–जीवाजीवादिक पदार्थों को, हेतुओं को–अन्यथानुपपत्तिरूप साधनों को, प्रश्नों को, कारणों को, व्याकरणों को, नहीं पूछता है, (एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) इस कारण से हे चित्र! जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। यह प्रथम कारण है। (१) (उवस्सगयं समणं वा तं चेव जाव एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) उपाश्रय में आये हुए श्रमण के सत्कार आदि करने के निमित्त जो उनके समक्ष नहीं जाता है यावत उनसे व्याकरणों को नहीं पूछता है, ऐसा जीव इस द्वितीय कारण से भी केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। (२)

સામે જે સત્કાર વગેરે કરવા માટે જતો નથી મધુર વચનોથી સુખશાતાદિ પ્રશ્નપૂર્વક તેમની સ્તુતિ કરતો નથી, તેમની સામે પોતાનું મસ્તક નમ્ર કરીને નમાવતો નથી, અભ્યુત્થાન વગેરે વડે જે તેમનો સત્કારતો નથી, વસતિ વગેરે આપીને તેમનું સન્માન કરતો નથી તેમજ કલ્યાણ સ્વરૂપ મંગલસ્વરૂપ, ધર્મદેવસ્વરૂપ માનીને અને વિશિષ્ટ જ્ઞાન સંપન્ન માનીને જે તેમની પર્યુપાસના કરતો નથી. (नो अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं, पुच्छइ) અર્થોને–જીવ અજીવ વગેરે પદાર્થોને, હેતુઓને અન્યથાનુપપત્તિરૂપ સાધનોને, પ્રશ્નોને કારણોને, વ્યાકરણોને પૂછતો નથી, (एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) હે ચિત્ર! આ કારણને લીધે જ જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. આ પહેલું કારણ છે (૧) (उवस्सयगयं समणं वा तं चेव जाव एए ण वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) ઉપાશ્રયમાં પધારેલા શ્રમણ કે માહનનો સત્કાર વગેરે કરવા માટે જે તેમની સામે જતો નથી. યાવત્ તેમને વ્યાકરણો વિષે પ્રશ્ન કરતો નથી. આ જાતનો જીવ આ બીજા કારણથી પણ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું

यावत् पर्युपास्ते, विपुलेन यावत् प्रतिलम्भयति. अर्थान् यावत् पृच्छति, एतेनापि०, (४) यत्रापि च खलु श्रमणेन वा० अभिसमागच्छति तत्रापि च खलु नो हस्तेन वा यावत् आवृत्य तिष्ठति, एतेनापि स्थानेन चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्त धर्म लभते श्रवणतायै, त्वं च खलु चित्र! प्रदेशी राजा आरामगत वा तदेव सर्व भणितव्यम् आदिमेन गमकेन यावद् आत्मानमावृत्य-तिष्ठति, तत्कथं खलु चित्र! प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यास्यामः? ॥सू०१२३॥

से या माहण से उनको वन्दना करता हुआ, नमस्कार करता हुआ, पर्युपासना करता हुआ अर्थों को यावत् पूछता है, ऐसा जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है. (२)(गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेणं जाव पडिलाभेइ, अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि०) इसी प्रकार जो जीव गोचरीगतश्रमण की या माहण की यावत् पर्युपासना करता है, विपुल आहार से उन्हे प्रतिलाभित करता है, उनसे अर्थों को यावत् पूछता है– वह जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है, (३) (जत्थ वि य णं समणेण वा० अभिसमागच्छइ, तत्थ वि य ण णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठेइ) जहां पर भी श्रमण या माहण के साथ संगत होता है वहा पर जो जीव अपने आप को हाथ से यावत् आवृत्त छिपाता नहीं है ऐसा वह जीव इस चतुर्थ कारण को लेकर केवलिप्रज्ञप्त जिनधर्म का श्रवण कर सकता है (४) (तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया आरामगय वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएण गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कहं ण चित्ता!

धर्मनुं श्रवणु करी शके छे.(१) એज प्रमाणे (उवस्सयगय०) आ प्रमाणे जे જીવ उपाश्रयोमा आवेला श्रमणोने के माहणोने वन्दन करतो, नमस्कार करतो, पर्युपासना करतो, अर्थोने यावत् पूछे छे, એवो જીવ केवलिप्रज्ञप्त धर्मनु श्रवणु करी शके छे (२)गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेण जाव पडिलाभेइ, अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि.) आ प्रमाणे जे જીવ गोचरी माटे नीकळेला श्रमणुनी के माहणुनी यावत् पर्युपासना करे छे विपुल आहारथी तेमने प्रतिलाभित करे छे.तेमने अर्थो विषे यावत् पूछे छे ते જીવ केवलिप्रज्ञप्त धर्मनु श्रवणु करे छे. (३) (जत्थ वि य णं समणेण वा अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठेइ) श्रमणु के महाणु ज्यां मळे જે જીવ तेओश्रीने जोईने पोतानी जातने पोताना हाथो वडे यावत् आवृत करतो नथी એवो ते જીવ आ चोथा कारणुने लीधे केवलि प्रज्ञप्त जिनधर्मनुं श्रवणु करी शके छे. (४) (तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएण गमएणं जाव

चतुर्भिः स्थानैः चित्र ! जीवाः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभते श्रवणतायै, तद्यथा (१) आरामगतं वा उद्यानगतं वा श्रमणं वा माहनं वा वन्दते नमस्यति यावत् पर्युपास्ते अर्थान् यावत् पृच्छति, एतेन स्थानेन चित्र ! जीवाः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभते श्रवणतायै, एवं (२) उपाश्रयगतम् । (३) गोचराग्रगतं श्रमणं वा

प्रकार जो श्रमण अथवा माहन के साथ संगत हो जाता है वहां पर भी यह श्रमण अथवा माहन मुझे पहिचान न ले इस हेतु से जो अपने आपको हाथसे या वस्त्र से या छत्र से आवृत कर लेता है एवं उनसे प्रश्नादि कुछभी नहीं पूछता है हे चित्र ! इस चतुर्थ कारण से भी जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं पाता है. (४) इस प्रकार हे चित्र ! ये चार कारण हैं कि जिनकी वजह से यह जीव केवली भगवान् द्वारा कहे गये धर्म को सुन नहीं पाता (चउहिं ठाणेहिं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्त धम्मं लभइ सवणयाए) हे चित्र! चार कारणों से जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है (तं जहा-आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ, नमसइ जाव पज्जुवासइ) वे चार कारण इस प्रकार से हैं-आरामगत या उद्यानगत श्रमण को या माहण को जो वन्दना करता है नमस्कार करता है, यावत् उनकी पर्युपासना करता है (अट्ठाइं जाव पुच्छइ) अर्थों को यावत् पूछता है (एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) इस कारण को लेकर हे चित्र ! यह जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता (१) है, एवं (उवस्सयगए) इसी प्रकार जो जीव उपाश्रयों में आये हुए श्रमण

જે શ્રમણ કે માહણની સામે આવી જતાં તે શ્રમણ કે માહણ તેને ઓળખી લે નહિ તે માટે જે પોતાની જાતને હાથવડે કે વસ્ત્ર વડે કે છત્રવડે છુપાવી લે છે અને તેમને પ્રશ્ન વગેરે કંઇ પૂછતો નથી હે ચિત્ર ! આ ચોથા કારણથી પણ જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી (૪) આ પ્રમાણે હે ચિત્ર! આ ચાર કારણોને લીધે જ જીવ કેવલીભગવાન વડે કહેલા ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી (चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) हेचित्र ! ચાર કારણોથી જીવ કેવલિ-પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકે છે (तं जहा—आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा, वंदइ, नमंसइ जाव पज्जुवासइ) તે ચાર કારણો આ પ્રમાણે છે-આરામમાં પધારેલા કે ઉદ્યાનમાં પધારેલા શ્રમણને કે માહણને જે વંદન કરે છે નમસ્કાર કરે છે યાવત તેમની પર્યુપાસના કરે છે (अट्ठाइं जाव पुच्छइ) અર્થોને યાવત્ પૂછે છે (एएणं ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) આ કારણને લીધે હે ચિત્ર ! તે જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત

यावत् पर्युपास्ते, विपुलेन यावत् प्रतिलम्भयति. अर्थान् यावत् पृच्छति, एतेनापि०, (४) यत्रापि च खलु श्रमणेन वा० अभिसमागच्छति तत्रापि च खलु नो हस्तेन वा यावत् आवृत्य तिष्ठति, एतेनापि स्थानेन चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभते श्रवणतायै, तव च खलु चित्र ! प्रदेशी राजा आरामगत वा तदेव सर्व भणितव्यम् आदिमेन गमकेन यावद् आत्मानमावृत्य तिष्ठति, तत्कथं खलु चित्र ! प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यास्यामः ? ॥सू०१२३॥

से या माहण से उनको वन्दना करता हुआ, नमस्कार करता हुआ, पर्युपासना करता हुआ अर्थों को यावत् पूछता है, ऐसा जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है. (२)(गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेणं जाव पडिलाभेइ, अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि०) इसी प्रकार जो जीव गोचरीगतश्रमण की या माहण की यावत् पर्युपासना करता है, विपुल आहार से उन्हे प्रतिलाभित करता है, उनसे अर्थो को यावत् पूछता है— वह जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है, (३) (जत्थ वि य णं समणेण वा० अभिसमागच्छइ, तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठेइ) जहां पर भी श्रमण या माहण के साथ संगत होता है वहा पर जो जीव अपने आप को हाथ से यावत् आवृत्त छुपाता नहीं है ऐसा वह जीव इस चतुर्थ कारण को लेकर केवलिप्रज्ञप्त जिनधर्म का श्रवण कर सकता है (४) (तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कहं णं चित्ता !

ધર્મનું શ્રવણ કરી શકે છે.(૧) એજ પ્રમાણે (उवस्सयगय०) આ પ્રમાણે જે જીવ ઉપાશ્રયોમા આવેલા શ્રમણોને કે માહનોને વન્દન કરતો, નમસ્કાર કરતો, પર્યુપાસના કરતો, અર્થોને યાવત્ પૂછે છે, એવો જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકે છે (૨)गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेणं जाव पडिलाभेइ, अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि.) આ પ્રમાણે જે જીવ ગોચરી માટે નીકળેલા શ્રમણની કે માહણની યાવત્ પ્રર્યુપાસના કરે છે, વિપુલ આહારથી તેમને પ્રતિલાભિત કરે છે.તેમને અર્થો વિષે યાવત્ પૂછે છે તે જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરે છે (૩) (जत्थ वि य णं समणेण वा अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठेइ) શ્રમણ કે મહાણ ગમે ત્યા મળે જે જીવ તેઓશ્રીને જોઈને પોતાની જાતને પોતાના હાથો વડે યાવત્ આવૃત કરતો નથી એવો તે જીવ આ ચોથા કારણને લીધે કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત જિનધર્મનું શ્રવણ કરી શકે છે (૪) (तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा त चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव

टीका—'तएणं केसी' इत्यादि—

ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-हे चित्र ! एवं खलु त्वं विजानीहि, यद् चतुर्भिः स्थानैः=कारणैः जीवः केवलिप्रज्ञप्तं=तीर्थकृदुपदिष्टं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं नो लभते=नो प्राप्नोति तद्यथा-आरामगतम्-आरामं=विविधपुष्पजात्युपशोभितं, तत्र गतं=प्राप्तं वा, उद्यानगतम्-उद्यानं=पुष्पफलोपेतवृक्षोपशोभितं बहुजनसेव्यम् उद्यानिकास्थानं=तत्र गतं=प्राप्तं वा श्रमणं साधुं वा माहनं=व्रतधारितं श्रावकं वा नो अभिगच्छति=सत्काराद्यर्थं नो अभिमुखं याति नो वन्दते=

पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो) हे चित्र ! तुम्हारा प्रदेशीराजा आराम आदिगत श्रमण के या माहण के न सन्मुख जाता है यावत् न उनकी पर्युपासना करता है, इत्यादि प्रथम गम से लेकर यह चौथे गम तक युक्त बना हुआ है तो फिर मैं उसके लिये किस प्रकार से केवलिप्रज्ञप्त धर्म का उपदेश दूं ।)

टीकार्थ—केशीकुमारश्रमणने चित्र सारथीसे जो कुछ कहा है, वह इस सूत्र द्वारा प्रकट किया गया है-इसमें यह समझाया गया है कि कौन जीव किन २ कारणों से केवलिप्रज्ञप्त धर्म सुन सकता है और कौन जीव किन २ ही कारणों से उसे नहीं सुन सकता है केवलिप्रज्ञप्त धर्म की अप्राप्ति में प्रथम कारण यह है कि श्रमण या माहन-१२ व्रतों का पालनकर्ता-गृहस्थ जब किसी उद्यान में-विविध पुष्पों से या फलों से युक्त वृक्षों से शोभित ऐसे अनेकजनसेव्य बगीचे में या आराम में-विविध प्रकार की

अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ त कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो) હે ચિત્ર ! તમારો પ્રદેશી રાજા આરામ કે ઉદ્યાનમાં આવેલા શ્રમણ કે માહણની સામે સત્કારવા જતો નથી યાવત્ તેમની પર્યુપાસના પણ કરતો નથી અને આ પ્રમાણે તે પ્રથમ ગમથી માંડીને ચોથા ગમથી યુક્ત બનેલો છે તો પછી હું તેને કેવલિપ્રજ્ઞપ્તધર્મનો ઉપદેશ કેવી રીતે આપું ?

ટીકાર્થ—કેશીકુમાર શ્રમણે ચિત્રસારથિને જે કંઈ કહ્યું છે તે આ સૂત્ર વડે સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે આ સૂત્રવડે આ પ્રમાણે સમજાવવામાં આવ્યું છે કે કયો જીવ કયા કયા કારણોને લીધે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકે છે અને કયો જીવ કયા કયા કારણોથી તેનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મની અપ્રાપ્તિમાં પહેલું કારણ એ બતાવવામાં આવ્યું છે કે શ્રમણ કે માહણ-૧૨ વ્રતોનું પાલન કરનાર ગૃહસ્થ-જ્યારે ગમે તે ઉદ્યાનમાં વિવિધ પુષ્પોથી કે ફળોથી યુક્ત વૃક્ષોથી શોભિત અનેક જનસેવ્ય બગીચામાં કે આરામમાં-અનેક જાતની પુષ્પ જાતિઓથી યુક્ત

मधुरवचनैः सुखशातादिप्रश्नपूर्वकं नो स्तौति, नो नमस्यति=नतमस्तको न भवति, नो सत्कारयति=अभ्युत्थादिना, नो सम्मानयति=वसत्यादिप्रदानेन, 'कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यम्' तत्र-कल्याणं=कल्याणस्वरूपम, मङ्गलं=मङ्गलस्वरूपम्, दैवतं=धर्मदेवस्वरूपम, चैत्यं-चितिः=विशिष्टज्ञानं, तया युक्तं विशिष्टज्ञानवन्तं मत्वा नो पर्युपास्ते=नो सेवते. अर्थान् हेतून् प्रश्नान् कारणानि व्याकरणानि नो पृच्छति। तत्र-अर्थान् जीवाजीवादिपदार्थान्, हेतून्=अन्यथानुपपत्तिरूपान्, जीवा देवादिगतिं कथं प्राप्नुवन्ति-इति स्वरूपान्. आत्मना सह कर्मणः कथं सम्बन्धो जायते? इति रूपान् वा, प्रश्नान्=संशयापनोदार्थं जीवाजीवादिस्वरूपप्रच्छनविषयान्, कारणानि='जीवस्य ज्ञानादित्रयं केन कारणेनोत्पद्यते?' इत्यादिरूपाणि, यद्वा-'चातुर्गतिलक्षणसंसारभ्रमणं

पुष्पजाति से युक्त स्थान में आया हुआ हो, तब उस समय जो जीव उनकी सत्कृति निमित्त उनके सामने नहीं जाता है, मधुर वचनों से उनकी सुखशाता नहीं पूछता है, उनको स्तुति नहीं करता है, उनके पास नतमस्तक नही होता है, अभ्युत्थान आदि क्रिया से उनका सत्कार नहीं करता है, वसति आदि प्रदान द्वारा कल्याणस्वरूप, मंगलस्वरूप, धर्मदेवस्वरूप, एवं विशिष्ट ज्ञानयुक्त उन्हें मानकर जो उनकी सेवा नहीं करता है उनसे अर्थों को-जीवाजीवादि पदार्थों को, अन्यथानुपपत्तिरूप हेतु को, जैसे कि जीव देवादिगति में कैसे जाते हैं अथवा-आत्माके साथ कर्मों का संबंध होता है ऐसे हेतु को,-प्रश्नों को-संशयादिकों को दूर करने के लिये जीव अजीव आदि के स्वरूप को पूछनेरूप प्रश्नों को जीवको ज्ञानादित्रय किस कारण से उत्पन्न होते हैं इत्यादिरूप कारणों को, अथवा चतुर्गतिरूप संसारभ्रमण किस कारण से होता है? इत्यादिरूप कारणों को, पृष्टक-जीवादिक के स्वरूप में

સ્થાન-મા આવેલા હોય, ત્યારે તે સમયે જે જીવ તેમના સત્કાર માટે તેમની સામે જતો નથી, મધુર વચનો વડે તેમની સુખ શાતા પૂછતો નથી, તેમની સ્તુતિ કરતો નથી, તેમની સામે નમ્રભાવે મસ્તક નમાવતો નથી અભ્યુત્થાન વગેરે ક્રિયાથી તેમનો સત્કાર કરતો નથી, વસતિ વગેરે આપીને તેમને કલ્યાણ સ્વરૂપ, મંગલસ્વરૂપ, ધર્મ-દેવસ્વરૂપ, અને વિશિષ્ટ જ્ઞાનયુક્ત માનીને જે તેમની સેવા કરતો નથી, તેમને અર્થોને જીવાજીવાદિ પદાર્થોને, અન્યથાનુપપત્તિરૂપ હેતુને, જેમકે જીવ દેવાદિ ગતિ કેવી રીતે મેળવે છે કે આત્માની સાથે કર્મોનો સંબંધ હોય છે એવા હેતુને, પ્રશ્નને-સંશય-વગેરેને દૂર કરવા માટે જીવ અજીવ વગેરેના સ્વરૂપને જાણવા બાબતના પ્રશ્નોને જ્ઞાનાદિત્રયં જીવને કેવી રીતે પ્રાપ્ત થાય છે વગેરે રૂપ કારણોને, અથવા તો ચતુર્ગતિ

केन कारणेन भवति' इत्यादि रूपाणि, व्याकरणानि=पृष्टस्य जीवादिस्वरूपस्य उत्तरतया प्रश्नान्तरकरणरूपाणि, तानि नो पृच्छति-एतेन स्थानेन=कारणेन चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतु नो लभते-इति प्रथमं स्थानम् १। द्वितीयमाह-उपाश्रयगतम्-उपाश्रयो=वसतिः, तत्र गतं श्रमणं वा, इतोऽग्रे-'माहनं वा' इत्यारभ्य 'व्याकरणानि पृच्छति' इत्यन्तः सकलोऽपि पूर्वोक्तः पाठो ग्राह्यः अमुमेवार्थं सूचयितुमाह-'तं चेव जाव' इति। हे चित्र ! एतेनापि स्थानेन=कारणेन जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं नो लभते इति द्वितीयं स्थानम् २। तृतीयमाह-गोचराग्रगतं=भिक्षार्थं ग्रामाभ्यन्तरं प्रविष्टं श्रमणं वा माहनं वा नो 'यावत्' यावत्पदेन-'अभिगच्छति नो वन्दते, नो

प्राप्त किये गये उत्तर में पुनः प्रश्नान्तर करनेरूप व्याकरणों को,-नहीं पूछता है, इस कारण से जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुनने नहीं सकता है-इस प्रकार से यह प्रथम स्थान का निरुपण है। द्वितीयस्थान का कारण निरूपण इस प्रकार है-उपाश्रय-में जाकर श्रमण को, अथवा माहन को जो जीव प्राप्त करके यावत् व्याकरणों को नहीं पूछता है, हे चित्र ! इस कारण से भी जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं पाता है, यहां 'तं चेव यावत्' पद से 'माहनं वा' यहां से लेकर 'व्याकरणानि पृच्छति' यहां तक का सम्पूर्ण पाठ ग्रहण किया गया है। इसी अर्थ की सूचना 'तं चेव जाव' पद से दी गई है। तृतीयस्थान इस प्रकार से है-श्रमण या माहन भिक्षा के लिये ग्राम के भीतर आया हो, परन्तु जो जीव उनके समक्ष नहीं जाता है उनको वन्दना नहीं करता है उन्हें नमस्कार नहीं करता है उनका

રૂપ પ્રશ્નાત્મક શા કારણથી હોય છે વગેરે રૂપ પ્રશ્નોને, પૃષ્ટ જીવાદિકના સ્વરૂપ વિષે જે ઉત્તર આપવામાં આવે તે વિષે ફરી સામે પ્રશ્નોત્તર કરવા રૂપ વ્યાકરણોને પૂછતો નથી, આ કારણથી જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી આ પ્રમાણે આ પ્રથમસ્થાનનું નિરૂપણ છે. દ્વિતીયસ્થાનના કારણનું નિરૂપણ આ પ્રમાણે છે ઉપાશ્રયમાં જઈને શ્રમણને કે માહણને પ્રાપ્ત કરીને જે જીવ યાવત્ વ્યાકરણોને પૂછતો નથી. હે ચિત્ર ! આ કારણથી પણ જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. અહીં 'तं चेव यावत्' પદથી 'माहनं वा' અહીંથી માંડીને 'व्याकरणानि पृच्छति' અહીં સુધીનો સંપૂર્ણ પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે એજ અર્થને 'तं चेव जाव' પદથી સૂચિત કરવામાં આવ્યો છે. તૃતીય સ્થાન આ પ્રમાણે છે.-શ્રમણ કે માહણ ગોચરી માટે-ભિક્ષા માટે-ગામમાં આવેલા હોય એવી પરિસ્થિતિમાં જે જીવ તેમની સામે જતો નથી તેમને વંદન કરતો નથી તેમને નમસ્કાર

नमस्यति, नो सत्कारयति, नो सम्मानयति, नो कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यम्, इति संग्राह्यम्, पर्युपास्ते, तथा-विपुलेन=प्रचुरेण अशनपानखाद्यस्वाद्येन=अशनादिना चतुर्विधेनाहारेण नो प्रतिलम्भयति-अशनादिकं श्रमणाय माहनाय वा नो ददाति, अर्थान् यावत्-'यावत्पदेन-हेतून् प्रश्नान् कारणानि व्याकरणानि' इति संग्राह्यम् नो पृच्छति। एतेन=उपर्युक्तेन कारणेन हे चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं नो लभते-इति तृतीयं स्थानम् ३। चतुर्थस्थानमाह-यत्रापि=यस्मिन् कस्मिंश्चदपि स्थाने खलु श्रमणेन=साधुना वा माहनेन=द्वादशव्रतधारिणा वा सार्द्धं=सह अभिसमागच्छति=सङ्गतो भवति, तत्रापि खलु 'अयं श्रमणो वा माहनो वा मां न परिचिनुयात्' इति हेतोः आत्मानं=स्वं हस्तेन वा वस्त्रेण वा छत्रेण वा आवृत्य=आच्छाद्य तिष्ठति नो अर्थान् यावत् पृच्छति। एतेनापि स्थानेन=कारणेन चित्र! जीवः

सत्कार और सन्मान नहीं करता है, तथा कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्मदेवरूप मानकर तथा विशिष्टज्ञानयुक्त मानकर उनकी सेवा नहीं करता है, तथा विपुल-प्रचुर-अशन, पान खाद्य, स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से उन्हें प्रतिलाभित नहीं करता है, अर्थात् श्रमण के लिये माहन के लिये जो चतुर्विध आहार नहीं देता है, एवं अर्थों को, हेतु को, प्रश्नो को, कारणों को तथा व्याकरणों को उनसे नहीं पूछता है इस उपर्युक्त कारण से हे चित्र! जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को नहीं सुन सकता है। चतुर्थस्थान इस प्रकार से है-चाहे जिस किसी भी स्थान में साधु या माहन-१२ व्रतधारी श्रावक के साथ संगत हो जावे-परन्तु वहां पर भी वह जीव अपने आपको हाथ से, या वस्त्र से, या छत्र से. ढंक लेता है इस ख्याल से कि महाराज मुझे पहिचान न ले और न उनसे अर्थादिकों

કરતો નથી, તેમનું સન્માન અને સત્કાર કરતો નથી તેમજ તેમનુ કલ્યાણરૂપ મંગળરૂપ, ધર્મદેવ સ્વરૂપ માનને તથા વિશિષ્ટ જ્ઞાનયુક્ત માનીને તેમની સેવા કરતો નથી તેમજ વિપુલપ્રચુર અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર વડે તેમને પ્રતિલાભિત કરતો નથી એટલે કે શ્રમણને કે માહણને જે ચતુર્વિધ આહાર આપતો નથી તથા અર્થોને, હેતુઓને પ્રશ્નોને કારણોને તથા વ્યાકરણોને, તેમને પૂછતો નથી આ ઉક્ત કારણથી હે ચિત્ર! જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી ચતુર્થ સ્થાન આ પ્રમાણે છે-ગમે તે સ્થાને સાધુ કે માહન-૧૨ વ્રતધારી શ્રાવક મળે ત્યારે જે જીવ પોતાની જાતને મહારાજ અમને ઓળખી લે નહિ તેવા વિચારથી હાથવડે, કે વસ્ત્રવડે, કે છત્રવડે સંતાડી દે છે અને અર્થાદિકો વિષે પણ પૂછતો નથી

केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं न लभते-इति चतुर्थं स्थानम् ४। सम्प्र त्युपसंहरन्नाह-एतैश्चतुर्भिः स्थानैः खलु चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं न लभते-इति।

इत्थं केवलिप्रज्ञप्तस्य धर्मस्यालाभे चतुर्विधं कारणमुक्त्वा सम्प्रति तल्लाभे चतुर्विधं कारणमाह—'चउहिं' इत्यादि।

हे चित्र ! चतुर्भिः स्थानैः=कारणैः जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं लभते, तद्यथा-'आरामगयं वा' इत्यादि। केवलिप्रज्ञप्तधर्मलाभ यानि चत्वारि स्थानानि बोध्यानि, तान्येवात्र मद्विपरीतत्वेन विशेषयानीति।

को पूछता है-तो ऐसा जीव इस कारण से भी केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं पाता है अब केशीकुमारश्रमण उपसंहार करते हुए कहते हैं कि हे चित्र! जीवको धर्मलाभ होने में ये चार कारण बाधक हैं। इनके होने से जीव को केवलिप्रज्ञप्त धर्म की प्राप्ति नहीं होती है।

इस तरह केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अभाव में चतुर्विध कारण कहकर अब केशीकुमारश्रमण उसका लाभ होने में चार कारणों का कथन करते हैं 'चउहिं ठाणेहिं' हे चित्र! चार कारणों से जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुनता है अर्थात् केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अलाभ में जो चार कारण प्रकट किये गये हैं, वे ही चार कारण विपरीतरूप से आचरित होने पर जीव के लिये धर्मलाभ के कारण हो जाते हैं यही बात '१ आरामगयं वा उज्जाणगयं वा' इत्यादि चार सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया है।

તો આ ભાવનો જીવ પણ આ કારણથી કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી હવે કેશીકુમાર શ્રમણ ઉપસંહાર કરતાં કહે છે કે હે ચિત્ર ! જીવને ધર્મલાભની પ્રાપ્તિમાં આ ચાર કારણો વિઘ્નરૂપે નડે છે આ કારણોથી જીવને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી.

આ પ્રમાણે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અલાભ સંબંધી ચાર કારણોનું વિવેચન કરીને હવે કેશીકુમાર શ્રમણ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભ માટે જે ચાર કારણો છે તેમનું કથન કરતાં કહે છે: "चउहिं ठाणेहिं" હે ચિત્ર ! ચાર કારણોથી જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરે છે એટલે કે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અલાભમાં જે ચાર કારણો બતાવવામાં આવ્યાં છે તેજ ચારેચાર કારણો વિપરીત રૂપમાં આચરવામાં આવે તો તેજ ચાર કારણો ધર્મલાભ માટે ઉપયોગી થઈ જાય છે એજ, વાત "१ आरामगयं वा उज्जाणगयं वा" વગેરે ચાર સૂત્રો વડે પ્રકટ કરવામાં આવી છે

इत्थं केवलिप्रज्ञप्तधर्मालाभालाभयोः कारणान्युक्त्वा सम्प्रति केवलिप्रज्ञप्तधर्मालाभे यानि कारणानि सन्ति तद्विशिष्ट एव प्रदेशी राजाऽस्ति स कथं मया धर्मआख्येयः? इति केशिकुमारश्रमणश्चित्रं सारथिमाह— तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया' इत्यादि। हे चित्र! तव=त्वदीयश्च खलु प्रदेशी राजा आरामगतं वा, 'तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ' इति पाठेन तदेव सर्वं गमकजातं भणितव्यम् केन गमकेन? इत्याह–'आइल्लएणं' इति आदिमेन गमकेन=आलापकेन 'उज्जाणगयं वा' उद्यानगतं वा, इत्यारभ्य 'अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ' आत्मानमावृत्य तिष्ठति, इति पर्यन्तं भणितव्यम्। एवंविधस्त्वदीयः प्रदेशी राजाऽस्ति, तत्कथं=केन प्रकारेण खलु चित्र! एवंविधाय त्वदीयाय प्रदेशिने राज्ञे वयं धर्मम् आख्यास्यामः=उपदेक्ष्याम इति ॥सू० १२३॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं एवं वयासी एवं खलु भंते! अण्णया कयाइं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया, ते मए पएसिस्स रण्णो अन्नया, चेव उवणीया तं एएणं खलु भंते! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामि, तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह,

इस तरह धर्मअप्राप्ति और धर्मप्राप्ति के कारणों को कहकर अब केशीकुमारश्रमण चित्र सारथी के प्रति यह प्रकट कर रहे हैं कि प्रदेशी राजा केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अप्राप्ति के कारणों से विशिष्ट है अतः मैं उसे किस प्रकार से धर्म का उपदेश दूं. यही बात केशीकुमारश्रमण चित्र सारथि से यहां से आगे कहते हैं. 'तुज्झं च णं चित्ता। पएसी राया' इत्यादि मूलार्थ में टीका के अनुसार ही इस सब पाठका अर्थ लिख ही दिया गया है। अतःपुनः यहां नहीं लिखा है ॥सू० १२३॥

આ રીતે ધર્મ અપ્રાપ્તિ અને ધર્મ પ્રાપ્તિના કારણોનું સ્પષ્ટીકરણ કરીને હવે કેશીકુમાર શ્રમણ ચિત્રસારથીની સામે આ વાત કહે છે કે પ્રદેશી રાજા કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અપ્રાપ્તિના કારણોથી યુકત છે. એથી હું તેને કેવી રીતે ધર્મનો ઉપદેશ કરૂં. એજ વાત કેશિકુમારશ્રમણ ચિત્રસારથીને આ પ્રમાણે કહે છે–"तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया" વગેરે મૂલાર્થમાજ ટીકાર્થ પ્રમાણે જ આ બધાનું વિશ્લેષણ કરવામા આવ્યું છે. એથી અહીં ફરી અર્થ લખવામા આવ્યો નથી. ॥સૂ. ૧૨૩॥

केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं न लभते–इति चतुर्थं स्थानम् ४। सम्प्रत्युपसंहरन्नाह–एतैश्चतुर्भिः स्थानैः खलु चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं न लभते–इति।

इत्थं केवलिप्रज्ञप्तस्य धर्मस्यालाभे चतुर्विधं कारणमुक्त्वा सम्प्रति तल्लाभे चतुर्विधं कारणमाह—'चउहिं' इत्यादि।

हे चित्र! चतुर्भिः स्थानैः=कारणैः जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं लभते, तद्यथा–'आरामगयं वा' इत्यादि। केवलिप्रज्ञप्तधर्मालाभे यानि चत्वारि स्थानानि प्रोक्तानि तान्यत्राऽपि तद्विपरीतत्वेन विज्ञेयानीति।

को पूछता है–तो ऐसा जीव इस कारण से भी केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं पाता है. अब केशीकुमारश्रमण उपसंहार करते हुए कहते हैं कि हे चित्र! जीवको धर्मलाभ होने में ये चार कारण बाधक हैं। इनके होने से जीव को केवलिप्रज्ञप्त धर्म की प्राप्ति नहीं होती है।

इस तरह केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अभाव में चतुर्विध कारण कहकर अब केशीकुमारश्रमण उसका लाभ होने में चार कारणों का कथन करते हैं 'चउहिं ठाणेहिं' हे चित्र! चार कारणों से जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुनता है अर्थात् केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अभाव में जो चार कारण प्रकट किये गये हैं, वे ही चार कारण विपरीतरूप से आचरित होने पर जीव के लिये धर्मलाभ के कारण हो जाते हैं यही बात '१ आरामगयं वा उज्जाणगयं वा' इत्यादि चार सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया है।

તો આ વખતે જીવ પણ આ કારણથી કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. હવે કેશીકુમાર શ્રમણ ઉપસંહાર કરતાં કહે છે કે હે ચિત્ર! જીવને ધર્મલાભની પ્રાપ્તિમાં આ ચાર કારણો વિઘ્નરૂપે નડે છે આ સંબંધી જીવને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી.

આ પ્રમાણે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અલાભ સંબંધી ચાર કારણોનું વિવેચન કરીને હવે કેશીકુમાર શ્રમણ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભ માટે જે ચાર કારણો છે તેમનું કથન કરતાં કહે છે–"चउहिं ठाणेहिं" હે ચિત્ર! ચાર કારણોથી જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરે છે એટલે કે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અલાભમાં જે ચાર કારણો બતાવવામાં આવ્યાં છે, તેજ ચારેચાર કારણો વિપરીત રૂપમાં આચરવામાં આવે તો તેજ ચાર કારણો ધર્મલાભ માટે ઉપયોગી થઈ જાય છે એજ વાત "१ आरामगयं वा उज्जाणगयं वा" વગેરે ચાર સૂત્રો વડે પ્રકટ કરવામાં આવી છે

खलु भदन्त ! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यात, छन्देन भदन्त ! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यात । ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिमेवमवादीत्-अपि च चित्र ! ज्ञास्यामः । ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथः तत्रैवो

लाऊंगा (त मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह) तो आप हे देवानुप्रिय ! प्रदेशी राजा को जिनोक्त धर्म का उपदेश करते समय ग्लानि मत करना (अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पए-सिस्स धम्ममाइक्खेज्जाह) प्रत्युत अग्लानिभाव से ही हे भदन्त ! आप प्रदेशी राजा को धर्म का उपदेश करना (छदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह) तथा आप अपनी इच्छा के अनुसार ही हे भदन्त ! प्रदेशी राजा को धर्म का उपदेश देना. उसकी इच्छा के अनुसार नहीं (तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब उन केशी-कुमारश्रमणने चित्र सारथि से ऐसा कहा-(अवियाइं चित्ता जाणिस्सामो) हे चित्र ! अवसर आने पर देखा जावेगा. आप के कथनानुसार उसे धर्मोपदेश देने का मेरा भाव तो है । (तए णं से चित्ते सारही केसिं कु-मारसमणं वंदइ, नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) इसके अनन्तर चित्र सारथिने केशीकुमारश्रमण को वन्दना की, नमस्कार किया, और फिर वह जहां चार घंटोंवाला अश्वरथ था वहां पर आया

(त मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह) तो हे देवानुप्रिय ! आपश्री ते प्रदेशी राजाने जिनोक्त धर्मनो उपदेश करता ग्लानि अनुभवशो नहि (अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्म-माइक्खेज्जाह) परंतु हे भदंत ! आपश्री ते प्रदेशी राजाने अग्लानिभावथी ज धर्मोपदेश करशो. (छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह) तेमज हे भदंत ! आपश्री पोतानी इच्छा मुजब ज प्रदेशी राजाने धर्मोपदेश करशो. तेनी इच्छा प्रमाणे नहि. (तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) त्यारे ते केशीकुमार श्रमणे ते चित्रसारथिने आ प्रमाणे कह्युं. (अवियाइं चित्ता जाणिस्सामो) हे चित्र ! उचित अवसर आवशे त्यारे जोई लईशुं तमो कहो छो ते मुजब मारी पण तेमने उपदेश करवानी भावना छे ज. (तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ, नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) त्यार पछी चित्रसारथिए केशिकुमारश्रमणने वंदना करी नम-स्कार कर्या अने पछी ते चार घंटोथी युक्त अश्वरथ हतो. त्यां आव्यो. (चाउग्घंटं

अगिलाए णं भंते! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह, छंदेण भंते! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह। तएणं से केसी कुमारसमणे चित्त सारहिं एव वयासी अवीयाइं चित्ता! जाणिस्सामो। तएणं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ नमंसइ जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० १२४ ॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्—एवं खलु भदन्त! अन्यदा कदाचित् काम्बोजैः चत्वारः अश्वाः उपनयमुपनीताः, ते मया प्रदेशिने राज्ञे अन्यथैव उपनीताः, तद् एतेन खलु भदन्त! कारणेन-अहं प्रदेशिनं राजानं देवानुप्रियाणामन्तिकं हव्यमानेष्यामि। तत् मा खलु देवानुप्रियाः! यूयं प्रदेशिनः राज्ञः धर्ममाख्यातुं ग्लायत, अग्लानाः

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से चित्ते सारही) वह चित्र सारथि (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशी कुमारश्रमण से ऐसा बोला (एवं खलु भंते! अन्नया कयाइं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया) हे भदन्त! किसी एक समय काम्बोजदेशवासियों ने चार घोड़े भेंटरूप में भेजे थे (ते मए पएसिस्स रण्णो अन्नयाचेव उवणीया) उसे मैंने प्रदेशी राजा के समक्ष भेंट में उनको दिल दे दिया (तं एएणं खलु भंते! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतियं हव्वमाणेस्सामि) अतः इस कारण से हे भदन्त! मैं प्रदेशी राजा को आप देवानुप्रिय के पास पहुंचा दूंगा शीघ्र

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्र सारथिओ (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे विनंती करतां कह्युं-(एवं खलु भंते! अन्नया कयाइं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया) हे भदन्त! कोई वखते कंबोज देशवासीओओ चार घोडाओ प्रदेशी राजाने भेट आप्या हता (ते मए पएसिस्स रण्णो अन्नयाचेव उवणीया) ते घोडाओने में प्रदेशी राजा सामे भेटरूपमां अर्पित करी दीधा छे. (तं एएणं खलु भंते! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतियं हव्वमाणेस्सामि) एथी हे भदन्त! प्रदेशी राजाने आप देवानुप्रियनी पासे जल्दी ज उपस्थित करीश.

खलु भदन्त! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यात, छन्देन भदन्त! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यात। ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिमेवमवादीत्–अपि च चित्र! ज्ञास्यामः। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथः तत्रैवो

लाऊंगा (त मा ण देवाणुप्पिया! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह) तो आप हे देवानुप्रिय! प्रदेशी राजा को जिनोक्त धर्म का उपदेश करते समय ग्लानि मत करना (अगिलाए ण भंते! तुब्भे पएसिस्स धम्ममाइक्खेज्जाह) प्रत्युत अग्लानिभाव से ही हे भदन्त! आप प्रदेशी राजा को धर्म का उपदेश करना (छंदेणं भंते! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह) तथा आप अपनी इच्छा के अनुसार ही हे भदन्त! प्रदेशी राजा को धर्म का उपदेश देना. उसकी इच्छा के अनुसार नहीं (तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब उन केशीकुमारश्रमणने चित्र सारथि से ऐसा कहा–(अवियाइ चित्ता जाणिस्सामो) हे चित्र! अवसर आने पर देखा जावेगा. आप के कथनानुसार उसे धर्मोपदेश देने का मेरा भाव तो है। (तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ, नमसइ, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) इसके अनन्तर चित्र सारथिने केशीकुमारश्रमण को वन्दना की, नमस्कार किया, और फिर वह जहां चार घंटोंवाला अश्वरथ था वहां पर आया

(त माण देवाणुप्पिया! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह) તો હે દેવાનુપ્રિય! આપશ્રી તે પ્રદેશી રાજાને જિનોકત ધર્મનો ઉપદેશ કરતા ગ્લાનિ અનુભવશો નહિ (अगिलाए ण भते! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खेज्जाह) પરંતુ હે ભદંત! આપશ્રી તે પ્રદેશી રાજાને અગ્લાનિભાવથી જ ધર્મોપદેશ કરશો. (छंदेण भंते! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह) તેમજ હે ભદંત! આપશ્રી પોતાની ઇચ્છા મુજબ જ પ્રદેશી રાજાને ધર્મોપદેશ કરશો. તેની ઇચ્છા પ્રમાણે નહિ. (तएण से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) ત્યારે તે કેશીકુમાર શ્રમણે તે ચિત્રસારથિને આ પ્રમાણે કહ્યુ. (अवियाइ चित्ता जाणिस्सामो) હે ચિત્ર! ઉચિત અવસર આવશે ત્યારે જોઈ લઇશું તમે કહો છો તે મુજબ મારી પણ તેમને ઉપદેશ કરવાની ભાવના છે જ. (तएणं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ, नमंसइ, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) ત્યાર પછી ચિત્રસારથિએ કેશિકુમારશ્રમણને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા અને પછી તે ચાર ઘંટોથી યુકત અશ્વરથ હતો ત્યાં આવ્યો.

प्रागच्छति, चातुर्घण्टमश्वरथं दूरोहति, यामेव दिशं प्रादुर्भूत तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० १२४ ॥

टीका—'तए णं से चित्ते' इत्यादि–ततःखलु स चित्रः सारथिः केशि कुमारश्रमणमेवमवादीत्–एवं खलु हे भदन्त ! अन्यदा कदाचित्= कस्मिंश्चित् काले काम्बोजैः=कम्बोजदेशवासिभिः चत्वारः=चतुःसंख्यकाः अश्वाः उपनयं=प्राभृतम् उपनीताः=प्रापिताः, प्राभृतत्वेन दत्ता इत्यर्थः, ते मया अन्यदेव=तस्मिन्नेव काले प्रदेशिने राज्ञे उपनीताः तदेतेन कारणेन खलु हे भदन्त ! अहं प्रदेशिनं राजानं देवानुप्रियाणां=भवताम् अन्तिकं=समीपे हव्यं=शीघ्रम् आनेष्यामि, तत्–तदा हे देवानुप्रियाः ! प्रदेशिने राज्ञे धर्मं= जिनोक्तम् आख्यान्त=कथयन्तः सन्तो यूयं मा ग्लायत=ग्लानिं मा भजत, एतावदेव न प्रत्युत छन्देन=स्वकीयाभिप्रायेण यथेच्छमित्यर्थः हे भदन्त ! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्मम् आख्यात=कथयत । तत चित्रसारथेः कथना

(चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) वहां आकर वह उस चारघंटों वाले अश्वरथपर सवार हो गया और जिस दिशा से आया था, उसी दिशा की ओर चला गया ।

टीकार्थ—चित्र सारथिने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा–हे भदन्त ! किसी एक समय मेरे पास कम्बोजदेशवासियों द्वारा भेजे गये ४ घोडे प्रदेशी राजा के लिये भेटरूप में आये थे सो मैंने उसी दिन वे घोडे प्रदेशी राजा के लिये अर्पित कर दिये इस तरह हमारी उनकी परस्पर में प्रीति है. इसलिये मैं चाहता हूं कि आप उसे जिनप्रतिपादित धर्म का उपदेश देवें मैं उसे आपके पास शीघ्र ही ले आऊंगा, उपदेश देने में आप किसी भी प्रकार का संकोच न करें अपनी इच्छा के अनुसार धर्म

आसरहं दुरुहइ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) त्यां पहोंचीने ते पोताना चार घंटीवाळा अश्वरथ पर सवार थई जाय छे अने जे दिशा तरफथी ते आवेल हतो तेज दिशा तरफ पाछो वळी गयो

टीकार्थ—चित्रसारथिए केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं—हे भदंत ! कोई एक वखते मारी पासे कंबोज देशवासीओए राजाने भेटमां आपवा माटे घोडाओ मोकल्या हता. तेज दिवसे ते घोडाओने प्रदेशी राजाने में अर्पित करी दीधा आम तेमनी अमारी साथे मित्रता छे एथी ज हुं इच्छुं छुं के आपश्री तेमने जिन प्रतिपादित धर्मनो उपदेश करो. तेमने हुं आपश्रीनी पासे जल्दी लावीश उपदेश आपवामां आपश्री पोतानी इच्छा मुजब धर्मनी वातो प्रदेशी राजाने संभळावजो.

नन्तरं खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=अकथयत्-'अविआइ' अपि च हे चित्र! ज्ञास्यामः=अवगमिष्यामः यथावसरं करिष्याम इत्यर्थः, त्वत्कथनानुसारेण करणस्य मम भावो वर्तत इत्याशयः! ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणं वदन्ते नमस्यति चातुर्घण्टाश्वरथसमीपे समागत्याश्वरथमारोहति, यामेवदिशं समाश्रित्य प्रादुर्भूत=समागतः तामेवदिशं प्रतिगतः=प्रस्थितः ॥सू० १२४॥

मूलम्-[तएणं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए कयनियमावस्सए सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणेव पएसिस्स रन्नो गिहे जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं करयल-जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, एवंवयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया] ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया, तं एएणं सामी! ते आसे आइड्ढिए पासइ। तएणं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी-गच्छाहि णं तुमं चित्ता! तेहिं चेव चउहि आसेहिं आसरहे जुत्तामेव उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि। तएणं से चित्ते सारही पए-

---

की बातें उसे सुनावें. चित्र सारथि का इस प्रकार कथन सुनकर केशीकुमारश्रमणने उससे ऐसा कहा-चित्र! समय आने पर देखा जावेगा. मेरा भाव अवश्य ऐसा हुआ है कि मैं उसे जिनेन्द्रप्रतिपादित धर्म का उपदेश दू। केशीकुमारश्रमण की इस प्रकार की भावना जानकर चित्रसारथिने उनको वन्दनादि किये और फिर अपने रथ पर सवार होकर अपने स्थान पर वापिस हो गया, ॥ सू० १२४ ॥

ચિત્રસારથિનુ આ પ્રમાણે કથન સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેને આમ કહ્યુ કે હે ચિત્ર! ઉચિત અવસર આવશે ત્યારે જોઇ લઇશુ. મારી એવી ઇચ્છા છે કે હું તેને જિનેન્દ્ર પ્રતિપાદિત ધર્મનો ઉપદેશ કરૂ કેશીકુમાર શ્રમણની આ જાતની ભાવના જાણીને ચિત્રસારથિએ તેમને વન્દન કર્યા અને ત્યારપછી પોતાના રથ પર સવાર થઇને પોતાના નિવાસસ્થાને પાછો આવતો રહ્યો ॥સૂ ૧૨૪॥

सिणा रन्ना एव वुत्ते समाणे हट्टतुट्ठ जाव हियए उवट्ठवेइ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ । तएणं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणामेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घट आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ । तएणं से चित्ते सारही त रह णेगाइ जोयणाइ उब्भामेइ । तएणं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रयवाएण य परिकिलंते समाणे चित्त सारहिं एव वयासी—चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे परावत्तेहि रह । तएणं से चित्ते सारही रह परावत्तेइ जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, पएसिं राय एव वयासी—एस णं सामी ! मियवणे उज्जाणे एत्थणं आसाणं समकिलाम सम्म अवणेमो । तएणं से पएसी राया चित्त सारहिं एव वयासी—ए होउ चित्ता ।१२५।

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः कल्ये प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्फुल्लकमलकोमलोन्मीलिते अथाऽऽपाण्डुरे प्रभाते कृतनियमावश्यके सहस्र

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से चित्ते सारही) वह चित्रसारथि (कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए) दूसरे दिन जब कि रात्रि प्रातःकाल के रूप में बदल गई और (फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए कयनियमावस्सए) कमल विकसित हो चुके तथा नियम और आवश्यक कृत्य जिसमें लोग कर चुके थे ऐसा पीतधवल प्रभात जब हो गया (सहस्स

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते । (कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए) बीजा दिवसे ज्यारे रात्री प्रातःकालना रूपमां परिवर्तित थई गई अने (फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए कयनियमावस्सए) कमळो विकास पाम्यां तेमज नियम अने आवश्यक कृत्यो जेमां लोको वडे पूरां करवामां आव्यां. एवुं पीतधवल प्रभात ज्यारे थयुं (सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे

रश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति स्वाद् गृहाद् निर्गच्छति, यत्रैव प्रदेशिनो राज्ञो गृहं यत्रैव प्रदेशी राजा तत्रैवोपागच्छति प्रदेशिनं राजानं करतल-यावत् कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयति, एवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रियाणां कम्बोजेषु चत्वारोऽश्वा उपनयम् उपनीताः, ते च मया देवानुप्रियेभ्यः अन्यदा-चैव विनयिताः तद् एतं खलु स्वामिन्! तान् अश्वान् आत्मर्द्धिकान् पश्यत। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिम् एवमवादीत्-गच्छ खलु

रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) एवं सहस्रकि-रणों वाला सूर्य जब अपने तेज से चमकने लगा-अपने घर से निकला (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव पएसी राया, तेणेव उवागच्छइ) निकल कर वह वहां गया जहां प्रदेशी राजा का गृह था और उसमें भी जहां वह प्रदेशी राजा था (पएसिं रायं करयल जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ) वहां जाकर उसने प्रदेशी राजा को दोनों हाथ जोडकर बडे विनय के साथ प्रणाम किया और जय विजय शब्दों का उच्चारण करते हुए उसे वधाई दी (एवं वयासी) वधाई देकर फिर उसने उससे ऐसा कहा— (एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया) कम्बोजदेशवासियोंने चार घोडे भेंटरूप में आप देवानुप्रिय के लिये भेजे थे (ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया) उन्हें मैंने आपके लिये विनीत उसी दिन बना दिया है। अर्थात् शिक्षित कर दिया है (तं एह णं सामी तं आसे आइड्ढिए पासह) अतः आप चलिये और स्वकीयप्रशस्तगति आदि

तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) અને સહસ્ર કિરણોવાળો સૂર્ય જ્યારે પોતાના તેજથી પ્રકાશિત થવા લાગ્યો. પોતાના ઘરેથી નીકળ્યો. (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव पएसी राया, तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને તે જ્યાં પ્રદેશી રાજાનું ગૃહ હતું અને તેમાં પણ જ્યાં તે પ્રદેશી રાજા હતો ત્યાં ગયો. (पएसिं रायं करयल जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ) ત્યાં જઈને તેણે પ્રદેશી રાજાને બન્ને હાથ જોડીને નમ્રતાપૂર્વક પ્રણામ કર્યા અને જયવિજયના શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરીને તેને વધામણી આપી. (एवं वयासी) વધામણી આપી તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું (एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया) કંબોજ દેશના નાગરિકોએ આપ દેવાનુપ્રિય માટે ચાર ઘોડાઓ ભેટરૂપમાં મોકલ્યા છે (ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया) તે ઘોડાઓને મેં તેજ દિવસે આપશ્રીના માટે યોગ્ય શિક્ષિત બનાવી દીધા છે (तं एह णं सामी तं आसे आइड्ढिए पासह) એથી આપ પધારો અને સ્વકીય પ્રશસ્ત ગતિ વગેરે શક્તિઓ

त्य चित्र ! तैरेव चतुर्भिरश्वै अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापय यावत् प्रत्यर्पय। तत स्खलु स चित्र सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवमुक्त सन् हृष्ट तुष्ट–यावद् हृदय उपस्थापयति, एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयति। ततः स्खलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेरन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट तुष्ट–यावद् अल्प महार्घाभरणालंकृतशरीरः स्वात् गृहाद् निर्गच्छति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथ

शक्ति से युक्त हुए इन्हे देखिये। (तए ण से पएसी राया चित्त सारहिं एव वयासी) तब उस प्रदेशी राजाने चित्र सारथि से ऐसा कहा—(गच्छाहि ण तुम चित्ता! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि) हे चित्र! तुम जाओ और इन्ही कम्बोज से प्राप्त हुए चारों घोडों से युक्त करके अश्वरथ को तैयार कर के आओ। और उस बात की मुझे पीछे खबर दो (तए ण से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए उवट्ठवेइ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ) इस प्रकार से प्रदेशी राजा द्वारा कहा गया वह चित्र सारथि बड़ा ही हृष्टतुष्ट यावत् हृदयवाला हुआ और उसने चार घोडों से युक्त करके अश्वरथ को उपस्थित कर दिया, बाद में प्रदेशी राजा को इसका निवेदन किया (तए ण से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणा लंकियसरीरे साओ गिहाओ निग्गच्छइ) इसके बाद प्रदेशी राजा चित्र

थी युक्त थयेला ते घोडाओनुं निरीक्षण करो. (तए ण से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) त्यारे ते प्रदेशी राजाए चित्रसारथीने आ प्रमाणे कह्युं (गच्छाहि ण तुम चित्ता! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि) हे चित्र! तमे जाओ अने ते कंबोजदेशना नाग रिकोथी प्राप्त थयेला चारेचार घोडाओने रथमां जोडीने ते अश्वरथ अहीं उपस्थित करो अने ते पछी मने आ वातनी खबर आपो. (तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए उवट्ठवेइ एयमाण त्तियं पच्चप्पिणइ) आ प्रमाणे प्रदेशी राजा वडे आज्ञापित थयेलो ते चित्रसारथि खूबज हृष्टतुष्ट हृदयवाळो थयो अने तरत चारेचार घोडाओथी सज्ज करीने अश्वरथ ने राजानी सेवामां उपस्थित कर्यो. अने त्यार पछी तेनी खबर राजानी पासे पहोंचाडी. (तए ण से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ निग्गच्छइ) त्यारपछी प्रदेशी राजा चित्र सारथिनी अश्वरथ उपस्थित थई जवानी

स्तत्रैवोपागच्छति. चातुर्घण्टमश्वरथं दूरोहति, श्वेतविकाया नगर्या मध्य-मध्येन निर्गच्छति। ततः खलुः स चित्रः सारथिस्तं रथं नैकानि योजनानि उद्भ्रामयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा उष्णेन च तृष्णया च रथवातेन च परिक्लान्तःसन् चित्रं सारथिमेवमवादीत्-चित्र! परिक्लान्तं मे शरीरं, परा-

सारथि की अश्वरथ के तैयार हो जाने की बात को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर बडा ही अधिक हर्षित एवं तुष्ट चित्त हुआ उसने उसी समय अपने शरीर पर बहुमूल्य अल्पभार वाले आभूषणों को धारण किया शीघ्र ही वह फिर अपने घर से बाहर निकला (जेणामेव चाउग्घंटे आस-रहे तेणेव उवागच्छइ) बाहर निकल कर वह वहां पर आया कि जहां पर वह चार घटों वाला अश्वरथ तैयार किया गया खडा था (चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, सेयवियाए मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ) वहां आकर वह चार घटों वाले उस रथ पर बैठ गया. फिर वह श्वेतांबिका नगरी के ठीक मध्यमार्ग से होकर निकला (तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ) बाद में उस चित्र सारथिने उस रथको अनेक योजनों तक बहुत तेज चाल से चलाया. (तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएण य परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) इस कारण वह प्रदेशी राजा आतप से, प्यास से और रथगत्युद्भूत वायु से खिन्न हो गया, अतः उसने चित्र सारथि से ऐसा कहा-(चित्ता! परिकि

વાત સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ખૂબજ હર્ષિત અને તુષ્ટ ચિત્તવાળો થયો. તેણે તેજ ક્ષણે પોતાના શરીર પર બહુમૂલ્ય તેમજ અલ્પભારવાળાં આભૂષણો ધારણ કર્યાં અને જલ્દી તે પોતાના મહેલથી બહાર નીકળ્યો. (जेणामेव चाउग्घंटे आस-रहे तेणेव उवागच्छइ) બહાર નીકળીને તે ત્યાં આવ્યો કે જ્યાં ચાર ઘંટવાળો અશ્વરથ સુસજ્જ થઈને ઊભો હતો (चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, सेयवियाए नयरीए मज्झं मज्झेण णिग्गच्छइ) ત્યાં પહોંચીને તે ચાર ઘંટોવાળા તે અશ્વરથ પર બેસી ગયો અને ત્યારપછી તે શ્વેતાંબિકા નગરીના ઠીક મધ્યવાળા રાજમાર્ગ પર થઈને નીકળ્યો (तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ) ત્યારપછી તે ચિત્રસારથિએ તે રથને ઘણા યોજનો સુધી બહુજ તીવ્રવેગથી ચલાવ્યો. (तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएणय परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) તેથી તે પ્રદેશી રાજા તાપથી, તરસથી અને રથની તીવ્રગતિને લીધે સામેથી અથડાતા પવનથી ખિન્ન થઈ ગયો. એથી તેણે ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું (चित्ता! परिकिलंते मे सरीरे परावत्तेहिं, रहं)

धर्तयंन्त रथम्। ततः खलु स चित्रः सारथिः रथं परावर्तयति, यत्रैव मृगवनमुद्यानं तत्रैवोपागच्छति, प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—एष खलु स्वामिन् मृगवनमुद्यान, अत्र खलु अश्वानां श्रमं क्लमं सम्यग् अपनयामः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्—एवं भवतु चित्र! ॥सू०१२५॥

टीका—'तं एणं से चित्ते' इत्यादि—ततः खलु स चित्रः सारथिः कल्य=आगामिनि दिवसे प्रादुष्प्रभातायां=प्रादुः—प्रकाशितं प्रभातं यस्यां, तस्यां रजन्यां=रात्रौ सत्याम्, निशावसाने इत्यर्थः, अथ=पुनःफुल्लोत्पलकमल

लते मे सरीरं परावत्तहि रहं) हे चित्र! मेरा शरीर थक रहा है, अब तुम रथ को वापिस लौटा लो (तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव मियवणं उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) तब उस चित्र सारथिने रथको लौटा लिया और जहां मृगवन नामका उद्यान था उस ओर चल दिया (पएसिं रायं एवं वयासी) वहां पहुंच कर उसने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (एस णं सामी मियवणे उज्जाणे एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो) हे स्वामिन्! यह मृगवन नामका उद्यान है यहां ठहरकर घोडों के श्रम को और ग्लान को मैं अच्छी तरह से दूर किये देता हूं। (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब यह प्रदेशी राजा चित्र सारथि से इस प्रकार बोला (एवं होउ चित्ता) हे चित्र! भले तुम ऐसा करो।

टीकार्थ—इसके बाद दूसरे दिन चित्र सारथि प्रातः काल होते ही रात्रिकी समाप्ति होते ही—अपने घर से निकला ऐसा संबंध यहां लगाना चाहिये जब वह घर से निकला उस समयतक कमल विकसित हो चुके

हे चित्र! मारुं शरीर श्रमयुक्त थई गयुं छे जेथी तमे रथने पाछो वाळी दो. (तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) त्यारे ते चित्र सारथिओ रथने पाछो वाळी लीधो अने ज्यां मृगवन नामे उद्यान हतुं ते तरफ रथने हांक्यो (पएसिं रायं एवं वयासी) त्यां पहोंचीने तेणे प्रदेशी राजाने आम कह्युं (एस णं सामी मियवणे-उज्जाणे एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो) हे स्वामिन्! आ मृगवन नामे उद्यान छे अहीं रोकाईने हुं घोडाओना थाकने अने खिन्नताने सारी रीते मटाडी दउं छुं (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) त्यारे प्रदेशी राजाओ चित्र सारथिने आ प्रमाणे कह्युं (एवं होउ चित्ता) हे चित्र! सारुं तमे भले आम करो.

टीकार्थ—त्यारपछी बीजा दिवसे रात्री पूरी थतां तेमज सवार थतां ज चित्र सारथि पोताना घेरथी नीकळ्यो. अेवो अर्थ अहीं करवो घटे छे ते ज्यारे पोताना

कोमलोन्मीलिते–फुल्लोत्पलं=विकसितकमलं, कमलो–हरिणविशेषश्च तयोः कोमल=मृदु उन्मीलनम्–कमलदलानां विकसनं हरिणनेत्राणामुन्मेषणं च यस्मिन्, कमलविकसनसमये हरिणनेत्रोन्मीलनसमये वेत्यर्थः तथाभूते आपाण्डुरे–आ=समन्तात् पाण्डुरे=पीतधवले, तथा–कृतनियमावश्यके=नियमाः= सचित्तादित्यागरूपाश्चतुर्दशसंख्यकाः,

उक्तञ्च–"सच्चित्त१ दव्व२ विगई३,-वाणह४ तंबोल५ वत्थ६ कुसुमेसु७।
वाहण८ सयण९ विलेवण१०,-बंभ११ दिसि१२ ण्हाण१३ भत्ते सु१४॥१॥

छाया––सचित्त१ द्रव्य२ विकृत्यु३ पान४-ताम्बूल५ वस्त्र६ कुसुमेषु७। वाहन८ शयन९ विलेपन१० ब्रह्म११ दिक्१२ स्नान१३ भक्तेषु१४ ॥ इति,

आवश्यक=प्रतिक्रमणं तच्चेह रात्रिकं, तयोः समाहारे नियमावश्यकं, कृतं= विहितं नियमावश्यकं यस्मिन् तत्तस्मिन् तादृशे प्रभाते=प्रातःकाले तथा– सहस्ररश्मौ=सहस्रकिरणसम्पन्ने दिनकरे=सूर्ये तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सति स्वात्=स्वकीयाद् गृहाद् निर्गच्छति, यत्रैव प्रदेशिनो राज्ञो गृहं=भवनं यत्रैव च प्रदेशी राजा वर्त्तते तत्रैव उपागच्छति=समागच्छति, प्रदेशिनं राजानं करतल–यावत्–करतलपरिगृहीतं शिरआवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा एवमवादीत्–एवं खलु देवानुप्रियेभ्यः=

थे अथवा कमल और हरिणविशेषों के नेत्र निद्रा विगत हो जाने के कारण उघड चुके थे, प्रभात का रंग पीत धवल हो चुका था लोगोंने–धार्मिक जनताने १४ नियमों ले लिया था. और रात्रिक प्रतिक्रमण भी कर लिया था. वे १४ नियमो इस प्रकार से हैं––'सचित्त दव्व' इत्यादि।

तथा सहस्रकिरण संपन्न सूर्य भी अपने तेज से दीप्यमान हो चुका था. घर से निकलकर वह प्रदेशी राजा के पास पहुंचा. वहां पहुंच कर उसने प्रदेशी राजा को दोनों हाथ जोडकर नमस्कार किया, उन्हें वधाई दी और फिर ऐसा कहा आप देवानुप्रिय के लिये जो कम्बोजवासियोंने चार घोडे भेंटरूप

ઘરથી નીકળ્યો તે વખતે કમળો વિકસિત થઈ ચૂક્યાં હતા અથવા કમલ હરિણ (મૃગ) વિશેષના નેત્રો નિદ્રા રહિત થઈ જવાથી ઉઘડી ચૂક્યાં હતા. પ્રભાતનો વર્ણ પીતધવલ થઈ ચૂક્યો હતો. લોકોએ–ધાર્મિક માણસોએ–૧૪ નિયમોને ધારણ કરી લીધા હતા અને રાત્રિક પ્રતિક્રમણ પણ કરી લીધું હતું. તે ૧૪ નિયમો આ પ્રમાણે છે

'सचित्तं दव्व' इत्यादि.

તેમજ સહસ્રકિરણ સંપન્ન સૂર્ય પણ પોતાના તેજથી દેદીપ્યમાન થઈ ચૂક્યો

भवद्भ्यः, काम्बोजदेशीयाश्चत्वारोऽश्वा उपनयमुपनीता =प्राभृतत्वेन समानीताः त च मया देवानुप्रियस्य=भवतां कृते अन्यदैव=तदैव विनयिता =विनयमापिताः शिक्षिताः; तत्=तस्मात्कारणात् एत आगच्छत तान् आत्मर्द्धिकान्=स्वकीय प्रशस्तगत्यादिशक्तिसम्पन्नान् अश्वान् पश्यत। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं चित्र! तैरेव काम्बोजमागतैश्चतुर्भिरश्वैः युक्तमेव=सज्जितमेव अश्वरथम् उपस्थापय यावत् प्रत्यर्पय, यावच्छब्देन उपस्थाप्य एतामाज्ञप्तिं मम प्रत्यर्पय। ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवम्=अनेन सज्जितरथोपस्थापनरूपेण प्रकारेण उक्तः=कथितः हृष्टतुष्टयावद्धृदय,- यावच्छब्देन-हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्धृदयः सन् उपस्थापयति=तैश्चतुर्भिरश्वैर्युक्तमेवाश्वरथमुपस्थितं करोति एताम्=राजोक्ताम् आज्ञप्तिकाम्=आज्ञां प्रत्यर्पयति ='युक्त एव रथो मयाऽऽनीतः' इति सूचयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेः अन्तिके=समीपे-युक्तरथोपस्थापनरूपम् अर्थं=वाक्यं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य, निशम्य=हृदयधार्य हृष्टतुष्ट यावत्-यावच्छब्देन-हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो हर्षवशविसर्पद्धृदयः स्नातः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः शुद्धप्रावेश्यानि माङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितः, इति संग्राह्यम्, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरः एषामर्थस्तु प्रागुक्त एव, एतादृशः सन् स्वात्=स्वकीयात् गृहात् भवनात् निर्गच्छति=निस्सरति।

में भेजे थे उन्हें मैंने उसी दिन आपके लिये सुशिक्षित कर दिया है अतः आप आ करके उन्हें देख लेवें इस प्रकार चित्र सारथी के कथन को सुनकर प्रदेशी राजाने उससे कहा-तुम शीघ्र ही उन्हें रथ में जोतकर यहां ले आओ चित्र सारथीने ऐसा ही किया जब रथ तैयार हो जाने का वृत्तान्त प्रदेशी राजा को ज्ञात हुआ तब आकर वह उसमें बैठ गया उसके बैठते ही चित्र सारथिने उस रथ को श्वेताम्बिका नगरी के मध्यमार्ग से

કહ્યું કે આપ દેવાનુપ્રિય માટે કંબોજદેશના નાગરિકોએ જે ચાર ઘોડાઓ ભેટરૂપમાં મોકલ્યા હતા તેમને તેજ દિવસે આપશ્રી માટે સુશિક્ષિત કરી દીધા છે એથી આપ પધારીને તેમનું નિરીક્ષણ કરી લો આ પ્રમાણે ચિત્રસારથિનું કથન સાંભળીને પ્રદેશી રાજાએ તેને કહ્યું કે તમે સત્વરે તે ઘોડાઓને રથમાં જોતરીને અહીં ઉપસ્થિત કરો ચિત્ર સારથિએ તે પ્રમાણેજ કામ પુરૂ કર્યું જ્યારે રથ તૈયાર થઈ જવાની ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડવામાં આવી ત્યારે તે રાજા તે રથમાં બેસી ગયો. રાજા જ્યારે સવાર થઈ

ततः खलु स चित्रः सारथिस्तं रथं नैकानि=अनेकानि बहूनि योजनानि उद्भ्रामयति=शीघ्रगत्या धावयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा उष्णेन=आतपेन च तृष्णया=पिपासया रथवातेन=रथगत्युद्भवेन वायुना च परिक्लान्तः=खिन्नः सन् चित्रं सारथिमेवमवादीत्–हे चित्र! परिक्लान्तं=खिन्नं मे–मम शरीरम् अतो रथं परावर्त्तय=निवर्त्तय। ततः खलु स चित्रः सारथिः रथं परावर्त्तयति, यत्रैव मृगवनमुद्यानं तत्रैवोपागच्छति, प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्–एतत् खलु स्वामिन्! मृगवनमुद्यानमस्ति, अत्र=अस्मिन्नुद्याने स्थित्वा अश्वानां श्रमं=खेदं क्लमं=ग्लानिं च सम्यक्=समीचीनतया अपनयामः=दूरीकुर्मः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्–हे चित्र! एवं भवतु=यथा त्वया कथितं तथैव भवतु अत्र तिष्ठाम इति भावः ॥सू० १२५॥

मूलम्—तए णं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तुरए मोएइ, पएसिं रायं एवं

होकर चलाया. जब नगरी से वह रथ बाहर हो गया तब उसने कई योजनों तक उस रथको इतने अधिकरूप से चलाया कि प्रदेशी राजा परिक्लान्त हो गया, (थकगया) आतप, से तप गया और पिपासा की वेदना से व्याकुल हो उठा। तब सारथि से उसने उसी समय रथको लौटाने के लिये कहा. सारथिने आज्ञानुसार रथ को लौटा लिया और मृगवन उद्यान, की ओर ले चला। वहां पहुंच कर सारथिने घोडों को विश्रान्ति देने के निमित्त रथ खडा कर लिया और प्रदेशी राजा से वहां ठहर कर घोडों को मार्गजन्य परिश्रमको दूर करने की बात कही प्रदेशी राजाने बातको मानलिया ।सू. १२५।

ગયા ત્યારે ચિત્ર સારથિએ તે રથને શ્વેતાંબિકા નગરીની મધ્યમાર્ગમાંથી થઇને હાંકયો આ પ્રમાણે તે રથ જ્યારે શ્વેતાંબિકા નગરીથી બહાર નીકળી ગયો ત્યારે ઘણા યોજનો સુધી તે રથને તીવ્ર વેગથી ચલાવ્યો કે જેથી તે પ્રદેશી રાજા પરિકલાંત થઇ ગયો, તાપથી તપી ગયો અને તરસની વેદનાથી વ્યાકુળ થઇ ગયો રાજાએ સારથિને તરત જ રથ પાછો વાળવાનો આદેશ આપ્યો સારથિએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે રથને પાછો વાળી લીધો અને મૃગવન ઉદ્યાનની તરફ તે રથને લઇ ગયો ત્યાં પહોંચીને સારથિએ ઘોડાઓને વિશ્રાંતિ આપવા માટે રથ ને ઉભો રાખ્યો અને પ્રદેશી રાજાને ત્યાં રોકાઇને ઘોડાઓના રસ્તાના થાકને દૂર કરવાની વાત કરી. પ્રદેશી રાજાએ પણ તેની વાત માની લીધી ॥સૂ ૧૨૫॥

वयासी एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो। तएणं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ, चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाण समं किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ, जत्थ केसिकुमारसमणं महइ महालियाए परिसाए मज्झगयं महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति, मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति, मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति, अपंडिया खलु भो अपंडियं पज्जुवासंति, निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति, से केसणं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे, एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? किं परिणामेइ ? किं खायइ ? किं पियइ ? किं दलइ ? किं पयच्छइ ? जं णं एस एमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं बूयाइ ? एवं संपेहेइ, चित्तं सारहिं एवं वयासी–चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति जाव बूयाइ, साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ॥ सू० १२६ ॥

छाया–ततः खलु स चित्रः सारथिः यत्रैव मृगवनमुद्यानं यत्रैव केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्तं तत्रैवोपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति, रथ

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि—

सूत्रार्थ–(तए णं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद वह चित्रसारथि उस मृगवन उद्यान में स्थित केशिकुमारश्रमण के अदूर सामन्त स्थान पर

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ–(तए णं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे, जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ) त्यार पछी ते चित्र सारथि ते मृगवन उद्यानमां स्थित केशिकुमारश्रमणनी पासे स्थने लई गयो.

स्थापयति, रथात् प्रत्यवरोहति, तुरगान् मोचयति, प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्— अत्र खलु स्वामिन् ! अश्वानां श्रमं क्लमं सम्यक् अपनयामः। ततः खलु स प्रदेशी राजा रथात् प्रत्यवरोहति, चित्रेण सारथिना सार्धम् अश्वानां श्रमं क्लमं सम्यक् अपनयन् पश्यति यत्र केशिकुमारश्रमणं महातिमहालयायाः परिषदो मध्यगतं महता शब्देन धर्ममाख्यान्तं दृष्ट्वा अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत-जडाः खलु भो ! जडं पर्युपासते, मुण्डा.

रथको लेकर गया (तुरए णिगिण्हइ) वहां पहुंचते ही उसने घोडों को रोक लिया (रहं ठवेइ) और रथको खडा कर दिया (रहाओ पच्चोरुहइ) रथ के खडे हो जाने पर वह रथ से नीचे उतरा (तुरए मोएइ) नीचे उतर कर घोडों को रथ से खोल दिया (पएसिं रायं एवं वयासी) फिर उसने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा-(एह णं समं किलामं सम्मं अवणेमो) हे स्वामिन् ! रथ खडा हो चुका है आप उतर आइये, मै यहां पर घोडों के श्रम को एवं उनकी मानसिक ग्लानि को ठीक तरह से दूर करलूं (तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ) सारथि के इस कथन से वह प्रदेशीराजा रथ से नीचे उतरा (चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ) नीचे उतर कर उसने चित्र सारथि के साथ वहां घोडों का श्रम परक्रम (थकावट) अच्छी तरह से दूर करते हुए, एवं विश्राम करते हुए उस ओर देखा (जत्थ केसिकुमारसमणे महइमहालियाए परिसाए मज्झगयं महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए

(तुरए णिगिण्हइ) त्यां पहोंचता ज तेणे घोडाओने उभा राख्या. (रहं ठवेइ) अने रथने थोभाव्यो (रहाओ पच्चोरुहइ) रथ ज्यारे उभो रही गयो त्यारे ते रथमांथी नीचे उतर्यो. (तुरए मोएइ) नीचे उतरीने घोडाओने रथमांथी मुक्त कर्या. (पएसिं रायं एवं वयासी) त्यार पछी तेणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं— (एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो) हे स्वामिन् ! रथ उभो थई चूक्यो छे आप नीचे उतरो हुं अहीं घोडाओना श्रमने अने तेमनी मानसिक ग्लानिने सारी रीते दूर करी दउं (तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ) सारथिना आ कथनथी ते प्रदेशी राजा रथमांथी नीचे उतर्यो (चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ) नीचे उतरीने तेणे चित्रसारथिनी साथे त्यां घोडाओनां श्रम अने क्लम सारी रीते दूर करता तेमज विश्राम करता ते तरफ जोयुं (जत्थ केसिकुमारसमण महइमहालियाए परिसाए मज्झगयं महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव

खलु भो ! मुग्धं पर्युपासते, मूढा खलु भो ! मूढं पर्युपासते अपण्डिता खलु भो ! अपण्डितं पर्युपासते, निर्विज्ञानाः खलु भो ! निर्विज्ञानं पर्युपासते, स कीदृशः खलु एष पुरुषो जडो मुग्धो मूढोऽपण्डितो निर्विज्ञानः श्रिया ह्रिया उपगतः उत्तप्तशरीरः, एष खलु पुरुषः कमाहारमाहारयति ?

जाव समुप्पज्जित्था) कि जिस ओर एक बहुत बड़ी परिषदा के बीच में बैठे हुए केशीकुमारश्रमण ओर २ से धर्म का व्याख्यान कर रहे थे इस प्रकार से उन्हें देखकर उसको इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ (जड्डा खलु भो ! जडं पज्जुवासंति, मुंडा खलु भो मुंडं पज्जुवासंति) अरे ! जो जन जड होते हैं वे जडकी सेवा करते हैं और जो जन मुंड होते हैं, वे मुण्ड की सेवा करते हैं (मूढा खलु भो मूढं पज्जुवासंति) तथा जो जन मूढ होते हैं, वे मूढ की सेवा करते हैं। (अपंडिया खलु भो अपंडियं पज्जुवासंति) जो अपण्डित होते हैं वे अपण्डित जन की सेवा करते हैं, (निव्विण्णाणा खलु भो निव्विण्णाणं पज्जुवासंति) जो विशिष्टज्ञान से रहित होते हैं, वे विशिष्टज्ञान से रहित की सेवा करते हैं। (से केस णं एस पुरिसे जड्डे, मुंडे, मूढे, अपंडिए निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे) परन्तु यह कैसा पुरुष है जो जड, मुंड, मूढ, अपण्डित, निर्विज्ञान होता हुआ भी श्री से और ह्री से युक्त है (उत्तप्पसरीरे) शरीर की कान्ति से संपन्न है। (एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ) यह पुरुष क्या किस प्रकार का आहार करता है?

समुप्पज्जित्था) કે જે તરફ એક વિશાળ પરિષદાની વચ્ચે બેઠેલા કેશીકુમારશ્રમણ બહુ મોટા સ્વરે ધર્મનું વ્યાખ્યાન કરી રહ્યા હતા આ પ્રમાણે તેમને જોઈને દને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે (जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति मुंडा खलु भो मुंडं पज्जुवासंति) અરે ! જે લોકો જડ હોય છે તેઓ જડને સેવે છે અને જે લોકો મુંડ હોય છે તેઓ મુંડની સેવા કરે છે (मूढा खलु भो मूढं पज्जुवासंति) તેમજ જે લોકો મૂઢ હોય છે તેઓ મૂઢની સેવા કરે છે (अपंडिया खलु भो अपंडियं पज्जुवासंति) જેઓ અપંડિત હોય છે તેઓ અપંડિતોને સેવે છે (निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति) જેઓ વિશિષ્ટ જ્ઞાનથી રહિત છે તે વિશિષ્ટ જ્ઞાન રહિતને સેવે છે. (से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे, मूढे, अपंडिए निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे) પણ આ કેવો પુરુષ છે કે જે જડ, મુંડ મૂઢ અપંડિત, નિર્વિજ્ઞાન હોવા છતાં શ્રી તેમજ હ્રી થી યુક્ત છે (उत्तप्पसरीरे) શરીરની કાંતિથી સંપન્ન છે (एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ) આ પુરુષ શું

किं परिणमयति ? किं स्वादति ? किं पिबति ? किं ददाति ? किं प्रयच्छति ? यत् खलु एष एतावन्महालयाय मनुष्यपरिषदो मध्यगतो महता शब्देन ब्रवीति ?, एवं संप्रेक्ष्यते, चि ं सारथिमेवमवादीत्–चित्र ! जडाः खलु भो ! जडं पर्युपासते यावद् ब्रवीति, स्वात्यामपि खलु उद्यानभूमौ नो शक्नोमि सम्यक् प्रकामं प्रविचरितुम् ॥सू० १२६॥

टीका—'तएणं से चित्ते' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिर्यत्रैव मृगवनं=मृगवननामकमुद्यानं यत्रैव केशिनंकुमारश्रमणस्य अदूरसामन्तं=नातिदूरं नातिसमीपरूपं स्थलं तत्रैवोप-

---

(किं परिणामेइ) किस प्रकार से खाये हुए भोजन को परिणमाता है ? (किं खायइ, किं पियइ, किं दलइ, किं पयच्छइ) कैसी रुचिर वस्तु को यह खाता है ? किस प्रकार की रुचिर वस्तु का यह पान करता है ? यह लोगों के लिये क्या देता है ? क्या विशेषरूप से यह उन्हें वितरित करता है ? (जं ण एस ए महालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं बूयाइ) जो यह पुरुष इतनी बडी विशाल मनुष्य परिषदा के बीच में बैठ कर बडे जोर से बोल रहा है ? (एवं संपेहेइ) ऐसा उसने विचार किया (चित्तं सारहिं एवं वयासी) इस प्रकार विचार करके फिर उसने चित्र सारथि से ऐसा कहा–(चित्ता ! जड्डा खलु भो जड्डं पज्जुवासंति, जाव बूयाइ, साए वि य णं उज्जाणभूमीए नो सम्मं पकामं पवियरित्तए) हे चित्र ! जड जड की पर्युपासना करते हैं यावत् यह बडे जोर से बोल रहा है। मैं अपनी भी उस उद्यानभूमि में इच्छानुसार अच्छी तरह से घूम नहीं पा रहा हूं।

જાતનો આહાર કરે છે ? (किं परिणामेइ) કેવી રીતે ખાધેલા ભોજનને પરિણમાવે છે ? (किं खायइ, किं पियइ, किं दलइ, किं पयच्छइ) કઇ જાતની રૂચિની વસ્તુનો આ આહાર કરે છે ? કઇ જાતની રૂચિની વસ્તુનું આ પાન કરે છે ? લોકોને આ શું આપે છે ? વિશેષરૂપથી આ શું લોકોના માટે વિતરિત કરે છે ? (जं ण एस ए महालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं बूयाइ) જો કે આ પુરૂષ આટલી મોટી લોક પરિષદાની વચ્ચે બેસીને બહુ મોટા સાદે બોલે છે ? (एवं संपेहेइ) આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો (चित्तं सारहिं एवं वयासी) આમ વિચાર કરીને પછી તેણે ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું–(चित्ता ! जड्डा खलु भो जड्डं पज्जुवासंति, जाव बूयाइ, साए वि य णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए) હે ચિત્ર ! જડ જડને સેવે છે યાવત્ આ બહુ મોટા સાદે બોલી રહ્યો છે હું પોતે પણ આ ઉદ્યાનભૂમિમાં સ્વસ્થતાપૂર્વક સારી રીતે હરી ફરી શકતો નથી.

गच्छति तुरगान्=अश्वान् मोचयति=रथात् पृथक्करोति, प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-हे स्वामिन् ! एत=आगच्छत अत्र अश्वानां=हयानां श्रमं=मार्गजन्यशारीरखेदं क्लमं=मानसिकग्लानिं च सम्यक्=किञ्चित्कालावस्थानेन समीचीनतया अपनयामः=दूरीकुर्मः। ततः=पूर्वोक्तनिश्चयानन्तरं स प्रदेशी राजा रथात् प्रत्यवरोहति=अवतरति, 'चित्रेण सारथिना सार्द्धं' तुरगाणां स्वस्य च श्रमं क्लमं च सम्यग् अपनयन्=दूरीकुर्वन् विश्राम्यन् यत्र पश्यति यत्र केशिकुमारश्रमणं महातिमहत्या=अतिमहत्याः, परिषदो मध्यगतं=मध्यस्थितं महता शब्देन=उच्चस्वरेण धर्मं=जिनप्रणीतम् आख्यान्तं=कथयन्तं दृष्ट्वा च, अयमेतद्रूपं=वक्ष्यमाणप्रकारकम् आध्यात्मिकं=आत्मगतोऽङ्कुरस्थ

टीकार्थ—इसके बाद वह चित्र सारथि मृगवन नामके उद्यान में पहुंचकर केशीकुमारश्रमण से अधिष्ठित प्रदेश के पास पहुंचा वह प्रदेश केशीकुमारश्रमण से न अधिक दूर था, और न अधिक पास ही था पहुंचकर उसने घोडों को खडा किया। और रथ को रोक दिया तथा प्रदेशी राजा से ऐसा कहा हे स्वामिन्! आईये, यहां हमलोग घोडों के मार्गजन्य शारीरिक खेद को एवं मानसिक ग्लानि को कुछ कालतक ठहर कर अच्छी तरह से दूर करलें। पूर्वोक्त निश्चय के अनन्तर प्रदेशी राजा, रथ से नीचे उतरा और चित्र सारथि के साथ वहां घोडों की एवं निजकी थकावट को तथा क्लम-मानसिक ग्लानि को-अच्छी तरह से दूर करता हुआ, तथा विश्राम करता हुआ इधर उधर देखने लगा-देखते २ उसकी दृष्टि वहां पहुंची जहां केशिकुमारश्रमण अतिमहती-(विशाल) परिषदा के बीच बैठे हुए उच्चस्वर से जिनप्रणीत धर्म की प्ररूपणा कर रहे थे वहां

ટીકાર્થ—ત્યારપછી તે ચિત્ર સારથિ મૃગવન નામે ઉદ્યાનમાં પહોંચીને કેશીકુમાર શ્રમણ જ્યાં વિરાજમાન હતા તેની પાસે પહોંચ્યો. તે સ્થાન કેશીકુમાર શ્રમણથી વધારે દૂર પણ નહિ તેમજ વધારે નજીક પણ નહિ હતું ત્યાં પહોંચીને તેણે ઘોડાઓને ઉભા રાખ્યા અને રથને થોભાવ્યો. તેમજ પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્! પધારો, અહીં આપણે થોડા સમય સુધી રોકાઇને ઘોડાઓના માર્ગ-જન્ય શારીરિક ખેદને અને માનસિક ગ્લાનિને સારી રીતે દૂર કરવા યત્ન કરીએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તે પ્રદેશી રાજા રથ પરથી નીચે ઉતર્યો અને ચિત્ર સારથિની સાથે ત્યાં ઘોડાઓના અને પોતાના થાકને તેમજ ક્લમ-માનસિક ગ્લાનિ-ને સારી રીતે દૂર કરતાં તથા વિશ્રામ કરતાં આમતેમ જોવા લાગ્યો જોતાં જોતાં તેમની નજર અતિ વિશાળ પરિષદાની વચ્ચે બેસીને મોટા સાદે તે પરિષદને જિનપ્રબોધિત ધર્મની

जडोऽयमितिरूपः यावच्छब्देन-'चिन्तितः=कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः' इति संग्राह्यम्, तत्र-चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः 'मुण्डोऽय-'मितिलक्षणो द्विपत्रित इव, कल्पितः=स एव विचारः 'मुण्डोऽय'-मिति रूपः पल्लवितइव, प्रार्थितः, स एवेष्टरूपेण स्वीकृतः 'निश्चयेनायमपण्डितः इतिरूपः पुष्पितइव मनोगतः संकल्पः मनसि दृढरूपेण निश्चयः 'सत्ययं निर्विज्ञानः' इतिलक्षणः फलितइव समुदपद्यत=समुत्पन्नः। तदेव दर्शयति-'जड्डा' इत्यादि,

देखकर इसके मन में इस प्रकार का संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ. 'यहां यावत् पद से संकल्प के आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, मनोगत ये विशेषण गृहीत हुए हैं. इनकी सार्थकता इस प्रकार से है, यह विचार उसकी आत्मा में पहिले अङ्कुर के रूप में जमा, अतः वह आध्यात्मिक हुआ बाद में वह पुनः पुनः स्मरणरूप होने के कारण चिन्तितरू हो गया अर्थात् यह मुंड है यह मूढ है इस तरह बार२ स्मृति में आने के कारण यह विचार द्विपत्रित अङ्कुर की तरह चिन्नितरूप बन गया-पुनः वही विचार यह मुण्डित ही है, और कोई नहीं है इसरूप से निश्चयापन्न होने के कारण पल्लवित हुए अंकुर की तरह प्रार्थित हो गया. 'अयमपण्डित एव निश्चयेन' फिर ऐसा निश्चय हो जाने से कि यह नियमतः अपण्डित ही है(पण्डित नहीं है) यह विचार पुष्पित अकुर की तरह इष्टरूप से स्वीकृत हो जाने के कारण पुष्पित हो गया. बाद में 'यह विज्ञान रहित है' इसरूप से मनमें दृढरूप से निश्चित हो जाने के कारण मनोगत हो गया. तात्पर्य कहने का

પ્રરૂપણા કરતા તે કેશિકુમારશ્રમણ પર પડી તેમને જોઇને તેમના મનમા આ જાતનો સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો. અહીં યાવત્ પદથી સંકલ્પના આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત, મનોગત આ બધા વિશેષણો ગ્રહણ કરવામા આવ્યાં છે. આ બધા વિશેષણોની સાર્થકતા આ પ્રમાણે સમજવી. આ વિચાર તેના આત્મામાં પહેલા અંકુરના રૂપમાં જન્મ્યો. તેથી તે આધ્યાત્મિક થયો. ત્યારપછી તે વારવાર સ્મરણરૂપ હોવા બદલ ચિંતિત રૂપ થઇ ગયો. એટલે કે આ મુંડ છે, આ મૂઢ છે આ પ્રમાણે વારંવાર સ્મૃતિમા આવવાથી આ વિચાર દ્વિપત્રિત અંકુરની જેમ ચિંતિતરૂપ થઇ ગયો પછી તેજ વિચાર આ મુંડિત જ છે અન્ય નહિ, આ પ્રમાણે નિશ્ચયાપન્ન હોવા બદલ પલ્લવિત થયેલા અંકુરની જેમ પ્રાર્થિત થઇ ગયો. "अयमपण्डित एव निश्चयेन" ત્યાર પછી આ જાતનો નિશ્ચય થઇ જવાથી આ નિયમત અપંડિત જ છે આ વિચાર પુષ્પિત અંકુરની જેમ ઇષ્ટ રૂપથી સ્વીકૃત થઇ જવા બદલ પુષ્પિત થઇ ગયો ત્યાર બાદ 'આ વિજ્ઞાન રહિત છે' આ પ્રમાણે મનમાં દૃઢરૂપમાં નિશ્ચિત થઇ જવાથી આ

जड्डा=अलसा उद्योगवर्जितत्वात्, यद्वा-जड्डा इति विवेकविकलाः कर्त्तव्याकर्त्तव्यज्ञानरहितत्वात् जडकम्=जडपुरुषमेव पर्युपासते=सेवन्ते। तथा-मुण्डा=पतादृशा एव अनावृतमस्तका निर्लज्जा इत्यर्थ, त एव मुण्डं=मुण्डितमस्तकमेव पर्युपासते। तथा-मूढा=मूर्खा हेयोपादेयज्ञानशून्या एव मूढं=सदसद्विवेकविकलमेव पर्युपासते। अपण्डिता=व्यावहारिकबुद्धिविकलास्तत्त्वज्ञानरहितत्वात्, त एव अपण्डितं=तत्त्वज्ञानशून्यमेव पर्युपासते। निर्विज्ञानाः=

यह है कि यहां पर विचार के इन विशेषणोंने विचार की आगे२ पुष्टि होती हुई प्रकट की है। जिस प्रकार अंकुर पहिले जमता है, बाद में वह पल्लवित होता है, फिर पुष्पित होता है और अन्त में फलित होता है इसी प्रकार से यहां उसका विचार आगे२ अधिक२ पुष्ट होता गया इसी बात को 'जड्डा' आदिपदों द्वारा प्रकट किया गया है-उद्योगवर्जित होने से जो जड-अलस होते हैं अथवा तो कर्त्तव्याकर्त्तव्यरूप विवेक से रहित होने के कारण विवेक विकल हैं वे ही इस जड पुरुष की उपासना-सेवा करते हैं, तथा जो इसी जैसे मुण्ड-अनावृत खुले मस्तक वाले-निर्लज्ज हैं, वे ही इस मुण्डित मस्तकवाले इसकी सेवा करते है, तथा जो हेयोपादेय ज्ञान से शून्य मूढ जन हैं वे ही इस अच्छे बुरे के ज्ञान से विकल हुए इसकी सेवा करते हैं। तत्त्वज्ञान रहित होने के कारण जो व्यवहारिक बुद्धि से विकल हैं वेही इस तत्त्वज्ञान शून्य इस अपण्डित की सेवा करते हैं, तथा बुद्धि हीन होने से जो विशिष्टज्ञान से रहित हैं वेही इस सद्बोधरहित को

મનોગત થઇ ગયો. તાત્પર્ય એ છે કે અહીં વિચારના આ વિશેષણોથી અનુક્રમે તે પછીના વિચારોની પુષ્ટિ જ થાય છે જેમ અંકુર પહેલાં જામે છે, ત્યારપછી તે પલ્લવિત થાય છે પછી પુષ્પિત થાય છે અને છેવટે ફલિત થાય છે તેમજ અહીં પણ તેનો વિચાર અનુક્રમે અધિકાધિક પુષ્ટ જ થતો જાય છે આ વાતને 'जड्डा' વગેરે પદો વડે પ્રકટ કરવામાં આવી છે ઉદ્યોગ રહિત હોવા બદલ જે જડ-આળસુ-હોય છે અથવા તો જે કર્તવ્યાકર્તવ્યરૂપ વિવેકથી રહિત હોવા બદલ વિવેક વિકલ છે તે જ આ જડ પુરુષની ઉપાસના-સેવા કરે છે. તેમજ જેઓ એના જેવા જ મુંડ-અનાવૃત મસ્તકવાળા-નિર્લજ્જ છે તે જ આ મુંડિત મસ્તકવાળાઓની સેવા કરે છે તેમજ જેઓ હેયોપાદેયના જ્ઞાનથી રહિત મૂઢ જન છે તે જ આ વિવેક-રહિત પુરુષને સેવે છે તત્ત્વજ્ઞાનરહિત હોવાથી જે વ્યાવહારિક બુદ્ધિથી વિકલ છે તે જ આ તત્ત્વજ્ઞાન રહિત અપંડિતને સેવે છે તેમજ બુદ્ધિહીન હોવાથી જે વિશિષ્ટજ્ઞાનથી રહિત છે તેઓ જ આ સદ્બોધ રહિત પુરુષની સેવા કરે છે આ કઈ જાતની

विशिष्टज्ञानरहिताः बुद्धिहीनत्वात्, त एव निर्विज्ञान=सद्बोधरहितमेनं पर्युपासते। स एष कीदृशः पुरुषः यो जडो मुण्डो मूढोऽपण्डितो निर्विज्ञानोऽपि श्रिया==महातिमहालयपरिषदादिशोभया, ह्रिया=लज्जया-कुचेष्टावर्जनरूपया उपगतः=संपन्न. तथा-उत्तप्तशरीर.=शरीरकान्त्या दीप्यमानो वर्त्तते इति किं कारणम्? कारणं चिन्तयति-एष खलु पुरुषः कं=किम्प्रकारम् आहारं= भोजनम् आहारयति=करोति? किं=केन प्रकारेण भुक्तं भोजनं परिणमयति= परिणामं प्रापयति?, किं=कीदृशं रुचिरं वस्तु खादति? किं=कीदृशं रुचिर प्रपाणकादिकं पिबति?, किं ददाति एभ्यो लोकेभ्यः, किं प्रयच्छति=विशेषेण ददाति यत्=यस्मात्कारणात् खलु एष पुरुषः एतावन्महालयायाः=महत्याः मनुष्यपरिषदो मध्यगतः=मध्योपविष्टःसन् महता शब्देन=उच्चैःस्वरेण ब्रवीति= वदति?। एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, चित्र सारथिमेवमवा-

---

सेवा करते है। यह कैसा पुरुष है? जो जड, मुण्ड, मूढ, अपण्डित एवं निर्विज्ञान हुआ भी महतिमहालय परिपदा-याने विशालसभा में शोभा से एवं कुचेष्टावर्जनरूप लज्जा से संपन्न बना हुआ है.। एवं शरीरकी कान्ति से देदीप्यमान हो रहा है. इसमे कारण क्या है? क्या यह इस प्रकार के आहारको करता है जो इसके शरीर में ऐसी कान्ति प्रदान करता है- यही बात यह 'कं आहारं आहारयति' इत्यादि पदों द्वारा विचार करता है यह किस प्रकार के आहारको लेता है? तथा किस प्रकार से भुक्त भोजन को यह परिणमाता है? यह कैसी रुचिर वस्तु खाताहै? अगर कैसे रुचिरपान को यह पीता है? यह इन लोकों के लिये क्या दे रहा है? क्या विशेपरूप से यह इन्हे प्रदान कर रहा है? जो यह इस बडी भारी मनुष्य परिषदा के बीच मे बैठा हुआ बडे जोर से बोल रहा है। इस प्रकार से उसने विचार-क्रिया-

---

વ્યક્તિ છે કે જે જડ, મુંડ, મૂઢ, અપંડિત અને નિર્વિજ્ઞાન હોવા છતાં પણ મહતિમહાલય પરિષદા એટલે કે વિશાળ સભામાં શોભાથી અને કુચેષ્ટા વર્જનરૂપ લજ્જાથી યુક્ત થયેલો છે તેમજ શરીરકાંતિથી દીપ્યમાન થઈ રહ્યો છે આનું શું કારણ છે? શું તે આ જાતનો આહાર કરે છે કે જે એના શરીરમાં એવી કાંતિ ઉત્પન્ન કરે છે એજ વાત તે 'कं आहारं आहारयति' વગેરે પદો વડે બતાવે છે. આ કઈ જાતનો આહાર ગ્રહણ કરે છે? તેમજ કઈ જાતના ભુક્ત ભોજનને આ પરિણમાવે છે? આ કઈ જાતની રુચિર વસ્તુનો આહાર કરે છે? કેવા રુચિર પાનપદાર્થને આ પીવે છે? આ પુરુષ આ બધાને શું આપી રહ્યો છે.? વિશેષરૂપથી આ બધા એકત્ર થયેલા લોકોને આ શું આપી રહ્યો છે? કે જે આ બહુ મોટી વિશાળ પરિષદાની વચ્ચે બેસીને બહુ મોટા સ્વરથી બોલી રહ્યો છે આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો ત્યાર-

दीद्-प्रकटमवेचत्-चित्र ! जडाः खलु भद पर्युपासते, यावत्-यावच्छब्देन पूर्वोक्तं सर्वं ग्राह्यम्, प्रवीति=उच्चस्वरेण वदति येन कारणेनाहं स्वस्यामपि=स्वकीयायामपि उद्यानभूमौ सम्यक्=सम्यक्प्रकारेण प्रकामम्-अतिशय। प्रविचरितुम्=प्रचरितुं नो शक्नोमि=न समर्थो भवामि ॥सू० १२६॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही पएसिरायं एवं वयासी-एस णं सामी। पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसपण्णे जाव चउनाणोवगए अधोऽवहिए अण्णजीविए। तएणं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—आहोहियं णं वयासि चित्ता! अण्णजीवियत्तं णो वयासि चित्ता!? हंता! सामी! आहोहियं णं वयामि अण्णजीवियत्तं णं वयामि। अभिगमणिज्जे णं चित्ता! एस पुरिसे? हंता! सामी! अभिगमणिज्जे। अभिगच्छामो णं चित्ता! अम्हे एयं पुरिसं? हंता! सामी! अभिगच्छामो। सू० १२७॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिराजमेवमवादीत्-एष खलु स्वामिन्! पार्श्वापत्यीयः केशी नामकुमारश्रमणः जातिसम्पन्नः यावत् चतु

बाद में वह चित्र सारथि से प्रकटरूप में इस तरह से कहने लगा-चित्र! जड़ जड़ की उपासना करते हैं इत्यादि यहां यावत् शब्द से पूर्वोक्त सब कथन जो यह जोर से इस मनुष्य परिषदा के बीच में बोल रहा है यहां तक का ग्रहण हुआ है। इसी कारण मैं अपनी भी इस उद्यानभूमि में ठीक तरह से घूम नहीं पा रहा हूं ॥सू० १२६॥

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से चित्ते सारही पएसिरायं एवं वयासी) तब

ત્યારે તે અસ્પષ્ટપણે ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. કે હે ચિત્ર! જડ જડની ઉપાસના કરે છે વગેરે અહીં યાવત્ શબ્દથી પૂર્વોક્ત બધું કથન-કે જે, આ મોટા સાદે મનુષ્ય પરિષદાની વચ્ચે બોલી રહ્યો છે અહીં સુધીનું ગ્રહણ કરવું જોઈએ એથી જ હું આ મારી જ ઉદ્યાન ભૂમિમાં સારી રીતે હરીફરી શકતો નથી. ॥સૂ. ૧૨૬॥

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से चित्ते सारही पएसिरायं एवं वयासी) त्यारे

ज्ञानोपगतः अधोऽवधिकः अन्नजीवितः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्र सारथिमेवमवादीत्–अधोऽवधिकस्य खलु वदसि चित्र! अन्नजीवितस्य खलु

उस चित्र सारथिने प्रदेशी राजा से कहा–(एस णं सामी! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसपण्णे जाव चउनाणोवगए) हे स्वामिन्! ये पुरोवर्ती केशीकुमारश्रमण है। जो कि पार्श्वनाथ की शिष्यपरम्परा में उत्पन्न हुए है। इन्होंने कुमारावस्था में ही संयम ग्रहण किया है इसलिये इन्हे कुमारश्रमण कहा गया है। ये जातिसंपन्न है, यावत् कुलसंपन्न हैं, इत्यादि पूर्व में कहे गये विशेषणों वाले हैं। इन विशेषणों का अर्थ वहीं पर लिखा जा चुका है. अतः यहा पर पुनः नहीं लिखा है। ये मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनः पर्यवज्ञान के अधिपति है–चार ज्ञान के धारी हैं (अघोऽवहिए अण्णजीविए) इनका जो अवधिज्ञान है वह परमावधि से किञ्चित ही न्यून है। इनका जीवन प्रासुक एषणीय अन्नपान से है. अर्थात् ये प्रासुक एषणीय ही आहार लेते हैं, उद्गमादि दोष से दूषित आहार नहीं लेते है। (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब प्रदेशी राजाने चित्र सारथि से ऐसा कहा–(आहोहियं णं वयासी चित्ता! अण्णजीवियत्तं णं वयासी चित्ता?) हे चित्र! जो तुम ऐसा कहते हो कि इनका अवधिज्ञान परमावधि से

ચિત્ર સારથિએ પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ (एस णं सामी! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसम्पण्णे जाव चउनाणोवगए) હે સ્વામિન્! આ આપણી સામે કેશીકુમાર શ્રમણ છે. કે જેઓ પાર્શ્વનાથની શિષ્યપરપરામા ઉત્પન્ન થયા છે. એમણે કુમારાવસ્થામા જ સયમ ગ્રહણ કર્યો છે એથી જ એમને કુમાર-શ્રમણ કહેવામાં આવ્યા છે એઓ જાતિસંપન્ન છે, યાવત્ કુલસંપન્ન છે, વગેરે પહેલા કહેવાયેલાં વિશેષણોથી યુક્ત છે આ બધા વિશેષણોનો અર્થ પહેલા સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. તેથી અહીં ફરી કહેવામા આવ્યો નથી, એઓ મતિજ્ઞાન, શ્રુત-જ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મનપર્યવજ્ઞાનના અધિપતિ છે, ચાર જ્ઞાનધારી છે. (अघोऽवहिए अण्णजीविए) એમનુ જે અવધિજ્ઞાન છે તે પરમાવધિથી થોડુ જ કમ છે. એમનુ જીવન પ્રાસુક એષણીય અન્નપાનથી છે એટલે કે એ ઓ પ્રાસુક એષણીય આહાર ગ્રહણ કરે છે ઉદ્ગમ વગેરે દોષોથી દૂષિત આહાર એઓ ગ્રહણ કરતા નથી (तए णं से पएसी राया, चित्तं सारहिं एवं वयासी) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું (आहोहियं णं वयासी चित्ता! अण्णजीवियत्तं णं वयासी चित्ता?) હે ચિત્ર! જો તમે આ પ્રમાણે કહો છો કે એમનુ અવધિજ્ઞાન પરમાવધિ કરતા થોડુ જ અલ્પ છે તેમજ એઓ પ્રાસુક એષણીય આહાર

प्रदेसि चित्र ! ।। हन्त स्वामिन् ! भाषाऽवधिचय खलु वदामि अन्नमीति तस्य खलु वदामि । अभिगमनीयः खलु चित्र ! एष पुरुषः ? हन्त ! स्वामिन् ! अभिगमनीयः । अभिगच्छाम खलु चित्र ! वयं एतं पुरुषम् ! हन्त ! स्वामिन् ! अभिगच्छाम ॥सू० १७॥

टीका—'एएण से चित्ते' इत्यादि–ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशि राजमेवमवादीत्–हे स्वामिन् ! एषः=अयं–पुरोवर्ती पार्श्वापत्यीयः=पार्श्वस्वामि शिष्यपरम्परासञ्जात केशी नाम कुमारश्रमणः=कुमारश्चासौ श्रमणश्च कुमार-श्रमण कुमारावस्थायामेव गृहीतसंयमः, कीदृशोऽयमित्याह जातिसंपन्नः यावत यावच्छब्देन 'कुलसंपन्न' इत्यादिविशेषणानि चौणि पूर्वसूत्रोक्तानि संग्राह्याणि

किंचित् ही न्यून है तथा ये प्रासुक एषणीय ही आहार लेते हैं सो क्या यह बात तुम सत्य कहते हो ? (हंता सामी ! आहोहिय णं वयामि, अण्णजी वियत्त णं वयामि) हां, स्वामिन् ! मैं सत्य कहता हूं कि इनका अवधि ज्ञान परमावधि से किंचित् न्यून है और ये प्रासुक एषणीय ही आहार लेते हैं। (अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे) तो हे चित्र ! यह पुरुष अभिगमनीय है अर्थात् परिचय करने के योग्य है (हंता सामी ! अभि गमणिज्जे) हां स्वामिन् । ये आपके लिये अभिगमनीय हैं अर्थात् परि चय करने के योग्य हैं । (अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं) तो हे चित्र ! मैं इनके साथ परिचय करलूं ? (हंता सामी ! अभिगच्छामो) हां स्वामिन् ! आप इनके साथ परिचय करें।

इसका टीकार्थ इस मूलार्थ के जैसा ही है। कुछ विशेषता अण्ण जियत्त' पद में है इसका अर्थ मैंने मूलार्थ में लिखा जा चुका है

જ ગ્રહણ કરે છે તો શું આ વાત સાચી છે ? (हंता सामी ! आहोहिय णं वयामि अण्णजीवियत्तं णं वयामी) હા સ્વામિન્ ! હું સાચી વાત કહું છું, એમનું અવધિજ્ઞાન પરમાવધિ કરતાં થોડું કમ છે અને એઓ પ્રાસુક એષણીય આહાર ગ્રહણ કરે છે. (अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे) તો હે ચિત્ર ! આ પુરુષ અભિગમનીય છે એટલે કે ઓળખાણ કરવા યોગ્ય છે (हंता सामी ! अभिगमणिज्जे) હા સ્વામિન્ ! એઓ આપના માટે અભિગમનીય છે એટલે કે ઓળખાણ કરવા યોગ્ય છે (अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं) તો હે ચિત્ર ! હું એમની સાથે ઓળખાણ કરું ? (हंता सामी अभिगच्छामो) હા સ્વામિન્ ! તમે એમની સાથે ઓળખાણ કરી લો.

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે વિશેષતા ફક્ત 'अण्णजीवियत्त' પદમાં છે આનો એક અર્થ તો મૂલાર્થમાં જ બતાવવામાં આવ્યો છે અને બીજો

अर्थोऽपि तत एव बोध्यः। चतुर्ज्ञानोपगतः=मत्यादिज्ञानचतुष्टयसंपन्नः अधोऽवधिकः=अधः=परमावधेरधोवर्ती अवधिर्यस्य स तथा-परमावधेः किञ्चिन्न्यूनावधियुक्तः अन्नजीवित =अन्नेन=प्रासुकैषणीयान्नमात्रेण जीवितं=जीवनं यस्य स तथा। तथा-'अन्यजीवितः' इति वा छाया तत्र-अन्यस्मै न तु स्वस्मै सर्वविरतिमत्त्वात् जीवनमरणाशंसाविप्रमुक्तत्वाद्वा जीवितं=जीवनं यस्य स तथा, तादृशो वर्त्तते! ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्-हे चित्र! अस्य मुनेस्त्वम् आधोऽवधिकत्वम्=अधोऽवधित्वं वदसि= सत्यं कथयसि? तथा-अन्नजीवितत्वम् अन्यजीवितत्वं वाऽस्यमुनेः हे चित्र! त्वं सत्यं कथयसि?। इति पृच्छानन्तरं चित्रः सारथिः प्राह-हे स्वामिन्! 'हन्त' इति स्वीकारे 'हाँ' इति भाषायाम्, अस्य मुनेरहम् आधोऽवधिकत्वं खलु वदामि सत्यं कथयामि, तथा अन्नजीवितत्वम् अन्यजीवितत्वं वा वदामि= सत्यं कथयामि।पुनः प्रदेशी राजा प्राह-हे चित्र! एष पुरुषः किम् अस्माकम् अभिगमनीयः=परिचययोग्योऽस्ति? हन्त हे स्वामिन! एष मुनिः अभिगमनीयोऽस्ति। पुनःप्रदेशी राजा पृच्छति एवं तर्हि हे चित्र! एतं पुरुषं वयम् अभिगच्छाम। अनेन सह परिचयं करवाम?। चित्रः सारथिः प्राह-हन्त हे स्वामिन्! अभिगच्छाम=अनेन सह वयं परिचयं करवाम ॥सू० १२७॥

मूलम्---तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी-तुब्भे णं भंते! आहोहिया अण्णजीविया?। तएणं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-पएसी! से जहाणामए अंकवाणियाइवा संखवाणियाइवा दंतवाणियाइवा सुंकं भंसिउकामा णो सम्मं पथं पुच्छंति, एवामेव पएसी! तुब्भेवि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि, से णूणं तव

और दूसरा अर्थ 'अन्यजीवित' इस छायापक्ष में ऐसा होता है कि सर्वविरतियुक्त होने से अथवा जीवन मरण की आशंसा से रहित होने से इनका जीवन दूसरों के लिये ही है अपने लिये नहीं ॥सू. १२७॥

અર્થ 'અન્યજીવિત' આ 'છાયાપક્ષ'મા આ પ્રમાણે થાય છે. કે સર્વવિરતિયુકત હોવાથી અથવા જીવનમરણની આશંસાથી રહિત હોવાથી એમનું જીવન બીજાઓના માટે જ છે પોતાના માટે નહિ. ૧૨૭ ॥

पएसी ! मम पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए से णूणं पएसी ! अट्ठे समत्थे ? हंता ! अत्थि ॥सू० १२८॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्धं यत्रैव केशी कुमारश्रमणः तत्रैव उपागच्छति केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते स्थित्वा एवमवादीत्—यूयं खलु भदन्त ! आधोऽवधिकाः अन्नजीविताः ?। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—प्रदेशिन् ! तद्यथा नाम—अङ्कवणिज इति वा शङ्खवणिज इति वा दन्तवणिज

'तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं) वह प्रदेशी राजा चित्र सारथि के साथ (जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) जहां केशिकुमारश्रमण थे वहां पर गया (केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामन्ते ठिच्चा एवं वयासी) वहां जाकर वह केशिकुमार श्रमण से ऐसे स्थान पर खड़ा हो गया कि जो स्थान न उनसे अधिक दूर था और न अधिक पास था। वहीं से खड़े होकर इसने उनसे ऐसा कहा—(तुब्भे णं भंते ! आहोहिया अण्णजीविया) हे भदन्त ! आपका ज्ञान—अव विज्ञान परमावधि से किंचित् न्यून है और आप प्रासुक एषणीय ही आहार करते हैं ? (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) तब केशी कुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—पएसी ! से जहा नामए अंकवाणियाइ वा, संखवाणियाइ वा, दंतवाणियाइ वा, सुंकं भंसिउकामा णो सम्मं

'तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारपछी (से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं) ते प्रदेशी राजा चित्र सारथीनी साथे (जेणेव केसि कुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) ज्यां केशिकुमार श्रमण हता त्यां गया. (केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी) त्यां जईने ते केशिकुमार श्रमणथी एवा स्थाने ऊभा रह्या के जे स्थान तेमनाथी वधारे दूर पण नहि हतुं अने वधारे नजीक पण नहि हतुं त्यां ऊभा ऊभा ज तेणे तेमने आ प्रमाणे कह्युं (तुब्भे णं भंते ! आहोहिया अण्णजीविया) हे भदन्त ! आपनुं ज्ञान-परमावधि करतां थोडुं कम छे ? अने आप प्रासुक एषणीय आहार ज ग्रहण करो छो ? (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) त्यारे केशीकुमार श्रमणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं

इति वा, शुल्कं भ्रंशयितुकामा नो सम्यक् पन्थानं पृच्छन्ति, एवमेव प्रदेशिन्! त्वमपि विनयं भ्रंशयितुकामा नो सम्यक् पृच्छसि, अथ नूनं तव प्रदेशिन्! मां दृष्ट्वा अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत-जडाः खलु भो! जडं पर्युपासते यावत् प्रविचरितुं स नूनं प्रदेशिन्! अर्थः समर्थः? हन्त! अस्ति ॥ सू० १२८ ॥

पंथं पुच्छंति) हे प्रदेशिन्! जैसे अंकरत्न के व्यापारी. अथवा शंखरत्न के व्यापारी, या दन्त के व्यापारी,-अर्थात् शंख शुभ भी होता है इसलिये उसको रत्न कहा है, राजदेय भाग को नहीं देने की इच्छा वाले होकर जाने के अच्छे मार्ग को नहीं पूछते हैं (एवामेव पएसी तुब्भे विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि) इसी प्रकार से हे प्रदेशिन्! विनयरूप प्रतिपत्ति को नहीं करने की कामना वाले बने हुए तुमने भी यह अच्छेरूप से नहीं पूछा है. (से णूणं तव पएसी ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) हे प्रदेशिन्! मुझे देखकर तुम्हें इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प हुआ है (जड्डा खलु भो! जड्डं पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए) जड पुरुष जड पुरुषकी पर्युपासना करते हैं यावत् मैं अपनी भी इस उद्यान भूमि में अच्छी तरह से घूम नहीं पा रहा हू (से णूणं पएसी! अट्ठे समत्थे?) हे प्रदेशिन्! कहो मैं ठीक कह रहा हूं न? (हंता, अत्थि) हां, आप ठीक कह रहे हैं।

(पएसी! से जहाणामए अंकवाणियाइ वा, संखवाणियाइ वा, दंतवाणियाइ वा, सुंकं भंसिउंकामा णो सम्मं पंथं पुच्छंति) हे प्रदेशिन्! જેમ અંકરત્નના વહેપારી, કે શંખરત્નના વહેપારી કે દન્તના વહેપારી (શંખ શુભ પણ ગણાય છે તેથી અહીં તેને રત્નરૂપે ઉલ્લેખવામાં આવ્યો છે) રાજકર આપવાની ઈચ્છા ન ધરાવતા ત્યાંથી જવાના સારા માર્ગો માટે પૂછપરછ કરતા નથી (एवामेव पएसी तुब्भे वि वि यणं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! વિનયરૂપ પ્રતિપત્તિને ન આચરતાં તમોએ પણ આ વાત શિષ્ટભાવથી-નમ્રતાથી-પૂછી નથી. (से णूण तव पएसी मम पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) હે પ્રદેશિન્ મને જોઈને તમને આ પ્રમાણેનો આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો છે કે (जड्डा खलु भो! जड्डं पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए) જડ પુરુષો જડને સેવે છે યાવત્ હું આ મારી પોતાની ઉદ્યાન ભૂમિમાં પણ સારી રીતે આરામથી ફરી શકતો નથી. (से णूणं पएसी! अट्ठे समत्थे?) હે પ્રદેશિન્! બોલો હું બરાબર કહું છું ને? (हंता, अत्थि)હા, આપ ઠીક કહો છો.

टीका—'तएणं से पएसी' इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्धं यत्रैव केशीकुमारश्रमणस्तत्रैवोपागच्छति=समागच्छति, केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे स्थित्वा अनुपविश्यैव एवमवादीत्-यूयं खलु हे भदन्त ! आधोऽवधिकाः—अधोऽवधिसम्पन्नाः ? अन्नजीविकाः—प्रासुकैषणीयान्नमात्रजीविनः अन्यजीविनो वा ? ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—हे प्रदेशिन् ! तद्यथा इति दृष्टान्ते, नामेति वाक्यालङ्कारे, अङ्कवणिजः=अङ्करत्नव्यापारिणः 'इति' वाक्यालङ्कारे 'वा' समुच्चये, शङ्खवणिजः=शङ्खरत्नव्यापारिणः, दन्तवणिजः=हस्तिदन्तव्यापारिणः उपलक्षणात्सर्वरत्नव्यापारिणः शुल्कं=राजदेयं भागं भ्रंशयितुकामाः=अदातुकामाः नो सम्यक्=समीचीनतया पन्थानं=गम्यमार्गं पृच्छन्ति, एवमेव=अनयैव रीत्या हे प्रदेशिन् ! त्वमपि विनयं=प्रतिपत्तिरूपं भ्रंशयितुकामः=अकर्तुकामः नो सम्यक् पृच्छसि । अथ=वार्तारम्भे नूनं=निश्चयेन हे प्रदेशिन् । तव मां दृष्ट्वा अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारकः आध्यात्मिकः आत्मगतः यावत् कल्पितः प्रार्थितः, चिन्तितः मनोगतः=मनःस्थितः सङ्कल्पः=विचारः समुदपद्यत=समुत्पन्नः, यदेव वर्ष-यति—मत्तः खलु भो ! भक्त पर्युपास्ते यावत् प्रतिचरितुम्, यावत्पदसंग्राह्यः सर्वोऽपि पाठः पूर्वगतः, स तदर्थश्च तत एवावलोकनीयः। हे प्रदेशिन् ! सोऽर्थः=मदुक्तस्त्वद्हृद्गतविचाररूपोऽर्थः नूनं=निश्चितं समर्थः=वास्तविको वर्तते ? प्रदेशी राजा आह—हन्त ! अस्ति=अयमर्थः-समर्थोऽस्ति, सत्यमस्तीति भावः ॥ सू० १२८ ॥

टीकार्थ—स्पष्ट है यहां 'इति' शब्द वाक्यालङ्कार में और 'वा' शब्द समुच्चय अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। तथा 'तद् यथा' पद दृष्टान्त में आया है। उपलक्षण से यहां समस्त रत्न व्यापारी को ग्रहण करना चाहिये यावत् पद से संकल्प के कल्पित, प्रार्थित, चिन्तित और मनोगत' ये विशेषण ग्रहण किये गये हैं। तथा—'पज्जुवासति जाव' के यावत् पद से पूर्वगत समस्त पाठ गृहीत हुआ है। यह पाठ १२६वे सूत्र में प्रकट किया गया है।सू०१२८।

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે અહીં 'इति' શબ્દ વાક્યાલંકારમાં અને 'वा' શબ્દ સમુચ્ચય અર્થમાં વપરાયેલ છે તેમજ 'तद् यथा' પદ દૃષ્ટાન્તમાં આવેલ છે ઉપલક્ષણ થી અહીં બધા રત્નના વેપારીઓનું ગ્રહણ સમજવું જોઈએ યાવત્ પદથી સંકલ્પના કલ્પિત, પ્રાર્થિત, ચિન્તિત અને મનોગત એ વિશેષણો ગ્રહણ કરવા. જોઈએ 'पज्जुवासति जाव' ના યાવત્ પદથી પૂર્વગત સમસ્ત પાઠનું ગ્રહણ સમજવું જોઈએ. આ પાઠ ૧૨૬મા સૂત્રમાં આપેલ છે. ા સૂ. ૧૨૮ ા

मूलम्--तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी से केणं भंते! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्जत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह? तएणं से केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–एवं खलु पएसि! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते, तं जहा–आभिणिबोहियणाणे१ सुयणाणे२ ओहिणाणे३ मणपज्जवणाणे४ केवलणाणे५ ५। से किं तं आभिणिबोहियनाणे? अभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–उग्गहे१ ईहा२ अवाए३ धारणा४। से किं तं उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे। से कि तं सुयनाणे? सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते--अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च, सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ। ओहिणाणं भवपच्चइय खाओवसमियं जहा नंदीए मणपज्जवनाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–उज्जुमई य विउलमई य, तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं। तत्थ णं जे से आभिणिबोहिनाणे, से णं मम अत्थि। तत्थ णं जे से सुयणाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से ओहिणाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से मणपज्जवनाणे से वि य मम अत्थि। तत्थ णं जे से केवलनाणे से णं ममं नत्थि, से णं अरिहंताणं भगवंताणं। इच्चेएणं पएसी! अहं तव चउव्विहेणं छाउमत्थिएणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणामि-पासामि ॥ सू. १२९ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्—तत्किं खलु भदन्त ! युष्माकं ज्ञानं वा दर्शनं वा, येन यूयं मम एतद्रूपम् आध्यात्मिकं यावत् संकल्पं समुत्पन्नं जानीथ पश्यथ ? ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानं एवमवादीत् एवं खलु प्रदेशिन् ! अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानां पञ्चविधं ज्ञानं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा-आभिनिबोधिकज्ञानम् १, श्रुतज्ञानम् २, अवधिज्ञानम् ३, मनःपर्यवज्ञानम् ४, केवलज्ञानम् ५। अथ किं तद् आभिनिबोधिकज्ञानम् ? आभिनिबोधिकज्ञानं

'तए णं से पएसी राया' इति' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) पुनः उस प्रदेशी राजाने केशी कुमारश्रमण से ऐसा कहा—(से केण भंते ! तुब्भं, नाणे वा दंसणे वा जेणं तुब्भे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पन्नं जाणह पासह ?) हे भदन्त ! ऐसा आपका वह कौनसा ज्ञान अथवा दर्शन है कि जिसके द्वारा आपने मेरे इस उत्पन्न हुए आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प को जाना है, और देखा है (तए णं से केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) तब केशीकुमार श्रमणने उस प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(एवं खलु पएसी अम्हं सम णाणं णिग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते तं जहा—आभिणिबोहियनाणे, सुय नाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे केवलनाणे) हे प्रदेशिन् ! हम श्रमण निर्ग्रन्थों के मत में पांच प्रकार के ज्ञान कहे गये हैं जैसे आभिनिबोधिकज्ञान,—मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान (से किं तं आभिणि,

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ફરી તે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (से केण भंते ! तुब्भं णाणे वा दंसणे वा जेण तुब्भे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह ?) હે ભદંત ! આપની પાસે એવું કયું જ્ઞાન કે દર્શન છે કે જેનાવડે આપ મારામાં ઉત્પન્ન થયેલ આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પને જાણી ગયા છો. અને જોઈ ગયા છો. (तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું—(एवं खलु पएसी ! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते तं जहा—आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे केवलनाणे) હે પ્રદેશિન્ ! અમારા શ્રમણ નિર્ગ્રંથોના મતમાં પાંચ પ્રકારના જ્ઞાન કહેવામાં આવ્યાં

चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-अवग्रहः ? १, ईहा २, अवायः ३, धारणा ४। अथ कोऽसौ अवग्रहः अवग्रहो द्विविधः प्रज्ञप्तः यथा नन्द्यां यावत् सैषा धारणा, तदेतद्, आभिनिबोधिकज्ञानम्। अथ किं तत् श्रुतज्ञानम्? श्रुतज्ञानं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-अङ्गप्रविष्टं च अङ्गबाह्यं च, सर्वं भणितव्यं यावत्-दृष्टिवादः॥ अवधिज्ञानं भवप्रत्ययिकं क्षायोपशमिकं यथा नन्द्याम् (नं. पृ.

बोहियनाणे) हे भदन्त! आभिनिबोधिकज्ञान का क्या स्वरूप है ? (आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते) हे प्रदेशिन्! आभिनिबोधिकज्ञान चार प्रकार का कहा गया है। (तं जहा-उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४) जैसे-अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा। (से किं तं उग्गहे) हे भदन्त! अवग्रह ज्ञान का क्या स्वरूप है। (जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे) अवग्रह से लेकर धारणापर्यन्त सब विवेचन नन्दीसूत्र में कहा गया है, इस प्रकार वह आभिनिबोधिकज्ञान का स्वरूप है। (से किं तं सुयनाणे) हे भदन्त! श्रुतज्ञान का क्या स्वरूप है ? (सुयनाणे दुविहे-पण्णत्ते) हे प्रदेशिन्! श्रुतज्ञान दो प्रकार का कहा गया है। (तं जहा-अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च) जैसे-अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य (सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ) इन दोनों श्रुतज्ञानों का वर्णन भी नन्दिसूत्र में कहा गया है अतः दृष्टिवाद तक श्रुतज्ञान का समस्त वर्णन वहां से देखना चाहिये, (ओहिनाणं भवपच्चइयं खओवसमियं जहा नंदीए) अवधिज्ञान भवप्रत्ययिक

છે. જેમકે આભિનિબોધિકજ્ઞાન,-મતિજ્ઞાન શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન, મનઃપર્યવજ્ઞાન અને કેવલજ્ઞાન. (से किं तं आभिणिबोहियनाणे) હે ભદંત ! આભિનિબોધિક જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે ? (आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન્ ! આભિનિબોધિકજ્ઞાન ચાર પ્રકારનું કહેવાય છે (तं जहा-उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४) જેમકે અવગ્રહ ૧, ઇહા ૨, અવાય ૩, અને ધારણા ૪,. (से किं तं उग्गहे) હે ભદંત ! અવગ્રહ જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે ? (उग्गहे दुविहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન્ અવગ્રહ જ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે. (जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे) અવગ્રહથી માંડીને ધારણા સુધીનું સમસ્ત વિવેચન નંદીસૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે આ પ્રમાણે આ આભિનિબોધિકજ્ઞાનનું સ્વરૂપ છે ? (से किं तं सुयनाणे) હે ભદંત ! શ્રુતજ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે ? (सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન્ ! શ્રુતજ્ઞાન બે પ્રકારનું છે (तं जहा अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च) જેમકે અંગ પ્રવિષ્ટ અંગબાહ્ય (सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठियाओ) આ બન્ને શ્રુતજ્ઞાનોનું વર્ણન પણ નન્દિસૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે તેથી દૃષ્ટિવાદ સુધી શ્રુતજ્ઞાનનું બધું વર્ણન ત્યાંથી જ જાણી લેવું જોઈએ (ओहिनाणं भवपच्चइयं खओवसमियं जहा नंदीए)

१९८ प ४)। मनःपर्यवज्ञान द्विविध मज्ञप्त, तद्यथा-ऋजुमतिश्च विपुल मतिश्च तथैव केवलज्ञान सर्व भणितव्यम्। तत्र खलु यत्तत् आभिनिबोधिकज्ञान तत्खलु ममास्ति १। तत्र खलु यत्तत् श्रुतज्ञान तदपि च ममास्ति २। तत्र खलु यत्तत् अवधिज्ञान तदपि च ममास्ति ३। तत्र-खलु यत्तत् मन पर्यवज्ञान तदपि च ममास्ति ४। तत्र खलु यत्तत् केवलज्ञान तत् खलु मम नास्ति, तत् खलु अर्हतां भगवताम्। इत्येतेन प्रदेशिन्! अहं तव चतुर्विधेन छाद्मस्थिकेन ज्ञानेन एतमेतद्रूपम् आध्यात्मिक यावत् संकल्पं समुत्पन्न जानामि पश्यामि ॥ सू० १२९ ॥

और क्षायोपशमिकके भेद से दो प्रकार का कहा गया है। इसका भी वर्णन नन्दीसूत्र में किया गया है। (मणपज्जवनाणे दुविहे पण्णत्ते) मन पर्यव ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है (त जहा-उज्जुमईय विउलमईय)-ऋजुमति और विपुलमति, (तहेव केवलनाण सव्व भाणियव्व) इसी प्रकार केवलज्ञान का कथन भी यहां पर करना चाहिये (तत्थ ण जे से आभिणिबोहियनाणे से ण मम अत्थि) इन पांच ज्ञानों में से मुझे मतिज्ञान रूप आभिनिबोधिकज्ञान है। (तत्थ ण जे से सुयनाणे से वि य मम अत्थि) श्रुतज्ञान भी है (ओहियणाणे से वि य मम अत्थि) अवधिज्ञान भी है। (तत्थ ण जे से मणपज्जवनाणे से वि य मम अत्थि) और मुझे मनः पर्ययज्ञान भी है। (तत्थ ण जे से केवलनाणे से ण मम नत्थि) केवल ज्ञान मुझे नहीं है (से ण अरिहताण भगवताण) यह केवलज्ञान अर्हन्त भगवन्तों के होता है। (इच्चेएण पएसी! अह तव चउव्विहेण छाउ

અવધિજ્ઞાન ભવપ્રત્યયિક અને ક્ષાયોપશમિકના ભેદથી બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આનું વર્ણન પણ નન્દીસૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે. (मणपज्जवनाणे, दुविहे पण्णत्ते) મનઃ પર્યવજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે (त जहा उज्जुमई य विउलमई य) જેમકે ઋજુમતિ અને વિપુલમતિ (तहेव केवलनाण सव्व भाणियव्व) આ પ્રમાણે જ કેવળજ્ઞાનનું વર્ણન પણ અહીં જાણવું જોઈએ. (तत्थ ण जे से आभिणिबोहियनाणे से ण मम अत्थि) આ પાંચ જ્ઞાનોમાંથી મને મતિજ્ઞાનરૂપ આભિનિબોધિકજ્ઞાન છે (तत्थ ण जे से सुयनाणे से वि य मम अत्थि) શ્રુતજ્ઞાન પણ છે (ओहियनाणे से वि य मम अत्थि) અવધિજ્ઞાન પણ છે (तत्थ ण जे से मणपज्जवनाणे से वि य मम अत्थि) અને મનઃપર્યવજ્ઞાન પણ છે (तत्थ ण जे से केवलनाणे से ण मम नत्थि) પરંતુ મને કેવળજ્ઞાન નથી (से ण अरिहताण भगवताण) આ કેવળજ્ઞાન અર્હન્ત ભગવન્તોને હોય છે. (इच्चेएण पएसी! अह तव चउव्विहेण छाउमत्थिएण णाणेण इमेयारूव अज्झत्थिय जाव सकप्प

टीका--'तए णं से पएसी' इत्यादि--ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-तत् किम्=कीदृशं खलु हे भदन्त! युष्माकं ज्ञानं वा दर्शनं वा अस्ति येन ज्ञानेन वा दर्शनेन वा यूयं मम एतद्रूपं=पूर्वोक्तप्रकारम् आध्यात्मिकम्=आत्मगतविचारम् यावत् संकल्पम्, यावच्छब्देन-चिन्तितं, कल्पितं, प्रार्थितं मनोगतम्, इति संग्राह्यम्, संकल्पं=समुत्पन्नं=समुद्भूतं जानीथ=ज्ञानविषयीकुरुथ पश्यथ=दर्शनविषयीकुरुथ। ततः=प्रदेशिराजप्रश्नानन्तरं खलु स केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्-एवं खलु हे प्रदेशिन! अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानां पञ्चविधं ज्ञानं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-आभिनिबोधिकज्ञानम् १ श्रुतज्ञानम् २, अवधिज्ञानम् ३, मनःपर्यवज्ञानम् ४, केवलज्ञानम् ५। तत्र-आभिनिबोधिकज्ञानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-अवग्रहः १, ईहा २, अवायः ३, धारणा ४। अथ कोऽसौ अवग्रहः!

त्थिएणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणामि पासामि) इस तरह से हे प्रदेशिन् मैंने इन छाद्मस्थिक चतुर्विधज्ञान के द्वारा तुम्हारे इस प्रकार के समुत्पन्न हुए इस संकल्प को जान लिया है और देखलिया है।

टीकार्थ—इसके बाद प्रदेशी राजाने केशी कुमारश्रमण से इस प्रकार कहा-हे भदन्त! आपका ज्ञान दर्शन किस प्रकार का है कि जिससे आपने मेरे उत्पन्न हुए इस प्रकार के आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित एवं मनोगत इस संकल्प को जान लिया है, और देख लिया है? इस प्रकार के प्रदेशी राजा के पूछने पर केशीकुमारश्रमणने उससे ऐसा कहा-हे प्रदेशिन! श्रमणनिर्ग्रन्थों का ज्ञान पांच प्रकार का कहा गया है. अभिनिबोधिकज्ञान१, श्रुतज्ञान२. अवधिज्ञान३. मनःपर्यवज्ञान४, और केवलज्ञान५. इनमें आभिनिबोधिकज्ञान-अवग्रह, ईहा, अवाय, और धारणा के

समुप्पण्णं जाणामि पासामि) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! મેં આ છાદ્મસ્થિક ચાર પ્રકારના જ્ઞાનો વડે તમારામાં સમુત્પન્ન થયેલ સંકલ્પ જાણી લીધો છે અને જોઈલીધો છે.

ટીકાર્થ—ત્યારપછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમારશ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત! આપનું જ્ઞાનદર્શન કઈ જાતનું છે. કે જેથી આપે મારામાં ઉત્પન્ન થયેલ આધ્યાત્મિક ચિંતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત અને મનોગત આ સંકલ્પ જાણી ગયા છો અને જોઈ ગયા છો? આ પ્રમાણે પ્રદેશી રાજાના પ્રશ્નને સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેમને આ રીતે કહ્યું કે 'હે પ્રદેશિન! શ્રમણ નિગ્રંથોનું જ્ઞાન પાંચ પ્રકારનું કહેવાય છે. આભિનિબોધિકજ્ઞાન ૧, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન ૩, મનઃપર્યવજ્ઞાન ૪, અને કેવલજ્ઞાન ૫, આમાં આભિનિબોધિકજ્ઞાન અવગ્રહ, ઈહા, અવાય અને ધારણાના ભેદોથી ચાર

इति प्रश्ने आह–अवग्रहो द्विविधः प्रज्ञप्तः यथा नन्द्यां यावत् सैषा धारणा= अवग्रहादारभ्य धारणापर्यन्तं सर्वमाभिनिबोधिकज्ञानविवरणं नन्दीसूत्रे विलोकनीयम्। अर्थस्तु नन्दीसूत्रस्य मत्कृतज्ञानचन्द्रिका टीकातो बोध्यः। तदेतद् आभिनिबोधिकज्ञानम्। अथ किं तत् श्रुतज्ञानम्? श्रुतज्ञानं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–अङ्गप्रविष्टम् १' अङ्गबाह्यं च सर्वं=श्रुतज्ञानविषयकं सर्वं विवरणं भणितव्यं= नन्दीसूत्रोक्तमत्रापि पठितव्यं, यावत्–दृष्टिवादः=दृष्टिवादविवरणपर्यन्तमिति २। अवधिज्ञानं–भवप्रत्ययिकं क्षायोपशमिकं चेति द्विविधं, यथा नन्द्यां=नन्दीसूत्रे यथाकथितं तथैव सर्वं विज्ञेयम्। अर्थोऽपि तत्रैव मत्कृतं ज्ञानचन्द्रिकाटीकायामवलोकनीयः३। मनःपर्यवज्ञानं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–

भेद से चार प्रकार का कहा गया है अवग्रह का स्वरूप क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में केशिकुमारश्रमण ने कहा कि अर्थावग्रह और व्यञ्जनावग्रह के भेद से अवग्रह दो प्रकार का कहा गया है नन्दीसूत्र में अवग्रह से लेकर धारणा तकका पूर्ण विषय आभिनिबोधिकज्ञान के विवरणप्रकरण में बहुत ही सुंदर ढंग से स्पष्ट किया गया है। नन्दीसूत्र के ऊपर हमने ज्ञानचन्द्रिका नाम की टीका लिखी है उसमें यह सब विषय स्पष्ट रूप से समझाया गया है अतःविशेष जिज्ञासु इस विषय को वहां से देख लेवें। श्रुतज्ञान भी अङ्गप्रविष्ट और अङ्गबाह्य के भेद से दो प्रकार का कहा गया है इस विषय का भी स्पष्टीकरण नन्दीसूत्र में किया जा चुका है। भवप्रत्ययिक अवधि और क्षायोपशमिकअवधि इस प्रकार से अवधिज्ञान दो तरह का कहा गया है। इनकाभी वर्णन वहीं पर किया गया है ऋजु

પ્રકારનું કહેવાય છે અવગ્રહનું સ્વરૂપ કેવું છે? આ જાતના પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કેશિકુમાર શ્રમણે કહ્યું કે અર્થાવગ્રહ અને વ્યંજનાવગ્રહના ભેદથી અવગ્રહના બે પ્રકારો કહેવાય છે નંદીસૂત્રમાં અવગ્રહથી માંડીને ધારણા સુધીની સંપૂર્ણ વિગત આભિનિબોધિકજ્ઞાનના વિવરણ પ્રકરણમાં ખૂબજ સારી રીતે સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે. નંદીસૂત્રની અમોએ 'જ્ઞાનચન્દ્રિકા' નામે ટીકા લખી છે તેમાં આ બધી બાબતોનું સવિસ્તાર સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે તેથી વિશેષ જિજ્ઞાસુ સજ્જનો ત્યાંથી જ વાંચવા યત્ન કરે, શ્રુતજ્ઞાન પણ અંગ પ્રવિષ્ટ અને અંગ બાહ્યના ભેદથી બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આ બાબતનું સ્પષ્ટીકરણ પણ નંદીસૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે ભવ પ્રત્યયિક અવધિ અને ક્ષાયોપશમિક અવધિ આ પ્રમાણે અવધિજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આ વિષેનું વિવેચન પણ ત્યાંજ કરવામાં આવ્યું છે ઋજુમતિ અને વિપુલમતિના ભેદથી મનઃપર્યવજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે આ વિષેનું સમસ્ત વિવરણ નંદીસૂત્રમાંથી જાણી

ऋजुमतिश्च। विपुलमतिश्च। अस्यापि सर्वं विवरणं नन्दीसूत्रे द्रष्टव्यम्। तथैव=नन्दीसूत्रोक्तप्रकारेणैव केवलज्ञानं=केवलज्ञानविवरणं सर्वं भणितव्यम्। तत्र=तेषु पञ्चसु ज्ञानेषु खलु यत्तद् आभिनिबोधिकज्ञानं तत् खलु ममास्ति१। एवं श्रुतज्ञानम्२, अवधिज्ञानम्३, मनःपर्यवज्ञानं ४ चेति ज्ञान-चतुष्टयं ममास्ति। तत्र=तेषु पञ्चसु ज्ञानेषु यत्तत् केवलज्ञानं तत् मम नास्ति=न विद्यते तत=केवलज्ञानं खलु अर्हतां भगवतां भवति नान्येषामिति। इत्येतेन=पूर्वोक्तेन कारणेन हे प्रदेशिन् ! राजन्! अहं चतुर्विधेन=चतुष्प्रकारकेण छाद्मस्थिकेन=छद्मस्थसम्बन्धिना ज्ञानेन तव एतम् एतद्रूपं=त्वदन्तःकरणस्थम्-आध्यात्मिकं यावत् संकल्पं=मनोगतं संकल्पं समुत्पन्नं जानामि पश्यामि सू.१२९।

मूलम्—तए णं से पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-अहं णं भंते ! इहं उवविसामि ? पएसी ! साए उज्जाणभूमीए तुमंसी चेव जाणए, तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते उवविसइ, केसिकुमारसमणं एवं वयासी तुब्भे णं भंते! समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइण्णा एसा दिट्ठी एसा रुई एस हेऊ एस उवएसे संकप्पे एसा

मति और विपुलमति के भेद से मनःपर्यवज्ञान दो प्रकार का कहा गया है। इसका समस्त विवरण नन्दीसूत्र से जानने योग्य है। इसी प्रकार केवलज्ञान विषयक समस्त कथन भी वहीं से जानना चाहिये। इन प्रदर्शित पांच ज्ञानों में से मुझे चारज्ञान प्राप्त हैं, आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, एवं मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान मुझे नहीं है. यह ज्ञान अर्हन्त भगवन्तों को ही होता है। अतः हे प्रदेशिन् ! मैं इन चार छाद्मस्थिक ज्ञान से उत्पन्न हुए इस तुम्हारे अन्तःकरणस्थ आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प को जान गया हूं और देख चुका हू ॥ सू० १२९ ॥

લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે કેવલજ્ઞાન વિષયક સમસ્ત કથન પણ ત્યાંથી જ જાણી લેવું જોઈએ ઉપર જણાવેલ પાંચ જ્ઞાનોમાંથી મને ચાર જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયેલ છે અભિનિબોધિકજ્ઞાન, (મતિજ્ઞાન) શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મનપર્યયજ્ઞાન મને કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયેલ નથી. આ જ્ઞાન અહંત ભગવંતોને જ હોય છે એથી હે પ્રદેશિન! હું આ ચાર છાદ્મસ્થિક જ્ઞાનથી ઉત્પન્ન થયેલ તમારા આ અન્તકરણસ્થ આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સંકલ્પને જાણી ગયો છું અને જોઈ ગયો છું. ॥ સૂ. ૧૨૯ ॥

इति प्रश्ने भाह-अवग्रहो द्विविध प्रज्ञप्त यथा नन्द्या यावत् सैषा धारणा= अवग्रहादारभ्य धारणापर्यन्त सर्वमाभिनिबोधिकज्ञानविवरण नन्दीसूत्रे विलो कनीयम्। अर्थस्तु नन्दीसूत्रस्य मत्कृतज्ञानचन्द्रिका टीकातो बोध्यः। तदेतद् आभिनिबोधिकज्ञानम्। अथ किं तत् श्रुतज्ञानम्? श्रुतज्ञानं द्विविध प्रज्ञप्त, तद्यथा-अङ्गप्रविष्टम् १' अङ्गबाह्य च सर्व=श्रुतज्ञानविषयक सर्व विवरण मभिलप्यं= नन्दीसूत्रोक्तमेवात्र पठितव्य, यावत्-दृष्टिवादः=दृष्टिवादविव रणपर्यन्तमिति२। अवधिज्ञानं-भवप्रत्ययिक क्षायोपशमिक चेति द्विविधं, यथा नन्द्यां=नन्दीसूत्रे यथाकथित तथैव सर्वं विज्ञेयम्। अर्थोऽपि तत्रैव मत्कृत ज्ञानचन्द्रिकाटीकायामवलोकनीयः३। मनःपर्ययज्ञान द्विविधं प्रज्ञप्त, तद्यथा-

भेद से चार प्रकार का कहा गया है अवग्रह का स्वरूप क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में केशिकुमारश्रमण ने कहा कि अर्थावग्रह और व्यञ्जना वग्रह के भेद से अवग्रह दो प्रकार का कहा गया है नन्दीसूत्र में अवग्रह से लेकर धारणा तक का पूर्ण विषय आभिनिबोधिकज्ञान के विवरणप्रकरण में बहुत ही सुन्दर ढंग से स्पष्ट किया गया है। नन्दीसूत्र के ऊपर हमने ज्ञानचन्द्रिका नाम की टीका लिखी है उसमें यह सब विषय स्पष्ट रूप से समझाया गया है अतःविशेष जिज्ञासु इस विषय को वहां से देख लेवे। श्रुतज्ञान भी अङ्गप्रविष्ट और अङ्गबाह्य के भेद से दो प्रकार का कहा गया है इस विषय का भी स्पष्टीकरण नन्दीसूत्र में किया जा चुका है। भवप्रत्ययिक अवधि और क्षायोपशमिकअवधि इस प्रकार से अवधिज्ञान दो तरह का कहा गया है। इनका भी वर्णन वहीं पर किया गया है। ऋजु

પ્રકારનું કહેવાય છે? અવગ્રહનું સ્વરૂપ કેવું છે? આ જાતના પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કેશિ- કુમાર શ્રમણે કહ્યું કે અર્થાવગ્રહ અને વ્યંજનાવગ્રહના ભેદથી અવગ્રહના બે પ્રકારો કહેવાય છે; નંદીસૂત્રમાં અવગ્રહથી માંડીને ધારણા સુધીની સંપૂર્ણ વિગત આભિનિ- બોધિકજ્ઞાનના વિવરણ પ્રકરણમાં ખૂબજ સારી રીતે સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે. નંદીસૂત્રની અમોએ 'જ્ઞાનચન્દ્રિકા' નામે ટીકા લખી છે તેમાં આ બધી બાબતોનું સવિસ્તાર સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે તેથી વિશેષ જિજ્ઞાસુ સજ્જનો ત્યાંથી જ વાંચવા યત્ન કરે, શ્રુતજ્ઞાન પણ અંગ પ્રવિષ્ટ અને અંગ બાહ્યના ભેદથી બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આ બાબતનું સ્પષ્ટીકરણ પણ નંદીસૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે ભવ પ્રત્યયિક અવધિ અને ક્ષાયોપશમિક અવધિ આ પ્રમાણે અવધિજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આ વિષેનું વિવેચન પણ ત્યાંજ કરવામાં આવ્યું છે ઋજુમતિ અને વિપુલમતિના ભેદથી મન- પર્યવજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે આ વિષેનું સમસ્ત વિવરણ નંદીસૂત્રમાંથી જાણી

खलु भदन्त ! श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एषा रुचिः एष हेतुः एष उपदेशः एष सङ्कल्पः एषा तुला एतत् मानम् एतत् समवसरणम् यथा–अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तत् जीवः तत् शरीरम् ? ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्–प्रदेशिन् अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा यावत् एतत् समवसरणं यथा–अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तत् जीवः स शरीरम् ॥ सू० १३० ॥

पास के स्थान में बैठ गया (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) और केशिकुमारश्रमण से इस प्रकार बोला–(तुब्भे णं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइण्णा एसा दिट्ठी, एसा रुई एस हेऊ) हे भदन्त ! आप श्रमण निर्ग्रन्थों की यह संज्ञा है, यह प्रतिज्ञा है, (पदार्थ के स्वरूपका निश्चय ज्ञानरूप) यह दृष्टि है, यह रुचि है, यह हेतु है (एस उवएसे एस संकप्पे एसा तुला, एस माणे, एस पमाणे, एस समोसरणे) यह उपदेश है, यह संकल्प है, यह तुला है, यह मान है, यह प्रमाण है, यह समवसरण है (जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं) कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, (णो तं जीवो तं सरीरं) न जीव शरीररूप है. और न शरीर जीवरूप है। (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) तब केशी कुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा–(पएसी ! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समवसरणे जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं)

वयासी) અને કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું–(तुब्भे णं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइण्णा एसा दिट्ठी, एसा रुई, एस हेऊ) હે ભદંત ! આપ શ્રમણ નિર્ગ્રંથોની આ સંજ્ઞા છે, આ પ્રતિજ્ઞા છે, આ દૃષ્ટિ છે, આ રુચિ છે, આ હેતુ છે, (एस उवएसे, एस संकप्पे एसा तुला, एस माणे, एस पमाणे, एस समोसरणे) આ ઉપદેશ છે, આ સંકલ્પ છે, આ તુલા છે, આ માણ છે, આ પ્રમાણ છે, આ સમવસરણ છે. (जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं, णो तं जीवो, तं सरीरं) કે જીવ અને શરીર જુદાજુદાં છે. ન જીવ શરીર રૂપ છે અને ન શરીર જીવરૂપ છે. (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (पएसी ! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समवसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं) હે પ્રદેશિન્ ! શ્રમણ નિર્ગ્રંથોની આ

सुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीर, णो त जीवो त सरीर? तएण केसीकुमारसमणे पएसिं राय एव वयासी– पएसी! अम्ह समणाणं णिग्गथाणं एसा सण्णा जाव एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीर णो तं जीवो त सरीर ॥ सू० १२० ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणमेवमवादीत् अहं खलु भदन्त! इह उपविशामि? प्रदेशिन्! एतस्या उद्यानभूमेस्त्वमसि एव ज्ञायकः, ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्द्धं केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते उपविशति, केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्—युष्माक

'तए ण से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए ण से पएसी राया केसिं कुमारसमण एव वयासी) इसके बाद केशीकुमार श्रमण से उस प्रदेशी राजाने ऐसा कहा (अह ण भंते! इह उवविसामि) हे भदन्त! मैं इस स्थान में बैठ जाऊ? (पएसी! साए उज्जाणभूमीए तुमसि चेव जाणए) तब केशीकुमार श्रमणने उससे कहा हे प्रदेशिन! इस उद्यानभूमि के तुम ही ज्ञायक हो–अर्थात् उपवेशन के विषय में या अनुपवेशन के विषय में मैं क्या कहु– यह तो स्वय ही जानो। (तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमार समणस्स अदूरसामते उवविसइ) इसके बाद वह प्रदेशी राजा चित्र सारथि के साथ केशीकुमारश्रमण के समीप–न अधिक दूर और न अधिक

'त एण से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(त एण से पएसी राया केसिं कुमारसमण एव वयासी) त्यारपछी केशीकुमारश्रमणने ते प्रदेशी राजाए आ प्रमाणे कह्युं–(अह ण भंते! इह उवविसामि) हे भदन्त हुं आ स्थाने बेसु? (पएसी! साए उज्जाण भूमीए तुमसि चेव जाणए) त्यारे केशीकुमारश्रमणे ते राजाने आ प्रमाणे कह्युं के हे प्रदेशिन! आ उद्यानभूमिना तमे ज ज्ञायक छो एटले के उपवेशन माटे के अनुपवेशन माटे मारे तमने कहेवुं ते अभाव साधुकल्पथी बहार छे एथी ते माटे तमे पोतेज विचारी लो. (तए ण से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामते उवविसइ) त्यार पछी ते प्रदेशी राजा चित्रसारथिनी साथे केशिकुमारश्रमणनी पासे वधारे दूर पण नहि–तेमज वधारे नजीक पण नहि–एवा स्थाने बेसी गयो. (केसिकुमारसमण एव

सर्वस्यापि दर्शनप्रतिपाद्यार्थस्य-एतत्कारणम्-युष्माकं दर्शनम्, एष उपदेशः-शिक्षावचनम् एष संकल्पः-सर्वदैव भवतां तात्विकोऽध्यवसायः, एषा तुला-तुलेव तव स्वीकारः, तत्र तुलासादृश्यं च मेयपदार्थपरिच्छेदकत्वेन, एवम् एतत् मानम्-प्रस्थादिमानसदृशस्तवस्वीकारः, मानसादृश्यमपि मेयपदार्थ परिच्छेदकत्वेन, एतत् प्रमाणप्रत्यक्षादिप्रमाणसदृशस्तव स्वीकारः, प्रत्यक्षादि सादृश्य च स्वीकारे दृष्टेष्टाविरोधित्वेन, यथा प्रत्यक्षादिप्रमाणं दृष्टेष्टं न विरुणद्धि तथा तवस्वीकारोऽपि। एतत् समवसरणं-बहूनामेकत्रमिलनम् तद्वत् तव स्वीकारः, यथा समवसरणे बहवो जना आगत्य मिलन्ति तथैव तव स्वीकारे सर्वाणि तत्त्वानि समाविशन्ति तत्स्वीकारस्वरूपमाह-यथा अन्यो जीवः अन्यत् शरीरमिति-जीवः-उपयोगलक्षणः, अन्यः-शरीराद् भिन्नोऽस्ति, एवं शरीरम् अन्यत्-जीवाद्भिन्नमस्ति, इत्येवं जीवशरीरयोः पार्थक्यमन्वय-

स्वतत्व है, ऐसी जो आपकी श्रद्धापूर्वक अभिलापरूप रुचि है, ऐसा जो दर्शन प्रतिपाद्य समस्त भी अर्थ का आपका दर्शन कारणरूप हेतु है, ऐसा जो आपका शिक्षा वचनरूप उपदेश है, ऐसा जो आपका संकल्प है. सर्वदा आपका तात्त्विक अध्यवसाय है, तुला के जैसी मेयपदार्थ की परिच्छेदक होने से ऐसी जो आपकी मान्यता है, प्रस्थादिमान के जैसी आपकी ऐसी जो स्वीकृति-दृढधारणा है, आपका ऐसा जो दृष्ट-प्रत्यक्ष एवं इष्ट अनुमान से अविरोधी होने के कारण प्रत्यक्षादि प्रमाण स्वरूप जैसा मन्तव्य है, आपकी ऐसी जो कथनी समवसरणरूप है (अर्थात् समवसरण में जैसे अनेक जन आकर के मिलते हैं उसी प्रकार से तुम्हारे स्वीकाररूप सिद्धान्त में समस्ततत्व अन्तर्हित हो जाते है, अतः यह समवसरणरूप है) कि-उपयोगलक्षणवाला जीव अन्य है-शरीर से भिन्न है-भिन्न स्वरूपवाला

છે, શ્રદ્ધાપૂર્વક અભિલાપ રુચિ છે, દર્શનપ્રતિપાદ્ય સમસ્ત અર્થનું આપનું દર્શન કારણરૂપ હેતુ છે, શિક્ષા વાચનરૂપ ઉપદેશ છે, સંકલ્પ છે, સર્વદા તાત્ત્વિક અધ્યવસાય છે, તુલાની જેમ મેયપદાર્થની પરિચ્છેદક હોવાથી એવીજ આપની માન્યતા છે, પ્રસ્થાદિમાન જેવી આપની દૃઢધારણા છે, દૃષ્ટપ્રત્યક્ષ અને ઇષ્ટ અનુમાનથી અવિરોધી હોવા બદલ પ્રત્યક્ષ વગેરે પ્રમાણરૂપ આપનું મંતવ્ય છે, આપની એવી જે કથની સમવસરણરૂપ છે (એટલે કે સમવસરણમાં જેમ ઘણા લોકો આવીને એકત્ર થાય છે તેમજ તમારા સ્વીકારરૂપ સિદ્ધાન્તમાં બધા તત્ત્વો અંતર્હિત થઇ જાય છે એથી આ સમવસરણ છે) કે ઉપયોગ લક્ષણવાળો જીવ અન્ય છે, શરીર કરતાં જુદો છે, જુદા સ્વરૂપ

टीका— 'तए णं से पएसी राया' इत्यादि–ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवम्–अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्— हे भदन्त ! अहं खलु इह–अस्मिन् स्थाने उपविशामि ? ततः केशीकुमारश्रमण आह–हे प्रदेशिन् ! एतस्या उद्यानभूमेः त्वमेव ज्ञायकः असि एषा उद्यानभूमिस्त्वन्निमिता, नाऽस्माकमुपवेशनानुपवेशनविषये वक्तुं कल्पते, त्वमेव जानासीति भावः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्धं केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते नातिदूरे नातिसमीपे उपविशति, उपविश्य स केशिकुमारश्रमणम् एवम्–अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्–हे भदन्त ! युष्माकं खलु श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम्, एषा इव संज्ञा–सम्यग्ज्ञानम् अस्ति, एवमग्रेऽपि, क्रिया एषा प्रतिज्ञा–निश्चयरूपा स्वीकारः, एषा दृष्टिः–दर्शनं–स्वरूपम्, एषा रुचिः–श्रद्धापूर्वकोऽभिलाषः, एष हेतुः–

हे प्रदेशिन् हम श्रमण निर्ग्रन्थों की यह संज्ञा है, यावत् यह समवसरण है कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ—मूलार्थ के जैसा ही है परन्तु भावार्थ इसका इस प्रसंग से, है—केशी कुमारश्रमण की एवं प्रदेशी राजा की बातचीत के इस प्रसंग में जब प्रदेशी राजाने अपने बैठने की बात पूछी, तब इसमें अपनी अनुमति देना साधुकल्प के अनुकूल नहीं है, यथा–तुम बैठो–उठो इत्यादि कहना साधुओं को कल्पता नहीं होने से यथार्थ प्रकट किया, तब प्रदेशी राजा चित्र सारथि के साथ वहां बैठ गया फिर उसने केशी कुमारश्रमण से ऐसा पूछा कि हे भदन्त ! आप की ऐसी जो सम्यग्ज्ञानरूप संज्ञा है ऐसी आपकी तत्त्वनिश्चयरूप जो प्रतिज्ञा है, ऐसी आपकी दर्शनरूप दृष्टि–

સંજ્ઞા છે યાવત્ આ સમવસરણ છે કે જીવ અને શરીર જુદાંજુદાં છે જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી

ટીકાર્થ—મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે પણ ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કેશીકુમાર શ્રમણ અને પ્રદેશી રાજાના વાર્તાલાપમાં જ્યારે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને ત્યાં બેસવાની વાત પૂછી ત્યારે આમ કહેવું તે આચાર સાધુ પણાથી બહાર છે જેથી તે બાબતમાં તમે સ્વયં નિર્ણય કરો તેમ કહી તેમની ઇચ્છા પર છોડી. ત્યાર પછી પ્રદેશી રાજા પોતાના ઉચિત સ્થાન પર ચિત્ર સારથિની પાસે બેસી ગયો અને ત્યાં બેસીને કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત ! આપની જે આ જાતની સમ્યગ્જ્ઞાનરૂપ સંજ્ઞા છે તત્ત્વ–નિશ્ચયરૂપ જે પ્રતિજ્ઞા છે દર્શનરૂપ દૃષ્ટિ સ્વતત્ત્વ

पुण पासाणयाए ? तं जइ णं से । अज्जए णं मम आगंतुं वएज्जा-एव खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि, तएणं अहं सुबहुं पाव कम्मं कलिकलुस समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे तं माणं नत्तुया ! तुमंपि भवाहि अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहि, माणं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पावकम्म जाव उववज्जिहिसि, तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्न सरीरं णो तं जीवो णो तं सरीरं, जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतु. नो एवं वयासी तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो ! जहा तज्जीवो तं सरीरं ॥ सू० १३१ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् यदि खलु भदन्त ! युष्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानामेषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा—अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् न तत् जीवः स शरीरम् एवं खलु मम आर्यकोऽभवत्, इहैव

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी राया केसिकुमार समणं एवं वयासी) तब उस प्रदेशीराजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(जइ णं भंते ! तुब्भं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे) हे भदन्त ! यदि आप श्रमण निर्ग्रन्थों की ऐसी संज्ञा यावत् समवसरण है कि (अण्णो जीवो अण्ण सरीर) जीव अन्य है और शरीर अन्य है (णो तं जीवो तं

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) त्यारे ते प्रदेशी राजाओ केशीकुमार श्रमणुने आ प्रमाणे कह्युं के (जइ णं भंते ! तुब्भं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे) हे भदंत ! जो आप जेवा श्रमणु निर्ग्रंथोनी ओवी संज्ञा यावत् समवसरणु छे के (अण्णो जीवो अण्ण सरीर) जीव अन्य छे अने शरीर अन्य छे (णो तं जीवो तं सरीरं) जीव शरीररूप

मुखेनोक्त्वा व्यतिरेकमुखेन तदेवाऽऽह-'णो त' इत्यादि-तत्=शरीरं जीवो न-जीवश्च शरीरं न 'णो त'-इति वाक्ये उभावपि तच्छब्दावव्ययम्। तदा खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा यावत् एतत् समवसरणं यथा अन्यो जीवः अन्यत् शरीरं, नो तत् जीवो नो स शरीरम् ॥सू० १३०॥

मूलम्—तए णं से पएसी राजा केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-जइ णं भंते! तुब्भं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे-जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं, एवं खलु मम अज्जए होत्था, इहेव जंबुद्दीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेइ, से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पाव कम्मं कलिकलुसं सम-ज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उव-वण्णे। तस्स णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था-इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीवि उस्सविए हिययणंदिणिज्जे-उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणायाए, किमंग

है और शरीर उससे भिन्न है (यह अन्वयमुख से कथन है)। शरीर जीव रूप नहीं है (यह व्यतिरेकमुख से कथन है) सो यह सत्य है न? इस प्रकार प्रदेशी राजा के द्वारा इस प्रश्न को सुनकर केशीकुमारश्रमणने उससे कहा-हां, प्रदेशिन्! हम श्रमण निर्ग्रन्थों की ऐसी ही संज्ञा यावत् सम वसरण है कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है इस प्रकार से दोनों में सर्वथा पृथक्ता है।सू० १३०।

જાણો છે અને શરીર તેનાથી જુદું છે (આ અન્વયમુખથી કથન છે) શરીર જીવરૂપ નથી. જીવ શરીરરૂપ નથી (આ વ્યતિરેક મુખથી કથન છે) તો આ બધું સત્ય છે! આ જાતના પ્રદેશી રાજાના પ્રશ્નને સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું કે હાં પ્રદે શિન! અમારા જેવા શ્રમણ નિર્ગ્રન્થોની એવી જ સંજ્ઞા યાવત્ સમવસરણ છે કે જીવ જુદો છે અને શરીર જુદું છે જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી. આ પ્રમાણે બન્ને સાવ જુદા જુદા છે ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

कान्तः प्रियः मनोज्ञः मनोऽमः स्थैर्यः वैश्वासिकः संमतः बहुमतः अनुमतः रत्नकरण्डकसमानः जीवितोत्सविकः हृदयानन्दिजननः, उदुम्बरपुष्पमिव दुर्लभः श्रवणतया किमङ्ग पुनः दर्शनतया? तद् यदि खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत्-एवं खलु नप्तृक! अहं तव आर्यकोऽभवम्, इहैव श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्ति प्रावर्तयम्, ततः खलु

णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीवितउस्सविए) उन आर्यक का मैं पौत्र हूं मैं उन्हे अभिलषित था. कान्त था, प्रिय था, मनोज्ञ था मनोगम्य था, स्थैर्यरूप था, विश्वासपात्र था, सन्मानपात्र था, प्रचुर मानपात्र था, हृदयप्रिय था, रत्नकरण्डक के जैसा था, जीवन के उत्सवरूप था. (हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फंपिव दुल्लभे सवणयाए, किमंगपुण पासणयाए) उनके हृदय के आनन्द जनक था, उदम्बरपुष्प के समान मैं उन्हे सुनने के लिये दुर्लभ था-देखनेकी बात तो क्या कहनो (तं जइ णं से अज्जए णं ममं आगतुं वएज्जा) तो यदि वे आर्यक आकर के मुझसे ऐसा कहे (एवं खलु नत्तुया! अहं तं अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि) हे पौत्र! मै तुम्हारा आर्यक-पितामह था, इसी श्वेताविका नगरी में अधार्मिक बना हुआ मै अच्छी तरह से प्रजाजन से प्राप्त टेक्स से उनका पोषण नहीं करता था.

पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जोविउस्सविए) ते आर्यकनो हुं पौत्र छु हु तेमना माटे अभिलषित हतो, कांत हतो, प्रिय हतो, मनोज्ञ हतो, मनोगम्य हतो, स्थैर्यरूप हतो, विश्वासपात्र हतो, सन्मानपात्र हतो, प्रचुर मानपात्र हतो, हृदयप्रिय हतो, रत्न करंडक जेवो हतो, जीवनना उत्सवरूप हतो (हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए) तेमना हृदयने आनंद आपनारो हतो उमराना पुष्पनी जेम हुं तेमना माटे जोवानी वात तो दूर रही सांभळवा माटे पण दुर्लभ हतो (तं जइणं से अज्जए णं ममं आगंतुं वएज्जा) तो हवे जो ते आर्यक आवीने मने आम कहे के (एवं खलु नत्तुया! अहं तं अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेमि) हे पौत्र! हुं तमारो आर्यक-पितामह हतो. आज श्वेताविका नगरीमां अधार्मिक थईने प्रजाजनो पासेथी कर वसूल करीने पण तेमनुं रक्षण-पोषण वगेरे करतो न हतो. (तए णं अहं

जम्बूद्वीपे द्वीपे श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिकः यावत् स्वकस्यापि च खलु जनपदस्य नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयत्, स खलु युष्माकं वक्तव्यतया सुबहु पाप कर्म कलिकलुष समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु नरकेषु नैरयिकतया उपपन्नः । तस्य खलु आर्यकस्य अहं नप्तकः अभवम्, इष्टः

शरीर) जीव शरीररूप नहीं है शरीर जीवरूप नहीं है (एवं खलु मम अज्जए होत्था-इहेव जंबुद्दीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सगस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) तो इस बातको यदि मेरे पितामह आकर के मुझ से कहें-मुझ से कहे-तो मैं आपके इस कथन पर विश्वास कर सकता हूं ऐसा संबंध यहां लगाना चाहिये, इसी बात को वह इस आगे के सूत्रपाठ से प्रदर्शित करता है-वह कहता है कि इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में स्थित इस श्वेतांबिका नगरी में मेरे पितामह-दादा थे। वे अधार्मिक थे, यावत् अपने प्रजाजनों का टेक्स लेकर भी उनका पोषण अच्छी तरह से नहीं करते थे -(से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पाव कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे) वे आप के कथनानुसार बहुत पापी थे अतिमलिन बहुत से पापकर्मों का उपार्जन करके वे कालमास में काल करके किसी एक नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं। (तस्स

નથી. શરીર જીવરૂપ નથી. (एवं खलु मम अज्जिए होत्था इहेव जंबुद्दीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सगस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) તો આ વાત જો મારા પિતામહ આવીને મને કહે તો હું આપના કથન પર વિશ્વાસ મૂકી શકું તેમ છું એવો સંબંધ અહીં સમજવો જોઈએ. એજ વાતને તે આ સૂત્રપાઠવડે પ્રદર્શિત કરતાં કહે છે કે આજ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં સ્થિત શ્વેતાંબિકા નગરીમાં મારા પિતામહ હતા. તેઓ અધાર્મિક હતા યાવત્ પોતાના પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને પણ સમ્યક્ સારી રીતે ભરણ પોષણ તેમજ રક્ષણ કરતા ન હતા. (से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पाव कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे) આપશ્રીના કથન મુજબ તેઓ બહુ મોટા પાપી હતા. અતિમલિન ઘણાં પાપકર્મો ઉપાર્જન કરીને તેઓ કાળમાસમાં કાળ કરીને કોઈ એક નરકમાં નૈરયિકની પર્યાયમાં જન્મ પામ્યાં છે (तस्स णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते

कान्तः प्रियः मनोज्ञः मनआमः स्थैर्यः वैश्वासिकः संमतः बहुमतः अनुमतः रत्नकरण्डकसमानः जीवितोत्सविकः हृदयानन्दिजननः, उदुम्बरपुष्पमिव दुर्लभः श्रवणतया किमङ्ग पुनः दर्शनतया? तद् यदि खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत्-एवं खलु नप्तृक! अहं तव आर्यकोऽभवम्, इहैव श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयम्, ततः खलु

णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीवितउस्सविए) उन अर्यक का मैं पौत्र हूं मैं उन्हें अभिलषित था. कान्त था. प्रिय था, मनोज्ञ था मनोगम्य था, स्थैर्यरूप था, विश्वासपात्र था, सन्मानपात्र था, प्रचुर मानपात्र था. हृदयप्रिय था. रत्नकरण्डक के जैसा था, जीवन के उत्सवरूप था. (हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फंपिव दुल्लभे सवणयाए, किमंगपुण पासणयाए) उनके हृदय के आनन्द जनक था, उदम्बरपुष्प के समान मैं उन्हें सुनने के लिये दुर्लभ था-देखनेकी बात तो क्या कहनो (तं जइ णं से अज्जए णं ममं आगंतुं वएज्जा) तो यदि वे आर्यक आकर के मुझसे ऐसा कहे (एवं खलु नत्तुया! अहं तं अज्जए होत्था, इहेव सेयंवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि) हे पौत्र! मै तुम्हारा आर्यक-पितामह था, इसी श्वेताम्बिका नगरी मे अधार्मिक बना हुआ मै अच्छी तरह से प्रजाजन से प्राप्त टेक्स से उनका पोषण नहीं करता था.

पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीवितउस्सविए) ते આર્યકનો હું પૌત્ર છુ હુ તેમના માટે અભિલષિત હતો, કાંત હતો, પ્રિય હતો, મનોજ્ઞ હતો, મનોગમ્ય હતો, સ્થૈર્યરૂપ હતો, વિશ્વાસપાત્ર હતો, સન્માનપાત્ર હતો, પ્રચુર માનપાત્ર હતો, હૃદયપ્રિય હતો, રત્ન કરંડક જેવો હતો, જીવનના ઉત્સવરૂપ હતો (हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फंपिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए) તેમના હૃદયને આનંદ આપનારો હતો ઉમરાના પુષ્પની જેમ હું તેમના માટે જોવાની વાત તો દૂર રહી સાંભળવા માટે પણ દુર્લભ હતો. (तं जइ णं से अज्जए णं ममं आगंतुं वएज्जा) તો હવે જો તે આર્યક આવીને મને આમ કહે કે (एवं खलु नत्तुया! अहं तं अज्जए होत्था, इहेव सेयंवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि) હે પૌત્ર! હું તમારો આર્યક-પિતામહ હતો. આજ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં અધાર્મિક થઈને પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને પણ તેમનું રક્ષણ-પોષણ વગેરે કરતો ન હતો. (तए णं अहं

जम्बूद्वीपे द्वीपे श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिक यावत् स्वकस्यापि च खलु जनपदस्य नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयत्, स खलु युष्माकं वक्तव्यतया सुबहु पाप कर्म कलिकलुष समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु नरकेषु नैरयिकतया उपपन्नः । तस्य खलु आर्यकस्य अहं नप्तृक अभवम्, इष्टः

शरीर) जीव शरीररूप नहीं है शरीर जीवरूप नहीं है (एवं खलु मम अज्जिए होत्था-इहेव जबुद्दीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सगस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) जो इस बातको यदि मेरे पितामह आकर के पुष्ट करें-मुझ से कहे-तो मैं आपके इस कथन पर विश्वास कर सकता हूं ऐसा संबंध यहां लगाना चाहिये, इसी बात को यह इस आगे के सूत्रपाठ से प्रदर्शित करता है-वह कहता है कि इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में स्थित इस श्वेतांबिका नगरी में मेरे पितामह-दादा थे वे अधार्मिक थे, यावत् अपने प्रजाजनों का टेक्स लेकर भी उनका पोषण अच्छी तरह से नहीं करते थे (से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहु पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे) वे आप के कथनानुसार बहुत पापी थे अतिमलिन बहुत से पापकर्मों का उपार्जन करके वे कालमास में काल करके किसी एक नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं। (तस्स

નથી. શરીર જીવરૂપ નથી. (एवं खलु मम अज्जिए होत्था इहेव जंबुद्दीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सगस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) તો આ વાત જો મારા પિતામહ આવીને મને કહે તો હું આપના કથન પર વિશ્વાસ મૂકી શકું તેમ છું એવો સંબંધ અહીં લગાવવો જોઈએ. એજ વાતને તે આ સૂત્રપાઠવડે પ્રદર્શિત કરતાં કહે છે કે આજ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં સ્થિત શ્વેતાંબિકા નગરીમાં મારા પિતામહ હતા. તેઓ અધાર્મિક હતા યાવત પોતાના પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને પણ તેમનું સારી રીતે ભરણ પોષણ તેમજ રક્ષણ કરતા ન હતા. (से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहु पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे) આપશ્રીના કથન મુજબ તેઓ બહુ મોટા પાપી હતા. અતિમલિન ઘણાં પાપકર્મોનું ઉપાર્જન કરીને તેઓ કાલમાસમાં કાલ કરીને કોઈ એક નરકમાં નૈરયિકની પર્યાયમાં જન્મ પામ્યા છે (तस्स णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था. इट्ठे कंते

कान्तः प्रियः मनोज्ञः मनोऽमः स्थैर्यः वैश्वासिकः संमतः बहुमतः अनुमतः रत्नकरण्डकसमानः जीवितोत्सविकः हृदयानन्दिजननः, उदुम्बरपुष्पमिव दुर्लभः श्रवणतया किमङ्ग पुनः दर्शनतया ? तद् यदि खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत्-एवं खलु नप्तृक ! अहं तव आर्यकोऽभवम्, इहैव श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयम्, ततः खलु

णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीवितुस्सविए) उन आर्यक का मैं पौत्र हूं मैं उन्हें अभिलषित था. कान्त था. प्रिय था, मनोज्ञ था मनोगम्य था, स्थैर्यरूप था, विश्वासपात्र था, सन्मानपात्र था, प्रचुर मानपात्र था. हृदयप्रिय था. रत्नकरण्डक के जैसा था, जीवन के उत्सवरूप था. (हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फंपिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए) उनके हृदय के आनन्द जनक था, उदम्बरपुष्प के समान मैं उन्हें सुनने के लिये दुर्लभ था-देखनेकी बात तो क्या कहनो (तं जइ णं मे अज्जए णं ममं आगतुं वएज्जा) तो यदि वे आर्यक आकर के मुझसे ऐसा कहे (एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि) हे पौत्र ! मैं तुम्हारा आर्यक-पितामह था, इसी श्वेताविका नगरी में अधार्मिक बना हुआ मैं अच्छी तरह से प्रजाजन से प्राप्त टेक्स से उनका पोषण नहीं करता था.

पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेमासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए) ते આર્યકનો હુ પૌત્ર છુ હું તેમના માટે અભિલષિત હતો, કાંત હતો, પ્રિય હતો, મનોજ્ઞ હતો. મનોગમ્ય હતો, સ્થૈર્યરૂપ હતો, વિશ્વાસપાત્ર હતો, સન્માનપાત્ર હતો, પ્રચુર માનપાત્ર હતો, હૃદયપ્રિય હતો, રત્ન કરંડક જેવો હતો, જીવનના ઉત્સવરૂપ હતો (हियपणंदिजणणे उंबरपुप्फं विव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए) તેમના હૃદયને આનંદ આપનારો હતો ઉમરાના પુષ્પની જેમ હું તેમના માટે જોવાની વાત તો દૂર રહી સાંભળવા માટે પણ દુર્લભ હતો (तं जइ णं से अज्जए ण ममं आगंतुं वएज्जा) તો હવે જો તે આર્યક આવીને મને આમ કહે કે (एवं खलु नत्तुया ! अहं त अज्जए होत्था, इहेव सेयंवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेमि) હે પૌત્ર ! હું તમારો આર્યક-પિતામહ હતો. આજ શ્વેતાંબિકા નગરીમા અધાર્મિક થઈને પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને પણ તેમનું રક્ષણ-પોષણ વગેરે કરતો ન હતો. (तए णं अहं

अहं सुबहु पाप कर्म कालकलुषं समर्ज्य नरकेषु उपपन्नः, तद् मा खलु नप्तक! त्वमपि मम अधार्मिकः यावद् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्तय, मा खलु त्वमपि एवमेव सुबहु पापकर्म यावत् उपपत्स्यसे, तद् यदि स्वयं स आर्यकः मम आगत्य वदेत्–ततः खलु अहं श्रद्दध्याम् प्रतीयाम् रोचयेय, यथा–अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् नो तत् जीवः तत् शरीरम् यस्मात् खलु स

(तए णं अहं सुबहु पाव कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे) अतः मैंने बहुत अधिक अतिकलुष पापों का संचय किया था–और इससे मैं नरकों में से किसी एक नरक में नारक की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूं (तं मा णं नत्तुया! तुमपि भवाहि अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहि) इसलिये हे पौत्र! तुम अधार्मिक मत होना, और प्रजाजनों से प्राप्त टेक्स से उनके पोषण में असावधान मत रहना प्रत्युत उससे उनका पोषण अच्छी तरह से करना (मा णं तुमं पि एवं चेव सुबहु पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि) नहीं तो तुम भी इसी तरह से बहुत अधिक पाप कर्म का यावत् उपार्जन करोगे इसलिये ऐसे पापकर्मों का उपार्जन मेरे द्वारा न हो इस तरह से (तं जइ णं से अज्जए मम आगंतु वएज्जा) यदि वे आर्यक आकरके मुझे समझावें (तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) तो मैं आपके इस कथन पर विश्वास करूं और उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाऊं तथा अपनी रुचि के विषय उसे बनाउं (जहा अन्नो जीवो, अन्नं

सुबहु पाव कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे) એથી મેં ઘણા અતિકલુષ પાપોનો સંચય કર્યો છે અને એથી જ નરકોમાંથી કોઈ એક નરકમાં નારકના પર્યાયમાં ઉત્પન્ન થયો છું (तं मा णं नत्तुया! तुमपि भवाहि अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहि) માટે હે પૌત્ર! તમે અધાર્મિક થશો નહિ અને પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને તેમના પોષણના કામમાં અસાવધાન રહેશો નહિ પણ તેમનું સરસ રીતે પોષણ કરશો (मा णं तुमं पि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि) નહિતર તમે પણ મારી જેમ જ ઘણાં વધારે પાપકર્મનું યાવત્ ઉપાર્જન કરશો આ પ્રમાણે આ જાતનાં પાપકર્મોનું ઉપાર્જન મારા વડે થાય નહિ તેમ (तं जइ णं से अज्जए मम आगंतु वएज्जा) તેઓ તે આર્યક આવીને મને સમજાવે. (तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा, रोएज्जा, जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) તો હું આપના આ કથન પર વિશ્વાસ કરી શકું અને તેને મારી પ્રતીતિનો તેમજ રુચિનો વિષય બનાવી

आर्यकः मम आगत्य नो एवमवादीत्, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मम प्रतिज्ञा श्रमणाऽऽयुष्मन्! यथा तज्जीवः स शरीरम् ॥सू० १३१॥

टीका--'तए णं से पएसी' इत्यादि--ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवम् अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्-हे भदन्त! यदि चेत् खलु युष्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरं नो तत् जीवः स शरीरम्, एवं-वक्ष्यमाणस्वरूपः खलु मम आर्यकः-पितामहः अभवत्, इहैव-अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे-द्वीपे श्वेतिकायां नगर्याम् अधार्मिकः धर्माचरणवर्जितः यावत्--यावत्पदेन-अधर्मिष्ठ इत्यादीनां पदानां संग्रह एकशततमसूत्राद् बोध्यः: अर्थोऽपि तत्रैव। स्वकस्यापि-स्वस्यापि च खलु जनपदस्य-देशस्य करभरवृत्तिं द्वारेण स्वग्राह्यभागग्रहणेन यो भरः-प्रजानां भरणं=पोषणं तद्रूपा या वृत्तिस्तां सम्यक्-सुष्ठुरीत्या नो प्रावर्तयत्-अत्र मूले 'पवत्तेइ' इत्यार्षत्वाद् भूतार्थे वर्तमाननिर्देशः। सः-पूर्वोक्तः आर्यकः खलु युष्माकं वक्तव्यतया=मतेन सुबहु-प्रचुर कलिकलुषम्-अतिमलिनं पापं कर्म समर्ज्य-समुपार्ज्य कालमासे कालं कृत्वा, अन्यतरेषु-अन्यतमेषु नरकेषु नैरयिकतया-नारकतया उपपन्नः-समुत्पन्नः। तस्य खलु आर्यकस्य अहं नप्तृकः=पौत्रः अभवम्, कीदृशोऽहम-

सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, जीवशरीररूप नहीं है, शरीर जीवरूप नहीं है। (जम्हा णं से अज्जए ममं नो एव तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो! जहा तज्जीवो तं सरीरं) परन्तु जिस कारण से आर्यकने आकरके मुझसे ऐसा कहा नहीं है, इस कारण से हे श्रमण! आयुष्मन्! मेरी यह प्रतिज्ञा सुप्रतिष्ठित-सुस्थिर है कि जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है.

टीकार्थ--मूलार्थ के अनुरूप ही है. परन्तु जो विशेषता है वह इस प्रकार से है-प्रदेशी राजाने जो अपने को इष्टादि विशेषणों वाला प्रकट किया है सो उसका कारण यह है कि वह आर्यक को अभिलषित था

થાઉં તેમ છુ. (जहा अन्नो जीवो, अन्न सरीर, णो त जीवो, तं सरीरं) કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે, જીવ શરીરરૂપ નથી. (जम्हा णं से अज्जए मम आगतुं नो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो! जहा तज्जीवो तं सरीर) પરંતુ જે કારણને લીધે આર્યકે આવીને મને આ પ્રમાણે કહ્યુ નથી તેથી જ હે શ્રમણ! આયુષ્મન્! મારી આ પ્રતિજ્ઞા સુપ્રતિષ્ઠિત-સુસ્થિર-છે કે જે જીવ છે તેજ શરીર છે અને જે શરીર છે તે જ જીવ છે.

ટીકાર્થ—મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે પરંતુ વિશેષતા આટલી જ છે કે પ્રદેશી રાજાએ જે પોતાને ઇષ્ટ વગેરે વિશેષણોવાળો બતાવ્યો છે. તો તેનું કારણ એ છે કે

भवमित्याह–इष्ट –अभिलषितः, कान्त –कमनीयत्वात्, प्रिय –प्रेमपात्रत्वात् मनोज्ञ –मनसा सम्यगपेक्षया ज्ञातत्वात्, मनोऽम –मनोगम्यः, अतिप्रियत्वेन मनस्यवस्थितत्वात्, स्थैर्य –स्थिरतागुणसम्पन्न वैश्वसिकः–विश्वास पात्रम् सम्मत –समानपात्रम्, बहुमतः–मधुरमानपात्रम्, अनुमतः–हृदयप्रियः तदाज्ञाराधकत्वात् रत्नकरण्डकसमान –रत्नानां–हरे तनादीनां यत् करण्डक तत्समान –रत्नकरण्डक–तुल्यस्त चात्यन्तापेक्षत्वेन योग्यम् जीवितोत्सविकः –जीवितस्य–जीवनस्य च उत्सव –उत्सविव =उत्सवरूपः, नव नव हर्षजनकत्वात् हृदयानन्दजननः–हृदयानन्दकारकः उदुम्बरपुष्पमिव–उदुम्बरपुष्प यथा दुर्लभ तथाऽऽमपि श्रवणतया–श्रवणेन, अङ्ग ! हे मुने ! किं पुनः दर्शनतया–दर्शनेन अपि तु दर्शमनाश्यन्तदुर्लभोऽहमित्यर्थः, तत्–तस्मात् यदि–चेत् खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत् कथयत्–कथनीयस्वरूपमात–यत् खलु नप्तृक !–हे पौत्र ! अहं तव आर्यक =पितामहः अभवम्, इहैव–अस्यामेव श्वेताम्बिकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्ति मात्रमेवम् अम्मापि मुखे 'पवत्तेमि' इत्यापरवात् भूतार्थे वर्तमाननिर्देशः । ततः–तस्मा

इसलिये इष्ट था, कमनीय–सुन्दर होने से कान्त था, प्रेमपात्र होने से प्रिय था, मनस उसे अच्छी तरह से अपेक्षक स जाना था इसलिये मनोज्ञ था अतिप्रिय होने के कारण मनमें अवस्थित था इसलिये वह मनोऽम था, मनोगम्य था स्थिरतागुण से सपन्न था–अत स्थैर्यरूप था विश्वासपात्र होने से वैश्वसिक था, सन्मानपात्र होने स समत था मधुररूप म मान पात्र, होने से मधुर मानपात्ररूप था उसकी आज्ञा का आराधक होने स अनुमत–हृदय प्रिय था अत्यन्त अपेक्षित होने स रत्नकरण्डक क समान था नव२ हर्षजनक होन स उत्सविक उत्सवरूप था, इसीलिय हृदयाह्लादक था मूल में 'पवत्तेमि' ऐसा जो वर्तमानरूप से निर्देश हुआ है

તે આયકને અભિલષિત હતો–એથી ઇષ્ટ હતો કમનીય હોવાથી કાન્ત હતો, પ્રેમપાત્ર હોવાથી પ્રિય હતો અને તેને સારી રીતે અપેક્ષરૂપથી જાણી લીધો હતો એથી તે મનોજ્ઞ હતો, અતિપ્રિય હોવાથી તે મનમાં અવસ્થિત હતો એથી તે મનોઽમ હતો– મનોગમ્ય હતો સ્થિરતાના ગુણથી સપન્ન હતો એથી સ્થૈર્યરૂપ હતો વિશ્વાસપાત્ર હોવાથી વૈશ્વસિક હતો સન્માનપાત્ર હોવાથી સમત હતો મધુરરૂપમાં માનપાત્ર હોવાથી મધુરમાનપાત્ર રૂપ હતો તેની આજ્ઞાને માનનાર હોવાથી અનુમત–હૃદયપ્રિય હતો, અત્યંત અપેક્ષ હોવાથી રત્નકરંડકની જેમ હતો. નવનવીન હર્ષજનક હોવાથી ઉત્સવિક–ઉત્સવરૂપ હતો–એથી જ તે હૃદયાહ્લાદક હતો મૂળમાં 'પવત્તેમિ' આવો જે

त्कारणात्-खलु अहं सुबहु-अत्यन्तं कलिकलुषम्=अतिमलिनं पापं कर्म समर्ज्य=समुपार्ज्य नरकेषु उपपन्नः-नारकतयोत्पन्नोऽभवम्, तत्-तस्मात्कारणात् नप्तृक!-हे पौत्र ! त्वमपि तथा मा भव, अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्त्तय-निषेधार्थकपदद्वयं प्रकृतार्थं दृढयतीति त्वमवश्यमेव धार्मिकादिविशेषणविशिष्टो भूत्वा स्वकस्य जनपदस्य करभरवृत्तिं सम्यक् प्रवर्त्तयेति भावः। मा खलु त्वमपि एवमेव-अहमिव सुबहु-पापकर्म यावत् यावच्छब्देन-समुपार्ज्य-नरकेषु नैरयिकतया इति संग्राह्यम्, उत्पत्स्यसे मा उत्पद्येथा इत्यर्थः, तत्-तस्मात् कारणात्-यदि-चेत् खलु आर्यको मम आगत्य वदेत्-कथयेत्, ततः-तदा खलु अहं श्रद्दध्याम्-भवद्वचने श्रद्धां कुर्याम् प्रतीयाम्-विशेषतो विश्वस्याम्, रोचयेयं रुचि विषयीकुर्याम् यथा अन्यो जीवो ऽन्यच्छरीरम् नो तत् जीवः स शरीरम्-इति। यस्मात् हेतोः खलु सः पूर्वोक्तः आर्यकः ममागत्य नो-न एवं पूर्वोक्तप्रकारेण अवादीत्-हे श्रमणायुष्मन् ! तस्माद् हेतोः मम प्रतिज्ञा सुप्रतिष्ठिता-सुस्थिरा यथा तत् जीवः स शरीरम् इति ॥सू,१३१॥

मूलम्—तएणं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णाम देवी ? हंता अत्थि, जइ णं तुमं पएसी तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं केणइ पुरिसेण ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएण सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवे गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणिं पासिज्जासि तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि ? अहं णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं

यह आर्ष होने से भूत अर्थ में हुआ है 'तं माण नत्तुया ! तुमंपि' इत्यादि सूत्र में आगत दो निषेधार्थक पद प्रकृत अर्थ की पुष्टि करते हैं अर्थात् तुम अवश्य ही धार्मिक आदि विशेषणों वाले होकर अपने जनपद की करभरवृत्ति को अच्छी तरह से चलाओ—यह अर्थ पुष्ट होता है ॥सू १३१॥

વર્તમાનરૂપમા નિર્દેશ થયેલ છે તે આર્ષ હોવાથી ભૂત અર્થમા જ થયેલ છે આમ સમજવું. 'તં માણ નત્તુયા ! તુમં પિ' વગેરે સૂત્રમા આવેલા બે નિષેધાર્થકપદો પ્રકૃત અર્થને જ પોષે છે. એટલે કે તમે અવશ્યમેવ ધાર્મિક વગેરે વિશેષણોથી સંપન્ન થઈને પોતાના જનપદની કરભરવૃત્તિને સારી રીતે ચલાવો—આ અર્થ પુષ્ટ થાય છે ॥ સૂ. ૧૩૧॥

भवमित्याह–इष्ट –अभिलषितः, कान्त –कमनीयत्वात्, प्रियः–प्रेमपात्रत्वात् मनोज्ञः–मनसा सम्यगपेक्ष्यतया ज्ञात आसीत्, मनोऽम –मनोगम्यः, अतिप्रिय त्वेन मनस्यवस्थितत्वात्, स्थैर्य –स्थिरतागुणसम्पन्नः वैश्वसिकः–विश्वास पात्रम् सम्मतः–सम्मानपात्रम्, बहुमतः–प्रचुरमानपात्रम्, अनुमत –हृदयप्रियः तदाज्ञाराधकत्वात् रत्नकरण्डकसमान –रत्नानां–कर्केतनादीनां यत् करण्डकं तत्समान –रत्नकरण्डक–तुल्यश्च चात्यन्तापेक्षत्वेन बोध्यम् जीवितोत्सविकः –जीवितस्य–जीवनस्य च उत्सवः–उत्सविक =उत्सवरूपः, नव नव हर्षजनक त्वात् हृदयानन्दजनकः–हृदयानन्दकारकः उदुम्बरपुष्पमिव–उदुम्बरपुष्पं यथा दुर्लभं तथाऽसावपि श्रवणतया–श्रवणेन, अङ्ग ! हे मुने ! किं पुनः दर्शनतया– दर्शनेन अपि तु दर्शनमात्यन्तदुर्लभोऽसावित्यर्थः, तत्–तस्मात् यदि–चेत् खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत् कथयेत्–कथनीयस्वरूपमाह–एवं खलु नप्तृक !–हे पौत्र ! अहं तव आर्यकः=पितामहः अभवम्, इहैव–अस्यामेव श्वेताम्बिकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयम् अत्रापि मूले 'पवत्तेमि' इत्यार्षत्वाद् भूतार्थे वर्तमाननिर्देशः। ततः–तस्मा-

इसलिये इष्ट था, कमनीय–सुंदर होने से कान्त था, प्रेमपात्र होने से प्रिय था, मनसे उसे अच्छी तरह से अपेक्ष्यरूप से जाना था इसलिये मनोज्ञ था, अतिप्रिय होने के कारण मनमें अवस्थित था इसलिये वह मनोऽम था, मनोगम्य था स्थिरतागुण से संपन्न था–अतः स्थैर्यरूप था विश्वासपात्र होने से वैश्वसिक था, सन्मानपात्र होने से संमत था प्रचुररूप में मान पात्र, होने से प्रचुर मानपात्ररूप था उसकी आज्ञा का आराधक होने से अनुमत–हृदय प्रिय था अत्यन्त अपेक्षित होने से रत्नकरण्डक के समान था नवनव हर्षजनक होने से उत्सविक उत्सवरूप था, इसीलिये हृदयाह्लादक था मूल में 'पवत्तेमि' ऐसा जो वर्तमानरूप से निर्देश हुआ है

તે આયક તને અભિલષિત હતો–એથી ઇષ્ટ હતો કમનીય હોવાથી કાન્ત હતો પ્રેમપાત્ર હોવાથી પ્રિય હતો અને તેને સારી રીતે અપેક્ષ્યરૂપથી જાણી લીધા હતા એથી તે મનોજ્ઞ હતો અતિપ્રિય હોવાથી તે મનમાં અવસ્થિત હતો એથી તે મનોઽમ હતો– મનોગમ્ય હતો સ્થિરતાના ગુણથી સંપન્ન હતો. એથી સ્થૈર્ય રૂપ હતો વિશ્વાસપાત્ર હોવાથી વૈશ્વસિક હતો સન્માનપાત્ર હોવાથી સંમત હતો, પ્રચુરરૂપમાં માનપાત્ર હોવાથી પ્રચુરમાનપાત્ર રૂપ હતો. તેની આજ્ઞાને માનનાર હોવાથી અનુમત–હૃદયપ્રિય હતો, અત્યંત અપેક્ષ્ય હોવાથી રત્નકરંડકની જેમ હતો. નવનવીન હર્ષજનક હોવાથી ઉત્સવિક–ઉત્સવરૂપ હતો–એથી જ તે હૃદયાહ્લાદક હતો મૂલમાં 'પવત્તેમિ' એવો જે

कारणात्-खलु अहं सुबहु-अत्यन्तं कलिकलुषम्=अतिमलिनं पापं कर्म समर्ज्य=समुपार्ज्य नरकेषु उपपन्नः-नारकतयोत्पन्नोऽभवम्. तत्-तस्मात्कारणात् नप्तृक!-हे पौत्र ! त्वमपि तथा मा भव, अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्त्तय-निषेधार्थकपदद्वयं प्रकृतार्थं द्रढयतीति त्वमवश्यमेव धार्मिकादिविशेषणविशिष्टो भूत्वा स्वकस्य जनपदस्य करभरवृत्तिं सम्यक् प्रवर्त्तयेति भावः। मा खलु त्वमपि एवमेव-अहमिव सुबहु-पापकर्म यावत् यावच्छब्देन-समुपार्ज्य-नरकेषु नैरयिकतया इति संग्राह्यम्, उत्पत्स्यसे मा उत्पद्येथा इत्यर्थः, तत्-तस्मात् कारणात्-यदि-चेत् खलु आर्यको मम आगत्य वदेत्-कथयेत्, ततः-तदा खलु अहं श्रद्दध्याम्-भवद्वचने श्रद्धां कुर्याम् प्रतीयां-विशेषतो विश्वस्याम्, रोचयेयं रुचि विषयीकुर्याम् यथा अन्यो जीवो ऽन्यच्छरीरम् नो तत् जीवः स शरीरम्-इति। यस्मात् हेतोः खलु सः पूर्वोक्तः आर्यकः ममागत्य नो-न एवं पूर्वोक्तप्रकारेण अवादीत्-हे श्रमणायुष्मन् ! तस्माद् हेतोः मम प्रतिज्ञा सुप्रतिष्ठिता-सुस्थिरा यथा तत् जीवः स शरीरम् इति ॥सू.१३१॥

मूलम्—तएणं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णाम देवी? हंता अत्थि, जइ णं तुमं पएसी त सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं केणइ पुरिसेण ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएण सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवे गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणिं पासिज्जासि तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स क डंडं निव्वत्तेज्जासि? अहं णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं

यह आर्ष होने से भूत अर्थ में हुआ है 'त माणं नत्तुया ! तुमंपि' इत्यादि सूत्र में आगत दो निषेधार्थक पद प्रकृत अर्थ की पुष्टि करते हैं अर्थात् तुम अवश्य ही धार्मिक आदि विशेषणों वाले होकर अपने जनपद की करभरवृत्ति को अच्छी तरह से चलाओ-यह अर्थ पुष्ट होता है ॥सू १३१॥

वर्तमानरूपमां निर्देश थयेल छे ते आर्ष होवाथी भूत अर्थमां ज थयेल छे आम समजवुं. 'तं माणं नत्तुया ! तुमंपि' वगेरे सूत्रमां आवेला बे निषेधार्थक पदो प्रकृत अर्थने ज पोषे छे. एटले के तमे अवश्यमेव धार्मिक वगेरे विशेषणोथी संपन्न थईने पोताना जनपदनी करभरवृत्तिने सारी रीते चलावो-आ अर्थ पुष्ट थाय छे ॥ सू १३१॥

वा सूलाइग वा सूलभिन्नग वा पायच्छिन्नग वा एगाहच्च कूडाहच्च जीवियाओ ववरोवएज्जा। अह ण पएसी से पुरिसे तुम एव वदेज्जा— मा ताव मे सामी! मुहुत्तग हत्थच्छिण्णग वा जाव जीवियाओ ववरोवाहि जाव ताव अह मित्त णाइ णियगसयणसंबधिपरियण एव वयामि एव खलु देवाणुप्पिया! पावाइ कम्माइ समायरेत्ता इमेयारूव आवइ पाविज्जामि, त मा ण देवाणुप्पिया! तुब्मेवि केइ पावाइ कम्माइ समायरह, मा ण भे वि एव चेव आवइ पावेज्जाहि य जहा ण अह, तस्स ण तुम पएसी। पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठ पडिसुणेज्जासि? णो इणट्ठे समट्ठे, कम्हा ण? जम्हा ण भते! अवराही ण से पुरिसे, एवामेव पएसी! तववि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव णो सम्म करभरवित्ति पवत्तेइ, स ण अम्ह वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्नो, तस्स ण अज्जगस्स तुम णत्तुए होत्था इट्ठे कते जाव पासणयाए, से ण इच्छइ माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए णो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए। चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेइ माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव ण सचाएइ १ अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए से ण तत्थ महब्भूय वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्स लोग हव्वमागच्छित्तए णो चेव ण सचाएइ।२। अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए नरयपालेहिं भुज्जो भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव ण सचाएइ।३। अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जसि कम्मसि अक्खीणसि अवेइयसि

आनज्झिन्नसि इच्छइ माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।४। एव निरयाउंसि अक्खीणे अवेइए, अणिज्जिण्णे इच्छेज्जा माणुस्सं लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ । इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ । तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा—अन्नो जीवो अन्न सरीरं नो त जीवो तं सरीर ॥सू० १३२॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत अस्ति खलु प्रदेशिन ! तव सूर्यकान्ता नाम देवी ? हन्त अस्ति, यदि खलु त्वं प्रदेशिन ! तां सूर्यकान्तां देवीं स्नाता कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता सर्वालङ्कारभूषिता केनापि पुरुषेण स्नातेन यावत सर्वालङ्कारभूषितेन सार्द्धम् इष्टान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् काम-

'तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(अत्थि णं पएसी! तव सूरियकन्ता णामं देवी ? हे प्रदेशिन् तुम्हारी सूर्यकान्ता नामकी देवी है? (हंता, अत्थि) हां भदन्त ! है (जइ णं तुमं पएसी ! तं सूरियकतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं केणइ पुरिसेणं ण्हाएणं. जाव सव्वालंकारभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवे गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणिं पासिज्जासि) यदि हे प्रदेशिन!

'तए ण केसीकुमारसमणे पएसिं राय एवं वयासी' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए ण केसीकुमारसमणे) त्यारपछी કેશીકુમાર શ્રમણે (पएसीं राय एव वयासी) પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું. (अत्थि ण पएसी ! तव सूरियकंता णाम देवी ?) હે પ્રદેશીન્ ! તમારી સુર્યકાન્તા નામે દેવી છે ? (हंता, अत्थि) હા ભદંત ! છે. (जइणं तुम पएसी ! त सूरियकत देविं ण्हाय कयबलिकम्म कयकोउयमंगलपायच्छित्त सव्वालंकारभूसिय केणइ पुरिसेण ण्हाएण, जाव सव्वालंकारभूसिएण सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणिं पा[illegible]सि) તો હે

भोगान् प्रत्यनुभवन्तीं पश्येः (तदा) तस्य खलु त्वं प्रदेशिन्! क दण्डं निर्वर्तयेः? अहं खलु भदन्त! तं पुरुषं हस्तच्छिन्नकं वा शूलाचितं वा शूलभिन्नकं वा पादच्छिन्नकं वा एकाघातं कूटाघातं जीविताद् व्यपरोपयेयम्। अथ खलु प्रदेशिन्! स पुरुषः स्नात एव भवेत् सा यावत्

तुम स्नान कृतबलिकर्मा—(काक आदि को अन्नादि का भाग देनेवाली उस देवी को कि जिसने कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त कर लिया है और समस्त अलङ्कारों से जो विभूषित बनी हुई है किसी भी स्नात यावत् सर्वालङ्कार विभूषित परपुरुष के साथ इष्ट शब्द स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यभव संबंधी कामभोगों का अनुभव करती हुई देखलो तो (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स कं दंडं निव्वत्तेज्जासि?) तो हे प्रदेशिन्! तुम उस पुरुष के लिये क्या-क्या दण्ड दो? (अहं णं भंते! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा सूलाइगं वा सूलभिन्नगं वा पायच्छिन्नगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा) तब प्रदेशी राजाने कहा—हे भदन्त! मैं उस पुरुष को ऐसा दंड दूं कि जिससे उसके दोनों हाथ काट लिये जावें, या उसे शूली पर चढा दिया जावे, या उसके दोनों पग काट लिये जावें, या एक ही प्रहार में उसका प्राण ले लिया जावे, या किसी पर्वत शिखर पर उसे चढाकर वहां से धकेल दिया जावे कि जिससे वह अपने जीवन से रहित हो बैठे। (अह णं पएसी! से पुरिसे

પ્રદેશિન્! તમે જેણે સ્નાન, કૃત બલિકર્મ—કાગડા વગેરેને અન્ન ભાગ આપ્યો છે એવી તે દેવીને કે જેણે કૌતુક મંગળરૂપ પ્રાયશ્ચિત્તો કરી લીધા છે અને સમસ્ત અલંકારોથી જે વિભૂષિત થઈ ગયેલી છે અને જેમ તે સ્નાન યાવત્ સર્વાલંકારવિભૂષિત પરપુરુષની સાથે ઇષ્ટ શબ્દ સ્પર્શ રસ રૂપ, ગંધ આ પાંચ પ્રકારના મનુષ્યભવ સંબંધી કામભોગો ભોગવતી જોઈ લો તો (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स कं दंडं निव्वत्तेज्जासि?) તો હે પ્રદેશિન્! તમે તે પુરુષને કઈ જાતની શિક્ષા કરશો? (अहं णं भंते! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा सूलाइगं वा सूलभिन्नगं वा पायच्छिन्नगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું કે ભદન્ત! હું તે પુરુષને આ જાતની શિક્ષા કરીશ કે જેથી તેના બન્ને હાથો કાપી લેવામાં આવે કે તેને શૂળી પર ચઢાવવામાં આવે કે તેના બન્ને પગો કાપી નાખવામાં આવે કે એક જ ઘામાં તેને મારી નાખવામાં આવે અગર પર્વતશિખર પર લઈ જઈ તેને ત્યાંથી નીચે ફેંકી દેવામાં આવે કે જેથી પરિણામે તે મૃત્યુ પામે.

स्वामिन! मुहूर्तक हस्तच्छिन्नकं वा यावत् जीविताद् व्यपरोपय यावत् तावद् अहं मित्र ज्ञाति-निजक स्वजनसम्बन्धिपरिजनम् एवं वदामि-एवं खलु देवानुप्रिया! पापानि कर्माणि समाचर्य इमामेतद्रूपाम् आपत्तिं प्राप्नोमि, तत् मा खलु देवानुप्रियाः! यूयमपि केचित् पापानि कर्माणि समाचरत, मा खलु यूयमपि एवमेव आपत्तिं प्राप्नुत यथा खलु अहं, तस्य खलु त्वं प्रदे-

तुमं एवं वएज्जा-मा ताव मे सामी! मुहुत्तगं हत्थच्छिण्णगं वा जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं एवं वयामी) इस प्रकार से प्रदेशी राजा का कथन सुनकर केशीश्रमणने उससे ऐसा कहा-हे प्रदेशिन्! यदि वह तुमसे ऐसा कहे-हे स्वामिन! आप थोडी देर तक ठहरिये. मेरे हाथ पैर न काटिये यावत् मुझे जीवन से रहित न कीजिये, तब तक मैं मित्र, माता आदि ज्ञाति, स्वपुत्रादिक निजक, पितृव्यादि स्वजन श्वशुर आदिक सम्बधिजन, दासी दास आदि परिजन, इन सब से ऐसा कह दूं कि(एवं खलु देवाणुप्पिया? पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि) हे देवानुप्रियो! मैं पापकर्मों को समाचरित करके इस प्रकार की आपत्ति को पा रहा हूं (तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरइ) इसलिये हे देवानुप्रियो! आप लोग कोई भी पापकर्म मत करना कि (मा णं भे वि एवं चेव आवइं पावेज्जाहि य जहा णं अहं) जिससे तुमको भी ऐसी आपत्ति न पडना पडे, जैसा

(अह णं पएसी! से पुरिसे तुमं वदेज्जा मा ताव मे सामी! मुहुत्तगं हत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्तणाइणियग-सयणसंबंधिपरियणं एवं वयामि) આ પ્રમાણે પ્રદેશી રાજાનું કથન સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેમને કહ્યું કે હે પ્રદેશિન્! જો તમને આ પ્રમાણે કહે કે સ્વામિન્! આપ થોડી વખત થોભી જાવ. મારા હાથપગ કાપો નહિ યાવત્ મને જીવન રહિત પણ બનાવો નહિ હું મિત્ર, માતા, પિતા વગેરે જ્ઞાતિ, સ્વપુત્રાદિક નિજક પિતૃવ્યાદિ સ્વજન, શ્વશુર વગેરે સંબંધીજન, દાસદાસી વગેરે પરિજન આ બધાને આ પ્રમાણે કહી દઉં કે (एवं खलु देवाणुप्पिया! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि) હે દેવાનુપ્રિયો! હું પાપકર્મોનું આચરણ કરીને આ જાતની શિક્ષા ભોગવી રહ્યો છું. (तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरइ) એથી હે દેવાનુપ્રિયો તમે કોઈપણ જાતનું પાપકર્મ આચરતા નહિ (मा णं भे वि एवं चेव आवइं पावेज्जाहि य जहा णं अहं) જેથી તમને આ જાતની શિક્ષા ભોગવવી પડે કે જેવી હું ભોગવી રહ્યો છું

शिन! पुरुषस्य क्षणमपि एतमर्थं प्रतिशृणुयाः?, नायमर्थः समर्थः, कस्मात् खलु? यस्मात् खलु भदन्त! अपराधी खलु स पुरुषः एवमेव प्रदेशिन्! तवापि आर्यकोऽभवत् इहैव श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयत, स खलु मम वक्तव्यतया सुबहु यावत् उपपन्नः, तस्य खलु आर्यकस्य त्वं नप्तृकोऽभवः, इष्टः कान्तः यावत् दर्शनतया, स खलु इच्छति मनुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति शीघ्रमागन्तुम् चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन्! अधुनोपपन्नकः नरकेषु नैरयिक

कि मैं पड गया हूं। (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि?) तो हे प्रदेशिन्! तुम क्या उस पुरुष की बात को थोडी सी भी देर के लिए स्वीकार कर लोगे? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है–अर्थात् उसकी यह बात स्वीकार नहीं की जावेगी (जम्हा) क्यों कि (अ स भंते! अवराही णं स पुरिसे) हे भदन्त! वह पुरुष अपराधी है। (एवामेव पएसी! तव वि अज्जए होत्था) तो इसी तरह से हे प्रदेशिन्! तुम्हारे भी आर्यक हुए हैं। (एवामेव इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जो, सम्म करभरवित्तिं पवत्तेइ) उन्होंने इस श्वेतविका नगरी में अपना जीवन अधार्मिक बनाया है, तथा प्रजाजन से प्राप्त टेक्स से उनका उन्होंने अच्छी तरह से पालनपोषण नहीं किया है। (से णं मम वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्नो) इस तरह मेरी वक्तव्यता के अनुसार वे अनेक अतिमलिन पापकर्मों का अर्जन करके यावत् किसी एक नरक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं। (तस्स णं अज्जगस्स तुमं नत्तुए होत्था, इट्ठे कंते जाव पासणयाए) उन्हीं आर्यक के तुम इष्ट कान्त

(तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि?) तो हे प्रदेशिन्! शुं तमे ते पुरुषनी वातने थोडा वखत माटे पण स्वीकारी लेशो? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! आ अर्थ समर्थ नथी एटले के तेनी आ वात स्वीकारवामां आवशे नहि. (जम्हा) केमके (अ से भंते! अवराही णं से पुरिसे) हे भदन्त! ते पुरुष अपराधी छे (एवामेव पएसी! तव वि अज्जए होत्था) तो आ प्रमाणे ज हे प्रदेशिन् तमारा माटे पण आर्यक थया छे (एवामेव इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) तेमणे पोतानुं जीवन श्वेतविका नगरीमां अधार्मिक रीते पसार कर्युं छे तेमज प्रजाजनो पासेथी कर वसूल करीने पण तेमनुं सारी पेठे पोषण कर्युं नथी. (से णं मम वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्नो) आ प्रमाणे मारा कथन मुजब तेमणे घणां पापकर्मोनुं अर्जन करीने यावत् कोई एक नरकमां नारकनी पर्यायथी जन्म पाम्यां छे. (तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते जाव पासणयाए)

इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तु नैव खलु शक्नोति- १ अधुनोपपन्नकः नरकेषु नैरयिकः स खलु तत्र महद्भूतां वेदनां वेदयन् इच्छेत् मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति। २ अधुनोपपन्नको नरकेषु नैरयिको नरकपालैः भूयो भूयः समधिष्ठीयमानः इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं

आदि विशेषणों वाले पौत्र हो (से ण इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छि-त्तए णो चेव णं संचाएइ, हव्वमागच्छित्तए) वे तुम्हारे आर्यक ! यद्यपि इस मनुष्यलोक में वहां से जल्दी से जल्दी आना चाहते हैं, परन्तु वे वहां से आने के लिये असमर्थ है। (चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेर-इए इच्छइ, माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) क्यों की हे प्रदेशिन ! अधुनोपपन्नक नारक चार कारणों को लेकर मनुष्यलोक में शीघ्र आने की इच्छा करता हुआ भी वह वहां से शीघ्र नहीं आ सकता है (१अहुणोववन्नए, नरएसु नेरइए-से ण तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) वे चार कारण इस प्रकार से हैं--अधुनोपपन्नक नैरयिक नरकों में बहुत बडी वेदना का अनुभव करता है, अतः वह चाहता है कि मैं मनुष्य-लोक में उत्पन्न हो जाऊ-परन्तु वह वहां से निकलने में सर्वथा असमर्थ होता है-वहां नहीं आ सकता है ? (२अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए नरय-

---

तेज आर्यकना तमे इष्ट कांत वगेरे विशेषणोवाळा पौत्र छो. (से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ, हव्वमागच्छित्तए) तमारा ते आर्यक जो के मनुष्यलोकमां त्यांथी जल्दीमां जल्दी आववा इच्छे छे, परंतु तेओ त्यांथी आववामां असमर्थ छे. (चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छइ, माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) केमके हे प्रदेशिन् ! अधुनोपपन्नक नारक चार कारणोने लीधे मनुष्यलोकमां जल्दी आववानी इच्छा धरावे छे छतांये ते त्यांथी जल्दी आवी शकतो नथी. (१ अहुणो-ववन्नए, नरएसु नेरइए से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) ते चार कारणो आ प्रमाणे छे. अधुनोपपन्नक नैरयिक नरकोमां तीव्र वेदनाने अनुभवे छे एथी ते इच्छे छे के हुं मनुष्यलोकमां जन्म पामुं परंतु ते त्यांथी नीकळवामां सर्वथा असमर्थ होय छे, अहीं ते आवी शकतो नथी १ (२ अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए णर-यपालेहिं भुज्जो भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ, माणुसं लोगं हव्वमाग-

शिन् ! पुरुषस्य क्षणमपि एतमर्थं प्रतिशृणुयाः ?, नायमर्थः समर्थः, कस्मात् खलु ? यस्मात् खलु भदन्त ! अपराधी खलु स पुरुषः एवमेव प्रदेशिन् ! तवापि आर्यकोऽभवत् इहैव श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयत्, स खलु मम वक्तव्यतया सुबहु यावत् उपपन्नः, तस्य खलु आर्यकस्य त्वं नप्तृकोऽभव, इष्टः कान्तः यावत् दर्शनतया, स खलु इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति शीघ्रमागन्तुम् चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन् ! अधुनोपपन्नकः नरकेषु नैरयिक

कि मैं पड गया हूं। (तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ?) तो हे प्रदेशिन् ! तुम क्या उस पुरुष की बात को थोडी मात्रा भी दूर के लिए स्वीकार कर लोगे ? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त ! यह अर्थ समर्थ नहीं है-अर्थात् उसकी यह बात स्वीकार नहीं की जावेगी (कम्हा) क्यों कि (ण स भंते ! अवराही णं स पुरिसे) हे भदन्त ! वह पुरुष अपराधी है। (एवामेव पएसी ! तव वि अज्जए होत्था) तो इसी तरह से हे प्रदेशिन् ! तुम्हारे भी आर्यक हुए हैं। (एवामेव इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव, सम्म करभरवित्तिं पवत्तेइ) उन्होंने इस श्वेताम्बिका नगरी में अपना जीवन अधार्मिक बनाया है, तथा प्रजाजन से भारत टेक्स से उनका उन्होंने अच्छी तरह से पालनपोषण नहीं किया है। (से णं मम वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्नो) इस तरह मेरी वक्तव्यता के अनुसार वे अनेक अतिमलिन पापकर्मों का अर्जन करके यावत् किसी एक नरक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं। (तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते जाव पासणयाए) उन्हीं आर्यक के तुम इष्ट कान्त

(तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ?) તો હે પ્રદેશિન્ ! શું તમે તે પુરુષની વાતને થોડા વખત માટે પણ સ્વીકારી લેશો ? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદન્ત ! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે તેની આ વાત સ્વીકારવામાં આવશે નહિ. (कम्हा) કેમકે (ण से भंते ! अवराही णं स पुरिसे) હે ભદન્ત ! તે પુરુષ અપરાધી છે (एवामेव पएसी ! तव वि अज्जए होत्था) તો આ પ્રમાણે જ હે પ્રદેશિન્ તમારા માટે પણ આર્યક થયા છે (एवामेव इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) તેમણે પોતાનું જીવન શ્વેતાંબિકા નગરીમાં અધાર્મિક રીતે પસાર કર્યું છે તેમજ પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને પણ તેમનું સારી રીતે પોષણ કર્યું નથી. (से णं मम वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्नो) આ પ્રમાણે મારા કથન મુજબ તેમણે ઘણાં પાપકર્મોનું અર્જન કરીને યાવત્ કોઈ એક નરકમાં નારકની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા છે (तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते जाव पासणयाए)

नरकेषु नैरयिकः इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तु नैव खलु शक्नोति। तत् श्रद्धेहि खलु प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीव अन्यत् शरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम् ॥ सू. १३२॥

टीका--'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि-ततः-तदनन्तरम्, खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-हे प्रदेशिन !तव सूर्यकान्ता-नाम देवी=राज्ञो अस्ति खलु?, ततः प्रदेशी राजोत्तरयति-हन्त!' इति

एहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) इस प्रकार इन चार कारणों से हे प्रदेशिन! अधुनोपपन्नक नारक मनुष्यलोक में शीघ्र जाने का अभिलाषी होता हुआ भी वह वहां से शीघ्र मनुष्य लोक में नहीं आ सकता है। (तं सद्दहाहि णं पएसी! जहा :अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) इसलिये हे प्रदेशिन! तुम इस बात पर अवश्य विश्वास करो, कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है.।

टीकार्थ—केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से जो कहा वह इस सूत्र द्वारा प्रकट किया गया है. इसमें जीव भिन्न है और शरीरभिन्न है इस बातको उसके आर्यक-(पितामह दादा) नरक से आकर उसे क्यों नहीं समझाते है इस बात का उत्तर उसे समझाया गया है. उससे केशी-कुमारश्रमणने कहा हे प्रदेशिन! तुम्हारी जो सूर्यकान्ता देवी है उससे यदि कोई मनुष्य उसी के जैसे विशेषणों वाला बन कर मनोऽनुकूल शब्द

શકતો નથી. (इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववन्ने नरएसु नेर-इएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) આ પ્રમાણે આ ચારે ચાર કારણોથી હે પ્રદેશિન્! અધુનોપપન્નક નારક મનુષ્યલોકમાં જલદી આવવાની ઇચ્છા રાખતો હોય છતા એ ત્યાથી જલદી મનુષ્યલોકમા આવી શકતો નથી (तं सद्दहाहि णं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं) એથી હે પ્રદેશિન! તમે આ વાત પર અવશ્ય વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે.

ટીકાર્થ—કેશીકુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને જે કંઇ કહ્યુ છે તે બધું આ સૂત્ર વડે પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે. આમા જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે એ વાતને તેના આર્યક (પિતામહ-દાદા) નરકમાથી આવીને કેમ સમજાવતા નથી એ વાત આ પ્રમાણે તેને સમજાવવામાં આવી છે. કેશીકુમારશ્રમણે કહ્યું કે હે પ્રદેશિન્! તમારી જે સૂર્યકાંતાદેવી છે તેની સાથે જો કોઇ માણસ તેના જેવા વિશેષણોથી યુક્ત થઇને

नैव खलु शक्नोति। ३ अधुनोपपन्नकः नरकेषु नैरयिकः निरयवेदनीयं कर्म अक्षीणे अवेदिते अनिर्जीर्णे इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति। ४ एवम् अधुनोपपन्नको नरकेषु नैरयिको निरयाऽऽयुषि कर्मणि अक्षीणे अवेदिते अनिर्जीर्णे इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति शीघ्रमागन्तुम्' इत्येतैश्चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन्! अधुनोपपन्नकः

पालेहिं भुज्जो भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) अधुनोपपन्न नारक नरकों में परमाधार्मिकरूप नरकपालों द्वारा बार बार आक्रम्यमाण होता हुआ यह चाहता है कि मैं मनुष्यलोक में शीघ्र उत्पन्न हो जाऊं, परन्तु वह मनुष्यलोकमें शीघ्र उत्पन्न नहीं हो सकता है२ (३ अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अनिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) अधुनोपपन्नक नारक नरक में नरक भोग्य असातावेदनीय कर्म के अक्षीण होने पर, अननुभूत होने पर एवं अनिर्जीर्ण नाश होने पर, मनुष्यलोक में आनेका अभिलाषी होता हुआ भी नहीं आ सकता है३ (४ एवं नेरइयाउंसि अक्खीणे अवेइए अणिज्जिण्णे- इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) इसी प्रकार चौथा कारण यह है कि उसके नरकसंबंधी आयु क्षीण नहीं हुआ है, उसका वेदन नहीं हो चुका है तथा नारक आयु की निर्जरा भी नहीं हुई है इसी कारण से वह मनुष्यलोक में आने की इच्छा करता हुआ भी नहीं आ सकता है।(इच्चे-

---

च्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) અધુનોપપન્નક નારક નારકોમાં પરમાધાર્મિકરૂપ નરકપાલો વડે વારંવાર આક્રમ્યમાણ થઈને તે એમ ઇચ્છે છે કે હું મનુષ્યલોકમાં જલ્દી ઉત્પન્ન થાઉં પરંતુ તે મનુષ્યલોકમાં જલ્દી ઉત્પન્ન થઈ શકતો નથી, ૨. (३ अहुणो- ववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) અધુનોપપન્નક નારક નરકમાં ભોગ્ય અશાતા વેદનીય કર્મ અક્ષીણ હોવાથી અનનુભૂત હોવાથી અને અનિર્જીર્ણ હોવાથી મનુષ્યલોકમાં આવવાની અભિલાષા રાખે છે છતાંએ તે ત્યાંથી મુક્ત થઈ શકતો નથી. અને (४ एवं नेरइयाउंसि अक्खीणे अवेइए अणिज्जिण्णे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) આ પ્રમાણે ૪ ચોથું કારણ આ પ્રમાણે છે કે નરકસંબંધી તેનું આયુ ક્ષીણ થયું નથી, તેનું વેદન થયું નથી અને નારક આયુની નિર્જરા થઈ નથી એથી જ તે મનુષ્યલોકમાં આવવાની ઇચ્છા ધરાવે છે છતાંએ આવી

नरकेषु नैरयिकः इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तु नैव खलु शक्नोति। तत् श्रद्धेहि खलु प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीव अन्यत् शरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम् ॥सू. १३२॥

टीका--'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि-ततः-तदनन्तरम्, खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-हे प्रदेशिन! तव सूर्यकान्ता-नाम देवी=राज्ञो अस्ति खलु ?, ततः प्रदेशी राजोत्तरयति-हन्त!' इति

एहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) इस प्रकार इन चार कारणों से हे प्रदेशिन! अधुनोपपन्नक नारक मनुष्यलोक में शीघ्र जाने का अभिलाषी होता हुआ भी वह वहां से शीघ्र मनुष्य लोक में नहीं आ सकता है। (तं सद्दहाहि णं पएसी! जहा 'अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं') इसलिये हे प्रदेशिन! तुम इस बात पर अवश्य विश्वास करो, कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है.।

टीकार्थ—केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से जो कहा वह इस सूत्र द्वारा प्रकट किया गया है. इसमें जीव भिन्न है और शरीरभिन्न है इस बातको उसके आर्यक-(पितामह दादा) नरक से आकर उसे क्यों नहीं समझाते हैं इस बात का उत्तर उसे समझाया गया है. उससे केशीकुमारश्रमणने कहा हे प्रदेशिन! तुम्हारी जो सूर्यकान्ता देवी है उससे यदि कोई मनुष्य उसी के जैसे विशेषणों वाला बन कर मनोऽनुकूल शब्द

શકતો નથી. (इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) આ પ્રમાણે આ ચારે ચાર કારણોથી હે પ્રદેશિન્! અધુનોપપન્નક નારક મનુષ્યલોકમાં જલદી આવવાની ઇચ્છા રાખતો હોય છતા એ ત્યાંથી જલદી મનુષ્યલોકમા આવી શકતો નથી (तं सद्दहाहि णं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं) એથી હે પ્રદેશિન! તમે આ વાત પર અવશ્ય વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે.

ટીકાર્થ—કેશીકુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને જે કંઈ કહ્યુ છે તે બધું આ સૂત્ર વડે પ્રકટ કરવામા આવ્યું છે. આમા જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે એ વાતને તેના આર્યક (પિતામહ-દાદા) નરકમાથી આવીને કેમ સમજાવતા નથી એ વાત આ પ્રમાણે તેને સમજાવવામા આવી છે. કેશીકુમારશ્રમણે કહ્યું કે હે પ્રદેશિન્! તમારી જે સૂર્યકાતાદેવી છે તેની સાથે જો કોઇ માણુસ તેના જેવા વિશેષણોથી યુક્ત થઇને

स्वीकारः अस्मिन्-विषये मम गवेषणा भासा स्यात्। ततः केशीकुमारश्रमण-आह-यदि-चेत् खलु त्वं प्रदेशी राजा तां-पूर्वोक्तां सूर्यकान्तां देवीं स्नातां-कृतस्नानां कृतबलिकर्मा-कृतवायसादि निमित्तान्नभागां, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तां-कृतमषीपुण्ड्रतिलकादि मङ्गलार्थपापशोधनक्रियां, सर्वालङ्कारभूषितां-सकलाङ्गोपाङ्गाभरणालङ्कृतां केनापि कनचित् पुरुषेण सार्द्धं, कीदृशेन? इत्याह-स्नातेन? इत्याह-स्नातेन यावत्-यावत्पदेन-कृतबलिकर्मणा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तेन' इत्येषां सङ्ग्रहः, तथा सर्वालङ्कारभूषितेन सार्द्धं इष्टान्=मनोऽनुकूलान् शब्द-स्पर्श-रस-रूप-गन्धान् पञ्चविधान्-पञ्चप्रकारान् मानुष्यकान्-मानुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान्-पूर्वोक्तान् शब्दादीन्द्रियविषयान् प्रत्यनुभवन्तीम्-अनुभवविषयीकुर्वतीम् पश्येः तस्मिन् अवसरे हे प्रदेशिन्! त्वं तस्य-पूर्वोक्तस्य खलु क-कीदृशं दण्डनिग्रहं निर्वर्तयेः-कुर्याः?।

ततः प्रदेशिराज आह-हे भदन्त! अहं खलु तं-कृतपारदारिकदुराचारं पुरुषं हस्तच्छिन्नकं-हस्तौ छिन्नौ यस्य तादृशं वा-अथवा शूलाग्रे शूलारोपितं वा भिन्नकं-शूलेन भिन्नः शूलभिन्नः स एव शूलभिन्नकस्तम्, वा-अथवा पादच्छिन्नकं-छिन्नौ पादौ यस्य तम् वा अथवा एकाऽऽघातम् एकः-एकः आघातः प्रहारो यस्मिन्, तम्, कूटाऽऽघात-कुन्त-पर्वतादि स्वरूपे तदुपरिसमारोपणद्वारा पातनेन आघातः-वधो यस्य स तथा जीविताद्-स्वप्राणेभ्यः-वियोजयेयम्, जीवरहितं कुर्यामित्यर्थः, इति प्रदेशिराजनिवेदनानन्तरं पुनः केशीश्रमण पृच्छति-अथ खलु हे प्रदेशिन्! यदि सः पुरुषः त्वाम् एवम् अनुपदवक्ष्यमाणं वचनं वदेत्-कथयेत्-मा ताव-मे-मां हे स्वामिन्! यावत्-मित्र

स्पर्श-रस-रूप गन्धादि पांच प्रकार के मनुष्यभव सम्बन्धी कामभोगों को भोगे और तुम इस बात को देखते हो उस अवसर में तुम उस पुरुष के लिये क्या दण्ड दो? तब प्रदेशी राजा ने कहा-हे भदन्त! ऐसे दुराचारी पुरुष को मैं अड्डा से या यावत् जीवरहित होने का दण्ड दूं ठीक है-इस पर यदि वह पुनः तुम से ऐसा निवेदन करे कि हे स्वामिन्! थोडी देर आप मुझे इस दण्ड से रहित कर दीजिये इतने में मैं अपने मित्र

સ્નાન કરે મનોઽનુકૂલ શબ્દ સ્પર્શ રસ રૂપ ગંધ વગેરે પાંચ પ્રકારના મનુષ્યસંબંધી કામભોગો ભોગવે અને તમે આ બધું જોતાં હો તો તે વખતે તમે તે પુરુષને શી શિક્ષા કરો? ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું કે હે ભદન્ત! એવા દુરાચારી પુરુષને હું અત્યારથી યાવત્ નિષ્પ્રાણ કરી મૂકવાની શિક્ષા આપું તે યોગ્ય કહેવાય એના પછી તે ફરી તમને એવી રીતે વિનંતી કરે કે હે સ્વામિન્! થોડા વખત માટે મને દંડ આપો કે જેથી હું મિત્ર વગેરે સ્વજનોને આમ કહું કે હે દેવાનુપ્રિયો તમારામાંથી

दीन् प्रति वक्ष्यमाणं पर्यानवेदनसमयावधिमुहूर्तं मुहूर्तमात्रं मां हस्तच्छिन्नकं वा यावत्-यावत्पदेनोपर्युक्तपदानां संग्रहो बोध्यः, तदर्थश्चोपर्युक्त एव, जीविताद मा व्यपरोपय-न वियोजय, मा मारयेत्यर्थः यावत्-यत्समयपर्यन्तं 'तावत' इति वाक्यालङ्कारे, अह मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन-सम्बन्धिपरिजनं मित्राणि-सुहृदः, ज्ञातयः-मातापितृभ्रात्रादयः, निजकाः-स्वपुत्रादयः स्वजनाः-पितृव्यादयः, सम्बन्धिनः-श्वशुरादयः, परिजनाः-दासी दासादयः, एषां समाहारो मित्र-ज्ञाति-निजक स्वजन-सम्बन्धि-परिजनं, तत्तथा, एवम् अनुपद वक्ष्यमाणं वचनं वदामि-कथयामि, यथा-हे देवानुप्रियाः! यूयम् एवं-वक्ष्यमाणं शृणुत-'अहं पापानि कर्माणि समाचर्य-कृत्वा इमाम्-एतद्रूपां प्रदेशिराजोपनीयमाना कुमारणया ज चिताद् व्यपरोपणीयतारूपाम् आपत्तिम् आपदं प्राप्नोमि-प्राप्तोऽऽस्मि, तत-तस्मात्कारणात्-पापकर्मणामापत्तिप्रापकत्वाद्धेतोः, हे देवानुप्रियाः! यूयमपि-मदीयमित्रादयः केचित्-केऽपि पापानि कर्माणि मा समाचरत-न प्रकुरुत 'मेवि' इति यूयमपि एवमेव=अनेनैव-प्रकारेण आपत्तिं मा प्राप्नुत-यथा खलु अहम् इति। तस्य खलु त्वम् एतं= तत्कथनरूपम् अर्थं हे प्रदेशिन्! प्रतिशृणुयाः-स्वीकुर्याः? प्रदेशी कथयति-अयम्-अनन्तरोक्तोऽर्थः नो समर्थः-न युज्यते, कस्मात् खलु न समर्थः? इति जिज्ञासायामाह-'यस्मात्' इत्यादि-हे भदन्त! यस्मात् खलु स पुरुषः मे-मम अपराधी वर्तते' इति हेतोः अयमर्थो न समर्थः, केशीकुमारश्रमणः

दिजनों से ऐसा कह दूं कि हे देवानुप्रियो! तुम लोगों में से कोई भी जन ऐसा पापकर्म नहीं करना-नहीं तो मेरी जैसी आपत्ति को भोगना पडेगा तो क्या हे प्रदेशिन्! तुम उसकी इस बातको मान लोगे। यदि कहो कि नहीं तो इस पर पुनः यही पूछा जा सकता है कि क्यों नहीं? तुम कह सकते हो? इसके उत्तर में वह अपराधी है। तो इसी प्रकार से हे प्रदेशिन! तुम्हारे जो आर्यक (दादा) है वे भी अनेक मलिन पापकर्मो को कमाकर यहां से नरक मे नारक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं-अतः जब तक वे वहा की पूरी स्थिति को नहीं भोग लेते हैं-तबतक वे अपनी इच्छा

કોઇપણ એવુ પાપકર્મ કરશો નહિ નહિતર મારા જેવી શિક્ષા ભોગવવી પડશે તો શું હે પ્રદેશિન્ તમે તેની આ વાત સ્વીકારી લેશો? હવે જો તમે આમ કહો કે નહિ, તો એના પર ફરી તમને પૂછવામાં આવે કે કેમ નહિ? એના ઉત્તરમા તમે કહેશો કે તે અપરાધી છે. તો આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ તમારા જે આર્યક છે તેઓ પણ ઘણાં પાપકર્મોનું અર્જનકરીને અહીથી નરકમા નરકની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા છે એથી જ્યા સુધી તેઓ ત્યાની સપૂર્ણ આસ

स्वीकारे भन्ते-विषन मम सूर्यकान्ता भार्या। ततः केशीकुमारश्रमण-आह-यदि-चेत् खलु त्वं प्रदेशी राजा तां-पूर्वोक्तां सूर्यकान्तां देवीं स्नातां-कृतस्नानां कृतबलिकर्माणं-कृतवायसादि निमित्तान्नभागां, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तां-कृतमषीपुण्ड्रतिलकादि मङ्गल्यपापशोधनक्रियां, सर्वालङ्कारभूषितां-सकलाङ्गोपाङ्गाभरणालङ्कृतां केनापि कस्मिंश्चित् पुरुषेण सार्द्धं कीदृशेन? इत्याह-स्नातेन? इत्याह-स्नातेन यावत्-यावत्पदेन-कृतबलिकर्मणा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तेन' इत्यपां संग्रहः, तथा सर्वालङ्कारभूषितेन सार्द्धं इष्टान्-मनोऽनुकूलान शब्द-स्पर्श-रसरूप-गन्धान् पञ्चविधान्-पञ्चप्रकारान् मानुष्यकान्-मानुष्यसम्बन्धान कामभोगान्-पूर्वोक्तान् शब्दादीन्द्रियविषयान् प्रत्यनुभवमानाम्-अनुभवविषयीकुर्वतीम् पश्येः अस्मिन्नवसरे हे प्रदेशिन्! त्वं तस्य-पूर्वोक्तस्य खलु कं-कीदृशं दण्डं निग्रहं निर्वर्तयेः-कुर्याः?। ततः प्रदेशिराज आह-हे भदन्त! अहं खलु तं-कृतानाचारदुराचारं पुरुषं हस्तच्छिन्नकं-हस्तौ छिन्नौ यस्य तादृशं वा-अथवा शूलाग्रे शूलारोपितं वा भिन्नकं-शूलेन भिन्नः शूलभिन्नः स एव शूलभिन्नकस्तम्, वा-अथवा पाद च्छिन्नकं-छिन्नौ पादौ यस्य तम् वा अथवा एकाऽऽघातम् एकः-सकृत् आघातः प्रहारो यस्मिन्, तम्,कुठाऽऽघात-कृत्स्न-पर्वतादि स्वरेण तदुपरिभारारोपणद्वारा घातनेन आघातः-वधो यस्य स तथा जीविताद्-व्यपरोपयेयं-वियोजयेयम्, जीवरहितं कुर्यामित्यर्थः, इति प्रदेशिराजनिवेदनानन्तरं पुनः केशीश्रमणः पृच्छति-अथ खलु हे प्रदेशिन्! यदि स पुरुषः त्वाम् एवम् अनुपद वक्ष्यमाणं वचनं वदेत्-कथयेत्-तथाहि-मे-मां हे स्वामिन्! यावत्-विभा

स्पर्श-रस-रूप गन्धादि पांच प्रकारके मनुष्यभव सम्बंधी कामभोगों को भोगे और तुम इस बात को देखलो तो उस अवसर में तुम उस पुरुष के लिये क्या दण्ड दो? तब प्रदेशी राजाने कहा-हे भदन्त! ऐसे दुराचारी पुरुष को मैं अङ्गभङ्ग का यावत् जीवरहित होने का दण्ड दूं ठीक है-इस पर यदि वह पुनः तुम से ऐसा निवेदन करे कि हे स्वामिन्! थोडी देर आप मुझे इस दण्ड से रक्षित कर दीजिये इतने में मैं अपने मित्र

સ્પર્શ, કરે મનોऽનુકૂલ શબ્દ સ્પર્શ રસ રૂપ ગંધ વગેરે પાંચ પ્રકારના મનુષ્ય સંબંધી કામભોગો ભોગવે અને તમે આ બધું કરતાં જોઈ લો તો તે વખતે તમે તે પુરુષને શી શિક્ષા કરો? ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું કે હે ભદન્ત! એવા દુરાચારી પુરુષને હું અંગભંગની બાબત નિષ્પ્રાણ કરી મારવાની શિક્ષા આપું તે યોગ્ય કહેવાય. એના પછી તે ફરી તમને એવી રીતે વિનંતી કરે કે હે સ્વામિન્! થોડા વખત માટે મને દંડ આપો કે જેથી હું મિત્ર વગેરે સ્વજનોને આમ કહું કે હે દેવાનુપ્રિયો તમારામાંથી

इति। यदि जीव-शरीरयोर्भेदो न स्यात्तदा पूर्वोक्तकारणचतुष्टयेन नरक-भोगं कः कुर्यात्? शरीरस्य तु मनुष्यलोक एव नष्टत्वात्, शरीरभिन्नत्वे तु जीवस्य शरीरनाशेऽपि सत्त्वादुक्तहेतुचतुष्टयेन नरकभोगं कर्तुं जीवः समर्थो भवति॥ सू० १३२॥

मूलम्--तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा, इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ। एवं खलु भंते! मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगय जीवा० सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ. सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहु पुन्नोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिगा मम आगंतुं एवं वएज्जा-एवं खलु नत्तुआ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विह-

---

यदि जीव और शरीर में भेद नहीं होता तो पूर्वोक्त कारण चतुष्टय में नरक भोग कौन करे? क्यों कि शरीर तो मनुष्यलोक मे ही नष्ट हो जाता है उसके नष्ट होने पर तदभिन्न जीव भी नष्ट हो जावेगा। परन्तु जब शरीर से भिन्न जीव को माना जाता है तो शरीर के नाश होने पर भी जीव का सद्भाव रहता ही है। अतः उक्त हेतु चतुष्टय से नरकभोग करने के लिये जीव समर्थ होता है। इस प्रकार से यह टीका का भाव लिखा गया है ॥ सू. १३२ ॥

વિશ્વાસ રાખો જો જીવ અને શરીરમા ભિન્નતા ન હોત તો પૂર્વોક્ત કારણ ચતુષ્ટયમા નરકભોગ કરે કોણ? કેમકે શરીર તો મનુષ્ય લોકમા જ નષ્ટ થઇ જાય છે, તેના નાશ પછી તદ્ભિન્ન જીવ પણ નષ્ટ થઇ જ જશે જ. પર તુ જ્યારે શરીર કરતાં ભિન્ન જીવને માનવામા આવે છે તો શરીરના વિનાશ પછી પણ જીવનો સદ્ભાવ રહેજ છે ઉક્ત હેતુ ચતુષ્ટયથી નરકભોગ માટે જીવ સમર્થ હોય છે આ પ્રમાણે આ ટીકા નો ભાવ લખવામા આવ્યો છે. ॥સૂ. ૧૩૨॥

माह-हे प्रदेशिन्! एवमेव-अमुनैव प्रकारेण तथापि आर्यकोऽभवत्, विना प्रतो कीदृशोऽभवत्? इत्याह-स च इहैव श्वेतविकायां नगर्यामधार्मिको यावत्नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयत्। सः-आर्यकः खलु मम वक्तव्यतया-कथनानुसारेण सुबहु पापं यावत् पापकर्म-"पापं कर्म प्राणातिपातादिकं समर्ज्य नरकेषु" इत्येषां पदानां संग्रहः उत्पन्नः समुत्पन्नः" तस्य-पूर्वोक्तस्य आर्यकस्य खलु त्वं नप्तृकः पौत्रोऽभवः कीदृशः? इतिजिज्ञासाया माह-इष्टः कान्तो यावत् दुर्लभतया,। स-नरकमुपपन्नः खलु सम्प्रति मानुष्यं लोकं हव्यं शीघ्रमागन्तुमिच्छति परन्तु स शीघ्रमागन्तुं नो शक्नोति। कुतो न इति जिज्ञासायां शृणु-हे प्रदेशिन्! चतुर्भिः स्थानैः-कारणैः, अधुनोपपन्न-तत्कालोत्पन्नो नरकेषु-नरकमध्ये, नैरयिकः नारकः मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुमिच्छति परन्तु शीघ्रं आगन्तुं नो शक्नोति-तानि चत्वारि स्थानान्येवम्-अधुनोपपन्नो नरकेषु नैरयिकः सः खलु तत्र-नरकेषु महद्भूतां-महतीं वेदनां वेदयन्-अनुभवन् मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुमिच्छेत परन्तु आगन्तुं नैव शक्नोति१। अधुनोपपन्नो नरकेषु नैरयिको नरकपालैः परमाधार्मिकैः देवैः भूयोभूयः-पुनःपुनः समधिष्ठीयमानः-आक्रम्यमाणः सन् इच्छति मानुष्यं लोकमागन्तुं किन्तु न शक्नोति२। तृतीयं स्थानमाह-'अधु नोपपन्नो नरकेषु नैरयिकः निरयवेदनीये नरकमार्गे असातवेदनीये कर्मणि अक्षीणे-क्षयमप्राप्ते अवेदिते अननुभूते अनिर्जीर्णे-नाशमप्राप्ते च सति इच्छति मानुष्यं लोकमागन्तुं किन्तु न शक्नोत्यागन्तुम्३। अनेन प्रकारेण निर यायुषि-नरकसम्बन्धिनि आयुःकर्मणि अक्षीणेऽवेदितेऽनिर्जीर्णे-विनाशम प्राप्ते च सति, इच्छति मनुष्यं लोकमागन्तुं किन्तु न शक्नोति४। इत्येतैः अनन्तरोक्तैश्चतुर्भिः स्थानैः हे प्रदेशिन्! अधुनोपपन्न इत्यादीनां विवरण मागतम्। तत्-तस्मात्कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने विश्वसिहि खलु यथा अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् नो स जीवः तत् शरीरम्'

के अनुसार यहां नहीं आ सकते हैं, क्यों कि नारक जीवों को यहां आने में चार कारण बाधक हैं जो सूत्रमें में प्रकट किये जा चुके हैं इसलिये हे प्रदेशिन्! तुम मेरे इस वचन पर कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, जीव शरीररूप नहीं है, और शरीर जीव रूप नहीं है विश्वास रखो,

સ્થિતિને ભોગવી લેતો નહિ ત્યાં સુધી તેઓ પોતાની ઇચ્છા મુજબ અહીં આવી શકતા નથી કેમકે નારકજીવોને અહીં આવવા માટે ચાર કારણો બાધક છે. જે સૂત્રોમાં બતાવવામાં આવ્યા છે એથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારા આ વચન પર-જે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે જીવ શરીરરૂપ નથી, અને શરીર જીવરૂપ નથી,

इति। यदि जीव-शरीरयोर्भेदो न स्यात्तदा पूर्वोक्तकारणचतुष्टयेन नरक-भोग कः कुर्यात् ? शरीरस्य तु मनुष्यलोक एव नष्टत्वात्, शरीरभिन्नत्वे तु जीवस्य शरीरनाशेऽपि सत्त्वादुक्तहेतुचतुष्टयेन नरकभोगं कर्तुं जीवः शक्तो भवति ॥ सू० १३२॥

मूलम्--तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा, इमेण पुण कारणेण नो उवा-गच्छइ। एवं खलु भंते ! मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नय-रीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगय जीवा० सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ, सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहु पुन्नोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिगा मम आगंतुं एवं वएज्जा-एवं खलु नत्तुआ ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विह-

---

यदि जीव और शरीर में भेद नहीं होता तो पूर्वोक्त कारण चतुष्टय में नरक भोग कौन करे? क्यों कि शरीर तो मनुष्यलोक में ही नष्ट हो जाता है उसके नष्ट होने पर तदभिन्न जीव भी नष्ट हो जावेगा। परन्तु जब शरीर से भिन्न जीव को माना जाता है तो शरीर के नाश होने पर भी जीव का सद्भाव रहता ही है। अतः उक्त हेतु चतुष्टय से नरकभोग करने के लिये जीव समर्थ होता है। इस प्रकार से यह टीका का भाव लिखा गया है ॥ सू. १३२ ॥

વિશ્વાસ રાખો જો જીવ અને શરીરમા ભિન્નતા ન હોત તો પૂર્વોકત કારણ ચતુષ્ટયમા નરકભોગ કરે કોણ? કેમકે શરીર તો મનુષ્ય લોકમા જ નષ્ટ થઇ જાય છે, તેના નાશ પછી તદ્ભિન્ન જીવ પણ નષ્ટ થઇ જ જશે જ પરંતુ જ્યારે શરીર કરતાં ભિન્ન જીવને માનવામા આવે છે તો શરીરના વિનાશ પછી પણ જીવનો સદ્ભાવ રહેજ છે ઉકત હેતુ ચતુષ્ટયથી નરકભોગ માટે જીવ સમર્થ હોય છે. આ પ્રમાણે આ ટીકા નો ભાવ લખવામા આવ્યો છે. ॥સૂ. ૧૩૨॥

रामि । तए णं अहं सुबहु पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे काल किच्चा देवलोएसु उववण्णा, त तुमंपि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि, तएणं तुमपि एवं चेव सुबहु पुण्णोवचय समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि, त जइ णं अज्जया मम आगतु एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अण्णो जीवो अण्ण सरीर, णो त जीवो त सरीर, जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतु णो एव वयासी तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा। जहा त जीवो त सरीर नो अन्नो जीवो अन्न सरीर ॥ सू० १३२ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञातउपमा, अनेन पुनः कारणेन नो उपागच्छति,

---

'तएण से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) उस प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से इस प्रकार कहा—(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ) हे भदन्त ! जीव और शरीर को भिन्न प्रकट करने में मेरे आर्यक–(पितामह) इस कारण से नहीं आते हैं' यहां तक के सन्दर्भ से जो आपने उपमा दी है, सो यह उपमा प्रज्ञात-दृष्टान्त है। यह वास्तविकी उपमा नहीं है) तो भी मैं यह मान लेता हूं कि मेरे पितामह–आर्यक आपके द्वारा प्रदर्शित कारणों की वजह से यहां नहीं आते हैं–सो भले न आवे परन्तु (एवं खलु भंते !

'त एवं से पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યાર પછી (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) તે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું–अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ) હે ભદંત ! જીવ અને શરીરને ભિન્ન પ્રકટ કરવામાં "મારા આર્યક (પિતામહ) આ કારણને લીધે આવતા નથી અહીં સુધીના સંદર્ભ લગી જે કંઈ પણ તમે ઉપમા રૂપમાં કહ્યું છે તો તે ઉપમા પ્રજ્ઞપ્ત–દૃષ્ટાન્ત છે આ વાસ્તવિકી ઉપમા નથી, છતાં એ હું તમારી આ વાત સ્વીકારી લઉં કે મારા પિતામહ આર્યક તમારા વડે પ્રદર્શિત કારણોને લીધે જ અહીં આવી શકતા નથી તો તેઓ ભલે ન આવે. પરંતુ (एवं खलु भंते !

एवं खलु भदंत ! मम आर्यिकाऽभवत्, इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावद् वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका अभिगतजीवा० सर्वो वर्णकः यावद् आत्मानं भावयन्ती विहरति, सा खलु तव वक्तव्यतया सुबहु पुण्योपचयं समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु देवलोकेषु देवतयोपपन्ना, तस्याः खलु आर्यिकायाः अहं नप्तृकोऽभवम्, इष्टः कान्तः यावद् दर्शनतया, तद् यदि खलु साऽऽर्यिका मम आगत्य एवं वदेत्-एवं खलु नप्तृक ! अहं

मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगय जीवा० सव्वओ वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ) हे भदन्त ! मेरी जो आर्यिका-(दादी) हुई है, वह तो इस श्वेताविका नगरी में धार्मिकथी यावत् धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा चलाती थी, श्रमणोपासिका थी, जीवअजीव तत्त्व के स्वरूप को जानती थी, इत्यादि सर्व वर्णन यहां पर करना चाहिये. यावत् वह आत्मा को भवित करती हुई अपने समय को व्यतीत करती थी (सा णं तुज्झ वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना) वह आपके कथनानुसार बहुत अधिक पुण्य का उपचय करके कालमास में काल कर देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुए है। (तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था) में उसका पौत्र हुआ हू (इट्ठे कंते जाव पासणयाए) मैं उसके लिये इष्टअभिलषित. कान्त था यावत् दर्शन के लिये भी दुर्लभ था.

मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगयजीवा० सव्वओ वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ) हे भदंत ! मारा जे आर्यिका (दादी) थया छे ते तो आ श्वेतांबिका नगरीमां धार्मिक हता यावत् धर्मनु आचरणु करीने पोतानुं जीवन पसार कर्युं हतुं. तेओ श्रमणोपासिका हता, जीव अजीवतत्त्वना स्वरूपने जाणुता हता. वगेरे बधुं वर्णुन अहीं समजी लेवुं जोइए. तेओ पोताना आत्माने भावित करता पोतानो समय पसार करता हता. (सा णं तुज्झ वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयसमज्जिणित्ता कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना) तेओ आपना कथन मुजब खूबज पुण्य सचय करीने काल मासमां काल करीने देवलोकमांथी कोइ एक देवलोकमां देवनी पर्यायमां जन्म पाम्या छे. (तीसे णं अज्जियाए अह न ए होत्था) तेमनो हुं पौत्र थयो छु (इट्ठे कंते जाव पासणयाए) हुं तेमना माटे इष्ट, अभिलषित, कांत हतो यावत् दर्शन माटे पण

रामि । तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे काल किच्चा देवलोएसु उववण्णा, त तुमंपि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि, तएणं तुमपि एवं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि, तं जइ णं अज्जया मम आगंतु एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अण्णो जीवो अण्ण सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं, जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतु णो एवं वयासी तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं सरीरं नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ॥ सू० १३२ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञातोपमाः, अनेन पुनः कारणेन नो उपागच्छति,

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) उस प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से इस प्रकार कहा—(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ) हे भदन्त ! जीव और शरीर को भिन्न प्रकट करने में 'मेरे आर्यक—(पितामह) इस कारण से नहीं आते हैं' यहां तक के सन्दर्भ से जो आपने उपमा दी है, सो यह उपमा प्रज्ञात-दृष्टान्त है। यह वास्तविकी उपमा नहीं है) तो भी मैं यह मान लेता हूं कि मेरे पितामह—आर्यक आपके द्वारा प्रदर्शित कारणों की वजह से यहां नहीं आते हैं—सो भले न आवें परन्तु (एवं खलु भंते !

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યાર પછી (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) તે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું—(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ) હે ભદન્ત ! જીવ અને શરીરને ભિન્ન પ્રકટ કરવામાં મારા આર્યક (પિતામહ) આ કારણને લીધે આવતા નથી' અહીં સુધીના સંદર્ભ લગી જે કંઈ પણ તમે ઉપમા રૂપમાં કહ્યું છે તો તે ઉપમા પ્રજ્ઞાત-દૃષ્ટાન્ત છે આ વાસ્તવિકી ઉપમા નથી, છતાં એ હું તમારી આ વાત સ્વીકારી લઉં કે મારા પિતામહ આર્યક તમારા વડે પ્રદર્શિત કારણોને લીધે જ અહીં આવી શકતા નથી તો ભલે ન આવે. પરંતુ (एवं खलु भंते !

एवं खलु भदंत ! मम आर्यिकाऽभवत्, इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावद् वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका अभिगतजीवा० सर्वो वर्णकः यावद् आत्मानं भावयन्ती विहरति, सा खलु तव वक्तव्यतया सुबहु पुण्योपचयं समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु देवलोकेषु देवतयोपपन्ना, तस्याः खलु आर्यिकायाः अहं नप्तृकोऽभवम्, इष्टः कान्तः यावद् दर्शनतया, तद् यदि खलु साऽऽर्यिका मम आगत्य एवं वदेत्-एवं खलु नप्तृक ! अहं

मम अज्जिया होत्था इहेव सेयंवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्ति कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगय जीवा० सव्वओ वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ) हे भदन्त ! मेरी जो आर्यिका-(दादी) हुई है, वह तो इस श्वेताम्बिका नगरी में धार्मिकथी यावत् धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा चलाती थी, श्रमणोपासिका थी, जीवअजीव तत्त्व के स्वरूप को जानती थी, इत्यादि सर्व वर्णन यहां पर करना चाहिये. यावत् वह आत्मा को भवित करती हुई अपने समय को व्यतीत करती थी (सा णं तुज्झ वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना) वह आपके कथनानुसार बहुत अधिक पुण्य का उपचय करके कालमास में काल कर देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुए है। (तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था) में उसका पौत्र हुआ हू (इट्ठे कंते जाव पासणयाए) मैं उसके लिये इष्टअभिलषित. कान्त था यावत् दर्शन के लिये भी दुर्लभ था.

मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगयजीवा० सव्वओ वण्णओ जाव अप्पाण भावेमाणी विहरइ) હે ભદંત ! મારા જે આર્યિકા (દાદી) થયા છે તે તો આ શ્વેતાબિકા નગરીમા ધાર્મિક હતા યાવત્ ધર્મનુ આચરણ કરીને પોતાનું જીવન પસાર કર્યું હતું. તેઓ શ્રમણોપાસિકા હતા, જીવ અજીવતત્ત્વના સ્વરૂપને જાણતા હતા વગેરે બધું વર્ણન અહીં સમજી લેવુ જોઈએ. તેઓ પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા પોતાનો સમય પસાર કરતા હતા (सा णं तुज्झ वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना) તેઓ આપના કથન મુજબ ખૂબજ પુણ્ય સચય કરીને કાલ માસમા કાલ કરીને દેવલોકમાથી કોઇ એક દેવલોકમા દેવની પર્યાયમા જન્મ પામ્યા છે. (तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था) તેમનો હું પૌત્ર થયો છુ (इट्ठे कंते जाव पासणयाए) હું તેમના માટે ઇષ્ટ, અભિલષિત, કાંત હતો યાવત્ દર્શન માટે પણ

तत्र आर्थिकाऽभवम्, इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावत् वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका यावत् विहरामि। ततः खलु अहं सुबहु पुण्यो पचय समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा देवलोकेषु उपपन्ना, तत् त्वमपि नप्तृक! भव धार्मिकः यावत् विहर, ततः खलु त्वमपि एवमेव सुबहु

(तं अइ णं सा अज्जिया मम आगतु एवं वएज्जा) यह यदि आर्यिका (दादी) मुझ से आकरके ऐसा कहे (एवं खलु नत्तुया! अहं तव अज्जया होत्था इहेव सेयविधाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि) हे पौत्र! मैं तुम्हारी दादी थी इसी श्वेतांबिका नगरी में मैं धार्मिक जीवन व्यतीत करती हुई यावत् अपनी जीवनयात्रा चलाती थी जीव अजीव तत्त्व के स्वरूप को ज्ञाता थी, तथा तप और संयम से अपनी आत्माको भावित करती हुई अपने समय को व्यतीत किया करती थी (तए णं अहं सुबहु पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा, देवलोएसु उववण्णा) इस तरह मैंने बहुत अधिक पुण्य का संचय किया और संचय करके जब मैं मरण के अवसर पर मरी तो देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई हूँ (तं तुमं पि नत्तुया! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि) इसलिये हे पौत्र! तुम भी धार्मिक जीवन व्यतीत करो और धर्मानुग आदि विशेषणों वाले बनो! तथा धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा करते हुए यावत् श्रमणोपासक

દુર્લભ હતો. (तं अइ णं सा अज्जिया मम आगतु एवं वएज्जा) તે આર્યિકા (દાદી) મને આવીને આમ કહે કે (एवं खलु नत्तुया! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयराए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि) હે પૌત્ર! હું તમારી પિતામહી હતી. આ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં ધાર્મિક જીવન પસાર કરતી યાવત્ પોતાની જીવનયાત્રા ખેડતી હતી. હું શ્રમણોપાસિકા હતી, જીવ અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને જાણતી હતી તેમજ તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતી પોતાનો સમય પસાર કરતી હતી. (तए णं अहं सुबहु पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववण्णा) આ રીતે મેં ઘણા પુણ્યનો સંચય કર્યો અને સંચય કરીને જ્યારે હું મરણ કાળે મરી ત્યારે દેવલોકોમાંથી કોઈ એક દેવલોકમાં દેવની પર્યાય જન્મ પામી છું (तं तुमं पि नत्तुया! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि) એથી જ હે પૌત્ર! તમે પણ ધાર્મિક જીવન પસાર કરો અને ધર્માનુગ વગેરે વિશેષણોથી સંપન્ન બનો તેમજ ધર્મથી જ પોતાની જીવનયાત્રા આગળ ધપાવતા યાવત્

पुण्योपचयं समर्ज्य यावद् उपपत्स्यसे, तद् यदि खलु आर्यिका मम आगत्य एवं वदेत्, तदा खलु अहं श्रद्दध्याम् प्रतीयां रोचयेयं यथा-अन्यो जीवः, अन्यच्छरीरम्, नो तज्जीवस्तच्छरीरम्। यस्मात् साऽऽर्यिका ममाऽऽगत्य नो एवमवादीत्, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः सच्छरीरम्, नो अन्यो जीवः, अन्यच्छरीरम् ॥सू० १३३॥

बनो. (तए णं तुमंपि एवं चेव सुबहु पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि) इस तरह करके तुम भी मेरी ही तरह से पुण्य का उपचय करके यावत् देवलोक में किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हो जाओगे. (तं जइणं अज्जिया मम आगंतु एवं वएज्जा, तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोएज्जा. जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) इस तरह से हे भदन्त! वह आर्यिका आकर के मुझ से ऐसा कहे तो मैं तुम्हारे इस कथन पर कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है तथा-जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है विश्वास कर सकता हूं प्रतीति कर सकता हूं और उसे अपनी रुचि का विषय बना सकता हूं। (जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतुं णो एवं वयासी-तम्हा सुपइट्ठिया-मे पइण्णा-जहा तं जीवो अन्नं सरीरं) परन्तु जिस कारण से वह आर्यिका मुझ से आकर के ऐसा कहती नहीं है, अतः इस कारण से मेरा-यह मन्तव्य है कि जीव है वही शरीर है जीव शरीर से भिन्न नहीं है और शरीर जीव से भिन्न नहीं है सुस्थिर है अर्थात् सत्य है।

શ્રમણોપાસક થાઓ (तए णं तुमंपि एवं चेव सुबहु पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि) આ પ્રમાણે તમે પણ મારી જેમજ પુણ્યોપચય દેવની પર્યાયથી જન્મ પામશો. (तं जइणं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा. पत्तिएज्जा, जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) આ પ્રમાણે હે ભદંત! તે આર્યિકા આવીને મને આમ કહે તો હું તમારા આ કથન પર કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે તેમજ જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી-વિશ્વાસ કરી શકું છું પ્રતીતિ કરી શકું છું અને તેને પોતાની રુચિને ગમતો વિષય બનાવી શકું છું. (जम्हा सा अज्जिया मम आगंतुं णो एवं वयासी-तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा-जहा तं जीवो तं सरीरं नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) પરંતુ જે કારણને લીધે તે આર્યિકા મને આવીને આ પ્રમાણે કહેતા નથી તે કારણથી જ મારું આ જાતનું મન્તવ્ય છે કે જે જીવ છે તે જ શરીર છે જીવ શરીરથી ભિન્ન નથી અને શરીર જીવથી ભિન્ન નથી આ વાત સુસ્થિર છે.

तव आर्यिकाऽभवम्, इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावत् वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका यावद् विहरामि । ततः खलु अहं सुबहु पुण्योपचय समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा देवलोकेषु उत्पन्ना, तत् त्वमपि नप्तृक ! भव धार्मिकः यावद् विहर, ततः खलु त्वमपि एवमेव सुबहु

(तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतु एवं वएज्जा) वह यदि आर्यिका (दादी) मुझ से आकरके ऐसा कहे (एवं खलु नत्तुया! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि) हे पौत्र! मैं तुम्हारी दादी थी इसी श्वेतांबिका नगरी में मैं धार्मिक जीवन व्यतीत करती हुई यावत् अपनी जीवनयात्रा चलाती थी जीव अजीव तत्त्व के स्वरूप को जानती थी, तथा तप और संयम से अपनी आत्माको भावित करती हुई अपने समय को व्यतीत किया करती थी (तए णं अहं सुबहु पुण्णोवचय समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा, देवलोएसु उववण्णा) इस तरह मैंने बहुत अधिक पुण्य का संचय किया और संचय करके जब मैं मरण के अवसर पर मरी तो देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई हूँ (तं तुमं पि नत्तुया! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि) इसलिये हे पौत्र! तुम भी धार्मिक जीवन व्यतीत करो और धर्मानुग आदि विशेषणों वाले बनो। तथा धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा करते हुए यावत् श्रमणोपासक

દુર્લભ હતો. (तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतु एवं वएज्जा) તે આર્યિકા (દાદી) મને આવીને આમ કહે કે (एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयराए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि) હે પૌત્ર ! હું તમારી પિતામહી હતી એજ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં ધાર્મિક જીવન પસાર કરતી યાવત્ પોતાની જીવનયાત્રા ખેડતી હતી. હું શ્રમણોપાસિકા હતી, જીવ અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને જાણતી હતી તેમજ તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતી પોતાનો સમય પસાર કરતી હતી. (तए णं अहं सुबहु पुण्णोवचय समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववण्णा) આ રીતે મેં ઘણા પુણ્યનો સંચય કર્યો અને સંચય કરીને જ્યારે હું મરણ કાળે મરી ત્યારે દેવલોકોમાંથી કોઈ એક દેવલોકમાં દેવની પર્યાય જન્મ પામી છું (तं तुमं पि नत्तुया ! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि) એથી જ હે પૌત્ર ! તમે પણ ધાર્મિક જીવન પસાર કરો અને ધર્માનુગ વગેરે વિશેષણોથી સંપન્ન બનો તેમજ ધર્મથી જ પોતાની જીવનયાત્રા આગળ ધપાવતા યાવત્

दर्शिनी, धर्मप्ररञ्जना=धर्मानुरागिणी, धर्मसमुदाचारा=धार्मिकसदाचारसंपन्ना, धर्मेणैव=जिनोक्तधर्मेणैव वृत्तिं=जीवनयात्रां, कल्पयमाना कुर्वाणा, पुनः सा कीदृशी ? इति जिज्ञासायामाह–"अभिगतजीवाऽजीवे"–त्यादि-सर्वः वर्णकः–वर्णनकारकपदसमूहो बोध्यः, यावद् आत्मानं भावयमाना व्यहरत। अत्रत्य यावत्पदेन–'अभिगतजीवाजीवा' इत्यादि सर्वोऽपि पाठश्चतुर्दशाधिकैक-शततमसूत्रतः स्त्रीत्वनिर्देशेन बोध्यः। अर्थोऽपि तत्रत एव विज्ञेयः। सा=अनन्तरोक्ता आर्यिका पितामही खलु तव वक्तव्यतया तवमतेन सुबहुम्–अतिप्रचुरं, पुण्योपचयं–पुण्यकर्मसमूहं समर्ज्य समुपार्ज्य कालमासे कालं

प्रलोकिनी थी, धर्मप्ररञ्जना–धर्मानुरागवाली थी, धर्मसमुदाचारा–धार्मिक सदाचार से संपन्न थी. और जिनोक्तधर्म से ही अपनी जीवनयात्रा करने वाली थी. तथा जीव और अजीव तत्त्व के स्वरूप की ज्ञाता थी. अभि-गतजीवाजीवा' इत्यादिरूप से वर्णन करने वाला पदसमूह और यहा यावत्पद से गृहीत पदसमूह ११४ वे सूत्र मे वर्णित हुआ है, सो उसे यहा स्त्रीलिङ्ग की विभक्ति लगाकर ग्रहण कर कहना चाहिये तथा इन पदों का अर्थ भी वहां से जानना चाहिये. ऐसी वह आर्यिका–पितामही–दादी आपके मन्तव्यानुसार अतिप्रचुर पुण्य का उपचय करके कालमास मे जब मरी तब वह अनेकविध देवलोकों में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई है. उस आर्यिका का मैं पौत्र हूं, जो धर्म उसको बहुत अधिक इष्ट यावत् कान्त था. यावत् पदसे वहां १३२ वे सूत्र में प्रोक्त इस विषय के विशेषणगृहीत हुए हैं। ये विशेषण वहां उसके पितामह के प्रकरण दिये गये है।

देश करनारा हता, धर्मप्रलोकिनी–धर्मदर्शिना हता, धर्मप्ररंजना–धर्मानुरागवाळा हता. धर्मसमुदाचारा–धार्मिक सदाचार संपन्न हता अने जिनोक्त धर्म प्रमाणे ज पोतानु जीवन पसार करता ह। तेमज जीव अने अजीव तत्त्वना स्वरूपने जाणुनारा हता 'अभिगत जीवाजीवा' जीव अने अने अजीव वगेरे रूपमा वर्णन करनार पद समूह अने अही यावत्पदथी गृहीत पद समूह ११४मा सुत्रमां वर्णित थयेल छे. अही तेने स्त्रीलिंगनी विभकित लगाडीने अर्थ करवो जोइए तेमज आ पदोनो अर्थ पण त्याथी ज जाणी लेवो जोइए. एवी ते आर्यिका दादी तमारा मन्तव्य मुजब अति-प्रचुर पुण्यनो संचय करीने कालमासमां ज्यारे मरण पाम्या त्यारे ते घणा देवलोकोमा देवनी पर्यायथी जन्म पाम्या छे. ते आर्यिकानो हुं पौत्र छुं तेमने धर्म खूबज इष्ट यावत् कान्त हतो यावत पदथी अही १३२मा सुत्रमा प्रोकत आ विषयना विशेषणो गृहीत थया आ विशेषणो त्या तेना दादाना प्रकरणमा

टीका—'तएण से पएसी' इत्यादि–

ततः–तदनन्तरं, स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्, एवम्–अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम्, अवादीत्–हे भदन्त! जीवशरीरयोर्भेदे अनेन पुनः कारणेन नो उपागच्छति)–इत्यन्तसन्दर्भेण या उपमा भवता दत्ता, एषा खलु प्रज्ञातः–बुद्धिविशेषात्–बुद्धिविशेषजन्या उपमा–दृष्टान्त अस्ति, नत्वियं वास्तविकी उपमाऽस्ति, तथापि मन्ये यन्मत्पितामहो भवदुक्तकारणैर्नागच्छतीति। परन्तु हे भदन्त! मम आर्यिका–पितामही खलु एवं–वक्ष्यमाणप्रकारा अभवत्–आसीदिति जिज्ञासायामाह–इहैवेत्यादि इहैव अस्यामेव श्वेताम्बिकायां नगर्याम्। सा कीदृशी? इत्यत्राह–धार्मिकीत्यादि–धार्मिकी–धर्माचरणशीला, यावत्–यावत्पदेन "धर्मानुगा, धर्मिष्ठा धर्माख्यायिनी धर्मप्रलोकिनी धर्मप्ररञ्जना धर्मसमुदाचारा धर्मेणैव" इत्येषां संग्रहः, तत्र–धर्मानुगा धर्मम् अनुगच्छति अनुसरति या सा तथा, धर्मिष्ठा=धर्मप्रिया धर्माख्यायिनी=धर्मप्रतिपादिका, धर्मप्रलोकिनी=धर्म

टीकार्थ—इसके बाद प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा–हे भदन्त! जीव और शरीर को भिन्न प्रदर्शित करने के निमित्त जो आपने उपमा दी है वह तो केवल आपकी बुद्धि से जन्य एक दृष्टान्त मात्र है यह उपमा–दृष्टान्त सत्यार्थकोटि में नहीं आ सकती है। फिर भी आपके कथनानुसार यह मान लेता हूं कि मेरे आर्यक प्रदर्शित चार कारणों के कारण यहां नहीं आ सकते हैं। सो वे न आवे–परन्तु मेरी जो दादी थी–जो कि इसी श्वेताम्बिका नगरी में रहती थी, और धार्मिक–धर्माचरण शील थी यावत् जो धर्मानुगधर्म का अनुसरण करने वाली थी, धर्मिष्ठा–धर्म प्रिया थी, धर्माख्यायिनी–धर्म का उपदेश देनेवाली थी, धर्म

ટીકાર્થ—ત્યારપછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત! જીવ અને શરીરની ભિન્નતા પ્રદર્શિત કરવા જે તમે ઉપમા આપી છે તે તો ફક્ત તમારી બુદ્ધિથી કલ્પિત કરેલ એક દૃષ્ટાંત માત્ર જ છે. એથી તમારી આ ઉપમા દૃષ્ટાન્ત–સત્યાર્થ કોટિમાં આવી શકે તેમ નથી છતાંએ તમારા કથા મુજબ આ વાત માની લઉં છું કે મારા આર્યક તમે કહેલા ચાર કારણોને લીધે અહીં આવી શકતા નથી તો ભલે તે ન આવે પરંતુ મારા જે દાદી હતા–કે જેઓ આ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં રહેતા હતા, અને ધાર્મિક–ધર્માચરણશીલ હતા યાવત્ જે ધર્માનુગા–ધર્મને અનુસરનારા હતા, ધર્મિષ્ઠા–ધર્મ પ્રિય હતા, ધર્માખ્યાયિની–ધર્મનો ઉપ

दर्शिनी, धर्मप्ररञ्जना=धर्मानुरागिणी, धर्मसमुदाचारा=धार्मिकसदाचारसंपन्ना, धर्मेणैव=जिनोक्तधर्मेणैव वृत्तिं=जीवनयात्रां, कल्पयमाना कुर्वाणा, पुनःसा कीदृशी ? इति जिज्ञासायामाह–"अभिगतजीवाऽजीवे"–त्यादि-सर्वः वर्णकः–वर्णनकारकपदसमूहो बोध्यः, यावद् आत्मानं भावयमाना व्यहरत। अत्रत्य यावत्पदेन–'अभिगतजीवाजीवा' इत्यादि सर्वोऽपि पाठश्चतुर्दशाधिकैक-शततमसूत्रतः स्त्रीत्वनिर्देशेन बोध्यः। अर्थोऽपि तत्रत एव विज्ञेयः। सा=अनन्तरोक्ता आर्यिका पितामही खलु तव वक्तव्यतया तवमतेन सुबहुम्–अतिप्रचुरं, पुण्योपचयं–पुण्यकर्मसमूहं समर्ज्य समुपार्ज्य कालमासे कालं

प्रलोकिनी थी, धर्मप्ररञ्जना–धर्मानुरागवाली थी, धर्मसमुदाचारा–धार्मिक सदाचार से संपन्न थी. और जिनोक्तधर्म से ही अपनी जीवनयात्रा करने वाली थी. तथा जीव और अजीव तत्त्व के स्वरूप की ज्ञाता थी. अभि-गतजीवाजीवा' इत्यादिरूप से वर्णन करने वाला पदसमूह और यहां यावत्पद से गृहीत पदसमूह ११४ वे सूत्र में वर्णित हुआ है, सो उसे यहां स्त्रीलिङ्ग की विभक्ति लगाकर ग्रहण कर कहना चाहिये तथा इन पदों का अर्थ भी वहां से जानना चाहिये. ऐसी वह आर्यिका–पितामही–दादी आपके मन्तव्यानुसार अतिप्रचुर पुण्य का उपचय करके कालमास मे जब मरी तब वह अनेकविध देवलोकों में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई है. उस आर्यिका का मै पौत्र हूं, जो धर्म उसको बहुत अधिक इष्ट यावत् कान्त था. यावत् पदसे वहां १३२ वे सूत्र में प्रोक्त इस विषय के विशेषणगृहीत हुए हैं। ये विशेषण वहां उसके पितामह के प्रकरण दिये गये है।

દેશ કરનારા હતા, ધર્મપ્રલોકિની–ધર્મદર્શિના હતા, ધર્મપ્રરજના–ધર્માનુરાગવાળા હતા. ધર્મસમુદાચારા–ધાર્મિક સદાચાર સપન્ન હતા અને જિનોકત ધર્મ પ્રમાણે જ પોતાનુ જીવન પસાર કરતા હ। તેમજ જીવ અને અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને જાણનારા હતા 'અભિગત જીવાજીવા' જીવ અને અને અજીવ વગેરે રૂપમા વર્ણન કરનાર પદ સમૂહ અને અહીં યાવત્પદથી ગૃહીત પદ સમૂહ ૧૧૪મો સૂત્રમા વર્ણિત થયેલ છે. અહીં તેને સ્રીલિંગની વિભકિત લગાડીને અર્થ કરવો જોઇએ તેમજ આ પદોનો અર્થ પણ ત્યાથી જ જાણી લેવો જોઇએ. એવી તે આર્યિકા દાદી તમારા મન્તવ્ય મુજબ અતિ-પ્રચુર પુણ્યનો સંચય કરીને કાલમાસમા જ્યારે મરણ પામ્યા ત્યારે તે ઘણા દેવલોકોમા દેવની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા છે. તે આર્યિકાનો હું પૌત્ર છું તેમને ધર્મ ખૂબજ ઇષ્ટ યાવત્ કાન્ત હતો યાવત પદથી અહીં ૧૩૨મા સૂત્રમા પ્રોકત આ વિષયના વિશેષણો ગૃહીત થયા આ ... ત્યા તેના દાદાના પ્રકરણ

कृत्वा अन्यतरेषु अनेकविधेषु देवलोकेषु कस्मिंश्चित् एकस्मिन् देवलोके देवतया देवत्वेन उपपन्ना, तस्याः खलु आर्यिकायाः अहं नप्तृका-पौत्र अभवम् कीदृशः? इत्याहऽऽह-इष्टः कान्तः यावत्-दर्शनतया अत्र यावत्पदेन द्वाविंशतुत्तर शतैकतमसूत्रे एवस्थितानामवयवकास्यकास्य? सर्वोऽपि पाठः समग्राह्यः। व्या ख्यापि तत्रैव विलोकनीया।

तत्-तस्मात् यदि खलु मा-पूर्वोक्ता आर्यिका मम आगत्य एवम्-अनुवक्ष्यमाण वचनं, वदेत्-कथयेत्-नप्तृक! हे पौत्र! एवं खलु-वक्ष्यमाणप्रकारक शृणु-अहं तव आर्यिकाऽभवम् इह! इत्यत्राऽऽह-इहैव-अस्यामेव श्वेताम्बिकायां नगर्यां धार्मिकी, याव-धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका=श्राविका यावत्-व्यहरम्। ततः-तस्मात्कारणात् सुबहु-मधुरतर पुण्योपचय समर्जय कालमासे कालं कृत्वा देवलोकेषु उपपन्ना, तत् -तस्मात्कारणात् नप्तृक!-हे पौत्र! त्वमपि धार्मिकी यावत्-धर्मानुगादि विशेषणविशिष्टो भव, तथा धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयमानः अभिगत जीवाजीवादि विज्ञानविशिष्टः श्रावको भूत्वा विहर। तत -तादृशाचरणेन खलु त्वमपि

जीत यहाँ से इन्हें और इनके अर्थ को जानना चाहिये ऐसी वह मेरी आर्यिका-दादी आकरके मुझ से ऐसा यदि कहे कि हे नप्तृक-पौत्र! मैं इसी श्वेताम्बिका नगरी में तेरी दादी थी और धार्मिक यावत् धर्म से ही अपनी जीवन यात्रा चलानेवाली थी श्रमणोपासिका-श्राविका थी इत्यादि सो मैं मधुरतर पुण्य का उपार्जन कर कालमास में जब मरण किया-तो मैं देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई हूँ इसलिये हे पौत्र! तुम भी धार्मिक यावत् धर्मानुग आदि विशेषणों वाले बनो, सदा धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा का निर्वाह करते हुए जीव और अजीव तत्त्व के स्वरूप के ज्ञाता बनो और इसके बाद में श्रावक बन

आपेला छे तेथी जिज्ञासुओओए त्यांथी ज जाणी लेवा जोईए, एवा मारा आर्यिका दादी आवीने मने जो आ प्रमाणे कहे के हे पौत्र! हुं आ श्वेतांबिका नगरीमां तारी दादी हती अने धार्मिक यावत् धर्माचरणथी ज पोतानी जीवनयात्रा चलावती हती हुं श्रमणोपासिका-श्राविका हती वगेरे मधुरतर पुण्यनुं उपार्जन करीने कालमासमां ज्यारे मृत्यु पामी त्यारे देवलोकमांथी कोई एक देवलोकमां देवनी पर्यायथी जन्म पामी छुं तेथी हे पौत्र! तमे पण धार्मिक यावत् धर्मानुग वगेरे विशेषणो वाळा तेमज धर्मथी ज पोतानुं जीवन चलावता जीव अने अजीव तत्त्वना स्वरूपने जाणनारा थाओ अने त्यार बाद श्रावक थईने पोताना जीवनने सफळ बनाववा जो तमे आ प्रमाणे धार्मिक आचरणयुक्त अन्तःकरणवाळा थाओ तो तमे

एवमेव अहमिव सुबहुं प्रचुरतरं पुण्योपचयं समर्ज्य यावत्-यावत्पदेन कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु अनेकविधेषु देवलोकेषु कस्मिंश्चिद्देवलोके उपपत्स्य-से-उत्पन्नो भविष्यसि, तत्-त माद् हेतोः यदि खलु आर्यिका मम आगत्य एव वदेत् तदा खलु अह श्रद्धया-तद्वचने विश्वस्याम्, प्रतीया-विशेषतो विश्वासं कुर्याम्, रोचयेदं-रुचिविषयं कुर्याम् यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, ना तज्जीवःस्सशरीरम्, इति। यस्मात्-कारणात् सा-पूर्वोक्ता आर्यिका मम आगत्य एवम् अनन्तरोक्तप्रकारम् वचन नो न अवादीत-नाकथयत् तस्मात्-कारणात् मे-मम प्रतिज्ञा-स्वीकारः सुप्रतिष्ठिता-सत्याऽस्ति, प्रतिज्ञाविषयमाह यथेत्यादि-यथा-तथाहि तज्जीवःस्सशरीरम्, नो अन्यो जीवः, अन्यच्छरीरम्, इति ॥सू० १३३॥

कर अपने जीवन को सफल करो, यदि तुम इस प्रकार के धार्मिक आचरण से वासितान्तःकरणवाले हो जाते तो तुम मेरे जैसे ही प्रचुरतर पुण्य का उपार्जन करके यावत्-कालमास में कालकर अनेकविध देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देवकी पर्याय से उत्पन्न हो जाओगे. इस प्रकार से मेरी आर्यिका-दादी मेरे पास आकर ऐसा कहे तो मैं आपके इस वचन पर विश्वास करूं, प्रतीति-विशेषरूप से विश्वास करूं, उस पर रुचि करूं, कि जीव भिन्न है, शरीर भिन्न है, वह शरीर जीवरूप नहीं है, और जीव शरीररूप नहीं है-परन्तु जिस कारण से वह अभीतक मुझ से आकर के ऐसा नही कहती है. इसी कारण से हे भदन्त! मैं अपनी इस मन्तव्य पर कि 'जीव और शरीर एक ह जीव भिन्न नहीं है और शरीर भिन्न नहीं है' अटल हू, उसे सत्य मान रहा हूं ॥ सू० १३३॥

પણ મારી જેમ જ પ્રચુરતર પુણ્યોનું ઉપાર્જન કરીને યાવત્ કાલમાસમા કાલ કરીને અનેકવિધ દેવલોકોમાંથી કોઇ પણ એક દેવલોકમા દેવના પર્યાયથી જન્મ પામશો. આ પ્રમાણે જો મારા આર્યિકા-દાદી મારી પાસે આવીને આમ કહે તો હું તમારી પર વિશ્વાસ કરુ, પ્રતીતિ-વિશેષરૂપથી વિશ્વાસ કરું, તેમા રુચિ ઉત્પન્ન કરૂં કે જીવ ભિન્ન છે, શરીર ભિન્ન છે, અને શરીર જીવરૂપ નથી અને જીવ શરીરરૂપ નથી, પરતુ જે કારણને લીધે હજી સુધા તેઓ મારી પાસે આવીને મને કહેતા નથી તે કારણને લીધે હે ભદંત! મારા આ વિચાર પર કે જીવ અને શરીર એકજ છે જીવ ભિન્ન નથી, અને શરીર ભિન્ન નથી. દઢ છું, તેને જ સત્ય માનીને વળગી રહું છું ॥ સૂ. ૧૩૩ ॥

कृत्वा अन्यतरेषु अनेकविधेषु देवलोकेषु कस्मिंश्चिद् देवलोके देवतया देवत्वेन उपपन्ना, तस्याः खलु आर्यिकायाः अहं नप्तृकः-पौत्र अभवम् कीदृशः? इत्याह-इष्टः कान्तः यावत्-दर्शनतया अत्र यावत्पदेन प्राग्विदुत्तर शतैकतमसूत्रे प्रदेशिपितामहवर्णक-यथारूपः सर्वोऽपि पाठः समाख्यातः। व्याख्यापि तत्रैव विलोकनीया।

तत्-तस्मात् यदि खलु सा-पूर्वोक्ता आर्यिका मम आगत्य-एवम्-अनुपद वक्ष्यमाण वचन, वदेत्-कथयेत्-नप्तृक! हे पौत्र! एवं खलु-वक्ष्यमाणप्रकारक शृणु-अहं तव आर्यिकाऽभवम् इह! इत्यत्राऽऽह-इहैव-अस्यामेव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी, यावत्-धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका=श्राविका यावत्-व्यहरम्। ततः-तस्मात्कारणात् सुबहु-मधुरतर पुण्योपचय समर्प्य कालमासे कालं कृत्वा देवलोकेषु उपपन्ना, त-तस्मात्कारणात् नप्तृक!-हे पौत्र! त्वमपि धार्मिको यावत्-धर्मानुगादि विशेषणविशिष्टो भव, तथा धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयमानः अभिगत जीवाजीवादि विशेषणविशिष्टः श्रावको भूत्वा विहर। तत-तदाचरणेन खलु त्वमपि

अत यहीं से इन्हें और इनके अर्थ को जानना चाहिये ऐसी वह मेरी आर्यिका-दादी आकरके मुझ से ऐसा यदि कहे कि हे नप्तृक-पौत्र! मैं इसी श्वेताम्बिका नगरी में तेरी दादी थी और धार्मिक यावत् धर्म से ही अपनी जीवन यात्रा चलानेवाली थी श्रमणोपासिका-श्राविका थी इत्यादि मैंने मधुरतर पुण्य का उपार्जन कर कालमास में जब मरण किया-तो मैं देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई हूं इसलिये हे पौत्र! तुम भी धार्मिक यावत् धर्मानुग आदि विशेषणों वाले बनो, सदा धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा का निर्वाह करते हुए जीव और अजीव तत्त्व के स्वरूप के ज्ञाता बनो। और सच्चे मन में श्रावक बन

આવેલ છે તેથી જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી જ જાણી લેવા જોઈએ એવા મારા આર્યિકા દાદી આવીને મને જો આ પ્રમાણે કહે કે હે પૌત્ર! હું આ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં તારી દાદી હતી અને ધાર્મિક યાવત્ ધર્મોપજીવી જ પોતાની જીવનયાત્રા પસાર કરતી હતી. હું શ્રમણોપાસિકા-શ્રાવિકા હતી વગેરે મધુરતર પુણ્યનું ઉપાર્જન કરીને કાલમાસમાં જ્યારે મૃત્યુ પામી ત્યારે દેવલોકમાંથી કોઈ એક દેવલોકમાં દેવની પર્યાયથી જન્મ પામી છું તેથી હે પૌત્ર! તમે પણ ધાર્મિક યાવત્ ધર્માનુગ વગેરે વિશેષણો વાળા તેમજ ધર્મથી જ પોતાનું જીવન પસાર કરતા જીવ અને અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને જાણનારા થાઓ અને સાચા અર્થમાં શ્રાવક થઈને પોતાના જીવનને સફળ બનાવો. જો તમે આ પ્રમાણે ધાર્મિક આચરણયુક્ત અન્તઃકરણવાળા થાઓ તો તમે

अप्पाउया णरा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ।३। अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ, उड्ढंपि य णं जाव चत्तारि पञ्च जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ।४। इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं २ ॥सू० १३४॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् यदि खलु त्वं प्रदेशिन्! स्नातं कृतबलिकर्माणं कृतकौतुकमङ्गल-प्रायश्चित्तम् आर्द्रपटशाटकं भृङ्गारकडुच्छुकहस्तगतं देवकुलमनुप्रविशन्तं कोऽपि पुरुषो

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसी कुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं) प्रदेशी राजा से (एवं वयासी) ऐसा कहा-(जइणं तुमं पएसी! ण्हाय कयबलिकम्मं, कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लपडसाडगं) हे प्रदेशिन! जिस समय तुम कृतस्नान होकर, कृतबलिकर्मा होकर,—वायसादिकों के लिये कृत अन्नविभागवाले होकर, कृत मषीतिलकादि मांगलिक प्रायश्चित्त विधि वाले होकर, जलसिक्तवस्त्रशाटकयुक्त होकर (भिंगारकडुच्छुयहत्थगयं) एवं भृङ्गार कडुच्छुक हस्तगत होकर (देवकुलमणुपविसमाणं)

'तए णं केसी कुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तए णं) त्यारपछी (केसीकुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणे (पएसिं रायं) प्रदेशी राजाने (एवं वयासी) आ प्रमाणे कह्युं (जइणं तुमं पएसी! ण्हायं कयबलिकम्मं, कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लपडसाडगं) हे प्रदेशिन जे वखते तमे स्नान करीने, बलिकर्म—एटले के कागडा वगेरेने अन्न भाग आपीने मषी तिलक वगेरे रूप मांगलिक प्रायश्चित्त विधि पतावीने पाणीवडे पलळेला धोतवस्त्र

मूलम्—तएणं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-जइ णं तुमं पएसी! ण्हाय कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्त उल्लपडसाडग भिगारकडुच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केइ य पुरीसे वच्चघरंसि ठिच्चा एवं वदेज्जा एह ताव सामी! इह मुहुत्तग आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा तुयट्टह वा, तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि? णो इणट्ठे समट्ठे। कम्हा? भंते! असुई असुइसामंते। एवामेव पएसी! तववि अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरइ, सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे जाव किमंगपुण पासणयाए? सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

चऊहिं ठाणेहिं पएसी। अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से णं माणुसे लोगे नो आढाइ नो परिजाणाइ से णं इच्छिज्जा माणुसं नो चेव णं संचाएइ। अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्ने भवइ दिव्वे पेम्मे संकंते भवइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव संचाएइ (२) अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ-इयाणिं गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं तेण कालेणं इट्ठ

वक्तव्यतया सुबहु यावद् उपपन्ना तस्याः खलु आर्यिकायाः त्वं नप्तृकोऽभवः इष्टः यावत् किमङ्ग ! पुनर्दर्शनतया ? सा खलु इच्छइ मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तु, नैव खलु शक्नोति शीघ्रमागन्तुम् ।

चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन ! अधुनोपपन्नो देवो देवलोकेषु इच्छेत मानुष्यं लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति । अधुनोपपन्नो देवो देव

प्रदेशिन ! इस श्वेतांबिका नगरी मे तुम्हारी आर्यिका-दादी भी धार्मिक यावत धर्मानुरागादि विशेषणों से विशिष्ट हुई है (सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे जाव किमंग पुणपासणयाए) वह हमारी वक्तव्यता के अनुसार-मान्यता के अनुसार अतिशय बहुत अधिक पुण्य का उपार्जन करके और कालमास में काल करके देवलोकों मे से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय मे उत्पन्न हो गई है। उस आर्यिका-दादी के तुम पौत्र हुए हो, जो उसे तुम इष्ट कान्त आदि विशेषणों वाले थे, और उदुम्बर पुष्प के समान उसे सुनने के लिये उस समय तुम दुर्लभ थे, फिर तुम्हारे देखने की बात ही क्या कहनी, (सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णोचेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) वह आर्यिका-दादी मनुष्यलोक में आनेकी इच्छा तो करती है, परन्तु आ नहीं सकती है। इसमें चार कारण हैं जो इस प्रकार से हैं-(चउहिं ठाणेहिं पएसी· अहुणोववन्नए देवे देव लोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ)

બિકા નગરીમા તમારા આર્યિકા દાદી પણ ધાર્મિકી યાવત ધર્માનુરાગ વગેરે વિશેષણો વાળા થયા છે. (सा णं अम्ह वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे जाव किमंगपुणपासणयाए) તે અમારી વક્તવ્યતા મુજબ-માન્યતા મુજબ અતિશય પુણ્યોનું ઉપાર્જન કરીને કાલમાસમા કાલ કરીને દેવલોકોમાથી કોઇ પણ એક દેવલોકમાં દેવની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા છે તે આર્યિકા-દાદીના તમે પૌત્ર છો, તમે તેના માટે ઇષ્ટ કાન્ત વગેરે વિશેષણોવાળા હતા અને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ તમે તેના માટે શ્રવણદુર્લભ હતા, તો પછી તમારી જોવાની તો વાત જ શી કરવી. (सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) તે આર્યિકા દાદી મનુષ્યલોકમા આવવાની ઇચ્છા તો રાખે છે, પણ આવી શકતા નથી આના ચાર કારણો છે તે આ પ્રમાણે છે. (चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववन्नए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ) હે પ્રદેશિન્ ! તે ચાર કારણો

यक्षगृहे स्थित्वा एवं वदेत्-एवं तावत् स्वामिन्! इह मुहूर्तकम् आस्स्व वा तिष्ठत वा निषीदत वा त्वग्वर्त्तयत वा, तस्य खलु त्वं प्रदेशिन्! पुरुषस्य क्षणमपि एतमर्थं प्रतिशृणुयाः? नो अयमर्थः समर्थः। कस्मात्? भदन्त! अशुचि अशुचिसामन्तम्। एवमेव प्रदेशिन्! तवापि आर्यिका ऽभवत् इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावत् व्यहरत् सा खलु अस्माकं

यक्षायतन में घुस रहे हो, उस समय (केइ य पुरिसे) तुम से कोई पुरुष (वच्चघरंसि ठिच्चा एवं वएज्जा) विष्ठागृह में स्थित होकर ऐसा कहे (एह ताव सामी! इह मुहुत्तगं आसयह, वा चिट्ठह वा निसीयह वा, तुयट्टह वा) हे स्वामिन्!-आप आइये और एक मुहूर्त मात्र समयतक यहां बैठिये, अथवा ठहरिये, सुखपूर्वक रहिये लेटिये (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि?) हे प्रदेशिन्! तुम उस पुरुष की उस बात को एक क्षण के लिए भी स्वीकार कर लोगे क्या? (नो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! उस समय उस पुरुष की यह बात स्वीकार योग्य नहीं हो सकती है (कम्हा) हे प्रदेशिन्! किस कारण से उस पुरुष की यह बात स्वीकार योग्य नहीं हो सकती है? (भंते! असुई असुइ सामंते) हे भदन्त! क्यों कि वह स्थान अपवित्र है और सब तरफ से अपवित्र वस्तु से युक्त है। (एवामेव पएसी! तव वि अज्जिया होत्था इहेव, सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरइ) इसी प्रकार से हे

યુક્ત થઈને (भिंगारकडुच्छुयहत्थगय) અને ભૃંગાર તેમજ કડુચ્છુક હાથમાં લઈને (देवकुलमणुपविसमाण) યક્ષાયતન (વ્યંતરાયતન)માં પ્રવેશતા હોય તે સમયે (केइपुरिसे) તમને કોઈ માણસ (वच्चघरंसी ठिच्चा एवं वएज्जा) સંડાસમાં રહીને આ પ્રમાણે કહે (एह ताव सामी! इह मुहुत्तगं आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा, तुयट्टह वा) હે સ્વામિન્! તમે આવો અને ફક્ત એક મુહૂર્ત જેટલા સમય સુધી અહીં બેસો કે ઊભા રહો, સુખેથી રહો કે આરામ કરો (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जा) તો હે પ્રદેશિન્! તમે તે માણસની તે વાતને થોડા વખત માટે પણ સ્વીકારશો? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત! તે વખતે તે માણસની આ વાત સ્વીકારવામાં આવશે નહિ (कम्हा) હે પ્રદેશિન્! શા કારણથી તે માણસની તે વાત તમારાથી સ્વીકાર્ય થશે નહિ? (भंते! असुई असुइ सामंते) હે ભદંત! કેમકે તે સ્થાન અપવિત્ર છે અને બધે તે અપવિત્ર વસ્તુઓથી યુક્ત છે (एवामेव पएसी! तव वि अज्जिया होत्था, इहेव सेयं वियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरइ) આ પ્રમાણે જ હે પ્રદેશિન્ આ શ્વેત

व्युच्छिन्नं भवति दिव्यं प्रेम संक्रान्तं भवति. स खलु इच्छेत् मानुष्यं लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति २। अधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो यावत् अध्युपपन्नः, तस्य खलु एवं भवति, इदानीं गमिष्यामि मुहूर्तेन गमिष्यामि तस्मिन् काले इह अल्पायुषो नराः कालधर्मेण संयुक्ता भवन्ति, स खलु इच्छेत् मानुष्यं लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति

में दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित हो जाता है यावत् अध्युपपन्न हो जाता है सो (तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्ने भवइ, दिव्वे पेम्मे संकंते भवइ) इसका मनुष्य-संबंधि प्रेम व्युच्छिन्न-टूट जाता है और देवलोक संबंधी प्रेम उसके हृदय में संक्रान्त-प्रविष्ट हो जाता है। (से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ) अतः वह मनुष्यलोक में आनेका अभिलाषी होता हुआ भी आना नहीं चाहता है. (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ, इयाणिं गच्छं, मुहुत्तेणं गच्छं, तेणं कालेण इह अप्पाउया णरा, कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से ण इच्छेज्जा माणुस्स लोग हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) अधुनोपपन्न देव देवलोक में दिव्य कामभोगों के द्वारा मूर्च्छित हो जाता है यावत् अध्युपपन्न-आसक्त हो जाता है सो उसके मन में ऐसा होता है कि अब जाता हूं, थोडे काल पीछे जाऊंगा-उस काल में मर्त्यलोक में मनुष्य-माता, पिता, पुत्र, कलत्रादिक कि जिन की आयु समाप्त हो चुकी होती है, वे कालधर्म से संयुक्त हो जाते

કામભોગોમાં મૂર્ચ્છિત થઇ જાય છે યાવત્ અધ્યુપપન્ન થઇ જાય છે તો (तस्स ण माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्ने भवइ, दिव्वे पेम्मे संकंते भवइ) તેનો મનુષ્ય સંબંધી પ્રેમ વ્યુચ્છિન્ન થઇ જાય છે અને સ્વર્ગલોકમાં સંબંધી પ્રેમ તેના હૃદયમાં સંક્રાંત પ્રવિષ્ટ-થઇ જાય છે. (से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव संचाएइ) એથી તે મનુષ્યલોકમાં આવવાની અભિલાષા રાખતો હોય છતાં પણ તે અહીં આવવા ઇચ્છતો નથી. (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववणे, तस्स ण एवं भवइ, इयाणि गच्छं, मुहुत्तेणं गच्छं तेण कालेणं इह अप्पाउया णरा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से ण इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) અધુનોપપન્ન દેવ દેવલોકમાં દિવ્ય કામભોગો વડે મૂર્ચ્છિત થઇ જાય છે યાવત અધ્યુપપન્ન થઇ જાય છે, અને એવી પરિસ્થિતિમાં તેના મનમાં આ પ્રમાણે થાય કે હવે જઇશ, થોડા વખત પછી જઇશ, તે સમયે મર્ત્યલોકમાં માણસ માતા, પિતા, પુત્ર કલત્ર વગેરે બધા

लोकेषु दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथितः अध्युपपन्नः स खलु मानुष्यान् भोगान् नो आद्रियते नो परिजानाति स खलु इच्छेत् मानुष्यं भोगं इष्यमागन्तु नैव खलु शक्नोति १। अधुनोपपन्नो देवो देवलोकेषु दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो यावत् अध्युपपन्नः, तस्य खलु मानुष्यमेव

हे प्रदेशिन् ! वे चार कारण ऐसे हैं कि जिनके कारण से अधुनोपपन्नक देव देवलोक में तत्कालोत्पन्न देवमनुष्यलोक में शीघ्र आना चाहता है, परन्तु वह नहीं आसकता है सो उसमें प्रथम कारण ऐसा है-(अहुणो ववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झो ववण्णे से माणुसे लोगे णो आढाइ, नो परिजाणाइ) अधुनोपपन्नक देव देवलोकों में दिव्यकामभोगों में मूर्च्छित हो जाता है, गृद्ध-विषयोपभोग की अभिलाषा से ग्रस्त हो जाता है ग्रथित-विषयों में आसक्त हो जाता है, अध्युपपन्न-उनमें अत्यन्त आसक्तिवाला बन जाता है। अतः वह मनुष्य लोक संबंधी शब्दादिक विषयों को आदर की दृष्टि से नहीं देखता है, उनकी अपेक्षा नहीं करता है, और न उन्हें जानने की ही इच्छा करता है (से णं इच्छेज्जा माणुसं नो चेव णं संचाएइ १) ऐसा वह देव किसी प्रकार मनुष्यलोक में आनेकी इच्छा करे तो भी देवभोगों की आसक्ति से वह यहां नहीं आना चाहता है। (अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे) अधुनोपपन्न देव देवलोक

આ પ્રમાણે છે કે જેને લીધે અધુનોપપન્નકદેવ દેવલોકમાંથી તત્કાલોત્પન્ન દેવ મનુષ્યલોકમાં જલદી આવવા ઈચ્છે છે પરંતુ તે આવી શકતા નથી તેનું પહેલું કારણ આ પ્રમાણે છે- (અહુણોવવન્નએ દેવે દેવલોએસુ દિવ્વેહિં કામભોગેહિં મુચ્છિએ ગિદ્ધે ગઢિએ અજ્ઝોવવણ્ણે સે માણુસે લોગે ણો આઢાઇ નો પરિજાણાઇ) અધુનોપપન્નક દેવ દેવલોકમાં દિવ્યકામભોગોમાં મૂર્ચ્છિત થઈ જાય છે, ગૃદ્ધ-વિષયોપભોગની અભિલાષાથી આક્રાંત થઈ જાય છે, ગ્રથિત-વિષયોમાં આસક્ત થઈ જાય છે અને અધ્યુપપન્ન અને તેમાં અતીવ આસક્તિ યુક્ત થઈ જાય છે એથી મનુષ્યલોકના શબ્દ વગેરે વિષયોને સન્માનની દૃષ્ટિએ જોતો નથી, તેની તે અપેક્ષા રાખતો નથી અને તેના સંબંધમાં તે કંઈપણ જાણવાની પણ ઈચ્છા પ્રકટતો નથી (સે ણં ઇચ્છેજ્જા માણુસં નો ચેવ ણં સંચાએઇ १) એવો તે દેવ ને કદાચ મનુષ્યલોકમાં આવવાની ઈચ્છા રાખતો હોય તો પણ દેવલોકોની આસક્તિ ને લીધે તે અહીં આવવા ઈચ્છતો નથી. (અહુણોવવણ્ણએ દેવે દેવલોએસુ દિવ્વેહિં કામભોગેહિં મુચ્છિએ જાવ અજ્ઝોવવણ્ણે) અધુનોપપન્ન દેવ દેવલોકમાં દિવ્ય

नोपपन्नो देवो देवलोकेषु इच्छेत् मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव शक्नोति हव्यमागन्तुम् तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तज्जीवः स शरीरम् २ ॥सू० १३४॥

टीका-'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि-ततः खलु केश कुमारश्रवणः प्रदेशिराजम् एवम्-वक्ष्यमाणवचनमवादीत्-हे प्रदेशिन्! यदि-चेत् खलु त्वां स्नातं कृतस्नानं कृतबलिकर्माणं-कृतवायसादिनिमित्तान्नभागं कृतकौतुक-मङ्गलप्रायश्चित्त-कृतमषीतिलकादि माङ्गलिकप्रायश्चित्तविधिम्. आर्द्रपटशाटकं-जलसिक्तवस्त्रशाटकयुक्तं भृङ्गारकडुच्छुकहस्तगतं-हस्तगृहीतभृङ्गारदर्वीकम्, देव-कुलं--यक्षायतनम् अनुप्रविशन्तम्-गच्छन्तम्, कोऽपि-कश्चिदपि पुरुषो वर्चो-गृहे विष्ठागृहे स्थित्वा एवम्, वदेत्-कथयेत् हे स्वामिन्! यूयमिह तावद् एत आगच्छत इह मुहूर्त्तं मुहूर्तमात्रसमयं यावत् आसध्वम् उपविशत, वा-अथवा तिष्ठत इहस्थिता भवत, निषीदत-समुखमुपविशत, त्वग्वर्त्तयत-शयनं-कुरुत, अत्र वा शब्दो वाक्यालङ्कारे, तस्य पुरुषस्य खलु हे प्रदेशिन्! त्वम् एतमर्थं किम् प्रतिशृणुयाः-स्वीकुर्याः? प्रदेशीमाह—

नायमर्थः समर्थः-अयमर्थः स्वीकारयोग्यो नास्ति किमर्थमित्याह हे-भदन्त! तत्स्थानम्-अशुचि-अपवित्रम्, अशुचिसामन्तम्=सर्वतोऽशुचि युक्तम्, तस्मा-

---

ववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं) हे प्रदेशिन्! ये चार कारण हैं जो अधुनोपपन्न देव को मनुष्यलोक में आने की इच्छा करने पर भी उसे यहां आने में बाधक होते है। इसलिये हे प्रदेशिन्! तुम मेरे कहने में श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ—इस सूत्र का मूलार्थ के जैसा ही है ॥सू. १३४॥

चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) હે પ્રદેશિન્! આ ચાર કારણો છે કે જેથી અધુનોપપન્ન દેવ મનુષ્ય લોકમા આવવાની ઇચ્છા રાખતો હોય છતાએ તે અહીં આવી શકતો નથી એટલા માટે હે પ્રદેશિન્! તમે મારી વાત પર શ્રદ્ધા રાખો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે, જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી.

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. ॥૧૩૪॥

४। अधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु यावत् अध्युपपन्नः, तस्य मानुष्यकः उदारः दुर्गन्धः प्रतिकूलः प्रतिलोमश्चापि भवति, ऊर्ध्वमपि च खलु यावच्चतुः पञ्च योजनशतम् अशुभो गन्धोऽभिसमागच्छति, स खलु इच्छेत् मानुष्य लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति। इत्येतैः चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन् ! अधु

है, सो वह देव मनुष्यलोक में आने का अभिलाषी बना रहने पर भी यहां नहीं आ सकता है। (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ) चौथा कारण यहां पर नहीं आसकने का ऐसा है कि-अधुनोपपन्न देव दिव्य कामभोगों में यावत् अध्युपपन्न हो जाता है सो उसके लिए औदारिक शरीर संबंधी गोमूत्रकलेवरादि समुत्पन्न दुर्गन्ध-घ्राणेन्द्रिय के अनुकूल नहीं पड़ता है, प्रत्युत वह-उसे-प्रतिकूल-अनिष्ट कर प्रतीत होता है (उड्ढं पि य णं जाव चत्तारि पंच जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) तथा यह मनुष्यलोक संबंधी अशुभ गंध चारसौ या पांचसौ योजन तक ऊपर में रूप से फैल जाता है अतः मनुष्यलोक में आने का अभिलाषी बना हुआ वह देव इस दुर्गन्ध के कारण यहां नहीं आ सकता है अर्थात् युगलियों के समय में चारसौ योजन और मनुष्य में पांचसौ योजन तक दुर्गंध जाता है (इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणो

ભુત્પુ પ્રાપ્ત કરી ચૂકે છે અને આમ તે દેવ મનુષ્ય લોકમાં આવવાની અભિલાષા રાખતો હોય છતાંએ અહીં આવી શકતો નથી (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ) અહીં ન આવવાનું ચોથું કારણ આ પ્રમાણે છે કે અધુનોપપન્નક દેવ દિવ્ય કામ ભોગોમાં યાવત્ અધ્યુપપન્ન થઈ જાય છે તો તેના માટે ઔદારિક શરીર સંબંધી ગોમૂત્રક કલેવરાદિ સમુત્પન્ન દુર્ગંધ ઘ્રાણેન્દ્રિયના માટે અનુકૂળ કહી શકાય નહિ. પણ એના વિરુદ્ધ તે તેને પ્રતિકૂળ અનિષ્ટકર લાગે છે (उड्ढं पि य णं जाव चत्तारि पंच जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से य इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) તેમજ તે મનુષ્ય લોક સંબંધી અશુભ ગંધ ચારસો કે પાંચસો યોજન સુધી ઉપર આકાશમાં ચોમેર પ્રસરીને રહે છે એથી મનુષ્યલોકમાં આવવાની અભિલાષા ધરાવતો હોય છતાંએ તે દેવ તે દુર્ગંધને લીધે અહીં આવી શકતો નથી એટલે કે યુગલીઓના સમયમાં ચારસો યોજનને મનુષ્યમાં પાંચસો યોજન સુધી દુર્ગંધ જાય છે (इच्चएहिं

नोपपन्नो देवो देवलोकेषु इच्छेत् मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव शक्नोति हव्यमागन्तुम् तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तज्जीवः स शरीरम् २ ॥सू० १३४॥

टीका-'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि-ततः खलु केश कुमारश्रवणः प्रदेशिराजम् एवम्-वक्ष्यमाणवचनमवादीत्-हे प्रदेशिन्! यदि-चेत् खलु त्वां स्नातं कृतस्नानं कृतबलिकर्माणं-कृतवायसादिनिमित्तान्नभागं कृतकौतुक-मङ्गलप्रायश्चित्त-कृतमषीतिलकादि माङ्गलिकप्रायश्चित्तविधिम्. आर्द्रपटशाटकं-जलस्निग्धवस्त्रशाटकयुक्तं भृङ्गारकडुच्छुकहस्तगतं-हस्तगृहीतभृङ्गारदर्वीकम्, देव-कुलं--यक्षायतनम् अनुप्रविशन्तम्-गच्छन्तम्, कोऽपि-कश्चिदपि पुरुषो वर्चो-गृहे विष्ठागृहे स्थित्वा एवम्, वदेत्-कथयेत्-हे स्वामिन्! यूयमिह तावद् एत आगच्छत इह मुहूर्तं मुहूर्तमात्रसमयं यावत् आस्ध्वम्-उपविशत, वा-अथवा तिष्ठत इहस्थिता भवत, निषीदत-सम्मुखमुपविशत, त्वग्वर्त्तयत-शयनं-कुरुत, अत्र वा शब्दो वाक्यालङ्कारे, तस्य पुरुषस्य खलु हे प्रदेशिन्! त्वम् एतमर्थं किम् प्रतिशृणुयाः-स्वीकुर्याः? प्रदेशीप्राह—
नायमर्थः समर्थः-असमर्थः स्वीकारयोग्यो नास्ति किमर्थमित्याह हे-भदन्त! तत्स्थानम्-अशुचि-अपवित्रम्, अशुचिसामन्तम्=सर्वतोऽशुचि युक्तम्, तस्मा-

---

ववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं) हे प्रदेशिन्! ये चार कारण हैं जो अधुनोपपन्न देव को मनुष्यलोक में आने की इच्छा करने पर भी उसे यहां आने में बाधक होते है। इसलिये हे प्रदेशिन! तुम मेरे कहने में श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य हैं जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ—इस सूत्र का मूलार्थ के जैसा ही है ॥सू. १३४॥

चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) હે પ્રદેશિન્! આ ચાર કારણો છે કે જેથી અધુનોપપન્ન દેવ મનુષ્ય લોકમા આવવાની ઇચ્છા રાખતો હોય છતાએ તે અહીં આવી શકતો નથી એટલા માટે હે પ્રદેશિન્! તમે મારી વાત પર શ્રદ્ધા રાખો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે, જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી.

ટીકાર્થ:—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. ॥૧૩૪॥

श। अधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु यावत् अध्युपपन्नः, तस्य मानुष्यक उदारः दुर्गन्ध प्रतिकूलः प्रतिलोमश्चापि भवति, ऊर्ध्वमपि च खलु यावत् पञ्च योजनशतम् अशुभो गन्धोऽभिसमागच्छति, स खलु इच्छेत् मानुष्य लोक हव्यमागन्तु नैव खलु शक्नोति। इत्येतैः चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन ! अधु

है, तो वह देव मनुष्यलोक में आने का अभिलाषी बना रहने पर भी यहाँ नहीं आ सकता है। (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे. तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ) चौथा कारण यहां पर नहीं आसकने का ऐसा है कि-अधुनोपपन्न देव दिव्य कामभोगों में यावत् अध्युपपन्न हो जाता है सो उसके लिए औदारिक शरीर सम्बन्धी मूत्रतकफछर्द्यादि मनुष्य में दुर्गन्ध-घ्राणेन्द्रिय के अनुकूल नहीं पड़ता है, प्रत्युत वह-उसे-प्रतिकूल-अनिष्ट कर प्रतीत होता है (उड्ढं पि य णं जाव चत्तारि पंच जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमा गच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) तथा यह मनुष्यलोक सम्बन्धी अशुभ गंध चारसौ या पांचसौ योजन तक ऊपर में रूप से फैल जाता-है अतः मनुष्यलोक में आने का अभिलाषी बना हुआ वह देव उस दुर्गंध के कारण यहां नहीं आ सकता है अर्थात् युगलियों के समय में चारसौ योजन और मनुष्य में पांचसौ योजन तक दुर्गंध जाता है (इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणा

मनुष्य प्राप्त करी चूके छे अने आम ते देव मनुष्य लोकमां आववानी अभिलाषा राखतो होय छतांये अहीं आवी शकतो नथी. (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ) अहीं न आववानुं चोथुं कारण आ प्रमाणे छे के अधुनोपपन्नक देव दिव्य काम भोगोमां यावत् अध्युपपन्न थई जाय छे तो तेना माटे औदारिक शरीर सम्बन्धी मूत्रकफ श्लेष्मा वि मनुष्य न दुर्गंध घ्राणेन्द्रियना माटे अनुकूल थई शकता नथी. पण एना विरुद्ध ते तेने प्रतिकूल अनिष्टकर लागे छे (उड्ढं पि य णं जाव चत्तारि पंच जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) तेमज ते मनुष्य लोक सम्बन्धी अशुभ गंध चारसो के पांचसो योजन सुधी ऊपर आकाशमां प्रसरीने रहे छे एथी मनुष्य लोकमां आववानी अभिलाषा धरावतो होय छतांये ते देव ते दुर्गंधने लीधे अहीं आवी शकतो नथी एटले के युगलीओना समयमां चारसो योजनने मनुष्यमां पांचसो योजन सुधी दुर्गंध जाय छे (इच्चेएहिं

खलु यावच्चतुःपञ्चयोजनशतं-चत्वारि वा पञ्च वा योजनानां शतानि यावत् अभिसमागच्छति-अभितः प्रसरति. स देवः मानुष्यं लोकमागन्तुम्, इच्छेत् परन्तु तद्दुर्गन्धवशादागन्तुं न शक्नोति ४। हे प्रदेशिन्। इत्येतैः चतुर्भिः स्थानैः-देवा आगन्तुं न शक्नुवन्तीति। तत् तस्मात्कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने श्रद्धां कुरु यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति ॥सू० १३४॥

मूलम्—तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—अत्थिणं भंते! एसा पण्णा उवमा, इमेणं पुण कारणेण णो उवागच्छइ. एवं खलु भंते! अहं अन्नया कयाइं वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायक-दंडणायग राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय - इब्भसेट्ठि सेणावइ - सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-असच्चचेड—पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि। तएणं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं अवउडमबंधणवद्धं चोरं उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि, अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि,अएण य तउएण य आयावेमि, आयपच्चइएहिं पुरिसेहि रक्खावेमि, तए अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता तं आउकुंभिं उग्गलत्थावेमि, उग्गलत्थावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइ वा विवरेइ वा अंतरेइ वा राईवा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो वहिया णिग्गए, जइ णं भंते! तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो वहिया णिग्गए, तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा-अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो त

न्नोचितोऽयमर्थः इति बोध्यम्, केशीश्रमणः प्राह—हे प्रदेशिन् ! एवमेव इत्थमेव तवापि आर्यिकाऽभवत् कुत्र साऽभवदित्यत्राऽऽह—इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी—यावत्—यावत्पदेन—धर्मानुगादिविशेषणविशिष्टा व्यहरत, सा—आर्यिका खलु मम वक्तव्यतया—मम मतेन सुबहु यावत्—यावत्पदेन—'पुण्योपचयं समर्ज्य' कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपन्ना, तस्याः खलु आर्यिकायाः त्वं नप्तृक—पौत्रोऽभव कीदृशः ? इत्यत्राऽऽह—इष्टः यावत्—यावत्पदेन—इष्टकान्तादिविशेषणविशिष्टः उदुम्बर पुष्पमिव दुर्लभः श्रवणतया, किमङ्ग पुनर्दर्शनतया, एतादृशस्त्वमभूः । सा आर्यिका खलु मानुष्यलोकमागन्तुमिच्छति किन्तु नैव शक्नोति ।

कुतो न शक्नोति ? इति जिज्ञासायामाह—हे प्रदेशिन् ! चतुर्भिः—स्थानैः अधुनोपपन्नः—तत्कालोत्पन्नो देवः देवलोकेषु मानुष्य लोकं शीघ्रमागन्तुमिच्छेद्—अभिलषेत् किन्तु नैव शक्नोति—तत्र प्रथमकारणमाह—अधुनोपपन्नो देवो देवलोकेषु कामभोगेषु मूर्च्छित—मूर्च्छामधिगतः, गृद्ध—विषयोपभोगाभिलाषग्रस्तः, ग्रथितः आसक्तः, अध्युपपन्नः—अत्यासक्तः स खलु मानुष्यान्—मानुष्यलोकसम्बन्धिनः भोगान्—शब्दादीन् विषयान नो आद्रियते नापेक्षते, अतएव नो परिजानाति—विज्ञातु नेच्छति, स खलु देवः कथंचित् मानुष्य लोकमागन्तुमिच्छन्नपि किन्तु देवभोगासक्तया नैवागन्तुं शक्नोति—नेच्छतीत्यर्थः १। द्वितीयस्थानमाह—अधुनोपपन्न इत्यारभ्य अध्युपपन्नः' इति पर्यन्तानां विवरणं प्राग्वत्, तस्य—देवस्य मानुष्य—मनुष्यसम्बन्धि प्रेम व्युच्छिन्नं मनुष्यलोकसुखापेक्षयाऽपि दिव्यसुखेन भग्नं इव भवति तथा—दिव्य—स्वर्गलोकसम्बन्धि प्रेम संक्रान्त—हृदयानुप्रविष्ट भवति, तेन हेतुना स देव आगन्तु न शक्नोति २। अधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो गृद्धो ग्रथितोऽध्युपपन्नो भवति, तस्य खलु देवस्य एवम्—अनुपदवक्ष्यमाणस्वरूपो विचारो भवति तथाहि—इदानीम्—अधुना गमिष्यामि, तथा मुहूर्तेन पश्चिमकालेना नन्तरं गमिष्यामि । तस्मिन् काले इह—अस्मिन्लोके नराः—मातापितृपुत्र कलत्रादयः अल्पायुषः अल्पजीविनः कालधर्मेण—मृत्युना संयुक्ता भवन्ति, सः देव आगन्तुं न शक्नोति ३। अथ चतुर्थस्थानमाह—"अधुनोपपन्नो देवो दिव्यभोगासक्तो भवति, तस्य देवस्य औदारिकः=औदारिकशरीरसम्बन्धी शरीरकलेवरादिसमुद्भूतो दुर्गन्ध ऊर्ध्वः प्राणेन्द्रियाननुकूलः, प्रतिकूल प्राणाप्रियकरश्चापि भवति । तथाऽयम् सः गन्ध ऊर्ध्वं च उपरिप्रदेशे विच

खलु यावच्चतुःपञ्चयोजनशतं–चत्वारि वा पञ्च वा योजनानां शतानि यावत् अभिसमागच्छति-अभितः प्रसरति. स देवः मानुष्य लोकमागन्तुम्, इच्छेत् परन्तु तद्दुर्गन्धवशादागन्तुं न शक्नोति ४। हे प्रदेशिन् । इत्येतैः चतुर्भिः स्थानैः–देवा आगन्तुं न शक्नुवन्तीति । तत् तस्मात्कारणात् हे प्रदेशिन् ! त्वं श्रद्धेहि–मद्वचने श्रद्धां कुरु यथा–अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति ॥सू० १३४॥

मूलम्—तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–अत्थिणं भंते ! एसा पण्णा उवमा, इमेणं पुण कारणेण णो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायक-दंडणायग राईसर-तलवर–माडंबिय-कोडुंबिय – इब्भसेट्ठि सेणावइ – सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्चचेड–पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि। तएणं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं अवउडमबंधणबद्धं चोरं उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतमेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि, अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि,अएण य तउएण य आयावेमि, आयपच्चइएहिं पुरिसेहि रक्खावेमि, तए अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता तं आउकुंभिं उग्गलत्थावेमि, उग्गलत्थावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइ वा विवरेइ वा अंतरेइ वा राईवा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए, जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए, तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा-अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो त

जीवो त सरीरं, जम्हा णं भंते ! तीसे अउक्कुभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ॥सू० १२५॥

छाया—ततःखलु स प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञा उपमा अनेन पुनःकारणेन नो उपागच्छति, एवं खलु भदन्त ! अहमन्यदा कदाचित् बाह्यायाम् उपस्थानशालायाम् अनेकगणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिकेभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मन्त्री-महामन्त्री-गणक-दौवारिका-ऽमात्य-चेट-पीठमर्द-नगर-निगम-दूत-संधिपालैः सार्द्धं संपरिवृतो विहरामि।

'तएणं से पएसी राया इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसप्रकार (पएसी राया केसिंकुमारसमणं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने केशीकुमार श्रमण से ऐसा कहा—(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णा उवमा, इमेण पुण कारणेण णो उवागच्छइ) हे भदन्त ! यह जीव एवं शरीर में भेदरूप बुद्धि केवल उपमामात्र है, जैसा कि अभी प्रकट किया गया है—कि इस२ कारण से देव यहां नहीं आता है. (एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) हे भदन्त ! किसी एक समय में बाह्य उपस्थान शाला में (अणेगगणणायग, दण्डणायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीठमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि) अनेक गणनायक, दण्डनायक, राजा,

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યારપછી (पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું— (अत्थि णं भंते ! एसा पण्णा उवमा इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ) હે ભદન્ત ! તમે દેવને અહીં ન આવવા માટે જે કંઈ કહ્યું છે તેના વડે તો જીવ અને શરીરમાં ભેદરૂપ બુદ્ધિ ફક્ત ઉપમામાત્ર જ છે આમ સ્પષ્ટપણે જાહિત થાય છે (एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) હે ભદન્ત ! એક વખતે બહારના ઉપસ્થાનશાળામાં હું (अणेगगणणायगदंडणायग-राईसर-तलवर-माडंबिय कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीठमद्द-नगर-निगम-दूय-संधि-वालेहिं-सद्धिं संपरि

ततः खलु मम नगरगुप्तिकाः समक्ष सहोढं सग्रैवेयकम् अवकोटकबन्धनबद्ध चौरमुपनयन्ति, ततःखलु अहं तं पुरुषं जीवन्तमेव अयःकुम्भ्यां प्रक्षेपयामि, अयोमयेन पिधानकेन पिधापयामि अयसा च त्रपुणा च आतापयामि, आत्मप्रत्ययिकैः पुरुषैः रक्षयामि. ततोऽहमन्यदा कदाचित् यत्रैव मा अय-

---

ईश्वर ऐश्वर्यसंपन्न, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, मन्त्री, महामंत्री, गणक, दौवारिक, अमात्य, चेट, पीठमर्द, नगरनिवासीजन, व्यापारिगण, दूत, सन्धिपाल, इन सबके साथ बैठा हुआ था. (तएणं मम णगरगुत्तिया ससक्खं, सहोढं, सगेवेज्जं, अवउडमबंधणबद्धं चोर उवणेंति) इतने में नगररक्षक मेरे समक्ष सहोढ–चुराई हुई वस्तुओं सहित, सग्रैवेयक–ग्रीवा में जिसने चुराई हुई वस्तुओं को बांधा है ऐसे चार को अवकोटक-(मुसक्रिया) बंधन से बांधकर लाये (तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि) मैं उस पुरुष को जीवितावस्था मे ही लोह की कोठी में बन्द करवा दिया–और (अउमएण विहाणएणं पिहावेमि) उसके मुखको–कोठी के मुख को लोह के ढक्कन से बन्द करवा दिया–ढकवा दिया. (अएण य तउएण य आयावेमि) बाद में फिर मैंने उसे द्रवीभूत लोहे से और द्रवित राग से अङ्कित करवा दिया. (आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) यह सब करवाकर फिर मैंने अपने विश्वासपात्र पुरुषों को उसकी रक्षा के निमित्त नियुक्त करवा दिया.

युडे विहरामि) घणा गणुनायको, दंडनायको, राजा, ईश्वर, ऐश्वर्य, स पन्न, तलवर माडंબिक, कौटुंબिक, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ, મંત્રી, મહામંત્રી, ગણક, દૌવારિક, અમાત્ય, ચેટ, પાઠમર્દ, નગરનિવાસીજન, વહેપારીઓ, દૂતો, સંધિપાલો, આ બધાની સાથે બેઠો હતો, (तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं, सगेवे-ज्जं, अवउडमबंधणबद्ध चोर उवणेंति) એટલામા નગરરક્ષક મારી સામે સહોઢ–ચોરાએલી વસ્તુઓની સાથે, સગ્રૈવેયક-જેની ડોકમા ચોરાએલી વસ્તુઓ બાંધવામાં આવી છે એવા ચોરને અવકોટક-બન્ને હાથપે ભેગા બાંધીને લાવ્યા. (तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि) મે તે પુરુષને જીવતો જ લોખંડના નળામા બંધ કરાવી દીધો. અને (अउमएणं विहाणएण पिहावेमि) તે નળાને લોખંડના ઢાંકણથી બંધ કરાવી દીધો (अएण य तउएण य आयावेमि) ત્યાર પછી મે તેને દ્રવીભૂત લોખંડ તેમજ દ્રવિત રાગથી અંકિત કરાવી દીધો (आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) આ બધુ કરાવીને પછી મેં તેના રક્ષા

जीवो त सरीर, जम्हा णं भंते ! तीसे अउकुभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा-त जीवो त सरीर, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ॥सू० १२५॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञा उपमा अनेन पुनःकारणेन नो उपाग च्छति, एवं खलु भदन्त ! अहमन्यदा कदाचित् बाह्यायाम् उपस्थानशाला याम् अनेकगणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बि केभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मन्त्री-महामन्त्री-गणक-दौवारिका-ऽमात्य-चेट-पीठमर्द-नगर-निगम-दूत-सन्धिपालैः सार्द्धं संपरिवृतो विहरामि।

'तएणं से पएसी राया इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (पएसी राया केसिंकुमारसमणं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने केशीकुमार श्रमण से ऐसा कहा-(अत्थि णं भंते! एसा पण्णा उवमा, इमेण पुण कारणेण णो उवागच्छइ) हे भदन्त ! यह जीव एवं शरीर में भेदरूप बुद्धि केवल उपमामात्र है, जैसा कि अभी प्रकट किया गया है-कि इस२ कारण से वह यहां नहीं जाता है. (एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) हे भदन्त ! किसी एक समय मैं बाह्य उपस्थान शाला में (अणेगगणणायक, दण्डणा यक-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ- सत्थवाह मति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीठमद्द-नगर - निगम-दूय- संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि) अनेक गणनायक, दण्डनायक, राजा,

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारपछी (पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने केशी कुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्यु - (अत्थि णं भंते! एसा पण्णा उवमा इमेण पुण कारणेणं णो उवागच्छइ) हे भदन्त ! तमे हमणां ज्ञ्यहीं न जाणवा माटे जे कई कह्यु छे तेना वडे तो जीव अने शरीरमां भेदरूप बुद्धि फक्त उपमामात्र ज छे आम स्पष्टपणे साबित थाय छे. (एवं खलु भंते ! अ अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) हे भदन्त ! कोई एक वखते बाह्य उपस्थानशाळामां हुं (अणेगगणणायकदंडणायक-राईसर-तलवर-माडं बिय कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दो

ततः खलु मम नगरगुप्तिकाः समक्षं सहोढं सग्रैवेयकम् अवकोटकबन्धनबद्धं चौरमुपनयन्ति, ततःखलु अहं तं पुरुषं जीवन्तमेव अयःकुम्भ्यां प्रक्षेपयामि, अयोमयेन पिधानकेन पिधापयामि अयसा च त्रपुणा च आतापयामि, आत्मप्रत्ययिकैः पुरुषैः रक्षयामि. ततोऽहमन्यदा कदाचित् यत्रैव सा अय-

ईश्वर ऐश्वर्यसंपन्न, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, मन्त्री, महामंत्री, गणक, दौवारिक, अमात्य, चेट, पीठमर्द, नगरनिवासीजन, व्यापारिगण, दूत, सन्धिपाल, इन सब के साथ बैठा हुआ था. (तएणं मम णगरगुत्तिया ससक्खं, सहोढं, सगेवेज्जं, अवउडमबंधणबद्धं चोरं उवणेति) इतने में नगररक्षक मेरे समक्ष सहोढ़–चुराई हुई वस्तुओं सहित, सग्रैवेयक–ग्रीवा में जिसने चुराई हुई वस्तुओं को बांधा है ऐसे चोर को अवकोटक–(मुसकिया) बंधन से बांधकर लाये (तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि) मैं उस पुरुष को जीवितावस्था में ही लोह की कोठी में बन्द करवा दिया–और (अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि) उसके मुखको–कोठी के मुख को लोह के ढक्कन से बन्द करवा दिया–ढकवा दिया. (अएण य तउएण य आयावेमि) बाद में फिर मैंने उसे द्रवीभूत लोहे से और द्रवित रांग से अङ्कित करवा दिया. (आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) यह सब करवाकर फिर मैंने अपने विश्वासपात्र पुरुषों को उसकी रक्षा के निमित्त नियुक्त करवा दिया.

कुडे विहरामि) घणा गणुनायको, दंडनायको, राजा, ईश्वर, ऐश्वर्य, संपन्न, तलवर माडंबिक, कौटुंबिक, ईभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, मंत्री, महामंत्री, गणुक, दौवारिक, अमात्य, चेट, पीठमर्द, नगरनिवासीजन, वहेपारीओ, दूतो, संधिपालो, આ બધાની સાથે બેઠો હતો, (तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं, सगेवेज्जं, अवउडमबंधणबद्धं चोरं उवणेंति) એટલામાં નગરરક્ષક મારી સામે સહોઢ –ચોરાએલી વસ્તુઓની સાથે, સગ્રૈવેયક-જેની ડાકમાં ચોરાએલી વસ્તુઓ બાંધવામાં આવી છે એવા ચોરને અવકોટક-બન્ને હાથવે ભેગા બાંધીને લાવ્યા. (तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि) મેં તે પુરુષને જીવતો જ લોખંડના નળામાં બંધ કરાવી દીધો. અને (अउमएणं पिहाणएण पिहावेमि) તે નળાને લોખંડના ઢાંકણુથી બંધ કરાવી દીધો (अएण य तउएण य आयावेमि) ત્યાર પછી મેં તેને દ્રવીભૂત લોખંડ તેમજ દ્રવિત રાંગથી અંકિત કરાવી દીધો (आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) આ બધું કરાવીને પછી મેં તેના રક્ષા

स्कुम्भी तत्रैव उपागच्छामि उपागम्य तामयस्कुम्भीम् उद्घाटयामि उद्घाट्य तं पुरुषं स्वयमेव पश्यामि नो चैव खलु तस्यां अयस्कुम्भ्यां किंचित् छिद्रमिति वा विवरमिति वा अन्तरमिति वा राजिरिति वा यतः खलु स जीवः अन्तराद् बहिर्निर्गतः यदि खलु भदन्त ! तस्यां अयस्कुम्भ्यां भवेत् किमपि छिद्रं वा यावद् राजिर्वा यतः खलु स जीवः अन्तराद् बहिर्निर्गतः, तदा खलु अहं श्रद्दध्यां प्रतीयां रोचयेयं यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरं नो तज्जीव

(तए णं अहं अण्णया कयाइ जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि) एक दिन की बात है कि मैं उस अयकुम्भी के—लोहे की कोठी के पास गया (उवागच्छित्ता तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि) वहां जाकर मैंने उस लोहे की कोठी को खुलवाया (उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइ वा विवरेइ वा, अंतरेइ वा राइ वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए) खुलवाकर मैंने स्वयं उस चोर को देखा तो वह वहां मरा पड़ा था, जब कि उस लोहे की कोठी में न कोई छिद्र था, न कोई विवर था, न अवकाश था, न कोई रेखा थी, कि जिससे होकर उस चोर पुरुष का जीव उस लोहे की कोठी के भीतर से बाहर निकल जाता (जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए) हे भदन्त ! यदि उस लोहे की कोठी में, कोई छिद्र या यावत् रेखा होती तो उसमें होकर वह चोर पुरुष का जीव भीतर से बाहर

माटे (विश्वासपात्र पुरुषो) नियुक्त कराव्या. (तए णं अहं अण्णया कयाइ जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि) एक दिवसनी वात छे के हुं ते लोखंडना नळा पासे गयो. (उवागच्छित्ता तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि) त्यां जईने में ते लोखंडना नळाने उघडाव्यो. (उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि, णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइ वा विवरेइ वा अंतरेइ वा, राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए) उघडावीने में पोते ते चोरने जोयो. तो ते तेमां मृतावस्थामां पडेलो हतो. ज्यारे ते लोखंडना नळामां न छिद्र हतुं के न विवर हतुं के न अवकाश हतो के न रेखा हती के जेथी ते चोरनो जीव ते लोखंडना नळामांथी बहार नीकळी जतो रहे. (जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए) हे भदंत ! जो ते लोखंडना नळामां कोई छिद्र के यावत् रेखा होत तो तेमांथी थईने ते चोर पुरुषनो जीव अंदरथी बहार नीकळी जात. (तो णं

सशरीरम्, यस्मात् भदन्त! तस्या अयस्कुम्भ्याः नास्ति किञ्चित् छिद्रं वा यावत् निर्गतः, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-स एव जीवः तदेव शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् ॥ सू० १३५॥

टीका—'तएणं से पएसी राया' इत्यादि—ततः—केशिकुमारवचनश्रवणानन्तरं खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवम्—अवादीत्—हे भदन्त! एषा—जीवशरीरयोर्भेदरूपा प्रज्ञा=बुद्धिः उपमा=उपमामात्रम् अस्ति—विद्यते, यद् अनेन कारणेन देवो नो उपागच्छतीति। हे भदन्त! एवं—पूर्वोक्तप्रकारेणान्यदपि वृत्तमस्ति यद् अहम्—अन्यदा—कदाचित्—अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये—बाह्यायाम्—उपस्थानशालायाम् अनेकगणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर—तलवर—माडम्बिक—कौटुम्बिक—इभ्य—श्रेष्ठि—सेनापति—सार्थवाह—

निकलता (तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा—रोएज्जा जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) तो मैं आपकी इस बात पर विश्वास कर लेता, प्रतीति कर लेता, उसे रुचि का विषय बना लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, जीव शरीर रूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है (जम्हा णं भंते! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) जिस कारण हे भदन्त! उस लोहे की कोठी में कोई छिद्र अथवा यावत् रेखा नहीं थी कि जिससे उसका जीव बाहर निकल जाता, अतःछिद्रादि के अभाव से निकलने में अशक्त होने के कारण मेरा ही यह मन्तव्य ठीक है कि जो जीव है, वही शरीर है, जीव शरीर से भिन्न नहीं है और शरीर जीव से भिन्न नहीं है।

अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) तो हुं तमारी आ वात पर विश्वास करी लेत, प्रतीति करी लेत अने तेने मारी रुचिनो विषय बनावी लेत के जीव अन्य छे अने शरीर अन्य छे, जीव शरीररूप नथी अने शरीर जीवरूप नथी. (जम्हा ण भंते! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तं जीवो त सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) जेने लीधे हे भदंत! ते लोखंडना नळामां कोई छिद्र के यावत् रेखा नथी के जेथी तेनो जीव बहार नीकळी जतो. एथी मारे छिद्र वगेरेना अभावमां बहार नीकळवामां अशक्त होवा बदल मारी ज आ जातनी मान्यता उचित लागे छे के जे जीव छे तेज शरीर छे, जीव शरीरथी भिन्न नथी अने शरीर जीवथी भिन्न नथी.

कुम्भ्यां तत्रैव उपागच्छामि उपागम्य तामयस्कुम्भीम् उत्क्षेपयामि उत्क्षेप्य तं पुरुषं स्वयमेव पश्यामि नो चैव खलु तस्यां अयस्कुम्भ्यां किंचित् छिद्रमिति वा विवरमिति वा अन्तरमिति वा राजिरिति वा यतः खलु स जीवः अन्तराद् बहिर्निर्गतः यदि खलु भदन्त ! तस्यां अयस्कुम्भ्यां भवेत् किमपि छिद्रं वा यावद् राजिर्वा ततः खलु स जीवः अन्तराद् बहिर्निर्गत, तदा खलु अहं श्रद्दध्यां प्रतीयां रोचयेयं यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरं नो तज्जीव

(तए णं अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि) एक दिन की बात है कि मैं उस अय कुम्भी के–लोहेकी कोठी के पास गया (उवागच्छित्ता तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि) वहां जाकर मैंने उस लोहे की कोठी को खुलवाया (उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइ वा विवरेइ वा, अंतरेइ वा राइ वा जओणं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए) खुलवाकर मैंने स्वयं उस चोर को देखा तो वह वहां मरा पड़ा था, जब कि उस लोहे की कोठी में न कोई छिद्र था, न कोई विवर था, न अवकाश था, न कोई रेखा थी, कि जिससे होकर उस चोर पुरुष का जीव उस लोहे की कोठी के भीतर से बाहर निकल जाता (जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए– होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए) हां भदन्त ! यदि उस लोहे की कोठी में, कोई छिद्र या यावत् रेखा होती तो उसमें होकर वह चोर पुरुष का जीव भीतर से बाहर

ભાગે (વિશ્વાસપાત્ર પુરુષો) નિયુક્ત કર્યા હતા. (तए णं अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि) એક દિવસની વાત છે કે હું તે લોખંડના નળા પાસે ગયો (उवागच्छित्ता तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि) ત્યાં જઈને મેં તે લોખંડના નળાને ઉઘડાવ્યો (उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि, णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइ वा विवरेइ वा अंतरेइ वा, राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए) ઉઘડાવીને મેં પોતે તે ચોરને જોયો. તો તે તેમાં મૃતાવસ્થામાં પડેલો હતો ત્યારે તે લોખંડના નળામાં ન છિદ્ર હતું કે ન વિવર હતું કે ન અવકાશ હતો કે ન રેખા હતી કે જેથી તે ચોરનો જીવ તે લોખંડના નળામાંથી બહાર નીકળી જતો રહે. (जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए) હે ભદન્ત ! જો તે લોખંડના નળામાં કોઈ છિદ્ર કે યાવત્ રેખા હોત તો તેમાંથી થઈને તે ચોર પુરુષનો જીવ અંદરથી બહાર નીકળી જાત. (जो णं

सशरीरम्, यस्माद् भदन्त! तस्या अयस्कुम्भ्याः नास्ति किञ्चित् छिद्रं वा यावत् निर्गतः, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-स एव जीवः तद् शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् ॥ सू० १३५॥

टीका— 'तए णं से पएसी राया' इत्यादि-ततः-केशिकुमारवचनश्रवणानन्तरं खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवम्-अवादीत्-हे भदन्त! एषा-जीवशरीरयो र्भेदरूपा प्रज्ञा=बुद्धिः उपमा=उपमामात्रम् अस्ति-विद्यते, यद् अनेन कारणेन देवो नो उपागच्छतीति। हे भदन्त! एवं-पूर्वोक्तप्रकारेणान्यदपि वृत्तमस्ति यद् अहम्-अन्यदा-कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये-वाह्यायाम्-उपस्थानशालायाम् अनेकगणनायक-दण्डनायक-राजे-श्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिके-भ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-

---

निकलता (तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा-रोएज्जा जहा-अन्नो जीवो अन्नं सरीर नो तं जीवो तं सरीर) तो मैं आपकी इस बात पर विश्वास कर लेता. प्रतीति कर लेता, उसे रुचि का विषय बना लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, जीव शरीर रूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है (जम्हा णं भंते! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा-तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीर) जिस कारण हे भदन्त! उस लोहे की कोठी मे कोई. छिद्र अथवा यावत् रेखा नहीं थी कि जिससे उसका जीव बाहर निकल जाता. अतःछिद्रादि के अभाव से निकलने में अशक्त होने के कारण मेरा ही यह मन्तव्य ठीक है कि जो जीव है, वही शरीर है, जीव शरीर से भिन्न नहो है और शरीर जीव से भिन्न नहीं है।

अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा-अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) तो હું તમારી આ વાત પર વિશ્વાસ કરી લેત. પ્રતીતિ કરી લેત અને તેને મારી રૂચિનો વિષય બનાવી લેત કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે, જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી (जम्हा ण भंते! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) જેને લીધે હે ભદંત! તે લોખંડના નળામાં કોઈ છિદ્ર કે યાવત્ રેખા નથી કે જેથી તેનો જીવ બહાર નીકળી જતો રહે માટે છિદ્ર વગેરેના અભાવમાં બહાર નીકળવામાં અશક્ત હોવા બદલ મારી જ આ જાતની માન્યતા ઉચિત લાગે છે કે જે જીવ છે તેજ શરીર છે, જીવ શરીરથી ભિન્ન નથી અને શરીર જીવથી ભિન્ન નથી.

मन्त्रि-महामन्त्रि-गणक-दौवारिका-ऽमात्य-चेट-पीठमर्द-नगर-निगम-दूत-सन्धिपालैः-अनेकैः ये गणनायका इत्यादि -तत्र गणनायकाः-गणस्वामिनः, दण्डनायकाः-दण्डविधायकाः, राजानः-प्रसिद्धाः, ईश्वराः-ऐश्वर्यसम्पन्नाः, तलवराः-सन्तुष्टराजदत्तपट्टबन्धपरिभूषितराजकल्पाः, माडम्बिकाः-ग्रामपञ्चशतीपतयः, यद्वा-सार्द्धक्रोशत्रयपरिमितमान्तरैर्विच्छिद्य विच्छिद्य स्थितानां ग्रामाणामधिपतयः, कौटुम्बिकाः-बहुकुटुम्बप्रतिपालकाः, इभ्याः-इभो-हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हन्तीति इभ्याः, ते च जघन्य-मध्यमोत्कृष्टभेदात् त्रिप्रकाराः, तत्र हस्तिपरिमितमणिमुक्ता-प्रवाल-सुवर्ण रजतादिद्रव्यराशि स्वामिनो जघन्याः, हस्तिपरिमितवज्रमणिमाणिक्यराशिस्वामिनो मध्यमाः

टीकार्थ-स्पष्ट है-परन्तु जो इसमें गणनायक आदि पद आये हैं उनकी व्याख्या इस प्रकार से है-गण के जो स्वामी होते हैं, वे गणनायक हैं दण्ड का जो विधान करते हैं वे दण्डनायक हैं, राजा प्रसिद्ध हैं, ऐश्वर्य से जो युक्त होते हैं वे ईश्वर हैं सन्तुष्ट हुए राजा द्वारा जिन्हें विशेष पोशाक दी जाती है ऐसे राजतुल्य व्यक्तियों का नाम तलवर है पांच सौ ग्राम के जो अधिपति होते हैं वे माडम्बिक हैं, अथवा ढाई ढाई कोस के अन्तर से बसे हुए ग्रामों के जो अधिपति होते हैं वे माडम्बिक हैं बहुत कुटुम्ब का पालन पोषण करनेवाले जो होते हैं कौटुम्बिक हैं हस्तिप्रमाण द्रव्य-मणि-मुक्ता-प्रवाल-सुवर्ण-रजत-आदि द्रव्यराशि के जो स्वामी होते हैं वे जघन्य इभ्य हैं तथा-हस्तिपरिमित वज्र, मणि माणिक्यराशि के जो स्वामी होते हैं वे मध्यम इभ्य हैं हस्तिपरिमित

ટીકાર્થ—ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે પરંતુ આ સૂત્રમાં ગણનાયક વગેરે જે પદો આવેલ છે તેમની વ્યાખ્યા આ પ્રમાણે છે ગણના જે સ્વામી હોય છે તે ગણનાયક છે, દંડનું જે વિધાન કરે છે તે દંડનાયક છે રાજા પ્રસિદ્ધ છે જે ઐશ્વર્યથી જે સંપન્ન હોય છે તે ઈશ્વર છે સંતુષ્ટ થયેલા રાજા વડે જેમને પહેરવાના વસ્ત્રો આપવામાં આવે છે એવી રાજતુલ્ય વ્યક્તિઓ તલવર કહેવાય છે પાંચસો ગ્રામના જે અધિપતિ હોય છે તે માડંબિક છે અથવા તો અઢી અઢી કોસના અંતરે વસેલા ગ્રામોના જે અધિપતિ હોય છે તે માડંબિક છે ઘણા કુટુંબોનું પાલન-પોષણ કરનાર જે હોય છે તે કૌટુંબિક છે. હસ્તિપ્રમાણ દ્રવ્ય-મણિ-મુક્તા-પ્રવાલ-સુવર્ણ-રજત વગેરે દ્રવ્યરાશિના જે સ્વામી હોય છે તે જઘન્ય ઇભ્ય છે તેમજ હસ્તિપરિમિત વજ્રમણિ માણિક્ય રાશિના જે સ્વામી હોય છે તે મધ્યમ ઇભ્ય છે, [illegible] હસ્તિ-

हस्तिपरिमितकेवलवज्रराशिस्वामिन उत्कृष्टाः, श्रेष्ठिनः–लक्ष्मीकृपाकटाक्षप्रत्यक्षलक्ष्यमाणद्रविणलक्षलक्षणविलक्षणहिरण्यपट्टसमलङ्कृतमूर्धानो नगरप्रधानव्यवहारकारिणः, सेनापतयः–चतुरङ्गसेनानायकाः सार्थवाहाः–गणिम–धरिम–मेय–परिच्छेद्यरूप–क्रयविक्रेयवस्तुजातमादाय लाभेच्छया देशान्तराणि व्रजतां सार्थं वाहयन्ति–योग–क्षेमाभ्यां परिपालयन्ति, दीनजनोपकाराय मूलधनं दत्त्वा तान् समर्द्धयन्तीति तथा, तत्र गणिमम्–एक–द्वि–त्रि–चतुरादिसंख्याक्रमेण यद्दीयते, यथा–नारिकेल–पूगीफल–कदलीफलादिकम्, धरिमम्–तुलासूत्रेण तोल्य यद्दीयते, यथा–व्रीहि–यव–लवण–सितादि, मेयं–शरावलघुभाण्डादिना तोल्य यद्दीयते, यथा–दुग्ध–घृत–तैल–प्रभृति, परिच्छेद्यं च–प्रत्यक्षतो निकषादिपरीक्षया यद्दीयते, यथा–मणिमुक्ता–प्रवालाऽऽभरणादि. मन्त्री–रहस्यकार्यकारी स एव महान् महामन्त्री, गणकाः ज्यौतिषवेत्तारः, दौवारिकाः–द्वारिनियुक्ताः द्वारपालाः, अमात्याः राज्याधिष्ठायकाः सहवासिराजपुरुषविशेषाः, चेटाः–चरणसेवकाः किङ्कराः, पीठमर्दाः–राजसमीपस्थायिनो राजवयस्काः सेवकविशेषाः, नगरेति नागरा नगरनिवासिनो जनाः, निगमाः–व्यापारिगणाः,

---

केवल वज्रराशि के जो स्वामी होते हैं वे उत्कृष्ट इभ्य हैं. लक्ष्मी की जिनपर पूरी २कृपा है, और इसी कृपा के कारण जिनके लाखों के खजाने हों, तथा जिनके मस्तक पर उन्हीं को सूचित करनेवाला चान्दी का विलक्षण पट्ट शोभायमान हो रहा हो ऐसे नगर के प्रधानव्यापारी श्रेष्ठी कहलाते हैं । चतुरङ्गसेना के नायक जो होते हैं वे सेनापति हैं, जो गणिम–गिनकर खरीदने बेचने योग्य नारियल, सुपारी केला आदि मेय–शराब आदि से नापकर खरीदने बेचने योग्य दूध, घी, तेल, आदि वस्तुओं को तथा परिच्छेद्य–कसौटी आदि पर परीक्षा करके खरीदने बेचने योग्य मणि, मोती, मूंगा, गहना आदिवस्तुओं को लेकर लाभ के लिये देशान्तर में जाने

પરિમિત વજ્રરાશિના જે સ્વામી હોય છે તે ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય છે. જેની ઉપર લક્ષ્મીની પૂર્ણ કૃપા છે અને એથી જ જેમની પાસે લાખોના ભંડાર ભરેલા છે તેમજ જેમના મસ્તક પર તેમને જ સૂચવતો ચાંદીનો વિલક્ષણ પટ્ટ શોભાયમાન થઈ રહ્યો હોય એવા નગરના પ્રધાન વ્યાપારી શ્રેષ્ઠી કહેવાય છે. જે ચતુરંગ સેનાના નાયક હોય છે તે સેનાપતિ છે જે ગણિમ–ગણીને વેપાર કરવા યોગ્ય નારિયેલ, સોપારી કેળા વગેરે વસ્તુઓને ગણિમ કહે છે મેય–શરાવા વગેરે નાના વાસણ વગેરેથી માપીને વેપાર કરવા યોગ્ય દૂધ, ઘી, તેલ વગેરે વસ્તુઓને મેય કહેછે તેમજ પરિચ્છેદ્ય કસોટી વગેરે પર પરીક્ષણ કરીને વેપાર કરવા યોગ્ય મણિ, મોતી પ્રવાલ, આભૂષણો વગેરે વસ્તુઓને સાથે

दूताः-वार्ताहारिणो जनाः, सन्धिपालाः-राज्यसन्धिरक्षकाः, एतैः अनेक गणनायकादिभिः सार्द्धं संपरिवृतः-परिवेष्टितः विहरामि-तिष्ठामि। ततः-तदनन्तरम् तस्मिन् काले नगरगुप्तिकाः-नगररक्षकाः, मम समक्षं सलोढ्-चोरितवस्तुसहितम्। सग्रैवेयकम्-ग्रीवाबद्धचोरितवस्तुकम् अवकोटकबन्धनबद्धम्-अवकोटकम-ग्रीवायाः पश्चाद्भागे मोटनेन यथया सह हस्तयोर्बन्धनं, तदवकोटकबन्धनं तेन बद्धं चौरम् उपनयन्ति-मम समीपे आनयन्ति, तद्

साथ सार्थ को ले जाते है, तथा प्राप्त नई वस्तु की प्राप्ति और क्षेम-प्राप्तवस्तु की रक्षा के द्वारा उनका पालन करते है, अनाथ की भलाई के लिये उन्हें पूंजी देकर व्यापारद्वारा धनवान बनाते है वह सार्थवाह है राजाके लिये उचितमंत्र सलाह देनेवाले का नाम मंत्री है इन मंत्रीयों के ऊपर जो मंत्री होता है वह महामंत्री है, ज्योतिषशास्त्र के वेत्ता का नाम गणक है द्वार पर रक्षा के निमित्त नियुक्त हुए व्यक्ति का नाम द्वारपाल है, राज्य के अधिष्ठायक सहवासिराजपुरुषविशेष का नाम अमात्य है. चरण सेवक का नाम चेट है, राजा की उमर के बराबर जो व्यक्ति राजा के ही पास रहते है ऐसे सेवक विशेष का नाम पीठमर्द है, नगरनिवासी जनता का नाम नागरिक है व्यापारिगण का नाम निगम है। सन्देश हर का नाम दूत है राज्यसन्धिके रक्षक का नाम सन्धिपाल है। ग्रीवा के पश्चाद्भाग में मोडने से जो उसी ग्रीवा के साथ दोनों हाथों का बांधना जिस बंधन में होता है उस बन्धन का नाम अवकोटक बंधन है। प्रदेशी राजा के

લઈને લાભ માટે દેશાંતરમાં જનાર સાર્થને લઈ જાય છે તેમજ યોગ નવી વસ્તુની પ્રાપ્તિ અને ક્ષેમ પ્રાપ્ત વસ્તુની રક્ષા વડે તેમનું પાલન કરે છે ગરીબ માણસોના ભલા માટે તેમને દ્રવ્ય આપીને વેપારવડે તેમને ધનવાન બનાવે છે તે સાર્થવાહ કહેવાય છે રાજાને જે યોગ્ય મંત્ર-સલાહ આપે છે તે મંત્રી છે આ મંત્રિઓની ઉપર જે મંત્રી હોય છે તે મહામંત્રી છે જ્યોતિષશાસ્ત્રને જાણનાર ગણક કહેવાય છે દ્વાર પર રક્ષા માટે નિયુક્ત કરેલ માણસને દ્વારપાલ કહે છે. રાજાના અધિષ્ઠાયક સહવાસિ રાજપુરુષ વિશેષનું નામ અમાત્ય છે ચરણ સેવકનું નામ ચેટ છે રાજાની ઉંમરની જ જે વ્યક્તિ રાજાની પાસે રહે છે એવી સેવક વિશેષ વ્યક્તિનું નામ પીઠમર્દ છે નગર નિવાસી જનતા નાગરિક કહેવાય છે. વેપારી વર્ગનું નામ નિગમ છે છે સંદેશહરનું નામ દૂત છે રાજ્યસંધિના રક્ષકનું નામ સંધિપાલ છે ગ્રીવાને પાછળની તરફ વાળવાથી તે ગ્રીવાની સાથે બન્ને હાથો જેબંધનથી બાંધવામાં આવે છે તે બંધનનું નામ અવકોટક બંધન છે. પ્રદેશી રાજાનું કહેવું આ પ્રમાણે છે

खलु अह तं पुरुषं जीवन्तमेव अयस्कुम्भ्यां लोहकोष्ठिकायां प्रक्षेपयामि, तामयस्कुम्भीम् अयोमयेन-लोहमयेन पिधानेन-आच्छादनेन पिधापयामि-आच्छादयामि, तामयस्कुम्भीं च-पुनः अयसा-द्रवीभूतलोहेन च-पुनःत्रपुणा त्रपुद्रवेण अङ्कयामि-अङ्कितां करोमि-मुद्रितां करोमीत्यर्थः। तामयस्कुम्भीम् आत्मप्रत्ययिकैः-निजविश्वासपात्रैः पुरुषैः रक्षयामि-रक्षितां कारयामि, ततः-तदनन्तरम्, अहम् अन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्काले यत्रैव चोर-युक्ता अयस्कुम्भी तत्रैव-उपागच्छामि, उपागम्य-तामयस्कुम्भीम् 'उग्गलं-त्थावेमि' त्ति उत्क्षेपयामि उद्घाटयामि, अत्र-उत्पूर्वकस्य क्षिप्धातो गल-त्थादेशेन रूपसिद्धि र्बोध्याः। "हैम०। ८।४।१४३।" उत्क्षेप्य-उद्घाटय तत्रस्थितं तं पुरुष-चोर स्वयमेव पश्यामि, नैव खलु तस्यां अयस्कुम्भ्यां किञ्चित्-किमपि छिद्रमिति वा विवरं-विलम् इति वा अन्तरम्-अवकाशः इति वा राजिः-लेखा इति वा आसीत्, यतः-यस्मात् छिद्रादितः स जीवः चोरपुरुषजीवः अन्तः-अयस्कुम्भ्या अन्तरप्रदेशात् बहिः-बहिः प्रदेशे निर्गतः-निसृतो भवितुमर्हेत्, हे भदन्त! यदि-चेत् खलु तस्या अयस्कुम्भ्याः किञ्चित् छिद्र यावत्-यावत्पदेन-"विवरम्, अन्तरम्, राजिः" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः एवं च छिद्रादि भवेत्-स्यात् यतः-यस्मात् छिद्रादितः खलु स जीवः अन्तः अयस्कुम्भीमध्यात् बहिर्निर्गतः स्यात्, तदा-अयस्कुम्भीमध्यत-स्तच्चोरजीवनिस्सरणे सति खलु अह श्रद्दध्यां तव वचने विश्वस्याम्, प्रतीयां-विशेषतो विश्वस्याम्, रोचयेय रुचिविषयं कुर्याम्, यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् नो तत जीवः स शरीरम्। यस्मात्-कारणात् खलु भदन्त! तस्याः

कहने का अभिप्राय ऐसा है कि जब चोर को पूर्वोक्त रूप से बांधकर लोहे की कोठी में बन्द कर दिया गया और लोहे को गलाकर तथा राग को गलाकर उसके ढकन सहित मुख को इस तरह से बन्दकर दिया गया कि उसमें थोडा सा भी छिन्द्र आदि न रहा। तब ऐसी स्थिति में वह चोर उसमें मर गया. इस पर ऐसा विचार उस प्रदेशी राजा को हुआ कि यदि जीव और शरीर भिन्न २ हैं तो उस कोठी में छिन्द्र आदि के अभाव से उसका जीव उसमें से कहां से होकर निकला,

જ્યારે ચોરને પૂર્વોક્ત રીતે બાંધીને લોખંડના નળામાં બંધ કરવામાં આવ્યો અને લોખંડને પીગળાવીને તેમજ રાગને પીગાળીને તે ઢાંકણુ સહિત મુખને એવા પ્રકારે બંધ કરવામાં આવ્યું કે તેમાં જરાએ છિદ્ર વગેરે રહ્યું નહિ. ત્યારે એવી પરિસ્થિતિમાં તે ચોર તેમાં મરણ પામ્યો. એને લઈને તે પ્રદેશી રાજાને આ જાતનો

कुम्भ्याः नास्ति, किञ्चित् छिद्रं वा यावत् राजिर्वा, अतः स कोलो कुम्भ्या मध्यात् बहिर्निर्गतः स्यात् तस्मात् कारणात् छिद्राविविरहेण निःसर्व- मवकत्वात् ये मम प्रतिज्ञा मत्तव्यरूपा सुप्रतिष्ठिता-सुष्ठु समवस्थिता न तु लप्पिता यथा तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् ॥सू १३५॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवायगंभीरा, अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागार सालाए अंतो अंतो अणुप्पविसइ तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणणिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइ दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया महया सद्देणं तालेज्जा, से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ ? हंता णिग्गच्छइ, अत्थि णं पएसी ! तीसे कुडागार सालाए केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ? नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं ॥सू० १३६॥

अतः निकलने के अभाव यही प्रतीत होता है कि जीव शरीर से भिन्न नहीं है जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है ॥सू १३५॥

નિચાર થયો કે જો જીવ અને શરીર જુદાં જુદાં તે હોત તો નળામાં છિદ્ર વગેરે ન હોવાથી તેનો જીવ તેમાંથી ક્યાં થઈને નીકળ્યો ? નીકળી ન શકવાને લીધે આ વાત સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જીવ શરીરથી ભિન્ન નથી. જે જીવ છે તેજ શરીર છે અને જે શરીર છે તેજ જીવ છે ॥ સૂ. ૧૩૫ ॥

छाया—ततःखलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-सा यथानामकं कूटाकारशाला स्यात् द्विधातो लिप्ता गुप्ता गुप्तद्वारा निवात-गम्भीरा, अथ खलु कश्चित् पुरुषः भेरीं च दण्डं च गृहीत्वा कूटाऽऽकार-शालायामन्तरन्तः अनुःप्रविशति तस्याः कूटाऽऽकारशालायाः सर्वतः समन्तात् घननिचितनिरन्तरनिश्छिद्राणि द्वारवदनानि पिदधाति, तस्याः कूटाऽऽकार-

---

'तएणं केसी कुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) इसके बाद केशीकुमार श्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (से जहा नामए कूडागा-रसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्त दुवारा णिवायगंभीरा) हे प्रदेशिन ! जैसे कोई एक कूटाकारशाला हो पर्वत की शिखर जैंसी आकृति-वाला भवन हो और वह भीतर बाहर में आच्छादित हो, आच्छादित द्वार प्रदेशवालीहो, निवात गंभीर हो वायुहित होती हुइ गंभीर अन्तः प्रदेशवाली हो (अहणं केइपुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अणुप्पविसइ) अब कोई पुरुष भेरी और दंडे को लेकर उस कूटाकारशाला के भीतर घुस जाता है, (तीसेकूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) और घुसकर वह उसके दरवाजों को चारों तरफ से इस तरह से बन्दकर लेता है कि जिससे उनके किवाड आपस में बिलकुल सट जाते हैं थोडा सा भी अन्तर उनमें नहीं रहता है. छिद्र उनके बन्द हो जाते हैं,

---

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) त्यार पछी केशी कुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं (से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता-गुत्तदुवारा णिवायगंभीरा) हे प्रदेशिन् ! जेम कोई एक कूटाकारशाळा होय पर्वतना आकार जेवुं भवन होय अने ते बहार अने अंदरना भागमां आच्छादित द्वार प्रदेशयुक्त होय, निवात गंभीर होय—पवन रहित तेमज गंभीर अंत प्रदेश युक्त होय, (अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अणुप्पविसइ) हवे कोई पुरुष भेरी अने दंडाने लईने ते कूटाकार शाळामा पेसी जाय छे (तीसे कूडा-गारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) अने पेसीने ते बधा द्वारोने आ प्रमाणे बंध करी ले छे के जेथी तेमना बारणांना कमाडो एकदम अडीने बंध थई जाय छे तेमनी वच्चे थोडुं पण एना

मध्यरकुम्भ्यां नास्ति, किमपि छिद्रं वा यावद्राजयो, यतः स जीवो ऽन्तः मध्याद् बहिर्निर्गतः स्यात् तस्मात् कारणात् छिद्रादिविरहेण निःसर्णमपकस्मात् मे मम प्रतिज्ञा अन्यत्वरूपा सुप्रतिष्ठिता-सुष्ठु समवस्थिता न तु तच्चिता यथा तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् ॥सू १३५॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवायगंभीरा, अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अंतो अणुप्पविसइ तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणणिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया महया सद्देणं तालेज्जा, से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ ? हंता णिग्गच्छइ, अत्थि णं पएसी ! तीसे कूडागारसालाए केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ? नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं ३ ॥सू. १३६॥

अतः निकलने के अभाव यही प्रतीत होता है कि जीव शरीर से भिन्न नहीं है जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है ॥सू १३५॥

વિચાર થયો કે જો જીવ અને શરીર જુદાં જુદાં તે હોય તો તેમાંથી છિદ્ર વગેરે ન હોવાથી તેનો જીવ તેમાંથી ક્યાં થઈને નીકળ્યો ? નીકળી ન શકવાને લીધે આ વાત સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જીવ શરીરથી ભિન્ન નથી. જે જીવ છે તેજ શરીર છે અને જે શરીર છે તેજ જીવ છે ॥ સૂ. ૧૩૫ ॥

अत्यन्तमध्यप्रदेशे कश्चित् कोऽपि पुरुषः भेरीं च पुनः दण्डं गृहीत्वा अनुप्रविशति, स प्रविष्टः पुरुषः तस्याः कूटाऽऽकारशालायाः-तत्कूटाकारशाला-सम्बन्धीनि घननिचितनिरन्तरनिश्छिद्राणि-घनानि निचिडानि निचितानि-अत्यन्तमिलितानि अत एव निरन्तराणि-अन्तररहितानि च-पुनः निश्छिद्राणि-छिद्ररहितानि द्वारवदनानि-द्वारमुखानि सर्वतः-सर्वदिक्षु समन्तात्-सर्वं विदिक्षु पिदधाति-आच्छादयति, तस्या. पिहितायाः कूटाकारशालायाः बहु मध्यदेशभागे-अत्यन्तमध्यदेशभागे. स्थित्वा स पुरुषः तां भेरीं दण्डकेन महता महता शब्देन यथा अत्युच्चः शब्दः समुत्पद्येत तथेत्यर्थः ताडयेत्-अथ: नूनं हे प्रदेशिन् ! सः-दण्डाघातजनितः शब्दः भेरीशब्दः अन्तः-मध्यप्रदेशात् बहिः-बहिर्प्रदेशे निर्गच्छति ?-निस्सरति ? इति प्रश्नः। प्रदेशी प्राह -हन्त ! इति स्वीकारे हे भदन्त ! निर्गच्छति-केशीकुमारश्रमणः कथयति हे प्रदेशिन्! तस्याः-कूटाऽऽकारशालायां किञ्चित् छिद्रं वा यावत् विवरं वा अन्तरं वा राजिर्वा अस्ति यतः यस्मात् स शब्दः अन्तः कूटाकारशालाऽभ्यन्तरप्रदेशाद् बहिर्निर्गतःनिसृतः स्यात् ?। इति केशिना पृष्टे प्रदेशी प्राह-नायमर्थः समर्थः छिद्रादि रूपोऽर्थस्तत्र न युज्यते सर्वथाऽऽवृतत्वात् । पुनरपि केशीमाह-हे प्रदेशिन ! एवमेव-एतद्दृष्टान्तनुसारेणैव अप्रतिहतगतिः-अकुण्ठितगतिः जीवोऽपि पृथिवीं भित्त्वा शिलां-प्रस्तरं भित्त्वा पर्वतं भित्त्वा अन्तः मध्यप्रदेशात् बहिर्निर्गच्छति, तत्-तस्मात्-उक्तदृष्टान्तेन हे प्रदेशिन् ! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने श्रद्धां कुरु अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो स जीवः तच्छरीरम् ॥ सू० १३६ ॥

कोई छिन्द्र है, यावत् न कोई रेखा है कि जिसमे होकर वह शब्द उसमें से बाहर निकला हो ? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अर्थात् वहां पर कोई छिद्रादि नहीं है. (एवामेव पएसी ! जीवेवि-अप्पडिहयगई पुढविंपि भिच्चा, सीलं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ) इसी प्रकार हे प्रदेशिन् ! जीव भी अप्रतिहत गतिवाला है अतः वह पृथिवी को भेद करके, शिला को भेद करके उसके भीतर से होकर बाहर निकल जाता है। (तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! अण्णो-

---

કરો કે તે કૂટાગાર શાળામા કોઇ છિદ્ર નથી યાવત્ કોઇ રેખા (તરાડ) પણ નથી કે જેમનાથી તે શબ્દ તેમાંથી બહાર નીકળતો હોય ? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત ! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે તેમાં કોઈ છિદ્ર વગેરે નથી (एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहयगई, पुढविंभिच्चा, सिलं भिच्चा, अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ ! જીવ પણ અપ્રતિહત ગતિ યુક્ત છે એથી તે પૃથવીનું ભેદન કરીને, શિલાનું ભેદન કરીને, તેની અંદર થઇને બહાર નીકળી જાય છે. (तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो

शालाया बहुमध्यदेशभागे स्थित्वा तां भेरीं दण्डकेन महता महता शब्देन ताडयत्, अथ नून प्रदेशिन्! स शब्दःखलु अन्तः बहिर्निर्गच्छति ? हन्त निर्गच्छति। अस्ति खलु प्रदेशिन्! तस्याः कूटाऽऽकारशालायाः किञ्चित् छिद्रं वा यावत् राजिर्वा यतः खलु स शब्दोऽन्तर्बहिर्निर्गतः? नायमर्थः समर्थः, एवमेव प्रदेशिन् जीवोऽपि अप्रतिहतगतिः पृथिवीं भित्त्वा शैलं भित्त्वा अन्तर्बहिर्निर्गच्छति तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! अन्यो जीवः अन्यच्छरीरं नो तज्जीवः स शरीरम् ॥ सू० १३६॥

टीका—'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि—ततःखलु केशी कुमारश्रमण एवमवादीत्—तद् यथा नामकः=यथा दृष्टान्तम्=एतद्विषये दृष्टान्त प्रदर्श्यते, काचित् कूटाऽऽकारशाला-पर्वतशिखराकृतिकभवनम् स्यात् भवेत्, सा च द्विधातः-अन्तर्बहिःप्रदेशयोः गुप्ता आच्छादिता, गुप्तद्वारा-आच्छादितद्वारप्रदेशा निवातगम्भीरा निवाता पवनरहिता सती गम्भीरा गम्भीरान्तःप्रदेशा स्यात्। अथ खलु तस्याः कूटाकारशालायाः अन्तरन्तः

है, (तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएण महया २ सद्देण तालेज्जा) इस तरह से करके अब उस कूटाकार शालाके ठीक ठीक मध्यभागमें खड़ा होकर उस भेरी को जोर २ से उस डंडे से इस ढंग से बजाता है कि जिससे उसमें से बहुत ही अधिक जोर की ऊँची आवाज निकले (सेणूणं पएसी से सद्दे अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ) अब प्रदेशिन्! यह कहो यह उसका शब्द जो कि दण्डाघात से उत्पन्न हुआ है उस कूटाकारशाला के मध्य प्रदेश से बाहर निकलता है या नहि? (हंता, णिग्गच्छइ) हां, भदन्त! बाहर निकलता है। (अत्थिणं पएसी! तीसे कूडागारसालाए केइछिड्डे वा जाव राइ वा जओणं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए) तो हे प्रदेशिन्! विचारो उस कूटाकारशालामें न

હોતી નથી તેમના બધા છિદ્રો બંધ કર્યા હોય છે (तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरीं दंडएण महया महया सद्देण तालेज्जा) આ પ્રમાણે કરને તે કૂટાકારશાળાના એકદમ મધ્યભાગમાં તે ઊભો થઈને તે ભેરીને તે દંડથી આ આ પ્રમાણે વગાડે છે કે તેમાંથી બહુ જ જબરા શબ્દ નીકળે (से नूणं पएसी से सद्दे अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ ?) હવે પ્રદેશિન્! તમે મને કહો કે તે ભેરીમાંથી ઉત્પન્ન થયેલો શબ્દ તે કૂટાકાર શાળાના મધ્યપ્રદેશ થી બહાર નીકળે છે (हंता णिग्गच्छइ) હા બહાર નીકળે છે.(अत्थिणं पएसी! तीसे कूडागारसालाए कइ छिड्डे वा जाव राइ वा जओ णं से सद्दे अंतो बहिया णिग्गए) તો હે પ્રદેશિન્! તમે વિચાર

अत्यन्तमध्यप्रदेशे कश्चित् कोऽपि पुरुषः भेरीं च पुनः दण्ड गृहीत्वा अनुप्रविशति, स प्रविष्टः पुरुषः तस्याः कूटाऽऽकारशालायाः-तत्कूटाकारशाला सम्बन्धीनि घननिचितनिरन्तरनिश्छिद्राणि-घनानि निबिडानि निचितानि-अत्यन्तमिलितानि अत एव निरन्तराणि-अन्तररहितानि च-पुनः निश्छिद्राणि-छिद्ररहितानि द्वारवदनानि-द्वारमुखानि सर्वतः-सर्वदिक्षु समन्तात्-सर्वविदिक्षु पिदधाति-आच्छादयति, तस्या पिहितायाः कूटाकारशालायाः बहुमध्यदेशभागे-अत्यन्तमध्यदेशभागे, स्थित्वा स पुरुषः तां भेरीं दण्डकेन महता महता शब्देन यथा अत्युच्चः शब्दः समुत्पद्येत तथेत्यर्थः ताडयेत्-अथः नूनं हे प्रदेशिन् ! सः-दण्डाघातजनितः शब्दः भेरीशब्दः अन्त-मध्यप्रदेशात् बहिः-बहिर्प्रदेशे निर्गच्छति ?-निस्सरति ? इति प्रश्नः । प्रदेशी माह-हन्त ! इति स्वीकारे हे भदन्त ! निर्गच्छति-केशीकुमारश्रमणः कथयति हे प्रदेशिन्! तस्याः-कूटाऽऽकारशालाया किञ्चित् छिद्रं वा यावत् विवर वा अन्तरं वा राजिर्वा अस्ति यतः यस्मात् स शब्दः अन्तः कूटाकारशालाऽभ्यन्तरप्रदेशाद् बहिर्निर्गतःनिसृतः स्यात् ?। इति केशिना पृष्टे प्रदेशी माह-नायमर्थः समर्थः छिद्रादि रूपोऽर्थस्तत्र न युज्यते सर्वथाऽऽवृतत्वात् । पुनरपि केशीमाह-हे प्रदेशिन ! एवमेव-एतद्दृष्टान्तनुसारेणैव अप्रतिहतगतिः-अकुण्ठितगतिः जीवोऽपि पृथिवीं भित्त्वा शिलां-प्रस्तरं भित्त्वा पर्वतं भित्वा अन्तः मध्यप्रदेशात् बहिर्निर्गच्छति, तत्-तस्मात्-उक्तदृष्टान्तेन हे प्रदेशिन् ! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने श्रद्धां कुरु अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो स जीवः तच्छरीरम् ॥ सू० १३६ ॥

कोई छिन्द्र है, यावत् न कोई रेखा है कि जिससे होकर वह शब्द उसमें से बाहर निकला हो ? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अर्थात् वहां पर कोई छिद्रादि नहीं है. (एवामेव पएसी ! जीवेवि-अप्पडिहयगई पुढविंपि भिच्चा, सीलं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ) इसी प्रकार हे प्रदेशिन् ! जीव भी अप्रतिहत गतिवाला है अतः वह पृथिवी को भेद करके, शिला को भेद करके उसके भीतर से होकर बाहर निकल जाता है। (तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! अण्णो-

---

કરો કે તે કૂટાગાર શાળામા કોઇ છિદ્ર નથી યાવત્ કોઇ રેખા (તરાડ) પણ નથી કે જેમનાથી તે શબ્દ તેમાંથી બહાર નીકળતો હોય ? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત ! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે તેમા કોઈ છિદ્ર વગેરે નથી (एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहयगई, पुढविंभिच्चा, सिलं भिच्चा, अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ ! જીવ પણ અપ્રતિહત ગતિ યુક્ત છે એથી તે પૃથિવીનું ભેદન કરીને, શિલાનુ ભેદન કરીને, તેની અંદર થઇને બહાર નીકળી જાય છે. (तं सद्दहाहि णं तुमं पए... अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमण एवं वयासी अत्थिणं भंते! एसा पण्णाओ उवमो, इमेण पुण कारणेणं णो उवागच्छइ, एव खलु भंते! अह अन्नया कयाइ बाहिरियाए उव ट्ठाणसालाए जाव विहरामि, तएण मम णगरगुत्तिया ससक्ख जाव उवणे ति, तएणं अह त पुरिस जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अउकुभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि जाव आय पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तएण अह अन्नया कयाई जेणेव सा अउकुमी, तेणेव उवागच्छामि, त अउकुभि उग्गलत्थावेमि, त अउ कुंभि किमिकुंभिपिव पासामि, णोचेवणं तीसे अउकुभीए केइछिड्डे वा जाव राईइ वा जओ णं ते जीवा बहिंयाहिंतो अणुप्पविट्ठा, जइ णं तीसे अउकुभीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा, तो ण अह सद्दहेज्जा, जहा–अन्नो जीवो त चेव, जम्हा णं तीसे अउकु भीए नत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा तम्हा सुप्पइट्ठिआ मे पइण्णा जहा–स जीवो त सरीर त चेव ॥ सू० १२७ ॥

छाया—ततःखलु प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन पुनःकारणेन मो उपागच्छति),

जीवो मण्णं सरीर णो तं जीवो तं सरीर) अतः हे प्रदेशिन! तुम विश्वास करो जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है जीव शरीर रूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ को लेकर ही यह मूलार्थ लिखा है भावार्थ इसका केवल यही है कि जिस प्रकार शब्द अप्रतिहतगतिवाला है उसी प्रकार से जीव भी अप्रतिहतगतिवाला है अतः वह किसी भी स्थितिमें प्रतिहतगति वाला नहीं हो सकता है ॥ सू० १३१ ॥

'तए ण पएसी राया इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसी

तं सरीरं) એથી હે પ્રદેશિન્! તમે વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી.

ટીકાર્થ—તે લક્ષમાં રાખીને જ આ મૂલાર્થ લખવામાં આવ્યો છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ શબ્દ અપ્રતિહત અતિ મુક્ત હોય છે. એથી તે કદી તે સ્થિતિમાં પણ પ્રતિહત અતિમુક્ત થઈ શકે નહિ. ॥ સૂ. ૧૩૧ ॥

'त एण पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(त एणं) ત્યાર પછી (पएसी राया) કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે

एवं खलु भदन्त ! अहमन्यदा कदाचित् बाह्यायाम् उपस्थानशालायां यावत् विहरामि, ततः खलु मम नगर गुप्तिकाः ससाक्ष्यं यावद् उपनयन्ति ततः खलु अहं तं पुरुषं जीविताद् व्यपरोपयामि, व्यपरोप्य अयस्कुम्भ्यां प्रक्षेपयामि अयोमयेन पिधानकेन पिधापयामि यावत् आत्मप्रत्ययिकैः पुरुषैः रक्षयामि, ततः खलु अहं अन्यदा कदाचित् यत्रैव सा अयस्कुम्भी तत्रैव

कुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा) हे भदन्त ! यह आपके द्वारा कही गई उपमा-(दृष्टान्त) बुद्धिविशेष रूप है (इमेण पुण कारणेणं णो उ०) किन्तु इस वक्ष्यमाण कारण से मेरे मनमें जीव और शरीर का भेद नहीं आता है-युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता है। इसी बात को अब प्रदेशी राजा प्रकट करता है -(एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि) हे भदन्त ! मैं एक दिन बाहर की उपस्थान शाला में यावत् बैठा हुआ था (तएणं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेंति) उस मेरे नगर रक्षकोंने साक्षिसहित यावत् एक चोर को उपस्थित किया (तएणं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि) मैंने उस चोर को प्राणरहित कर दिया (ववरोत्ता अउकुंभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणयणं पिहावेमि) प्राणरहित करके फिर मैंने उसे अयस्कुंभी (लोहेकी कोठी) में अपने पुरुषों से डलवा दिया (जाव आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) यावत् फिर मैंने अपने आत्मरक्षक पुरुषों का वहा पहरा नियुक्त कर दिया. (तएणं अहं

कह्युं-(अत्थिणं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा) हे भदंत ! आ तमारा वडे प्रयुक्त उपमा (दृष्टांत) बुद्धि विशेष रूप छे. (इमेण पुण कारणेणं णो उ०) एनाथी मारा मनमां जीव अने शरीरनी भिन्नतानो विचार उत्पन्न थयो नथी मने आ वात युक्तियुक्त पण लागी नहि एज वात हवे प्रदेशी राजा आ प्रमाणे प्रकट करे छे (एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाण सालाए जाव विहरामि) हे भदंत ! हुं एक दिवस बहारनी उपस्थान शाळामां बेठो हतो. (तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेति) मारा नगर रक्षको एक साक्षित सहित यावत् एक चोरने मारी सामे उपस्थित कर्यो (तए णं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि) में ते चोरने मारी नाख्यो. (ववरोवेत्ता अउकुंभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणएण पिहावेमि) मारीने तेने में लोखंडना नळामां पोताना माणसो नंखावी दीधो (जाव आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) यावत् पछी में त्या आत्मरक्षक पुरुषोने

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी अत्थिणं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा, इमेण पुण कारणेणं णो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि, तएणं मम णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अउकुंभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि जाव आए पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तएणं अहं अन्नया कयाइ जेणेव सा अउकुंभी, तेणेव उवागच्छामि, तं अउकुंभिं उग्गलस्थावेमि, तं अउकुंभिं किमिकुंभिपिव पासामि, णो चेवणं तीसे अउकुंभीए केइ छिड्डे वा जाव राईइ वा जओ णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुप्पविट्ठा, जइ णं तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा, तो णं अहं सद्दहेज्जा, जहा—अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं तीसे अउकुंभीए नत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा तम्हा सुपइट्ठिआ मे पइण्णा जहा—तं जीवो तं सरीरं तं चेव ॥ सू० १५७ ॥

छाया—ततःखलु प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन पुनःकारणेन नो उपागच्छति),

जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) अतः हे प्रदेशिन ! तुम विश्वास करो जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है जीव शरीर रूप नहीं—है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ को लेकर ही यह मूलार्थ लिखा है भावार्थ इसका केवल यही है कि जिस प्रकार शब्द अप्रतिहतगतिवाला है उसी प्रकार से जीव भी अप्रतिहतगतिवाला है अतः वह किसी भी स्थितिमें प्रतिहतगति वाला नहीं हो सकता है ॥ सू० १३६ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसी

તં સરીરં) એથી હે પ્રદેશિન્ ! તમે વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી.

ટીકાર્થ—તે લક્ષમાં રાખીને જ આ મૂલાર્થ લખવામાં આવ્યો છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ શબ્દ અપ્રતિહત ગતિ યુક્ત હોય છે. એથી તે જીવ તે સ્થિતિમાં પણ પ્રતિહત ગતિયુક્ત થઈ શકે નહિ. ॥ સૂ. ૧૩૬ ॥

'त एणं पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(त एणं) ત્યાર પછી (पएसी राया) કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે

छिद्रमिति वा यावद् अनुप्रविष्टाः, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा तज्जीवः स शरीरं तदेव ॥ सू० १३७ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि—

टीका--ततः खलु प्रदेशी राजा पुनः केशिकुमारश्रमणम् एवमवादीत् हे भदन्त ! एषा-भवदुक्ता उपमा=दृष्टान्तः प्रज्ञातः=बुद्धिविशेषात्, बुद्धिविशेषजन्या अस्ति, किन्तु अनेन-वक्ष्यमाणेन पुनः कारणेन मे-मम मनसि जीवशरीरयो र्भेदः नोपागच्छति न संगच्छते युक्तियुक्तो नो प्रतिभातीत्यर्थः । तदेव दर्शयति-हे भदन्त ! एवम्-इत्थं खलु अहम् अन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिश्चित्काले बाह्यायाम् उपस्थानशालायां यावत्-यावत्पदेन-अनेकगणनायकादिभिः सार्द्धं संपरिवृत्तो विहरामि, ततः तदा खलु मम नगरगुप्तिकाः-नगररक्षकाः-ससाक्षिकं-साक्षिसहितम्, यावत्-यावत्पदेन-सहोढादिविशेषणविशिष्टं चोरम् उपनयन्ति-उपस्थापयन्ति, ततः खलु अहं तं-पूर्वोक्तं चोरं जीवितात् व्यपरोपयामि-प्राणरहितं करोमि, व्यपरोप्य मारयित्वा अयस्कुम्भ्यां प्रक्षेपयामि-स्वपुरुषै र्निधापयामि, प्रक्षेपितचोरां तामयस्कुम्भीम् अयोमयेन-लोहमयेन पिधानेन पिधापयामि-आच्छादयामि, यावत् यावत्पदेन-अयसा च त्रपुणा च अङ्कयामि, आत्मप्रत्ययिकैः-स्वचि-

---

तं सरीरं चेव) और इसी कारण मैं भी यह श्रद्धा करता हूं कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है । जिस कारण से उस अयस्कुम्भी में कोई छिद्र आदि नहीं थे. फिर भी उसमें जीव आ गये तो इस कारण से मैं तो यही विश्वास करता हूँ कि मेरा कथन कि जीव शरीर रूप है और शरीर जीवरूप है सुप्रतिष्ठित है।

टीकार्थ इस मूलार्थ के जैसा ही है. यहां 'उवट्ठाणसालाए जाव' के इस यावत् पद से पूर्वोक्त अनेक गणनायक आदिकों का ग्रहण हुआ है । तथा 'ससक्खं जाव' के इस यावत्पद से सहोढादिविशेषणों का ग्रहण

चेव) અને એથી જ મને પણ આ વાતમાં ફરી શ્રદ્ધા છે કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે જે કારણથી તે લોખંડના નળામા છિન્દ્ર વગેરે નહોતા છતાંએ તેમા જીવો પ્રવેશ પામ્યા તે કારણથી મને તો એ જ લાગે છે કે જીવ શરીર રૂપ છે. અને શરીર જીવરૂપ છે એ કથન પર મારો સંપૂર્ણપણે વિશ્વાસ સુપ્રતિષ્ઠિત છે

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે અહીં 'उवट्ठाणसालाए जाव' ના આ 'યાવત્' પદથી પૂર્વોક્ત અનેક ગણનાયક વગેરેનું ગ્રહણ થયું છે. તથા 'ससक्ख जाव'ના આ યાવત્પદથી સહોઢાદિ વિશેષણોનું ગ્રહણ થયું છે 'पिहा-

उपागच्छामि तामयस्कुम्भीमुत्क्षपयामि, तामयस्कुम्भीं कृमिकुम्भीमिव पश्यामि नैव खलु तस्याः कुम्भ्याः किञ्चित् छिद्रमिति वा यावद् राजिरिति वा यतः खलु ते जीवा बाह्याद् अनुप्रविष्टाः, यदि खलु तस्या अयस्कुम्भ्याः भवेत् किञ्चित् छिद्रमिति वा यावद् अनुप्रविष्टाः तदाऽहं श्रद्दध्या यथा –अन्यो जीव तदेव, यस्मात् खलु तस्या अयस्कुम्भ्या· नास्ति किमपि

अन्नया कयाइ जेणेव सा अउकुमी तेणेव उवागच्छामि) कुछ दिनों के बाद फिर मैं उस अयस्कुमी के पास गया (त भयकुंभि उगलत्यावेमि) उस अयस्कुमी को उघाड़ा (त अउकुंभि किमिकुंभिपिव पासामि, णो चेव ण तीसे अउकुंमीए केइ छिड्डेइ वा जाव राईइ वा जओ ण ते जीवा बहियाहिंतो अणुप्पविट्ठा) उघाडते ही मैंने उसमें देखा कि वहां उस अयस्कुमी में कृमिकुलों को देखा कि जिससे वह अयस्कुमी कीटमयी हो रही थी अब विचारने की बात यहां ऐसी है कि जब उस अयस्कुमी में न कोई छिद्र था यावत् न कोई रेखा ही थी, कि जिससे होकर वे जीव उसमें बाहिर से आये (जइण भीसे अउकुमीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा) यदि उसमें कोई छिद्रादि होता तो यह बात मान भी ली जाती कि वे उनमें द्वारा उसमें प्रविष्ट हो गये है (तो ण अह सद्देज्जा-जहा-अन्ना जीवा त चेव अम्हाण भीसे अउकुमीए णत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुपविट्ठा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा-तं जीवो

જોઈને ચીધા. (तए ण अह अन्नया कयाइ जेणेव सा अउकुमी तेणेव उवागच्छामि) ઘોડા દિવસો બાદ હું ફરી તે લોખંડના નળાની પાસે ગયો (त अयकुंभि उगलत्थावेमि) તે લોખંડના નળાને ઉઘાડયો (त अयकुंभि किमिकुंभि पिव पासामि, णो चेव ण तीसे अउकुंमीए केइ छिड्डेइ वा, जाव राईइ वा जओ णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुप्पविट्ठा) ઉઘાડિત કરતાની સાથે જ મેં તે લોખંડના નળામાં કૃમિકુળોને જોયા—તે નળો કીટયુક્ત થઈ ગયો હતો. હવે આ વાત વિચાર કરવા યોગ્ય છે કે જ્યારે નળામાં કોઈ પણ છિદ્ર યાવત્ કોઈ પણ રેખા (તરાડ) નહોતી કે જેથી તે જીવો બહારથી તેમાં પ્રવિષ્ટ થઈ શકે (जइणं तीसे अउकुमीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा) જો તેમાં છિદ્ર વગેરે હોત તો આવી વાત માનવામાં પણ આવી શકે તેમાં થઈને તે નળામાં કૃમિઓ પ્રવિષ્ટ થયાં છે (तो ण अहं सद्देज्जा-जहा –अन्नो जीवो त चेव, जम्हाण तीसे अउकुमीए णत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा त जीवो त सरीरं

छिद्रमिति वा यावद् अनुप्रविष्टाः, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा तज्जीवः स शरीरं तदेव ॥ सू० १३७ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि—

टीका—ततः खलु प्रदेशी राजा पुनः केशिकुमारश्रमणम् एवमवादीत् हे भदन्त ! एषा—भवदुक्ता उपमा=दृष्टान्तः प्रज्ञातः=बुद्धिविशेषात्, बुद्धिविशेषजन्या अस्ति, किन्तु अनेन—वक्ष्यमाणेन पुनः कारणेन मे—मम मनसि जीवशरीरयो र्भेदः नोपागच्छति न संगच्छते युक्तियुक्तो नो प्रतिभातीत्यर्थः। तदेव दर्शयति—हे भदन्त ! एवम्—इत्थं खलु अहम् अन्यदा कदाचित्—अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्काले बाह्यायाम् उपस्थानशालायां यावत्—यावत्पदेन—अनेकगणनायकादिभिः सार्द्धं संपरिवृत्तो विहरामि, ततः तदा खलु मम नगरगुप्तिकाः—नगररक्षकाः—ससाक्षिकं—साक्षिसहितम्, यावत्—यावत्पदेन—सहोढादिविशेषणविशिष्टं चोरम् उपनयन्ति—उपस्थापयन्ति, ततः खलु अहं तं—पूर्वोक्तं चोरं जीविताद् व्यपरोपयामि—प्राणरहितं करोमि, व्यपरोप्य मारयित्वा अयस्कुम्भ्यां प्रक्षेपयामि—स्वपुरुषैर्निधापयामि, प्रक्षेपितचोरां तामयस्कुम्भीम् अयोमयेन—लोहमयेन पिधानेन पिधापयामि—आच्छादयामि, यावत् यावत्पदेन—अयसा च त्रपुणा च अङ्कयामि, आत्मप्रत्ययिकैः—स्ववि-

तं सरीरं चेव) और इसी कारण मैं भी यह श्रद्धा करता हूँ कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है। जिस कारण से उस अयस्कुम्भी में कोई छिद्र आदि नहीं थे. फिर भी उसमें जीव आ गये तो इस कारण से मै तो यही विश्वास करता हूँ कि मेरा कथन कि जीव शरीर रूप है और शरीर जीवरूप है सुप्रतिष्ठित है।

टीकार्थ इस मूलार्थ के जैसा ही है. यहां 'उवट्ठाणसालाए जाव' के इस यावत् पद से पूर्वोक्त अनेक गणनायक आदिकों का ग्रहण हुआ है। तथा 'ससक्खं जाव' के इस यावत्पद से सहोढादिविशेषणों का ग्रहण

चेव) અને એથી જ મને પણ આ વાતમાં ફરી શ્રદ્ધા છે કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે જે કારણથી તે લોખંડના નળામાં છિન્દ્ર વગેરે નહોતા છતાંએ તેમાં જીવો પ્રવેશ પામ્યા તે કારણથી મને તો એ જ લાગે છે કે જીવ શરીર રૂપ છે. અને શરીર જીવરૂપ છે. એ કથન પર મારો સંપૂર્ણપણે વિશ્વાસ સુપ્રતિષ્ઠિત છે

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે અહીં 'उवट्ठाणसालाए जाव' ના આ 'યાવત્' પદથી પૂર્વોકત અનેક ગણુનાયક વગેરેનું ગ્રહણ થયું છે તથા 'ससक्ख जाव' ના આ યાવત્પદથી સહોઢાદિ વિશેષણોનું ગ્રહણ થયું છે 'पिहा-

श्यामपार्श्वे पुरुषैः रक्षयामि ततः खलु अहम् अन्यदा कदाचित् यत्रैव-यस्मिन्नेव स्थाने सा-मुरक्षिता अयस्कुम्भी तत्रैव-तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छामि-तदन्तिकं गच्छामि, गत्वा ताम् उत्क्षेपयामि-उद्घाटयामि। तामयस्कुम्भी कृमिकुम्भीमिव कीटमयीमेव-कुम्भीं पश्यामि नैव खलु तस्याः-सुरक्षितायाः अयस्कुम्भ्याः किञ्चित्-किमपि छिद्रमिति वा यावत्-विवर अन्तरम् राजि वा नास्ति यतः-यस्मात्-छिद्रादेः ते कृमिजीवाः बाह्यात्-बाह्यप्रदेशात् अनुप्रविष्टाः-अभ्यन्तरे प्रविष्टा भवेयुः। यदि-चेत् खलु तस्याः-सुरक्षितायाः अयस्कुम्भ्याः भवेत्-स्यात् किञ्चित् छिद्रम् यावद् विवरादिकं भवेत्, यतस्ते जीवाः बाह्यप्रदेशात् अनुप्रविष्टाः स्युः तदा खलु अहं श्रद्दध्यां-तव वचनं विश्वस्याम्, अन्यो जीवः तदेव-पूर्वोक्तमेव अन्यो जीव अन्यच्छरीरं नो तज्जीव स शरीरम् इति। यस्मात्-कारणात् खलु तस्याः-सुरक्षितायाः अयस्कुम्भ्या नास्ति किञ्चित् किमपि छिद्रादिकं यतस्ते जीवाः बाह्यप्रदेशात् अनुप्रविष्टाः स्युः तस्मात् मे-मम प्रतिज्ञा-स्वीकारः सुप्रतिष्ठिता-स्थिरा यथा--तज्जीवः स शरीरं तदेव-पूर्वोक्तमेव नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् इति॥ सू० १३७ ॥

मूलम्——तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी ! अत्थिणं तुमे पएसी कयाइ अए धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ? हंता अत्थि,से णूणं पएसी! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवइ,? हंता भवइ, अत्थिणं पएसी ! तस्स अयस्स केइ छिड्डे वा जेण से

हुआ है। 'पिहावेमि जाव' में आये हुए इस यावत्पद से 'द्रवित लोहे से और द्रवितरांग से मैंने उसे अत्यन्त करवा दिया' इस पूर्वोक्त पाठ का ग्रहण हुआ है। इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि जब कि उस अयस्कुम्भी में किसी भी प्रकार का कोई भी छिद्रादि नहीं था तो उसमें बाहर से जीव कैसे प्रविष्ट हो गये, वहां तो फक्त चोर का ही वह मृत शरीर पड़ा था अतः जीव और शरीर भिन्न २ नहीं है यही कथन समुचित है। सू १३७

वेमि जाव' मां आवेल यावत् पदथी द्रवित लोखंडथी अने द्रवित रांगाथी में तेने अंकित कराबी दीधी आ पाठनुं ग्रहण थयुं छे आ सूत्रनो भावार्थ आ प्रमाणे छे के ज्यारे ते लोखंडना नळामां कोईपण छिद्र वगेरे न होता छतांये तेमां बहारथी जीवो केवी रीते प्रवेश पाम्या त्यां तो फक्त चोरनुं मृत शरीर पडयुं हतुं एथी जीव अने शरीर भिन्न नथी, आ वात समुचित छे ।सू१३७

जोई वहियाहिंतो अंतो अणुप्पविट्टे ? णो इणट्ठे समट्ठे एवामेव पएसी ! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा वहियाहितो अणुप्पविसइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तहेव ।सू० १३८।

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् अस्ति खलु त्वया प्रदेशिन् ! कदाचिद् अयोध्मातपूर्वं वा ध्मापितपूर्वं वा ? हन्त अस्ति, स नूनं प्रदेशिन् ! अयोध्मातं सत् सर्वं अग्निपरिणतं भवति ? हन्त भवति, अस्ति खलु प्रदेशिन् ! तस्य अयसः किञ्चित् छिद्रमिति वा येन तत् ज्योतिः वाह्यात् अन्तरनुप्रविष्टम् नो अयमर्थः समर्थः,

---

'तए णं केसीकुमार समणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ--(तए णं) इसके वाद (केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (आत्थि णं भंते ! पएसी ! कयाइ अएधंतपुव्वे वा धमाविग्रपुव्वे वा) हे प्रदेशिन् । तुम्हारे पास ऐसा लोहा है कि जिसे तुमने पहिले कभी अग्नि में तपाया हो या किसी से तपवाया हो ? (हंता अत्थि) हां भदन्त ! है (से णूणं पएसी अएधंते समाणे सव्वे अगणि परिणए भवइ) तो हे प्रदेशिन् मैं तुमसे ऐसा पूछता हूं कि वह लोहा जब अग्निमें तपाया जाता हैं तब वह सम्पूर्णरूपसे अग्निरूप से परिणत हो जाता है न ? (हंता ? भवइ) प्रदेशीने कहा हां हो जाता है (अत्थि णं पएसी ! तस्स अयस्स केइ छिड्डेइ वा जेणं से जोई वहियाहिंतो अंतो अणुप्पविट्टे?)

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) ત્યાર પછી (केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) કેશીકુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું—(अत्थि णं भंते ! पएसी ! कयाइ अएधंतपुव्वे वा धमाविय पुव्वे वा) હે પ્રદેશિન્ ! તમારી પાસે એવું પણ લોખંડ છે જેને પહેલા ગમે ત્યારે અગ્નિમા ઊનુ કર્યુ કરાવ્યુ હોય ? (हंता अत्थि) હાજી ભદંત ! છે. (से णूणं पएसी अएधंते समाणे सव्वे अगणि परिणए भवइ ?) તો હે પ્રદેશિન્ ! હું તમને આમ પ્રશ્ન કરું છું કે તે લોખંડ જ્યારે અગ્નિ પર તપાવવામા આવે છે ત્યારે તે સંપૂર્ણપણે અગ્નિ રૂપમા પરિણત થઇ જાય છે (हंता भवइ) પ્રદેશીએ ઉત્તરમાં કહ્યું હા, ભદંત થઈ જાય છે. (अत्थिणं पएसी ! तस्स अयस्स केइ छिड्डेइ वा जेणं से जोई वहियाहिंतो अंतो अणुप्पविट्टे ?) તો શું હે પ્રદેશિન્ ! તે લોખંડમા છિદ્ર હોય છે કે જેથી

एवमेव प्रदेशिन्! जीवोऽपि अप्रतिहतगतिः पृथिवीं भित्त्वा शैलं भित्त्वा बाह्यात् अनुप्रविशति, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! तथैव ४ ॥ सू० १३८ ॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

टीका-ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवम्-वक्ष्यमाण वचनम् अवादीत् हे प्रदेशिन्! त्वया कदाचित्-कस्मिंश्चित्काले अयोः=लोहं ध्मातपूर्वं पूर्वं ध्मातम्=अग्निना सप्तापितम् ? वा अथवा ध्मापितपूर्वं=पूर्वं केनचित्पुरुषेण ध्मापितम् अस्ति ? इति प्रश्नः, प्रदेशीप्राह-हन्त अस्ति। केशी पृच्छति-हे प्रदेशिन्! तदयः लोहं नूनं निश्चितम् ध्मातं सत् सर्वं अग्नि परिणतम्-अग्निस्वरूपतया परिणतं भवति ? प्रदेशीप्राह-हन्त भवति! पुनः केशीपृच्छति हे प्रदेशिन्! तस्य अयसः-लोहस्य, किश्चित्-छिद्रमिति वा० छिद्रादिकम् अस्ति ? येन-कारणेन तत् ज्योतिः-अग्निः बाह्यात् बहि-

---

तो क्या हे प्रदेशिन्! उस लोहे में कोई छिन्द्र होता है कि जिससे होकर यह अग्नि बाहर से उस के भीतर घुस जाती है? प्रदेशीने कहा-(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उस लोह में कोइ भी छिद्रादिक नहीं है। (एवामेव पएसी! जीवोऽवि अप्पडि हयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा, बहियाहिंतो अणुप्पविसइ, त सद्दहा हि ण तुमं पएसी तहेव) इसी तरह स हे प्रदेशिन्! जीव भी अप्रति हतगतिवाला है अतः यह पृथिवी को शिला को भेदकर बाहिःप्रदेश से भीतर में घुस जाता है इस कारण हे प्रदेशिन्! तुम मेरे वचन पर विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है ।४।

टीकार्थ स्पष्ट है इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि जिस प्रकार छिद्रा दिसे रहित लोहे के गोले में अग्नि बाहर से उसके प्रत्येक प्रदेश में

તે અગ્નિ બહાર થી તેમાં પ્રવિષ્ટ થઈ જાય છે? પ્રદેશી એ કહ્યું. (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદન્ત! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે તે લોખંડમાં કોઈ પણ છિન્દ્ર વગેરે નથી (एवामेव पएसी! जीवाऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा बहियाहिंतो अणुप्पविसइ, त सद्दहाहि ण तुमं पएसी तहेव) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જીવ પણ અપ્રતિહત ગતિયુક્ત હોય છે એથી તે પૃથિવીને શિલાને છેદીને બહારના પ્રદેશથી અંદરના પ્રદેશમાં પેસી જાય છે આ કારણથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે ॥ સૂ ૪ ॥

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ છિદ્ર વગેરેથી રહિત લોખંડમાં અગ્નિ બહારથી તેના દરેકે દરેક પ્રદેશમાં પ્રવિષ્ટ થઈ જાય છે

प्रदेशात् अन्तः-अयसोऽभ्यन्तरप्रदेशे अनुप्रविष्टं स्यात् ? प्रदेशी कथयति नायमर्थः समर्थः नास्ति तत्र छिद्रादिकमित्यर्थः। केशीमाह-हे प्रदेशिन् ! एवमेव-छिद्रादि विनाऽपि तज्ज्योतिषोऽयोऽभ्यन्तरेऽनुप्रवेशवदेव जीवोऽपि अप्रतिहतगतिः अकुण्ठितगति' पृथिवीं भित्त्वा शिलां-मस्तरं भित्वा वाह्यात् -बहिः प्रदेशात् अन्तरनुप्रविशति, तत्-तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन ! त्वं श्रद्धेहि मद्वचने विश्वसिहि तथैव पूर्वोक्तमेव'अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः सशरीरम्' इति ॥ सू० १३८ ॥

मूलम्--तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी -अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ, अत्थि णं भंते! से जहानामए केइपुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू पंच कंडगं निसिरित्तए ! हंत पभू ! जइ णं भंते ! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पच कंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा जहा-अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे णो पभू पंच कंडयं निसिरित्तए तम्हा सुप्पइट्ठिया मे पइण्णा जहा त जीवो तं चेव ॥ सू० १३९ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु

प्रविष्ट हो जाती है, और इस कारण वह अग्निमय बन जाता है. इसी प्रकार से उस लोहे की टंकी में भी छिद्रादिक के अभाव में भी बाहर से जीव प्रविष्ट हो जाते है क्यों कि जीव अकुण्ठित गतिवाला है. इसकी गति कहीं पर भी नहीं रुक सकती है ॥ सू० १३८ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ-(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) तब प्रदेशी राजाने

અને આથી તે અગ્નિમય થઇ જાય છે તેમજ તે લોખંડના નળા (કોઠી) મા છિદ્ર વગેરે ન હોવા છતાંએ બહારથી જીવો પ્રવિષ્ટ થઇ જાય છે. કેમકે જીવ અપ્રતિહત ગતિવાળો છે એટલે કે જીવની ગતિ કોઇ પણ જગ્યાએ રોકી શકાતી નથી. તેની ગતિ અકુંઠિત છે. ॥ સૂ૦ ૧૩૮ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ—(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) त्यारे

एवमेव प्रदेशिन्! जीवोऽपि अप्रतिहतगतिः पृथिवीं भित्त्वा शैलं भित्त्वा बाह्यात् अनुप्रविशति, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! तथैव ४ ॥ सू० १३८ ॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

टीका–ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिन राजानम् एवम्–वक्ष्यमाण वचनम् अवादीत् हे प्रदेशिन्! त्वया कदाचित्–कस्मिंश्चित्काले अयो=लोह ध्मातपूर्वं पूर्वं ध्मातम्=अग्निना सयोजितम्? वा अथवा ध्मापितपूर्व=पूर्वं केनचित्पुरुषेण ध्मापितम् अस्ति? इति प्रश्नः, प्रदेशीप्राह–हन्त अस्ति। केशी पृच्छति–हे प्रदेशिन्! तदयः लोहं नूनं निश्चितम् ध्मातं सत् सर्वं अग्नि परिणतम्–अग्निस्वरूपतया परिणतं भवति? प्रदेशीप्राह–हन्त भवति! पुनः केशीपृच्छति हे प्रदेशिन्! तस्य अयस–लोहस्य, किञ्चित्–छिद्रमिति वा० छिद्रादिकम् अस्ति? येन–कारणेन तत् ज्योतिः–अग्निः बाह्यात् बहिः–

तो क्या हे प्रदेशिन्! उस लोहे में कोई छिन्द्र होता है कि जिससे होकर वह अग्नि बाहर से उस के भीतर घुस जाती है? प्रदेशीने कहा–(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उस लोहे में कोइ भी छिद्रादिक नहीं है। (एवामेव पएसी! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा, सिलं भिच्चा, बहियाहिंतो अणुप्पविसइ, त सद्दहा हि णं तुमं पएसी तहेव) इसी तरह से हे प्रदेशिन्! जीव भी अप्रतिहतगतिवाला है अतः वह पृथिवी को शिला को भेदकर बाहिप्रदेश से भीतर में घुस जाता है इस कारण हे प्रदेशिन्! तुम मेरे वचन पर विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है ।४।

टीकार्थ स्पष्ट है इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि जिस प्रकार छिद्रादि से रहित लोहे के गोले में अग्नि बाहर से उसके प्रत्येक प्रदेश में

તે અગ્નિ બહારથી તેમાં પ્રવિષ્ટ થઈ જાય છે? પ્રદેશીએ કહ્યું (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદન્ત! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે તે લોખંડમાં કોઈ પણ છિદ્ર વગેરે નથી. (एवामेव पएसी! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा बहियाहिंतो अणुप्पविसइ, त सद्दहाहि णं तुमं पएसी तहेव) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જીવ પણ અપ્રતિહત ગતિયુક્ત હોય છે એથી તે પૃથિવીને શિલાને છેદીને બહારના પ્રદેશથી અંદરના પ્રદેશમાં પેસી જાય છે આ કારણથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે ॥ સૂ ૪ ॥

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ છિદ્ર વગેરેથી રહિત લોખંડમાં અગ્નિ બહારથી તેના દરેકે દરેક પ્રદેશમાં પ્રવિષ્ટ થઈ જાય છે

प्रदेशात् अन्तः-अयसोऽभ्यन्तरप्रदेशे अनुप्रविष्टं स्यात् ? प्रदेशी कथयति नायमर्थः समर्थः नास्ति तत्र छिद्रादिकमित्यर्थः । केशीप्राह-हे प्रदेशिन् ! एव मेव-छिद्रादि विनाऽपि तज्ज्योतिषोऽयोऽभ्यन्तरेऽनुप्रवेशवदेव जीवोऽपि अप्रति- हतगतिः अकुण्ठितगतिः पृथिवीं भित्त्वा शिलां-प्रस्तरं भित्वा बाह्यात् -बहिः प्रदेशात् अन्तरनुप्रविशति, तत्-तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन ! त्वं श्रद्धेहि मद्वचने विश्वसिहि तथैव पूर्वोक्तमेव'अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स-शरीरम्' इति ॥ सू० १३८ ॥

मूलम्---तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी -अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ, अत्थि णं भंते ! से जहानामए केइपुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू पंच कंडगं निसिरित्तए ! हंत पभू ! जइ णं भंते ! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पच कंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा जहा-अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे वाले जाव मंदविन्नाणे णो पभू पंच कंडयं निसिरित्तए तम्हा सुप्पइट्ठियो मे पइण्णा जहा त जीवो तं चेव ॥ सू० १३९ ॥

छाया---ततः खलु प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु

प्रविष्ट हो जाती है, और इस कारण वह अग्निमय बन जाता है. इसी प्रकार से उस लोहे की टंकी में भी छिद्रादिक के अभाव में भी बाहर से जीव प्रविष्ट हो जाते है क्यों कि जीव अकुण्ठित गतिवाला है. इसकी गति कहीं पर भी नहीं रुक सकती है ॥ सू० १३८ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ-(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) तब प्रदेशी राजाने

અને આથી તે અગ્નિમય થઇ જાય છે તેમજ તે લોખંડના નળા (કોઠી) મા છિદ્ર વગેરે ન હોવા છતાંએ બહારથી જીવો પ્રવિષ્ટ થઇ જાય છે. કેમકે જીવ અપ્રતિહત ગતિવાળો છે એટલે કે જીવની ગતિ કોઇ પણ જગ્યાએ રોકી શકાતી નથી. તેની ગતિ અકુંઠિત છે. ॥ સૂ૦ ૧૩૮ ॥

'તए णं पएसी राया' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ—(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) ત્યારે

भदन्त ! एषा मज्ञात उपमा अनेन पुनः मे कारणेन नो उपागच्छति, अस्ति खलु भदन्त ! स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुण यावत् निपुणशिल्पोपगतः प्रभुः । पञ्च काण्डक निसृष्टुम् ! हन्त प्रभु ! यदि खलु भदन्त ! स एव पुरुषो बालः यावत् मन्दविज्ञानः प्रभुर्भवेत् पञ्चकाण्डक निसृष्टुम्, तदा खलु अहं श्रद्दध्यां यथा-अन्यो जीवः तदेव यस्मात् खलु भदन्त ! स

केशीकुमार श्रमण से ऐसा कहा (अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा) हे भदन्त ! यह जो आपने उपमा दी है वह केवल बुद्धिविशेष से जन्य होने के कारण वास्तविक नहीं है (इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ) क्यों कि जो कारण मै प्रदर्शित कर रहा हू उससे मेरे हृदय में जीव और शरीर का भेद जमता नहीं है। (अत्थि णं भंते ! से जहा नामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू पंचकंडग निसिरित्तए) वह कारण ऐसा है-हे भदन्त ! जैसे कोई युवापुरुष हो यावत् वह निपुणशिल्पोपगत हो, तो वह पांचबाणों को एक ही साथ पांच लक्ष्योंको बेधने के लिये छोडने में समर्थ हो सकता है न ? (हंता पभू) केशीकुमार श्रमणने कहा--हां हो सकता है। (जइ णं भंते ! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंचकंडगं निसिरित्तए) अब यदि वही पुरुषबाल, यावत् मन्दविज्ञान वाला अपनी अवस्थापन्न हुआ पांचकाण्डकको-पांचबाणों को छोडने के लिये समर्थ हो जावे तो मैं आपके वचनों को श्रद्धा के विषयभूत बनाउं और यह मानलूं कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, जीव शरीर रूप नहीं

પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમારશ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा) હે ભદંત ! આ પ્રમાણે જે તમોએ ઉપમા આપી છે તે માત્ર બુદ્ધિવિશેષ જન્ય હોવાથી વાસ્તવિક નથી (इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ) કેમકે જે કારણ હું બતાવી રહ્યો છું તેથી મારા હૃદયમાં જીવ અને શરીરની ભિન્નતાની વાત જામ રહી નથી. (अत्थि णं भंते ! से जहानामए केइपुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू पंच कंडगं निसिरित्तए) તે કારણ આ પ્રમાણે છે હે ભદંત ! જેમ કોઈ યુવક હોય યાવત્ તે નિપુણશિલ્પોપગત હોય તો તે પાંચ બાણોને એકી સાથે પાંચ લક્ષ્યોનું વેધન કરવામાં સમર્થ થઈ શકે છે? (हंता पभू) કેશીકુમાર શ્રમણે કહ્યું હા થઈ શકે છે (जइ णं भंते ! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंच कंडगं निसिरित्तए) હવે જો તે યુવક બાળ, યાવત્ મંદવિજ્ઞાનવાળો પોતાની અવસ્થાપન્ન થયેલ પાંચકાંડોને-પાંચ બાણોને છોડવામાં સમર્થ થઈ જાય તો હું તમારા વચનોને શ્રદ્ધા યોગ્ય માની શકું તેમ જ અને આ

एव पुरुषो बालः यावत् मन्दविज्ञानो नो प्रभुः पञ्चकाण्डकं निसृष्टुम् तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः तदेव ॥ सू० १३९ ॥

टीकार्थ-'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

ततः-तदनन्तरं खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणम् एवम्-अनेन प्रकारेण अवादीत्-हे भदन्त! एषा-इयम् उपमा-सादृश्यम् प्रज्ञातः=बुद्धि-विशेषाद् अस्ति न तु वास्तविकी यतः अनेन-वक्ष्यमाणेन पुनः कारणेन जीवशरीरयोर्भेदो मे-मम हृदये नोपागच्छति-न संगच्छते न स्वीकार-योग्यतामर्हति । तदेव दर्शयति-हे भदन्त! अस्ति-भवेत् खलु स यथा नामकः अनिर्दिष्टनामा कश्चित् पुरुषः कीदृशः? इत्याह-तरुणः-युवा यावत् -यावत्पदेन-"युगवान् बलवान् अल्पातङ्कः स्थिरसंहननः स्थिराग्रहस्तः प्रति-

है, और शरीर जीवरूप नहीं है। अतः हे भदन्त! जिस कारण से वह तरुणादि विशेषणों वाला पुरुष जब बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है, तब पांच बाणों को छोडने के लिये समर्थ नहीं होता है इस कारण से मेरी यह प्रतिज्ञा है कि जीव और शरीर एक है, जो जीव है, वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है सुप्रतिष्ठित है।

टीकार्थ—बाद में प्रदेशी राजाने केशीकुमार श्रमण से ऐसा कहा हे भदन्त! आपने जो अभी उपमा देकर जीव और शरीर की पृथक्ता प्रकट की है सो जब मै अपनी इस बात का विचार करता हूं तब यह उनकी पृथक्ता मेरे चित्त में नहीं जमती है, वह बात इस प्रकार से है—कोई एक तरुण पुरुष हो और यावत् वह निपुणशिल्पोपगत हो यहां या... -से 'युगवान् बलवान्. अल्पातङ्कः स्थिर संहननः स्थिरा-

વાત પર વિશ્વાસ કરી લઉ ... રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી... છે અને શરીર ભિન્ન છે. જીવ શરીર વગેરે વિશેષણોથી યુકત યુવક જ્યારે બાળ યા... ! જે કારણને લીધે તે તરુણ પાંચ બાણોને છોડવામા સમર્થ હોતો નથી. આથી જ ... હોય છે, ત્યારે તે જે જીવ છે તેજ શરીર છે અને જે શરીર છે તે જ જીવ છે આ પ્રમાણે એક છે.

ટીકાર્થ—ત્યાર પછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે ... ભદન્ત! તમોએ જે હમણા ઉપમા વડે જીવ શરીરની પૃથકતા પ્રકટ કરી છે તે વિષે હું જ્યારે મારા મનમા વિચાર કરું છું ત્યારે આ વાત મારા મનમા બરાબર જામતી નથી. કેમકે જેમ કોઇ એક તરુણ પુરુષ થાય અને યાવત તે નિપુણ શિલ્પોગત થાય અહીં 'યાવત' પદથી 'યુગવાન, બલવાન, અલ્પાતઙ્ક:, સ્થિરસંહનન:, સ્થિરા-

पूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः चर्मेष्टकद्रुघण मुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवन जवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः दक्षः प्रष्ठः कुशलः मेधावी इत्येतेषां पदानां संग्रहः, निपुणशिल्पोपगतः एतद्‌व्याख्या सप्तमसूत्रतो बोध्या। एतादृशः पुरुषः पञ्चकाण्डकं बाणपञ्चकं युगपत् पठ्चमत्स्यवेधनाय निसृष्टुं-प्रक्षेप्तुं-प्रभुः-समर्थो भवेत्? इति प्रदेशिपश्नं केशीमाह-हे राजन्! हन्त! प्रभुः पञ्चकाण्डकं प्रक्षेप्तुं स समर्थो भवेत्! प्रदेशी कथयति हे भदन्त! यदि चेत् स

अग्रहस्तः, प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहत गात्र, उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहु, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेक दक्ष, पृष्ठः, कुशलः, मेधावी" - इस पाठ का संग्रह हुआ है। इन पदों की व्याख्या सातवें सूत्रमें की जा चुकी है अतः यहीं से इसे देखना चाहिये ऐसा वह पुरुष पांच बाणों को एक साथ पांचमत्स्यों को वेधन करने के लिये हे भदन्त! छोडने में समर्थ हो सकता है न? केशीकुमार श्रमणने तब कहा हे राजन्! ऐसा पूर्वोक्त विशेषणों वाला वह युवा पुरुष एक साथ पांचबाणों को छोडने में समर्थ हो सकता है परन्तु हे भदन्त! जब वही पुरुष बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है तब पांच बाणों को एक साथ पांचमत्स्यों को वेधन करने के लिये छोडने में समर्थ नहीं होता है यदि वह ऐसा करने में समर्थ होता तो मैं आपकी इस बातको कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है तथा जीव शरीररूप नहीं है शरीर जीवरूप नहीं

अग्रहस्तः, प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणत, घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः, उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहु, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः, दक्ष पृष्ठः कुशलः मेधावी" आ पाठनो संग्रह थयो छे. आ पदोनी व्याख्या सातमा सूत्रमां करवामां आवी छे. त्यांथी जाणी लेवा प्रयत्न करे. एवो ते युवक पुरुष एकी साथे पांच बाणोने पांच मत्स्योने वेधवा माटे छोडवामां समर्थ थई शके छे ? केशीकुमार श्रमणे आ सांभळीने कह्युं के राजन् एवो ते पूर्वोक्त विशेषणोथी युक्त ते युवक एकी साथे पांच बाणोने छोडवामां समर्थ थई शके. पण हे भदंत! ज्यारे ते युवक बाल यावत् मंद विज्ञान संपन्न होय छे त्यारे ते पांच बाणो वडे एकी साथे पांच मत्स्योनुं वेधन करवामां सफळ थतो नथी अने ते एवुं करी शकतो होय तो हुं तमारी जीव भिन्न छे अने शरीर भिन्न छे तेमज जीव शरीर रूप नथी अने शरीर जीवरूप नथी,

स एव पुरुषः बालः-यावत् यावत्पदेन-'अयुगवान् अबलवान, सातङ्कः अस्थिर-संहननः, अस्थिराग्रहस्तः अप्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः अघन निचितवृत्तवलितस्कन्धः, अचर्मेष्टकमुद्गरघणमुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलाऽसमन्वागतः अतलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः अच्छेकः अदक्षः अप्रष्ठः अकुशलः अमेधावी" इत्येषां संग्रहो बोध्यः. एषामपि व्याख्या वैपरीत्येन सप्तमसूत्रतो बोध्या, मन्दविज्ञानः-अल्पकौशलः, एतादृशः स यदि पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुं-प्रक्षेप्तुं प्रभुः-समर्थो भवेत् तदा खलु अहं श्रद्धयां-तव वचनं श्रद्धाविषयीकुर्याम्, यथा-अन्यो जीवः तदेव-पूर्वोक्तमेव-अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति,। हे भदन्त! यस्मात् कारणात्-खलु यस्तरुणादिविशेषणविशिष्टः स एव यदा बालः यावद् मन्द विज्ञानो भवेत् तदा न पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुं प्रभुः-समर्थो भवति तस्मात् सुप्रतिष्ठिता-समुचिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः, तदेव-पूर्वोक्तमेव तच्छरीरम् नो अन्यो जीव अन्यःच्छरीरम् इति ॥ सू० १३९ ॥

है श्रद्धा का विषय कर लेता "बालः यावत्" मे यावत् पद से "अयुगवान्. अबलवान्, सातङ्कः अस्थिरसंहननः, अस्थिराग्रहस्तः, अप्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, अघननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, अचर्मेष्टकमुद्गरघणमुष्टिकसमन्वागतगात्रः, उरस्यबलासमन्वागतः, अतलयमलयुगलबाहुः, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दना समर्थः अच्छेकः, अदक्षः, अपृष्ठ, अकुशलः, अमेधावी" इनपदों का संग्रह हुआ है इसकी व्याख्या सातमें सूत्र से निषेधार्थपरक रूप में करनी चाहिये. तात्पर्य कहने का इस सूत्र का यही है कि उस युवा पुरुष का और बाल पुरुष का वही शरीर और वही जीव है उसमें कोई भिन्नता नही है, भिन्नता केवल उपकरणों में है क्यों कि जो बालपुरुष

આ વાત પર વિશ્વાસ કરી લેત 'बालः यावत' મા 'यावत्' પદથી 'अयुगवान, अबलवान, सातङ्कः, अस्थिरसंहनन., अस्थिराग्रहस्तः, अप्रतिपूर्णपाणिपाद-पृष्ठान्तरोरुपरिणतः, अघननिचितवृत्तवलितस्कन्ध. अचर्मेष्टकमुद्गरघणमुष्टिक-समन्वागतगात्रः, उरस्यबलासमन्वागतः, अतलयमलयुगलबाहुः. लङ्घन-प्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः, अच्छेकः अदक्षः, अप्रष्ठः अकुशलः, अमेधावी "આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમાંથી નિષેધાર્થક કરવી જોઈએ. મતલબ આ પ્રમાણે છે કે તે યુવા પુરુષનો તેમજ બાલ પુરુષનો જીવ છે. તેમા કોઈ ભિન્નતા નથી ભિન્નતા તો છે ફક્ત ઉપકરણોમાં છે.

पूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः चर्मेष्टकद्रुघण मुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवन जवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः दक्षः प्रष्ठः कुशलः मेधावी इत्येतेषां पदानां संग्रहः, निपुणशिल्पोपगतः, एतद्व्याख्या सप्तमसूत्रतो बोध्या । एतादृशः पुरुषः पञ्चकाण्डकं बाणपञ्चकं युगपत् पञ्चसंख्यवेधनाय निसृष्टुम्-प्रक्षेप्तुं-प्रभुः-समर्थो भवेत् ? इति प्रदेशिप्रश्ने केशीमाह-हे राजन् ! हन्त ! प्रभुः पञ्चकाण्डकं प्रक्षेप्तुं स समर्थो भवेत् । प्रदेशी कथयति हे भदन्त ! यदि चेव मन्द

प्रहस्तः, प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतः गात्र, उरस्यबलसमन्वागत तलयमलयुगल-बाहु, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः दक्ष, पृष्ठः, कुशलः, मेधावी" इस पाठ का संग्रह हुआ है। इन पदों की व्याख्या सातवें सूत्रमें की जा चुकी है अतः वहीं से इसे देखना चाहिये ऐसा वह पुरुष पांच बाणों को एक साथ पांचलक्ष्यों को वेधन करने के लिये हे भदन्त ! छोडने में समर्थ हो सकता है न ? केशीकुमार श्रमणने तब कहा हे राजन् ! ऐसा पूर्वोक्त विशेषणों वाला वह युवा पुरुष एक साथ पांचबाणों को छोडने मे समर्थ हो सकता है परन्तु हे भदन्त ! जब वही पुरुष बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है तब पांच बाणों को एक साथ पांचलक्ष्यों को वेधन करने के लिये छोडने में समर्थ नहीं होता है यदि वह ऐसा करने में समर्थ होता तो मै आपकी इस बातको कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है तथा जीव शरीररूप नहीं है शरीर जीवरूप नहीं

प्रहस्तः, प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः, उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः, दक्ष पृष्ठः कुशलः मेधावी " આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમાં કરવામાં આવી છે. ત્યાંથી જાણી લેવા પ્રયત્ન કરે. એવા તે યુવક ને પાંચ બાણો એકજ લક્ષ્યપર છોડીને હે ભદંત શું તે લક્ષ્યને વીંધી શકે નહીં ? કેશીકુમાર શ્રમણે આ સાંભળીને કહ્યું કે રાજન એવો તે વિશેષણોથી યુક્ત તે યુવક એકી સાથે પાંચ બાણોને છોડવામાં સમર્થ થઈ શકશે. પણ હે ભદંત ! જ્યારે તે યુવક બાળ યાવત્ મંદ વિજ્ઞાન સંપન્ન હોય છે ત્યારે તે પાંચ બાણો વડે એકી સાથે પાંચ લક્ષ્યોનું વેધન કરવામાં સફળ થઈ નહિ જો તે એવું કરી શકતો હોત તો હું તમારી જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે તેમજ જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી,

स एव पुरुषः बालः-यावत् यावत्पदेन-'अयुगवान् अबलवान्, सातङ्कः अस्थिर-संहननः, अस्थिराग्रहस्तः अप्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः अघन निचितवृत्तवलितस्कन्धः, अचर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलाऽसमन्वागतः अतलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः अच्छेकः अदक्षः अप्रष्ठः अकुशलः अमेधावी" इत्येषां संग्रहो बोध्यः. एषामपि व्याख्या वैपरीत्येन सप्तमसूत्रतो बोध्या, मन्दविज्ञानः-अल्पकौशलः, एतादृशः स यदि पञ्चकाण्डकं निसृष्टुं-प्रक्षेप्तुं प्रभुः-समर्थो भवेत् तदा खलु अहं श्रद्दध्यां-तव वचनं श्रद्धाविषयीकुर्याम्, यथा-अन्यो जीवः तदेव-पूर्वोक्तमेव-अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति, । हे भदन्त ! यस्मात् कारणात्-खलु यस्तरुणादिविशेषणविशिष्टः स एव यदा बालः यावद् मन्द विज्ञानो भवेत् तदा न पञ्चकाण्डकं निसृष्टुं प्रभुः-समर्थो भवति तस्मात् सुप्रतिष्ठिता-समुचिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः, तदेव-पूर्वोक्तमेव तच्छरीरम् नो अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् इति ॥ सू० १३९ ॥

है श्रद्धा का विषय कर लेता "बालः यावत्" मे यावत् पद से "अयुगवान्, अबलवान्, सातङ्कः अस्थिरसंहननः, अस्थिराग्रहस्तः, अप्रतिपूर्ण पाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, अघननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, अचर्मेष्टकद्रुघण-मुष्टिकसमन्वागतगात्रः, उरस्यबलासमन्वागतः, अतलयमलयुगलबाहुः, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः अच्छेकः, अदक्षः, अपृष्ठ, अकुशलः, अमेधावी" इनपदों का संग्रह हुआ है इसकी व्याख्या सातमें सूत्र से निषेधार्थपरक रूप में करनी चाहिये. तात्पर्य कहने का इस सूत्र का यही है कि उस युवा पुरुष का और बाल पुरुष का वही शरीर और वही जीव है उसमें कोई भिन्नता नही है, भिन्नता केवल उपकरणों में है क्यों कि जो बालपुरुष

આ વાત પર વિશ્વાસ કરી લેત 'बालः यावत' मा 'यावत्' पदथी 'अयुगवान्, अबलवान, सातङ्कः, अस्थिरसंहननः, अस्थिराग्रहस्तः, अप्रतिपूर्णपाणिपाद-पृष्ठान्तरोरुपरिणतः, अघननिचितवृत्तवलितस्कन्ध. अचर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिक-समन्वागतगात्रः, उरस्यबलासमन्वागतः, अतलयमलयुगलबाहुः. लङ्घन-प्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः, अच्छेकः अदक्ष', अप्रष्ठः अकुशलः, अमेधावी "આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમાથી નિષેધાર્થક કરવી જોઈએ મતલબ આ પ્રમાણે છે કે તે યુવા પુરુષનો તેમજ બાલ પુરુષનો જીવ છે. તેમા કોઈ ભિન્નતા નથી ભિન્નતા તો ફક્ત ઉપકરણોમાં છે.

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी से जहानामए केइपुरिसे तरूणे जाव निउणसिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पचकडग निसिरित्तए ? हंता पभू ! सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएण धणुणा कोरिल्लियाए जीवाए कोरिल्लियएणं इसुणा पभू पचकडग णिसिरित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे। कम्हा ? भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति, एवामेव पएसी! सो चेव पुरिसे बाले जाव मदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णोपभू पच कडय निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अन्नो जीवो तं चेव ५ ॥ सू० १४० ॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः नवकेन धनुषा नविकया जीवया नवकेन इषुणा प्रभुः पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुम् ?

था वही तो युवा हुआ है. अतः उस जीव में और उसके शरीर में भिन्नता कैसे मानी जा सकती है ॥ सू० १३९ ॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा (से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए) हे भदन्त ! जैसे कोई युवा पुरुष हो और वह यावत् निपुण शिल्पोपगत हो (णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पचकडगं निसिरित्तए)

કેમકે બાલ પુરૂષ હતો તેજ યુવા થયો છે એથી તે જીવમાં અને તેના શરીરમાં ભિન્નતા કેમ કરીને માની શકાય ॥સૂ ૧૩૯॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યાર પછી કેશી કુમાર શ્રમણે (पएसिं रायं एवं वयासी) પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું (से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए) હે ભદન્ત! જેમ કોઈ યુવા પુરુષ હોય અને તે યાવત્ નિપુણ શિલ્પોપગત હોય,(णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पचकडगं निसिरित्तए) એવો તે

हन्त ! प्रभुः स एव खलु पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः जिर्णेन धनुषा जीर्णया जीवया जीर्णेन इषुणा प्रभुः पञ्च काण्डकं निस्रष्टुम् । नायमर्थः समर्थः । कस्मात् भदन्त । तस्य पुरुषस्य अपर्याप्तानि उपकरणानि भवन्ति, एवमेव प्रदेशिन ! स एव पुरुषः बालो यावत् मन्दविज्ञानः अपर्याप्तोपकरणः नो प्रभुः पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुम् तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन् ! यथा अन्यो जीवस्तदेव ५ ॥ सू० १४० ॥

ऐसा वह पुरुष नवीन धनुष से, नवीन प्रत्यञ्चा से, नवीन बाण से पांच बाणों को एक साथ पाच लक्ष्यों का वेधन करने लिये छोडने में समर्थ है क्या ? (हंता पभू) तब प्रदेशीने कहा--हां, समर्थ होता है (सो चेवणं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लिए जीवाए, कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए) पुनः केशीने पूछा—हे प्रदेशिन् ! यदि वही युवा पुरुष यावत् निपुणशिल्पोपगत बना हुआ जीर्ण धनुष्य से, जीर्ण प्रत्यञ्चासे जीर्ण बाण से पांच बाणों को छोडने के लिये समर्थ हो सकता है क्या ? प्रदेशीने कहा—(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त ! यह अर्थ समर्थ नहीं है। केशीने पूछा-(कम्हा) हे प्रदेशिन् ! इसमें क्या कारण है कि जिससे यह अर्थ समर्थ नहीं है। (भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति) प्रदेशी राजाने कहा हे भदन्त ! उस पुरुषके उपकरण अपर्याप्त हैं (एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जात्तोवगरणे, णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सद्दाहि णं तुमं पएसी ! जहा-अन्नो जीवो तं चेव ५)

પુરૂષ શું નવીન ધનુષ વડે, નવીન બાણ વડે પાચ બાણોને એકી સાથે પાચ લક્ષ્યોના વેધન માટે છોડવામા સમર્થ હોય છે ? (हंता पभू) ત્યારે પ્રદેશિન્ રાજાએ કહ્યું-હાજી, સમર્થ હોય છે (सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लयाए जीवाए, कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए) ફરી કેશીએ પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્ ! જો તે યુવા પુરુષ યાવત્ નિપુણશિલ્પોગત થઈને જીર્ણ ધનુષથી, જીર્ણ પ્રત્યંચાથી, જીર્ણ બાણથી પાચ બાણોને છોડવામા સમર્થ થઈ શકે તેમ છે ? પ્રદેશીએ કહ્યું (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત ! આ અર્થ સમર્થ નથી. (भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति) પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું હે ભદંત ! તે પુરૂષના ઉપકરણો પર્યાપ્ત નથી. (एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णो पभू पंच कंडयं निसिरित्तए, तं सद्दाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अन्नो जीवो तं चेव ५) ત્યારે કેશીએ કહ્યું—કે આ પ્રમાણે જ હે પ્રદેશિન્ ! તે ...

'तएण केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

टीका—ततः खलु केशीकुमारश्रमण प्रदेशिन राजानम् एवमवादीत्—स यथानामकः कश्चित्—कोऽपि पुरुषः—तरुणः यावत्—यावत्पदेन—"युगवान् बलवान् अल्पातङ्कः स्थिराग्रहस्तः प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः दक्षः

तब केशीने कहा—इसी तरह से प्रदेशिन। वही पुरुष जब बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है तब वह अपर्याप्त उपकरणवाला होता है अतः पांच बाणों को प्रक्षिप्त करने के लिये समर्थ नहीं होता है। इस कारण हे प्रदेशिन ! तुम श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।।५।

टीकार्थ—तब केशीकुमार श्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—जैसे अनिर्ज्ञात नामा कोई एक पुरुष हो, जो वह तरुण हो यावत्—युगवान हो, बलवान हो, अल्प आतङ्कवाला हो, स्थिर अग्रहाथवाला हो, पाणि पाद, पृष्ठान्तर एवं उरु ये सब जिसके प्रतिपूर्ण हो, और परिणत विवेकशील एव वयस्क हो कन्धे दोनों जिसके खूब भरे हुए हों गोल हों, शरीर जिसका चर्मेष्टक आदि से समाहत होने से विशेषरूप में पुष्ट शारीरिक बल एव मानसिक बल जिसका बड़ा चढ़ा हो, ताडवृक्ष के जैसे जिसके दोनों बाहु लम्बे हों, लांघने में, उछलने में, कूदने में दौडने

જ્યારે બાળ યાવત મંદ વિજ્ઞાનવાળો હોય છે ત્યારે તે અપર્યાપ્ત ઉપકરણવાળો હોય છે એથી જ તે પાંચ બાણોને પ્રક્ષિપ્ત કરવામાં સમર્થ હોતો નથી આથી હે પ્રદેશિન ! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી. ।૫।

ટીકાર્થ:—ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે જેમ કોઈ અનિર્જ્ઞાતનામા કોઈ એક પુરુષ હોય જે તરુણ હોય યાવત—યુગવાન્ હોય, બળવાન હોય, અલ્પઆતંકવાળો સ્થિર અગ્રહસ્તવાળો હોય પાણિ (હાથ) પાદ (પગ) પૃષ્ઠાન્તર અને ઉરુ આ બધા જેના પ્રતિપૂર્ણ હોય અને પરિણત–વિવેક યુક્ત અને વયસ્ક હોય, બંને ખભાઓ જેના પુષ્ટ હોય ગોળ હોય, જેનું શરીર ચર્મેષ્ટક વગેરેથી સમાહત હોવાથી વિશેષરૂપથી પુષ્ટ હોય જેનું શારીર તેમજ મનની શક્તિ વધારે પરિપુષ્ટ થયેલી હોય. તાડવૃક્ષ જેવા જેના બન્ને હાથ હોય કૂદવામાં ઉછળવામાં દોડવામાં

प्रष्ठः कुशलः मेधावी" इत्येषां पदानां सग्रहः एषां व्याख्या सप्तमसूत्रे कृता। निपुणशिल्पोपगतः-सम्यग्विज्ञानसमन्वितः एतादृशः पुरुषः नवकेन -नूतनेन धनुषा, नवक्रिया-नूतनया जीवया-धनुर्गुणेन धनुर्दवरिकयेत्यर्थः नवकेन-नूतनेन इषुणा-बाणेन प्रभुः-समर्थः पञ्चकाण्डकं-बाणपञ्चकं युगपत् पञ्चलक्ष्यवेधनाय निसृष्टुं-पक्षेप्तुम् ?। प्रदेशीप्राह-हन्त ! प्रभुः समर्थः। केशी कथयति-यदि स एव खलु पुरुषस्तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः 'कोरिल्लएणं' इति देशी शब्दो जीर्णार्थकस्तेन जीर्णेन-घुणखादितेन धनुषा चापेन जीर्णया-प्रत्यञ्चया धनुर्गुणेनेत्यर्थः जीर्णेन इषुणा-बाणेन पञ्चकाण्डक-काण्डरूपञ्चक निसृष्टु-प्रक्षेप्तुं प्रभुः-समर्थः स्यात् ? इति केशिपश्नः, प्रदेशी-उत्तरयति-नायमर्थः समर्थः, केशी कारणं पृच्छति-कस्मात्कारणात्

आदि क्रिया में जो बराबर समर्थ हो, छेक हो, दक्ष हो प्रष्ठ हो, कुशल हो मेधावी हो और निपुणशिल्पोपगत-सम्यग्ज्ञान समन्वित हो। इन युगवान् आदि पदों की व्याख्या सातवें सूत्र में की गई है. सो वहीं से जान लेना चाहिये। ऐसा वह पुरुष नवीन धनुष से, नवीन प्रत्यञ्चा से-धनुषकी डोरीसे एवं नवीन बाण से हे प्रदेशिन् क्या बाण पंचक को युगपत् पांच लक्ष्यों का वेधन करने के लिये छोड सकता है? तब प्रदेशीने कहा-हां, भदन्त ! छोड सकता है। पुनः केशीने उससे पूछा-यदि वही पुरुष जो कि तरुणादि पूर्वोक्त विशेषणोंवाला प्रकट किया गया है, कोरिल्ल-जीर्ण-घुण खादित ऐसे धनुष से, जीवा-प्रत्यञ्चा से, तथा जीर्ण बाण से बाण पंचक को छोडने में समर्थ हो सकता है? तब प्रदेशीने कहा-हे भदन्त ! ऐसी स्थिति में वह इस प्रकार से करने में समर्थ नहीं हो सकता है. इस

મારવામા, દોડવામા વગેરે ક્રિયાઓમા જે બરાબર સમર્થ હોય, છેક હોય, દક્ષ હોય પ્રષ્ઠ હોય, કુશળ હોય, મેધાવી હોય અને નિપુણ શિલ્પોપગત-સમ્યક્જ્ઞાનયુક્ત હોય આ યુગવાન્ વગેરે પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમાં કરવામાં આવી છે. જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી જાણવા પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. એવો તે પુરુષ નવીન ધનુષથી, નવીન પ્રત્યંચાથી, ધનુષની દોરીથી અને નવીન બાણથી હે પ્રદેશિન્! શું બાણ પંચકને યુગપત પાંચ લક્ષ્યોના વેધન માટે છોડી શકશે ! ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું-હા ભદંત ! છોડી શકશે ફરી કેશીએ તેને પ્રશ્ન કરતા કહ્યું-જો તેજ પુરૂષ-કે જે તરૂણ વગેરે પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાળો છે, 'કોરિલ્લ'-જીર્ણ-ઉધેઇ વડે ખવાયેલ ધનુષથી 'જીવા'-પ્રત્યંચાથી તેમજ જીર્ણ બાણથી બાણ પચકોને છોડવામા સમર્થ થઈ શકે તેમ છે ? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ-હે ભદંત ! એવી પરિસ્થિતિમા તે આ પ્રમાણે કરવામાં સમર્થ થઇ શકશે નહિ. આ પ્રમાણે તેના અસામર્થ્યનું કારણ શુ હોઈ શકે !

'तएण केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

टीका-ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्-स यथानामकः कश्चित्-कोऽपि पुरुषः-तरुणः यावत्-यावत्पदेन-"युगवान् बलवान् अल्पातङ्कः स्थिराग्रहस्तः प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः दक्षः

तब केशीने कहा-इसी तरह से प्रदेशिन्। वही पुरुष जब बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है तब वह अपर्याप्त उपकरणवाला होता है अतः पांच बाणों को प्रक्षिप्त करने के लिये समर्थ नहीं होता है। इस कारण हे प्रदेशिन् ! तुम श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है। ५ ।

टीकार्थ—तब केशीकुमार श्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा-जैसे यथानामक नामा कोई एक पुरुष हो, जो यह तरुण हो यावत्-युगवान् हो, बलवान् हो, अल्प आतङ्कवाला हो, स्थिर अग्रहस्तवाला हो, पाणि पाद, पृष्ठान्तर एवं उरु ये सब जिसके प्रतिपूर्ण हो, और परिणत विशेष कठीन एवं बयस्क हो कन्ध दोनों जिसके पुष्ट भरे हुए हों गोल हों, शरीर जिसका चर्मेष्टक आदि से समाहत होने से विशेषरूप से पुष्ट शारीरिक बल एवं मानसिक बल जिसका बढा चढा हो, ताडवृक्ष के जैसे जिसके दोनो बाहु लम्बे हों, लांघने में, उछलने में, कूदने में दौडने

જ્યારે બાળ યાવત મંદ વિજ્ઞાનવાળો હોય છે ત્યારે તે અપર્યાપ્ત ઉપકરણવાળો હોય છે એથી જ તે પાંચ બાણોને પ્રક્ષિપ્ત કરવામાં સમર્થ હોતો નથી આથી હે પ્રદેશિન્ ! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી. ।૫।

ટીકાર્થ:—ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે જેમ કોઈ યથાનામક નામા કોઈ એક પુરુષ હોય, જે તરુણ હોય યાવત્-યુગવાન્ હોય, બળવાન હોય, અલ્પઆતંકવાળો, સ્થિર અગ્રહસ્તવાળો હોય, પાણિ (હાથ) પાદ (પગ) પૃષ્ઠાન્તર અને ઉરૂ આ બધા જેના પ્રતિપૂર્ણ હોય અને પરિણત-વિશેષ પુષ્ટ અને વયસ્ક હોય, બન્ને ખભાઓ જેના પુષ્ટ હોય ગોળ હોય, જેનું શરીર ચર્મેષ્ટક વગેરેથી સમાહત હોવાથી વિશેષરૂપથી પુષ્ટ હોય જેનું શરીર તેમજ મનની શક્તિ વધારે પરિપુષ્ટ થયેલી હોય. તાડવૃક્ષ જેવા જેના બન્ને હાથો હોય, કૂદવામાં ઉછળવામાં કૂદવામાં

प्रष्ठः कुशलः मेधावी" इत्येषां पदानां सग्रहः एषा व्याख्या सप्तमसूत्रे कृता। निपुणशिल्पोपगतः-सम्यग्विज्ञानसमन्वितः एतादृशः पुरुषः नवकेन -नूतनेन धनुषा, नविकया-नूतनया जीवया-धनुर्गुणेन धनुर्दवरिकयेत्यर्थः नवकेन-नूतनेन इषुणा-बाणेन प्रभुः-समर्थः पञ्चकाण्डकं-बाणपञ्चकं युगपत् पञ्चलक्ष्यवेधनाय निसृष्टुं-प्रक्षेप्तुम्?। प्रदेशीप्राह-हन्त! प्रभुः समर्थः। केशी कथयति-यदि स एव खलु पुरुषस्तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः 'कोरिल्लएणं' इति देशी शब्दो जीर्णार्थकस्तेन जीर्णेन-घुणखादितेन धनुषा चापेन जीर्णया-प्रत्यञ्चया धनुर्गुणेनेत्यर्थः जीर्णेन इषुणा-बाणेन पञ्चकाण्डकं-काण्डरूपञ्चकं निसृष्टुं-प्रक्षेप्तुं प्रभुः-समर्थः स्यात्? इति केशिप्रश्नः, प्रदेशी-उत्तरयति-नायमर्थः समर्थः, केशी कारणं पृच्छति-कस्मात्कारणात्

आदि क्रिया में जो बराबर समर्थ हो, छेक हो, दक्ष हो प्रष्ठ हो, कुशल हो मेधावी हो और निपुणशिल्पोपगत-सम्यग्ज्ञान समन्वित हो। इन युगवान् आदि पदों की व्याख्या सातवें सूत्र में की गई है. सो वहीं से जान लेना चाहिये। ऐसा वह पुरुष नवीन धनुष से, नवीन प्रत्यञ्चा से-धनुषकी डोरीसे एवं नवीन बाण से हे प्रदेशिन् क्या बाण पंचक को युगपत् पांच लक्ष्यों का वेधन करने के लिये छोड सकता है? तब प्रदेशीने कहा-हां, भदन्त! छोड सकता है। पुनः केशीने उससे पूछा-यदि वही पुरुष जो कि तरुणादि पूर्वोक्त विशेषणोंवाला प्रकट किया गया है, कोरिल्ल-जीर्ण-घुण खादित ऐसे धनुष से, जीवा-प्रत्यञ्चा से, तथा जीर्ण बाण से बाण पंचक को छोडने में समर्थ हो सकता है? तब प्रदेशीने कहा-हे भदन्त! ऐसी स्थिति में वह इस प्रकार से करने में समर्थ नहीं हो सकता है. इस

મારવામા, દોડવામા વગેરે ક્રિયાઓમા જે બરાબર સમર્થ હોય, છેક હોય, દક્ષ હોય પ્રષ્ઠ હોય, કુશળ હોય, મેધાવી હોય અને નિપુણ શિલ્પોપગત-સમ્યકજ્ઞાનયુકત હોય આ યુગવાન્ વગેરે પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમા કરવામા આવી છે. જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી જાણવા પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. એવો તે પુરુષ નવીન ધનુષથી, નવીન પ્રત્યંચાથી, ધનુષની દોરીથી અને નવીન બાણથી હે પ્રદેશિન્! શુ બાણ પંચકને યુગપત પાચ લક્ષ્યોના વેધન માટે છોડી શકશે! ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ-હા ભદંત! છોડી શકશે ફરી કેશીએ તેને પ્રશ્ન કરતા કહ્યું-જો તેજ પુરુષ-કે જે તરુણ વગેરે પૂર્વોકત વિશેષણોવાળો છે, 'કોરિલ્લ'-જીર્ણ-ઉધેઇ વડે ખવાયેલ ધનુષથી "જીવા"-પ્રત્યંચાથી તેમજ જીર્ણ બાણથી બાણ પચકોને છોડવામા સમર્થ થઇ શકે તેમ છે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ-હે ભદત! એવી પરિસ્થિતિમા તે આ પ્રમાણે કરવામાં સમર્થ થઇ શકશે નહિ. આ પ્રમાણે તેના અસામર્થ્યનું કારણ શુ હોઇ શકે!

भवष्ठ सोऽयौ न समयः ? प्रदेशो प्राह–भवन्त ! तस्य–पूर्वोक्तपुरुषस्य उप करणानि–धनुरादि साधनानि अपर्याप्तानि जीर्णत्वादसमर्थानि भवन्ति एवमेव–उक्तप्रकारेणैव हे प्रदेशिन् ! स एव पुरुषः बाल यावद्–याव त्पदेन अयुगवानित्यादीमामनन्तरसूत्रे सगृहीतानां पदानां संग्रहो बोध्य, तदर्थस्तु वैपरीत्येन समसमूत्रे प्रतिपादित स्ततोऽवसेयः। मन्दविज्ञानः–अल्पविज्ञानयुक्तः अत एव अपर्याप्तो करणः–अपर्याप्तम्–असमर्थम्–उपकरणम् शरीरेन्द्रियबलबुद्धयादिकं साधन यस्य स तथा, एतादृश पुरुषः पञ्चकाण्डकं निसृष्टु–प्रक्षेप्तु नो प्रभुः–समर्थो न भवति, तत्–तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन। त्व प्रदेहि यथा अन्यो जीवः तदेव–पूर्वोक्तमेव अन्यत् शरीरम् नो तज्जीव स शरीरम् ॥ सू० १४०॥

मूलम्—तएणं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी–अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेणं नो

प्रकार की उनकी असमर्थता का क्या कारण है। तब प्रदेशीने उत्तर दिया भदन्त ! उस पूर्वोक्त विशेषण सम्पन्न पुरुषके उपकरण–धनुरादिसाधन जीर्ण होने के कारण अपर्याप्त–असमर्थ हैं। अब पुनः केशीश्रमण उससे पूछते हैं—हे प्रदेशिन् ! यदि वह पुरुष युगवान्‌आदि विशेषणों से रहित है अर्थात् बाल अयुगवान् आदि विशेषणों से विशिष्ट है और शरीर, इन्द्रिय, बल, बुद्धि आदि रूप साधन उसके अपर्याप्त हैं, तो क्या वह बाणपंचक को छोड़ने के लिये समर्थ हो सकता है? तब प्रदेशीने कहा–नहीं हो सकता है। तो हे प्रदेशिन्! इससे तुम्हें यही मानना चाहिये शरीर भिन्न है और जीव भिन्न है शरीर जीवरूप नहीं है और जीव शरीररूप नहीं है ॥ सू० १४० ॥

ત્યારે પ્રદેશીએ જવાબ આપતાં કહ્યું–કે ભદન્ત! તે પૂર્વોક્ત વિશેષણ યુક્ત પુરુષના ઉપકરણો–ધનુષ વગેરે સાધનો–જીર્ણ હોવાથી લક્ષ્યવેધનમાં અસમર્થ છે હવે ફરી કેશીશ્રમણ તેને પ્રશ્ન કરે છે કે હે પ્રદેશિન્! જો તે પુરુષ યુગવાન્ વગેરે વિશેષણોથી રહિત એટલે કે બાળ, અયુગવાન્ વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત હોય અને શરીર ઇન્દ્રિય, બળ, બુદ્ધિ વગેરે રૂપ સાધનો તેની પાસે અપર્યાપ્ત હોય તો શું તે પાંચ બાણો છોડીને લક્ષ્યવેધન કરી શકશે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું–કે નહિ તો હે પ્રદેશિન્! એથી તમારે આ વાત માની લેવી જોઈએ કે શરીર ભિન્ન છે અને જીવ ભિન્ન છે શરીર જીવરૂપ નથી અને જીવ શરીરરૂપ નથી ॥ સૂ૦ ૧૪૦ ॥

उवागच्छइ अत्थि णं भंते ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ? हंता पभू । से चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलिअतया विणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले छुहापरिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए जइणं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा तहेव ॥ सू० १४१ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन कारणेन नो उपागच्छति, अस्ति खलु भदन्त ! स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पो-

'तएणं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं पएसी राया) तब प्रदेशी राजाने (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा (अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण कारणेणं नो उवागच्छइ) हे भदन्त ! यह उपमा प्रज्ञासेजन्य है अतः वास्तविकी नहीं है, क्यों कि जो कारण मैं प्रदर्शित कर रहा हूँ उस कारण से मेरे हृदय में जीव और शरीर का भेद नहीं जम

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए ण पएसी राया) त्यारे प्रदेशी राजाએ (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યુ -(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ) હે ભદંત ! આ ઉપમા પ્રજ્ઞાથી જન્ય છે એથી વાસ્તવિક નથી કેમકે જે કારણુ હુ બતાવી રહ્યો છું તેથી મારા હૃદયમા જીવ અને શરીરની ભિન્નતા જામતી નથી. (अत्थिणं भंते ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एगं म अयभारगं

मस्तु सोऽर्थो न समर्थः ? प्रदेशी माह-भदन्त ! तस्य-पूर्वोक्तपुरुषस्य उपकरणानि-धनुरादि साधनानि अपर्याप्तानि जीर्णत्वादसमर्थानि भवन्ति एवमेव-उक्तप्रकारेणैव हे प्रदेशिन् ! स एव पुरुषः बाल यावत्-याव त्पदेन अयुगवानित्याद्रीमामनन्तरसूत्रे सगृहीतानां पदानां सङ्ग्रहो बोध्य, तदर्थस्तु वैपरीत्येन सप्तमसूत्रे प्रतिपादित स्ततोऽवसेयः। मन्दविज्ञानः-अल्पविज्ञानयुक्तः अत एव अपर्याप्तो करणः-अपर्याप्तम्-असमर्थम्-उपकरणम् शरीरेन्द्रियबलबुद्ध्यादिरूप साधनं यस्य स तथा, एतादृश पुरुषः पञ्चकाण्डकं निसृष्टु-प्रक्षेप्तु नो प्रभुः-समर्थो न भवति, तत्-तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन्। त्वं श्रद्धेहि यथा अन्यो जीवः तदेव-पूर्वोक्तमेव अन्यत् शरीरम् नो तज्जीव स शरीरम् ॥ सू० १४०॥

मूलम्—तएणं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेणं नो

प्रकार की उनकी असमर्थता का क्या कारण है। तब प्रदेशीने उत्तर दिया भदन्त ! उस पूर्वोक्त विशेषण सम्पन्न पुरुषके उपकरण-धनुरादिसाधन जीर्ण होन के कारण अपर्याप्त-असमर्थ हैं। अब पुनः केशीश्रमण उससे पूछते हैं—हे प्रदेशिन् ! यदि वह पुरुष युगवान्आदि विशेषणों से रहित है अर्थात् बाल अयुगवान् आदि विशेषणों से विशिष्ट है और शरीर, इन्द्रिय, बल, बुद्धि आदि रूप साधन उसके अपर्याप्त हैं, तो क्या वह बाणपञ्चक को छोडने के लिये समर्थ हो सकता है? तब प्रदेशीने कहा-नहीं हो सकता है। तो हे प्रदेशिन्। इससे तुम्हें यही मानना चाहिये शरीर भिन्न है और जीव भिन्न है शरीर जीवरूप नहीं है और जीव शारीररूप नहीं है ॥ सू० १४० ॥

त्यारे प्रदेशीओ जवाब आपतां कह्युं-के भदंत ! ते पूर्वोक्त विशेषणयुक्त पुरुषना उपकरणो-धनुष वगेरे साधनो-जुनां होवाथी लक्ष्यवेधनमां असमर्थ छे हवे फरी केशीश्रमण तेने प्रश्न करे छे के हे प्रदेशिन् ! जो ते पुरुष युगवान् वगेरे विशेषणोथी रहित अेटले के बाळ, अयुगवान् वगेरे विशेषणोथी युक्त होय अने शरीर इन्द्रिय, बळ, बुद्धि वगेरे रूप साधनो तेनी पासे अपर्याप्त होय तो शुं ते पांच बाणो छोडीने लक्ष्यवेधन करी शकशे ? त्यारे प्रदेशीओ कह्युं-के नहि तो हे प्रदेशिन् ! अेथी तमारे आ वात मानी लेवी जोईओ के शरीर भिन्न छे अने जीव भिन्न छे शरीर जीवरूप नथी अने जीव शरीररूप नथी. ॥ सू० १४० ॥

उवागच्छइ अत्थि णं भंते ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ? हंता पभू । से चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलिअतया विणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्ग-हत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले छुहापरिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए जइणं भंते! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा तहेव ॥ सू० १४१ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्–अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन कारणेन नो उपागच्छति, अस्ति खलु भदन्त ! स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पो-

---

'तएणं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं पएसी राया) तब प्रदेशी राजाने (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा (अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा इमेण कारणेणं नो उवागच्छइ) हे भदन्त ! यह उपमा प्रज्ञा-सेजन्य है अतः वास्तविकी नहीं है, क्यों कि जो कारण मैं प्रदर्शित कर रहा हूँ उस कारण से मेरे हृदय में जीव और शरीर का भेद नहीं जम

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए ण पएसी राया) त्यारे प्रदेशी राजाओ (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं –(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ) हे भदंत! आ उपमा प्रज्ञाथी जन्य छे एथी वास्तविक नथी केमके जे कारण हुं बतावी रह्यो छुं तेथी मारा हृदयमा जीव अने शरीरनी भिन्नता जामती नथी (अत्थिणं भंते! से जहा नामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एगं मं अयभारगं

पगवे प्रभुः एकं महान्तमयोभारकं वा त्रपुकभारकं वा शीशकभारकं वा परिवोढुम् ? हन्त प्रभुः । स एव खलु भदन्त ! पुरुषः जीर्णः जराजर्जरितदेहः शिथिलवलितरत्वचाविनष्टगात्रः दण्डपरिगृहीताग्रहस्तः प्रविरलपरिशटितदन्तश्रेणिः आतुरः कृशः पिपासितः दुर्बलः क्षुधापरिक्लान्तः नो प्रभुरेकं

पाता है (भरिय ण भंते ! से महानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एग महं अयभारग वा तउयभारग वा सीसगभारग वा परिवहित्तए) यह कारण इस प्रकार से है–जैसे कोई एक पुरुष हो, और वह–युवा यावत् निपुणशिल्पोपगत हो, अर्थात् सम्यग्ज्ञान सम्पन्न हो, तो ऐसा वह पुरुष विशाल लोहे के भार को त्रपुक के भार को शीशा के भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है न ! तब केशीकुमारश्रमण ने उससे (हंता, पभू) हां, प्रदेशिन् ! ऐसा वह पुरुष उस लोहे आदि के विशाल भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है। (से चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलिभतयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे) अब प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से फिर ऐसा पूछा–हे भदन्त ! वही पुरुष जब वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है और जरा से जर्जरित शरीर वाला होने के कारण शक्ति से शिथिल हो जाता है, त्वचा जिसकी झुर्रियों से युक्त हो जाती हैं और इसी से जिसकी शारीरिक शक्ति प्रतिहत हो चुकी होती है, तथा दक्षिण हाथ में जो दण्डा लेकर चलने लगता है (पविरल परिसडियदंतसेढी, आउरे,

---

वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए) ते કારણ આ પ્રમાણે છે જેમ કોઈ એક પુરૂષ હોય અને તે યુવા યાવત્ નિપુણ શિલ્પોપગત હોય એટલે કે સમ્યક્ જ્ઞાન યુક્ત હોય તો એવો તે પુરૂષ વિશાળ લોખંડના ભારને ત્રપુના ભારને શીશાના ભારને વહન કરવામાં શું સમર્થ થઈ શકે છે ? ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તેને (हंता पभू) હાજી, પ્રદેશિન્ એવો તે પુરૂષ તે લોખંડ વગેરેના વિશાળ ભારને વહન કરવામાં સમર્થ થઈ શકે છે (से चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलिभतयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे) હવે કેશી કુમારશ્રમણે પ્રદેશીરાજાને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદન્ત ! તે જ પુરૂષ જ્યારે ઘરડો થઈ જાય છે અને વૃદ્ધાવસ્થાને લીધે જર્જરિત શરીરવાળો હોવાથી અશક્ત થઈ જાય છે ચામડી જેની કરચલીઓથી યુક્ત થઈ જાય છે અને એથી જેની શારીરિક શક્તિ પ્રતિહત થઈ જાય છે તેમજ જમણા હાથમાં જે લાકડી આલીને ચાલવા લાગે છે (पविरलपरिसडियदंतसेढी, आउरे, किलंते, पिवासिए दुब्बले दुहा परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए) જેની દંત

महान्तमयोभारकं वा यावत् परिवोढुम्, यदि खलु भदन्त ! स एव पुरुषः जीर्णः जराजर्जरितदेहः यावत् परिक्लान्तः प्रभुः एकं महान्तमयोभारकं वा यावत् परिवोढुम्. तदा खलु श्रद्दध्यां तथैव, यस्मात खलु भदन्त ! स एव पुरुषः जीर्णो यावत् क्लान्तः नो प्रभुरेकं महान्तमयोभारं वा यावत् परिवोढुं तस्मात सुप्रतिष्ठता मे प्रतिज्ञा तथैव ॥सू० १४१॥

किसीए, पिवासिए, दुब्बले, छुहाकिलंते पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए) दांतों की पंक्ति जिसकी विरल हो जाती है, शटित हो जाती है, तथा कास, श्वास आदि से जो सर्वदा पीडित बना रहता है, और इसीसे जो कृश एव अशक्त बन जाता है, उठ करके पानी पीने तक भी शक्ति जिससे जाती रहती है, जो बिल्कुल शक्ति रहित हो जाता है, भूख से जो-पीडित बन जाता है ऐसा वह पुरुष एक विशाल लोहे के भार को, त्रपुक के भार को या शीशा के भार को वहन करने के लिये समर्थ नहीं रहता है। (जइ णं भंते! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एग महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव) यदि हे भदन्त! वही पुरुष जीर्ण होने पर, जरा से जर्जरित देह होने पर यावत् क्षुधा से परिक्लान्त होने पर एक विशाल लोहभार को यावत वहन करने के लिये समर्थ बना रहता तो मैं आपके इस कथन पर कि जीव शरीर से भिन्न है और शरीर जीव से भिन्न है जीव शरीररूप नहीं है, शरीर जीवरूप नहीं है विश्वास कर लेता (जम्हा णं

પંક્તિ વિરલ થઈ જાય છે, શટિત થઇ જાય છે, તેમજ કાસ, શ્વાસ વગેરેથી જે હંમેશા પીડિત રહે છે અને એથી જે કૃશ અને દુર્બલ થઈ જાય છે, ઉભા થઇને પાણી પીવાની પણ જેનામા તાકાત હોતી નથી જે સાવ અશકત થઇ જાય છે, ભૂખથી જે પીડિત થઇ જાય છે એવો તે પુરૂપ એક મોટા લોખંડના ભારને કે શિશાના ભારને વહન કરવામા સમર્થ થઇ શકતો નથી. (जइणं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एग महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव) તો હે ભદંત ! જો તે પુરૂપ ઘરડો હોવા છતા એ ઘડપણથી જર્જરિત શરીરવાળો હોવા છતા એ યાવત ભુખથી પરિક્લાંત હોવા છતાએ એક ભારે લોખંડના ભારને યાવત્ વહન કરવામા સમર્થ થઈ શકત તો હુ તમારા જીવ શરીરથી ભિન્ન છે અને શરીર જીવથી ભિન્ન છે, જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી આ કથર પર વિશ્વાસ કરી લેત.

प्रगतः प्रभुः एकं महान्तमयोभारकं वा त्रपुकभारकं वा सीसकभारकं वा परिवोढुम्? हन्त प्रभुः। स एव खलु भदन्त! पुरुषः जीर्णः जराजर्जरितदेहः शिथिलवलित्वचाविनष्टगात्रः दण्डपरिगृहीताग्रहस्तः प्रविरलपरिशटितदन्तश्रेणिः आतुरः कृशः पिपासितः दुर्बलः क्षुधापरिक्लान्तः नो प्रभुरेकं

पाता है (अत्थि णं भंते! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए) यह कारण इस प्रकार से है-जैसे कोई एक पुरुष हो, और वह युवा यावत् निपुणशिल्पोपगत हो, अर्थात् सम्यग्ज्ञान सम्पन्न हो, तो ऐसा वह पुरुष विशाल लोहे के भार को त्रपुक के भार को शीशक के भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है न? तब केशीकुमारश्रमण ने उससे (हंता, पभू) हां, प्रदेशिन्! ऐसा वह पुरुष उस लोहे आदि के विशाल भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है। (से चेव णं भंते! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे) अब प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से फिर ऐसा पूछा-हे भदन्त! वही पुरुष जब वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है और जरा से जर्जरित शरीर वाला होने के कारण शक्ति से शिथिल हो जाता है, त्वचा जिसकी झुर्रियों से युक्त हो जाती हैं और इसी से जिसकी शारीरिक शक्ति प्रविहत हो चुकी होती है, तथा दक्षिण हाथ में जो दण्डा लेकर चलने लगता है (पविरल परिसडियदंतसेढी, आउरे,

वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए) તે કારણ આ પ્રમાણે છે જેમ કોઈ એક પુરુષ હોય અને તે યુવા યાવત્ નિપુણ શિલ્પોપગત હોય એટલે કે સમ્યક્ જ્ઞાન યુક્ત હોય તો એવો તે પુરુષ વિશાળ લોખંડના ભારને ત્રપુના ભારને સીસાના ભારને વહન કરવામાં શું સમર્થ થઈ શકે છે? ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તેને (हंता पभू) હાજી, પ્રદેશિન્ એવો તે પુરુષ તે લોખંડ વગેરેના વિશાળ ભારને વહન કરવામાં સમર્થ થઈ શકે છે (से चेव णं भंते! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे) હવે કેશી કુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત! તે જ પુરુષ જ્યારે ઘરડો થઈ જાય છે અને વૃદ્ધાવસ્થાને લીધે જર્જરિત શરીરવાળો હોવાથી અશક્ત થઈ જાય છે, ત્વચા જેની કરચલીઓથી યુક્ત થઈ જાય છે અને એથી જેની શારીરિક શક્તિ પ્રવિહત થઈ જાય છે તેમજ જમણા હાથમાં જે લાકડી લઈને ચાલવા લાગે છે (पविरलपरिसडियदंतसेढी, आउरे, किलंते, पिवासिए दुब्बले छुहा परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए) જેની દં

स एव भारवाहकः पुरुषो जीर्णः—वृद्धावस्थां प्राप्तः अत एव जराजर्जरितदेहः—वृद्धावस्थामन्दशरीरशक्तिकः शिथिलवलितत्वचाविनष्टगात्रः—शिथिला अतएव वलिता—वलियुक्ता त्वचा—चर्म तया विनष्टगात्रः—प्रतिहतशरीरसामर्थ्यः दण्डपरिग्रहीताग्रहस्त—अग्रहस्तेन—हस्ताग्रभागेन परिगृहीतः—धारितो दण्डो येन तथा, प्रविरलपरिशटितदन्तश्रेणिः—प्रविरला—अत्यन्ताल्पा शटिता च दन्तश्रेणिः—दन्तपङ्क्तिर्यस्य स तथा, आतुरः कासश्वासादिपीडितः, कृशः—अशक्तः, पिपासितः उत्थाय जलं पातुमप्यसमर्थः, दुर्बलः बलहीनः क्षुधापरिक्लान्त—क्षुधापरिपीडितः, एतादृशः पुरुषः एकं महान्तमयोभारकं वा यावत्—'यावत्' पदेन—त्रपुकभारकं वा शीशकभारकं वा परिवोढुं नो प्रभुः—समर्थो न भवति. पुनः प्रदेशी प्राह—भदन्त ! यदि खलु स एव पुरुषो जीर्णः जराजर्जरितः यावत् क्षुधापरिक्लान्तः एतादृशः पुरुषः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् शीशकभारं वा परिवोढुं प्रभुः स्यात् तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तथैव—अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति। अथ पुनः प्रदेशी प्राह—हे भदन्त ! यस्मात् कारणात् खलु स एव पुरुषः जीर्णः क्षुधापरिक्लान्तः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् शीशकभार वा' इत्येतत्कारणात् परिवोढु नो प्रभुः—समर्थो न भवति, तस्मात् कारणात् मे—मम प्रतिज्ञा स्वीकारः, सुप्रतिष्ठिता—स्थिरा, तथैव—तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति ॥सू. १४१॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहं-

वा जाव परिवहितए' में आये हुए यावत्पद से 'तउग भारगं वा' सीसग भारगं वा इन पदों का संग्रह हुआ है। इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि युवादि विशेषणों वाला जो जीव है वही जीव अयुवादि विशेषणों वाला भी है अतः वह वही जीव है और वही उसका शरीर है ये दोनों भिन्न२ नही हैं। यही बात प्रदेशीराजाने इस सूत्र से प्रमाणित की है ॥सू. १४१॥

'अयभारगं वा जाव परिवहित्तए' मा आवेल यावत् पदथी 'तउगभारग वा सीसगभारग वा' आ पदोनो संग्रह थयो छे आ सूत्रनो भावार्थ आ प्रमाणे छे के युवा वगेरेथी युक्त विशेषणवाळो जे जीव छे तेज जीव अयुवा वगेरे विशेषणोथी पण संपन्न छे. एथी ते तेज जीव छे अने तेनुं शरीर पण तेज छे एओ बन्ने जुदा जुदा नथी प्रदेशी राजाए एज वात आ सूत्रथी प्रमाणित करी छे. ॥सू० १४१॥

टीका-"तए णं पएसी इत्यादि-ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणम् एवमवादीत्-एषा-इयम् उपमा भज्ञाता अस्ति अनेन वक्ष्यमाणेन पुनः कारणेन नो उपागच्छति-न समागच्छति, तदेवाऽऽह-एवं खलु हे भदन्त ! स यथानामक कश्चित् पुरुष तरुण यावत्-यावत्पदेन-अनन्तर सूत्रे संगृहीतानि युगवान् बलवानित्यादीनि पदानि संग्रहीतव्यानि, तदर्थश्च सप्तमसूत्रतो बोध्य, निपुणशिल्पोपगतः-सम्यग्विज्ञानसम्पन्न, एतादृश पुरुष एक महान्त-विशालम् अयोभारकम्-लोहभार त्रपुकभारक-धातुविशेषभार वा सीसकभारक वा परिवोढु-नेतु प्रभु -समर्थः स्यात् ? इति प्रदेशिप्रश्नः केशीश्रमणः कथयति-हन्त !-हे राजन् ! प्रभु-समर्थः स्यात्। हे भदन्त !

भंते ! स चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलन्ते नो पभू एग मह अयभार वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा तहेव) जिस कारण से हे भदन्त ! वही पुरुष जीर्ण यावत् हो जाने पर एक विशाल लोहभारको यावत वहन करने के लिये समर्थ नहीं होता है-इस कारण से मेरा यह मन्तव्य जीव और शरीर के एक होने का सुप्रतिष्ठित है अर्थात् वही जीव और वही शरीर है, जीव भिन्न नहीं है और शरीर भिन्न नहीं है ऐसा मेरा मन्तव्य सत्य है।

टीकार्थ—इस मूलार्थ के जैसा ही है 'तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः' में जो यह यावत्पद आया है उससे अनन्तर सूत्र में संगृहीत युगवान् बलवान् इत्यादि पद यहां गृहीत हुए हैं। इन पदों का अर्थ सप्तम सूत्रकी टीका में लिखा जा चुका है, अतः वहीं से यह जानना चाहिये 'अयभारग

(तम्हा ण भंते ! स चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलन्ते नो पभू एग मह अयभार वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा तहेव) जे कारणथी हे भदंत ! तेज पुरुष जीर्ण (घरडो) यावत् थई जवाथी एक विशाळ लोखंडना भारने यावत् वहन करवामां समर्थ थई शकतो नथी ते कारणथी ज जीव अने शरीर एक ज छे एवी मारी धारणा सुप्रतिष्ठित ज छे एटले के जीव अने शरीर बन्ने एक ज छे जीव भिन्न नथी अने शरीर भिन्न नथी आ मारी मान्यता योग्य ज छे

टीकार्थ-आ सूत्रनो टीकार्थ मूलार्थ जेवो ज छे तरुणः यावत निपुणशिल्पोपगतः'मां जे यावत् पद आवेल छे तेथी बीजी कोई जग्याए संगृहीत युगवान्, बलवान् वगेरे पदो अहीं संगृहीत थयां छे आ पदोनो अर्थ सातमा सूत्रनी टीकामां २५४ करवामां आव्यो छे एथी त्यांथी ज जाणवा प्रयत्न करवो जोईए.

स एव भारवाहकः पुरुषो जीर्णः-वृद्धावस्था प्राप्तः अत एव जराजर्जरितदेहः-वृद्धावस्थामन्दशरीरशक्तिकः शिथिलवलितत्वचाविनष्टगात्रः-शिथिला अतएव वलिता--वलियुक्ता त्वचा--चर्म तथा विनष्टगात्रः--प्रतिहतशरीर-सामर्थ्यः दण्डपरिग्रहीताग्रहस्त-अग्रहस्तेन-हस्ताग्रभागेन परिगृहीतः-धारितो दण्डो येन तथा, प्रविरलपरिशटितदन्तश्रेणिः-प्रविरलो-अत्यन्ताल्पा शटिता च दन्तश्रेणिः--दन्तपङ्क्तिर्यस्य स तथा, आतुरः कासश्वासादिपीडितः, कृशः-अशक्तः, पिपासितः उत्थाय जलं पातुमप्यसमर्थः, दुर्बलः बलहीनः क्षुधापरिक्लान्त-क्षुधापरिपीडितः, एतादृशः पुरुषः एकं महान्तमयोभारकं वा यावत्-'यावत्' पदेन-त्रपुकभारकं वा शीशकभारकं वा परिवोढुं नो प्रभुः-समर्थो न भवति. पुनः प्रदेशी प्राह-भदन्त ! यदि खलु स एव पुरुषो जीर्णः जराजर्जरितः यावत् क्षुधापरिक्लान्तः एतादृशः पुरुषः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् शीशकभारं वा परिवोढुं प्रभुः स्यात् तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तथैव-अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति। अथ पुनः प्रदेशी प्राह-हे भदन्त ! यस्मात् कारणात् खलु स एव पुरुषः जीर्णः क्षुधापरिक्लान्तः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् शीशकभारं वा' इत्येतत्कारणात् परिवोढुं नो प्रभुः-समर्थो न भवति, तस्मात् कारणात् मे-मम प्रतिज्ञा स्वीकारः, सुप्रतिष्ठिता-स्थिरा, तथैव-तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति ॥सू. १४१॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहं-

वा जाव परिवहितए' में आये हुए यावत्पद से 'तउग भारगं वा' सीसग भारगं वा इन पदों का संग्रह हुआ है। इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि युवादि विशेषणों वाला जो जीव है वही जीव अयुवादि विशेषणों वाला भी है अतः वह वही जीव है और वही उसका शरीर है ये दोनों भिन्न२ नहीं हैं। यही बात प्रदेशीराजाने इस सूत्र से प्रमाणित की है ॥सू. १४१॥

'अयभारगं वा जाव परिवहित्तए' આ આવેલ યાવત્ પદથી 'તઉગભારગ વા સીસગભારગ વા' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે યુવા વગેરેથી યુક્ત વિશેષણવાળો જે જીવ છે તેજ જીવ અયુવા વગેરે વિશેષણોથી પણ સંપન્ન છે. એથી તે તેજ જીવ છે અને તેનું શરીર પણ તેજ છે એઓ બન્ને જુદા જુદા નથી પ્રદેશી રાજાએ એજ વાત આ સૂત્રથી પ્રમાણિત કરી છે. ॥સૂ૦ ૧૪૧॥

गियाए णवएहिं सिक्कएहिं णवएहिं पच्छियपिंडएहिं पहू एगं मह अयभारं जाव परिवहित्तए ? हन्ता पभू। पएसी ? से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए जुन्नियाए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहिं सिढिलतयापिणद्धएहिं सिक्कएहिं जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहिं पच्छियपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे। कम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति। पएसी ? से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते जुन्नोवगरणे नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी जहा-अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ॥सू० १४२॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणो यावत् शिल्पोपगतः नविकया विहङ्गिकया नवकाभ्यां शिक्यकाभ्यां नवकाभ्यां पच्छितपिटकाभ्यां प्रभुः एकं महान्तमयोभारं यावत् परिवोढुम् ? हन्त ? प्रभुः प्रदेशिन्! स एव खलु पुरुषः

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) केशीकुमार श्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा-(से जहाणामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए नवियाए विहंगियाए णवएहिं सिक्कएहिं णवएहिं पच्छियपिंडएहिं पहू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए ?) जैसे कोई एक पुरुष हो और वह तरुण यावत् शिल्पोपगत हो, ऐसा वह पुरुष नवीन विहंगिका

'तएणं केसी कुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) त्यार पछी केशीकुमारश्रमणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं-(से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए नवियाए विहंगियाए णवएहिं सिक्कएहिं, णवएहिं पच्छियपिंडएहिं पहू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए ?) जेम कोई ते-कोई पुरुष होय अने ते तरुण यावत् शिल्पोपगत होय एवो ते पुरुष

तरुणो यावत् शिल्पोपगतः जीर्णया दुर्बलिकया घुणखादितया विहङ्गिकया जीर्णकाभ्यां दुर्बलकाभ्यां घुणखादिताभ्यां शिथिलत्वचापिनद्धकाभ्यां शिक्यकाभ्यां जीर्णकाभ्यां दुर्बलिकाभ्यां घुणखादिताभ्यां पक्षितपिटकाभ्यां प्रभुः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् परिवोढुम्? नो अयमर्थः समर्थः

से भारयष्टिका से (कावड से), नवीन सिक्यकाओं से नवीन पक्षितपिटकाओं से एक विशाल लोहभार को यावत त्रपुभार को अथवा शीशक भार को वहन करने में समर्थ होता है न? तब प्रदेशी राजाने कहा—(हंता, पभू) हां, भदन्त! ऐसा वह पुरुष उसे वहन करने में समर्थ होता है। (पएसी! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए दुव्वलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए जुण्णएहिं दुव्वलिएहिं, घुणक्खइएहिं, सिढिलतया पिणद्धएहिं, सिक्कएहिं दुव्वलिएहिं जुण्णेहिं घुणक्खइएहिं पच्छियपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए) हे प्रदेशिन्! अब मैं तुम से ऐसा पूछता हूं कि वही तरुणपुरुष जो यावत् निपुणशिल्पोपगत है जीर्ण दुर्बल, घुन से खाई हुई भारयष्टि से, तथा जीर्ण, दुर्बल और घुन से खाई हुई तथा शिथिल त्वचा से पिनद्ध हुई ऐसी शिक्यकाओं से, एवं दुर्बलिक, घुण खादितऐसी पक्षितपिटकाओं से एक विशाल लोहभार को अथवा त्रपुभार को या शीशक भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है? प्रदेशीने कहा—(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ

નવીન વિહંગિકાથી ભારયષ્ટિકાથી (કાવડથી) નવીન સિક્યકાથી નવીન પક્ષિતપિટકાઓથી એક વિશાળ લોખંડના ભારને યાવત્ ત્રપુભારને અથવા શીશક ભારને વહન કરવામા શું સમર્થ થઇ શકે છે? ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું—(हंता, पभू) હા જી, ભદંત! એવો તે પુરૂષ તેને વહન કરવામા સમર્થ થઇ શકે છે. (पएसी! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए, जुन्नियाए, दुव्वलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए, जुण्णएहिं, दुव्वलिएहिं घुणक्खइएहिं, सिढिलतया पिणद्धएहिं, सिक्कएहिं जुण्णेहिं दुव्वलिएहिं घुणक्खइएहिं पच्छियपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए) હે પ્રદેશિન્! હવે તમને હુ આમ પ્રશ્ન કરૂં છું કે તે જ તરૂણ પુરૂષ જે યાવત્ નિપુણ શિલ્પોપગત છે જીર્ણ દુર્બળ, ઉધેઇ ખાધેલી ભારયષ્ટિથી (કાવડથી) તેમજ જીર્ણ, દુર્બળ ઉધેઇવટ ખાધેલ તેમજ શિથિલ ત્વચાઓથી પિનદ્ધ થયેલ એવી શિક્યકાઓથી અને દુર્બલિક, ઉધઇ ખાદેલ એવી પ્રક્ષિતપિટકાઓથી એક મોટા લોખંડના ભારને અથવા ત્રપુભારને કે શીશકભારને વહન કરવામા શું સમર્થ થઇ શકે છે? પ્રદેશીએ કહ્યુ (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત!

कस्मात् ? भदन्त ! तस्य पुरुषस्य जीर्णानि उपकरणानि भवन्ति, प्रदेशिन् ! स एव पुरुषः जीर्णो यावत् क्षुधापरिक्लान्तः जीर्णोपकरणः नो प्रभुः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् परिवोढुम्, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन् ! यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् ६ । ॥सू० १४२॥

नहीं है-अर्थात् वही युवादि विशेषणों वाला पुरुष जीर्णादि विशेषणोंवाली विहङ्गिकादि (कावड) द्वारा विशाल लोहभार को वहन नहीं कर सकता है केशीकुमारश्रमणने पूछा-(कम्हा) वह ऐसा किस कारण से नहीं कर सकता है तब प्रदेशीने कहा-(भंते ! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति) हे भदन्त ! लोह भार आदि को वहन करने के जो उसके साधन हैं-वे जीर्ण हैं। (पएसी से चेव पुरिसे जुन्ने जाव छुहापरिकिलंते जुन्नोवगरणे पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए-त सद्दहाहि णं तुमं पएसी अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) पुनः केशी ने प्रदेशी से पूछा-हे प्रदेशिन् ! यदि वही पुरुष जीर्ण, वृद्ध यावत् १४१वे सूत्र में कथितविशेषणोंवाला एवं क्षुधा परिक्लान्त हो जाता है वह जीर्णोपकरण वाला होने से-शरीर बल बुद्धि आदि उपकरणों की जीर्णतावाला होने से-एक विशाल अयोभार को यावत् सीसक भार को वहन करने में समर्थ नहीं होता है युवावस्था और वृद्धावस्था में जीव की समानता होने पर भी उपकरण के अभाव से वृद्ध भार को वहन करने के लिये समर्थ नहीं होता है इस कारण हे प्रदेशिन्!

आ अर्थ समर्थ नथी. એટલે કે તેજ યુવા વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત પુરુષ જીર્ણ વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત વિહંગિક (કાવડ) વગેરે વડે વિશાળ લોખંડના ભારને વહન ન કરી શકે તેમ છે કેશીકુમાર શ્રમણે કહ્યું (કમ્હા) તે આમ શા કારણથી નહિ કરી શકે ? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું (ભંતે ! તસ્સ પુરિસસ્સ જુણ્ણાઇં ઉવગરણાઇં ભવંતિ) હે ભદંત ! લોખંડના ભાર વગેરેને વહન કરવાના જે સાધનો છે તે જીર્ણ છે (પએસી સે ચેવ પુરિસે જુન્ને જાવ છુહાપરિકિલંતે જુન્નોવગરણે નો પભૂ એગં મહં અયભારં વા જાવ પરિવહિત્તએ-તં સદ્દહાહિ ણં તુમં પએસી અન્નો જીવો અન્નં સરીરં) ફરી કેશીએ પ્રદેશીને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્ ! જો તે જ પુરુષ જીર્ણ વૃદ્ધ યાવત્ ૧૪૧ માં સૂત્રમાં આવેલ વિશેષણોથી સંપન્ન હોય ક્ષુધા પરિક્લાંત થઇ જાય છે તો તે જીર્ણોપકરણવાળો હોવાથી શરીર બળ બુદ્ધિ વગેરે ઉપકરણો જીર્ણ હોવાથી એક વિશાળ લોખંડના ભારને યાવત્ સીસકભારને વહન કરવામાં સમર્થ થઇ શકે તેમ નથી યુવાવસ્થામાં અને વૃદ્ધાવસ્થામાં જીવની સમાનતા હોવા છતાં એ ઉપકરણના અભાવે વૃદ્ધ ભારને વહન કરવામાં સમર્થ થઇ

टीका-"तए णं केसी कुमारसमणे" इत्यादि-ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम्, एवमवादीत्-स यथानामकः कश्चित्-कोऽपि पुरुषः तरुण यावत्-निपुणशिल्पोपगतः नविकया-नूतनया विहङ्गिकया-भारयष्टिकया-शिक्यावलम्बनदण्डविशेषरूपया नवकाभ्यां-नवीनाभ्यां शिक्यकाभ्यां नवकाभ्यां-नूतनाभ्यां पक्षितपिटकाभ्यां-वंशवेत्रादिनिर्मितपात्रविशेषाभ्याम् एकं महान्तमयोभारं वा यावत् त्रपुभारं वा शीशकभारं वा एतादृशमयोभारादिकं परिवोढुं प्रभुः-समर्थः स्यात् ? इति केशिप्रश्नः, प्रदेशी प्राह-हन्त ! प्रभुः-समर्थः स्यात् ! केशीकथयति-प्रदेशिन ! स एव खलु पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः, एतादृशः पुरुषः जीर्णया दुर्बलिकया-निःसत्त्वया घुणखादितया-काष्ठकीटभक्षितया-विहङ्गिकया-भारयष्ट्या तथा-जीर्णकाभ्यां-दुर्बलिकाभ्यां घुणखादिताभ्यो शिथिलत्वचापिनद्धकाभ्यां-शिथिलदवरिकाबद्धाभ्यां शिक्यकाभ्यां, तथा दुर्बलिकाभ्यां घुणखादिताभ्यां पक्षितपिटकाभ्याम् एकं महान्तमयोभारं वा यावत् त्रपुभारं वा शीशकभारं वा परिवोढुं प्रभुः-समर्थः स्यात् ? । प्रदेशी प्राह-नो अयमर्थः-समर्थः- पूर्वोक्तसाधनैर्भारो वोढुं न शक्यत इत्यर्थः। केशी श्रमणो हेतु पृच्छति-कस्मात्कारणात् ?। प्रदेशी कथयति-हे भदन्त ! तस्य पूर्वोक्तस्य तरुणतादिविशिष्टस्य पुरुषस्य उपकरणानि जीर्णानि भवन्ति सन्ति, उपकरणानां जीर्णत्वादिकारणान्नायोभारादिपरिवहनयोग्यता, इतिभाव । केशी

तुम मेरे वचन में विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, वह जीवरूप नहीं है और न जीव शरीररूप है.।

टीकार्थ--स्पष्ट है यहां जो 'विहंगियाए, सिकएहिं, पच्छियपिंडएहिं' ये शब्द आये हैं वे भार उठाने के अर्थ में आये हैं। वंश, वेत्र आदिकों से निर्मित पात्र विशेषका नाम पक्षितपिटक है. तात्पर्य इस सूत्र का ऐसा

શકતો નથી. એથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ અન્ય છે, અને શરીર અન્ય છે, શરીર જીવરૂપ નથી અને જીવ શરીર રૂપ નથી

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે. ('विहगियाए, सिक्कएहिं, पच्छियपिडएहिं'એ શબ્દો આવેલ છે. તે ભાર વહન કરવા માટેના વિશેષ સાધનોના અર્થમાં પ્રયુકત કરવામા આવ્યા છે. વંશ, વેત્ર વગેરેથી નિર્મિતપાત્ર વિશેષણનુ નામ પક્ષિતપિટક છે. આ સૂત્રનો સંક્ષેપમા ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે સમર્થ પુરૂષ જો ઉપકરણો

माह-हे प्रदेशिन्! स एव पुरुषो यदि जीर्णः-वृद्धः यावत् प्रियसारि पदविशेषकसतमसमोक्त विशेषणविशिष्टः, पुनः क्षुधापरिक्लान्तःक्षुधाक्लिन्नः, एवरूपः पुरुषो, जीर्णोपकरणः शरीरपरवृद्धयायुपकरमरहितो भवति तदा एकं महान्तमयोभारं वा यावत्-शीशकभारं वा परिवोढुं न प्रभुः-न समर्थो भवति, तारुण्ये वार्धक्ये च जीवस्य समानत्वेऽपि उपकरणाभावान्न वृद्धो भारं वोढुं समर्थो भवतीति भावः। तत्-तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं प्रदेशि-मद्वचने विश्वसिहि-यथा अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम्, नो तज्जीवः तच्छरीरम्, इति ६। ॥सू० १४२॥

मूलम्—तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी-अत्थि णं भंते! जाव नो उवागच्छइ, एस खलु भंते! जाव विहरामि, तएणं मम णगरगुत्तिया जाव चोरं उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतगं चेव तुलेमि, तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि मयं तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स वा मुयस्स वा तुलियस्स केइ आणत्ते वा नाणत्ते वा उम्मत्तत्ते वा

है कि समर्थ पुरुष उपकरणों की सबलता में लोहे आदिरूप भार को उठा सकता है तथा वही समर्थ पुरुष उपकरणों की असमीचीनता में लोहे आदिरूप भार को नहीं उठा सकता है, तथा वही पुरुष वृद्धावस्थापन्न होने पर भी अयोभार को नहीं उठा सकता है. अतः इससे यही प्रतीत होता है कि जीव की समानता होने पर भी उपकरणों की असमानता में भारवहन नहीं होता है- इससे यही मानना चाहिये कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है। ६ ॥ सू १४२ ॥

સશક્ત હોય તો લોખંડ વગેરેના ભારને વહન કરી શકે છે તથા તેજ સમર્થ પુરુષ ને ઉપકરણો અશક્ત અસમીચીન-હોય તો લોખંડ વગેરે રૂપ ભારને વહન કરી શકે તેમ નથી તેમજ તેજ પુરુષ વૃદ્ધાવસ્થાપન્ન હોવાથી લોખંડના ભારને વહન કરી શકે તેમ નથી. એથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે જીવની સમાનતા હોવા છતાં, એ ઉપકરણો (સાધનો)ની અસમાનતાને લીધે ભારનું વહન કરી શકાય તેમ નથી. એથી આ વાત માની લેવી જોઈએ કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે.॥૧૪૨॥

तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लहुयत्ते वा, जइ णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स होज्जा केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं चेव ॥सू० १४३ ॥

छाया–ततः खलु स प्रदेशी केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्–अस्ति खलु भदन्त! यावत् नो उपागच्छति, एवं खलु भदन्त! यावद् विहरामि, ततः खलु मम नगरगुप्तिकाः यावत् चोरमुपनयन्ति, ततः खलु अहं तं पुरुषं जीवितकमेव तोलयामि तोलयित्वा छविच्छेदम् अकुर्वाणः जीविताद् व्यपरोप-

---

'तए णं से पएसी इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एव वयासी) इसके बाद उस प्रदेशीने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा–(अत्थि णं भंते!. जाव नो उवागच्छइ) हे भदन्त ! यह उपमा बुद्धि जन्य है अतः वास्तविक नही है. मुझे इस वक्ष्यमाण कारण से जीव और शरीर का भेद प्रतीत नहीं होता है (एव खलु भंते ! जाव विहरामि) वह कारण इस प्रकार से है–एक दिन की बात है कि मैं गणनायक आदिकों के साथ बाह्य उपस्थानशाला में बैठा हुआ था. (तएणं मम णगरगुत्तिया जाव चोर उवणेंति) इतने में मेरे नगररक्षक साक्षियुक्त आदि विशेषण संपन्न किसी एक चोर को पकड कर ले आए (तए णं अहं तं पुरिसं जीवितगं चेव तुलेमि)

'तएणं से पएसी' इत्यादि ।

सुत्रार्थ—तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी) त्यार पछी ते प्रदेशी राजाએ કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું. (अत्थि णं भंते! जाव नो उवागच्छइ) હે ભદંત ! આ ઉપમા બુદ્ધિ જન્ય છે એથી વાસ્તવિક નથી. વક્ષ્યમાણ કારણથી જીવ અને શરીરની ભિન્નતા મારા મનમા જામતી નથી. (एवं खलु भंते ! जाव विहरामि) તે કારણ આ પ્રમાણે છે–એક દિવસની વાત છે કે હું ગણનાયક વગેરેની સાથે બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળા (બહારની કચેરી)મા બેઠો હતો. (तएणं मम णगर-गुत्तिया जाव चोर उवणेंति) તે વખતે મારા નગરરક્ષકો સાક્ષિયુક્ત વગેરે વિશેષણોથી સંપન્ન કોઇ એક ચોરને પકડી લાવ્યા. (त एणं अहं तं पुरिसं

माह-हे मदेशिन्! स एव पुरुषो यदि जीर्णः-वृद्धः यावत् त्रिवर्षाणि यदधिकैकशततमसूत्रोक्त विशेषणविशिष्टः, पुनः क्षुधापरिक्लान्तःक्षुधाखिन्नः, एतादृशः पुरुषो, जीर्णोपकरणः शरीरबलवृद्धयाद्युपकरणरहितो भवति तदा एक महान्तमयोभारं वा यावत्-शीशकभारं वा परिवोढुं न प्रभुः-न समर्थो भवति, तारुण्ये वार्धक्ये च जीवस्य समानत्वेऽपि उपकरणाभावान्न वृद्धो भारं वोढुं समर्थो भवतीति भावः। तत्-तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने विश्वसिहि-यथा अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम्, नो तज्जीवः स शरीरम्, इति ६। ॥सू० १४२॥

मूलम्—तए णं से पएसी केसिकुमारसमण एवं वयासी-अत्थि णं भंते! जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! जाव विहरामि, तएणं मम णगरगुत्तिया जाव चोरं उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतगं चेव तुलेमि, तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि मय तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलिय स्स वा मुयस्स वा तुलियस्स केइ आणत्ते वा नाणत्ते वा उम्मत्तते वा

है कि समर्थ पुरुष उपकरणों की बलवत्ता में लोहे आदिरूप भार को उठा सकता है तथा वही समर्थ पुरुष उपकरणों को असमीचीनता में लोहे आदिरूप भार को नहीं उठा सकता है, तथा वही पुरुष वृद्धावस्थापन्न होने पर भी अयोभार को नहीं उठा सकता है. अतः इससे यही प्रतीत होता है कि जीव की समानता होने पर भी उपकरणों की असमानता में भारवहन नहीं होता है– इससे यहि मानना चाहिये कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है। ६ ॥ सू १४२ ॥

સશક્ત હોય તો લોખંડ વગેરેના ભારને વહન કરી શકે છે તથા તેજ સમર્થ પુરુષ ને ઉપકરણો અશક્ત અસમીચીન-હોય તો લોખંડ વગેરે રૂપ ભારને વહન કરી શકે તેમ નથી તેમજ તેજ પુરુષ વૃદ્ધાવસ્થાપન્ન હોવાથી લોખંડના ભારને વહન કરી શકે તેમ નથી એથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે જીવની સમાનતા હોવા છતાં એ ઉપકરણો (સાધનો)ની અસમાનતાને લીધે ભારનું વહન કરી શકાય તેમ નથી એથી આ વાત માની લેવી જોઈએ કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે।૬।૧૪૨।

तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लहुयत्ते वा, जइ णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स होज्जा केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं चेव ॥सू० १४३ ॥

छाया-ततः खलु स प्रदेशी केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-अस्ति खलु भदन्त! यावत् नो उपागच्छति, एवं खलु भदन्त! यावद् विहरामि, ततः खलु मम नगरगुप्तिकाः यावत् चोरमुपनयन्ति, ततः खलु अहं तं पुरुषं जीवितकमेव तोलयामि तोलयित्वा छविच्छेदम् अकुर्वाणः जीविताद् व्यपरोप-

'तए णं से पएसी इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद उस प्रदेशीने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(अत्थि णं भंते ! जाव नो उवागच्छइ) हे भदन्त ! यह उपमा बुद्धि जन्य है अतः वास्तविक नही है. मुझे इस वक्ष्यमाण कारण से जीव और शरीर का भेद प्रतीत नही होता है (एव खलु भंते ! जाव विहरामि) वह कारण इस प्रकार से है-एक दिन की बात है कि मैं गणनायक आदिकों के साथ बाह्य उपस्थानशाला में बैठा हुआ था. (तएणं मम णगरगुत्तिया जाव चोर उवणेंति) इतने में मेरे नगररक्षक साक्षियुक्त आदि विशेषण संपन्न किसी एक चोर को पकड कर ले आए (तए णं अहं तं पुरिसं जीवितगं चेव तुलेमि)

'तएणं से पएसी' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी) त्यार पछी ते प्रदेशी राजाએ કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (अत्थि णं भंते! जाव नो उवागच्छइ) હે ભદંત ! આ ઉપમા બુદ્ધિ જન્ય છે એથી વાસ્તવિક નથી. વક્ષ્યમાણ કારણથી જીવ અને શરીરની ભિન્નતા મારા મનમા જામતી નથી. (एवं खलु भंते ! जाव विहरामि) તે કારણ આ પ્રમાણે છે-એક દિવસની વાત છે કે હું ગણનાયક વગેરેની સાથે બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળા (બહારની કચેરી)મા બેઠો હતો. (तएणं मम णगरगुत्तिया जाव चोर उवणेंति) તે વખતે મારા નગરરક્ષકો સાક્ષિયુક્ત વગેરે વિશેષણોથી સંપન્ન કોઈ એક ચોરને પકડી લાવ્યા. (त एणं अहं तं पुरिसं

यामि मृत-तोलयामि ने चैव खलु तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य किञ्चित् नानात्वं वा उन्मात्रत्वं वा तुच्छत्वं वा गुरुकत्वं वा लघुकत्वं वा, यदि खलु भदन्त ! तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य भवेत् किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुत्वं वा तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तदेव, यस्मात् न्नद्ध (?) मद-त । तस्य पुरुषस्य जीवतो वा

उसे मैंने जीवित ही तोला (तुलेत्ता छविच्छेय अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मय तुलेमि) तोल कर फिर मैंने उसे अंग भंग किये बिना जीवन से रहित कर दिया और फिर मरे हुए उसे तोला (णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स केइ णाणत्ते वा उम्मत्तरो वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लघुयत्ते वा) तब जीवित तुले हुए उसमें और मरे तुले हुए उसमें मुझे किसी भी प्रकार की न्यूनाधिकता नहीं दिखाई दी न उस में भार बढा न पर उसका भार कम हुआ न उसमें गुरुता आई न उसमें लघुता आई (जइ णं भंते तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स वा होज्जा केई णाणत्ते वा जाव लघुयत्ते वा) हे भदन्त! जीवित तुले हुए और मरे तुले हुए उस पुरुष में यदि कोई न्यूनाधिकता हो जाती यावत् लघुता हो जाती (तो ण अह सद्दहेज्जा तं चेव) तो मैं श्रद्धा कर लेता कि जीव अन्य है, और शरीर अन्य है या जीव शरीर नहीं है पर शरीर जीव नहीं है

जीवितं चेव तुलेमि) मे जीवितावस्थामां ज तेनु वजन कर्यु (तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मय तुलेमि) तोलीने पछी मे तेने अंग भंग कर्या वगर ज जीवन रहित बनावी दीधो अने मर्या पछी फरी तेनु मे वजन कर्युं (णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स केइ णाणत्ते वा उम्मत्तत्ते वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लघुयत्ते वा) त्यारे जीवतां वजन करायेला तेमां अने मृत्यु पाम्या पछी वजन करायेला तेमां मने कोई पण जातनी न्यूनाधिकता लागी नहीं तेमा भार वधारे पण थयो नहीं, अने तेमांथी भार ओछो पण थयो नहीं तेमां गुरुता आवी नथी तेम तेमा लघुता पण आवी नथी. (जइ णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स वा होज्जा केई णाणत्ते वा जाव लघुयत्ते वा) हे भदन्त ! जीवितावस्थामां करेला वजनमां अने मृतावस्थामां करेला ते पुरुषना वजनमां जो कोई पण जातनी न्यूनाधिकता थई जात यावत् लघुता थई जात (तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव)

तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा। तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा–तज्जीवः तदेव ॥सू० १४३॥

टीका–'तए णं से पएसी' इत्यादि ततः तदनन्तरं खलु स प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणम्, एवमवादीत हे भदन्त! अस्ति खलु यावत यावत्पदेन 'एषा प्रज्ञा-तउपमा अनेन पुनः वक्ष्यमाणेन कारणेन' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहः एतद्विवरणं पूर्वतर (१४०) चत्वारिंशदधिकैकशततमसूत्रे कृतम्, नो उपागच्छति–जीवशरीरयोः परस्परं भेदो मे–मम मनसि न संगच्छते। तदे

जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्थे वा जाव लहुयत्ते वा, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा–तं जीवो तं चेव) जिस कारण हे भदन्त! जीते हुए तोले गये उस पुरुष में और मरे हुए तोले गये उसी पुरुष में जब कोई भिन्नता–न्यूनाधिकता यावत् लघुता मैं नहीं देखता हूं–इस कारण से मेरा यह मन्तव्य कि वही पूर्वोक्त जीव है और वही शरीर है, न अन्य जीव है, और न अन्य शरीर है सुस्थिर है।

टीकार्थ--केशीकुमार श्रमण का जीव शरीर भिन्नता–विषयक कथन सुनकर प्रदेशी राजाने उनसे इस प्रकार कहा–हे भदन्त! आपने जो यह उपमा जीव शरीर की भिन्नता प्रकट करने के लिये प्रकट की है वह केवल उपमामात्र है–बुद्धिजन्य होने से वास्तविक नहीं है. अतः जो बात

તો હું આ વાત પર શ્રદ્ધા કરી શકત કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે તે જીવ શરીર નથી અને શરીર જીવ નથી. (जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्थे वा जाव लहुयत्ते वा, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा, तं जीवो तं चेव) જેથી હે ભદંત! જીવીતાવસ્થામાં વજન કરાયેલ તે પુરૂષમાં અને મૃતાવસ્થામાં વજન કરાયેલ તેજ પુરૂષમાં જ્યારે કોઈ પણ જાતની ભિન્નતા–ન્યૂનતાધિકતા યાવત્ લઘુતા મારાં ધ્યાનમાં આવતી નથી તેથી મારી એવી માન્યતા છે કે જે જીવ છે તેજ શરીર છે. જીવ અન્ય નથી તેમજ શરીર પણ અન્ય નથી.

ટીકાર્થ—કેશી કુમારશ્રમણનું જીવ શરીર ભિન્નતા સંબંધી કથન સાંભળીને પ્રદેશી રાજાએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત! તમે જીવ અને શરીરની ભિન્નતા સ્પષ્ટ કરવા માટે જે ઉપમા આપી છે તે માત્ર ઉપમા જ છે. તે બુદ્ધિ-

यामि मृत -तोलयामि ने चैव खलु तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य किश्चित् नानात्वं वा उन्मानत्वं वा तुच्छत्वं वा गुरुकत्वं वा लघुकत्वं वा, यदि खलु भदन्त ! तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य भवेत् किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुत्वं वा तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तथैव, यस्मात् खलु भदन्त ! तस्य पुरुषस्य जीवतो वा

उसे मैंने जीवित ही तोला (तुलेत्ता छविच्छेय अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मय तुलेमि) तोल कर फिर मैंने उसे भग, मग किये बिना जीवन से रहित कर दिया और फिर मरे हुए उसे तोला (णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा उम्माणत्ते वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लहुयत्ते वा) तब जीवित तुले हुए उसमें और मरे तुले हुए उसमें मुझे किसी भी तरह की न्यूनाधिकता नहीं दिखाई दी न उस में भार बढा न वह उसका भार कम हुआ न उसमें गुरुता आई न उसमें लघुता आई (जइ णं भंते तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स वा होज्जा केई नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा) हे भदन्त! जीवित तुले हुए और मरे तुले हुए उस पुरुष में यदि कोई न्यूनाधिकता हो जाती यावत् लघुता हो जाती (तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव) तो मैं श्रद्धा कर लेता कि जीव अन्य है, और शरीर अन्य है वह जीव शरीर नहीं है वह शरीर जीव नहीं है

जीवितं चेव तुलेमि) મેં અસ્તિત્વાવસ્થામાં જ તેનું વજન કર્યું (तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मय तुलेमि) તોળીને પછી મેં તેને અંગ ભંગ કર્યા વગર જ જીવન રહિત બનાવી દીધો અને મર્યા પછી ફરી તેનું મેં વજન કરાવ્યું (णो चेव ण तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा उम्माणत्ते वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लहुयत्ते वा) ત્યારે જીવતાં વજન કરાવેલા તેમાં અને મૃત્યુ પામ્યા પછી વજન કરાવેલા તેમાં મને કોઈ પણ જાતની ન્યૂનાધિકતા લાગી નહીં, તેમાં ભાર વધારે પણ થયો નહીં અને તેમાંથી ભાર ઓછો પણ થયો નહીં તેમાં ગુરુતા આવી નથી તેમ તેમાં લઘુતા પણ આવી નથી. (जइणं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स वा होज्जा केई नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा) હે ભદંત ! જીવીતાવસ્થામાં કરેલા વજનમાં અને મૃતાવસ્થામાં કરેલા તે પુરુષના વજનમાં જો કોઈ પણ જાતની ન્યૂનાધિકતા થઈ જાત યાવત્ લઘુતા થઈ જાત. (तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव)

तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा। तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः तदेव ॥सू० १४३॥

टीका-'तए णं से पएसी' इत्यादि ततः तदनन्तरं खलु स प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणम्, एवमवादीत हे भदन्त! अस्ति खलु यावत् यावत्पदेन 'एषा प्रज्ञातउपमा अनेन पुनः वक्ष्यमाणेन कारणेन' इत्येषां पदानां संग्रहः एतद्विवरणं पूर्वतर (१४०) चत्वारिंशदधिकैकशततमसूत्रे कृतम्, नो उपागच्छति-जीवशरीरयोः परस्परं भेदो मे-मम मनसि न संगच्छते। तदे

जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्थे वा जाव लहुयत्ते वा, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा-तं जीवो तं चेव) जिस कारण हे भदन्त! जीते हुए तोले गये उस पुरुष में और मरे हुए तोले गये उसी पुरुष में जब कोई भिन्नता-न्यूनाधिकता यावत् लघुता मैं नहीं देखता हूं-उस कारण से मेरा यह मन्तव्य कि वही पूर्वोक्त जीव है और वही शरीर है, न अन्य जीव है, और न अन्य शरीर है सुस्थिर है।

टीकार्थ---केशीकुमार श्रमण का जीव शरीर भिन्नता-विषयक कथन सुनकर प्रदेशी राजाने उनसे इस प्रकार कहा-हे भदन्त!-आपने जो यह उपमा जीव शरीर की भिन्नता प्रकट करने के लिये प्रकट की है वह केवल उपमामात्र है-बुद्धिजन्य होने से वास्तविक नहीं है. अतः जो बात

તો હું આ વાત પર શ્રદ્ધા કરી શકત કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે તે જીવ શરીર નથી અને શરીર જીવ નથી. (जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्से वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्थे वा जाव लहुयत्ते वा, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा, तं जीवो तं चेव) જેથી હે ભદંત! જીવીતાવસ્થામાં વજન કરાયેલ તે પુરૂષમાં અને મૃતાવસ્થામાં વજન કરાયેલ તેજ પુરૂષમાં જ્યારે કોઈ પણ જાતની ભિન્નતા-ન્યૂનતાધિકતા યાવત્ લઘુતા મારા ધ્યાનમાં આવતી નથી તેથી મારી એવી માન્યતા છે કે જે જીવ છે તેજ શરીર છે જીવ અન્ય નથી તેમજ શરીર પણ અન્ય નથી.

ટીકાર્થ—કેશી કુમારશ્રમણનું જીવ શરીર ભિન્નતા સંબંધી કથન સાંભળીને પ્રદેશી રાજાએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત! તમે જીવ અને શરીરની ભિન્નતા સ્પષ્ટ કરવા માટે જે ઉપમા આપી છે, તે માત્ર ઉપમા જ છે. તે બુદ્ધિ-

वाऽऽइ-एव खलु हे भदन्त ! यावत्-यावत्पदेन बाह्यायामुपस्थानशाला यामनेकगणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिकेभ्य श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मन्त्रि-महामन्त्रि गणक-दौवारिकामात्य-चेट पीठमर्दनगरनिगमदूतसन्धिपालैः सार्द्धं सपरिवृतः" इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या षट्त्रिंशदधिकशततमसूत्रे गता। विहरामि-तिष्ठामि

मैं कह रहा हूं उससे इन दोनों की अभिन्नता ही प्रकट होती है, यह बात इस प्रकार से है-मैं एक दिन गणनायक आदिकों के साथ अपनी बाह्य उपस्थान शाला में बैठा हुआ था नगर रक्षक एक चोर को पकड कर मेरे समक्ष लाये-मैंने उसे पहिले तो जीवितावस्था में तोला, बाद में उसे मार कर तोला तोलने पर उसके भार में कुछ भी न्यूनाधिकता नहीं आई अतः इससे मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूं कि उस चोर का वही जीव है और वही शरीर है न जीव अन्य है और न शरीर अन्य है। यहां 'जाव नो उवागच्छइ' में जो यावत्पद आया है उससे 'एषा प्रज्ञा उपमा, अनेन पुनः वक्ष्यमाणकारणेन' इस पाठका संग्रह हुआ है। इसका विवरण १३८वे सूत्र में किया जा चुका है। 'जाव विहरामि' में आये हुए यावत्पद से 'बाह्यायामुपस्थानशालायां अनेक गणनायक-दण्डनायक, राजेश्वर, तलवर माडम्बिकेभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मन्त्रि-महामंत्रि गणक-दौवारिका मात्य-चेट-पीठमर्द नगर निगम-दूतसन्धिपालैः सार्ध सपरिवृतः' इस पाठ का

अन्य होवाथी अवास्तविक ज छे एथी जे वात हुं कहुं छुं तेथी एओ बन्नेनी अभिन्नता ज प्रकट थाय छे ए वात आ प्रमाणे छे हुं एक दिवस गणनायक वगेरेनी साथे मारी बाह्य उपस्थानशाळामां बेठो हतो त्यां नगररक्षको एक चोरने पकडीने मारी सामे लाव्या में पहेलां तेनुं जीवतां ज वजन कर्युं त्यार पछी तेने मारीने पछी तेनुं वजन कर्युं तो तेना वजनमां कोई पण जातनी न्यूनाधिकता जणाई नहि एथी हुं आ निष्कर्ष पर आव्यो छुं के ते चोरनो जीव छे शरीर छे अने शरीर छे तेज जीव छे जीव अन्य नथी अने शरीर अन्य नथी अहीं 'जाव नो उवागच्छइ' मां जे यावत् पद आवेल छे तेथी (एषा प्रज्ञा उपमा, अनेन पुनः वक्ष्यमाणकारणेन' आ पाठनो संग्रह थयो छे. आनुं स्पष्टीकरण १३८ मा सूत्र करवामां आव्युं छे (बाह्यायामुपस्थानशालायां अनेकगण नायक-दण्डनायक, राजेश्वर, तलवर माडम्बिक, कौटुम्बिकेभ्य, श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मन्त्रि-महामन्त्रि गणक-दौवारिकामात्य-चेट पीठ मर्द

ततः-तदा खलु मम नगरगुप्तिकाः-नगररक्षकाः ससाक्ष्यं-साक्षियुक्तं यथा तथा यावत्-सहोढादिविशेषणविशिष्टं चौरमुपनयन्ति-मत्समीपे समानयन्ति, ततः खलु अहं तं चौरं पुरुषं जीवितकमेव तोलयामि, तोलयित्वा छविच्छेदम्-अङ्गादिभङ्गम् अकुर्वाणः अकुर्वन्नेव जीविताद् व्यपरोपयामि-मारयामि, मारयित्वा पुनरपि मृतं तोलयामि, नैव च खलु तस्य मारित चोरपुरुषस्य जीवतःमतः तोलितस्य वा-अथवा मृतस्य च तोलितस्य किञ्चित्-किमपि नानात्वं-न्यूनाधिकत्वं पश्यामि, नानात्वस्य रूपं दर्शयति-उन्मात्रत्वं-भाराधिक्यं, वा-अथवा, तुच्छत्वं-भारात्पत्वं वा गुरुकत्वं-गुरुता वा, लघुकत्वं-लघुता वा, यदि खलु हे भदंत! तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य किञ्चित् नानात्वं यावत् लघुकत्वं वा भवेत, तदा खलु अहं श्रद्ध्यां तदेव-अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, नो तज्जीवः स शरीरम इति। हे भदन्त! यस्मात् कारणात् खलु तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चिद् नानात्वं लघुकत्वं वा,तस्मात् मे सुप्रतिष्ठिता-सुस्थिरा प्रतिज्ञा यथा तज्जीवः, तदेव-पूर्वोक्तमेव-तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, इति ॥सू० १४३॥

मूलम्---तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-अत्थि णं पएसी! तुमे कयाइ वत्थी धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा? हंता अत्थि। अत्थि णं पएसी! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा णो इणट्ठे समट्ठे एवामेव पएसी! जीयस्स अगुरुलहुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! तं चेव७ ॥ सू० १४४ ॥

संग्रह हुआ है इन पदों की व्याख्या १३५वे सूत्र में की जा चुकी है। 'जाव चोरं उवणेंति' में ससाक्षी सहोढादि विशेषणोंका यावत् पदसे ग्रहण हुआ है ॥सू. १४३॥

-नगर-निगम दूतसंधिपालैः सार्धं संपरिवृत्तः" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા ૧૩૫ મા સૂત્રમાં કરવામાં આવી છે 'जाव चोरं उवणेंति' મા સસાક્ષી-સહોઢાદિ વિશેષણોનું યાવત પદથી ગ્રહણ થયું છે ॥સૂ૦ ૧૪૩॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् अस्ति खलु प्रदेशिन्! त्वया कदाचिद् बस्तिः ध्मातपूर्वो ध्मापितपूर्वो वा? हन्त अस्ति। अस्ति खलु प्रदेशिन्! तस्य बस्तेः पूर्णस्य वा तोलितस्य अपूर्णस्य वा तोलितस्य किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा? नायमर्थः समर्थः। एवमेव प्रदेशिन् जीवस्यागुरुलघुकत्वं प्रतीत्य, जीवतो

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद उन केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा—(अत्थि णं पएसी! तुमे कयाइ बत्थी धमियपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा?) हे प्रदेशिन्! तुमने कभी भस्त्रिका को वायु से पूरित की है या किसी से करवाई है? (हंता अत्थि) तब प्रदेशीने कहा—हां, भदन्त! की है और कराई है। (अत्थि णं पएसी! तस्स बत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा) पुनः केशीकुमार श्रमणने उससे कहा—हे प्रदेशिन्! जब तुमने उस भस्त्रिका को वायु से पूरित करके तोला तब, और वायु से अपूरितावस्था में तोला तब उसमें तुम्हें कुछ न्यूनाधिकता यावत् लघुता दृष्टिगत हुई? प्रदेशीने कहा—(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है—अर्थात् उसमें न्यूनाधिकता यावत् लघुता कुछ भी दृष्टिगत नहीं हुई है (एवामेव पएसी जीवस्स अगुरुलहु

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे, पएसिं रायं एवं वयासी) त्यार पछी ते केशीकुमारश्रमणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं—(अत्थि णं पएसी! तुमे कयाइ बत्थी धमियपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा?) हे प्रदेशिन्! तमे कोई पण दिवसे भस्त्रिका (धमण) मां हवा भरी छे के कोईनी पासेथी भरावडावी छे? (हंता अत्थि) त्यारे प्रदेशी राजाए कह्युं, हां भदंत! हवा भरी छे अने भरावडावी छे, (अत्थि णं पएसी! तस्स बत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा) फरी केशीकुमारश्रमणे तेने कह्युं—हे प्रदेशिन्! ज्यारे तमे ते धमणनुं हवा भरीने वजन कर्युं अने पछी हवा बहार काढीने तेनुं वजन कर्युं त्यारे तमने मां कंईक न्यूनाधिकता यावत् लघुता जणाई? प्रदेशीए कह्युं (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदंत! आ अर्थ समर्थ नथी—एटले के न्यूनाधिकता यावत् लघुता कंई पण जणाई नहि (एवामेव पएसी

वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन् ! तदेव ७ ।सू० १४४॥

टीका—"तए णं केसी कुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्—हे प्रदेशिन ! तव कदाचित्—कस्मिंश्चित्काले बस्तिः--दृतिः--चर्मपुटरूपा भस्त्रिका ध्मातपूर्वः--पूर्वं ध्मातः—वायुभिः पूरितः, वा-अथवा ध्मापितपूर्वः परं केनापि ध्मापितः-वायुभिः पूर्णः कारितः इति केशिप्रश्नः, तत्र प्रदेशी प्राह—हन्त ! अस्ति। पुनः केशी पृच्छति हे प्रदेशिन ! तस्य बस्तेः पूर्णस्य वायुभृतस्य तोलितस्य, वा—अथवा अपूर्णस्य—वायुभिरपूरितस्य वा तोलितस्य मतः किञ्चित् किमपि नानात्वं यावत लघुकत्वं वा अस्ति ? इति केशिप्रश्नः प्रदेशी प्राह—नायमर्थः समर्थः—नानात्वसद्भावरूपोऽर्थो न विद्यते। केशी कथयति—एवमेव हे प्रदेशिन् ! जीवस्य अगुरुलघुकत्वं-गुरुत्वलघुत्वरहितत्व प्रतीत्य—आश्रित्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा, तत् तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन ! त्वं श्रद्धेहि मद्वचने श्रद्धां कुरु, तदेव—यथा—नो तज्जीवः स शरीरम्, अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति, ।सू. १४४।

यत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ णाणंत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तं चेव ७) तो इसी प्रकार से हे प्रदेशिन् ! जीव के अगुरुलधुत्व रहितपने को प्रतीत करके जीवित अवस्था में तोले गये बाद में मृत अवस्था में तोले गये उस चोर के शरीर में कुछ भी नानात्व अथवा लघुत्व नहीं है। इस कारण हे प्रदेशिन्! तुम मेरे वचन में श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥ सू० १४४ ॥

जीवस्स अगुरुलहुयत्त पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तं चेव ७)-તો આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ ! જીવનો અગુરૂલઘુત્વ ગુણેન-ગુરૂત્વલઘુત્વ રહિતાવસ્થાને સામે રાખીને જીવિતાવસ્થામા કરાયેલા તે ચોરના વજનમા અને મૃતાવસ્થામાં કરાયેલા તે ચોરના વજનમા કોઇ પણ જાતનું નાનાત્વ કે લઘુત્વ નથી. એથી હે પ્રદેશિન્ ! તમે મારી આ વાત પર વિશ્વાસ કરી લો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે. આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥૧૪૪॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्
अस्ति त्वया प्रदेशिन् ! अयः कदाचिद् ध्मातपूर्वं वा ध्मापितपूर्वं वा ?
हन्त अस्ति । अस्ति खलु प्रदेशिन् ! तस्य अयसः पूर्वं वा अग्निकाय
अनुप्रविष्टः वा [illegible] यावद्, नानुप्रविष्टः वा ? ।
नायमर्थः समर्थः । एवमेव प्रदेशिन् ! जीवोऽप्रतिहतगतिः सर्वत्र, जीवना

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद उन केशीकुमारश्रमण ने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा—(अत्थि णं पएसी ! तुमे कयाइ अए धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ?) हे प्रदेशिन् ! तुमने कभी लोहे को धमा है या किसी से धमवाया है ? (हंता अत्थि) हाँ भदन्त ! धमा है, धमवाया भी है और (अत्थि णं पएसी ! तस्स अयंसि सव्वंसि अगणिकाए अणुपविट्ठे वा नो अणुपविट्ठे वा ?) पुनः केशीकुमारश्रमण ने कहा—हे प्रदेशिन् ! जब तुमने उस लोहे को धमा तब उसमें पूरा अग्निकाय प्रविष्ट हुआ था या नहीं ? [illegible] उसमें अग्निकाय [illegible] हुई है (णोकारात्मक [illegible]

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

[illegible]

वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! तदेव ७ ।सू० १४४॥

टीका—"तए णं केसी कुमारसमणे" इत्यादि-ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्-हे प्रदेशिन! तत् कदाचित्-अस्मिंश्चित्काले त्वया-दृतिः-चर्मपुटरूपमस्त्रिका ध्मातपूर्वः-पूर्वं ध्मातः-वायुभिः पूरितः, वा-अथवा ध्मापितपूर्वः परं केनापि ध्मापितः-वायुभिः पूर्णः कारितः इति केशिप्रश्नः, तत्र प्रदेशी प्राह-हन्त! अस्ति। पुनः केशी पृच्छति हे प्रदेशिन! तस्य वस्तेः पूर्णस्य वायुभृतस्य तोलितस्य, वा-अथवा अपूर्णस्य-वायुभिरपूरितस्य वा तोलितस्य सतः किञ्चित् किमपि नानात्वं यावत् लघुकत्वं वा अस्ति? इति केशिप्रश्नः प्रदेशी प्राह-नायमर्थः समर्थः-नानात्वसद्भावरूपोऽर्थो न विद्यते। केशी कथयति-एवमेव हे प्रदेशिन्! जीवस्य अगुरुलघुकत्वं-गुरुत्वलघुत्वरहितत्वं प्रतीत्य-आश्रित्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा, तत् तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि मद्वचने श्रद्धां कुरु, तदेव-यथा-नो तज्जीवः स शरीरम्, अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति, ।सू. १४४।

यत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ णाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तं चेव ७) तो इसी प्रकार से हे प्रदेशिन्! जीव के अगुरुलघुत्व रहितपने को प्रतीत करके जीवित अवस्था में तोले गये बाद में मृत अवस्था में तोले गये उस चोर के शरीर में कुछ भी नानात्व अथवा लघुत्व नहीं है। इस कारण हे प्रदेशिन्! तुम मेरे वचन में श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥ सू० १४४ ॥

जीवस्स अगुरुलहुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ णाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तं चेव ७)-તો આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! જીવનો અગુરૂલઘુત્વ ગુણેન-ગુરૂત્વલઘુત્વ રહિતાવસ્થાને સામે રાખીને જીવિતાવસ્થામાં કરાયેલા તે ચોરના વજનમાં અને મૃતાવસ્થામાં કરાયેલા તે ચોરના વજનમાં કોઇ પણ જાતનું નાનાત્વ કે લઘુત્વ નથી. એથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારી આ વાત પર વિશ્વાસ કરી લો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે. આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥૧૪૪॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! अहं अन्नया जाव चोरं उवणेति, तए णं अहं तं पुरिसं सव्वओ समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि करित्ता सव्वओ समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, एवं तिहा चउहा संखेज्जहा फालियं करेमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, जइ णं भंते! अहं तंसि पुरिसंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंसि जीवं पासेज्जा, तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा फालियंमि जीवं न पासामि तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा, जहा तं जीवो तं सरीरं तं चेव। सू.१४५।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्—अस्ति खलु भदन्त! एषा यावद् नो उपागच्छति एवं खलु भदन्त!

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद प्रदेशी राजा ने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा—(अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ) हे भदन्त! यह उपमा बुद्धिकल्पित होने से वास्तविक नहीं है इस वक्ष्यमाण कारण से मुझे जीव और शरीर का भेद प्रतीत नहीं होता है वह वक्ष्यमाण कारण (एवं भंते!) हे भदन्त! इस प्रकार से है

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ત્યાર પછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ) હે ભદંત! આ ઉપમા બુદ્ધિ પ્રેરિત હોવાથી વાસ્તવિક નથી. આ નિમ્ન કારણથી મારા મનમાં જીવ અને શરીરની ભિન્નતાની વાત જામતી નથી (एवं भंते) હે ભદંત! તે આ પ્રમાણે છે (अहं अन्नया जाव

अहमन्यदा यावत् चोरमुपनयन्ति, ततः खलु अहं तं पुरुषं सर्वतः समन्तात् समभिलोके नैव खलु तत्र जीवं पश्यामि, ततः खलु अहं तं पुरुषं द्विधा स्फाटितं करोमि, कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोके, न चैव खलु तत्र जीवं पश्यामि, एवं त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा स्फाटितं करोमि न चैव तत्र जीवं पश्यामि, यदि खलु भदन्त ! अहं तस्मिन् पुरुषे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा

(अहं अन्नया जाव चोर उवणेंति) मैं एक दिन १३५वें सूत्र में कथित अनेक गणनायक आदिकों के साथ उपस्थानशाला में बैठा हुआ था वहां पर मेरे नगर रक्षक मुसकिया बन्धन से बांधकर एक चोर को लाया (तए णं अहं तं पुरिसं सव्वओ समंता समभिलोएमि) मैं ने उस पुरुष को मस्तक से लेकर चरणपर्यन्त अच्छी तरह से देखा (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) परन्तु मुझे वहां पर जीव देखने में नहीं आया (तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि) इसके बाद मैंने उस चोर के दो टुकडे कर दिये. (करित्ता सव्वओ समंता समभिलोएमि) दो टुकडे करने के बाद फिर मैंने उसका अच्छी तरह से सब ओर से निरीक्षण किया (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) परन्तु फिर भी वहां पर मुझे जीव देखने में नहीं आया (एवं तिहा, चउहा, संखेज्जहा फालियं करेमि—नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) तदनन्तर मैंने उसके तीन टुकडे किये, चार टुकडे किये, यावत् संख्यात (सैंकडे) टुकडे किये परन्तु फिरभी वहां मुझे जीव नहीं दिखा (जइ णं भंते ! अहं तंसि पुरिसंसि दुहा वा तिहा वा चउहा

चोरं उवणेंति) હું એક દિવસે ૧૩૫ મા સૂત્રમા કથિત ઘણા ગણ નાયકોવગેરે-ની સાથે બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળામાં બેઠો હતો. ત્યા મારા નગરરક્ષકો એક ચોરને મુશ્કેટાટ બાંધીને મારી સામે લાવ્યા. (तए णं अहं तं पुरिसं सव्वओ समंता समभिलोएमि) મેં તે પુરૂષને મસ્તકથી માંડીને પગ સુધી સારી રીતે જોયો. (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) પણ મને તેમાં જીવ દેખાયો નહીં. (तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि) ત્યાર પછી મેં તે ચોર પુરૂષના બે કકડા કરી નાખ્યા. (करित्ता सव्वओ समंता समभिलोएमि) બે કકડાઓ કરીને પછી મેં તેનું સારી રીતે નિરીક્ષણ કર્યું. (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) પણ મને ત્યાં જીવ દેખાયો નહીં. (एवं तिहा. चउहा. संखेज्जहा फालियं करेमि—नो चेव णं तत्थ जीव पासामि) ત્યાર પછી મેં તેના ત્રણ કકડા કર્યા, ચાર કકડા કર્યા યાવત્ સંખ્યાત (સેંકડો) કકડા કર્યા પણ છતા એ ત્યાં મને જીવ દેખાયો નહીં.

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! अहं अन्नया जाव चोरं उवणेति, तएणं अहं तं पुरिसं सव्वओ समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, तएणं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि करित्ता सव्वओ समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, एवं तिहा चउहा संखेज्जहा फालियं करेमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, जइ णं भंते! अहं तंसि पुरिसंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंसि जीवं पासेज्जा, तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा फालियंसि जीवं न पासामि तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा, जहा-तं जीवो तं सरीरं तं चेव ।सू.१४५।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्-अस्ति खलु भदन्त! एषा यावत् नो उपागच्छति एवं खलु भदन्त!

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा—(अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ) हे भदन्त! यह उपमा बुद्धिमान्य होने से वास्तविक नहीं है इस वक्ष्यमाण कारण से मुझे जीव और शरीर का भेद प्रतीत नहीं होता है वह वक्ष्यमाण कारण (एवं भंते!) हे भदन्त! इस प्रकार से है

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

શબ્દાર્થ—(तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ત્યાર પછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ) હે ભદંત! આ ઉપમા બુદ્ધિ કલ્પિત હોવાથી વાસ્તવિક નથી. આ નિમ્ન કારણથી મારા મનમાં જીવ અને શરીરની ભિન્નતા જણાતી નથી. (एवं भंते) હે ભદંત! તે આ પ્રમાણે છે (अहं अन्नया जाव

किन्तु तत्र जीवं नैव खलु पश्यामि-अनेन प्रकारेण त्रिधा-त्रिखण्डं स्फाटितं, चतुर्धा-चतुःखण्डं स्फाटितं संख्येयधा-संख्यातखण्डं स्फाटितं करोमि, किन्तु तत्र तस्मिन् द्वित्रिचतुःसंख्येयधा स्फाटिते चोरे जीवं नैव पश्यामि, हे भदन्त! यदि खलु अहं तस्मिन्-चोरपुरुषे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं पश्येयं तदा-जीवदर्शने खलु अहं श्रद्धध्यां भवतोक्ते विश्वस्याम् तदेव-नो तज्जीवः स शरीरम् अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, इति, यस्मात् खलु हे भदन्त! अहं तस्मिन् चोरे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं न पश्यामि, तस्मात्-जीवादर्शनकारणात् मे-मम प्रतिज्ञा-स्वीकारः, सुप्रतिष्ठिता-सुस्थिरा यथा--तज्जीवः स शरीरं तदेव--नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति। ॥ सू० १४५ ॥

मूलम्-तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-मूढतराए णं तुमं पएसी ताओ कट्टहाराओ, के णं भंते कट्टहारए? पएसी! से जहाणामए केइपुरिसो वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए-किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्ह असणं साहेज्जासि, अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेज्जा एत्तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय

उसके दो तीन चार अथवा संख्यात टुकडे कर देने पर भी जीव नहीं देखा उस कारण से मेरा मन्तव्य कि जीव शरीररूप है और शरीर जीवरूप है. जीव भिन्न नहीं है, शरीर भिन्न नहीं है सुस्थिर है.।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥ सू० १४५ ॥

તેના બે ત્રણ ચાર અથવા સંખ્યાત કકડાઓ કર્યા પછી પણ જીવ જોયો નહિ તે તે કારણથી મારી જીવ શરીરરૂપ છે અને શરીર જીવરૂપ છે, જીવ ભિન્ન નથી અને શરીર ભિન્ન નથી એવી માન્યતા સુસ્થિર છે.

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥સૂ૦ ૧૪૫॥

संख्येयधा वा स्फोटितं जीवं पश्येयं, तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तथैव, यस्मात् खलु भदन्त! अहं तस्मिन् द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फोटिते जीवं न पश्यामि, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः तच्छरीरं तदेव। ॥सू० १४५॥

टीका—'तए णं पएसी राया' इत्यादि-ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्, एवमवादीत्-हे भदन्त! अस्ति खलु एषा इयम् यावत्-यावत्पदेन-'प्रज्ञाता उपमा, अनेन पुनः कारणेन' इत्येषां पदानां संग्रहः, प्रज्ञया-बुद्धिविशेषाद् उपमाऽस्ति किन्तु अनेन वक्ष्यमाणेन कारणेन भवदुक्तो जीवशरीरभेदो नो उपागच्छति,-न संगच्छते। तत्कारणं दर्शयितुमुपक्रमते-एवं खलु हे भदन्त! एवं-वक्ष्यमाणरीत्या अहम् अन्यदा-अन्यस्मिन् काले यावत्-यावत्पदेन-बाह्योपस्थानशालायां षट्त्रिंशद्विकरूपगण-प्रोक्तानेकगणनायकादिपदादारभ्य 'मस्तकोटकबन्धनबद्ध' इति पर्यन्तपाठोक्तविशेषणविशिष्टं चोरमुपनयन्ति, ततः खलु अहं तं पुरुषं सर्वतः-आपादमस्तकं, समन्तात् साङ्गोपाङ्गं समभिलोके सम्यग् आभिमुख्येन पश्यामि किन्तु तत्र-तस्मिन्-चोरे जीवं नैव पश्यामि, ततः खलु अहं तं-चोरं द्विधा-द्विखण्डं स्फोटितं-विदारितं करोमि कृत्वा सर्वेन समन्तात् समभिलोके,

वा सखेज्जहा वा फालियंसि जीवं पासेज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव) भदन्त यदि मद्न्त! मुझे उस पुरुष के दो, तीन चार, अथवा संख्यात टुकड़े करने पर उसका जीव दिखता तो मैं आपके इस कथन पर विश्वास कर लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है. जीव शरीररूप नहीं है, शरीर जीवरूप नहीं है (जम्हा णं भंते! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा फालियंमि जीवं न पासामि-तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा-जहा तं जीवो तं सरीरं तं चेव) जिस कारण से हे भदन्त! मैंने

(जइणं भंते! अहं तंसि पुरिसंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंसि जीवं पासेज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव) जो हे भदन्त! अने ते पुरुषना बे त्रण चार अथवा संख्यात टुकडाओ करवाथी तेनो जीव जोवामां आवी जात तो हुं तमारा आ कथन पर विश्वास करी लेत के जीव अन्य छे अने शरीर अन्य छे. जीव शरीररूप नथी अने शरीर जीवरूप नथी (जम्हा णं भंते! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा, फालियंसि जीवं न पासामि-तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं सरीरं तं चेव) जे कारणथी हे भदन्त! मैं

किन्तु तत्र जीवं नैव खलु पश्यामि-अनेन प्रकारेण त्रिधा-त्रिखण्डं स्फाटितं, चतुर्धा-चतुःखण्डं स्फाटितं संख्येयधा-संख्यातखण्डं स्फाटितं करोमि, किन्तु तत्र तस्मिन् द्वित्रिचतुःसंख्येयधा स्फाटिते चोरे जीवं नैव पश्यामि, हे भदन्त! यदि खलु अहं तस्मिन्-चोरपुरुषे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं पश्येयं तदा-जीवदर्शने खलु अहं श्रद्दध्यां भवतोक्ते विश्वस्याम् तदेव-नो तज्जीवः स शरीरम् अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, इति, यस्मात् खलु हे भदन्त! अहं तस्मिन् चोरे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं न पश्यामि, तस्मात्-जीवादर्शनकारणात् मे-मम प्रतिज्ञा-स्वीकारः, सुप्रतिष्ठिता-सुस्थिरा यथा--तज्जीवः स शरीरं तदेव--नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति। ॥ सू० १४५ ॥

मूलम्-तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-मूढतराए णं तुमं पएसी ताओ कट्ठहाराओ,! के णं भंते कट्ठहारए? पएसी! से जहाणामए केइ पुरिसो वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए-किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि, अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेज्जा एत्तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय

उसके दो तीन चार अथवा संख्यात टुकडे कर देने पर भी जीव नहीं देखा उस कारण से मेरा मन्तव्य कि जीव शरीररूप है और शरीर जीवरूप है. जीव भिन्न नहीं है, शरीर भिन्न नहीं है सुस्थिर है.।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥ सू० १४५ ॥

તેના બે ત્રણ ચાર અથવા સંખ્યાત ટુકડાઓ કર્યા પછી પણ જીવ જોયો નહિ તે તે કારણથી મારી જીવ શરીરરૂપ છે અને શરીર જીવરૂપ છે, જીવ ભિન્ન નથી અને શરીર ભિન્ન નથી એવી માન્યતા સુસ્થિર છે

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥સૂ૦ ૧૪૫॥

अम्ह असण साहेज्जासित्ति कट्टु कट्ठाण अडविं अणुपविट्ठा। तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्ततराओ तेसिं पुरिसाण असण साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ जोइभायणे जोइ विज्झायमेव पासइ, तएण से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त कट्ठ सव्वओ समता समभिलोएइ नो चेव ण तत्थ जोइ पासइ, तए ण से पुरिसे परियर बधइ फरसु गिण्हइ त कट्टु दुहा फालिय करेइ सव्वओ समता समभिलोएइ नो चेव ण तत्थ जोइ पासइ एव जाव सखेज्जहा फालिय करेइ सव्वओ समता समभिलोएइ नो चेव ण तत्थ जोइ पासइ, तए ण से पुरिसे तसि दुहा फालिए वा जाव सखेज्जहा फालिए वा जोई अपासमाणे भते तते परितते निव्विण्णे समाणे फरसु एगते एडेइ, परियर मुयइ एव वयासी–अहो! मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिएत्ति कट्टु ओहयमण–सकप्पे चिंता सोगसागरसपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियायइ तए णं ते पुरिसा कट्ठाइ छिंदति जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छ ति, त पुरिसं ओहयमणसंकप्प जाव झियायमाण पासंति एव वयासी किं णं तुमं देवाणुप्पिया। ओहयमणसकप्पे जाव झियायसि? तए णं से पुरिसे एव वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! कट्ठा णं अडविं अणुपविसमाणा मम एव वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिया। कट्ठाणं अडविं जाव अणुपविट्ठा, तए णं अह तत्तो मुहुत्तत राओ तुज्झ असणं साहेमित्ति जेणेव जोइभायणे जाव झियामि, तए णं

तेसि पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी–गच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह जा णं अहं असणं साहेमित्ति कट्टु परियरं बंधइ फरसुं गिण्हइ सरं करेइ सरेण अरणिं महइ जोइं पाडेइ जोइं संधुक्खेइ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ, तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं त विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ। तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा जाव विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी–अहो! णं तुमं देवाणुप्पिया जड्डे मूढे अपंडिए णिव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा फालियसि वा जाव जोइं पासित्तए, से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए ण तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ ८। सू० १४६।

छाया—ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—मूढतरकः खलु त्वं प्रदेशिन्! ततः काष्ठहारात्, कः खलु भदन्त! काष्ठ-

---

'तए णं केसिकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा (मूढतराए णं तुमं पएसी। ताओ कट्ठहाराओ) हे प्रदेशिन्! तुम उस काष्ठहर से भी

'तएणं केसिकुमारसमणं' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसिकुमारसमणं पएसिं रायं एवं वयासी) त्यार બાદ કેશીકુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું (मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ) હે પ્રદેશિન્! તમે મને પેલા કાષ્ઠહર કરતાં પણ વધારે

अम्हं असणं साहिस्सामित्ति कट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा। तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तंतराओ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ जोइभायणे जोइं विज्झायमेव पासइ, तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ, तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ फरसुं गिण्हइ तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ सव्वओ समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ एवं जाव संखेज्जहा फालियं करेइ सव्वओ समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ, तए णं से पुरिसे तंसि दुहा फालिए वा जाव संखेज्जहा फालिए वा जोइं अपासमाणे संते तंते परितंते निव्विण्णे समाणे फरसुं एगंते एडेइ, परियरं मुयइ एवं वयासी—अहो! मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिएत्ति कट्टु ओहयमण-संकप्पे चिंता सोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियायइ तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति एवं वयासी किं णं तुमं देवाणुप्पिया। ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि? तए णं से पुरिसे एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा ममं एवं वयासी—अम्हं णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं जाव अणुपविट्ठा, तए णं अहं तत्तो मुहुत्तंतराओ तुब्भं असणं साहेमित्ति जेणेव जोइभायणे जाव झियामि, तए णं

शन साधयेः इति कृत्वा काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः. ततः खलु स पुरुषः ततो मुहूर्तान्तरात् तेषां पुरुषाणामशन साधयामीति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजनं तत्रैव उपागच्छति. ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यातमेव पश्यति, ततः खलु स पुरुषः यत्रैव तत् काष्ठ तत्रैव उपागच्छति, उपागम्य तत्

यहीं पर रह कर अग्नि के इस पात्र से अग्नि को लेकर हम लोगों के लिये भोजन तैयार करलो (अह तं जोइ भायणे जोई विज्झवेत्त) यदि उस पात्र में अग्नि बुझ जावे (एत्तो णं तुम कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि तिकट्टु कट्ठाण अडविं अणुपविट्ठा) तो देखो जो यह लकडी पडी है सो इसमें से अग्नि को उत्पन्न कर लेना और हम-लोगों के लिये भोजन बना लेना इस प्रकार कह कर वे उस इन्धन वाली अटवी में आगे प्रविष्ट हो गये (तएणं से पुरिसे तओ मुहुत्त-तराओ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ) उनके चले जाने पर उस पुरुषने ऐसा विचार किया–कि चलो जल्दी से उन लोगों के लिये भोजन तैयार करलूं–ऐसा विचार करके वह जहां पर वह अग्नि का पात्र रखा था वहां पर गया (जोइ-भायणे जोइं विज्झायमेव पासइ) वहां जाकर उसने उस ज्योतिपात्र मे अग्नि को बुझा हुआ ही देखा. (तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव

गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि) त्या सुधी तमे अहीं रहीने अग्निना आ पात्रमांथी अग्निने लई अमारा माटे भोजन तैयार करो. (अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेत्ता) जो आ पात्रमा अग्नि ओलवाई जाय. (एत्तो णं तुमं कट्ठा ओ जोइ गहाय अम्ह असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा) तो जुओ, आ लाकडु पड्यु छे, तेमाथी अग्नि उत्पन्न करी लेजो अने अमारा माटे भोजन तैयार करजो. आ प्रमाणे बधी विगत समजावीने तेओ ते पुष्कळ लाकडावाळी अटवीमा आगळ प्रविष्ट थई गया. (तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्त तराओ तेसिं पुरिसाणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ) तेओ बधा ज्यारे त्याथी जता रह्या त्यारे तेणे आ प्रमाणे विचार कर्यो के–सारुं जल्दी तेओ बधा माटे जमवानुं तैयार करी लउं. आम विचार करीने ते ज्या अग्नि पात्र हतुं त्या गयो. (जोइभायणे जोइ विज्झाय-मेव पासइ) त्या जईने तेणे ते अग्निपात्रमा अग्निने ओलवाई गयेल ज जोयो. (तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ) त्यार पछी ते पुरुष

काष्ठहारक ! प्रदेशिन् ! ते यथानामकाः केचित् पुरुषाः वनार्थिनः वनोपजीविनः वनगवेषणाय ज्योतिश्च ज्योतिर्भाजनं च गृहीत्वा काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः, ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः यावत् किञ्चिद्देशम् अनुप्राप्ता सन्तः एकं पुरुषमेवमवादिषुः—वयं खलु हे देवानुप्रिय ! काष्ठानामटवीं प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकम्

इससे अधिक मूर्ख प्रतीत होते हो (के णं भंते ! कट्ठहारए) हे भदन्त ! वह काष्ठहर कैसा था ? इस प्रकार जब प्रदेशीने कहा—तब (पएसी) केशीकुमारश्रमणने कहा—हे प्रदेशिन् ! सुनो (से जहा णामए केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा) कितनेक वनार्थी और वनोपजीवी काष्ठहारक पुरुष थे वन की गवेषणा करते२ किसी एक अटवी में प्रविष्ट हो गये, साथ में उन्होंने अग्नि - इन्धन का आधारभूत पात्र ले रखा था उस अटवी में इन्धन बहुत था (तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा) जब वे पुरुष उस ग्रामरहित अटवी में कुछ दूर तक पहुंच चुके तब (एग पुरिसं एवं वयासी) उन्होंने एक पुरुष से ऐसा कहा-(अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं पविसामो) हे देवानुप्रिय ! हमलोग इस काष्ठप्रधान अटवी में आगे प्रविष्ट होते हैं (एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि) तबतक तुम

મૂર્ખ લાગે છે. (के णं भंते ! कट्ठहारए) હે ભદંત તે કાષ્ઠહર કેવો હતો ? આ પ્રમાણે જ્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું—ત્યારે (पएसी !) કેશીકુમારશ્રમણે કહ્યું કે હે પ્રદેશિન્ ! સાંભળો (से जहानामए केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणग-वेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा) કેટલાક વનાર્થી અને વનોપજીવી કાષ્ઠહારક પુરુષો હતા તેઓ વનમાં શોધતાં શોધતાં કોઈ એક અટવીમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયા. તેમણે પોતાની સાથે અગ્નિ તેમજ અગ્નિને રાખવા માટે આધારભૂત પાત્ર લઈ રાખ્યાં હતાં. તે અટવીમાં લાકડાંઓ પુષ્કળ પ્રમાણમાં હતાં. (तए णं ते पुरिसा तीसे अग्गामियाए अडवीए किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा) જ્યારે તે બધા તે ગ્રામરહિત નિર્જન અટવીમાં થોડી દૂર ગયા ત્યારે (एग पुरिसं एवं वयासी) તેમણે એક પુરુષને આ પ્રમાણે કહ્યું (अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं पविसामो) હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા કાષ્ઠ પ્રધાન અટવીમાં વધુ આગળ પ્રવેશીએ છીએ. (एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं

शनं साधयेः इति कृत्वा काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः. ततः खलु स पुरुषः ततो मुहूर्तान्तरात् तेषां पुरुषाणामशनं साधयामीति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजनं तत्रैव उपागच्छति. ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यातमेव पश्यति, ततः खलु स पुरुषः यत्रैव तत् काष्ठं तत्रैव उपागच्छति, उपागम्य तत्

यहीं पर रह कर अग्नि के इस पात्र से अग्नि को लेकर हम लोगों के लिये भोजन तैयार करलो (अह तं जोइ भायणे जोई विज्झवेज्ज) यदि उस पात्र में अग्नि वुझ जावे (एत्तो णं तुम कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि तिकट्टु कट्ठाण अडविं अणुपविट्ठा) तो देखो जो यह लकडी पडी है सो इसमें से अग्नि को उत्पन्न कर लेना और हम-लोगों के लिये भोजन बना लेना इस प्रकार कह कर वे उस इन्धन वाली अटवी में आगे प्रविष्ट हो गये (तएणं से पुरिसे तओ मुहुत्त-तराओ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ) उनके चले जाने पर उस पुरुषने ऐसा विचार किया-कि चलो जल्दी से उन लोगों के लिये भोजन तैयार करलूं-ऐसा विचार करके वह जहां पर वह अग्नि का पात्र रखा था वहां पर गया (जोइ-भायणे जोइ विज्झायमेव पासइ) वहां जाकर उसने उस ज्योतिपात्र मे अग्नि को वुझा हुआ ही देखा. (तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव

गहाय अम्ह असणं साहेज्जासि) त्या सुधी तमे अहीं रहीने अग्निना आ पात्रमाथी अग्निने लई अमारा माटे भोजन तैयार करो. (अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेत्ता) जो आ पात्रमा अग्नि ओलवाई जाय. (एत्तो णं तुमं कट्ठा ओ जोइं गहाय अम्ह असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्ठाण अडविं अणुपविट्ठा) तो जुओ, आ लाकडुं पडयुं छे, तेमाथी अग्नि उत्पन्न करी लेजो अने अमारा माटे भोजन तैयार करजो. आ प्रमाणे बधी विगत समजावीने तेओ ते पुष्कळ लाकडावाळी अटवीमा आगळ प्रविष्ट थई गया. (तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तराओ तेसिं पुरिसाणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ) तेओ बधा ज्यारे त्याथी जता रह्या त्यारे तेणे आ प्रमाणे विचार कर्यो के-सारुं जल्दी तेओ बधा माटे जमवानुं तैयार करी लउं. आम विचार करीने ते ज्या अग्नि पात्र हतुं त्या गयो. (जोइभायणे जोइ विज्झाय-मेव पासइ) त्या जईने तेणे ते अग्निपात्रमा अग्निने ओलवाई गयेल ज जोयो. (तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ) त्यार पछी ते पुरुष

हारकः। प्रदेशिन्! ते यथानामकाः केचित् पुरुषाः वनार्थिनः वनोपजीविनः वनगवेषणाय ज्योतिश्च, ज्योतिर्भाजनं च गृहीत्वा काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः, ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः यावत् किञ्चिद्देशमनुप्राप्ताः सन्तः एकं पुरुषमेवमवादिषुः-वयं खलु देवानुप्रिय! काष्ठानामटवीं प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकम्

तुमसे अधिक मूर्ख प्रतीत होते हो (के णं भंते! कट्ठहारए) हे भदन्त! वह काष्ठहार कैसा था? इस प्रकार जब प्रदेशीने कहा—तब (पएसी) केशीकुमारश्रमणने कहा—हे प्रदेशिन्! सुनो (से जहा णामए केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा) कितनेक वनार्थी और वनोपजीवी काष्ठहारक पुरुष थे वन की गवेषणा करतेर किसी एक अटवी में प्रविष्ट हो गये साथ में उन्होंने अग्नि – रखने का आधारभूत पात्र से रखा था उस अटवी में इन्धन बहुत था (तए णं ते पुरिसा तीसे अग्गामियाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा) जब वे पुरुष उस ग्रामरहित अटवी में कुछ दूर तक पहुंच चुके, तब (एगं पुरिसं एवं वयासी) उन्होंने एक पुरुष से ऐसा कहा-(अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो) हे देवानुप्रिय! हमलोग इस काष्ठप्रधान अटवी में आगे प्रविष्ट होते हैं (एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि) तबतक तुम

મૂર્ખ લાગે છો (के णं भंते! कट्ठहारए) હે ભદન્ત તે કાષ્ઠહાર કેવો હતો? આ પ્રમાણે જ્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું-ત્યારે (पएसी!) કેશીકુમારશ્રમણે કહ્યું કે હે પ્રદેશિન્! સાંભળો (से जहानामए केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा) કેટલાક વનાર્થી અને વનોપજીવી કાષ્ઠહારક પુરુષો હતા તેઓ વનમાં શોધતાં શોધતાં કોઈ એક અટવીમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયા. તેમણે પોતાની સાથે અગ્નિ તેમજ અગ્નિને રાખવા માટે આધારભૂત પાત્ર લઈ રાખ્યાં હતાં તે અટવીમાં કાષ્ઠઓ પુષ્કળ પ્રમાણમાં હતા. (तए णं ते पुरिसा तीसे अग्गामियाए अडवीए किंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा) જ્યારે તે બધા તે ગ્રામરહિત નિર્જન અટવીમાં થોડી દૂર ગયા ત્યારે (एगं पुरिसं एवं वयासी) તેમણે એક પુરુષને આ પ્રમાણે કહ્યું (अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो) હે દેવાનુપ્રિય! અમે આ કાષ્ઠ પ્રધાન અટવીમાં વધુ આગળ પ્રવેશીએ છીએ. (एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं

शुमेकान्ते एडति (मुञ्चति) परिकरं मुञ्चति एवमवादीत् अहो! मया तेषां पुरुषाणामशनं नो साधितमिति अपहतमनःसंकल्पचिन्ताशोकसागरसम्प्रविष्टः करतलपर्यस्तमुखः आर्तध्यानोपगतः भूमिगतदृष्टिको ध्यायति ततः खलु ते पुरुषाः काष्ठानि छिन्दन्ति, यत्रैव स पुरुषः तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

माणे संते परितंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ) इसके बाद जब उस पुरुष को उस काष्ठ के दो टुकडे यावत् संख्यात टुकडे करने पर भी जब अग्नि दिखाइ नहीं दी, तब वह थक कर, क्लान्त होकर, परितान्त होकर विशेष दुःखित हुआ और उसने उस कुल्हाडी को किसी एकान्त स्थान में रख दिया (परियरं मुयइ) कमर का बंधन भी खोल दिया (एवं वयासी) इस प्रकार कहने लगा (अहो मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाइ) अरे! मैं उन पुरुषों के लिये भोजन तैयार नहीं कर सका अब क्या करूं! इस प्रकार विचार कर वह बडा ही दुःखित हुआ उसकी समस्त मानसिक अभिलाषाएँ नष्ट हो गइ और वह चिन्ता, एवं शोक रूपी समुद्र में निमग्न हो गया. कपोल पर हथेली रख कर आर्तध्यान करने लगा दृष्टि उसकी नीचे जमीन की ओर हो गई –इस प्रकार वह चिन्ता में फंस गया (तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिदंति) अब उन पुरुषोंने जब लकडियों को काटलिया– तब वे (जेणेव

वा जोइं अपासमाणे संते तंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ) त्यार पछी ज्यारे ते पुरुषने ते काष्ठना बे टुकडाओ यावत् संख्यात टुकडाओ कर्यो पछी पण ज्यारे अग्नि जोवामां आव्यो नहि, त्यारे ते थाकीने, कलान्त थईने, परितान्त थईने विशेष दुःखित थयो अने तेणे ते कुहाडीने कोई एकांत स्थाने मूकी दीधी (परियरं मुयइ) कमरनुं बंधन पण खोली नाख्युं (एवं वयासी) पछी ते आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो (अहो मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियायइ) अरे! हुं ते माणुसो माटे भोजन बनावी शक्यो नहि हवे शुं करुं? आ प्रमाणे विचार करीने ते खूब ज दुःखी थयो. तेनी बधी मानसिक इच्छाओ नष्ट थई गई, अने ते चिंता अने शोकरूपी समुद्रमां निमग्न थई गयो कपाळ पर हथेळी मूकीने ते आर्तध्यान करवा लाग्यो तेनी नजर जमीन तरफ नीचे थई गई, आम ते चिंतामां डूबी गयो. (तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति) हवे ते माणुसोओ लाकडाओ कापी लीधा त्यारे तेओ

काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोकते, नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, ततः खलु स पुरुषः परिकरं बध्नाति, बद्ध्वा तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं करोति सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, एवं यावत् संख्येयधा स्फाटितं करोति सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, ततः खलु स पुरुषः तस्मिन् काष्ठे द्विधा स्फाटिते वा यावत् संख्येयधा स्फाटिते वा ज्योतिरपश्यन् श्रान्तः तान्तः परितान्तः निर्विण्णः सन् प

उवागच्छइ) इसके बाद वह पुरुष वहां गया जहां वह काष्ठ पडा हुआ था (उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ) वहां आकर के उसने उस काष्ठ को चारों ओर से अच्छी तरह से देखा (णो चेव णं जोइं पासइ) परन्तु उसमें उसे अग्नि दिखाई नहीं दी (तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ) तब उस पुरुषने अपनी कमर बांधी (फरसुं गिण्हइ) कुल्हाडी उठाई और (तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ) उस काष्ठ के दो टुकडे कर दिये (सव्वओ समंता समभिलोएइ) फिर उसे चारों ओर से अच्छी तरह से उसने देखा (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) परन्तु उसमें उसे अग्नि दिखाई नहीं दी (एवं जाव संखेज्जहा फालियं करेइ) इसी प्रकार से फिर उसके यावत् संख्यात टुकडे कर दिये (सव्वओ समंता समभिलोएइ) परन्तु सब तरफ से अच्छी तरह देखने पर भी (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) उसे उनमें अग्नि दिखाई नहीं दी (तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहा फालिए वा जाव संखेज्जहाफालिए वा जोइं अपास

त्यां गयो ज्यां पेलु काष्ठ (लाकडु) पडेलु हतु (उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ) त्यां जइने तेणे ते लाकडाने चारे बाजुथी सारी रीते जोयु (णो चेव णं जोइं पासइ) पण तेमां तेने अग्नि देखायो नहि. (तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ) त्यारे ते पुरुषे पोतानी केड बांधी. (फरसुं गिण्हइ) कुहाडी हाथमां लीधी अने (तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ) ते लाकडाना बे कटका करी नाख्या (सव्वओ समंता समभिलोएइ) पछी तेणे चारे तरफथी तेने जोयु (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) पण तेमां तेने अग्नि जोवामां आव्यो नहि (एवं जाव संखेज्जहा फालियं करेइ) आ प्रमाणे पछी तेणे तेना यावत् संख्यात कटकाओ करी नाख्या. (सव्वओ समंता समभिलोएइ) पण तेमने चारे तरफ सारी रीते जोवा छतांये (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) तेने तेमनामां अग्नि देखायो नहि. (तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहा फालिये वा जाव संखेज्जहा फालिए

शुभेकान्ते एडति (मुञ्चति) परिकरं मुञ्चति एवमवादीत् अहो ! मया तेषां पुरुषाणामशनं नो साधितमिति अपहतमनःसंकल्पचिन्ताशोकसागरसमविष्टः करतलपर्यस्तमुखः आर्तध्यानोपगतः भूमिगतदृष्टिको ध्यायति ततः खलु ते पुरुषाः काष्ठानि छिन्दन्ति, यत्रैव स पुरुषः तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

माणे संते परितंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ) इसके बाद जब उस पुरुष को उस काष्ठ के दो टुकडे यावत् संख्यात टुकडे करने पर भी जब अग्नि दिखाइ नहीं दी, तब वह थक कर, क्लान्त होकर, परितान्त होकर विशेष दुःखित हुआ और उसने उस कुल्हाडी को किसी एकान्त स्थान में रख दिया (परियरं मुयइ) कमर का बंधन भी खोल दिया (एवं वयासी) इस प्रकार कहने लगा (अहो मए तेसिं पुरिसाण असणे नो साहिए त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपलत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाइ) अरे ! मैं उन पुरुषों के लिये भोजन तैयार नहीं कर सका अब क्या करूं ! इस प्रकार विचार कर वह बडा ही दुःखित हुआ उसकी समस्त मानसिक अभिलाषाएँ नष्ट हो गइ और वह चिन्ता, एवं शोक रूपी समुद्र मे निमग्न हो गया. कपोल पर हथेली रख कर आर्तध्यान करने लगा दृष्टि उसकी नीचे जमीन की ओर हो गई –इस प्रकार वह चिन्ता में फंस गया (तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति) अब उन पुरुषोंने जब लकडियों को काटलिया– तब वे (जेणेव

वा जोइ अपासमाणे संते तंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ) त्यार पछी ज्यारे ते पुरुषने ते काठना बे टुकडाओ यावत् संख्यात टुकडाओ कर्या पछी पण ज्यारे अग्नि जोवामां आव्यो नहि, त्यारे ते थाकीने, क्लान्त थइने, परितान्त थइने विशेष दुःखित थयो अने तेणे ते कुहाडीने कोइ एकांत स्थाने मूकी दीधी (परियरं मुयइ) कमरनुं बंधन पण खोली नाख्युं (एवं वयासी) पछी ते आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो (अहो मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्लत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियायइ) अरे ! हुं ते माणसो माटे भोजन बनावी शक्यो नहि हवे शुं करुं ? आ प्रमाणे विचार करीने ते खूब ज दुःखी थयो. तेनी बधी मानसिक इच्छाओ नष्ट थई गई, अने ते चिंता अने शोकरूपी समुद्रमां निमग्न थइ गयो कपाळ पर हथेळी मूकीने ते आर्तध्यान करवा लाग्यो तेनी नजर जमीन तरफ नीचे थइ गइ, आम ते चिंतामां डूबी गयो. (तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति) हवे ते माणसो [illegible] टुकडाओ कापी लीधा त्यारे तेओ

काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोकते, नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, ततः खलु स पुरुषः परिकरं बध्नाति, परशुं गृह्णाति, तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं करोति सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, एवं यावत् संख्येयधा स्फाटितं करोति सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, ततः खलु स पुरुषः तस्मिन् काष्ठे द्विधा स्फाटिते वा यावत् संख्येयधा स्फाटिते वा ज्योतिरपश्यन् श्रान्तः तान्तः परितान्तः निर्विण्णः सन् पर

उवागच्छइ) इसके बाद वह पुरुष वहां गया जहां पर काष्ठ पड़ा हुआ था (उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ) वहां जाकर के उसने उस काष्ठ को चारों ओर से अच्छी तरह से देखा (णो चेव णं जोइं पासेइ) परन्तु उसमें उसे अग्नि दिखाई नहीं दी (तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ) तब उस पुरुषने अपनी कमर बांधी (फरसुं गिण्हइ) कुल्हाड़ी उठाई और (तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ) उस काष्ठ के दो टुकड़े कर दिये (सव्वओ समंता समभिलोएइ) फिर उसे चारों ओर से अच्छी तरह से उसने देखा (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) परन्तु उसमें उसे अग्नि दिखाई नहीं दी (एवं जाव संखेज्जहा फालियं करेइ) इसी प्रकार से फिर उसके यावत् संख्यात टुकड़े तक कर दिये (सव्वओ समंता समभिलोएइ) परन्तु सब तरफ से अच्छी तरह देखने पर भी (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) उसे उनमें अग्नि दिखाई नहीं दी (तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहा फालिए वा जाव संखेज्जहाफालिए वा जोइं अपास

त्यां गयो ज्यां पेलुं काष्ठ (लाकडुं) पडेलुं हतुं (उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ) त्यां जइने तेणे ते लाकडाने चारे बाजुथी सारी रीते जोयुं (णो चेव णं जोइं पासइ) पण तेमां तेने अग्नि देखायो नहि. (तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ) त्यारे ते पुरुषे पोतानी केड बांधी. (फरसुं गिण्हइ) कुहाडी हाथमां लीधी अने (तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ) ते लाकडाना बे कटका करी नाख्या. (सव्वओ समंता समभिलोएइ) पछी तेणे चारे तरफथी तेने जोयुं (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) पण तेमां तेने अग्नि जोवामां आव्यो नहि (एवं जाव संखेज्जहा फालियं करेइ) आ प्रमाणे पछी तेणे तेना यावत् संख्येय कटकाओ करी नाख्या (सव्वओ समंता समभिलोएइ) पण तेमने चारे तरफ सारी रीते जोवा छतांये (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) तेने तेमनामां अग्नि देखायो नहि. (तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहा फालिए वा जाव संखेज्जहा फालिए

ततःखलु अहं ततो मुहूर्तान्तरात् युष्माकमशनं साधयामि' इति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजनं यावत् ध्यायामि, ततः खलु तेषां पुरुषाणामेकः पुरुषः

है-सो तुम तब तक अग्नि के पात्र से अग्नि को लेकर हम लोगों के लिये भोजन बनाना. यदि उस पात्र में अग्नि बुझ जावे तो तुम इस काष्ठ से ज्योति-अग्नि को तैयार कर लेना और हम लोगों के लिये भोजन बनाना, इस प्रकार कह कर आपलोग अटवी में प्रविष्ट हो गये, (तएणं अहं त्तो मुहुत्ततराओ तुज्झे असणं साहेमि त्तिकट्टु जेणेव जोइभायणे जाव झियामि) इसके बाद मैं ने ऐसा विचार किया कि चलो बहुत जल्दी आप लोगों के लिये भोजन बनादूं-ऐसा विचार कर ज्यों ही मैं जहां वह ज्योति भाजन (अग्निपात्र) रखा था, वहां पर गया-तो क्या देखता हूं कि उसमें अग्नि बुझी पडी है. फिर मै जहां वह काष्ठथा-वहां पर गया, वहां जाकर मैं ने उस काष्ठ को अच्छी तरह से सब ओर से देखा, परन्तु मुझे वहां अग्नि दिखाई नहीं दी, फिर मैं ने अपनी कमर कसी और कुठार को लेकर उस काष्ठ के दो टुकडे किये फिर मैं ने उसे सब ओर से अच्छी तरह देखा परन्तु फिर भी मुझे वहां अग्नि के दर्शन नहीं हुए इस तरह फिर मैं ने उसके तीन चार यावत् सैकडो तक टुकडे कर डाले और उन सब को अच्छी तरह से चारों ओर से देखा, परन्तु वहां कहीं भी

અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરો તે પાત્રમા અગ્નિ ઓળવાઇ જાય તો તમે તે કાષ્ઠમાથી અગ્નિ ઉત્પન્ન કરી લેજો અને અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરજો આમ કહીને તમે બધા અટવીમા પ્રવિષ્ટ થઇ ગયા હતા (तएणं अहं तत्तो मुहुत्त-तराओ तुज्झे असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे जाव झियामि) ત્યાર પછી મે આ જાતનો વિચાર કર્યો કે ચાલો, બહુ જ જલદી તમારા માટે ભોજન તૈયાર કરી લઉ આમ વિચાર કરીને હુ જ્યારે અગ્નિપાત્ર જ્યા રાખ્યુ હતું ત્યા ગયો તો તેમા મને અગ્નિ ઓળવઇ ગયેલ દેખાયો. ત્યાર પછી હું જ્યા લાકડું હતુ ત્યા ગયો ત્યા જઇને મે તે કાષ્ઠને સારી રીતે જોયું, ચારે તરફ જોયું પણ મને તેમા અગ્નિ દેખાયો નહિ પછી મેં કમ્મર બાધી અને કુહાડી લઇને તે કાષ્ઠ (લાકડા)ના બે કકડાઓ કર્યા પછી તે કકડાઓને ચારે તરફથી સારી રીતે જોયા મને તેમા પણ અગ્નિ દેખાયો નહિ. આમ મે તેના ત્રણુચાર ... સખ્યાત કકડાઓ કરી નાખ્યા બધા કકડાઓને ચારે તરફથી સારી રીતે જોયા પણ ત્યા મને જરા પણ અગ્નિ દેખાયો નહિ ત્યારે હુ થાકીને, તાન્ત. પરિતાન્ત થઇને અને ખેદ

स पुरुषमपहतमनःसंकल्पं यावत् ध्यायन्तं पश्यन्ति, एवमवादिषुः-किं खलु त्वं देवानुप्रिय! अपहतमनःसंकल्पः यावत् ध्यायसि? ततः खलु स पुरुष एवमवादीत्-यूयं खलु देवानुप्रियाः! काष्ठानामटवीमनुप्रविशन्तः मम एवमवादिषुः-वयं खलु देवानुप्रिय! काष्ठानामटवीं यावत् अनुप्रविष्टाः

स पुरिसे तेणेव उवागच्छंति) जहां वह पुरुष था, वहां पर आये (तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति) वहां आकरके उन्होंने उस पुरुष को मानसिक अभिलाषाओं से रहित हुआ और शोक तथा चिन्तारूपी सागर में निमग्न हुआ, कपोल पर हथेली रख कर आर्तध्यान करता हुआ, एवं नीचे दृष्टि किये हुए देखा, देखकर फिर उन्होंने (एवं वयासी) उससे ऐसा कहा-(किं णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि) हे देवानुप्रिय! तुम किस कारण से अपहतमनःसंकल्प वाले बन हुए हो और यावत् चिन्ता कर रहे हो (तए णं से पुरिसे एवं वयासी) तब उस पुरुषने उनसे ऐसा कहा-(तुब्भे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा ममं एवं वयासी) हे देवानुप्रियों! आपलोग जब लकडी काटने के लिये अटवी में प्रविष्ट होने के लिये तैयार हुए थे-तब मुझसे ऐसा कहा था-(अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं जाव अणुपविट्ठा) हे देवानुप्रिय हम लोग लकडी काटने के लिये इस जंगल में आगे जाते

(जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति) ज्यां ते पुरुष हतो, त्यां गया. (तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति) त्यां जईने तेमणे ते पुरुषने मानसिक इच्छाओ जेनी नष्ट थई गई छे एवो अने शोक तेमज चिंता रूपी समुद्रमां निमग्न थयेल कपोल पर हथेली मूकीने आर्तध्यान करतो अने नीची दृष्टि करेलो जोयो. जोईने पछी तेमणे (एवं वयासी) तेने आ प्रमाणे कह्युं-(किं णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि) हे देवानुप्रिय! तमे शा कारणथी अपहत मनःसंकल्पवाळा थई गया छो अने यावत् चिंता करी रह्या छो. (तए णं से पुरिसे एवं वयासी) त्यारे ते पुरुषे तेमने आ प्रमाणे कह्युं (तुब्भे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा ममं एवं वयासी) हे देवानुप्रियो! तमे सौ ज्यारे लाकडाओ कापवा माटे अटवीमां प्रविष्ट थवा तैयार थया हता त्यारे मने आ प्रमाणे कह्युं हतुं-(अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं जाव अणुपविट्ठा) हे देवानुप्रिय! अमे बधा लाकडाओ कापवा माटे आ अटवीमां आगळ जईए छीए. तो तमे त्यां सुधी अग्नि पात्रमांथी अग्नि लईने

ततःखलु अहं ततो मुहूर्तान्तरात् युष्माकमशनं साधयामि' इति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजनं यावत् ध्यायामि, ततः खलु तेषां पुरुषाणामेकः पुरुषः

है-सो तुम तब तक अग्नि के पात्र से अग्नि को लेकर हम लोगों के लिये भोजन बनाना. यदि उस पात्र में अग्नि बुझ जावे तो तुम इस काष्ठ से- ज्योति-अग्नि को तैयार कर लेना और हम लोगों के लिये भोजन बनाना, इस प्रकार कह कर आपलोग अटवी में प्रविष्ट हो गये, (तएणं अहं तत्तो मुहुत्तंतराओ तुज्झे असणं साहेमि त्तिकट्टु जेणेव जोइभायणे जाव झियामि) इसके बाद मैंने ऐसा विचार किया कि चलो बहुत जल्दी आप लोगों के लिये भोजन बनादूं-ऐसा विचार कर ज्यों ही मैं जहां वह ज्योति भाजन (अग्निपात्र) रखा था, वहां पर गया-तो क्या देखता हूं कि उसमे अग्नि बुझी पडी है. फिर मै जहा वह काष्ठथा-वहां पर गया, वहां जाकर मैंने उस काष्ठ को अच्छी तरह से सब ओर से देखा, परन्तु मुझे वहां अग्नि दिखाई नहीं दी, फिर मैंने अपनी कमर कसी और कुठार को लेकर उस काष्ठ के दो टुकडे किये फिर मैंने उसे सब ओर से अच्छी तरह देखा परन्तु फिर भी मुझे वहां अग्नि के दर्शन नहीं हुए इस तरह फिर मैंने उसके तीन चार यावत सैकडो तक टुकडे कर डाले और उन सब को अच्छी तरह से चारों ओर से देखा, परन्तु वहा कहीं भी

અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરો તે પાત્રમા અગ્નિ ઓળવાઈ જાય તો તમે તે કાષ્ઠમાથી અગ્નિ ઉત્પન્ન કરી લેજો અને અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરજો આમ કહીને તમે બધા અટવીમા પ્રવિષ્ટ થઇ ગયા હતા (तएणं अहं तत्तो मुहुत्तंतराओ तुज्झे असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे जाव झियामि) ત્યાર પછી મે આ જાતનો વિચાર કર્યો કે ચાલો, બહુ જ જલદી તમારા માટે ભોજન તૈયાર કરી લઉ આમ વિચાર કરીને હુ જ્યારે અગ્નિપાત્ર જ્યા રાખ્યું હતું ત્યાં ગયો તો તેમાં મને અગ્નિ ઓળવઈ ગયેલ દેખાયો. ત્યાર પછી હું જ્યા લાકડુ હતુ ત્યા ગયો ત્યા જઇને મે તે કાષ્ઠને સારી રીતે જોયું. ચારે તરફ જોયુ પણ મને તેમા અગ્નિ દેખાયો નહિ પછી મેં કમ્મર બાધી અને કુહાડી લઇને તે કાષ્ઠ (લાકડા)ના બે કકડાઓ કર્યા પછી તે કકડાઓને ચારે તરફથી સારી રીતે જોયા મને તેમા પણ અગ્નિ દેખાયો નહિ. આમ મે તેના ત્રણ ચાર ત સખ્યાત કકડાઓ કરી નાખ્યા બધા કકડાઓને ચારે તરફથી સારી રીતે જોયા પણ ત્યા મને જરા પણ અગ્નિ દેખાયો નહિ ત્યારે હુ થાકીને, તાન્ત, પરિતાન્ત થઇને અને ખેદ

छेकाः दक्षाः प्राप्तार्थाः यावत् उपदेशलब्धाः तान् पुरुषान् एवमवादीत्--गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः! स्नाताः कृतबलिकर्माणः यावत् क्षीवमा० गच्छत यावत् खलु अहमशनं साधयामीति कृत्वा परिकरं बध्नाति परशु

मुझे अग्नि का नामतक भी नहीं पाया तब मैंने थककर श्रान्त, परितान्त होकर और खेद खिन्न होकर कुल्हाडी को एकान्त में एक ओर रख दिया और कमर को खोल दिया--फिर मैंने ऐसा विचार किया-मैं अपहतमनः सङ्कल्पवाला बना हुआ शोक एवं चिन्तारूपी समुद्र में डूबा हूं कपोल पर हथेली रखकर बैठा हुआ हूं, आर्तध्यान कर रहा हूं और लज्जा के मारे जमीन की ओर देख रहा हूं (तएणं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी) इस के बाद उन पुरुषों के बीच में एक पुरुष ऐसा था जो छेक-अवसर का ज्ञाता था, दक्ष-कार्यकुशल थे, प्राप्तार्थ-अपनी कुशलता से जिसने साध्यार्थ-को अधिगत कर लिया था, यावत् गुरूपदेश जिसने प्राप्त किया था उसने उन काष्ठहारक पुरुषों से ऐसा कहा-(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह जाव णं अहं असणं साहेमि त्ति कट्टु परिकरं बंधइ) हे देवानुप्रियो! आप लोग जाइए, स्नान कीजिये, बलिकर्म-काक आदि को अन्नादि का भाग देना

छिन्न थईने कुहाडीने એક तरફ મૂકી દીધી અને કમરની ફેંટ ખોલી નાખી પછી મેં આ જાતના વિચાર કર્યો હું તે માણસો માટે ભોજન બનાવી શકયો નહિ આ કેવી દુઃખ અને આશ્ચર્યની વાત છે આ પ્રમાણે વિચાર કરીને હું અપહત મના સંકલ્પવાળો થઈને શોક અને ચિંતારૂપી સમુદ્રમાં મગ્ન થઈને કપોલ પર હથેલી મૂકીને બેઠો છું અને આર્તધ્યાન કરી રહ્યો છું શરમથી મારી નજર નીચી જમીન તરફ વળી ગઈ છે (तएणं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे, पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी) ત્યાર પછી તે માણસોમાં એક માણસ એવો પણ હતો કે જે છેક યોગ્ય સમયને પિછાણનાર દક્ષ-કાર્યકુશળ પ્રાપ્તાર્થ-પોતાની કુશળતાથી-જેણે સાધ્યાર્થ પ્રાપ્ત કરી લીધો છે એવો યાવત્ ગુરૂપદેશ જેણે પ્રાપ્ત કર્યો છે એવો હતો. તેણે કાષ્ઠહારક માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું (गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! ण्हाया, कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छह, जाव णं अहं असणं साहेमि त्ति कट्टु परिकरं बंधइ) હે દેવાનુપ્રિયો (તમે લોકો સ્નાન કરો, બલિકર્મ કાગડા વગેરે ને। વગેરેના ભાગ આપીને નિશ્ચિન્ત થઈ જાવ. યાવત

गृह्णाति गृहीत्वा शरं करोति शरेण अरणिं मध्नाति ज्योतिः पातयतिः ज्योतिः संधुक्षते तेषां पुरुषाणामशनं साधयति. ततः खलु ते पुरुषाः स्नाताः कृतबलिकर्माणः यावत् प्रायश्चित्ताः यत्रैव स पुरुषः तत्रैव उपागच्छन्ति, ततः खलु स पुरुषः तेषां पुरुषाणां सुखासनवरगतानां तद् विपुलमशनं पानं खादिमं

इस कार्य से निश्चिन्त हो जाइये, यावत् कौतुक मंगलरूप प्रायश्चित्त कर लीजिये और फिर जल्दी आजाइये तबतक मैं आपलोगों के लिये भोजन तैयार करता हूं। ऐसा कहकर उसने अपनी कमर कसी और (फरसुं गिण्हइ) कुल्हाडी को उठाया (सरं करेइ, सरेण अरणिं महेइ) उससे पहिले उसने लडकी को इतना छीला कि जिससे वह बाण के जैसी शलाई के रूप में हो गई. फिर उससे उसने अरणिकाष्ठ का मंथन किया (जोइ पाडेई) मथन करने से अग्नि उसमें प्रकट हो गई (जोइं संधुक्खेइ) प्रकट हुइ उस अग्नि को उसने पवन वगैरह आदि साधनों से विशेष चैतन्य किया. अर्थात् धोका (तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ) अग्नि के तैयार हो जाने पर फिर उसने उन सब पुरुषो का भोजन बना दिया (तएणं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छइ) इतने में वे पुरुष स्नान करके, बलिकर्म-काकआदि को अन्नादि का भाग दे करके यावत्-कौतुक मंगलरूप प्रायश्चित्त करके उस स्थान पर आये-

---

કૌતુક મંગળરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરી લો અને પછી જલદી અહીં ઉપસ્થિત થઇ જાવ. આટલામાં હું તમારા માટે ભોજન તૈયાર કરૂં છું આમ કહીને તેણે પોતાની કેડ બાંધી અને (फरसुं गिण्हइ) કુહાડી હાથમાં લીધી (सरं करेइ सरेण अरणिं महेइ) તેણે સૌ પહેલાં લાકડાને એવી રીતે છોલ્યું કે જેથી તે બાણ જેવી શલાકા જેવું થયું પછી તેનાથી તેણે અરણિ કાષ્ટનું મથન કર્યું (जोइ पाडेइ) મથન કરવાથી તેમાંથી અગ્નિ પ્રકટ થઇ ગયો (जोइ संधुक्खेइ) પ્રકટ થયેલ તે અગ્નિને પવન વગર સાધનોથી તેને સવિશેષ પ્રજ્વલિત કર્યો (तेसिं पुरिसाण असणं साहेइ) અગ્નિ જ્યારે પ્રજ્વલિત થઇ ગયો ત્યારે તેણે તે બધા લોકો માટે ભોજન તૈયાર કર્યું. (तएणं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छइ) આટલામાં તે બધા માણસે સ્નાન કરીને, બલિકર્મ-કાગડા વગેરેને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપીને યાવત્ કૌતુક મંગળરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને તે જગ્યાએ આવી ગયા જ્યાં તે પુરૂષ હતો. (तएणं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ तएणं ते पुरिसा

स्वादिमम् उपनयति, ततः खलु ते पुरुषाः तद् विपुलमशन पान खादिम स्वादिमम् आस्वादयन्तो विस्वादयन्तो यावत् विहरन्ति, जिमितभुक्तोत्तरागता अपि च खलु सन्तः आचान्ताः चोक्षाः परमशुचिभूताः तं पुरुष मेवमवादिषुः—अहो ! त्वं खलु देवानुप्रिय ! जडः मूढः अपण्डितः निर्विज्ञानः अनुपदेशलब्धः यः खलु इच्छसि काष्ठं द्विधा स्फाटितं वा यावत्

यहां कि वह पुरुष था (तएणं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ, तएणं ते पुरिसा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा जाव विहरंति) वहां आकरके वे सबके सब पुरुष अपने२ सुखासन पर बैठ गये उनके बैठ जाने पर फिर उस पुरुष ने उस मधुर खाद्य आदि सामग्री को लाकर उनके समक्ष रख दिया और परोस दिया, उन सबने उस भोजन सामग्री चारों प्रकार के आहार को—उसका स्वाद जानने के लिये पहिले तो चखा रुचि से उसे खाया (जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी) खापीकर जब वे निश्चिन्त हो गये—तब वहां से उठे और उठकर आचमन किया, आचमन-कुल्ला करने के बाद फिर उन्होंने अपने हाथ मुंह आदि को अच्छे प्रकार से धोकर साफ किया इस तरह परम शुचियुक्त होकर फिर उन्होंने उस पहिले पुरुष से ऐसा कहा—(अहो णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्डे, मूढे, अपंडिए निव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे, जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा

तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा जाव विहरंति) त्यां जईने तेओ बधा पुरुषो पोतपोताना स्थाने सुखासन पर बेसी गया. तेओ ज्यारे बेसी गया त्यारे ते पुरुषे ते मधुर खाद्य वगेरे सामग्रीने लावीने तेमनी सामे मूकी दीधी अने पीरसी दीधी. तेओ बधाए ते भोजन सामग्रीने चारे प्रकारना आहारने—तेना स्वादने जाणवा माटे पहेला तो तेने चाख्यो पछी खूब रुचिपूर्वक तेने जम्या. (जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी) खाई–पीने ज्यारे तेओ निश्चिंत थई गया त्यारे तेओ त्यांथी ऊभा थया अने ऊभा थईने आचमन–कोगळा–करीने पछी तेमणे पोताना हाथ मों वगेरेने सारी रीते धोईने स्वच्छ कर्यां आ प्रमाणे परम शुचियुक्त थईने पछी तेमणे ते पहेला पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं (अहो णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्डे ! मूढ अपंडिए निव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे, जे णं

ज्योतिर्द्रष्टुम्, तदेतेनार्थेन प्रदेशिन्! एवमुच्यते मूढतरकः खलु त्वं प्रदेशिन्! ततः काष्ठहारकात्। ॥ सू० १४६ ॥

टीका--'तए णं केसिकुमारसमणे' इत्यादि-ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिन राजानमेवमवादीत्-हे प्रदेशिन! ततः-तस्मात् काष्ठहारात् पुरुषात् त्वं मूढतरकः-अतीव मूर्खः खलु प्रतिभासि! तत्र प्रदेशी हेतुं पृच्छति-हे भदन्त! कः खलु असौ काष्ठहारकः? केशी प्राह-हे प्रदेशिन्!

फलियंसि वा जाव जोइं पासित्तए) हे देवानुप्रिय! तुम जड हो, अग्नि को उत्पन्न करने के साधन से अनभिज्ञ हो, मूर्ख हो-विवेक रहित हो, अपण्डित हो-प्रतिभा से युक्त नहीं हो, निर्विज्ञान-कुशलता तुम में नहीं है, अनुपदेशलब्ध-तुम ने इस विषय में गुरु का उपदेश प्राप्त नहीं किया है, अर्थात् अशिक्षित हो, इसीलिये लकडी में अग्नि को पाने के लिये तुमने उसे फाडा है, दो टुकडे किये हैं, तीन टुकडे किये हैं, चार टुकडे किये हैं. यावत् संख्यात टुकडे किये हैं, फिर भी तुम उसमें अग्नि नहीं देख सके-अतः तुम सच्चेरूप में मूढत्वादि पूर्वोक्त विशेषणों से शून्य नहीं हो. (से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ) इस प्रकार से मूढतरत्वसाधक दृष्टान्त का कथन कर उपसंहार करते हुए अब केशी प्रदेशी से कहते हैं-हे प्रदेशिन्! तुम इस दृष्टान्तोक्त पुरुष की अपेक्षा भी अधिक मूर्ख हो जो तुम पुरुष के शरीर को छिन्न भिन्न करके उसके जीव को देखने के लिये अभिलाषी बने हो।

तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा फालियंसि वा जाव जोइं पासित्तए) હે દેવાનુપ્રિય! તમે જડ છો, અગ્નિ ઉત્પન્ન કરવાના સાધનથી અનભિજ્ઞ છો, મૂર્ખ છો, વિવેક રહિત છો, અપંડિત છો, પ્રતિભા રહિત છો, નિર્વિજ્ઞાન-કુશળતા રહિત છો, અનુપદેશલબ્ધ-તમોએ આ બાબતમા ગુરૂનો ઉપદેશ પ્રાપ્ત કર્યો નથી, એટલે કે તમે અશિક્ષિત છો, એથી જ લાકડીમાથી અગ્નિ મેળવવા માટે તમે તેના કકડા કરી નાખ્યા છે. બે કકડા કરી નાખ્યા છે ત્રણ કકડા કરી નાખ્યા છે, ચાર કકડાઓ કરી નાખ્યા છે યાવત્ સંખ્યાત કકડાઓ કરી નાખયા છે. છતા એ તમને તેમાં અગ્નિ દેખાયો નહિ. એથી તમે ખરેખર મૂઢત્વ વગેરે પૂર્વોક્ત વિશેષણોથી રહિત નથી (से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ) આ પ્રમાણે મૂઢતરત્વ સાધક દૃષ્ટાંત કહીને ઉપસહાર કરતા કેશી પ્રદેશીને કહેવા લાગ્યા કે હે પ્રદેશિન! તમે આ દૃષ્ટાન્તમા આવેલ પુરૂષ કરતા પણ વધારે મૂર્ખ છો કેમકે તમે માણુસના શરીરના કકડા કરીને તેમના જીવને જોવા તત્પર થયા હતા,

ते यथानामकाः अनिर्दिष्टनामानः केचित् पुरुषाः धनार्थिनः-धनमेवार्थोऽस्त्येषामिति धनार्थिनः-धनमयोमनयुक्ताः धनोपजीविनः धनेन वन्यकाष्ठादिना उपजीविनः जीवननिर्वाहकारिणः काष्ठहारका इत्यर्थः, धनगवेषणया-धनभिक्षा तया ज्योतिः-अग्निं च ज्योतिर्भाजनम्-अग्निपात्रं च गृहीत्वा काष्ठानाम्-इन्धनानाम् स्थानभूताम् अटवीम् अनुप्रविष्टाः, ततः-तदनन्तरम् ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः-ग्रामवसतिरहितायाः, अटव्याः किञ्चिद्देशम्-स्वल्पदेशम् अनुप्राप्ताः-क्रमेण गताः सन्तः एकं पुरुषम् एवमवादिषुः-हे देवानुप्रिय ! वयं काष्ठानामटवीं प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात्-अग्निपात्रात् ज्योतिः अग्निं गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेः-निष्पादयेः यदि-भोजननिष्पादनसमये ज्योतिर्भाजने तत्-पूर्वतो रक्षितं ज्योतिः विध्यायेत्—शाम्येत् तदा इतः-एतस्मात् काष्ठात् खलु त्वं ज्योतिः-अग्निं गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेः इति कृत्वा-इत्याख्याय ते काष्ठहारकाः काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः, ततः-तेषां गमनानन्तरं खलु स पुरुषः ततः-मुहूर्तान्तरात्-किञ्चित्कालानन्तरम् तेषां-वने प्रविष्टानां पुरुषाणाम् अशनं साधयामीति कृत्वा-इत्यभिप्रेत्य यत्रैव-यस्मिन्नेव स्थाने ज्योतिर्भाजनमासीत् तत्रैव-तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छति, परन्तु ज्योतिर्भाजने-अग्निपात्रे ज्योतिः-अग्निम् विध्यातमेव-प्रशान्तमेव पश्यति, ततः खलु सः-अशननिष्पादनार्थी पुरुषः यत्रैव तत् काष्ठं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य तत् काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव-नैव खलु तत्-काष्ठे ज्योतिः-वह्निं पश्यति ततः-तदनन्तरम् स पुरुषः परिकरं बध्नाति-कटिं बध्नाति परशुं-कुठारं गृह्णाति तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं-विदारितं करोति-सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्-काष्ठे ज्योतिः-वह्निं पश्यति, एवम्-अनेन प्रकारेण यावत्—यावत्पदेन 'त्रिधा स्फाटितं चतुर्धा स्फाटितम्' इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, संख्येयधा-संख्यातखण्डं स्फाटितं करोति कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोकते, नो चैव तत् ज्योतिः पश्यति, ततः-तदनन्तरम् खलु स पुरुषः तस्मिन्-तत्कुठारप्रहारे काष्ठे द्विधा स्फाटिते यावत् संख्येयधा-संख्यातखण्डशः स्फाटिते वा ज्योतिः अपश्यन् श्रान्तः-श्रमं प्राप्तः, तान्तः-क्लान्तः, परितान्तः-विशेषतःक्लान्तः, निर्विण्णः-खिन्नः सन् परशुं-कुठारम् एकान्ते-रहसि एडति-देशीयोऽयमेडधातुर्मोचनार्थः, तेन 'मुञ्चति' इत्यर्थः मुक्त्वा परिकरं-कटिबन्धनं मुञ्चति, मुक्त्वा एवमवादीत्-अहो !-

विस्मयोऽत्र यत् मया मन्दभाग्येन तेषां पुरुषाणामशन—भोजनं नो साधितम्, इति कृत्वा—इति विचिन्त्य अपहतमनःसंकल्पः—नष्टमनोऽभिलाषः, चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः—चिन्ताशोकसमुद्रनिमग्नः, करतलपर्यस्तमुखः—करतलनिहितकपोलः, मुखशब्दस्य मुखावयवकपोलपरत्वात्, आर्तध्यानोपगतः—आर्तध्यानयुक्तः, भूमिगतदृष्टिकः—पृथिवीतलनिरीक्षणतत्परः—अधोमुखः, ध्यायति—चिन्तां करोति. ततः इतश्च ते—अटवीमनुप्रविष्टाः पुरुषाः काष्ठानि छिन्दन्ति, छित्त्वा यत्रैव सः अशननिष्पादनार्थी पुरुषः तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य तं पुरुषम् अपहतमनःसंकल्पं यावत्—यावत्पदेन "चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टं, करतलपर्यस्तमुखम्, आर्तध्यानोपगतं, भूमिगतदृष्टिकम्" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, ध्यायन्तं—चिन्तां कुर्वन्तं

टीकार्थ स्पष्ट है—इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है—कि जिस प्रकार प्रथम पुरुष को काष्ठ में अग्नि के दर्शन नहीं हुए और द्वितीय पुरुष को हो गये. उसी प्रकार तुम्हे भी उस चोर पुरुषके शरीर में छिन्नभिन्न करने पर भी उसको जीव के दर्शन नहीं हो सके एतावता यह कैसा कहा जा सकता है कि जीव दिखाई नहीं देने से जीव नाम का कोई स्वतंत्र पदार्थ नहीं है. इसलिये जीव और शरीर एक हैं ऐसी तुम अपनी मान्यता का परित्याग कर यह मानो कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है. ये दोनों एक नहीं हैं। यहां सूत्र में जो 'करतलपर्यस्तमुखः' ऐसा पद आया है—उनमें मुखशब्द मुख के अवयवभूत कपोल अर्थ में आया है 'अपहतमनःसंकल्प जाव' में जो यह यावत् पद आया है—उससे 'चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः, करतल पर्यस्तमुखः, आर्त्तध्यानोपगतः, एवं भूमिगतदृष्टिकः'

ટીકાર્થ આ સૂત્રની સ્પષ્ટ જ છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ પહેલા માણુસને કાષ્ઠમાં અગ્નિના દર્શન થયા નથી અને બીજા માણુસને થયા તેમજ તે ચોર પુરૂષના શરીરના કકડે કકડા કરવા છતાંએ તેના જીવના દર્શન તમને થયા નથી એનાથી આ કેવી રીતે કહી શકાય કે જીવ દેખાતો નથી. તેથી જીવ નામનો કોઇ સ્વતંત્ર પદાર્થ જ નથી- એથી જીવ અને શરીર એક જ છે. એવી તમારી જે માન્યતા છે તેને તમે છોડી દો અને આ વાત સ્વીકારી લોકે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે એઓ બન્ને એક નથી. અહીં સૂત્રમા જે 'करतल पर्यस्तमुखः' આ જાતનું પદ છે તેમા મુખ શબ્દ મુખના અવયવભૂત કપોલ અર્થમા આવેલ છે "अपहतमनः संकल्पं जाव"-માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે, તેથી 'चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः करतलपर्यस्तमुखः आर्त्तध्यानोपगतः एवं

ते यथानामकाः अनिर्दिष्टनामानः केचित् पुरुषाः वनार्थिनः -वनमेवार्थोऽस्त्येषामिति वनार्थिनः-वनमयोजनयुक्ताः वनोपजीविनः वनेन वन्यकाष्ठादिना उपजीविनः जीवननिर्वाहकारिणः काष्ठहारका इत्यर्थः, वनगवेषणया-वनभिक्षया ज्योतिः-अग्निं च ज्योतिर्भाजनम्-अग्निपात्रं च गृहीत्वा काष्ठानाम्-इन्धनानाम् स्थानभूताम् अटवीम् अनुप्रविष्टाः, ततः-तदनन्तरम् ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः-ग्रामवसतिरहितायाः, अटव्याः किञ्चिद्देश-मध्यदेशम् अनुप्राप्ताः-क्रमेण गताः सन्तः एकं पुरुषम् एवमवादिषुः-हे देवानुप्रिय! वयं काष्ठानामटवीं प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात्-अग्निपात्रात् ज्योतिः अग्निं गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेः-निष्पादयेः अथ-भोजननिष्पादनसमये ज्योतिर्भाजने तत्-पूर्वतो रक्षितं ज्योतिः विध्यायेत्-शाम्येत् तदा इत-एतस्मात् काष्ठात् खलु त्वं ज्योतिः-अग्निं गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेः इति कृत्वा-इत्याज्ञाप्य ते काष्ठहारकाः काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः, ततः-तेषां गमनानन्तरं खलु स पुरुषः ततः-मुहूर्तान्तरात्-किञ्चित्कालानन्तरम् तेषां-वन प्रविष्टानां पुरुषाणाम् अशनं साधयामीति कृत्वा-इत्यभिप्रेत्य यत्रैव-यस्मिन्नेव स्थाने ज्योतिर्भाजनमासीत् तत्रैव-तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छति, परन्तु ज्योतिर्भाजने-अग्निपात्रे ज्योतिः-अग्निम् विध्यातमेव-प्रशान्तमेव पश्यति, ततः खलु सः-अशननिष्पादनार्थी पुरुषः यत्रैव तत् काष्ठं तत्रैव उपागच्छति उपागत्य तत् काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव-नैव खलु तत्-काष्ठे ज्योतिः-वह्निं पश्यति ततः-तदनन्तरम् स पुरुषः परिकरं कटिबन्धनं बध्नाति परशुं-कुठारं गृह्णाति तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं-विदारितं करोति-सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्-काष्ठे ज्योतिः-वह्निं पश्यति, एवम्-अनेन प्रकारेण यावत्-यावत्पदेन 'त्रिधा स्फाटितं चतुर्धा स्फाटितम्' इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, स सर्वेषधा-सङ्ख्यातखण्डं स्फाटितं करोति कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोकते, नो चैव तत् ज्योतिः पश्यति, ततः-तदनन्तरम् खलु स पुरुषः तस्मिन्-कृतकुठारप्रहारे काष्ठे द्विधा स्फाटिते यावत् सङ्ख्येयधा-सङ्ख्यातखण्डशः स्फाटिते वा ज्योतिः अपश्यन् श्रान्तः-श्रमं प्राप्तः, तान्तः-क्लान्तः, परितान्तः-विशेषतः क्लान्तः, निर्विण्णः-खिन्नः सन् परशुं-कुठारम् एकान्ते-रहसि एडति-देशीयोऽयमेडधातुर्मोचनार्थः, तेन 'मुञ्चति' इत्यर्थः मुक्त्वा परिकर-कटिबन्धनं मुञ्चति, मुक्त्वा एवमवादीत्-अहो!!-

परिकरं मुञ्चामि एवमवादिषम्–अहो!! मया तेषां पुरुषाणामशनं नो साधितमिति कृत्वा अपहृतमनः संकल्पः चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः करतल पर्यस्तमुख आर्तध्यानोपगतो भूमिगतदृष्टिकः" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्याऽस्मिन्नेव सूत्रे पूर्वं कृता. ध्यायामि–चिन्तां करोमि, ततः–तदनन्तरं तेषां पुरुषाणां मध्याद् एकः कोऽपि पुरुषः छेकः–अवसरज्ञः, दक्षः–कार्यकुशलः, प्राप्तार्थः–निजकौशलेनाधिगतसाध्यरूपार्थः, यावत्–यावत्पदेन–"बुद्धः, कुशलः, महामतिः विनीतः विज्ञानप्राप्तः" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या पूर्वं गता, तथा उपदेशलब्धः–प्राप्तगुरूपदेशः, शिक्षित इति यावत्, एतादृश एकः पुरुषः तान्–काष्ठहारकान् पुरुषान् एवमवादीत्–हे देवानुप्रियाः! यूयं गच्छत खलु स्नाताः–कृतस्नानाः कृतबलिकर्माणः–कृतवायसादिनिमित्तान्नदानाः, यावत्–प्रायश्चित्ताः–यावत्पदेन–कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता" इत्येतत्पदसङ्ग्रहो बोध्यः, एतादृशाः सन्तः शीघ्रमागच्छत, कियता कालेन? इति जिज्ञासायामाह–यावत्–यावत्कालेन खलु अहम् अशन–भोजन साधयामि–निष्पादयामि. इति कृत्वा–इत्युक्त्वा परिकरं बध्नाति–कटिबन्धनं करोति, परशु–कुठारं गृह्णाति, गृहीत्वा शरं–बाणसदृशं प्रतनुकाष्ठं करोति तेन शरेण–तनूकृतकाष्ठेन अरणिं–काष्ठविशेषं मथ्नाति–संघर्षति, ज्योतिः–अग्निं पातयति–निष्काशयति, पातयित्वा ज्योतिः–वह्निं संधुक्षते–संदीपयति, संदीप्य तेषां पुरुषाणामशनं साधयति, ततः–अशननिष्पादनानन्तरम् खलु ते पुरुषाःस्नाताः कृतबलिकर्माण· यावत् प्रायश्चित्ताः–कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः सन्तः यत्रैव स पुरुष आसीत् तत्रैव उपागच्छन्ति, ततः खलु स पुरुषः तेषां पुरुषाणाम्, सुखासनवरगतानां–

है इसमें एड धातु मोचन अर्थ में है। 'अहो' शब्द विस्मयार्थक है। 'पत्तट्ठे जाव' में जो यावत्पद आया है–उससे यहां 'बुद्धः, कुशलः, महामतिः, विनीतः, विज्ञानप्राप्तः' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदों की व्याख्या पहिले की जा चुकी है। 'कयबलिकम्मा जाव' में आये हुए यावत् पद से 'कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः' इस पद का संग्रह हुआ है। 'दुहा फालियंसि

શબ્દ દેશીય છે. આમાં "एड" ધાતુ 'મોચન' અર્થમાં છે. 'अहो' શબ્દ વિસ્મયાર્થક છે. 'पत्तट्ठे जाव" માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે. તેથી અહીં 'बुद्धः, कुशलः, महामतिः विनीतः, विज्ञानप्राप्तः,' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે. 'कयबलिकम्मा जाव' માં આવેલ યાવત્ પદથી 'कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः' આ પદનો સંગ્રહ થયો છે. 'दुहा फालियंसि

पश्यन्ति, दृष्ट्वा एवम् अवादिषुः—किं—कारणं खलु ? हे देवानुप्रिय ! त्वम् अपहृतमनःसंकल्पः यावत्—ध्यायसि ?—चिन्तां करोषि ?, ततः—तदनन्तरम् खलु स पुरुषः एवमवादीत्—हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु काष्ठानामटवीमनुप्रविशन्तः मम एवमाख्यात—कथितवन्तः, किमित्याह—हे देवानुप्रिय ! वयं खलु काष्ठानामटवीं यावत्—यावत्पदेन "प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशनं साधये, अथ तज्ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यायेत् इतः खलु त्वं काष्ठात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशनं साधयेरिति कृत्वा काष्ठानामटवीम्" इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, अनुप्रविष्टाः, ततः—तदनन्तरं खलु अहं ततो—मुहूर्तान्तरात् युष्माकमशनं साधयामीति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजनं यावत्—यावत्पदेन 'तत्रैव उपागच्छामि ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यातमेव पश्यामि, ततः खलु अहं यत्रैव तत् काष्ठं तत्रैव उपागच्छामि, उपागम्य तत् काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोके नो चैव तत्र ज्योतिः पश्यामि, ततः खलु अहं परिकरं बध्नामि परशुं गृह्णामि तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं करोमि कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोके नो चैव तत्र ज्योतिः पश्यामि, एवं यावत् त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा स्फाटितं करोमि सर्वतः समन्तात् समभिलोके नो चैव तत् ज्योतिः पश्यामि, ततः खलु अहं तस्मिन् काष्ठे द्विधा स्फाटिते वा यावत् त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा वा स्फाटिते ज्योतिरपश्यन् श्रान्तः तान्तः परितान्तः निर्विण्णः सन् परशुमेकान्ते (एकान्ते॰) मुञ्चामि मुक्त्वा

इन पदों का ग्रहण हुआ है। 'काष्ठानामटवीं यावत्' में आये हुए यावत्पद से 'प्रविशामः इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशनं साधये', अथ तज्ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यायेत्—इतः खलु त्वं काष्ठात् ज्योतिर्गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेरिति कृ०। काष्ठानामटवीम् इस पाठ का संग्रह हुआ है। 'एवं यावत् संख्येयधा' में आये हुए यावत्पद से द्विधा स्फाटितं, चतुर्धा स्फाटितम्' इन पदों का संग्रह हुआ है। 'पश्यति' यह शब्द देशीय

ભૂમિગત દૃષ્ટિક" આ પદોનું ગ્રહણ થયું છે 'काष्ठानामटवीं यावत्' માં આવેલ યાવત્ પદથી 'प्रविशामः इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशनं साधये, अथ तज्ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यायेत्—इतः खलु त्वं काष्ठात् ज्योतिर्गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेरिति कृत्वा काष्ठानामटवीम्' આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. 'एवं यावत् संख्येयधा' માં આવેલ યાવત્ પદથી 'द्विधा स्फाटितं चतुर्धास्फाटितम्' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે 'पश्यति' આ

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-युक्तः खलु भदन्त ! युष्माकम् अतिच्छेकानां दक्षाणां बुद्धानां कुशलानां महामतीनां विनीतानां विज्ञानप्राप्तानाम् उपदेशलब्धानाम् अहम् अस्याः महातिमहालयाः परिषदो मध्ये उच्चावचैः आक्रोशैः आक्रोष्टुम्, उच्चावचाभिरुद्धर्षणाभिरुद्धर्षयितुम्, उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिर्निर्भर्त्सयितुम्, उच्चावचाभिर्निश्छोटनाभिर्निश्छोटयितुम् ? ॥ सू० १४७॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(जुत्तएणं भंते ! अइच्छेयाणं दक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाणं, विण्णाणपत्ताणं, उवएसलद्धाणं) हे भदन्त ! अतिच्छेक-अवसरज्ञ, दक्ष-चतुर, बुद्ध-तत्त्वज्ञ, कुशल-कर्तव्या-कर्तव्य निर्णायक, महामति औत्पत्तिकी आदिबुद्धियों से युक्त, विनीत-शिष्ट, विज्ञानप्राप्त-सत् असत् के विवेक से संपन्न, एवं उपदेशलब्ध-गुरु के उपदेश को प्राप्त करने वाले ऐसे आपके लिये (अहं इमीसाए महइमहालियाए परिसाए मज्झे) मुझ से इस अतिविशाल परिषदा के बीच में (उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए) उच्चावच-नाना प्रकार के कठिनवचनरूप आक्रोशों से संलाप करना नानाप्रकार की अनादर सूचक वचनरूप उद्धर्षणाओं से मुझे उद्धर्षित करना, (एवं उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछित्तए, उच्चावयाहिं

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) त्यार पछी प्रदेशी राजाओ केशीकुमार श्रमणुने आ प्रमाणे कह्युं-(जुत्तएणं भंते ! अइच्छेयाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाणं, विण्णाणपत्ताणं, उवएसलद्धाणं) हे भदंत ! अतिच्छेक-अवसरज्ञ, दक्ष-चतुर, बुद्ध-तत्त्वज्ञ, कुशळ-कर्तव्याकर्तव्य निर्णायक, महामति-औत्पत्तिकी वगेरे बुद्धीओथी युक्त, विनीत-शिष्ट, विज्ञान प्राप्त-सत् असतना विवेकथी युक्त अने उपदेशलब्ध-गुरुना उपदेशने प्राप्त करनार ओवा तमारा वडे (अहं इमीसाए महइमहालियाए परिसाए मज्झे) मारी साथे आ अतिविशाळ परिषदानी वच्चे (उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए) उच्चावच-अनेक जातना कठोर वचनरूप आक्रोशोथी संलाप करवुं-अनेक प्रकारना अपमान सूचक वचनरूप उद्घर्षणाओथी उद्घर्षित करवुं

सुखदोत्तमासनोपविष्टानाम्, सताम् पुरतः तत्-मानित, विपुल-प्रचुरम्, अशन पान खादिम स्वादिमम् उपनयति-परिवेषयति, ततः खलु ते पुरुषा तद्विपुलमशन पान खादिम स्वादिमम् आस्वादयन्तः-सामान्यतः स्वादयन्त, विस्वादयन्तः-विशेषेण स्वादयन्तः, यावत् यावत्पदेन-"परिभाजयन्त परिभुञ्जाना' इत्यनयोः पदयो संग्रहो बोध्य, तत्र परिभाजयन्त-परितो भजन्त, परिभुञ्जाना-परित-आदौ भुञ्जाना, विहरन्ति-तिष्ठन्ति। जिमितभुक्तोत्तरागता-जिमित-चतुर्विधमशन तस्य भुक्त-भोजन तदुत्तरं तदनन्तर कालम् आगता-प्राप्ता अपि च खलु आचान्ता-कृताऽऽचमनाः चोक्षा सामान्यतः शुद्धा, परमशुचिभूताः-गण्डूषादिभिर्निर्लेपत शुद्धा तं पुरुषम्, एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाण वचनम् अवादिषुः—अहो ! ! देवानुप्रिय ! त्व खलु जडः मूढसरणाः-विशिष्टचेतनारहितत्वात, मूढ:-मूर्ख, अपण्डितः सदसद्विवेकविकलत्वात् निर्विज्ञान- कौशलरहितः अनुपदेशलब्ध अप्राप्त गुरूपदेश-अशिक्षितोऽसि, यस्त्वम् खलु द्विधा स्फाटिते काष्ठे यावत् त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा वा स्फाटिते काष्ठे ज्योतिः नहि द्रष्टुमिच्छसि इति सूत्र तत्कालसामञ्जस्योपसंहरति हे प्रदेशिन् तदेतेन-अनन्तरोक्तेन सर्वेन-दृष्टान्तरूपेण, एवम् इत्थम् उच्यते कथ्यते यद् हे प्रदेशिन् ! तस्माद् अपापकात् काष्ठहारात् मूढतरः-अतिमूढः असि । सू० १४५॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमण एव वयासी-जुत्तए णं भंते ! अइदक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसाए महइ महालयाए परिसाए मज्झे उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए, एवं उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छित्तए, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए ? ॥सू० १४७॥

या जाव' में यावत् पद से 'त्रिधा, चतुर्धा संख्येयधा वा स्फाटिते काष्ठे' इन पदों का संग्रह हुआ है ॥सू १४६॥

या जाव' આ આવેલ યાવત્ પદથી 'ત્રિધા, ચતુર્ધા, સંખ્યેયધા વા સ્ફાટિતે કાષ્ઠે' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે ॥સૂ૦ ૧૪૬॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-युक्तः खलु भदन्त! युष्माकम् अतिच्छेकानां दक्षाणां बुद्धानां कुशलानां महामतीनां विनीतानां विज्ञानप्राप्तानाम् उपदेशलब्धानाम् अहम् अस्याः महातिमहालयाः परिषदो मध्ये उच्चावचैः आक्रोशैः अक्रोष्टुम्, उच्चावचाभिरुद्धर्षणाभिरुद्धर्षयितुम्, उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिर्निर्भर्त्सयितुम्, उच्चावचाभिर्निश्छोटनाभिर्निश्छोटयितुम् ? ।सू० १४७॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(जुत्तएणं भंते! अइछेकाणं दक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाणं, विण्णाणपत्ताणं, उवएसलद्धाणं) हे भदन्त! अतिच्छेक-अवसरज्ञ, दक्ष-चतुर, बुद्ध-तत्त्वज्ञ, कुशल-कर्तव्या-कर्तव्य निर्णायक, महामति औत्पत्तिकी आदिबुद्धियों से युक्त, विनीत-शिष्ट, विज्ञानप्राप्त-सत् असत् के विवेक से संपन्न, एवं उपदेशलब्ध-गुरु के उपदेश को प्राप्त करने वाले ऐसे आपके लिये (अहं इमीसाए महइमहालियाए परिसाए मज्झे) मुझ से इस अतिविशाल परिषदा के बीच में (उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए) उच्चावच-नाना प्रकार के कठिनवचनरूप आक्रोशों से संलाप करना नानाप्रकार की अनादर सूचक वचनरूप उद्धर्षणाओं से मुझे उद्धर्षित करना, (एवं उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछित्तए, उच्चावयाहिं

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) ત્યાર પછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું-(जुत्तएणं भंते! अइछेकाणं दक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाणं, विण्णाणपत्ताणं, उवएसलद्धाणं) હે ભદંત! અતિચ્છેક-અવસરજ્ઞ, દક્ષ-ચતુર, બુદ્ધ-તત્ત્વજ્ઞ, કુશળ-કર્તવ્યાકર્તવ્ય નિર્ણાયક, મહામતિ-ઔત્પત્તિકી વગેરે બુદ્ધીઓથી યુકત, વિનીત-શિષ્ટ, વિજ્ઞાન પ્રાપ્ત-સત્ અસતના વિવેકથી યુકત અને ઉપદેશલબ્ધ-ગુરૂના ઉપદેશને પ્રાપ્ત કરનાર એવા તમારા વડે (अहं इमीसाए महइमहालियाए परिसाए मज्झे) મારી સાથે આ અતિવિશાળ પરિષદાની વચ્ચે (उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए) ઉચ્ચાવચ-અનેક જાતના કઠોર વચનરૂપ આક્રોશોથી સંલાપ કરવુ-અનેક પ્રકારના અપમાન સૂચક વચનરૂપ ઉદ્ધર્ષણાઓથી ઉદ્ધર્ષિત કરવું

सुखदोपमासनोपविष्टानाम्, सतान् पुरतः तत्र-माघित, विपुल-प्रचुरम्, अशनं पानं स्वादिमं स्वादिमम् उपनयति-परिवेषयति, ततः स ते पुरुषाः तद्विपुलमशनं पानं खादिमं स्वादिमम् आस्वादयन्तः-सामान्यतः स्वादयन्तः, विस्वादयन्तः-विशेषेण स्वादयन्तः, यावत् यावत्पदेन-"परिभाजयन्तः परिभुञ्जानाः" इत्यनयोः पदयोः संग्रहो बोध्यः, तत्र परिभाजयन्तः-परितो भाजयन्तः, परिभुञ्जानाः-परितः-भावतः भुञ्जानाः, विहरन्ति-तिष्ठन्ति। जिमितभुक्तोत्तरागताः-जिमिताः-चतुर्विधमशनं तस्य भक्ष-भोजनं तदुत्तरं तदनन्तरं कालम् आगताः-प्राप्ताः अपि च सन्तः आचान्ताः-कृताऽऽचमनाः चोक्षाः सामान्यतः शुद्धाः, परमशुचिभूताः-गण्डूषादिभिर्विशेषतः शुद्धाः तत्र पुरुषम्, एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादिषुः-अहो!! देवानुप्रिय! त्वं खलु जडः मूढसदृशः-विशिष्टचेतनारहितत्वात्, मूढः-मूर्खः, अपण्डितः सदसद्विवेकविकलत्वात्, निर्विज्ञानः कौशलरहितः, अनुपदेशलब्धः अमात् गुरूपदेशं अशिक्षितः असि, यस्त्वम् खलु द्विधा स्फाटिते काष्ठे यावत् त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा वा स्फाटिते काष्ठे ज्योतिः वह्निं द्रष्टुमिच्छसि इति मूढतरत्वसाधकदृष्टान्तमुक्त्वोपसंहरति हे प्रदेशिन् तदेतेन-अनन्तरोक्तेन अर्थेन-दृष्टान्तरूपेण, एवम् इत्थम् उच्यते कथ्यते यत् हे प्रदेशिन्! त्वमपि अपापकात् काष्ठहारात् मूढतर -अतिमूढः असि ॥ सू० १४५॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-जुत्तए णं भंते! अइदक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसाए महइ महालयाए परिसाए मज्झे उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए, एवं उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छित्तए, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए? ॥सू० १४७॥

या जाव' में यावत् पद से 'त्रिधा, चतुर्धा संख्येयधा वा स्फाटिते काष्ठे' इन पदों का संग्रह हुआ है ॥सू० १४६॥

ना जाव' માં આવેલ યાવત્ પદથી 'ત્રિધા, ચતુર્ધા, સંખ્યેયધા વા સ્ફાટિતે કાષ્ઠે' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. ॥સૂ૦ ૧૪૬॥

पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ ? १। जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ से णं तएण वा वेढेण वा पलालेणं वा वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ २। जे णं माहणपरिसाए अवरज्झइ से णं अणिट्ठाहिं अकंताहि जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ ३। जे णं इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४। एवं च ताव पएसी ! तुमं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं, दंडं दंडेणं, पडिकूलं पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं विवज्जासं विवज्जासेणं वट्टसि ? ॥सू० १४८॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—जानासि खलु त्वं प्रदेशिन् ! कति परिषदः प्रज्ञप्ताः? । जानामि चतस्रः परिषदः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—क्षत्रियपरिषत् १, गाथापतिपरिषत् २, ब्राह्मणपरिषत्

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसी कुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?) हे प्रदेशिन् ! तुम जानते हो—कितनी परिषदाएँ कही गई हैं ? प्रदेशीने कहा—(जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ) हां भदन्त ! जानता हूं—चार परिषदा कही गई हैं। (तं जहा—

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएण) त्यार पछी (केसी कुमारसमणे) केशी कुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं. (जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?) हे प्रदेशिन् ! तमे जाणो छो के परिषदाओ केटली कहेवाय छे? प्रदेशीए कह्युं. (जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ) हा जी, भदंत ! हुं जाणुं छुं के चार जातनी परिषदाओ कहेवामां आवी छे. (तं जहा, खत्तियपरिसा १, गाहावइपरिसा २, माहणपरिसा ३, इसिपरिसा ४) जे आ प्रमाणे छे-क्षत्रिय परिषदा, १ गाथापत्ति परिषदा २, ब्राह्मण

टीका—"तए णं पएसी" इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशि कुमारश्रमणमेवमवादीत्-हे भदन्त ! अतिच्छेकानाम्-अवसरज्ञानां, दक्षाणाम्-चतुराणां, बुद्धानाम्-तत्त्वज्ञानां, कुशलानाम्-कत्तव्याकत्तव्यनिर्णायकानां, महामतीनाम्-औत्पत्तिक्यादिबुद्धियुक्तानां विनीतानाम् शिष्टानां, विज्ञानप्राप्तानाम्-सदसद्विवेकसम्पन्नानाम्, उपदेशलब्धानां प्राप्तगुरूपदेशानाम्, युष्माकम् अस्याः उपस्थितायाः, महाति महाप्रयायाः अतिविशालायाः परिषदः सभाया मध्ये उच्चावचैः-नानाविधैः, आक्रोशैः-कठिनवचनरूपैः, आक्रोष्टुम्-शपितुम्, उच्चावचाभिः-नानाविधाभिः उद्धर्षणाभिः-अनादर सचकवचनलक्षणाभिः, उद्धर्षयितुम्-तर्जम्, उच्चावचाभिः-नानाविधाभिः निर्भर्त्सनाभिः-अवहेलनाभिः, निर्भर्त्सयितुम् अवहेलयितुम्-उच्चावचाभिः-नानाप्रकाराभिः निश्छोटनाभिः-नीरसवचनात्मिकाभिः, निश्छोटयितुम्-सम्भावितुम्, यत् किं युक्तः ?-युक्तोऽस्मि-योग्योऽस्मि ? सभासमक्षमेतादृशस्य व्यवहारो भवादृशानां महापुरुषाणां नोचित इति भावः ॥ सू० १४७ ॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ? । जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खत्तियपरिसा १, गाहावइ परिसा २, माहणपरिसा ३, इसिपरिसा ४ । जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासि चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता ? हंता !, जाणामि—जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा

निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए) नाना प्रकार की अवहेलनारूप निर्भर्त्सनाओं द्वारा मेरी निर्भर्त्सना करना तथा नानाप्रकार की नीरसवचनरूप निश्छोटनाओं द्वारा मुझ से बोलना क्या योग्य है ? अर्थात् आप जैसे महापुरुषों को सभा के समक्ष ऐसा वचनरूप व्यवहार मेरे साथ करना उचित नहीं है।

टीकार्थ—स्पष्ट है ॥ सू० १४७ ॥

(एवं उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छित्तए, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए) અનેક પ્રકારના અવહેલનારૂપ નિર્ભત્સનાઓ વડે મારી ભર્ત્સના કરવી તેમજ અનેક પ્રકારની નીરસવચનરૂપ નિશ્છોટનાઓ વડે મને પ્રશ્ને તેમ બોલવું શું યોગ્ય છે ? એટલે કે તમારા જેવા મહાપુરુષોને સભાની વચ્ચે આ જાતના વચનોચ્ચારણ ઉચિત નહિ કહેવાય. ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥ સૂ૦ ૧૪૭ ॥

पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ ?।जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ से णं तएण वा वेढेण वा पलालेणं वा वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ २। जे णं माहणपरिसाए अवरज्झइ से णं अणिट्ठाहिं अकंताहि जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ ३। जे णं इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४। एवं च, ताव पएसी! तुमं जाणासि तहावि णं तुम ममं वामं वामेणं, दंडं दंडेणं, पडिकूलं पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं विवज्जासं विवज्जासेणं वट्टसि ?॥सू० १४८॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! कति परिषदः प्रज्ञप्ताः? । जानामि चतस्रः परिषदः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—क्षत्रियपरिषत् १, गाथापतिपरिषत् २, ब्राह्मणपरिषत्

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसी कुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (पएसिं राय एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(जाणासि णं तुम पएसी! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?) हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो—कितनी परिषदाएँ कही गई हैं ? प्रदेशीने कहा—(जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ) हाँ भदन्त! जानता हूँ—चार परिषदा कही गई हैं। (तं जहा—

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएण) त्यार पछी (केसी कुमारसमणे) केशी कुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं. (जाणासि णं तुमं पएसी! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?) हे प्रदेशिन्! तमे जाणो छो के परिषदाओ केटली कहेवाय छे? प्रदेशीए कह्युं (जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ) हा जी, भदन्त! हुं जाणुं छुं के चार जातनी परिषदाओ कहेवामां आवी छे. (तं जहा, खत्तियपरिसा १, गाहावइपरिसा २, माहणपरिसा ३, इसिपरिसा ४) जे आ प्रमाणे छे-क्षत्रिय परिषदा, १ गाथापति परिषदा २, ब्राह्मण

टीका—'तए णं पएसी' इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-हे भदन्त ! अतिच्छेकानाम्-अवसरज्ञानां, दक्षाणाम्-चतुराणां, बुद्धानाम्-तत्त्वज्ञानां, कुशलानाम्-कर्तव्याकर्तव्यनिर्णायकानां, महामतीनाम्-औत्पत्तिक्यादिबुद्धियुक्तानां विनीतानाम् शिष्टानां, विज्ञानप्राप्तानाम्-सदसद्विवेकसम्पन्नानाम्, उपदेशलब्धानां प्राप्तगुरूपदेशानाम्, युष्माकम् अस्याः उपस्थितायाः, महातिमहालयायाः-अतिविशालायाः परिषदः सभाया मध्ये उच्चावचैः-नानाविधैः, आक्रोशैः-कठिनवचनरूपैः आक्रोष्टुम्-शप्तुम्, उच्चावचाभिः-नानाविधाभिः उद्धर्षणाभिः-अनादरसूचकवचनलक्षणाभिः, उद्धर्षयितुम्-धर्षितुम्, उच्चावचाभिः-नानाविधाभिः, निर्भर्त्सनाभिः-अवहेलनाभिः, निर्भर्त्सयितुम् अवहेलयितुम्-उच्चावचाभिः नानाप्रकाराभिः निश्छोटनाभिः-नीरसवचनावलीभिः, निश्छोटयितुम्-तिरस्कर्तुम्, किं युक्तम् ?-युक्तोऽस्ति-योग्योऽस्ति ? सभासमक्षमेतादृशस्य वचो व्यवहारो भवादृशानां महापुरुषाणां नोचित इति भावः ॥ सू० १४७ ॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ? । जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खत्तियपरिसा १, गाहावइ परिसा २, माहणपरिसा ३, इसिपरिसा ४ । जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता ? हंता !! जाणामि—जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा

निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए) नाना प्रकार की अवहेलनारूप निर्भर्त्सनाओं द्वारा मेरी निर्भर्त्सना करना तथा नानाप्रकार की नीरसवचनरूप निश्छोटनाओं द्वारा मुझ से बोलना क्या योग्य है ? अर्थात् आप जैसे महापुरुषों को सभा के समक्ष ऐसा वचनरूप व्यवहार मेरे साथ करना उचित नहीं है।

टीकार्थ—स्पष्ट है ॥ सू० १४७ ॥

(एव उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छित्तए, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए) અનેક પ્રકારની અવહેલનારૂપ નિર્ભર્ત્સનાઓ વડે મારી ભર્ત્સના કરવી તેમજ અનેક પ્રકારની નીરસવચનરૂપ નિશ્છોટનાઓ વડે મને જેમ તેમ બોલવું શું યોગ્ય છે ? એટલે કે તમારા જેવા મહાપુરુષોને સભાની વચ્ચે આ જાતના વચનોથી વ્યવહાર ઉચિત નહિ કહેવાય. ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥ સૂ૦ ૧૪૭ ॥

अपराध्यति स खलु अनिष्टाभिः अकान्ताभिः यावत् अमनोऽमाभिः वाग्भिः उपालभ्य कुण्डिकालाञ्छनको वा शुनकलाञ्छनको वा क्रियते, निर्विषयो वा आज्ञाप्यते ३। यः खलु ऋषिपरिषदि अपराध्यति स खलु नात्यनिष्टाभिः यावत्-नात्यमनआमाभिः वाग्भिः उपलभ्यते ४। एवं च तावत् प्रदेशिन्!

भी अपराध करता है, वह वृक्षादि की छाल से अथवा तृणादिनिर्मित रस्सी से, या पलाल से परिवेष्टित किया जाकर अग्नि मे जला दिया जाता है-(जे ण माहणपरिसाए अवरज्जइ, से णं अणिट्ठयाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ) ब्राह्मण परिषदा में जो ब्राह्मण जिस किसी का भी अपराध करता है, वह अनिष्ट-सामान्यरूप से अनभिलपित, अकान्त-विशेषरूप से अनभिलपित-अप्रिय-प्रेमवर्जित, अमनोज्ञ असुन्दर एवं अमन आम-मनः प्रतिकूल ऐसी वाणियो से उपालंभ युक्त किया जाता है, तथा तप्तलोहे के तकुये द्वारा कमण्डलु के जैसे आकार वाले लांछन से ललाट में चिह्नित किया जाता है, अथवा कुत्ते के पग के जैसे आकारवाले चिह्न से लांछित किया जाता है, अथवा देश से बाहर निकाल दिया जाता है. तुम हमारे देश से निकल जाओ ऐसी आज्ञा उसके लिये दी जाती है३. (जे ण इसिपरिसाए अवरज्जइ से णं णाइ अणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४) तथा जो ऋषि परिषदा में-ऋषिवर्ग में-ऋषि

ગાથાપતિ પરિષદામાં-ગૃહપતિ વર્ગમાં જે કોઇ ગાથાપતિ ગમે તેનો અપરાધ કરે તો તે વૃક્ષ વગેરેની છાલથી અથવા તૃણ વગેરેથી નિર્મિત દોરી કે પલાલથી પરિવેષ્ટિત કરાઇને અગ્નિવડે સળગાવવામા આવે છે. (जे णं माहणपरिसाए अवरज्जइ, से णं अणिट्ठयाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ निव्विसए वा आणविज्जइ) બ્રાહ્મણ પરિષદામા જે બ્રાહ્મણ ગમે તેનો અપરાધ કરે છે તો તે અનિષ્ટ-સામાન્ય રૂપથી અનભિલાષિત, અકાંત-વિશેષરૂપથી અનભિલષિત, યાવત્ અપ્રિય-પ્રેમવર્જિત, અમનોજ્ઞ-અસુંદર અને અમન આમ મનઃપ્રતિકૂલ એવી વાણીઓથી ઉપાલંભયુકત કરવામાં આવે છે તેમજ તપ્ત થયેલ લોખંડના સળિયા વડે કમંડલું જેવા આકારથી યુકત ચિહ્નથી લલાટમાં ચિન્હિત કરવામા આવે છે અથવા કૂતરાના પગ જેવા આકારવાળા ચિન્હથી લાંછિત કરવામાં આવે છે અથવા દેશ બહાર કરવામાં આવે છે. તમે અમારા દેશથી જતા રહો. એવી આજ્ઞા તેને આપવામાં આવે છે. ૩, (जेणं इसिपरिसाए अवरज्जइ से णं णाइ अणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४)

३, ऋषिपरिषद् ४। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतासां चतसृणां परिषदां (मध्ये) कस्य का दण्डनीतिः प्रज्ञप्ता? हन्त!। जानामि—यः खलु क्षत्रियपरिषदि अपराध्यति स खलु हस्तच्छिन्नको वा पादच्छिन्नको वा शीर्षच्छिन्नको वा शूलायितो वा एकाहत्य कूटाहत्य जीविताद् व्यपरोप्यते ।। यः खलु गाथापतिपरिषदि अपराध्यति स खलु तृणेन वा वेष्टेन वा पलालेन वा वेष्टयित्वा अग्निकायेन ध्माप्यते ७। यः खलु ब्राह्मणपरिषदि

क्षत्रियपरिसा१ गाहावइपरिसा२, माहणपरिसा३, इसिपरिसा४) वे इस प्रकार से है— क्षत्रियपरिषदा१, गाथापतिपरिषदा२, ब्राह्मणपरिषदा३ और ऋषिपरिषदा४. (जाणासि णं तुमं पएसी! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता) हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो—इन चार परिषदाओं के बीच में किस अपराधी के लिये किस प्रकार दण्डनीति कही गई है? (हंता, जाणामि जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा पायच्छिण्णए वा, सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे, कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ) हां जानता हूं—क्षत्रियपरिषदा में क्षत्रिय वर्ग का कोई सदस्य अपने वर्ग में जिस किसी का भी अपराध करता है उसका या तो हाथ काट दिया जाता है, अथवा पग काट लिया जाता है, या सिर काट दिया जाता है, या शूली पर टांग दिया जाता है, या उसे एक ही घाव से या पत्थर ऊपर से गिरा कर के प्राणांत कर दिया जाता है। (जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ—से णं तएण वा वेढेण वा पलालेण वा वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ) गाथापति परिषदा के गृहस्थवर्ग में का कोई गाथापति जिस किसी के

પરિષદ્ ૩, અને ઋષિ પરિષદ્ ૪, (જાણાસિ ણં તુમં પએસી! એયાસિં ચઉણ્હં પરિસાણં કસ્સ કા દંડણીઈ પણ્ણત્તા) હે પ્રદેશિન્! તમે જાણો છો કે આ ચાર પરિષદાઓમાં કઈ જાતની દંડનીતિ કહેવામાં આવી છે? (હંતા, જાણામિ—જે ણં ખત્તિયપરિસાએ અવરજ્ઝઇ સે ણં હત્થચ્છિણ્ણએ વા પાયચ્છિણ્ણએ વા સીસચ્છિણ્ણએ વા સૂલાઇએ વા, એગાહચ્ચે કૂડાહચ્ચે જીવિયાઓ વવરોવિજ્જઇ) હા, જાણું છું ક્ષત્રિય પરિષદામાં ક્ષત્રિયવર્ગમાં જે કોઈ ક્ષત્રિય પોતાની જાતિમાં કે બહારની જાતિમાં ગમે તેનો અપરાધ (ગુનો) કરે છે તો તેના હાથ કાપી નાખવામાં આવે છે અથવા પગ કાપી નાખવામાં આવે છે, કે માથુ કાપી નાખવામાં આવે છે કે તેને શૂળ પર ચઢાવી નાખવામાં આવે છે કે એક જ ઘાથી તેને મોતને ઘાટ ઉતારી નાખવામાં આવે છે (જે ણં ગાહાવઇ પરિસાએ અવરજ્ઝઇ—સે ણં તએણ વા, વેઢેણ વા, પલાલેણ વા વેઢિત્તા અગણિકાએણં ઝામિજ્જઇ)

अपराध्यति स खलु अनिष्टाभिः अकान्ताभिः यावत् अमनोऽमामिः वाग्भिः उपालभ्य कुण्डिकालाञ्छनको वा शुनकलाञ्छनको वा क्रियते, निर्विषयो वा आज्ञाप्यते ३। यः खलु ऋषिपरिषदि अपराध्यति स खलु नात्यनिष्टाभिः यावत्-नात्यमनआमाभिः वाग्भिः उपलभ्यते ४। एवं च तावत् प्रदेशिन्!

भी अपराध करता है, वह वृक्षादि की छाल से अथवा तृणादिनिर्मित रस्सी मे, या पलाल से परिवेष्टित किया जाकर अग्नि मे जला दिया जाता है- (जे ण माहणपरिसाए अवरज्झइ, से णं अणिट्ठयाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ) ब्राह्मण परिषदा में जो ब्राह्मण जिस किसी का भी अपराध करता है, वह अनिष्ट-सामान्यरूप से अनभिलषित, अकान्त-विशेषरूप से अनभिलषित-अप्रिय-प्रेमवर्जित, अमनोज्ञ असुन्दर एवं अमन आम-मनः प्रतिकूल ऐसी वाणियों से उपालंभ युक्त किया जाता है, तथा तप्तलोहे के तकुये द्वारा कमण्डलु के जैसे आकार वाले लांछन से ललाट में चिह्नित किया जाता है, अथवा कुत्ते के पग के जैसे आकारवाले चिह्न से लांछित किया जाता है, अथवा देश से बाहर निकाल दिया जाता है. तुम हमारे देश से निकल जाओ ऐसी आज्ञा उसके लिये दी जाती है३. (जे ण इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइ अणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४) तथा जो ऋषि परिषदा में-ऋषिवर्ग में-ऋषि

ગાથાપતિ પરિષદામાં-ગૃહપતિ વર્ગમા જે કોઇ ગાથાપતિ ગમે તેનો અપરાધ કરે તો તે વૃક્ષ વગેરેની છાલથી અથવા તૃણ વગેરેથી નિર્મિત દોરી કે પલાલથી પરિવેષ્ટિત કરાઇને અગ્નિવડે સળગાવવામા આવે છે. (जे णं माहणपरिसाए अवरज्जइ, से णं अणिट्ठयाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ निव्विसए वा आणविज्जइ) બ્રાહ્મણ પરિષદામા જે બ્રાહ્મણ ગમે તેનો અપરાધ કરે છે તો તે અનિષ્ટ-સામાન્ય રૂપથી અનભિલાષિત, એકાત-વિશેષરૂપથી અનભિલષિત, યાવત્ અપ્રિય-પ્રેમવર્જિત, અમનોજ્ઞ-અસુંદર અને અમન આમ મનઃપ્રતિકૂલ એવી વાણીઓથી ઉપાલંભયુક્ત કરવામાં આવે છે તેમજ તપ્ત થયેલ લોખંડના સળિયા વડે કમંડલું જેવા આકારથી યુક્ત ચિહ્નથી લલાટમા ચિન્હિત કરવામા આવે છે. અથવા કૂતરાના પગ જેવા આકારવાળા ચિન્હથી લાછિત કરવામાં આવે છે અથવા દેશ બહાર કરવામાં આવે છે તમે અમારા દેશથી જતા રહો. એવી આજ્ઞા તેને આપવામાં આવે છે. ૩, (जेणं इसिपरिसाए अवरज्जइ से णं णाइ अणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४)

त्वं जानासि तथापि खलु त्वं मां वामवामेन, दण्डदण्डेन प्रतिकूलप्रतिकूलेन, प्रतिलोमप्रतिलोमेन, विपर्यासविपर्यासेन वर्तसे ॥ सू० १४८॥

टीका—"तए णं केसी" इत्यादि—ततः तदनन्तरं खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणप्रकारं वचनम् अवादीत्—जानासि खलु हे प्रदेशिन् ! त्वं जानासि किम्, परिषदः—सभाः कति—कतिसंख्यकाः प्रज्ञप्ताः ? । प्रदेशी राजा प्राह—जानामि—चतस्रः परिषदः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—क्षत्रियपरिषत् १, गाथापतिपरिषत् २, ब्राह्मणपरिषत् ३, ऋषिपरिषत् ४। केशी कुमारश्रमणः प्राह—हे प्रदेशिन् ! जानासि खलु

जिसे किसी का भी अपराध करता है वह न अति अनष्ट यावत्—न अति अकान्त, न अति अप्रिय, न अति अमनोज्ञ और न अति अमनोऽम ऐसी वाणियों द्वारा उपालम्भयुक्त किया जाता है. (एवं णाम पएसी ! तुम जाणासि—तहावि णं तुमं मम वामं वामेणं दंडं दंडेणं, पडिकूलं पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं, विवज्जासं विवज्जासेणं वट्टसि) हे प्रदेशिन् तुम इस पूर्वोक्त प्रकारवाली नीति को—दण्ड नीति को—विधि से जानते हो फिर भी तुम मेरे प्रतिवामवामरूप से अति विरुद्ध व्यवहार से दण्डरूप से—दंडवत् स्तब्धरूप व्यवहार से—अति अहङ्कारयुक्त व्यवहार से, प्रतिकूल प्रतिकूलरूप से अति विपक्षी भूत व्यवहार से, प्रतिलोम प्रतिलोम से—अतिविपरीतरूप व्यवहार से और विपर्यास विपर्यास से—सर्वथा विरुद्धरूप व्यवहार से प्रवृत्त हो रहे हो।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥१४८॥

તેમજ જે અતિ પરિષદ્માં—અવિનયમાં કોઈ પણ અતિ અપરાધ કરે છે તે ન અતિ અનિષ્ટ યાવત્ ન અતિ અકાન્ત અતિ અમનોજ્ઞ અને ન અતિ અમન આમ એવી વાણીઓ વડે ઉપાલંભયુક્ત કરવામાં આવે છે (एवं णाम पएसी ! तुमं जाणासि—तहा वि णं तुमं मम वामं वामेणं दंडं दंडेणं पडिकूलं, पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं, विवज्जासं विवज्जासेणं वट्टसि) હે પ્રદેશિન્ ! તમે આ પૂર્વોક્ત નીતિને—દંડનીતિને—સારી રીતે જાણો છો, છતાં એ તમે મારા પ્રતિ વામ વામરૂપથી—અતિ વિરુદ્ધ વ્યવહારથી, દંડ દંડરૂપથી—દંડવત્ સ્તબ્ધરૂપ વ્યવહારથી અતિ અહંકારયુક્ત વ્યવહારથી પ્રતિકૂળ પ્રતિકૂળરૂપથી અતિ વિપક્ષિ વ્યવહારથી પ્રતિલોમ પ્રતિલોમથી—અતિ વિપરીતરૂપ વ્યવહારથી અને વિપર્યાસથી સર્વથા વિરુદ્ધરૂપ વ્યવહારથી પ્રવૃત્ત થઈ રહ્યા છો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે ॥ સૂ ૧૪૮ ॥

त्वं ? एतासां चतसृणां परिषदां मध्ये कस्य अपराधिनः का-किंप्रकारा दण्डनीतिः-दण्डविधानरूपा प्रज्ञप्ता-कथिता ? । प्रदेशी प्राह-हन्त ! जानामि तदेवाह-क्षत्रियपरिषदि-क्षत्रियवर्गे यः खलु कश्चित् क्षत्रियः स्ववर्गे परवर्गे वा यस्य कस्यापि अपराध्यति-अपराधं करोति स खलु हस्तच्छिन्नकः-छिन्नहस्तः क्रियते, वा-अथवा पादच्छिन्नकः, अथवा शीर्षच्छिन्नकः, वा अथवा शूलायितः-शूलारोपितः। वा-अथवा एकाहत्यम्-एकाघातेन, कूटाहत्य-पर्वतपातेन जीविताद्-प्राणेभ्यः व्यपरोप्यते-पृथक्क्रियते १। गाथापतिपरिषदि गृहपतिवर्गे यः खलु कश्चिद् गाथापतिः यस्य कस्यापि अपराध्यति स खलु त्वचा-वृक्षादिच्छल्लिना वा अथवा वेष्टेन तृणादिनिर्मितरज्ज्वा, वा अथवा पलालेन-प्रसिद्धेन वेष्टयित्वा-परिवेष्ट्य अग्निकायेन-अग्निना ध्मापयते-ज्वाल्यते २। ब्राह्मणपरिषदि-ब्राह्मणवर्गे यः खलु कश्चिद् ब्राह्मणो यस्य कस्यापि अपराध्यति स खलु अनिष्टाभिः-सामान्यतोऽनभिलषिताभिः अकान्ताभिः-विशेषतोऽनभिलषिताभिः, यावच्छब्देन-"अप्रियाभिः-प्रेमवर्जिताभिः-असुन्दरीभिः" इति संग्राह्यम्, अमनोऽमाभिः मनःप्रतिकूलाभिः वाग्भिः-वाणीभिः उपालभ्य उपालम्भं दत्त्वा, कुण्डिकालाञ्छनकः-कुण्डिका-कमण्डलुः तदाकारकं लाञ्छनकं-तप्तशलाकया ललाटे चिह्नं यस्य स तथाभूतः, वा अथवा शुनकलाञ्छनकः-ललाटे शुनकपदाकारकं चिह्नं यस्य स तथाभूतः क्रियते, वा-अथवा निर्विषयः-निर्वासितो यथा भवेत्तथा आज्ञाप्यते-'त्वमस्माद्देशान्निर्गच्छ' इत्याज्ञा तस्मै दीयत इति भावः ।३। ऋषिपरिषदि-ऋषिवर्गे यः खलु कश्चित् ऋषिर्यस्य कस्यापि अपराध्यति स खलु 'नात्यनिष्टाभिः यावत्-यावच्छब्देन-नात्यकान्ताभिः नात्यप्रियाभिः, नात्यमनोज्ञाभिः" इति संग्राह्यम्, नात्यमनोऽमाभिः वाग्भिः-वाणीभिः उपलभ्यते-तस्मै उपालम्भो दीयते इति भावः ४। केशी कुमारश्रमणः कथयति-हे प्रदेशिन् एवं-पूर्वोक्तप्रकारां दण्डनीतिं तावत्-निश्चयेन त्वं जानासि तथापि त्वं मां प्रति वामवामेन-अतिशयवामेन-अतिविरुद्धेन व्यवहारेण, एवं दण्डदण्डेन-अतिदण्डरूपेण-दण्डवत्स्तब्धरूपेण-अत्यहङ्कारयुक्तेनेत्यर्थः प्रतिकूलं प्रतिकूलेन-अप्रातिकूलेन-विपक्षीभूतेनेत्यर्थः प्रतिलोमप्रतिलोमेन-अतिप्रतिलोमेन-अतिविपरीतेनेत्यर्थः विपर्यासविपर्यासेन अतिविपर्यासेन-सर्वथा विरुद्धेनेत्यर्थः, एतादृशेन व्यवहारेण वर्तसे ॥सू० १४८॥

त्वं जानासि तथापि खलु त्वं मां वामवामेन, दण्डदण्डेन प्रतिकूलप्रतिकूलेन प्रतिलोम प्रतिलोमेन, विपर्यासविपर्यासेन वर्तसे ॥ सू० १४८॥

टीका—"तए णं केसी" इत्यादि—ततः तदनन्तरं खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवम् अवादीत्—कति खलु हे प्रदेशिन् ! त्वं जानासि किं परिषदः—सभाः कति—कतिसंख्यकाः प्रज्ञप्ताः ? । प्रदेशी राजा प्राह—जानामि—परिषदः चतस्रः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—क्षत्रियपरिषत् १, गृहपतिपरिषत् २, ब्राह्मणपरिषत् ३, ऋषिपरिषत् ४ । केशी कुमारश्रमणः पृच्छति—हे प्रदेशिन् ! जानासि खलु

निर्स किसी का भी अपराध करता है वह न अति भ नष्ट यावत्—न अति अकांत, न अति अप्रिय, न अति अमनोज्ञ और न अति अमनाम ऐसी वाणियों द्वारा उपालंभयुक्त किया जाता है. (एवं तो पएसी ! तुम जाणासि—तह वि णं तुम मम वाम वामेणं दंड दंडेणं, पडिकूलं पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं वहसि) हे प्रदेशिन् तुम इस पूर्वोक्त प्रकारवाली नीति को—दंडनीति को—अच्छी तरह से जानते हो फिर भी तुम मेरे प्रतिवामवामरूप से अति विरुद्धव्यवहार से दंडदंडरूप से—दंडवत् स्तब्धरूप व्यवहार से—अति अहंकारयुक्त व्यवहार से, प्रतिकूल प्रतिकूलरूप से और विपक्षी भूत व्यवहार से, प्रतिलोम प्रतिलोम से—अतिविपरीतरूप व्यवहार से और विपर्यास विपर्यास से—सर्वथा विरुद्धरूप व्यवहार से प्रवृत्त हो रहे हो ।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥१४८॥

તેમજ જે ઋષિ પરિષદામાં—ઋષિવર્ગમાં કોઈ પણ ઋષિ અપરાધ કરે છે તે ન અતિ અનિષ્ટ યાવત્ ન અતિ અકાંત ન અતિ અમનોજ્ઞ અને ન અતિ અમન આમ એવી વાણીઓ વડે ઉપાલંભયુક્ત કરવામાં આવે છે (एवं ताव पएसी ! तुम जाणासि—तहा वि णं तुम मम वाम वामेणं दंड दंडेणं पडिकूलं, पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं, विवज्जासं विवज्जासेणं वहसि) હે પ્રદેશિન્ ! તમે આ પૂર્વોક્ત નીતિને—દંડનીતિને—સારી રીતે જાણો છો, છતાં એ તમે મારા પ્રતિ વામ વામરૂપથી—અતિ વિરુદ્ધ વ્યવહારથી દંડ દંડરૂપથી—દંડવત્ સ્તબ્ધરૂપ વ્યવહારથી અતિ અહંકારયુક્ત વ્યવહારથી પ્રતિકૂળ પ્રતિકૂળરૂપથી અતિ વિપક્ષિ વ્યવહારથી પ્રતિલોમ પ્રતિલોમથી—અતિ વિપરીતરૂપ વ્યવહારથી અને વિપર્યાસથી સર્વથા વિરુદ્ધરૂપ વ્યવહારથી પ્રવૃત્ત થઈ રહ્યા છો. ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥ સૂ ૧૪૮ ॥

एतस्य पुरुषस्य वामवामेन यावत् विपर्यासविपर्यासेन वर्तिष्ये तथा तथ खलु अहं ज्ञानं च ज्ञानोपालम्भं च चरणं च चरणोपालम्भं च दर्शनं च दर्शनोपालम्भं च जीवं च जीवोपालम्भं च उपलप्स्ये, तत् एतेनाहं कारणेन देवानुप्रियाणां वामवामेन यावद् विपर्यासविपर्यासेन वर्तितः ॥सू० १४९॥

टीका—'तए णं पएसी' इत्यादि—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणमेवमवादीत्–एव खलु अहं देवानुप्रियैः–भवद्भिः प्राथमिकेनैव–व्याकरणेन–संलापेन, संलपितः–संभाषितः, तदा खलु मम अयमेतद्रूप –

आप मुझ से सर्व प्रथम इस प्रकार से बोले तो मेरे मन में यह इस प्रकार का यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ कि (जहा २ णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेण जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तहा २ णं अहं नाणं च नाणोवलंभ च चरणोलंभ च, दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलंभिस्सामि) मैं जैसा इस पुरुष के साथ वाम वामरूप से यावत्–दण्ड दण्डरूप से, प्रतिकूल प्रतिकूलरूप से प्रतिलोम प्रतिलोमरूप से एवं विपर्यास विपर्यासरूप से व्यवहार करूंगा, वैसा वैसा २ मैं ज्ञान को–पदार्थ ज्ञान को ज्ञानोपालम्भको–ज्ञान की प्राप्ति को, चारित्र को, चारित्रके लाभ को, तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व को, दर्शनलाभ को जीव के स्वरूप को, और जीव के स्वरूपकी प्राप्ति को पा जाऊंगा (तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए) अतः इसी कारण से आप देवानुप्रिय के साथ मैं अतिविरुद्धरूपव्यवहार से यावत् सर्वथा विरुद्धरूप व्यवहार से प्रवर्तित हुआ हूं।

બોલ્યા તે મારા મનમાં આ જાતનો યાવત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે (जहा २ णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेण जाव विवच्चास विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तहा २ णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च चरणं च चरणोवलंभ च, दंसणं च दंसणोवलंभं च जीव च, जीवोवलभं च उवलंभिस्सामि) હું જેમ જેમ આ પુરૂષની સાથે વામ વામ રૂપથી યાવત–દંડ દંડરૂપથી પ્રતિકૂળ પ્રતિકૂળ રૂપથી, પ્રતિલોમ પ્રતિલોમ રૂપથી અને વિપર્યાસ વિપર્યાસરૂપથી વ્યવહાર કરીશ–આચરણ કરીશ તેમ તેમ હું જ્ઞાનને, પદાર્થ જ્ઞાનને, જ્ઞાનોપલભને, જ્ઞાનપ્રાપ્તિને ચારિત્રને, ચારિત્ર લાભને, તત્ત્વાર્થ શ્રદ્ધાનરૂપ સમ્યકત્વને, દર્શનલાભને, જીવના સ્વરૂપને અને જીવના સ્વરૂપની પ્રાપ્તિને મેળવીશ. (तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेण जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए) એટલા માટે આપ દેવાનુપ્રિયની સાથે મેં અતિ વિરૂદ્ધરૂપ વ્યવહારથી યાવત્ સર્વથા વિરૂદ્ધરૂપ વ્યવહારથી પ્રવર્તિત થયો છું

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था—जहा जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि तहा तहा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च चरणं च चरणोवलंभं च दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि, तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवच्चासं ,विवच्चासेणं वट्टिए ॥सू० १४९॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् एवं खलु अहं देवानुप्रियैः प्राथमिकेनैव व्याकरणेन संलपितः तदा ,खलु मम अयमेवं रूप आध्यात्मिकः यावत् संकल्पः समुदपद्यत यथा यथा खलु

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने केसि कुमारसमणं एवं वयासी) केशी कुमारश्रमण से ऐसा कहा-(एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते) हे भदन्त! आप देवानुप्रिय के द्वारा मैं सर्व प्रथम बोला गया हूं अर्थात्-आप देवानुप्रिय! मुझ से सब से पहिले बोले हैं—आप के साथ मेरी यह सब से प्रथम भेंट है, इसके पहिले हमारा आपका कोई मिलन नहीं हुआ है (तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था) अतः अब

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारपछी (पएसी राया) प्रदेशी राजाए (केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं-(एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते) हे भदंत! आप देवानुप्रियवडे हुं आपनी पहेलां बोलावायो छुं एटले के आप देवानुप्रिय! मारी साथे बोली पहेलां बोल्या छो. आपनी साथे आ मारी पहेली मुलाकात छे एना पहेलां आपनी मारी साथे भेट नहोती थई (तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था) एथी त्यारे तमे मारी साथे सर्व प्रथम आ प्रमाणे

एतस्य पुरुषस्य वामवामेन यावद् विपर्यासविपर्यासेन वर्तिष्ये तथा तथ खलु अहं ज्ञानं च ज्ञानोपालम्भं च चरणं च चरणोपालम्भं च दर्शनं च दर्शनोपालम्भं च जीवं च जीवोपालम्भं च उपलप्स्ये. तत एतेनाहं कारणेन देवानुप्रियाणां वामवामेन यावद् विपर्यासविपर्यासेन वर्तितः ॥सू०१४९॥

टीका—'तए णं पएसी' इत्यादि–ततः खलु प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणमेवमवादीत्–एवं खलु अहं देवानुप्रियैः–भवद्भिः प्राथमिकेनैव–व्याकरणेन–संलापेन, संलपितः–संभाषितः, तदा खलु मम अयमेतद्रूप–

आप मुझ से सर्व प्रथम इस प्रकार से बोलेतो मेरे मन में यह इस प्रकार का यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ कि (जहा २ णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेण जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तहा २ णं अहं नाणं च नाणोवलंभ च चरणोलंवभ च. दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलंभिस्सामि) मैं जैसा इस पुरुष के साथ वाम वामरूप से यावत्–दण्ड दण्डरूप से, प्रतिकूल प्रतिकूलरूप से प्रतिलोम प्रतिलोमरूप से एवं विपर्यास विपर्यासरूप से व्यवहार करूंगा, वैसा वैसा २ मैं ज्ञान को–पदार्थ ज्ञान को ज्ञानोपालम्भको–ज्ञान की प्राप्ति को. चारित्र को, चारित्रके लाभ को, तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व को, दर्शनलाभ को जीव के स्वरूप को, और जीव के स्वरूपकी प्राप्ति को पा जाऊंगा (तं एएणं अहं कारणेण देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए) अतः इसी कारण से आप देवानुप्रिय के साथ मैं अतिविरुद्धरूपव्यवहार से यावत सर्वथा विरुद्धरूप व्यवहार से प्रवर्तित हुआ हूं।

બોલ્યા તે મારા મનમાં આ જાતનો યાવત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે (जहा २ णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेण जाव विवच्चास विवच्चासेण वट्टिस्सामि, तहा २ णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च चरणं च चरणोवलंभ च, दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च, जीवोवलंभं च उवलंभिस्सामि) હું જેમ જેમ આ પુરૂષની સાથે વામ વામરૂપથી યાવત–દંડ દંડરૂપથી, પ્રતિકૂળ પ્રતિકૂળરૂપથી, પ્રતિલોમ પ્રતિલોમ રૂપથી અને વિપર્યાસ વિપર્યાસરૂપથી વ્યવહાર કરીશ–આચરણ કરીશ તેમ તેમ હું જ્ઞાનને, પદાર્થ જ્ઞાનને, જ્ઞાનોપલભને, જ્ઞાનપ્રાપ્તિને ચારિત્રને, ચારિત્ર લાભને, તત્ત્વાર્થ શ્રદ્ધાનરૂપ સમ્યકત્વને, દર્શનલાભને, જીવના સ્વરૂપને અને જીવના સ્વરૂપની પ્રાપ્તિને મેળવીશ. (तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेण जाव विवच्चासं विवच्चासेण वट्टिए) એટલા માટે આપ દેવાનુપ્રિયની સાથે મેં અતિ વિરૂદ્ધરૂપ વ્યવહારથી યાવત સર્વથા વિરૂદ્ધરૂપ વ્યવહારથી પ્રવર્તિત થયો છું.

मध्ये मायमकारकः, आध्यात्मिक-आत्मगतो विचारः यावत्-यावच्छब्देन-चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः' इति । ग्राह्यम्; समुत्पन्न-समभवत्, तद्यथा-यथा यथा खलु भदन्त ! एतस्य पुरुषस्य वाम वामेन-प्रतिविरुद्धेन व्यवहारेण 'यावत्-यावच्छब्देन-दक्षिणेन' प्रतिकूल प्रतिकूलेन विपर्यासविपर्यासेन' इति संग्राह्यम्; विपरीत-विपरीतेन' एवा मर्पाऽपूर्वे ह्येतत्पूर्वे गता, वर्तिष्ये तथा तथा खलु अहं ज्ञानं च-पदार्थ ज्ञानं च ज्ञानोपालम्भ-ज्ञानप्राप्तिं च च-पुनः चरणं-चारित्रं चरणोपालम्भ चारित्रलाभं च-पुनः दर्शन-तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं सम्यक्त्वं दर्शनोपालम्भ-दर्शनलाभं च---पुनः---जीवो---जीवस्वरूपं। ---जीवोपालम्भ-जीवस्वरूप प्राप्तिम् उपलप्स्ये-प्राप्स्यामि। तद्, एतेन खलु कारणेन अहं देवानुप्रियाणां मयैतत् वामवामेन-प्रतिविरुद्धेन व्यवहारेण, यावत् विपरीतविपरीतेन-सर्वथाविरुद्धेन व्यवहारेण वर्तितः-प्रतिकूलाचरणादिकं व्यवहारं वर्तितवानिति भावः। ॥ सू० १४० ॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—जाणासि णं ! कइ ववहारगा पण्णत्ता ? हंता ! जाणामि चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता, तं जहा—देइ नामेगे णो सण्णवेइ १, सण्णवेइ नामेगे नो देइ २ । एगे देइ वि सण्णवेइवि ३ । एगे णो देइ णो

टीकार्थ स्पष्ट है इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि प्रदेशी राजाने केशी कुमार श्रमण से अपने द्वारा किये गये प्रतिकूल व्यवहार के प्रति ऐसा कहा है भदन्त ! आप की और हमारी यह प्रथम भेट है इसमें जो आपने मुझसे संभाषण किया-उससे मैने यह निष्कर्ष निकाला कि मैं इनके प्रति जैसा २ उल्टा-विरुद्ध व्यवहारकरूंगा-वैसा २ मुझे इनसे ज्ञान आदि प्राप्त होगा अतः मैने आपके साथ इस प्रकार का व्यवहार किया है ॥ सू० १४० ॥

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને પોતાના વડે આચરેલ પ્રતિકૂળ વ્યવહારને લઈને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે હે ભદંત ! આપની અને મારી આ પહેલી ભેટ છે આમાં જે આપશ્રીએ મારી સાથે સંભાષણ કર્યું તેથી મને નિષ્કર્ષરૂપે આ વાતની પ્રતીતિ થઈ કે હું તમારા પ્રતિ જેમ જેમ વિરુદ્ધ વર્તીશ તેમ તેમ મને તમારાથી જ્ઞાન વગેરેની પ્રાપ્તિ થશે આ કારણથી જ મેં આપની સાથે આ જાતનું આચરણ કર્યું છે ॥સૂ૦૧૪૦॥

सण्णवेइ ४। जाणासि णं तुमं पएसी ? एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अववहारी ? ! हंता ! ! जाणामि तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ सेणं पुरिसे ववहारी, तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी २, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ वि सण्णवेइ वि से पुरिसे ववहारी ३, तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से णं अववहारी ४। एवामेव तुमंपि ववहारी, णो चेव णं तुमं पएसी ! अववहारी ॥सू० १५०॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्—जानासि खलु त्वं प्रदेशिन् ! कति व्यवहारकाः प्रज्ञप्ताः ? । हन्त ! ! जानामि—चत्वारो व्यवहारकाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—ददाति नामैकः नो संज्ञापयति १, संज्ञापयति नामैको नो ददाति २, एको ददाति अपि संज्ञापयति अपि ३,

---

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसी कुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पण्णत्ता ?) हे प्रदेशिन् ! व्यवहार कितने होते हैं. क्या तुम इस बात को जानते हो ? (हंता, जाणामि) हां, भदंत ! जानता हुं (चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता) व्यवहार चार कहे गये हैं। (तं जहा—देइ, नामेगे, णो सण्णवेइ १ सण्णवेइ नामेगे णो देइ २, एगे देइ वि, सण्णवेइ

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (केसीकुमारसमणे) केशी कुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं-(जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पण्णत्ता ?) हे प्रदेशिन् ! शुं तमे जाणो छो के व्यवहार केटली जातना होय छे ? (हंता, जाणामि) हा, भदंत ! जाणुं छुं (चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता) व्यवहार चार कहेवाय छे. (तं जहा देइ, नामेगे, णो सण्णवेइ १, सण्णवेइ नामेगे णो देइ २, एगे देइ वि, सण्णवेइ वि ३, एगे

एको नो ददाति नो वा संलापयति ४। जानासि त्वं प्रदेशिन्! एतेषां चतुर्णां पुरुषाणां को व्यवहारी? कोऽव्यवहारी? हन्त! जानामि। तत्र खलु यः स पुरुषो ददाति नो वा संलापयति स खलु पुरुषो व्यवहारी। तत्र खलु यः स पुरुषो नो ददाति संलापयति स खलु पुरुषो व्यवहारी। तत्र खलु यः स पुरुषो ददाति संलापयति स पुरुषो व्यवहारी। तत्र खलु

ति ३, एगे णो दए णो सण्णवइ ४, जो इस प्रकार से है-एक, कोई पुरुष किसी वस्तु को किसी के लिये देता तो है पर उसके साथ वह मिष्ट भाषण द्वारा अच्छा संतोषप्रदव्यवहार नहीं करता है १, एक पुरुष मिष्ट भाषण द्वारा दूसरे के प्रति संतोषप्रद व्यवहार तो करता है परन्तु देता कुछ भी नहीं है २, एक पुरुष देता भी है और लेने वाले के प्रति मिष्टवचनद्वारा संतोषप्रद व्यवहार भी करता है ३, एक पुरुष ऐसा होता है जो न देता है और न मिष्टवचन द्वारा संतोषप्रद व्यवहार ही करता है ४, (जाणासि णं तुमं पएसी! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी? के अव्ववहारी?) केशी श्रमणने प्रदेशी से पूछा-हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो इन चार व्यवहारी पुरुषों के बीच में कौन व्यवहारी है और कौन अव्यवहारी है? तब प्रदेशीने केशिकुमार श्रमण से कहा-(हंता, जाणामि-तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवइ से णं पुरिसे ववहारी?) हां, जानता हूं, इनमें जो पुरुष देता है और सम्यग् भाषण से संतोष उत्पन्न नहीं कराता है वह पुरुष व्यवहारी कहा जाता है (तत्थ णं जे से पुरिसे णो

णो देइ णो सण्णवइ ४) जे आ प्रमाणे छे एक माणस कोई वस्तु कोईने आपे तो छे पण तेनी साथे ते मिष्ट संभाषणथी अत्यंत संतोषप्रद व्यवहार करतो नथी १ एक माणस मिष्ट भाषणथी बीजानी साथे संतोषप्रद व्यवहार तो करे छे पण आपतो कई नथी २, एक माणस आपे पण छे अने लेनार माणसने मिष्ट वचनो वडे संतोष पण आपे छे ३, एक माणस एवो पण होय छे के जे कई पण आपतो नथी अने मिष्ट वचनोथी संतोषजनक व्यवहार पण करतो नथी (जाणासि तुमं पएसी! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अववहारी?) केशीश्रमणे प्रदेशीने प्रश्न कर्यो के हे प्रदेशिन्! तमे जाणो छो के आ चार व्यवहारी छे? त्यारे प्रदेशीए कह्युं (हंता, जाणामि, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ स णं पुरिसे ववहारी?) हा, जाणुं छुं जे माणस आपे छे अने सारा वचनोथी संतोष आपतो नथी ते पुरुष व्यवहारी कहे वाय छे (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ स णं पुरिसे ववहारी?)

यः स पुरुषो- नो ददाति नो संज्ञापयति स खलु अव्यवहारी। एवमेव त्वमपि व्यवहारी, नो चैव खलु त्वं प्रदेशिन्! अव्यवहारी ॥सू० १५०॥

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि—ततः—अनन्तरोक्तप्रकारेण वक्तनानन्तरं खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—

देइ सण्णवेइ से ण पुरिसे ववहारी२) तथा जो पुरुष देता नहीं है किन्तु सम्यग् आलाप से संतोष उत्पन्न करता है वह पुरुष व्यवहारी है। (तत्थ णं जे से पुरिसे देइ वि, सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी३) तथा जो पुरुष देता भी है और सम्यक् आलाप द्वारा संतोष भी उत्पन्न कराता है वह पुरुष व्यवहारी है। (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से पुरिसे से णं अववहारी) तथा जो पुरुष न देता है और न सम्यक् संभाषण द्वारा संतोष उत्पन्न करता है वह पुरुष अव्यवहारी है। (एवामेव तुमं पि ववहारी णो चेव णं तुमं पएसी! अववहारी) इसी तरह से अर्थात् भङ्गत्रयोक्त पुरुष, के बीच में एक भंग विशेष की तरह हे प्रदेशिन्! तुम भी व्यवहारी हो, चतुर्थ भङ्गोक्त पुरुष की तरह तुम अव्यवहारी नहीं हो—तात्पर्य कहने का यह है कि यद्यपि हे प्रदेशिन्! तुमने सम्यक् आलाप द्वारा सन्तुष्ट कर मुझसे व्यवहार नहीं किया है—फिर भी मेरे विषय में भक्ति और बहुमान तो किया ही है—अतः तुम आद्यभङ्गोक्त पुरुष की तरह व्यवहारी ही हो—अव्यवहारी नहीं हो।

તેમજ જે પુરૂષ આવતો નથી પણ સારા સંભાષણથી સંતોષ ઉત્પન્ન કરે છે તે વ્યવહારી છે. (तत्थ णं जे से पुरिसे देइ, वि, सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी,३) તેમજ જે પુરૂષ આપે પણ છે અને સમ્યક આલાપવડે સંતોષ પણ ઉત્પન્ન કરે છે તે પુરૂષ વ્યવહારી છે. (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से पुरिसे णं अववहारी) તેમજ જે પુરૂષ આપતો નથી તેમજ સમ્યક આલાપ પણ કરતો નથી એટલે કે સારા સંભાષણથી સંતોષ ઉત્પન્ન કરતો નથી તે પુરુષ અવ્યવહારી છે. (एवामेव तुमं पि ववहारी णो चेव णं तुमं पएसी! अववहारी) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ તમે પણ વ્યવહારી છો.

ચતુર્થ ભંગમા કહ્યા મુજબ તમે અવ્યવહારી નથી. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે હે પ્રદેશિન્! તમોએ સમ્યક્ આલાપરૂપ સારો વ્યવહાર મારી સાથે કર્યો નથી છતાંએ મારા વિષયમા ભકિત અને બહુમાન તો તમે કર્યા છે એથી તમે આદ્યભંગોકત પુરૂષની જેમ વ્યવહારી જ છો. અવ્યવહારી નથી.

एको नो ददाति नो च ज्ञापयति ४। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतेषां चतुर्णां पुरुषाणां को व्यवहारी? कोऽव्यवहारी? हन्त!! जानामि। तत्र खलु यः स पुरुषो ददाति नो संज्ञापयति स खलु पुरुषो व्यवहारी। तत्र खलु यः स पुरुषो नो ददाति संज्ञापयति स खलु पुरुषो व्यवहारी। तत्र खलु यः स पुरुषो ददात्यपि संज्ञापयत्यपि स पुरुषो व्यवहारी। तत्र खलु

वि ३, एगे णो दइ णो सण्णवेइ ४, जो इस प्रकार से है-एक कोई पुरुष किसी वस्तु को किसी के लिये देता तो है पर उसके साथ वह मिष्ट भाषण द्वारा अच्छा सतोषप्रद व्यवहार नहीं करता है १, एक पुरुष मिष्ट भाषण द्वारा दूसरे के प्रति सतोषप्रद व्यवहार तो करता है परन्तु देता कुछ भी नहीं है २, एक पुरुष देता भी है और लेने वाले के प्रति मिष्टवचनद्वारा सतोषप्रद व्यवहार भी करता है ३ एक पुरुष ऐसा होता है जो न देता है और न मिष्टवचन द्वारा सतोषप्रद व्यवहार ही करता है ४, (जाणासि णं तुमं पएसी! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अववहारी?) केशी ने प्रदेशी से पूछा–हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो इन चार व्यवहारी पुरुषों के बीच में कौन व्यवहारी है, और कौन अव्यवहारी है? तब प्रदेशीने केशिकुमार श्रमण से कहा–(हंता, जाणामि–तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी) हां, जानता हूं, इनमें जो पुरुष देता है और सम्यक् आलाप से, सतोष उत्पन्न नहीं कराता है वह पुरुष व्यवहारी कहा जाता है (तत्थ णं जे से पुरिसे णो

णो देइ णो सण्णवेइ ४) જે આ પ્રમાણે છે. એક માણસ કોઈ પણ વસ્તુ કોઈને આપે તો છે પણ તેની સાથે તે મિષ્ટ સંભાષણવડે અચ્છો સતોષપ્રદ વ્યવહાર કરતો નથી ૧ એક માણસ મિષ્ટ ભાષણવડે બીજાની સાથે સતોષપ્રદ વ્યવહાર તો કરે છે પણ આપતો કંઈ નથી ૨ એક માણસ આપે પણ છે અને લેનાર માણસને મિષ્ટ વચનો વડે સંતોષ પણ આપે છે. ૩, એક માણસ એવો પણ હોય છે કે જે કંઈ પણ આપતો નથી અને મિષ્ટ વચનોથી સતોષજનક વ્યવહાર પણ કરતો નથી (जाणासि तुमं पएसी! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अववहारी?) કેશીએ પ્રદેશીને પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્! તમે જાણો છો કે આ ચાર વ્યવહારી છે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું. (हंता, जाणामि, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी?) હા, જાણું છું આમાં જે માણસ આપે છે અને સારા વચનોથી સતોષ આપતો નથી તે પુરુષ વ્યવહારી કહેવાય છે (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी २)

यः स पुरुषो- नो ददाति नो संज्ञापयति स खलु अव्यवहारी। एवमेव त्वमपि व्यवहारी, नो चैव खलु त्वं प्रदेशिन्! अव्यवहारी ॥सू० १५०॥

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि—ततः—अनन्तरोक्तप्रकारेण वर्त्तनानन्तरं खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—

देइ सण्णवेइ से ण पुरिसे ववहारी२) तथा जो पुरुष देता नहीं है किन्तु सम्यग् आलाप से संतोप उत्पन्न करता है वह पुरुष व्यवहारी है। (तत्थ णं जे से पुरिसे देइ वि, सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी३) तथा जो पुरुष देता भी है और सम्यक् आलाप द्वारा संतोप भी उत्पन्न कराता है वह पुरुष व्यवहारी है। (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से पुरिसे से णं अववहारी) तथा जो पुरुष न देता है और न सम्यक् संभाषण द्वारा संतोष उत्पन्न करता है वह पुरुष अव्यवहारी है। (एवामेव तुम पि ववहारी णो चेव णं तुमं पएसी! अववहारी) इसी तरह से अर्थात् भङ्गत्रयोक्त पुरुष, के बीच में एक भंग विशेष की तरह हे प्रदेशिन्! तुम भी व्यवहारी हो, चतुर्थ भङ्गोक्त पुरुष की तरह तुम अव्यवहारी नहीं हो—तात्पर्य कहने का यह है कि यद्यपि हे प्रदेशिन्! तुमने सम्यक् आलाप द्वारा सन्तुष्ट कर मुझसे व्यवहार नहीं किया है—फिर भी मेरे विषय में भक्ति और बहुमान तो किया ही है—अतः तुम आद्यभङ्गोक्त पुरुष की तरह व्यवहारी ही हो—अव्यवहारी नहीं हो।

તેમજ જે પુરૂષ આપતો નથી પણ સારા સભાષણથી સતોષ ઉત્પન્ન કરે છે તે વ્યવહારી છે. (तत्थ णं जे से पुरिसे देइ, वि, सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी,३) તેમજ જે પુરૂષ આપે પણ છે અને સમ્યક આલાપવડે સતોષ પણ ઉત્પન્ન કરે છે તે પુરૂષ વ્યવહારી છે. (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से पुरिसे णं अववहारी) તેમજ જે પુરૂષ આપતો નથી તેમજ સમ્યક આલાપ પણ કરતો નથી એટલે કે સારા સભાષણથી સંતોષ ઉત્પન્ન કરતો નથી તે પુરુષ અવ્યવહારી છે. (एवामेव तुमं पि ववहारी णो चेव णं तुमं पएसी! अववहारी) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ તમે પણ વ્યવહારી છો.

ચતુર્થ ભગમા કહ્યા મુજબ તમે અવ્યવહારી નથી. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે હે પ્રદેશિન્! તમોએ સમ્યક્ આલાપરૂપ સારો વ્યવહાર મારી સાથે કર્યો નથી છતાંએ મારા વિષયમા ભક્તિ અને બહુમાન તો તમે કર્યા છે એથી તમે આદ્યભંગોક્ત પુરૂષની જેમ વ્યવહારી જ છો. અવ્યવહારી નથી.

हे प्रदेशिन् त्वं जानासि खलु यत् कति-कियन्तो व्यवहारका-व्यवहारा:-मनुष्यैः प्रज्ञप्ता ?" इति प्रश्नानन्तरं प्रदेशी प्राह-हन्त ! जानामि, तत्र ज्ञायमानविषय प्रकाशयति-चत्वार -चतुः स ख्यकाः व्यवहाराः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-एकः-कश्चित् पुरुषः ददाति-किञ्चिद् वस्तु कस्मैचित् समर्पयति किन्तु न स ज्ञापयति-सम्यगालापेन संतोष नोत्पादयति १। एकः संज्ञापयति किंतु नो ददाति २। एको ददात्यपि संज्ञापयत्यपि ३। एको नो ददाति नो संज्ञापयति ४। इति चत्वारो भङ्गाः। तत्र केशी प्रदेशिनं पृच्छति-हे प्रदेशिन् ! त्वं जानासि खलु एतेषां चतुर्णां पुरुषाणां दान-तद् संज्ञापनं १-संज्ञापनाऽदान २-दानसंज्ञापनोभय ३-तदुभयराहित्यरूप ४ वृत्तिसम्पन्नानां मध्ये कः पुरुषो व्यवहारी ? इति जानासि ? इति प्रश्ने प्रदेशी प्राह-हन्त ! जानामि-तदेव दर्शयति "तत्थ णं" इत्यादिना-तत्र-भङ्गचतुष्ये खलु यः सः-प्रथमभङ्गोक्त पुरुषः 'ददाति नो संज्ञापयति', सः-दान-तदसंज्ञापनसम्पन्नः स्वल्प पुरुषः व्यवहारी कथ्यते १। एवं तत्र खलु यः सः-द्वितीयभङ्गोक्तः, 'नो ददाति, नो संज्ञापयति'-संज्ञापनाऽदानसम्प

टीकार्थ—अब केशिकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा पूछा कि हे प्रदेशिन् ! तुम जानते हो कि व्यवहार कितने प्रकार का होता है ? इस प्रकार से पूछने का कारण यह हुआ कि प्रदेशी राजाने १४९वें सूत्र में अपने द्वारा कृतव्यवहार के विषय में सफाई उपस्थित की है केशीकुमारश्रमण के प्रश्न को सुनकर उसने कहा हां, भदन्त ! जानता हूं व्यवहार चार प्रकार का होता है एक व्यवहार में देनेवाला पुरुष किसी के लिये कोई वस्तु देता है परन्तु अपने सम्यक् आलाप से-बातचीत से वह उसके लिये संताप उत्पन्न नहीं कराता है, दूसरे व्यवहार में देनेवाला

ટીકાર્થ—ત્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્ ! તમે જાણો છો કે વ્યવહાર કેટલા પ્રકારનો હોય છે ? આ પ્રમાણે જે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ એ છે કે પ્રદેશી રાજાએ ૧૪૯ મા સૂત્રમાં જે અવતું આચરણ કર્યું છે તેના સંબંધમાં સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે. કેશી કુમાર શ્રમણના પ્રશ્નને સાંભળીને તેણે કહ્યું હાં ભદન્ત ! જાણું છું વ્યવહાર ચાર પ્રકારનો હોય છે પ્રથમ વ્યવહારમાં દાનકર્તા પુરુષ કોઇના માટે કોઇ વસ્તુ આપે છે, પણ પોતાના સમ્યક્ આલાપથી-સારી મીઠી વાતચીતથી તે સામેના માણસને સંતોષ આપતો નથી દ્વિતીય વ્યવહારમાં દાનકર્તા પુરુષ પોતાની મીઠી વાણીથી બીજાને

न्नः सः खलु पुरुषो व्यवहारी २, एव तत्र यः सः तृतीयभङ्गोक्तः पुरुषः ददात्यपि संज्ञापयत्यपि' सः-दान-तत्संज्ञापनसम्पन्नः पुरुषो व्यवहारी ३।

पुरुष अपनी मिष्ट भाषणरूप प्रवृत्ति से दूसरे को संतोष तो उत्पन्न करा देता है, परन्तु अपनी वस्तु उसे देता नहीं है. तृतीय व्यवहार में देने-वाला अपनी वस्तु दे भी देता है और अपनी मिष्ट भाषणरूप प्रवृत्ति से उसे संतोष भी उत्पन्न करदेता है, चतुर्थ व्यवहार में-कोई देता भी नहीं है और सतोप भी उत्पन्न नही कराता है. इस प्रकार ये चार भङ्ग हैं। इन में केशीकुमारश्रमण प्रदेशी राजा से पूछते हैं-हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो कि इन चार-दान-तदसंज्ञापन, संज्ञापन दाने संज्ञापन उभय एवं तदुभय रहितरूप वृत्तिसंपन्न पुरुषों के मध्य में कौन पुरुष व्यवहारी है? तब प्रदेशीने कहा हां, भदन्त! जानता हूं, इस भङ्गचतुष्टय में जो प्रथम भङ्गोक्त पुरुष है-देता तो है मिष्टभाषण द्वारा संतोष उत्पन्न नहीं कराता है-वह दान तदसंज्ञापन सम्पन्न पुरुष व्यवहारी कहा जाता हैं अर्थात जो 'ददाति नो संज्ञापयति' इस भंगवाला है वह व्यवहारी है इसी तरह जो द्वितीयभङ्ग में कहा गया है सज्ञापयति, नो ददाति' वह संज्ञापना अदान संपन्नपुरुष व्यवहारी है. इसी प्रकार जो तृतीय भंग में कहा गया है 'ददात्यपि' संज्ञापयत्यपि' ऐसा वह दान तत्सज्ञासम्पन्न पुरुष व्यवहारी

સતોષ આપી દે છે પણ પોતાની વસ્તુ સામેવાળા માણસને આપતો નથી. તૃતીય વ્યવહારમા દાનકર્તા પોતાની વસ્તુ આપી પણ દે છે અને પોતાની મધુર ભાષણરૂપ પ્રવૃત્તિથી તે સામેના માણસને સંતુષ્ટ પણ કરી દે છે. ચતુર્થ વ્યવહારમાં તે કોઇ પણ વસ્તુ યાચકને આપતો પણ નથી અને મધુર સંલાપથી સામેના માણસને સંતુષ્ટ પણ કરતો નથી. આ પ્રમાણે આ ચાર ભંગ છે. એના સંબંધમા કેશી કુમારશ્રમણ પ્રદેશી રાજાને પ્રશ્ન કરે છે કે હે પ્રદેશિન્! તમે જાણો છો કે આ ચાર-દાન તદ-સંજ્ઞાપન, સજ્ઞાપન, દાને સજ્ઞાપન ઉભય અને તદુભવ રહિતરૂપ વૃત્તિ સંપન્ન પુરૂષોમા કોણ વ્યવહારી છે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ-હા ભદત! જાણુ છું. આ ભંગ ચતુષ્ટયમાં જે પ્રથમ ભગોક્ત પુરૂષ છે-તે આપે તો છે પણ મિષ્ટ ભાષણવડે સંતોષ ઉત્પન્ન કરતો નથી તે દાન તદસજ્ઞાપન સમ્પન્ન પુરૂષ વ્યવહારી કહેવાય છે. એટલે કે જે 'ददाति नो संज्ञापयति' આ ભગવાળો છે તે વ્યવહારી છે આ પ્રમાણે જે દ્વિતીય ભગ કહેલ છે 'संज्ञापयति, नो ददाति' તે સજ્ઞાપના અદાન સંપન્ન પુરુષ વ્યવહારી છે. આ પ્રમાણે જે તૃતીય ભગમા કહેલ છે-'ददात्यपि संज्ञाप-यत्यपि' એવો તે દાન તત્સજ્ઞાપના સમ્પન્ન પુરૂષ વ્યવહારી છે પણ જે ચતુર્થ

हे प्रदेशिन् त्वं जानासि खलु यत् कति-कियन्तो व्यवहारकाः-व्यवहारिणः-प्रवृत्तयः प्रज्ञप्ताः ?" इति प्रश्नानन्तरं प्रदेशी प्राह-हन्त ! जानामि, तत्र ज्ञायमानविषयं प्रकाशयति-चत्वारः-चतुः स्वरूपकाः व्यवहाराः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-एकः-कश्चित् पुरुषः ददाति-किञ्चिद् वस्तु कस्मैचित् समर्पयति किन्तु न संज्ञापयति-सम्यगालापेन सन्तोषं नोत्पादयति १। एकः संज्ञापयति किंतु नो ददाति २। एको ददात्यपि संज्ञापयत्यपि ३। एको नो ददाति नो संज्ञापयति ४। इति चत्वारो भङ्गाः। तत्र केशी प्रदेशिनं पृच्छति-हे प्रदेशिन्! त्वं जानासि खलु एतेषां चतुर्णां पुरुषाणां दान-असंज्ञापनं १-संज्ञापनाऽदानं २-दानसंज्ञापनोभयं ३-तदुभयराहित्यरूपं ४ वृत्तिसम्पन्नानां मध्ये कः पुरुषो व्यवहारी ? इति जानासि ? इति प्रश्ने प्रदेशी प्राह-हन्त ! जानामि-तदेव दर्शयति "तत्थ ण" इत्यादिना-तत्र-भङ्गचतुष्टये खलु यः सः-प्रथमभङ्गोक्त पुरुषः 'ददाति नो संज्ञापयति', सः-दान-असंज्ञापनसम्पन्नः खलु पुरुषः व्यवहारी कथ्यते १। एवं तत्र खलु यः सः-द्वितीयभङ्गोक्तः, 'नो ददाति नो संज्ञापयति'-संज्ञापनाऽदानसम्प

टीकार्थ—अब केशिकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा पूछा कि हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो कि व्यवहार कितने प्रकार का होता है? इस प्रकार से पूछने का कारण यह हुआ कि प्रदेशी राजाने १४९वे सूत्र में अपने द्वारा कृतव्यवहार के विषय में सफाई उपस्थित की है केशीकुमारश्रमण के प्रश्न को सुनकर उसने कहा हां, भदन्त! जानता हूं व्यवहार चार प्रकार का होता है एक व्यवहार में देनेवाला पुरुष किसी के लिये कोई वस्तु देता है परन्तु अपने सम्यक् आलाप से-बातचीत से वह उसके लिये संतोष उत्पन्न नहीं कराता है, दूसरे व्यवहार में देनेवाला

ટીકાર્થ—ત્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્! તમે જાણો છો કે વ્યવહાર કેટલા પ્રકારનો હોય છે? આ પ્રમાણે જે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ એ છે કે પ્રદેશી રાજાએ ૧૪૯ મા સૂત્રમાં જે પોતાનું આચરણ કર્યું છે તેના સંબંધમાં સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે. કેશી કુમાર શ્રમણના પ્રશ્નને સાંભળીને તેણે કહ્યું હાં ભદંત! જાણું છું વ્યવહાર ચાર પ્રકારનો હોય છે. પ્રથમ વ્યવહારમાં દાનકર્તા પુરુષ કોઈના માટે કોઈ વસ્તુ આપે છે, પણ પોતાના સમ્યક્ આલાપથી-સારી મીઠી વાતચીતથી તે સામેના માણસને સંતોષ આપતો નથી દ્વિતીય વ્યવહારમાં દાનકર્તા પુરુષ પોતાની મીઠી વાણીથી બીજાને

न्नः सः खलु पुरुषो व्यवहारी २, एव तत्र यः सः तृतीयभङ्गोक्तः पुरुषः दद्रात्यपि संज्ञापयत्यपि' सः-दान-तत्संज्ञापनसम्पन्नः पुरुषो व्यवहारी ३।

पुरुष अपनी मिष्ट भाषणरूप प्रवृत्ति से दूसरे को संतोष तो उत्पन्न करा देता है, परन्तु अपनी वस्तु उसे देता नहीं है. तृतीय व्यवहार में देने-वाला अपनी वस्तु दे भी देता है और अपनी मिष्ट भाषणरूप प्रवृत्ति से उसे संतोष भी उत्पन्न करदेता है, चतुर्थ व्यवहार में-कोई देता भी नहीं है और संतोष भी उत्पन्न नही कराता है. इस प्रकार ये चार भङ्ग हैं। इन में केशीकुमारश्रमण प्रदेशी राजा से पूछते हैं-हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो कि इन चार-दान-तदसंज्ञापन, संज्ञापन दाने संज्ञापन उभय एवं तदुभय रहितरूप वृत्तिसंपन्न पुरुषों के मध्य में कौन पुरुष व्यवहारी है? तब प्रदेशीने कहा हां, भदन्त! जानता हूं, इस भङ्गचतुष्टय में जो प्रथम भङ्गोक्त पुरुष है-देता तो है मिष्टभाषण द्वारा संतोष उत्पन्न नहीं कराता है-वह दान तदसंज्ञापन सम्पन्न पुरुष व्यवहारी कहा जाता है अर्थात जो 'ददाति नो संज्ञापयति' इस भंगवाला है वह व्यवहारी है इसी तरह जो द्वितीयभङ्ग में कहा गया है संज्ञापयति, नो ददाति' वह संज्ञापना अदान संपन्नपुरुष व्यवहारी है. इसी प्रकार जो तृतीय भंग में कहा गया है 'ददात्यपि' संज्ञापयत्यपि' ऐसा वह दान तत्संज्ञासम्पन्न पुरुष व्यवहारी

સંતોષ આપી દે છે પણ પોતાની વસ્તુ સામેવાળા માણસને આપતો નથી. તૃતીય વ્યવહારમા દાનકર્તા પોતાની વસ્તુ આપી પણ દે છે અને પોતાની મધુર ભાષણરૂપ પ્રવૃત્તિથી તે સામેના માણસને સંતુષ્ટ પણ કરી દે છે. ચતુર્થ વ્યવહારમાં તે કોઇ પણ વસ્તુ યાચકને આપતો પણ નથી અને મધુર સંલાપથી સામેના માણસને સંતુષ્ટ પણ કરતો નથી. આ પ્રમાણે આ ચાર ભંગ છે એના સંબંધમા કેશી કુમારશ્રમણ પ્રદેશી રાજાને પ્રશ્ન કરે છે કે હે પ્રદેશિન્! તમે જાણો છો કે આ ચાર-દાન તદ-સંજ્ઞાપન, સંજ્ઞાપન, દાને સંજ્ઞાપન ઉભય અને તદુભવ રહિતરૂપ વૃત્તિ સંપન્ન પુરૂષોમા કોણ વ્યવહારી છે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ-હા ભદંત! જાણું છું. આ ભંગ ચતુષ્ટયમા જે પ્રથમ ભંગોકત પુરૂષ છે-તે આપે તો છે પણ મિષ્ટ ભાષણવડે સંતોષ ઉત્પન્ન કરતો નથી તે દાન તદસંજ્ઞાપન સમ્પન્ન પુરૂષ વ્યવહારી કહેવાય છે. એટલે કે જે 'ददाति नो संज्ञापयति' આ ભંગવાળો છે તે વ્યવહારી છે આ પ્રમાણે જે દ્વિતીય ભંગ કહેલ છે 'संज्ञापयति, नो ददाति' તે સંજ્ઞાપના અદાન સંપન્ન પુરુષ વ્યવહારી છે. આ પ્રમાણે જે તૃતીય ભંગમા કહેલ છે-'ददात्यपि संज्ञाप-यत्यपि' એવો તે દાન તત્સંજ્ઞાપના સમ્પન્ન પુરૂષ વ્યવહારી છે પણ જે ચતુર્થ

तत्र खलु यः स-चतुर्थभङ्गोक्तः पुरुषः नो ददाति नो संज्ञापयति, सः-आदानासंज्ञापनोभयसम्पन्नः पुरुषः उभयविधव्यवहाररहिततया अव्यवहारी। एवमेव-भङ्गचतुष्कोक्तपुरुषाणां मध्ये एकभङ्गविशेषवदेव हे प्रदेशिन्! त्वं न खलु अव्यवहारी चतुर्थभङ्गोक्तपुरुषवत् नो एव-असि। यद्यपि त्वं सम्यगालापेन मां सतोषं न करोषि, तथापि मम विषये भक्ति-बहुमानं च करोषि अतस्त्वमाद्यभङ्गोक्तपुरुषवद् व्यवहारी न त्वव्यवहारीति भावः॥सू० १५०॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते! अइच्छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा, समत्था णं भंते! मम करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए?

[तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते, तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ, फंदइ घट्टइ उदीरइ तं तं भावं परिणमइ, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—पाससि णं तुमं पएसिराया! एयं तणवणस्सइ एयंत

है. परन्तु जो चतुर्थ भंगोक्त पुरुष है 'नो ददाति नो संज्ञापयति' वह आदान असंज्ञापनारूप उभयवृत्ति सपन्न पुरुष उभयविध व्यवहार रहित होने के कारण अव्यवहारी है। इसी तरह से हे प्रदेशिन्! इन चार भंगों में कहे गये पुरुषों के बीच में एक भङ्गाश्रय पुरुष विशेष की तरह तुम भी हो चतुर्थ भङ्गोक्त पुरुष की तरह अव्यवहारी नहीं हो यद्यपि तुमने सम्यक् आलाप द्वारा मुझे संतोष उत्पन्न कराकर प्रवृत्तिरूप व्यवहार नहीं किया है फिर भी मेरे विषय में भक्ति और बहुमान तो किया ही है इसलिये तुम, आद्यभङ्गोक्त पुरुष की तरह व्यवहारी ही हो, अव्यवहारी नहीं हो ॥सू० १५०॥

भंगोक्त पुरुष छे 'नो ददाति नो संज्ञापयति' ते आदान असंज्ञापना रूप उभयवृत्ति संपन्न पुरुष उभयविध व्यवहार रहित होवाथी अव्यवहारी छे। आ प्रमाणे हे प्रदेशिन्! आ चार भंगोमां कहेल पुरुषोमां प्रथम भंगोक्त पुरुष विशेषनी जेम तमे पण छो चतुर्थ भंगोक्त पुरुषनी जेम तमे अव्यवहारी नथी. तमे सम्यक् आलापद्वारा मने संतोष आपीने प्रवृत्तिरूप व्यवहार कर्यो नथी छतांए मारा विषयमां भक्ति अने बहुमान तो तमोए कर्यां ज छे. एथी तमे आद्य भंगोक्त पुरुषनी जेम व्यवहारी ज छो अव्यवहारी नथी ॥सू० १५०॥

जाव त त भाव परिणमंत? हंता! पासामि। जाणासि णं तुमं पएसी! एय तणवणस्सइं कायं कि देवो चालेइ असुरो वा चालेइ णागो चालेइ किंनरो वा चालेइ किंपुरिसो वा चालेइ महोरगो वा चालेइ गंधव्वो वा चालेइ? हंता जाणासि–णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ। वाउकाए चालेइ पाससि णं तुमं पएसी! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं?। णो इणट्ठे समट्ठे। जइ णं तुमं पएसिराया! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कह णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि?। एवं खलु पएसी! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा–धम्मत्थिकायं १, अधम्मत्थिकायं २, आगासत्थिकायं ३, जीवं असरीरवद्धं ४, परमाणुपोग्गलं ५, सद्दं ६, गंधं ७, वायं ८ अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ ९, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा नो वा करिस्सइ १०। एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो तं चेव? ।सू१५१।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्–यूय खलु भदन्त! अतिच्छेकाः दक्षाः यावत् उपदेशलब्धाः समर्थाः खलु भदन्त!

'तएणं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशीने (केसिकुमारसमण एव वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा–(तुब्भे णं भंते! अइच्छेया

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

(सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (पएसी राया) प्रदेशी राजाએ (केसिकुमार समणं एव वयासी) કેશી કુમાર શ્રમણ ને આ પ્રમાણે કહ્યું–(तुब्भे णं भंते!

तत्र खलु यः स चतुर्थभङ्गोक्तः पुरुषः 'नो ददाति नो संज्ञापयति' स-आदानसंज्ञापनाभयसम्पन्नः पुरुषः उभयविधव्यवहाररहिततया अव्यवहारी। एवमेव-भङ्गचतुष्कोक्तपुरुषाणां मध्ये प्रथमभङ्गविशिष्टवत् त्वं हे प्रदेशिन्! त्वं खलु अव्यवहारी चतुर्थभङ्गोक्तपुरुषवत् नो भवसि। यद्यपि त्वं सम्यगालापेन मां सन्तोष्य न वर्तसे, तथापि मम विषये भक्ति-बहुमानं च करोषि अतस्त्वमाद्यभङ्गोक्तपुरुषवद् व्यवहारी न त्वव्यवहारीति भावः॥सू० १५०॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते! अइच्छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा, समत्था णं भंते! मम करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए?

तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते, तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ, फंदइ घट्टइ उदीरइ तं तं भावं परिणमइ, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—पाससि णं तुमं पएसिराया! एयं तणवणस्सइं एयंतं

है परन्तु जो चतुर्थ भंगोक्तपुरुष है 'नो ददाति नो संज्ञापयति' वह आदान प्रसंज्ञापनारूप उभयवृत्ति संपन्न पुरुष उभयविधव्यवहार रहित होने के कारण अव्यवहारी है। इसी तरह से हे प्रदेशिन्! इन चार भंगों में कहे गये पुरुषों के बीच में प्रथमभंगोक्त पुरुष विशेष की तरह तुम भी हो चतुर्थ भंगोक्त पुरुष की तरह अव्यवहारी नहीं हो यद्यपि तुमने सम्यक् आलाप द्वारा मुझे संतोष उत्पन्न कराकर प्रवृत्तिरूप व्यवहार नहीं किया है फिर भी मेरे विषय में भक्ति और बहुमान तो किया ही है इसलिये तुम, आद्यभंगोक्त पुरुष की तरह व्यवहारी ही हो, अव्यवहारी नहीं हो ॥सू० १५०॥

ભંગોક્ત પુરુષ છે 'નો દદાતિ નો સંજ્ઞાપયતિ' તે આદાન અને સંજ્ઞાપના રૂપ ઉભયવૃત્તિ સંપન્ન પુરુષ ઉભયવિધ વ્યવહાર રહિત હોવાથી અવ્યવહારી છે. આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! આ ચાર ભંગોમાં કહેલ પુરુષોમાં પ્રથમ ભંગોક્ત પુરુષ વિશેષની જેમ તમે પણ છો. ચતુર્થ ભંગોક્ત પુરુષની જેમ તમે અવ્યવહારી નથી. તમે સમ્યક્ આલાપ દ્વારા મને સંતોષ આપીને પ્રવૃત્તિરૂપ વ્યવહાર કર્યો નથી છતાંએ મારા વિષયમાં ભક્તિ અને બહુમાન તો તમોએ કર્યો જ છે. એથી તમે આદ્ય ભંગોક્ત પુરુષની જેમ વ્યવહારી જ છો, અવ્યવહારી નથી. ॥સૂ૦ ૧૫૦॥

जाव तं तं भाव परिणमंत ? हंता ! ! पासामि । जाणासि णं तुमं पएसी ! एयं तणवणस्सइं कायं किं देवो चालेइ असुरो वा चालेइ णागो चालेइ किन्नरो वा चालेइ किंपुरिसो वा चालेइ महोरगो वा चालेइ गंधव्वो वा चालेइ ? हंता जाणामि–णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ। वाउकाए चालेइ पाससि णं तुमं पएसी ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूव ?। णो इणट्ठे समट्ठे । जइ णं तुमं पएसिराया ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कह णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि ?। एवं खलु पएसी ! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा–धम्मत्थिकायं १, अधम्मत्थिकायं२, आगासत्थिकायं३, जीवं असरीरबद्धं४, परमाणुपोग्गलं५, सद्दं६, गंधं७, वायं अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ९, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा नो वा करिस्सइ १०। एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो तं चेव? ।सू१५१।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्–यूयं खलु भदन्त ! अतिच्छेकाः दक्षाः यावत् उपदेशलब्धाः समर्थाः खलु भदन्त !

'तएणं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ––(तए णं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशीने (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा–(तुब्भे णं भंते ! अइच्छेया

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

(सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (पएसी राया) प्रदेशी राजाએ (केसिकुमार समणं एवं वयासी) કેશી કુમાર શ્રમણ ને આ પ્રમાણે કહ્યુ–(तुब्भे णं भंते !

मम करतले वा आमलकं जीवं शरीराद् अभिनिवर्त्य खलु उपदर्शयितुम्?॥ तस्मिन् काले तस्मिन् समये प्रदेशिनो राज्ञः अदूरसामन्ते वायुकायः संवृत्तः, तृणवनस्पतिकायः एजते व्येजते चलति स्पन्दते घट्टते उदीरते तं तं भावं परिणमते। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्–पश्यसि

दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते! मम करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए) हे भदन्त! आप अवसर के ज्ञान में अतिनिपुण हैं दक्ष हैं–कार्य के सम्पादन में कुशल हैं, यावत् उपदेशलब्ध हैं–गुरु के उपदेश को प्राप्त किये हुए हैं इसलिये हे भदन्त! शरीर से जीव को निकाल कर क्या आप हस्ततल में स्थित आंवले की तरह उसे मुझे दिखा सकते हैं? (तेणं कालेणं तेणं समएणं पए ॥, सिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते) उस काल और उस समय में प्रदेशी राजा के नजदीक–न अतिदूर और न अतिपास स्थान पर वायुकायप्रवृत्त हुआ (तणवणस्सइकाए एयइ, वेयइ, चलेइ, फंदइ, घट्टइ, उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ) इससे तृणवनस्पतिकाय सामान्यतः एवं विशेषतः कंपित होने लगा, इधर से उधर चलने लगा परस्पर में संघर्षित होने लगा एवं कोई२ जमीन ऊपर ही झुक गया इस तरह वह तृणवनस्पतिकाय एजनादिरूप भिन्न२ प्रकार के व्यापार में परिणत हो गया (तए णं

आयच्छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते! मम करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए) હે ભદન્ત! આપ અવસરને સરસ રીતે જાણવામાં અતિ નિપુણ છો કાર્યના સંપાદનમાં કુશળ છો, યાવત્ ઉપદેશ લબ્ધ છો, ગુરુના ઉપદેશને પ્રાપ્ત કરેલ છો. એથી જ હે ભદન્ત! શરીરમાંથી જીવને બહાર કાઢીને શું તને હસ્તામલકવત્ મને બતાવી શકો છો? (तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते) તે કાળે અને તે સમયે પ્રદેશી રાજાની પાસે ન અતિ દૂર અને ન અતિ પાસેના સ્થાન પર વાયુકાય પ્રવૃત્ત થયો. (तणवणस्सइकाए एयइ, वेयइ, चलइ फंदइ, घट्टइ, उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ) એનાથી તૃણવનસ્પતિકાય સામાન્યતઃ અને વિશેષતઃ કંપિત થવા માંડયો. આમથી તેમ નમવા માંડયો, પરસ્પર સંઘર્ષિત થવા માંડયો, અને કોઈક જમીન પર જ નમી ગયો. આ પ્રમાણે તે તૃણ વનસ્પતિકાય એજનાદિરૂપ ભિન્ન ભિન્ન જાતના વ્યાપારમાં પરિણત થઈ ગયો. (तए णं

खलु त्वं प्रदेशिराज! एतत् तृणवनस्पतिकायम् एजमानं यावत् तं तं भावं परिणममानम्! हन्त! पश्यामि। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतं तृणवनस्पतिकायं किं देवश्चालयति असुरो वा चालयति नागो वा चालयति किन्नरो वा चालयति किंपुरुषो वा चालयति महोरगो वा चालयति गन्धर्वो वा चालयति! हन्त!! जानामि-नो देवश्चालयति जाव नो गन्धर्वश्चालयति

केसीकुमारसमणे पएसिरायं एवं वयासी-पाससि णं तुमं पएसी राया! एयं तणवणस्सइं एयंतं जाव तं तं भाव परिणमंतं) तब केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा-हे प्रदेशिन्! तुम इस तृणवनस्पतिकाय को सामान्य विशेषरूप से कंपित होते हुए यावत् एजनादिरूप भिन्न२ प्रकार के व्यापार में परिणत होते हुए देख रहे हो न? तब प्रदेशी राजाने कहा (हंता, पासामि) हां, भदन्त! देख रहा हूं (जाणासि णं तुमं पएसी! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ, असुरो वा चालेइ, णागो वा चालेइ, किन्नरो वा चालेइ, किंपुरिसो वा चालेइ, महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेइ) तब केशीकुमारश्रमणने उससे कहा हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो कि इस तृणवनस्पतिकाय को कौन चलाता है? क्या देव चलाता है, या नाग चलाता है या किन्नर चलाता है, या किंपुरुष चलाता है, या महोरग चलाता है या गंधर्व चलाता है? प्रदेशीने कहा-(हंता, जाणामि) हां, भदन्त! जानता हूं (णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ वाउकाए

केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-पाससि णं तुमं पएसि राया! एयं तणवणस्सइं एयंतं जाव तं तं भाव परिणमंति) त्यारे केशी कुमार श्रमणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्यु के हे प्रदेशिन्! तमे आ तृणवनस्पतिकायने सामान्य विशेषरूपथी कंपित थता यावत् एजनादिरूप भिन्न प्रकारना व्यापारमां परिणत जुओ छो? त्यारे प्रदेशी राजाए कह्यु (हंता पासामि) हा भदंत! जोई रह्यो छुं (जाणासि णं तुम पएसी! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ, असुरो वा चालेइ, णागो वा चालेइ, किन्नरो वा चालेइ, किंपुरिसो वा चालेइ, महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेई) त्यारे केशीकुमार श्रमणे तेने कह्यु के हे प्रदेशिन्! तमे जाणो छो के आ तृणवनस्पतिकायने कोण चलावे छे? शु देव चलावे छे? के असुर चलावे छे? के नाग चलावे छे? के किन्नर चलावे छे? के किंपुरुष चलावे छे, के गंधर्व चलावे छे? प्रदेशी राजाए कह्युं-(हंता, जाणामि) हां भदंत! जाणु छुं. (णो देवो चालेइ, जाव णो गंधव्वो चालेइ, वाउकाए

मम करतले वा आमलकं जीवं शरीराद् अभिनिवर्त्य खलु उपदर्शयितुम्॥

तस्मिन् काले तस्मिन् समये प्रदेशिनो राज्ञः अदूरसामन्ते वायुकायः संवृत्तः, तृणवनस्पतिकायः एजते व्येजते चलति स्पन्दते घट्टते उदीरते तं तं भावं परिणमते। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्—पश्यसि

दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते! मम करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए) हे भदन्त! आप अवसर के ज्ञान में अतिनिपुण हैं दक्ष हैं—कार्य के सम्पादन में कुशल हैं, यावत् उपदेशलब्ध हैं—गुरु के उपदेश को प्राप्त किये हुए हैं इसलिये हे भदन्त! शरीर से जीव को निकाल कर यथा आप हस्ततल में स्थित आंवले की तरह उसे मुझे दिखा सकते हैं? (तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते) उस काल और उस समय में प्रदेशी राजा के नजदीक—न अतिदूर और न अतिपास स्थान पर वायुकायप्रवृत्त हुआ (तणवणस्सइकाए एयइ, वेयइ, चलेइ, फंदइ, घट्टइ, उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ) इससे तृणवनस्पतिकाय सामान्यतः एवं विशेषतः कंपित होने लगा, इधर से उधर चलने लगा परस्पर में संघर्षित होने लगा एवं कोई२ जमीन ऊपर ही झुक गया इस तरह वह तृणवनस्पतिकाय एजनादिरूप भिन्न२ प्रकार के व्यापार में परिणत हो गया (तए णं

महच्छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते! ममं करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए) हे भदन्त! आप અવસરને સરસ રીતે જાણવામાં અતિ નિપુણ છો કામના સંપાદનમાં કુશળ છો, યાવત્ ઉપદેશ લબ્ધ છો, ગુરુના ઉપદેશને ગ્રહણ કરેલ છો એથી જ હે ભદન્ત! શરીરમાંથી જીવને બહાર કાઢીને શું તમે હસ્તામલકવત્ મને બતાવી શકો છો? (તેણં કાલેણં તેણં સમએણં પએસિસ્સ રણ્ણો અદૂરસામંતે વાઉયાએ સંવુત્તે) તે કાળે અને તે સમયે પ્રદેશી રાજાની પાસે ન અતિ દૂર અને ન અતિ પાસેના સ્થાન પર વાયુકાય પ્રવૃત્ત થયો (તણવણસ્સઇકાએ એયઇ, વેયઇ, ચલઇ ફંદઇ, ઘટ્ટઇ, ઉદીરઇ, તં તં ભાવં પરિણમઇ) એનાથી તૃણવનસ્પતિકાય સામાન્યતઃ અને વિશેષતઃ કંપિત થવા માંડયો. આમથી તેમ નમવા માંડયો, પરસ્પર સંઘર્ષિત થવા માંડયો અને કોઈક જમીન પર જ નમી ગયો આ પ્રમાણે તે તૃણ વનસ્પતિ કાય એજનાદિરૂપ ભિન્ન ભિન્ન જાતના વ્યાપારમાં પરિણત થઈ ગયો. (તએ ણં

खलु त्वं प्रदेशिराज! एत तृणवनस्पतिकायम् एजमान यावत् तं तं भावं परिणममानम्! हन्त! पश्यामि। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतं तृणवनस्पतिकायं किं देवश्चालयति असुरो वा चालयति नागो वा चालयति किन्नरो वा चालयति किंपुरुषो वा चालयति महोरगो वा चालयति गन्धर्वो वा चालयति! हन्त!! जानामि-नो देवश्चालयति जाव नो गन्धर्वश्चालयति

केसीकुमारसमणे पएसिरायं एवं वयासी-पाससि णं तुमं पएसी राया! एयं तणवणस्सइं एयंत जाव तंतं भाव परिणमंतं') तब केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा-हे प्रदेशिन! तुम इस तृणवनस्पतिकाय को सामान्य विशेषरूप से कंपित होते हुए यावत् एजनादिरूप भिन्न२ प्रकार के व्यापार में परिणत होते हुए देख रहे हो न? तब प्रदेशी राजाने कहा (हंता, पासामि) हां, भदन्त! देख रहा हूं (जाणासि णं तुमं पएसी! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ, असुरो वा चालेइ, णागो वा चालेइ, किन्नरो वा चालेइ, किंपुरिसो वा चालेइ, महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेइ) तब केशीकुमारश्रमणने उससे कहा हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो कि इस तृणवनस्पतिकाय को कौन चलाता है? क्या देव चलाता है, या नाग चलाता है या किन्नर चलाता है, या किंपुरुष चलाता है, या महोरग चलाता है या गंधर्व चलाता है? प्रदेशीने कहा-(हंता, जाणामि) हां, भदन्त! जानता हूं (णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ वाउकाए

केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-पाससि णं तुमं पएसि राया! एयं तणवणस्सइं एयंतं जाव तं तं भाव परिणमंति) त्यारे केशी कुमार श्रमणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं के हे प्रदेशिन्! तमे आ तृणवनस्पतिकायने सामान्य विशेषरूपथी कंपित थता यावत् एजनादिरूप भिन्न प्रकारना व्यापारमां परिणत जुओ छो? त्यारे प्रदेशी राजाए कह्युं (हंता पासामि) हां भदंत! जोई रह्यो छुं (जाणासि णं तुमं पएसी! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ, असुरो वा चालेइ, णागो वा चालेइ, किन्नरो वा चालेइ, किंपुरिसो वा चालेइ, महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेइ) त्यारे केशीकुमार श्रमणे तेने कह्युं के हे प्रदेशिन्! तमे जाणो छो के आ तृणवनस्पतिकायने कोण चलावे छे? शुं देव चलावे छे? के असुर चलावे छे? के नाग चलावे छे? के किन्नर चलावे छे? के किंपुरुष चलावे छे, के गंधर्व चलावे छे? प्रदेशी राजाए कह्युं-(हंता, जाणामि) हा भदंत! जाणुं छुं. (णो देवो चालेइ, जाव णो गंधव्वो चालेइ, वाउकाए

वायुकायं चालयति। पश्यसि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतस्य वायुकायस्य सरूपिणः सकर्मणः सरागस्य समोहस्य सवेदस्य सलेश्यस्य रूपम्? नायमर्थः समर्थः। यदि खलु त्वं प्रदेशिराज! एतस्य वायुकायस्य सरूपिणो यावत् सशरीरस्य रूपं न पश्यसि तत् कथं खलु प्रदेशिन्! तव करतले इव आमलकं जीवमुप दर्शयिष्यामि।। एवं खलु प्रदेशिन्! दश स्थानानि छद्मस्थो मनुष्यः सर्वभावेन न जानाति, न पश्यति, तद्यथा-धर्मास्तिकायम् १, अधर्मास्तिकायम् २, आकाश

चालेइ) इसे न देव चलाता है, यावत् न गन्धर्व चलाता है। (पाससि णं तुमं पएसी! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं) केशीकुमारश्रमणने तब उससे कहा-हे प्रदेशिन्! तुम इस सरूपी, सकर्मा, सराग, समोह, सवेद, सलेश्य, सशरीर वायुकाय के रूप को देखते हो? (णो इणट्ठे समट्ठे) तब प्रदेशीने कहा-हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् वायुकाय के रूप को मैं नहीं देखता हूं तब उससे केशीकुमारश्रमणने कहा-(जइ णं तुमं पएसि राया! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि) हे प्रदेशिराजन्! जब तुम इसे सरूपी यावत् सशरीर वायुकाय के रूप को नहीं देख पा रहे हो-तो फिर मैं हे प्रदेशिन्! कैसे तुम्हें करतलस्थित आंवले की तरह जीव दिखा सकता हूं। (एवं खलु पएसी! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से

चालेइ) આને ન દેવ ચલાવે છે યાવત્ ન ગંધર્વ ચલાવે છે વાયુકાય ચલાવે છે (पाससि णं तुमं पएसी! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं) કેશીકુમાર શ્રમણે ત્યારે તેને કહ્યું હે પ્રદેશિન્! તમે આ સરૂપી, સકર્મા, સરાગ, સમોહ, સવેદ, સલેશ્ય સશરીર, વાયુકાયના રૂપને જુઓ છો? (णो इणट्ठे समट्ठे) ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું-હે ભદંત! આ અર્થ સમર્થ નથી. એટલે કે વાયુકાયના રૂપને હું જોતો નથી ત્યાર પછી ફરી કેશી કુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું. (जइ णं तुमं पएसि राया! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि) હે પ્રદેશિરાજન્! જ્યારે તમે આ સરૂપી યાવત્ સશરીર વાયુકાયના રૂપને જોઈ શકતા નથી તો પછી હે પ્રદેશિન્ હું કેવી રીતે તમને કરતલ સ્થિત આમળાની જેમ જીવને દેખાડી શકું છું. (एवं खलु पएसी! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेण न जाणइ न पासइ) કેમકે હે પ્રદેશિન્! છદ્મસ્થ જીવ આ દશ સ્થાનોને

स्तिकायम्३, जीवमशरीरबद्धम्४ परमाणुपुद्गल५, शब्दं६, गन्ध७, वातम्८, अयं जिनो भविष्यति वा नो भविष्यति९, अयं सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति वा नो वा करिष्यति१०। एतानि चैव उत्पन्नज्ञानदर्शनधरः अर्हन् जिनः केवली सर्वभावेन जानाति पश्यति, तद्यथा-धर्मास्तिकायं यावत् नो वा करिष्यति, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीवः तदेव९ ॥ सू० १५१॥

सव्वभावेणं न जाणइ, न पासइ) क्यों कि हे प्रदेशिन! छद्मस्थ जीव इन इन दश स्थानों को सर्वभाव से नहीं जानता है और नहीं देखता है (तं जहा) वे दशस्थान इस प्रकार से हैं (धम्मत्थिकायं१, अधम्मत्थिकाय२, आगासत्थिकायं३, जोवं असरीरबद्ध४, परमाणुपोग्गल५, सद्दं६, गंधं७, वायं८ अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ९, अयं सव्वदुक्खाणं अंतो करिस्सइ नो वा करिस्सइ१०) धर्मास्तिकाय१, अधर्मास्तिकाय२, आकाशास्तिकाय३, अशरीर बद्ध जीव४, परमाणुपुद्गल५, शब्द६, गंध७, वात८ यह जिन होगा, या नहीं होगा९, और यह समस्त दुखों का अन्त करेगा या नही करेगा१० (एयाणि चेव उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ पासइ) इन्हें तो उत्पन्न ज्ञान दर्शन धारी अर्हन्त जिन केवली सर्वभाव से जानते है। (तं जहा धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ-तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो तं चेव) अतः जब अर्हन्त जिन केवली धर्मास्तिकायादि१० स्थानों को जानते देखते हैं

सर्वभावथी જાણુતો નથી અને જોતો નથી (तं जहा) ते दशस्थानो આ પ્રમાણે છે (धम्मत्थिकायं १, अधम्मत्थिकायं २, आगासत्थिकायं ३, जीव असरीरवद्धं ४, परमाणुपोग्गल ५. सद्दं ६ गंधं ७ वायं ८. अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ ९, अयं सव्वदुक्खाणं अतो करिस्सइ १०) धर्मास्तिकाय १, અધર્માસ્તિકાય ૨, આકાશાસ્તિકાય ૩, અશરીર બદ્ધ જીવ ૪, પરમાણુ પુદ્ગલ ૫, શબ્દ ૬, ગંધ ૭, વાત ૮. આ જિન થશે કે નહિ થશે ૯. અને આ સમસ્ત દુઃખોનો અન્ત કરશે કે નહિ કરશે ૧૦. (एयाणि चेव उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ) એમને તો ઉત્પન્ન જ્ઞાન દર્શનધારી અર્હંત જિન કેવલી સર્વભાવથી જાણે છે અને જુવે છે. (तं जहा धम्मत्थिकाय जाव नो वा करिस्सइ तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो त चेव) એથી જ્યારે અર્હંત જિન કેવલી ધર્માસ્તિકાય વગેરે ૧૦ સ્થાનોને જાણે છે જુવે છે અને છદ્મસ્થ એમને જાણતા નથી તેમજ જોતા પણ નથી. તો હે પ્રદેશિન્! તમે શ્રદ્ધા કરો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે. ઇત્યાદિ.

वायुकायः स्पृशति। पश्यसि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतस्य वायुकायस्य सरू- पिणः सकर्मणः सरागस्य समोहस्य सवेदस्य सलेश्यस्य रूपम्! नायमर्थः समर्थः। यदि खलु त्वं प्रदेशिराज एतस्य वायुकायस्य सरूपिणो यावत् सशरीरस्य रूपं न पश्यसि तत् कथं खलु प्रदेशिन्! तव करतले इव आमलकं जीवमुप- दर्शयिष्यामि ।। एवं खलु प्रदेशिन्! दश स्थानानि छद्मस्थो मनुष्यः सर्वभावेन न जानाति, न पश्यति, तद्यथा-धर्मास्तिकायम् १, अधर्मास्तिकायम् २, आकाश

चालेइ) इसे न देव चलाता है, यावत न गधर्व चलाता है। (पाससि णं तुम पएसि! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं) केशीकुमारश्रमणने तब उससे कहा-हे प्रदेशिन्! तुम इस सरूपी, सकर्मा, सराग, समोह, सवेद, सलेश्य, सशरीर वायुकाय के रूप को देखते हो? (णो इणट्ठे समट्ठे) तब प्रदेशीने कहा-हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नही है अर्थात् वायुकाय के रूप को मैं नही देखता हूं, तब उससे केशीकुमारश्रमणने कहा-(जइ णं तुम पएसि राया! एयस्स वाउ- कायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि) हे प्रदेशिराजन्! जब तुम इस रूपी यावत् सशरीर वायुकाय के रूप को नहीं देख पा रहे हो-तो फिर मैं हे प्रदेशिन्! कैसे तुम्हें करतलस्थित आंवले की तरह जीव दिखा सकता हूं। (एवं खलु पएसी! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से

चालेइ) આને ન દેવ ચલાવે છે યાવત્ ન ગંધર્વ ચલાવે છે વાયુકાય ચલાવે છે. (पाससि णं तुमं पएसि! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स- सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं) કેશીકુમાર શ્રમણે ત્યારે તેને કહ્યું કે પ્રદેશિન્! તમે આ સરૂપી, સકર્મા સરાગ, સમોહ, સવેદ સલેશ્ય સશરીર, વાયુકાયના રૂપને જુઓ છો? (णो इणट्ठे समट्ठे) ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું- હે ભદંત! આ અર્થ સમર્થ નથી. એટલે કે વાયુકાયના રૂપને હું જોતો નથી ત્યાર પછી ફરી કેશી કુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું (जइ णं तुमं पएसि राया! एय- स्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि) હે પ્રદેશિ- રાજન્! જ્યારે તમે આ સરૂપી યાવત્ સશરીર વાયુકાયનારૂપને જોઈ શકતા નથી તો પછી હે પ્રદેશિન્ હું કેવી રીતે તમને કરતલ સ્થિત આમળાની જેમ જીવને દેખાડી શકું છું (एवं खलु पएसी! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्व- भावेण न जाणइ न पासइ) કેશી કે પ્રદેશિન્! છદ્મસ્થ જીવ આ દશ સ્થાનોને

स्तिकायम्३, जीवमशरीरबद्धम्४ परमाणुपुद्गल५, शब्दं६, गन्ध७, वातम्८, अयं जिनो भविष्यति वा नो भविष्यति९, अयं सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति वा नो वा करिष्यति१०। एतानि चैव उत्पन्नज्ञानदर्शनधरः अर्हन् जिनः केवली सर्वभावेन जानाति पश्यति, तद्यथा-धर्मास्तिकाय यावत् नो वा करिष्यति, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीवः तदेव९॥ सू० १५१॥

सव्वभावेणं न जाणइ, न पासइ) क्यों कि हे प्रदेशिन! छद्मस्थ जीव इन इन दश स्थानों को सर्वभाव से नहीं जानता है और नहीं देखता है (तं जहा) वे दशस्थान इस प्रकार से हैं (धम्मत्थिकायं१, अधम्मत्थिकाय २, आगासत्थिकायं३, जीवं असरीरबद्धं४, परमाणुपोग्गल ५, सद्दं ६, गंधं७, वायं८ अय जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ९, अय सव्वदुक्खाणं अंतो करिस्सइ नो वा करिस्सइ१०) धर्मास्तिकाय१, अधर्मास्तिकाय२, आकाशास्तिकाय३, अशरीर बद्ध जीव४, परमाणुपुद्गल५, शब्द६, गंध७, वात८ यह जिन होगा, या नहीं होगा९, और यह समस्त दुखों का अन्त करेगा या नही करेगा१० (एयाणि चेव उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ पासइ) इन्हें तो उत्पन्न ज्ञान दर्शन धारी अर्हन्त जिन केवली सर्वभाव से जानते हैं। (तं जहा धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ-तं सद्दहाहि णं तुम पएसी! जहा अन्नो जीवो तं चेव) अतः जब अर्हन्त जिन केवली धर्मास्तिकायादि१० स्थानों को जानते देखते हैं

सर्वभावथी જાણતો નથી અને જોતો નથી. (तं जहा) તે દશસ્થાનો આ પ્રમાણે છે (धम्मत्थिकायं १, अधम्मत्थिकायं २, आगासत्थिकायं ३, जीवं असरीरबद्धं ४, परमाणुपोग्गल ५. सद्दं ६ गंधं ७ वायं ८. अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ ९, अयं सव्वदुक्खाणं अंतो करिस्सइ १०.) ધર્માસ્તિકાય ૧, અધર્માસ્તિકાય ૨, આકાશાસ્તિકાય ૩, અશરીર બદ્ધ જીવ ૪, પરમાણુ પુદ્ગલ ૫, શબ્દ ૬, ગંધ ૭, વાત ૮. આ જિન થશે કે નહિ થશે. ૯ અને આ સમસ્ત દુઃખોનો અન્ત કરશે કે નહિ કરશે ૧૦. (एयाणि चेव उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ) એમને તો ઉત્પન્ન જ્ઞાન દર્શનધારી અર્હંત જિન કેવલી સર્વભાવથી જાણે છે અને જુવે છે. (तं जहा धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी। जहा अन्नो जीवो तं चेव) એથી જ્યારે અર્હંત જિન કેવલી ધર્માસ્તિકાય વગેરે ૧૦ સ્થાનો ને જાણે છે જુવે છે અને છદ્મસ્થ એમને જાણતા નથી તેમજ જોતા પણ નથી. તો હે પ્રદેશિન્! તમે શ્રદ્ધા કરો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે. ઇત્યાદિ.

टीका-'तए ण पएसी राया' इत्यादि-तत खलु प्रदेशी राजा केशि कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-हे भदन्त! यूय खलु अतिच्छेकाः-अवसरज्ञा नातिनिपुणाः, दक्षाः-कार्यसम्पादनकुशलाः, यावत्-यावत्पदेन 'प्राप्तार्थाः बुद्धाः कुशलाः महामतय विनीता विज्ञानप्राप्ताः' इत्येषां पदानां संग्रहः एषां व्याख्या पूर्वं गता। उपदेशलब्धा -प्राप्तगुरूपदेशाः, अतो हे भदन्त यूय शरीरात् जीवमभिनिवर्त्य--निष्काश्य करतले-हस्ततले स्थितम् आमलक-मिव मम उपदर्शयितु समर्थाः--शक्ताः।

और छद्मस्थ इन्हे जानता देखता नही है तो हे प्रदेशिन्! तुम श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है. इत्यादि।

टीकार्थ स्पष्ट है-'दुक्खा भाव उवएसलद्धा' में जो यावत् पद आया है उससे यहां 'प्राप्तार्थाः, बुद्धाः, कुशलाः, महामतयः, विनीताः, विज्ञान प्राप्ताः' इन पदों का संग्रह हुआ है, इन पदों की व्याख्या पहिले की जा चुकी है। उस काल और उस समय में का तात्पर्य है जब प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से शरीर से निकालकर जीव को हस्तामलकवत् दिखाने की बात कही तब। 'एयत जाव त त में जो यावत् पद आया है उससे यहां 'व्येजमान, चलन्तःस्पन्दमान, घट्टमानम्' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदोंकी व्याख्या इसी सूत्र में पहिले की जा चुकी है इन पदों में वायुकाय एके न्द्रिय जीव है-अतः यह रूप युक्त है, कर्म सहित है, रागसहित है, मोहसहित है, नपुसकवेद सहित है, औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण इन चार

टीकार्थ स्पष्ट જ છે 'दुक्खा भाव उवएसलद्धा' માં જે યાવત પદ આવેલ છે તેથી અહીં प्राप्तार्थाः बुद्धाः कुशलाः महामतय, विनीताः विज्ञान प्राप्ताः આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે તે કાળે અને તે સમયે જે કહેવામાં આ્યુ છે તેની સ્પષ્ટતા આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમાર શ્રમણને શરીરમાંથી બહાર કાઢીને જીવને હસ્તા મલકવત્ બતાવવાની વાત કહી ત્યારે (एयंत जाव त त) માં જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં "व्येजमान चलन्त स्पन्दमान, घट्टमानम्" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા આ જ સૂત્રમાં પહેલાં કરવામાં આવી છે આ પદોમાં પ્રત્યયકૃત જ વિશેષતા છે ધાત્વર્થ કૃત વિશેષતા નથી વાયુકાય એકેન્દ્રિય જીવ છે એથી તે રૂપયુકત જીવ છે કર્મસહિત છે રાગસહિત છે મોહસહિત છે નપુંસક વેદ સહિત છે ઔદારિક, વૈક્રિય, તૈજસ અને કાર્મણ આ ચાર શરીરવાળો છે. રૂપ

तस्मिन् काले-केशिकुमारश्रमण प्रति जीवस्य शरीरान्निष्काशनपूर्वक कराऽऽमलकवदुपदर्शनप्रार्थनाकाले तस्मिन् समये-अवसरे प्रदेशिनो राज्ञः अदूरसामन्ते नातिदूरे-नातिसमीपे वायुकायः संवृत्तः-प्रवृत्तोऽभवत्, तेन तृणवनस्पतिकायः एजते-सामान्यतः कम्पते, ततो व्येजते-विशेषतः कम्पते, चलति-चपली भवति, स्पन्दते-ईषच्चलति, घट्टते-परस्परं संघर्षं प्राप्नोति, उदीर्ते-उत्कम्पते एवं तं तं भावम्-एजनादिरूपं व्यापारं परिणमते-प्राप्नोति, ततः-वायुकायसंवर्तनवशात् तृणवनस्पतिकायस्यैजनादिभावोपगमनानन्तरम् खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्-हे प्रदेशिराज! त्वं पश्यसि-चक्षुर्गोचरं करोषि खलु एतम्-इमम् तृणवनस्पतिम्, एजमानं यावत्-यावत्पदेन-'व्येजमानं चलन्तं स्पन्दमानं घट्टमानम् उदीराणम्' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः एषां व्याख्याऽत्रैव सूत्रे पूर्वं कृता, तत्र प्रत्ययकृतो विशेषः, धात्वर्थस्त्वविशेष एव द्रष्टव्यः। तं तं भावं परिणममानम्.?। इति केशिप्रश्ने प्रदेशी प्राह-हन्त ! पश्यामि। पुनः केशी कुमारश्रमण प्रदेशिराजं पृच्छति-हे प्रदेशिन् ! त्वं खलु जानासि एतं वनस्पतिकायं किं देवश्चालयति? किं वा असुरश्चालयति ? किं वा नागः-नागदेवश्चालयति ! किं वा किन्नरः-तदाख्यदेवविशेषश्चालयति ! किं वा किंपुरुषश्चालयति ! किं वा महोरगः-व्यन्तरविशेषो देवश्चालयति। किं वा गन्धर्वश्चालयति !। प्रदेशी प्राह-हन्त!! जानामि-नो देवश्चालयति, यावत्-नो गन्धर्वश्चालयति, तर्हि कश्चालयति ! इति जिज्ञासायामाह-वायुकायश्चालयति। केशी पृच्छति-हे प्रदेशिन् ! त्वमेतस्य स्वकीयेऽदूरसामन्ते संप्रवृत्तस्य वायुकायस्य, रूप पश्यसि, तस्य कीदृशस्येत्यत्राऽऽह सरूपिणः-रूपयुक्तस्य सकर्मणः-कर्मसहितस्य सरागस्य-रागसहितस्य समोहस्य-मोहसहितस्य सवेदस्य-नपुंसक वेदसम्पन्नस्य सलेश्यस्य-कृष्णनीलकापोतलेश्यात्रययुक्तस्य सशरीरस्य-औदारिकवैक्रियतैजसकार्मण शरीरचतुष्टययुक्तस्य एतादृशस्य वायुकायस्य रूपं किं पश्यसि। इति पूर्वेणान्वयः। इति प्रश्ने प्रदेशी प्राह-नायमर्थः समर्थः-तादृशस्य वायुकायस्य दर्शनरूपोऽर्थः न समर्थः- न तस्य रूपं पश्यामीति भावः। केशीकुमार-

---

शरीरोंवाला है. कृष्ण, नील, एवं कापोत इन तीन लेश्याओंवाला है यही बात सरूपी आदि विशेषणों द्वारा वायुकाय में प्रकट की गई है। अव शिष्ट सूत्रस्थ पदों का अर्थ स्पष्ट है ॥ सू. १५१ ॥

નીલ અને કાપોત આ ત્રણ લેશ્યાઓવાળો છે એ જ વાત સરૂપી વગેરે વિશેષણો વડે વાયુકાયમાં પ્રકટ કરવામાં આવી છે બાકી રહેલા પદોનો અર્થ સ્પષ્ટજ છે ॥૧૫૧॥

टीका-'तए णं पएसी राया' इत्यादि-ततः खलु प्रदेशी राजा केशि कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-हे भदन्त ! यूय खलु अतिच्छेकाः-अवसरज्ञातिनिपुणाः, दक्षा-कार्यसम्पादनकुशला, यावत्-यावत्पदेन 'प्राप्तार्थाः बुद्धाः कुशलाः महामतयः विनीताः विज्ञानप्राप्ताः' इत्येषां पदानां संग्रहः एषां व्याख्या पूर्वं गता। उपदेशलब्धा -प्राप्तगुरूपदेशाः, अतो हे भदन्त यूय शरीराद् जीवमभिनिःसार्य---निस्सार्य करतले-हस्ततले स्थितम् आमलकमिव मम उपदर्शयितु समर्थाः--शक्ताः।

और छद्मस्थ इसे जानता देखता नहीं है तो हे प्रदेशिन् ! तुम श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है. इत्यादि।

टीकार्थ स्पष्ट है-'बुद्धा जाव उवएसलद्धा' में जो यावत् पद आया है उससे यहां 'प्राप्तार्थाः, बुद्धाः, कुशलाः, महामतयः, विनीताः, विज्ञानप्राप्ताः' इन पदों का संग्रह हुआ है, इन पदों की व्याख्या पहिले की जा चुकी है। उस काल और उस समय में का तात्पर्य है जब प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से शरीर से निकालकर जीव का हस्तामलकवत् दिखान को बात कही तब। 'एयंत जाव तं तं' में जो यावत् पद आया है उससे यहां 'व्येजमान, स्पन्दमान, घट्टमानम्' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदोंकी व्याख्या इसी सूत्र में पहिले की जा चुकी है इन पदों में वायुकाय एकेन्द्रिय जीव है-अतः यह रूप युक्त है, कर्म सहित है, रागसहित है, मोहसहित है, नपुंसकवेद सहित है, औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण इस चार

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે 'बुद्धा जाव उवएसलद्धा' માં જે યાવત પદ આવેલ છે તેથી અહીં प्राप्तार्थाः बुद्धाः कुशलाः महामतयः, विनीताः विज्ञानप्राप्ताः આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે. તે કાળે અને તે સમયે જે કહેવામાં આવ્યું છે તેની સ્પષ્ટતા આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમાર શ્રમણને શરીરમાંથી બહાર કાઢીને જીવને હસ્તામલકવત્ બતાવવાની વાત કહી ત્યારે (एयंत जाव तं तं) માં જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં "व्येजमान चलन्त स्पन्दमान, घट्टमानम्" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા આ જ સૂત્રમાં પહેલાં કરવામાં આવી છે આ પદોમાં પ્રત્યયકૃત જ વિશેષતા છે ધાત્વર્થ કૃત વિશેષતા નથી વાયુકાય એકેન્દ્રિય જીવ છે. એથી તે રૂપયુક્ત જીવ છે કર્મસહિત છે રાગસહિત છે મોહસહિત છે નપુંસક વેદ સહિત છે, ઔદારિક, વૈક્રિય તૈજસ અને કાર્મણ આ ચાર શરીરવાળો છે. રૂપ

पदीवं च गहाय त कूडागारसाल अंतो२ अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइं णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइ पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा, तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो२ ओभासइ उज्जोवेइ तावइ पभासइ, णो चेव णं बाहिं। अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे त इड्डरयं अंतो२ ओभासेइ४, णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं। एवं गोकिलिंजेणं, पच्छियपिडएणं गंडमणियाए, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं, कुलवेणं चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए, बत्तीसियाए, चउसट्ठियाए, दीवचंपएण, तए णं से पईवे दीवचंपगस्स अंतो२ ओभासेइ४, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं नो चेव णं चउसट्ठियं नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं, एवामेव पएसी! जीवे वि ज· जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोदिं णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपएसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा—अण्णो जीवो तं चेव णं १०। ॥सू. १५२॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्—स नूनं भदन्त! हस्तिनः कुन्थोः वा समं एव जीवः? हन्त! प्रदेशिन्!

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ--(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) उस प्रदेशी राजाने (केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) केशी-

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ते प्रदेशी राजाએ કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (से नूण

श्रमणो वायुकायस्याप्रत्यक्षदर्शनत्वे प्रदेशिनमाह—हे प्रदेशिराजा! यदि त्वं खलु एतस्य वायुकायस्य सरूपिणः यावत्—सशरीरस्य रूप न पश्यसि तत्—तदा कथ—केन प्रकारेण खलु करतले आमलक वा—इव जीवं तव उपदर्शयिष्यामि? वायुकायस्य तत्र जीवस्य च समानरूपत्वादेकस्या अप्रत्यक्षदर्शनत्वेऽपरस्यापि अप्रत्यक्षदर्शनत्वात्। वक्ष्यमाणच्छद्मस्थमनुष्यस्य जीवादिस्थानानां सर्वभावेन ज्ञानदर्शनाऽयोगत्वात् कथं चक्षुर्गोचरं कारयिष्यामीति भावः। एतदेव दर्शयति—हे प्रदेशिन्! एवम् वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु छद्मस्थो मनुष्यः दशस्थानानि वक्ष्यमाणानि धर्मास्तिकायादीनि सर्वभावेन सम्पूर्णतया न जानाति, न पश्यति। कानि तानीत्याह तद्यथा—धर्मास्तिकायम् १, अधर्मास्तिकायम् २, आकाशास्तिकायम् ३, जीवमशरीरबद्धम्—शरीररहितोऽसस्पृष्टम् ४, परमाणुपुद्गलम् ५ शब्दम् ६ गन्धम् ७, वात—वायुम् ८, अयं जिनो भविष्यति वा—अथवा नो—न भविष्यतीति? ९ अयं सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति वा नो करिष्यती ति? १० एतानि दशस्थानानि उत्पन्नज्ञानदर्शनधरः अर्हन् जिनः केवली एव सर्वभावेन—साकल्येन जानाति तथा पश्यति तद्यथा—धर्मास्तिकाय यावत्—नो वा करिष्यति तत्तस्मात्कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि, यथा—अन्यो जीवः तदेवपूर्वोक्तमेव—अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवस्तच्छरीरम् इति ॥सू० १५१॥

मूलम्—तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी से नूणं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे? हंता पएसी हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे। से णूणं भंते! हत्थिउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एवं अप्पाहारनीहारउस्सासनीसासइड्ढियतराए अप्पजुइयतराए चेव, एवं कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव जाव?, महज्जुइयतराए चेव। हंत? हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव तं चेव। कम्हा णं भंते! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे? पएसी से जहाणामए कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा, अह णं केइ पुरिसे जोइं च

पदीवं च गहाय त कूडागारसाल अंतो२ अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइं णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइ पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा, तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो२ ओभासइ उज्जोवेइ तावइ पभासइ, णो चेव णं बाहिं। अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे त इड्डरयं अंतो२ ओभासेइ४, णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं। एवं गोकिलिंजेणं, पच्छियपिडएणं गंड मणियाए, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं, कुलवेणं चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए, बत्तीसियाए, चउसट्ठियाए, दीवचंपएण, तए णं से पईवे दीवचंपगस्स अंतो२ ओभासेइ४, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं नो चेव णं चउसट्ठियं नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं, एवामेव पएसी ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपएसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अण्णो जीवो तं चेव णं १०। ॥ सू. १५२ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्—स नूनं भदन्त ! हस्तिनः कुन्थोः वा सम एव जीवः ? हन्त ! ! प्रदेशिन् !

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) उस प्रदेशी राजाने (केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) केशी-

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યાર પછી (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) તે પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (से नूण

श्रमणो वायुकायस्याप्रत्यक्षदर्शनत्वे प्रदेशिनमाह-हे प्रदेशिराज! यदि त्वं खलु एतस्य वायुकायस्य सरूपिणः यावत्-सशरीरस्य रूपं न पश्यसि तत्-तदा कथ-केन प्रकारेण खलु करतले आमलकं वा-इव जीवं तव उपदर्शयिष्यामि? वायुकायस्य तव जीवस्य च समानरूपत्वादेकस्या प्रत्यक्षदर्शनत्वेऽपरस्यापि अप्रत्यक्षदर्शनत्वात्। छद्मस्थस्य मनुष्यस्य जीवादिस्थानानां सर्वभावेन ज्ञानदर्शनाऽयोग्यत्वात् कथं चक्षुर्गोचरं कारयिष्यामीति भावः। एतदेव दर्शयति-हे प्रदेशिन्! एवम् वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु छद्मस्थो मनुष्यः दश स्थानानि वक्ष्यमाणानि धर्मास्तिकायादीनि सर्वभावेन सम्पूर्णतया न जानाति,-न पश्यति। कानि तानीत्याह तद्यथा-धर्मास्तिकायम् १, अधर्मास्तिकायम् २, आकाशास्तिकायम् ३, जीवमशरीरबद्धम्-शरीरतोऽसस्पृष्टम् ४, परमाणुपुद्गलम् ५ शब्दम् ६ गन्धम् ७, वात-वायुम् ८, अयं जिनो भविष्यति वा-अथवा नो-न भविष्यतीति? ९ अयं सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति वा ना करिष्यति वि १०। एतानि दशस्थानानि उत्पन्नज्ञानदर्शनधरः अर्हन् जिनः केवली एव सर्वभावेन-साकल्येन जानाति तथा पश्यति-तद्यथा-धर्मास्तिकायं यावत्-नो वा करिष्यति तत्तस्मात्कारणात् हे प्रदेशिन्! श्रद्धत्स्व, यथा-अन्यो जीवः तदेवपूर्वोक्तमेव-अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवस्तच्छरीरम् इति ॥ सू० १५१ ॥

मूलम्-तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी से नूणं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे? हंता पएसी हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे। से णूणं भंते! हत्थिउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एवं अप्पाहारनीहारउस्सासनीसासइड्ढिगतराए अप्पजुइयतराए चेव, एवं कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव जाव?, महज्जुइयतराए चेव। हंता? हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव त चेव। कम्हा णं भंते! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे? पएसी से जहाणामए कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा, अह णं केइ पुरिसे जोइं च

हस्तितः कुन्थुश्च अल्पकर्मतर एव, कुन्थुतो वा हस्ती महाकर्मतर एव तदेव। कस्मात् खलु भदन्त! हस्तिनश्च कुन्थोश्च सम एव जीवः। प्रदेशिन्! तद् यथानामकं कूटाऽऽकारशाला स्यात्, यावत् निर्वातगम्भीरा, अथ खलु कश्चित् पुरुषः ज्योतिर्वा प्रदीपं वा गृहीत्वा तां कूटाऽऽकारशालाम् अन्तरन्तरनुम·

कुन्थु की अपेक्षा हाथी क्या महाकर्मतर ही होता है, महाक्रियातर ही होता है? यावत् महाधुतितर ही होता है? इस प्रदेशी के प्रश्न के उत्तर में केशी कुमारश्रमणने कहा-(हंत, पएसी! हत्थिओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव, कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव-तं चेव) हां, प्रदेशिन! ऐसी ही बात है-हाथी से कुन्थु अल्पतर कर्मवाला ही होता है, इत्यादि इसी प्रकार कुन्थु की अपेक्षा से हाथी महाकर्मतरवाला ही होता है, महाक्रियावाला ही होता है इत्यादि। (कम्हा णं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) अब प्रदेशी इस प्रकार पूछता है कि-हे भदन्त! आपने जो हाथी और कुन्थु के जीव को समानपरिमाणवाला कहा है सो इसका क्या कारण है? केशीकुमारश्रमणने उससे कहा-(पएसी! से जहा नामए कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा) हे प्रदेशिन्! जैसे एक कूटाकारवाली पर्वत के शिखर के आकार जैसी शाला हो और यावत् वह निर्वात-वायुप्रवेश रहित होने के कारण गंभीर हो. (अह णं केइ पुरिसे जोई पदीव च गहाय त कूडागारसालं अंतोर अणुपविसइ) अब कोई

મહાક્રિયાતર હોય છે? યાવત્ મહાધુતિતર જ હોય છે? પ્રદેશીના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા કેશી કુમાર શ્રમણે કહ્યુ- (हंता पएसी! हत्थीओ कुंथू अप्प कम्मतराए चेव, कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव तंचेव) હા, પ્રદેશિન! વાત એવી જ છે હાથી કરતા કુંથુ અલ્પતર કર્મકર્તા હોય છે. વગેરે આ પ્રમાણે કુન્થુ કરતા હાથી મહાકર્મ કર્તા હોય છે, મહાક્રિયા યુકત હોય છે વગેરે. (कम्हा णं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) હવે પ્રદેશી આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કરેછે કે હે ભદંત! તમે જે હાથી અને કુંથુના જીવને સમાન પરિણામવાળો કહ્યો છે તો એનુ શું કારણ છે? કેશી કુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું- (पएसी! से जहानामए कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा) હે પ્રદેશિન! જેમ કે કોઇ એક કૂટાકારવાળી-પર્વતના શિખરના આકૃતિ જેવી-શાળા હોય અને યાવત્ તે નિર્વાત-વાયુ પ્રવેશ રહિત હોવાથી ગંભીર હોય, (अहं णं केइ पुरिसे जोइं च पईवं च गहाय तं कूडागारसालं अंतो २ अणु-

हस्तिनश्च कुन्थोश्च सम एव जीवः। अथ नून भदन्त! हस्तिनः कुन्थुः अल्प कर्मतर एव अल्पक्रियतर एव अल्पास्रवतर एव एवम् अल्पाहारनीहारो च्छ्वासनिःश्वासऋद्धिकतरः अल्पद्युतिकतर एव, एवं च कुन्थुत हस्ती महाकर्मतर एव महाक्रियतर एव यावत् महाद्युतिकतरएव ! हन्त! प्रदेशिन्!

कुमारश्रमण से ऐसा कहा-(से णूणं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) हे भदन्त! हाथी का जीव और कुंथु का जीव क्या तुल्यपरिमाण वाला है या न्यूनाधिकपरिमाणवाला है? तब केशीकुमारश्रमण ने उससे कहा-(हंता, पएसी! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) हां प्रदेशिन! हाथी का और कुंथु का जीव तुल्यपरिमाणवाला है, न्यूनाधिक परिमाणवाला नहीं है। (से णूण भंते! हत्थीउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव) हे भदन्त! हस्ती की अपेक्षा कुन्थु क्या अल्पकर्मवाला ही होता है? अल्पतर कायिकादि क्रिया वाला ही होता है? अल्पतर आस्रव वाला ही होता है? (एवं अप्पाहार नीहारउस्सासनीसासइड्ढियतराए, अप्पजुइयतराए चेव) अल्पतर आहार वाला ही होता है? अल्पतर नीहार वाला ही होता है? अल्पतर उच्छ्वास निश्वास वाला ही होता है? अल्पतर ऋद्धिवाला ही होता है? अल्पतर द्युति शरीर की कान्ति वाला ही होता है। (एवं कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव, महाकिरियतराए चेव जाव महज्जुइयतराए चेव) इसी प्रकार से

भंते! हत्थिस्सय कुंथुस्स य समे चेव जीवे) हे ભદન્ત! હાથીનો જીવ કુંથુનો જીવ શું તુલ્ય પરિણામ વાળો છે કે ન્યૂનાધિક પરિમાણવાળો છે? ત્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું-(हंता, पएसो! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) હાં પ્રદેશિન! હાથીનો અને કુંથુનો જીવ તુલ્ય પરિણામવાળો છે. ન્યૂનાધિક પરિણામવાળો નથી (से णूणं भंते! हत्थिउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव) હે ભદન્ત! હાથીની અપેક્ષાએ શું કુંથુ અલ્પકર્મવાળુ જ હોય છે? અલ્પકાયિક વગેરે ક્રિયાવાળુ હોય છે? અલ્પતર આસ્રવયુક્ત હોય છે। (एवं अप्पाहारनीहारउस्सासनीसास-इड्ढियतराए, अप्पजुइयतराए चेव) અલ્પતર આહારવાળુ જ હોય છે। અલ્પતર નીહારવાળુ જ હોય છે? અલ્પતર ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસ પ્રાપ્ત હોય છે। (एवं कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराएचेव, महाकिरियतराए चेव जाव महज्जुइयतराए चेव) આ પ્રમાણે કુંથુની અપેક્ષાએ શું હાથી મહાકર્મતર હોય છે

हस्तितः कुन्थुश्च अल्पकर्मतर एव, कुन्थुतो वा हस्ती महाकर्मतर एव तदेव। कस्मात् खलु भदन्त! हस्तिनश्च कुन्थोश्च सम एव जीवः। प्रदेशिन्! तद् यथानामकं कूटाऽऽकारशाला स्यात्, यावत् निर्वातगम्भीरा, अथ खलु कश्चित् पुरुषः ज्योतिर्वा प्रदीपं वा गृहीत्वा तां कूटाऽऽकारशालाम् अन्तरन्तरनुम-

---

कुन्थु की अपेक्षा हाथी क्या महाकर्मतर ही होता है, महाक्रियातर ही होता है? यावत् महाद्युतितर ही होता है? इस प्रदेशी के प्रश्न के उत्तर में केशी कुमारश्रमणने कहा-(हंत, पएसी! हत्थिओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव, कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव-तं चेव) हां, प्रदेशिन! ऐसी ही बात है-हाथी से कुन्थु अल्पतर कर्मवाला ही होता है, इत्यादि इसी प्रकार कुन्थु की अपेक्षा से हाथी महाकर्मतरवाला ही होता है, महाक्रियावाला ही होता है इत्यादि। (कम्हा णं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) अब प्रदेशी इस प्रकार पूछता है कि-हे भदन्त! आपने जो हाथी और कुन्थु के जीव को समानपरिमाणवाला कहा है सो इसका क्या कारण है? केशीकुमारश्रमणने उससे कहा-(पएसी! से जहा नामए कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा) हे प्रदेशिन्! जैसे एक कूटाकारवाली पर्वत के शिखर के आकार जैसी शाला हो और यावत् वह निर्वात-वायुप्रवेश रहित होने के कारण गंभीर हो. (अह णं केइ पुरिसे जोई पदीवं च गहाय तं कूडागारसालं अंतो२ अणुपविसइ) अब कोई

મહાક્રિયાતર હોય છે? યાવત્ મહાદ્યુતિતર જ હોય છે? પ્રદેશીના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કેશી કુમાર શ્રમણે કહ્યું- (हंता पएसी! हत्थीओ कुंथू अप्प कम्मतराए चेव, कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव तंचेव) હા, પ્રદેશિન! વાત એવી જ છે હાથી કરતા કુંથુ અલ્પતર કર્મકર્તા હોય છે. વગેરે. આ પ્રમાણે કુન્થુ કરતા હાથી મહાકર્મ કર્તા હોય છે, મહાક્રિયા યુક્ત હોય છે વગેરે (कम्हाणं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) હવે પ્રદેશી આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કરેછે કે હે ભદંત! તમે જે હાથી અને કુંથુના જીવને સમાન પરિણામવાળો કહ્યો છે તો એનું શું કારણ છે? કેશી કુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું-(पएसी! से जहानामए कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा) હે પ્રદેશિન! જેમ કે કોઈ એક કૂટાકારવાળી-પર્વતના શિખરના આકૃતિ જેવી-શાળા હોય અને યાવત્ તે નિર્વાત-વાયુ પ્રવેશ રહિત હોવાથી ગંભીર હોય, (अहं णं केइ पुरिसे जोइं च पइवं च गहाय तं कूडागारसालं अंतो २ अणु-

विशति, तस्याः कूटाकारशालायाः सर्वतः समन्तात् घननिचितनिरन्तराणि निश्छिद्राणि द्वारवदनानि पिदधाति, तस्याः कूटाऽऽकारशालाया बहुमध्यदेशभागे तं प्रदीपं प्रदीपयेत् ततः स्वलु स प्रदीप तां कूटाऽऽकारशालाम् अन्तरन्तः-अवभासयति -उद्योतयति तापयति-प्रभासयति, नो चैव -खलु -बहिः-अथ-खलु स-पुरुषः-तं-प्रदीपम्-ईहरकेण-पिदध्यात्, ततः-स खलु

पुरुष अग्नि और दीपक को लेकर उस कूटाकारशाल के भीतर घुसकर बिलकुल ठीक मध्यभाग में आकर खड़ा हो जाता है (तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइ णिच्छिड्डाइ दुवारवयणाइ पिहेइ) फिर वह उस कूटाकारशाला के चारों ओर के सब दरवाजों को इस तरह से बन्द कर देता है कि जिससे उनके आपस में किंवाड इस प्रकार से सट जाते हैं कि उनमें जरासा भी छिद्र नहीं रहने पाता है इस तरह से दरवाजों को अच्छी तरह से बन्द कर (तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा) फिर वह उस कूटाकारशाला के बहुमध्य देशभाग में उस प्रदीप को प्रज्वलित करता है (तए णं से पईवे त कूडागारसाल अंतो२ ओभासइ) इस तरह वह दीपक उस कूटाकारशाला के पूरे भागको ही प्रकाशित करता है (उज्जोवेइ, तावइ पभासइ) उद्योतित करता है, तापित करता है एवं घटपटादि पदार्थों को दिखाने से उसे प्रभासित करता है (णो चेव णं बाहिं) उस कूटाकारशाला के बाहिरी भाग को वह न प्रकाशित करता है, न उद्योतित करता है, न तापित करता है और न घटपटादिकों को

प्रविशइ) હવે કોઈ પુરુષ અગ્નિ તેમજ દીપક લઈને તે કૂટાકારશાળાની અંદર પ્રવિષ્ટ થઈને એકદમ તેના મધ્યભાગમાં જઈને ઉભો થઈ જાય છે. (तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइ णिच्छिड्डाइ दुवारवयणाइ पिहेइ) પછી તે માણસ તે કૂટાકાર શાળાના ચારે તરફના બધા બારણાને એવી રીતે બંધ કરી દે છે તેના પરસ્પર એકદમ બંધ થવાથી કમાડોમાંથી નાનું સરખું પણ કાણું રહેતું નથી-(तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा) પછી તે માણસ તે કૂટાકારશાળાના બહુમધ્ય દેશભાગમાં તે દીપકને સળગાવે છે. (तए णं से पईवे त कूडागारसालं अंतो २ ओभासइ) આ પ્રમાણે તે દીપક તે કૂટાકાર શાળાના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે (उज्जोवेइ, तावइ पभासइ) ઉદ્યોતિત કરે છે, તાપિત કરે છે અને ઘટપટ વગેરે પદાર્થોને બતાવીને તેમને પ્રતિભાસિત કરે છે (णो चेव णं बाहिं) તે કૂટાકાર શાળાના બહારના ભાગને તે પ્રકાશિત કરતો નથી ઉદ્યોતિત કરતો નથી, સંતાપિત કરતો નથી અને

स प्रदीपः तद् इड्डुरकम् अन्तरन्तः अवभासयति४, नो चेव खलु इड्डुरकस्य बहिः, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालायाः बहिः। एवं गोकिलिञ्जेन, पक्षिपिट-केन, गण्डमाणिकया, आढकेन, अर्धाढकेन, प्रस्थकेन, अर्धप्रस्थकेन, कुडवेन, अर्द्धकुडवेन, चतुर्भागिकया, अष्टभागिकया, षोडशिकया, द्वात्रिंशत्कया,

---

दिखाने से उसे प्रभासित करता है। (अह ण से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तएण से पईवे तं इड्डुरयं अंतो२ ओभासेइ४) यदि वह पुरुष उस दीपक को किसी बडे ढक्कन से ढंक देता है–तो वह दीपक उस बडे ढक्कन के भीतरी भाग को ही प्रकाशित करता है यावत् उसे प्रभासित करता है (णो चेव ण इड्डुरगस्स बाहिं णो चेव ण कूडागारसालाए बाहिं) उस बडे ढक्कन के बाहिरी भाग को एवं कूटाकारशाला के बाह्यदेश को प्रकाशित यावत् प्रभासित नहीं करता है। (एवं गोकिलिंजेणं, पच्छिपिंडएणं, गडमणियाए, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं कुलवेण, चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए) इसी तरह उस दीप को गोकिलिञ्ज से–गाय का खाना जिसमें रखा जाता है ऐसी कुण्डिका से, तथा पक्षी के आकारवाले वंशशलाका निर्मित पात्र विशेष से, गण्ड-मणिका से–धान्य नापनिका से, आढक से, अर्धाढक से, प्रस्थक से, अर्धप्रस्थक से, कुडवसे, अर्धकुडव से, न सब देश विशेष में प्रसिद्ध धान्यमापक पात्र विशेषों से ढक देता है तथा चतुर्भागिका से, अष्टभागिका

ઘટપટ વગેરે પદાર્થોને બતાવીને તેમને-પ્રતિભાષિત પણ કરતો નથી. (अहं णं से पुरिसे तं पईवं इड्डुरएणं पिहेज्जा, तए ण से पईवे तं इड्डुरयं अंतो२ ओभासेइ ४) હવે જો તે પુરૂષ તે દીપકને મોટા ઢાંકણાથી ઢાંકી દે તો તે દીપક તે મોટા ઢાંકણાના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે, યાવત્ તેને પ્રતિભાસિત કરે છે (णो चेव णं इड्डुरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं) તે મોટા ઢાંકણાના બહારના ભાગને તેમજ તે કૂટાકાર શાળાના બાહ્ય પ્રદેશને પ્રકાશિત યાવત્ તેને પ્રતિભાસિત કરતો નથી (एवं गोकिलिंजेणं पच्छिपिंडएणं, गंड-मणियाए, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं, कुलवेण, चाउ-ब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए) આ પ્રમાણે તે માણસ તે દીપકને ગોકિ-લિંજથી-ગાયને જેમાં ખાણુ મૂકવામાં આવે છે એવી કુંડીથી, તેમજ પક્ષીના આકારવાળા વંશ શલાકાનિર્મિત પાત્ર વિશેષથી, ગંડ મણિકાથી–ધાન્ય માપનિકાથી, આઢકથી, અર્દ્ધાઢકથી, પ્રસ્થકથી, અર્ધપ્રસ્થકથી, કુડવથી, અર્ધકુડવથી, આ બધા દેશ વિદેશમાં પ્રસિદ્ધ ધાન્યમાપક પાત્ર વિશેષોથી તેને ઢાંકી દે છે તેમજ ચતુર્ભાગીકાથી,

विशति, तस्याः कूटाकारशालायाः सर्वतः समन्तात् घननिचितनिरन्तराणि निश्छिद्राणि द्वारवदनानि पिदधाति, तस्या कूटाऽऽकारशालाया बहुमध्यदेशभागे तं प्रदीपं प्रदीपयेत्, ततः खलु स प्रदीपः तां कूटाऽऽकारशालाम् अन्तरन्तः-अवभासयति - उद्योतयति तापयति प्रभासयति, नो चैव -खलु-बहिः-अथ खलु स-पुरुषः-तं-प्रदीपम्-इड्डरकेन-पिदध्यात्,-ततः-खलु-

पुरुष अग्नि और दीपक को लेकर उस कूटाकारशाला के भीतर घुसकर बिलकुल ठीक मध्यभाग में आकर खडा हो जाता है (तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइं णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) फिर वह उस कूटाकारशाला के चारों ओर के सब दरवाजों को इस तरह से बन्द कर देता है कि जिससे उनके आपस में किंवाड इस प्रकार से सट जाते हैं कि उनमें जरासा भी छिद्र नहीं रहने पाता है इस तरह से दरवाजों को अच्छी तरह से बन्द कर (तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा) फिर वह उस कूटाकारशाला के बहुमध्य देशभाग में उस प्रदीप को प्रज्वलित करता है (तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो २ ओभासइ) इस तरह वह दीपक उस कूटाकारशाला के पूरे भागको ही प्रकाशित करता है (उज्जोवेइ, तावइ पभासइ) उद्योतित करता है, तापित करता है एवं घटपटादि पदार्थों को दिखाने से उसे प्रभासित करता है (णो चेव णं बाहिं) उस कूटाकारशाला के बाहिरी भाग को वह न प्रकाशित करता है, न उद्योतित करता है, न तापित करता है और न घटपटादिकों को

प्रविसइ) કોઈ પુરુષ અગ્નિ તેમજ દીપક લઈને તે કૂટાકારશાળાની અંદર પ્રવિષ્ટ થઈને બરાબર તેના મધ્યભાગમાં જઈને ઊભો થઈ જાય છે. (तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइं णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) પછી તે માણસ તે કૂટાકાર શાળાના ચારે તરફના બધા દ્વારોને એવી રીતે બંધ કરી દે છે કે તેના પરસ્પર બારણા એવી રીતે બંધ થઈ જાય છે કે તેમાં જરાપણ છિદ્ર રહેતું નથી. (तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा) ત્યાર પછી તે માણસ તે કૂટાકારશાળાના બહુમધ્ય દેશભાગમાં તે દીપકને પ્રગટાવે છે. (तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो २ ओभासइ) આ પ્રમાણે તે દીપક તે કૂટાકાર શાળાના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે, (उज्जोवेइ, तावइ पभासइ) ઉદ્યોતિત કરે છે, તાપિત કરે છે અને ઘટપટ વગેરે પદાર્થોને બતાવીને તેમને પ્રતિભાસિત કરે છે (णो चेव णं बाहिं) તે કૂટાકાર શાળાના બહારના ભાગને તે પ્રકાશિત કરતો નથી ઉદ્યોતિત કરતો નથી, તાપિત કરતો નથી અને

स प्रदीपः तद् इड्डरकम् अन्तरन्तः अवभासयति४, नो चैव खलु इड्डरकस्य बहिः, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालायाः बहिः। एवं गोकिलिञ्जेन, पच्छिपिटकेन, गण्डमाणिकया, आढकेन, अर्धाढकेन, प्रस्थकेन, अर्धप्रस्थकेन, कुडवेन, अर्द्धकुडवेन, चतुर्भागिकया, अष्टभागिकया, षोडशिकया, द्वात्रिंशत्कया,

दिखाने से उसे प्रभासित करता है। (अह ण से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तएणं से पईवे तं इड्डरयं अंतोर ओभासेइ४) यदि वह पुरुष उस दीपक को किसी बडे ढक्कन से ढक देता है-तो वह दीपक उस बडे ढक्कन के भीतरी भाग को ही प्रकाशित करता है यावत् उसे प्रभासित करता है (णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं) उस बडे ढक्कन के बाहिरी भाग को एवं कूटाकारशाला के बाह्यदेश को प्रकाशित यावत् प्रभासित नहीं करता है। (एवं गोकिलिंजेणं, पच्छिपिंडएणं, गडमणियाए, आढएणं, अद्धाढएण, पत्थएण, अद्धपत्थएणं कुलवेणं, चाउब्भाइयाए, अट्ठभाईयाए, सोलसियाए) इसी तरह उस दीप को गोकिलिञ्ज से-गाय को खाना जिसमें रखा जाता है ऐसी कुण्डिका से, तथा पक्षी के आकारवाले वंशशलाका निर्मित पात्र विशेष से, गण्डमणिका से-धान्य मापनिका से, आढक से, अर्धाढक से, प्रस्थक से, अर्धप्रस्थक से, कुडवसे, अर्धकुडव से, न सब देश विशेष में प्रसिद्ध धान्यमापक पात्र विशेषों से ढक देता है तथा चतुर्भागिका से, अष्टभागिका

(ઘટપટ વગેરે પદાર્થોને બતાવીને તેમને પ્રતિભાષિત પણ કરતો નથી. (अहं णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तए ण से पईवे तं इड्डरयं अंतोर ओभासेइ ४) હવે જો તે પુરૂષ તે દીપકને મોટા ઢાકણાથી ઢાંકી દે તો-તે દીપક તે મોટા ઢાકણાના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે, યાવત્ તેને પ્રતિભાસિત કરે છે (णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं) તે મોટા ઢાકણાના બહારના ભાગને તેમજ તે કૂટાકાર શાળાના બાહ્ય પ્રદેશને પ્રકાશિત યાવત્ તેને પ્રતિભાસિત કરતો નથી. (एवं गोकिलिंजेणं पच्छिपिडएणं, गंडमणियाए, आढएण, अद्धाढएण, पत्थएण, अद्धपत्थएणं, कुलवेण, चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए) આ પ્રમાણે તે માણસ તે દીપકને ગોકિલિંજથી-ગાયને જેમાં ખાણુ મૂકવામાં આવે છે એવી કુંડીથી, તેમજ પક્ષીના આકારવાળા વંશ શલાકાનિર્મિત પાત્ર વિશેષથી, ગંડ મણિકાથી-ધાન્ય માપનિકાથી, આઢકથી, અર્દ્ધાઢકથી, પ્રસ્થકથી, અર્ધપ્રસ્થકથી, કુડવથી, અર્ધકુડવથી, આ બધા દેશ વિદેશમાં પ્રસિદ્ધ ધાન્યમાપક પાત્ર વિશેષોથી તેને ઢાંકી દે છે તેમજ ચતુર્ભાગીકાથી,

चतुष्पष्टया, दीपचम्पकेन, ततः खलु स प्रदीपः दीपचम्पकस्य अन्तरन्तः अवभासयति४, नो चैव खलु दीपचम्पकस्य बहिः नो चैव खलु चतुष्षष्टिका, नो चैव खलु चतुष्षष्टिकाया बहि, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालां, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालाया बहिः, एवमेव प्रदेशिन्! जीवोऽपि यां यादृशीं पूर्वकर्मनिबद्धां बोन्दिं निर्वर्तयति तामसंख्येयैर्जीवप्रदेशैः सचित्तां करोति क्षुद्रिकां वा महतीं वा, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा अन्यो जीवः तदेव न्सछ१० ।सू १५२।

से, षोडशभागिका से इन सब चतुर्भागिका से चतुष्षष्टिकापर्यन्त के मगधदेशप्रसिद्ध रसमापक पात्रविशेषों से ढक देता है तथा दीप के ढकने से ढंक देता है (तए णं से पईवे दीवचम्पगस्स अंतो २ ओभासेइ) तो वह प्रदीप जिन २ से ढंका गया है उन्हीं २ के भीतरी को ही प्रकाशित करता है, उनके बाहिरी भाग को नहीं इसी तरह से वह दीपचम्पक के ही भीतरी भाग को प्रकाशित करता है, (णो चेव णं दीवचम्पगस्स बाहिं णो चेव णं चउसट्ठिय, नो चेव णं चउसट्ठियाए- बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं, कूडागारसालाए बाहिं) दीपचम्पक के बाहिरी भाग को नहीं–या दीपक के बाहिर के प्रदेश को नहीं, चतुष्षष्टिका को नहीं, चतुष्षष्टिका के बाहिर के प्रदेश को नहीं, कूटाकारशाला को, और कूटाकारशाला के बाहर के प्रदेश को नहीं प्रकाशित करता है। (एवामेव पएसी! जीवे वि जे जारिसए पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ)

આઠ ભાગીકાથી, ષોડશ ભાગીકાથી (બત્તીસિયાએ, ચઉસટ્ઠિયાએ દીવચંપએણ) બત્તીસિકાથી, ચતુષ્ષષ્ટિકાથી આ બધી ચતુર્ભાગિકાથી ચતુષ્ષષ્ટિકા પર્યન્તના મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ રસમાપક પાત્રવિશેષોથી ઢાંકી દે છે તેમજ દીપચંપકથી-દીપકના ઢાંકણાથી ઢાંકી દે છે (तए णं से पईवे दीवचम्पगस्स अंतो २ ओभासेइ) તો તે પ્રદીપ જે જે વસ્તુથી ઢાંકવામાં આવે છે તે તે વસ્તુના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે તેમના બહારના ભાગને પ્રકાશિત કરતો નથી. આ પ્રમાણે તે દીપચંપકના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે (णो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठिय, णो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं) દીપચંપકના બહારના ભાગને નહીં, કે દીપક ઢાંકણના બહારના પ્રદેશને નહીં, ચતુષ્ષષ્ટિકાને નહીં, ચતુષ્ષષ્ટિકાના બહારના પ્રદેશને નહીં કૂટાકાર શાળાને નહીં અને કૂટાકારશાળાના બહારના પ્રદેશને પ્રકાશિત કરતો નથી. (एवामेव-पएसी! जीवे वि जे जारिसए पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જીવ પણ પૂર્વ

टीका—'तए णं से पएसी राया' इत्यादि-ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-हे भदन्त! स शरीराद्भिन्नः जीवः नूनं-निश्चयेन हस्तिनः कुन्थोः-त्रीन्द्रियक्षुद्रप्राणिविशेषस्य च समः-तुल्यपरिमाण एव न न्यूनाधिकपरिमाणः ? इति प्रश्नः। केशी प्राह-हन्त! हे प्रदेशिन्!

इसी तरह से हे प्रदेशिन्! जीव भी पूर्वभवोपार्जित कर्मद्वारा निबद्ध जैसे शरीर को उत्पन्न-प्राप्त करता है (तं असंखेज्जेहिं जीवपएसेहिं सचित्त करेइ खुड्डियं वा महालियं वा) चाहे वह छोटा हो या बडा उसे अपने असंख्यात प्रदेशों से सचित्त-जीव युक्त कर लिया करता है. (तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अण्णो जीवो तं चेव ण १०) इसलिये हे प्रदेशिन्! तुम इस बात पर विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है इत्यादि।

टीकार्थ—इस मूलार्थ के ही अनुरूप है-परन्तु जो विशेषता है-वह इस प्रकार से है-कुन्थु वह तीन इन्द्रियों वाला-ते इन्द्रिय जीव है. और हाथी पांच इन्द्रियों वाला-पचेन्द्रिय जीव है. जबकेशीकुमार श्रमणने १५१वे सूत्र में प्रदेशी से ऐसा कहा कि वायुकायिक जीव में और तुम्हारे जीव में समानता है-तो प्रदेशी के चित्त मे ऐसी आशका का उठना स्वभाविक ही है कि कुन्थु के जीव में और हाथी के जीव में समानता है या असमानता है? इसीलिये उसने ऐसा प्रश्न पूछा है. इसके समाधान में केशीने उससे ऐसा कहा कि हे प्रदेशिन्! जीव में-चाहे वह

ભવોપાર્જિત કર્મદ્વારા નિબદ્ધ શરીરને ઉત્પન્ન-પ્રાપ્ત કરે છે (तं असंखेज्जेहिं जीवपएसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा) પછી ભલે તે પછી નાનું હોય કે મોટું-લઘુ હોય કે મહાન તેને પોતાના અસંખ્યાત પ્રદેશોથી સચિત્ત જીવયુક્ત કરી લે છે (तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अण्णोजीवो तं चेव णं १०) એટલા માટે હે પ્રદેશિન્! તમે મારી આ વાત પર વિશ્વાસ કરો-કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે વગેરે।

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે પણ સવિશેષ સ્પષ્ટતા આ પ્રમાણે છે-કુંથુ-એ ત્રણ ઇન્દ્રિયો યુક્ત-તે ઇન્દ્રિય જીવ છે અને હાથી પાંચ ઇન્દ્રિયો યુક્ત પચેન્દ્રિય જીવ છે જ્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે ૧૫૧ મા સૂત્રમા પ્રદેશીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે વાયુકાયિક જીવમા અને તમારા જીવમા સમાનતા છે તો પ્રદેશીને ચિત્તમા એવી આશકા ઉદ્ભવે કે કુંથુના જીવમા અને હાથીના જીવમા સમાનતા છે કે અસમાનતા? એ વાત સ્વાભાવિક છે એટલા માટે જ તેણે આ જાતનો પ્રશ્ન કર્યો છે એના સમાધાનમા કેશીએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પ્રદેશિન્!

चतुष्पष्ट्या, दीपचम्पकेन, ततः खलु स प्रदीपः दीपचम्पकस्य अन्तरन्तरं अवभासयति४, नो चैव खलु दीपचम्पकस्य बहिः नो चैव खलु चतुष्षष्टिका, नो चैव खलु चतुष्षष्टिकाया बहिः, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालां, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालाया बहिः, एवमेव प्रदेशिन्! जीवोऽपि यां यादृशीं पूर्वकर्मनिबद्धां बोन्दिं निर्वर्तयति तामसंख्येयैर्जीवप्रदेशैः सचित्तां करोति क्षुद्रिकां वा महतीं वा, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा अन्यो जीवः तदेव खलु१० ॥सू० १५२॥

रिसे, षोडशभागिका से इन सब चतुर्भागिका से चतुष्षष्टिकापर्यन्त के मगधदेशप्रसिद्ध रसमापक पात्रविशेषों से ढक देता है तथा दीप के ढंकने से ढक देता है (तए णं से पईवे दीवचंपगस्स अंतो २ ओभासेइ) तो वह प्रदीप जिन २ से ढंका गया है उन्हीं २ के भीतरी को ही प्रकाशित करता है, उनके बाहिरी भाग को नहीं इसी तरह से वह दीपचम्पक के ही भीतरी भाग को प्रकाशित करता है, (णो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं णो चेव णं चउसट्ठियं, णो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं, कूडागारसालाए बाहिं) दीपचम्पक के बाहिरी भाग को नहीं-या दीपक के बाहिर के प्रदेश को नहीं, चतुष्षष्टिका को नहीं, चतुष्षष्टिका के बाहिर के प्रदेश को नहीं, कूटाकारशाला को, और कूटाकारशाला के बाहर के प्रदेश को नहीं प्रकाशित करता है। (एवामेव पएसी! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ)

આઠ ભાગીકાથી, સોળ ભાગીકાથી (બત્તીસિયાए, चउसट्ठियाए दीवचंपएणं) બત્તીસિકાથી, ચતુષ્ષષ્ટિકાથી આ બધી ચતુર્ભાગિકાથી ચતુષ્ષષ્ટિકા પર્યન્તના મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ રસમાપક પાત્રવિશેષોથી ઢાંકી દે છે તેમજ દીપચંપકથી-દીપકના ઢાંકણાથી ઢાંકી દે છે (तए णं से पईवे दीवचंपगस्स अंतो २ ओभासेइ) તો તે પ્રદીપ જે જે વસ્તુથી ઢાંકવામાં આવે છે તે તે વસ્તુના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે તેમના બહારના ભાગને પ્રકાશિત કરતો નથી. આ પ્રમાણે તે દીપચંપકના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે (णो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं, णो चेव णं चउसट्ठियं, णो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं) દીપચંપકના બહારના ભાગને નહીં કે દીપકચંપકના બહારના પ્રદેશને નહીં ચતુષ્ષષ્ટિકાને નહીં, ચતુષ્ષષ્ટિકાના બહારના પ્રદેશને નહીં કૂટાકાર શાળાને નહીં અને કૂટાકારશાળાના બહારના પ્રદેશને પ્રકાશિત કરતો નથી. एवामेव-पएसी! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं (णिव्वत्तेइ) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જીવ પણ પૂ

गम्भीरा, अथ खलु कोऽपि पुरुषः 'ज्योतिः-अग्निं च दीपं च गृहीत्वा तां-कूटाकारशालाम्, अन्तरतः-अत्यन्ताभ्यन्तरे अनुप्रविशति। तस्याः कूटाकारशालायाः सर्वतः-सर्वदिक्षु, समन्तात्-सर्वविदिक्षु घननिचितनिरन्तराणि-घन-निविड यथा स्यात्तथा निचितानि-संघातितानि निरन्तराणि-अन्तररहितानि तानि तथा, अस्य 'द्वारवदनानी'-त्यनेन सम्बन्धः, पुनः निश्छिद्राणि छिद्ररहितानि द्वारवदनानि-द्वारमुखानि, पिदधाति-आच्छादयति, तस्याः-कूटाऽऽकारशालायाः बहुमध्यदेशभागे-अत्यन्तमध्यप्रदेशे तं प्रदीपं प्रदीपयेत्-प्रज्वालयेत्, ततः खलु स प्रदीपः तां कूटाकारशालाम् अन्तरन्तः-सर्वान्तर्भागे-सर्वान्तर्भागावच्छेदेनेति भावः। अवभासयति-प्रकाशयति, उद्द्योतयति-उत्कर्षेण प्रकाशयति, तापयति-संतप्तां करोति प्रभासयति-घटपटादिदर्शनया प्रकर्षेण प्रकाशमानां करोति, किन्तु बहिः-कूटाकारशालाया-बहिर्भागं-नो चैव-नैव-अवभासयति-उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति। अथ खलु स पुरुषः तं प्रदीपम् इड्डरकेण-महापिटकेन-आवरणविशेषेण पिदध्यात्-आच्छादयेच्चेत्, ततः खलु सः-पिहितः प्रदीपः तत्-प्रदीपपिधानभूतम् इड्डरकम् अन्तः आभ्यन्तरावच्छेदेन अवभासयति किन्तु इड्डरकस्य बहिः-बहिःप्रदेशं नो चैव-नैव खलु अवभासयति तथा कूटाकारशालायाः बहिः नो चैव अवभासयति, एवम्-अनेन प्रकारेण गोकिलिंजेन-गोकिलिञ्जं-गवां भक्ष्यस्थापनकुण्डिका, तेन, तथा पक्षिपिटकेन-पक्षिपिटक-पक्ष्याकारो वंशशिलाकानिर्मितपात्रविशेषः, तेन, तथा गण्डमाणिकाया-गण्डमाणिका-धान्यमापनिका, तया, आढकेन, अर्धाढकेन, प्रस्थकेन, अर्धप्रस्थकेन, कुडवेन, अर्धकुडवेन, आढकादारभ्यार्धकुडवपर्यन्तानि धान्यमापकानि देशविशेषप्रसिद्धानि पात्रविशेषाणि तैः प्रदीपं पिदध्यादिति पूर्वेण सम्बन्धः, तया चतुर्भागिकया, अष्टभागिकया षोडशिकया द्वात्रिंशत्कया चतुष्षष्टिकया-चतुर्भागिकादि-चतुष्षष्टिकापर्यन्ता मगधदेशप्रसिद्धा एव रसमापकपात्रविशेषास्तैः प्रदीपं पिदध्यादिति पूर्वेणान्वयः, एवं-दीपचम्पकेन-दीपपिधानेन प्रदीपं पिदध्यादिति पूर्वेणान्वयः, ततः खलु सः-पिहितः प्रदीपः दीप-

---

जैसे दीप का एक कोठे (एक घर) में रख दिया जावे तो वह उस कोठे भर को जहां तक उसका प्रकाश फैल सकता है प्रकाशित करता है और उसी दीपक को यदि मिट्टी के छोटे वर्तन के अन्दर बन्द कर रख दिया

દીપકને એક ઘરમા મૂકવામાં આવે તો તે સંપૂર્ણ ઘરને જ્યા સુધી તેનો પ્રકાશ જઈ શકે ત્યાં સુધી પ્રકાશિત કરે છે અને તેજ દીપકને જો માટીના નાના વાસણમાં અંદર મૂકવામા આવે તો તે તેના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે. વગેરે વગેરે.

हस्तिनः कुन्थोश्च जीवः सम एव। प्रदेशी कथयति-हे भदन्त! तत्र-हस्ति-कुन्थ्वोर्मध्ये हस्तित-हस्तिनमपेक्ष्य, अत्र ल्यब्लोपे कर्मणि पञ्चमी कुन्थुः नूनं-निश्चयेनाल्पकर्मतर -अल्पतरपाऽऽयुरादिरूपकर्मवान् एव, अल्पक्रियतरः-अल्पतरकायिकादिक्रियावान् एव, अल्पास्रवतरः-अल्पस्यमाणोविपातादिकर्मास्रववान् एव, एवम्-अनेन प्रकारेण अल्पाऽऽहारनीहारोच्छ्वासनिःश्वासर्द्धि कतरः अल्पद्युतिकतरः अल्पशब्दस्य सर्वत्र सम्बन्धात् अल्पाहारतर एव अल्प-नीहारतर एव अल्पोच्छ्वासतर एव अल्पर्द्धिकतर एव, अत्र ऋद्धिः परि-वारादिरूपा प्राह्या, अल्पद्युतिकतर एवेत्यथः, द्युतिश्च-शरीरकान्तिरूपा। एव-यथा-हस्तिनमपेक्ष्य कुन्थुरल्पतरकर्मत्वादिविशिष्ट उक्तस्तथा, कुन्थुतः-कुन्थुमपेक्ष्य हस्ती-महाकर्मतरः-अधिकायुरादिकर्मवान्, एव, महाक्रि-यतर यावत् यावत्-यावत्पदेन-महास्रवतर एव महानीहारतर एव महोच्छ्वा-सतर एव महर्द्धिकतर एव महाद्युतिकतर एव', इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः। इति प्रश्ने केशी प्राह-हन्त! प्रदेशिन्! हस्तितः कुन्थुरल्पकर्मतर एव कुन्थुतो वा हस्ती महाकर्मतर एव, तथैव-पूर्वोक्तमेव-कुन्थुपक्षे अल्पक्रियतर एव अल्पास्रवतरः हस्तिपक्षे-महाक्रियतर एव महास्रवतर एवेत्यादि बोध्यम्। इति हस्ति-कुन्थ्वोः परस्पर कर्मादिभेदं श्रुत्वा प्रदेशी तयोर्जीवसाम्ये कारणं पृच्छति-'कस्मात् खलु भदन्त! इत्यादि-हे भदन्त! कस्मात् कारणात् खलु हस्तिनः कुन्थोश्च जीवः सम एव!, केशी प्राह-हे प्रदेशिन्! तद् यथानाम-यथादृष्टान्तम् कूटाऽऽकारशाला-पर्वतशिखराकारा स्यात्, यावत्-याव-त्पदेन लिप्ता गुप्ता गुप्तद्वारेति पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, निर्वात-

कुन्थु का हो चाहे हाथी का हो सब में समानता है एक जीव में अस-ख्यात प्रदेश होते हैं इन प्रदेशों की अपेक्षा सब समान है कोई भी जीव ऐसा नहीं है कि जिसमें इन प्रदेशों की समानता न हो पूर्वो-पार्जित शरीर नाम कर्म आदि के द्वारा जिस जीव को जैसा शरीर प्राप्त होता है वह जीव उसमें अपने प्रदेशों को संकोच विस्तारवाला बना लेता है

જીવમાં-પછી ભલે તે કુંથુ નો હોય કે હાથીનો સમાનતા છે એક જીવમાં અસ-ખ્યાત પ્રદેશો હોય છે આ પ્રદેશોની અપેક્ષાએ આપણે વિચાર કરીએ તો બધા જીવો સમાન જ છે કોઈ પણ એવો નથી કે જેમાં આ પ્રદેશોની સમાનતા હોય નહિ પૂર્વોપાર્જિત શરીર નામકર્મ વગેરે વડે જે જીવને જેવું શરીર પ્રાપ્ત થાય છે તે જીવ તેમાં પોતાના પ્રદેશોને સંકોચ વિસ્તારયુક્ત બનાવી લે છે દાખલા તરીકે

वि एसा सण्णा जाव समोसरणं, त नो खलु अह बहुपुरिस-परपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि ॥ सू० १५३ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्—एवमवादीत् एव खलु भदन्त ! मम आर्यकस्य एषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा—तज्जीवस्तच्छरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, तदनन्तरं च खलु मम पितुरपि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम्। तदनन्तरं ममापि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम्, तत् नो खलु अहं बहुपुरुषपरम्परागतां कुलनिश्रितां दृष्टिं मोक्ष्यामि ॥ सू० १५३ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसिं कुमार-समणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा (एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) हे भदन्त मेरे आर्यक—पितामह की यह संज्ञाथी, यावत समवसरण था—कि वही जीव है वही शरीर है—जीव शरीर से भिन्न नहीं है शरीर जीव से भिन्न नहीं है (तयाणंतरंच णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं,) उनके बाद मेरे पिताकी भी ऐसी ही संज्ञा यावत् ऐसा ही समवसरण रहा, (तयाणंतरं च णं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरण तं नो खलु बहुपुरिसपरपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि) बाद में मेरी भी यही संज्ञा यावत ऐसा ही समवसरण है—अतः अनेक पुरुष परम्परा से चली आई हुई इस कुलाधीनमान्यता को नही छोड़ुंगा, इसलिये जीव और शरीर एक ही है भिन्न २ नहीं है।

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारબાદ (पएसी राया) પ્રદેશી રાજાએ (केसिं कुमार-समणं एवं वयासी) કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું-(एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) હે ભદંત ! મારા આર્યક—પિતામહની આ સંજ્ઞા હતી યાવત્ સમવરણ હતુ કે તેજ જીવ છે, તેજ શરીર છે, જીવ શરીર કરતા ભિન્ન નથી. (तयाणंतरं च णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं) ત્યાર પછી મારા પિતાની પણ એવી જ સંજ્ઞા યાવત્ એવુ જ સમવસરણ રહ્યું (तयाणतरं च णं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरणं तं नो खलु बहुपुरिस-परंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि) ત્યાર પછી મારી પણ એવી જ સંજ્ઞા યાવત્ સમોવસરણ છે એટલા માટે અનેક પુરૂષ પરંપરાથી ચાલી આવતી આ કુલા-ધીન માન્યતા ને હું ત્યજીશ નહીં એથી જીવ અને શરીર એકજ છે ભિન્નભિન્ન નથી.

प्रभापटस्य अन्तः-मध्यभागम् अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति नो चैव खलु दीपचम्पकस्य बहिः, नो चैव खलु चतुष्किकां नो चैव खलु चतुष्पष्टिकाया बहिः, एवं दीपचम्पकाच्छादितो दीपः, नो चैव खलु द्राविंशिकां, नो चैव खलु द्राविंशिकायाः बहिः, इत्यादि पश्चादानुपूर्वीक्रमेण यावत् नो चैव कूटाकारशालाम्, नो चैव कूटाकारशालाया बहिः अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति' इति योजना कार्या एवमेव-प्रदीपदृष्टान्तानुसारेण हे प्रदेशिन्! जीवोऽपि यां काञ्चिद्-यादृशीं-पूर्वकर्मनिबद्धां-पूर्वभवोपार्जितकर्मनिबद्धां बोन्दिं-तनुं निर्वर्तयति-उत्पादयति तां बोन्दिम् असंख्येयैः असंख्यातैः जीवप्रदेशैः सचित्तां-जीवयुक्तां करोति-सम्पादयति, तां बोन्दिं कीदृशीम्? इति जिज्ञासायामाह-'क्षुद्रिकाम्-अतिलघ्वीम्, महतीं-विशालाम् वा सचित्तां करोति' इति पूर्वेणान्वयः। तत्-तस्मात्-दीपदृष्टान्तेन जीवस्य पूर्वभवकृतकर्मनिबद्धातिलघुमहाशरीरानुप्रवेशनकारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने श्रद्धां कुरु, यथा-अन्यो जीवः अन्यत्-पूर्वोक्तमेव अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः तत् शरीरम्, इति। ॥ सू० १५२ ॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-एवं खलु भंते! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तयाणंतरं च णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं। तयाणंतरं च णं मम

जाता है तो वह उसके भीतरी भाग को ही प्रकाशित करता है आदि जो जिस प्रकार से दीपक के प्रकाश में संकोच विस्तार करने का स्वभाव है उसी प्रकार से जीव में भी अपने प्रदेशों को संकोच विस्तार करने का स्वभाव है यही सब विषय इस सूत्र में स्पष्ट किया गया है 'हत्थीउ कुंथुं' इसका अर्थ है हस्ती की अपेक्षा करके। ऋद्धि शब्द से यहां परिवारादिरूप ऋद्धि गृहीत हुई है॥ सू० १५२ ॥

તે જેમ દીપકના પ્રકાશમાં સંકોચ વિસ્તાર કરવાનો સ્વભાવ છે તેમજ જીવમાં પણ પોતાના પ્રદેશોને સંકુચિત કે વિસ્તૃત કરવાનો સ્વભાવ છે આ બધી વાતો આ સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે 'હત્થીઉ કુંથૂ' એનો અર્થ 'હાથીની અપેક્ષાએ' એવો છે ઋદ્ધિ શબ્દથી અહીં પરિવારાદિરૂપ ઋદ્ધિ ગ્રહણ થઈ છે ॥સૂ૦ ૧૫૨॥

वि एसा सण्णा जाव समोसरणं, त नो खलु अह बहुपुरिस-परंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठि छंडेस्सामि ॥ सू० १५२ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्—एवमवादीत् एव खलु भदन्त ! मम आर्यकस्य एषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा—तज्जीवस्तच्छरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, तदनन्तरं च खलु मम पितुरपि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम्। तदनन्तरं ममापि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम्, तत् नो खलु अहं बहुपुरुषपरम्परागतां कुलनिश्रितां दृष्टिं मोक्ष्यामि ॥ सू० १५२ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसिं कुमार-समणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा (एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) हे भदन्त मेरे आर्यक—पितामह की यह संज्ञाथी, यावत समवसरण था—कि वही जीव है वही शरीर है—जीव शरीर से भिन्न नहीं है शरीर जीव से भिन्न नहीं है (तयाणंतरंच णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं,) उनके बाद मेरे पिताकी भी ऐसी ही संज्ञा यावत् ऐसा ही समवसरण रहा, (तयाणंतरं च णं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरण तं नो खलु बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठि छंडेस्सामि) बाद में मेरी भी यही संज्ञा यावत ऐसा ही समवसरण है—अतः अनेक पुरुष परम्परा से चली आई हुई इस कुलाधीनमान्यता को नही छोडुंगा, इसलिये जीव और शरीर एक ही है भिन्न २ नहीं है।

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યારબાદ (पएसी राया) પ્રદેશી રાજાએ (केसिं कुमार-समणं एवं वयासी) કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું-(एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) હે ભદંત ! મારા આર્યક-પિતામહની આ સંજ્ઞા હતી યાવત્ સમવસરણ હતુ કે તેજ જીવ છે, તેજ શરીર છે, જીવ શરીર કરતા ભિન્ન નથી. (तयाणंतरं च णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं) ત્યાર પછી મારા પિતાની પણ એવી જ સંજ્ઞા યાવત્ એવું જ સમવસરણ રહ્યું. (तयाणंतरं च णं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरणं तं नो खलु बहुपुरिस-परंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठि छंडेस्सामि) ત્યાર પછી મારી પણ એવી જ સંજ્ઞા યાવત્ સમોવસરણ છે એટલા માટે અનેક પુરૂષ પરંપરાથી ચાલી આવતી આ કુલાધીન માન્યતા ને હું ત્યજીશ નહીં એથી જીવ અને શરીર એકજ છે ભિન્નભિન્ન નથી.

चम्पकस्य अन्ता–मध्यभागम्, अवभासयति उद्योतयति तापयति प्रभासयति नो चैव खलु दीपचम्पकस्य बहिः, नो चैव खलु चतुर्भिकां नो चैव खलु चतुष्पष्टिकाया बहिः, एवं दीपचम्पकाच्छादितो दीपः, नो चैव खलु द्वात्रिंशिकां, नो चैव खलु द्वात्रिंशिकायाः बहिः, इत्यादि पश्चादानुपूर्वक्रमेण यावत् नो चैव कूटागारशालाम्, नो चैव कूटागारशालाया बहिः अवभासयति उद्योतयति तापयति प्रभासयति' इति योजना कार्या एवमेव–प्रदीपदृष्टान्तानुसारेण हे प्रदेशिन्! जीवोऽपि यां काञ्चित्–यादृशीं–पूर्वकर्मनिबद्धां–पूर्वभवोपार्जितकर्मनिबद्धां योन्दिं–तनुं निर्वर्तयति–उत्पादयति तां योन्दिम् असंख्येयैः असंख्यातैः जीवप्रदेशैः सचित्तां–जीवयुक्तां करोति–सम्पादयति, तां योन्दिं कीदृशीम्? इति जिज्ञासायामाह क्षुल्लिकाम्–मतिलघ्वीम्, महतीं–विशालाम् वा सचित्तां करोति इति पूर्वेणान्वयः। तत्–तस्मात्–दीपदृष्टान्तेन 'जीवस्य पूर्वभवकृतकर्मनिबद्धातिलघुमहोशरीरानुप्रवेशनकारित्वात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि–मद्वचने श्रद्धां कुरु, यथा–अन्यो जीवः तदेव–पूर्वोक्तमेव अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति। ॥ सू० १५२ ॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–एवं खलु भंते! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तयाणंतरं च णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं। तयाणंतरं च णं मम

जाता है तो यह उसके भीतरी भाग को ही प्रकाशित करता है आदि तो जिस प्रकार से दीपक के प्रकाश में संकोच विस्तार करने का स्वभाव है उसी प्रकार से जीव में भी अपने प्रदेशों को संकोच विस्तार करने का स्वभाव है यही सब विषय इस सूत्र में स्पष्ट किया गया है 'हस्तीउ कुंथू' इसका अर्थ है हस्ती की अपेक्षा करके। कुंथि शब्द से यहां परिवारादिरूप ऋद्धि गृहीत हुई है॥ सू० १५२ ॥

તે જેમ દીપકના પ્રકાશમાં સંકોચ વિસ્તાર કરવાનો સ્વભાવ છે તેમજ જીવમાં પણ પોતાના પ્રદેશોને સંકુચિત કે વિસ્તૃત કરવાનો સ્વભાવ છે આ બધી વાતો આ સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે 'हत्थीउ कुंथू' એનો અર્થ 'હાથીની અપેક્ષાએ' એવો છે ઋદ્ધિ શબ્દથી અહીં પરિવારાદિરૂપ ઋદ્ધિ ગ્રહણ થયુ છે ॥સૂ૦ ૧૫૨॥

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए जाव कंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं अयागरं पासंति, अयएणं सव्वओ समंता आइण्णं वित्थिणं सच्छडं उवच्छडं फुडं अणुगाढं पासंति, पासित्ता हट्ठा तुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति, एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! अयागरे इट्ठे कंते जाव मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अयभारगं बंधित्तएत्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं बंधंति अहाणुपुव्वीए संपत्थिया। तए णं से पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति, तउएणं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे इट्ठे जाव मणामे, अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भइ, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति अयभारं छड्डेंति तउयभारं बंधंति। तत्थ एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए तउयभारं बंधित्तए, तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे जाव सुबहुं अए लब्भइ, तं छड्डेहि, णं देवाणुप्पिया! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि। तए णं से पुरिसे एवं वयासी—दूराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, चिराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, अइगाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, असिढिलबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, धणियबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए। तए णं ते

टीका—'तए ण पएसी राया' इत्यादि ततः खलु प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणम्, एवमवादीत्—एव खलु हे भदन्त ! मम आर्यकस्य—पितामहस्य एषा संज्ञा यावत्—यावत्पदेन एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एषा हेतु एष उपदेश एप सकल्पः एषा तुला एतत् मानम् एतत् प्रमाणम्" इत्येषां पदानां सग्रहो बोध्यः समवसरणमासीत् । एषां व्याख्या—एकत्रिंशदधिकैकशततमसूत्रतो विज्ञेया । यथा —तज्जीव तच्छरीरम् नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, इति मम पितामहस्य मन्तव्यमासीत् । तदनन्तर च खलु मम पितुरपि एषा—अनन्तरोक्ता संज्ञा यावत् समवसरणमासीत् । तदनन्तर च खलु ममापि एषा संज्ञा यावत् समवसरणमस्ति, तत्—तस्मा: कारणात् खलु अह बहुपुरुषपरम्परागतां—पितामहादिपरम्परासमागतां कुलनिश्रितां कुलनिश्रया समागतां दृष्टिम् नो मोक्ष्यामि—न त्यक्ष्यामि— अपि तु तज्जीव स शरीरं नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति मतमेव स्वीकरिष्यामि ।।सू०१५२।।

मूलम्—तए ण केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—मा ण तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयहारए। के ण भंते ! से अयहारए ? । पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थिया अत्थगवेसिया अत्थलुद्धया अत्थकंखिया अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा ।

टीकार्थ—स्पष्ट है—'सन्ना जाव समोसरणं' में जो यह यावत् पद आया है उस से यहाँ—एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एषा रुचिः, एष हेतुः, एषः उपदेश, एषः संकल्प, एषा तुला, एतत् मानम् एतत् प्रमाण) इन पदों का सग्रह हुआ है इन सब पदों की व्याख्या तथा 'समवसरण' इस पद की व्याख्या १३० वें सूत्र में की जा चुकी है। अतः मैं जीव शरीर की अभिन्नता को ही स्वीकार करूंगा, भिन्नता को नहीं ॥ सू० १५२ ॥

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે. 'सन्ना जाव समोसरण' માં જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં 'एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एष उपदेशः एषः संकल्पः एषा तुला, एतत् मानम् एतत् प्रमाणम्" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ સર્વ પદોની વ્યાખ્યા ૧૩૦ માં સૂત્રમાં કરવામાં આવી છે. એથી હું જીવ તેમજ શરીરની અભિન્નતાને જ સ્વીકારીશ ભિન્નતાને નહિ. ।।સૂ ૧૫૨।।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए जाव किंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं अयागरं पासंति, अयएणं सव्वओ समंता आइण्णं वित्थिणं सच्छडं उवच्छडं फुडं अणुगाढं पासंति, पासित्ता हट्ठा तुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति, एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! अयागरे इट्ठे कंते जाव मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अयभारगं बंधित्तएत्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं बंधंति अहाणुपुव्वीए संपत्थिया। तए णं से पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगंमहं तउआगरं पासंति, तउएणं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे इट्ठे जाव मणामे, अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भइ, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति अयभारं छड्डेंति तउयभारं बंधंति। तत्थ एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए तउयभारं बंधित्तए, तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे जाव सुबहुं अए लब्भइ, तं छड्डेहि, णं देवाणुप्पिया! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि। तए णं से पुरिसे एवं वयासी–दूराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, चिराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, अइगाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, असिढिलबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, धणियबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए। तए णं ते

पुरिसा त पुरिस जाहे णो सचायंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णव णाहि य परूवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया। एवं तउआगरं रुप्पागरं, सुवण्णागरं रयणागरं, वइरागरं। तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति, वयरविक्किणणं करेंति, सुबहु दासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति, अट्ठतलमूसिय पासायवडिंसगे, करावेंति, ण्हाया कयबलिकम्मा कायकोउयमंगलपायच्छित्ता उप्पि पासायवरगया फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणा उवगिज्जमाणा उवलालिज्ज माणा इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्च णुभवमाणा विहरंति। तए णं से पुरिसे अयभारेण जेणेव सए नयरे तेणेव उवागच्छइ, अयभारगं गहाय अयविक्किणणं करेइ तंसि अप्पमोल्लंसि निट्ठियंसि खीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पि पासाय वरगए जाव विहरमाणे पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अहो! णं अहं अधण्णो अपुन्नो अकयत्थो अकयलक्खणो हिरिसिरिवज्जिओ हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे। जइ णं अहं मित्ताण वा णाईण वा नियगाण वा वयणं सुणेंतओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पि पासायवरगए जाव विहरेंतओ। से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मा तुमं पएसी! पच्छाणुताविए भविज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए॥ सू० १५४॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिं राजानमेवमवादीत् मा खलु त्वं प्रदेशिन् ! पश्चादनुतापिको भवेः, यथा वा स पुरुषोऽयोहारकः। कः खलु भदन्त ! सोऽयोहारकः ?। प्रदेशिन् ! ते यथा नामकाः केचित् पुरुषा अर्थार्थिकाः अर्थगवेषकाः अर्थलुब्धकाः अर्थकांक्षिणः अर्थपिपासिताः अर्थगवेषणाय विपुलं पणितभाण्डमादाय सुबहुभक्तपानपथ्यदनं गृहीत्वा एकां महतीम् अग्रामिकां छिन्नाऽऽपाता दीर्घाध्वान् अटवीमनुप्रविष्टाः। ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकाया याव।

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसीकुमारसमणे) केशीकुमार श्रमणने (पएसिरायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि—जहा व से पुरिसे अयहारए) हे प्रदेशिन ! तुम पश्चात्तापयुक्त मत बनो जैसा कि वह अयोहारक—लोहवणिक—पश्चात्तापयुक्त बना,

अब प्रदेशी उससे परिचय को जानने के अभिप्राय से पूछता है (के णं भंते ! से अयहारए) हे भदन्त ! वह अयोहारक कौन था ? इस पर केशीकुमारश्रमण कहते हैं—(पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थिया अत्थगवेसिया अत्थलुद्धया, अत्थकंखिया, अत्थपिवासिया, अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अग्गामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा) हे प्रदेशिन ! अनिर्दिष्ट नामवाले कितनेक पुरुष जो कि धन के अर्थी थे, धन के गवेषक थे, धन के लोलुप थे, धनकी कांक्षा से युक्त थे, धनकी प्यासवाले थे, धनकी गवेषणा के लिये विपुल क्रयाणक-

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (केसीकुमारसमणे) केशी कुमारश्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं (मा णं तुमं पएसी ! पच्चाणुताविए भवेज्जासि—जहाव से पुरिसे अयभारए) हे प्रदेशिन् ! तमे पेला अयोहारक-लोह वणिक-नी जेम, पश्चात्ताप न करो. हवे प्रदेशी तेना संबंधमां बधी विगत जाणवा माटे आ प्रमाणे पूछे छे-(किं णं भंते ! से अयहारए) हे भदंत ते अयोहारक लोखंडनो वेपारी कोण हतो ? तेना जवाबमां केशी कुमार श्रमण कहे छे-(पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थिया अत्थगवेसिया अत्थलुद्धया, अत्थकंखिया, अत्थपिवासया, अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अग्गामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा) हे प्रदेशिन् ! अनिर्दिष्ट नामवाळा केटलाक पुरुषो के जेओ धनार्थी हता, धनना गवेषक हता, धनना लोलुप हता

अटव्या कश्चित् देशमनुप्राप्ताः सन्तः एक महान्तम् अयआकार पश्यति, अयसा सर्वत समन्तात् आकीर्णं विस्तीर्ण सच्छट उपच्छट स्फुटम् अनुगाढ पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः यावत् हृदया अन्योऽन्य शब्दयन्ति, एवमवादिषुः—एष खलु देवानुप्रियाः ! अयआकरः इष्टः कान्तः यावत् मनआम , तत् श्रेयः खलु देवानुप्रिया

वस्तु समूह को लेकर तथा साथ में पर्याप्त अशनपानरूप पाथेयलेकर एक विशाल अटवी में जो वसति से रहित थी, हिंसक जन्तुओं के भय से मनुष्यों का गमनागमनरूप सचार जिसमें बिलकुल नहीं था और दीर्घमार्गयुक्त भी था पहुँचे (तएण से पुरिसा तीसे अगमियाए अडवीए कचिदेस अणुप्पत्ता समाणा एग मह अयागर पासंति) इसके बाद वे पुरुष जब उस अग्रामिका, छिन्नापात-युक्ता एव दीर्घाध्वावाली अन्वी के और आगेके प्रदेश में आ चुके तब उन्होंने वहाँ पर एक लोहे की खान को देखा (अएण सव्वओ समता आइण्ण सच्छड उवच्छड फुडं अणुगाढ पासति] यह खान सब तरफ से लोहेस आकीर्ण बनी हुई थी सच्छन्न में नहीं थी बहुत विस्तारवाली थी समीचीन छटा—चाक-चिक्यवाली थी छटायुक्त थी स्फुटरूप में नहीं थी (पासित्ता हट्ठतुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति) इस लोह की खान देखकर वे बहुत अधिक हृष्ट एव तुष्ट यावत् हृदयवाले हुए और फिर उन्होंने आपस मे एक दूसरे को बुलाया (एव वयासी) बुलाकर ऐसा कहा (एस ण देवाणुप्पिया ! अयागरे इट्ठे कंते,

धननी ઇચ્છાવાળા યુક્ત હતા, ધનની તરસવાળા હતા ધનની ગવેષણા માટે વિપુલ કરિયાણા વસ્તુ સમૂહને લઈને તેમજ સાથે પર્યાપ્ત અશનપાનરૂપ પાથેય લઈને એક વિશાળ અટવીમાં-કે જે એકદમ નિર્જન હતી, હિંસક જન્તુઓના ભયથી માણસોની અવરજવર જેમાં સતત બંધ હતી અને દીર્ઘ માર્ગ યુક્ત હતી જઈ પહોંચ્યા. (त एणं ते पुरिसा तीसे अग्गामियाए अडवीए कंचिदेस अणुप्पत्ता समाणा एगं मह अयागर पासति) ત્યાર પછી તે માણસોને અગ્રા-મિકા છિન્નાપાત યુક્ત અને દીર્ઘાધ્વાવાળી અટવીની અંદર ખૂબ આગળ ગયા રહ્યા ત્યાં તેમણે લોખંડની મોટી ખાણ જોઈ (अयण्णं सव्वओ समंता आइण्णं विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अणुगाढं पासति) આ ખાણ ચોમેર લોખંડથી આકીર્ણ હતી. બહુ જ વિસ્તાર યુક્ત હતી. સમીચીન છટા એટલે કે ચાકચિક્ય વાળી હતી, છટાયુક્ત હતી. સ્પષ્ટરૂપથી દેખાતી હતી અને એક પુંજ રૂપમાં હતી છિન્નભિન્ન રૂપમાં ન હતી. (पासित्ता हट्ठतुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति) તે લોખંડની ખાણને જોઈને બહુજ વધારે હૃષ્ટતુષ્ટ યાવત હૃદયવાળા થયા અને પછી તેમણે પરસ્પર એકબીજાને બોલાવ્યા (एव वयासी) બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું- (एस णं देवाणुप्पिया ! अयागरे इट्ठे, कंते, जाव मणामे)

अस्माकम् अयोभारकं बन्धम्, इति कृत्वा अन्योऽन्यस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अयोभारं बध्नन्ति, यथाऽनुपूर्वि प्रस्थिताः । ततः खलु ते पुरुषाः अग्रामिकाः यावत अटव्याः किञ्चिद्देशेन अनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तं त्रप्वाकरं पश्यन्ति, त्रपुणा सर्वतः समन्तात् आकीर्णं तदेव यावत् शब्दयित्वा एवमवादिषुः-एष खलु देवानुप्रियाः! त्रप्वाकरः इष्टः यावत् मनओमः, अल्पेनैव त्रपुणा सुबहु अयो लभ्यते, तत श्रेयः

जाव मणामे] हे देवानुप्रियो ! यह लोहे की खान इष्ट है, यावत् मनोज्ञ है(तं सेयं खलु देवाणुप्पिया । अम्हं अयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टुअन्नमन्नस्स एयमट्टं पडि-सुणंति) अतः उचित है कि हम लोग इस लोहे के भार यहां से ले लेवें इस प्रकार विचार करके उन्होंने आपसके इस विचार को निश्चय का रूप दे दिया (अयभारं बंधेति) और लोहे को वहां से ले लिया (अहाणुपुव्विए संपत्थिया) और लेकर वहां से क्रमशः चल दिया (तए ण से पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए कंचिदेस अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति) इसके बाद वे चलते २ जब और अधिक आगे निकल गये तब उन्होंने उस अग्रामिक आदि विशेषणवाली अटवी में एक बहुत बडी त्रपु-रांगा की खान को देखा (तएणं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी) संतुष्ट यावत् हृदय वाले हुए बाद में उन्होंने आपस में एक दूसरे को बुलाया बुलाकर ऐसा कहा-(एस णं देवाणुप्पिया! तउआगारे इट्ठे जाव मणामे] हे देवानुप्रिया ! यह रांगा

ते લોખંડની ખાણ ઇષ્ટ છે, કાત યાવત્ મનોજ્ઞ છે. (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) એથી અમારા માટે આ વાત બરાબર છે કે અમે બધા આ લોખંડના ભારને અહીંથી લઈ જઈએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે પરસ્પર કરેલ આ વિચારને નિશ્ચયાત્મકરૂપ આપ્યું (अयभारं बंधंति) અને લોખંડને ત્યાંથી લઇ લીધું (अहाणुपुव्विए संपत्थिया) અને લઇને ત્યાંથી ક્રમશઃ આગળ ચાલતા થયા. (तए णं से पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए कचिदेस अणुपत्ता समाणा एग मह तउआगर पास ति) ત્યાર પછી તેઓ જતા જતા જ્યારે ખૂબ દૂર નીકળી ગયા ત્યારે તેમણે અગ્રામિકા વગેરે વિશેષણોથી યુકત અટવીમા એક બહુ વિશાળ ત્રપુ રાગા (કથીરની ખાણને જોઇ. (त एणं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव-जाघ सद्दावेत्ता एवं वयासी) તે રાગાની ખાણ ચોમેર રાગાથી આકીર્ણ રહી, યાવત્ એક પુંજ રૂપમાં હતી. આ ખાણને જોઇને તેઓ સર્વે ખૂબજ હૃષ્ટ અને સંતુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થયા ત્યાર પછી તેમણે એક બીજાને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું-(एस णं देवाणुप्पिया ! तउआगारे इट्ठे जाव मणामे) હે દેવા-

अन्यथा कश्चित् देशमनुप्राप्ताः सन्त एकं महान्तम् अयआकारं पश्यति, अयसा सर्वतः समन्तात् आकीर्णं विस्तीर्णं सच्छम् उपच्छटं स्फुटम् अनुगाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः यावत् हृदया अन्योऽन्य शब्दयन्ति, एवमवादिषुः—एष खलु देवानुप्रिया ! अयआकरः इष्टः कान्तः यावत् मनआमः, तत् श्रेयः खलु देवानुप्रिया

वस्तु समूह को लेकर तथा साथ में पर्याप्त अशनपानरूप पाथेयलेकर एक विशाल अटवी में जो वसति से रहित थी, हिंसक जतुओं के भय से मनुष्यों का गमनागमनरूप सचार जिसमें बिल्कुल नहीं था और दीर्घमार्गयुक्त थी आ पहुँचे (तए ण से पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए कचिदेस अणुपत्ता समाणा एगं मह अयागर पासंति) इसके बाद वे पुरुष जब उस अग्रामिका, छिन्नापात युक्ता एवं दीर्घाध्वावाली अटवी के और आगके प्रदेश में आ चुके तब उन्होंने वहां पर एक लोहे की खान को देखा (अयग सव्वओ समता आइण्ण सच्छं उवच्छड फुड अणुगाढ पासति] यह खान सब तरफ से लोहेसे आकीर्ण बनी हुई थी स्पष्टरूप में नहीं थी बहुत विस्तारवाली थी समीचीन छाया—चाकचिक्यवाली थी छायायुक्त थी स्पष्टरूप में नहीं थी (पासित्ता हट्ठतुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावे ति) इस लोहे की खान देखकर वे बहुत अधिक हृष्ट एव तुष्ट यावत् हृदयवाले हुए और फिर उन्होंने आपस मे एक दूसरे को बुलाया (एव वयासी) बुलाकर ऐसा कहा (एस ण देवाणुप्पिया ! अयागरे इट्ठे कंते,

धननी इच्छावाळा हता धननी तरसवाळा हता धननी गवेषणा माटे विपुल क्रयाणक वस्तु समूहने लइने तेमज साथे पर्याप्त अशनपानरूप पाथेय लइने एक विशाळ अटवीमां-के जे एकदम निर्जन हती, हिंसक जतुओना भयथी माणसोनी अवरजवर जेमा सदतर बंध हती अने दीर्घ मार्ग युक्त हती आई पहोंच्या (त एण त पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए कचिम्म अणुप्पत्ता समाणा एगं मह अयागारं पासति) त्यार पछी ते माणसोए ज्यारे ते अग्रामिका छिन्नापात युक्त अने दीर्घाध्वावाळी अटवीनी अदर खूब आगळ आवी गया त्यां तेमणे लोखंडनी मोटी खाण जोई (अयागं सव्वओ समता आइण्णं विच्छिण्णं सच्छई उवच्छड फुड अणुगाढं पासति) आ खाण चोमेर लोखडथी आकीर्ण हती. खूब ज विस्तार युक्त हती. समीचीन छुटा एटले के चाकचिक्य वाळी हती. छायायुक्त हती. स्पष्टरूपथी देखाती हती अने एक पुज रूपमां हती. छिन्नभिन्न रूपमा न हती. (पासित्ता हट्ठतुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति) ते लोखड नी खाणने जोईने खूब ज वधारे हृष्टतुष्ट यावत् हृदयवाळा थया अने पछी तेमणे परस्पर एकबीजाने बोलाव्या. (एव वयासी) बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं (एम ण देवाणुप्पिया ! अयागरे इट्ठे, कंते, जाव मणामे)

अस्माकम् अयोभारकं बद्धम्, इति कृत्वा अन्योऽन्यस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अयोभारं बध्नन्ति, यथाऽनुपूर्वि प्रस्थिताः। ततः खलु ते पुरुषाः अग्रामिकाः यावत अटव्याः किञ्चिद्देशम् अनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तं त्रप्वाकर पश्यन्ति, त्रपुणा सर्वतः समन्तात् आकीर्णं तदेव यावत् शब्दयित्वा एवमवादिषुः–एप खलु देवानुप्रियाः! त्रप्वाकरः इष्टः यावत् मनओमः, अल्पेनैव त्रपुणा सुबहु अयो लभ्यते, तत श्रेयः

जाव मणामे] हे देवानुप्रियो! यह लोहे की खान इष्ट है, यावत् मनोज्ञहै(तं सेयं खलु देवाणुप्पिया। अम्हं अयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टुअन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडि-सुणेंति) अतः उचित है कि हम लोग इस लोहे के भार यहां से ले लेवें इस प्रकार विचार करके उन्होंने आपसके इस विचार को निश्चय का रूप दे दिया (अयभारं बंधेति) और लोहे को वहां से ले लिया (अहाणुपुव्विए संपत्थिया) और लेकर वहां से क्रमशः चल दिया (तए ण से पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए कंचिदेस अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति) इसके वाद वे चलते २ जब और अधिक आगे निकल गये तब उन्होंने उस अग्रामिक आदि विशेपणवाली अटवी में एक बहुत बडी त्रपु–रांगा की खान को देखा (तएणं सव्वओ समंता आइण्ण तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी) संतुष्ट यावत् हृदय वाले हुए बाद में उन्होंने आपस में एक दूसरे को बुलाया बुलाकर ऐसा कहा–(एस णं देवाणुप्पिया! तउआगारे इट्ठे जाव मणामे] हे देवानुप्रिया! यह रांगा

ते લોખંડની ખાણ ઇષ્ટ છે, કાંત યાવત્ મનોજ્ઞ છે (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) એથી અમારા માટે આ વાત બરાબર છે કે અમે બધા આ લોખંડના ભારને અહીંથી લઈ જઈએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે પરસ્પર કરેલ આ વિચારને નિશ્ચયાત્મકરૂપ આપ્યું (अयभारं बंधंति) અને લોખંડને ત્યાંથી લઇ લીધું. (अहाणुपुव्विए संपत्थिया) અને લઇને ત્યાંથી ક્રમશઃ આગળ ચાલતા થયા. (तए णं से पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए कंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति) ત્યાર પછી તેઓ જતા જતા જ્યારે ખૂબ દૂર નીકળી ગયા ત્યારે તેમણે અગ્રામિકા વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત અટવીમાં એક બહુ વિશાળ ત્રપુ રાંગા (કથીરની ખાણને જોઇ. (त एणं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव-जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी) તે રાંગાની ખાણ ચોમેર રાંગાથી આકીર્ણ રહી, યાવત્ એક પુંજ રૂપમાં હતી. આ ખાણને જોઇને તેઓ સર્વે ખૂબજ હૃષ્ટ અને સંતુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થયા ત્યાર પછી તેમણે એક બીજાને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ–(एस णं देवाणुप्पिया! तउआगारे इट्ठे जाव मणामे) હે દેવા-

खलु देवानुप्रिया ! अस्माकम् अयोभारकं मुक्त्वा त्रपुकभारकं बद्धुम्, इतिकृत्वा अन्योऽन्यस्य अन्तिके एतमर्थ प्रतिश्रृण्वन्ति, अयोभारं मुञ्चन्ति, त्रपुकभारं बध्नन्ति। तत्र खलु एकः पुरुषः नो शक्नोति अयोभारं मोक्तुम् त्रपुकभारं बद्धुम्। ततः खलु ते पुरुषाः तं पुरुषमेवमवादिषुः–एवं खलु देवानुप्रिय ! अथाकरः यावत् सुबहुत्रपुः लभ्यते, तद् मुञ्च खलु देवानुप्रिय ! अयोभारकम्, त्रपुकभारकं बधान। ततः स पुरुषः एवमवादीत्–दूराऽऽहृतं मया देवानुप्रियाः ! अयः चिराऽऽहृतं मया

स्थान इष्ट यावत् मन आम-अभिराम होने से मन गम्य है (अप्पेण चेव तउएणं सुबहु अए लब्भइ) थोड़े से ही रांगा से बहुत अधिक लोहा हमें मिल सकता है (त सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति) अतः हमारी भलाई अब इसी में है कि हम इस लोह के भार को छोड़कर इस रांगा को यहां से बांध लें, इस प्रकार का विचार करके उन्होंने आपस के इस कृत विचार को निश्चय का स्थान दे दिया (अयभारं छड्डेंति, तउयभारं बंधेति) और लोहके भार को छोड़कर रांगा के भार को बांध लिया। (तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ, अयभारं छड्डेत्तए, तउयभारं बंधित्तए) परन्तु इनमें एक पुरुष ऐसा भी था–जो लोह के भार को छोड़ने में और रांगा के भार को ग्रहण करने में बांधने में असमर्थ था, अर्थात् वह ऐसा करना नहीं चाहता था (तएणं ते पुरिसा

दुप्रिय ! आ रांगानी खाण ईष्ट यावत् मन आम-अभिराम होवा बदल मनगम्य छे. (अप्पेण चेव तउएणं सुबहु अए लब्भइ) थोडा रांगाथी अमने घणुं लोख मळी शके छे (त सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति) एथी अमारा माटे ए ज सारुं छे के अमे लोखंडना भारने तजीने आ रांगाने अहींथी बांधी लईए आ प्रमाणे विचार करीने तेमणे परस्पर कृत आ विचारने निश्चयात्मकरूप आपी दीधुं (अयभारं छड्डेंति, तउयभारं बंधंति) अने लोखंडना भारने मूकीने रांगाना भारने साथे बांधी लीधो. (तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ, अयभारं छड्डेत्तए, तउयभारं बंधित्तए) पण तेमनामां एक माणस एवो पण हतो के जे लोखंडना भारने तजीने रांगाने ग्रहण करवानी वातने उचित मानतो न हतो. (तएणं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी) त्यारे ते पुरुषोए तेने आ प्रमाणे कह्युं– (एस णं देवाणुप्पिया ! तउआगरे जाव सुबहु अए लब्भइ) हे देवानुप्रिय ! आ रांगानी खाण छे ईष्ट कांत वगेरे विशेषणोथी युक्त छे थोडा रांगाथी पण आपणे घणुं लोखंड मेळवी शकीए तेम छीए. (तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया !

देवानुप्रियाः! अयः, अतिगाढबन्धनबद्धं मया देवानुप्रियाः! अयः, अशिथिल-बन्धनबद्धं मया देवानुप्रियाः! अयः, अत्यन्तगाढबन्धनबद्धं देवानुप्रियाः! अयः, नो शक्नोमि अयोभारकं त्यक्त्वा त्रपुकभारकं वर्द्धुम। ततः खलु ते पुरुषाः तं

तं पुरिसं एवं वयासी) तब उन पुरुषोंने उस पुरुष से ऐसा कहा—(एस णं देवाणुप्पिया! तउ आगरे जाव सुबहु अए लब्भइ) हे देवानुप्रिय! यह रांगे की खान है. इष्ट कान्त आदि विशेषणोंवाली है. थोडे से रांगा से ही बहुत अधिक लोहा प्राप्त किया जा सकता है। (तं छड्डेहि ण देवाणुप्पिया! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि) इसलिये! तुम हे देवानुप्रिय! इस लोहे के भार को छोड दो और रांगा के भार को बांध लो—लेलो (तएणं से पुरिसे एवं वयासी) तब उस पुरुपने ऐसा कहा (दूराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, चिराहडे मए, देवाणुप्पिया! अए अइगाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, असिढिलबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, धणियबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए) हे देवानुप्रियो! इसलोहके भारको मैं बहुत दूर से लाया हू, बहुत समय से इसे लादे हुए हू, हे देवानुप्रियो! मैने इसे बहुत ही गाढ बंधन से बांधा है अर्थात् बहुत अधिक कसकर बांधा हुआ है. अशिथिल बंधन से—अब खुल सके ऐसे बन्धन से नहीं बांधा है किन्तु हे देवानुप्रियो! मैने इस लोहे को प्रचुर बंधन से बांधा है, अतः अब मै अयोभार को छोडकर त्रपुक भारको ग्रहण करने के लिये समर्थ नहीं हू अर्थात् लोहे के भार को छोड कर रांगा के भार को नहीं लूं। (तएणं ते

अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि) એટલા માટે તમે હે દેવાનુપ્રિયો! આ લોખંડના ભારને મૂકી દો અને રાંગાના ભારને બાંધી લો. (तएणं से पुरिसे एवं वयासी) ત્યારે તે પુરૂષે આ પ્રમાણે કહ્યુ—(दूराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, चिराहडे मए, देवाणुप्पिया अए गाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, धणिअ-बंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, णो संचाएमि अयभारगं छडेत्ता तउय-भारगं बंधित्तए) હે દેવાનુપ્રિયો! આ લોખંડના ભારને હું બહુ જ દૂરથી લાવ્યો છું, ઘણા સમયથી મેં આને ઉપાડી રાખ્યો છે હે દેવાનુપ્રિયો! આને મેં સખત ગાઢ બંધન બાંધ્યો છે એટલે કે મેં આને કસીને બાંધ્યો છે હવે ખોલી શકાય એવા બંધનથી બાંધ્યો નથી પણ હે દેવાનુપ્રિયો! મેં આ લોખંડના ભારને પ્રચુર બંધનથી બાંધ્યો છે એટલા માટે હવે હું આ લોખંડના ભારને ત્યજીને ત્રપુકભારને ગ્રહણ કરવામાં સમર્થ નથી એટલે કે લોખંડના ભારને મૂકીને રાંગાના ભારને હવે હું ઉપાડીશ નહી. (तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएंति बहुहि

खलु देवानुप्रियाः! अस्माकम् अयोभारकं मुक्त्वा त्रपुकभारकं बद्धुम्, इतिकृत्वा अन्योऽन्यस्य अन्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अयोभारं मुञ्चन्ति, त्रपुकभारं बध्नन्ति। तत्र खलु एकः पुरुषो नो शक्नोति अयोभारं मोक्तुम् त्रपुकभारं बद्धुम्। ततः खलु ते पुरुषाः तं पुरुषमेवमवादिषुः—एतत् खलु देवानुप्रिय! त्रपुकाकरः यावत् सुबह्वयो लभ्यते, तद् मुञ्च खलु देवानुप्रिय! अयोभारकम्, त्रपुकभारकं बधान। ततः स पुरुषः एवमवादीत्—दूराऽऽहृतं मया देवानुप्रियाः! अयः चिराऽऽहृतं मया

स्थान इष्ट यावत् मन आम-अभिरुचिकर होने से मन गम्य है [अप्पेण चेव त उएण सुबहु अए लब्भइ) थोडे से ही रांगा से बहुत अधिक लोहा हमें मिल सकता है (तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति) अतः हमारी भलाई अब इसी में है कि हम इस लोहे के भार को छोडकर इस रांगा को गट्ठे से बांध ले, इस प्रकार का विचार करके उन्होंने आपस के इस कृत विचार को निश्चय का स्थान दे दिया। (अयभारं छड्डेति, तउयभारं बंधेति) और लोहके भार को छोडकर रांगा के भार को बांध लिया। (तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ, अयभारं छड्डेत्तए, तउयभारं बंधित्तए) परन्तु इनमें एक पुरुष ऐसा भी था—जो लोहे के भार को छोडने में और रांगा के भार को ग्रहण करने में बांधने में असमर्थ था, अर्थात् वह ऐसा करना नहीं चाहता था (तएणं ते पुरिसा

नुप्रियो! आ रांगानी खाण इष्ट यावत् मन आम-अभिरुचिकर होवा बदल मनगम्य छे (अप्पेण चेव तउएण सुबहु अए लब्भइ) थोडा रांगाथी अमने घणु लोख मळी शके छे (तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! अयभारगं, छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति) एथी अमारा माटे ए ज सारु छे के अमे लोखंडना भारने त्यजीने आ रांगाने गांठी थी बांधी लईए आ प्रमाणे विचार करीने तेमणे परस्पर कृत आ विचारने निश्चयरूप आपी दीधु (अयभारं छड्डेति, तउयभारं बंधति) अने लोखंडना भारने मूकीने रांगाना भारने साथे बांधी लीधो। (तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ, अयभारं छड्डेत्तए, तउयभारं बंधित्तए) पण तेमनामां एक माणस एवो पण हतो के जे लोखंडना भारने मूकीने रांगने ग्रहण करवानी वातने उचित मानतो न हतो। (तएणं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी) त्यारे ते पुरुषोए तेने आ प्रमाणे कह्यु—(एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे जाव सुबहु अए लब्भइ) हे देवानुप्रिय! आ रांगानी खाण छे इष्ट कांत वगेरे विशेषणोथी युक्त छे थोडा रांगाथी पण आपणे घणुं लोखंड मेळवी शकीए तेम छीए (तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया!

देवानुप्रियाः! अयः, अतिगाढबन्धनबद्धं मया देवानुप्रियाः! अयः, अशिथिलबन्धनबद्धं मया देवानुप्रियाः! अयः, अत्यन्तगाढबन्धनबद्धं देवानुप्रियाः! अयः, नो शक्नोमि अयोभारकं त्यक्त्वा त्रपुकभारकं बद्धुम। ततः खलु ते पुरुषाः तं

तं पुरिसं एवं वयासी) तब उन पुरुषोंने उस पुरुष से ऐसा कहा—(एस णं देवाणुप्पिया! तउ आगरे जाव सुबहु अए लब्भइ) हे देवानुप्रिय! यह रांगे की खान है. इष्ट कान्त आदि विशेषणोंवाली है. थोडे से रांगा से ही बहुत अधिक लोहा प्राप्त किया जा सकता है। (तं छड्डेहि ण देवाणुप्पिया! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि) इसलिये! तुम हे देवानुप्रिय! इस लोहे के भार को छोड दो और रांगा के भार को बांध लो—लेलो (तएणं से पुरिसे एवं वयासी) तब उस पुरुषने ऐसा कहा (दूराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, चिराहडे मए, देवाणुप्पिया! अए अइगाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, असिढिलबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, धणियबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए) हे देवानुप्रियो! इसलोहके भारको मैं बहूत दूर से लाया हू, बहुत समय से इसे लादे हुए हूं, हे देवानुप्रियो! मैंने इसे बहुत ही गाढ बंधन से बांधा है अर्थात् बहुत अधिक कसकर बांधा हुआ है. अशिथिल बंधन से—अब खुल सके ऐसे बन्धन से नहीं बांधा है किन्तु हे देवानुप्रियो! मैंने इस लोहे को प्रचुर बंधन से बांधा है, अतः अब मैं अयोभार को छोडकर त्रपुक भारको ग्रहण करने के लिये समर्थ नहीं हूं अर्थात् लोहे के भार को छोड कर रांगा के भार को नहीं लूं। (तएणं ते

अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि) એટલા માટે તમે હે દેવાનુપ્રિયો! આ લોખંડના ભારને મૂકી દો અને રાંગાના ભારને બાંધી લો. (तएणं से पुरिसे एवं वयासी) ત્યારે તે પુરુષે આ પ્રમાણે કહ્યું—(दूराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, चिराहडे मए, देवाणुप्पिया अए गाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, धणिअबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए) હે દેવાનુપ્રિયો! આ લોખંડના ભારને હું બહુ જ દૂરથી લાવ્યો છું, ઘણા સમયથી મેં આને ઉપાડી રાખ્યો છે હે દેવાનુપ્રિયો! આને મેં સખત ગાઢ બંધન બાંધ્યો છે એટલે કે મેં આને કસીને બાંધ્યો છે હવે ખોલી શકાય એવા બંધનથી બાંધ્યો નથી પણ હે દેવાનુપ્રિયો! મેં આ લોખંડના ભારને પ્રચુર બંધનથી બાંધ્યો છે એટલા માટે હવે હું આ લોખંડના ભારને ત્યજીને ત્રપુકભારને ગ્રહણ કરવામાં સમર્થ નથી એટલે કે લોખંડના ભારને મૂકીને રાંગાના ભારને હવે હું ઉપાડીશ નહીં. (तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएंति बहुहि

पुरुष यदा नो शक्नुवन्ति बहुभि आख्यापनाभिश्च प्रज्ञापनाभिश्च प्ररूपणाभिश्च आख्यापयितु वा प्रज्ञापयितु वा प्ररूपयितु वा तदा यथाऽऽनुपूर्व्या संप्रस्थिताः। एव ताम्राऽऽकर रूप्याऽऽकर सुवर्णाऽऽकर वज्राऽऽकर। तत खलु ते पुरुषा यत्रैव स्वानि स्वानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति, वज्रविक्रयण कुर्वन्ति, सुबहु

पुरिसा त पुरिस आहे णो संचायंति बहूहिं आघवणाहि य, पण्णवणाहि य, परूवणाहि य, आघविसए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) तब उन पुरुषों ने जब कि उसे अनेक दृष्टान्तरूप आख्यापनाओं द्वारा, हेयोपादेय-प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओं द्वारा, तथा यथार्थ स्वरूपनिरूपक प्ररूपणाओं द्वारा समझाया परन्तु वह नहीं समझा, वहां से आगे क्रमशः प्रयाण करना प्रारम्भ कर दिया (एव तंबागरं, रुप्पागरं, सुवण्णागरं, वइरागरं) ज्यों २ वे आगे चले त्यों उन्होंने वैसे २ ताम्र की खान को, रूप्य की खान को सुवर्ण की खान को, रत्न की खान को और हीर की खान को देखा (तएण ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) वहां २ से अल्प मूल्य की उन २ ताम्रादिरूप वस्तुओं का परित्याग करते हुए और लोह भार ग्रहण करने में ही आदर बुद्धिवाले बने हुए उस पुरुष को उन २ वस्तुओं के भरने के विषय में समझान पर भी उसकी हठाग्रहिता को छुड़वाने में असमर्थ बने हुए वे सब पुरुष जहां अपने २ जनपद-देश थे और उनमें जहां २ अपने २ नगर थे वहां पर वज्रमणियों को लिये हुए आये (वइरविक्किणणं करेंति) वहां

आघ णाहि य पण्णवणाहि य, परूवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा, तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) ત્યાર પછી તે પુરૂષોએ ઘણાં દૃષ્ટાંત રૂપ આખ્યાપનાઓ દ્વારા હેયોપાદેય પ્રતિબોધક પ્રજ્ઞાપનાઓ દ્વારા, તેમજ યથાર્થ સ્વરૂપ નિરૂપક પ્રરૂપણાઓ દ્વારા સમજાવ્યો પણ તે માન્યો નહિ ત્યાંથી તેઓએ ક્રમશઃ ચાલવા માંડયું (एव तंबागरं, रुप्पागरं, सुवण्णागरं, रयणागरं, वइरागरं) જેમ જેમ તેઓ આગળ વધતા ગયા તેમ તેમ તેમણે તાંબાની ખાણોને ચાંદીની ખાણોને, સુવર્ણની ખાણોને રત્નની ખાણોને અને હીરાઓની ખાણોને જોઈ (तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) ત્યાંથી અલ્પમૂલ્યની તે તામ્રાદિ વસ્તુઓને મૂકીને અને લોહભાર ગ્રહણ કરવામાં જ પ્રવૃત્ત થયેલા તે માણસને તેઓએ મૂલ્યવાન વસ્તુઓને લેવા માટે આગ્રહ કર્યો છતાંએ તેના હઠાગ્રહિતાને છોડાવવામાં અતે નિષ્ફળ ગયા અને આમ તેઓ બધા જ્યાં પોતપોતાનો જનપદ-દેશ હતો અને તેમાં પણ જ્યાં પોતપોતાનું નગર હતું ત્યાં વજ્રમણિઓ વગેરે લઈ પહોંચી ગયા (वइरविक्किणणं करेंति)

दासीदासगोमहिषगवेलकं गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रितप्रासादावतंसकान् कारयन्ति, स्नाताः कृतबलिकर्माणः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः उपरिप्रासादवरगताः स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धकैर्नाटकैर्वरतरुणीसंप्रयुक्तैरुपनर्त्यमाना उपगीयमानाः उपलाल्यमानाः इष्टान् शब्द-स्पर्श-रसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो

आकरके उन्होंने वज्रमणियो का विक्रय किया. (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) और उसे प्राप्त द्रव्य से अनेक दासी, दास, गो महिष तथा गवेलको को खरीदा अर्थात् इनका संग्रह किया (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेति) और आठ खण्डों से सुशोभित ऊंचे २ श्रेष्ठ प्रासादो का निर्माण कराया (ण्हायाकयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करके बलिकर्म—वायसादिको अन्नादि का भाग देने रूप बलिकर्म करके एवं कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त करके वे उन (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादों के ऊपर ही रहते (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) और वहीं रहकर वे अतिवेग से ताडित किये गये मृदङ्गों के निनादों से तथा सुन्दर २ तरुणियों द्वारा अभिनीत किये गये बत्तीस प्रकार के नाटकों से (उवणच्चिज्जमाणा) उपनर्त्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान और उपलाल्यमान होते हुए (इट्ठ सद्दफरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यसंबधी कामभोगों को भोगते २ आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करने लगे (तएणं से

त्यां पहोंचीने तेमणे वज्रमणिओनुं वेचाणुं कर्युं (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) अने जे द्रव्य मळ्युं तेनाथी घणा दासी, दास, गो, महिष तेमज गवेलकोनी खरीदी करी. एटले के एमनो संग्रह कर्यो. (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेंति) अने आठ माळाओथी सुशोभित ऊंचा ऊंचा श्रेष्ठ प्रासादोनुं निर्माण कराव्यूं (ण्हाया कयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करीने, बलिकर्म-कागडा वगेरेने अन्न वगेरेनो भाग आपीने अने कौतुक मंगल रूप प्रायश्चित्त करीने तेओ ते (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादोनी उपर ज रहेवा लाग्या (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) अने त्यां ज रहीने तेओ अतिवेगथी प्रताडित करेला मृदंगोना निनादोथी तेमज सुंदर सुंदर तरुण स्त्रीओ द्वारा अभिनीत करायेल बत्रीस प्रकारना नाटकोथी (उवणच्चिज्जमाणा) उपनृत्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान अने उपलाल्यमान थता (इट्ठे सद्द फरिस—रस—रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) ईष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध आ पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोनो उपभोग करता आनंदपूर्वक

पुरुष यदा नो प्रसन्नुवन्ति बहुभिः आख्यापनाभिश्च प्रज्ञापनाभिश्च प्ररूपणाभिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा तदा यथाऽऽनुपूर्व्या संप्रस्थिता। एव ताम्राऽऽकरं रूप्याऽऽकरं सुवर्णाऽऽकरं वज्राऽऽकरं । ततः खलु ते पुरुषा यत्रैव स्वानि स्वानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति, वज्रविक्रयणं कुर्वन्ति, सुबहु

पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य, पण्णवणाहि य, परूवणाहि य, आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) तब उन पुरुषों ने जब कि उस अनेक दृष्टान्तरूप आख्यापनाओं द्वारा, हयोपादेय–प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओं द्वारा, तथा यथार्थ स्वरूपनिरूपक प्ररूपणाओं द्वारा समझाया परन्तु वह नहीं समझा, वहां से आगे क्रमशः प्रयाण करना प्रारंभ कर दिया (एवं तंबागरं, रुप्पागरं, सुवण्णागरं, वइरागरं) ज्यों २ वे आगे चले इन्होंने वैसे २ ताम्र की खान को, रूप्य की खान को सुवर्ण की खान को, रत्न की खान को और हीरे की खान को देखा (तएणं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) वहां २ से अल्प मूल्य की उन २ ताम्रादिरूप वस्तुओं का परित्याग करते हुए और लोहभार ग्रहण करने में ही आदर बुद्धिवाले बने हुए उस पुरुष को उन २ वस्तुओं के भरने के विषय में समझाने पर भी उसकी हठग्राहिता को छुड़वाने में असमर्थ बने हुए वे सब पुरुष जहां अपने २ जनपद–देश थे और उनमें जहां २ अपने २ नगर थे वहां पर वज्रमणियों को लिये हुए आये (वइरविक्किणणं करेंति) वहां

आघवणाहि य पण्णवणाहि य, परूवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा, तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) त्यार पछी ते पुरुषोએ घणां दृष्टांतरूप आख्यापनाओ द्वारा हेयोपादेय प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओ द्वारा, तेमज यथार्थ स्वरूप निरूपक प्ररूपणाओ द्वारा समजाव्यो, पण ते मान्यो नहि त्यांथी बधाओએ क्रमशः आगळ वधवा मांड्युं (एवं तंबागरं, रुप्पागरं, सुवण्णागरं, रयणागरं, वइरागरं) जेम जेम तेओ आगळ वधता गया तेम तेम तेमणे तांबानी खाणोने, चांदीनी खाणोने, सुवर्णनी खाणोने, रत्ननी खाणोने अने हीराओनी खाणोने जोई. (तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) त्यांथी अल्पमूल्यनी ते ताम्रादि वस्तुओने मूकीने अने लोहभार ग्रहण करवामां ज प्रवृत्त थयेला ते माणसने तेओએ मूल्यवान वस्तुओने लेवा माटे आग्रह कर्यो छतांये तेना कदाग्रहिताने छोडाववामां अंते निष्फळ थया. अने आम तेओ बधा ज्यां पोतपोताना जनपद देश हता अने तेमां पण ज्यां पोतपोतानुं नगर हतुं त्यां वज्रमणिओ वगेरे लईने पहोंच्या (वइरविक्किणणं करेंति)

दासीदासगोमहिषगवेलकं गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रितप्रासादावतंसकान् कारयन्ति, स्नाताः कृतबलिकर्माणः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः उपरिप्रासादवरगताः स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्वद्धैर्नाटकैर्वरतरुणीसंप्रयुक्तैरुपनर्त्यमाना उपगीयमानाः उपलाल्यमानाः इष्टान् शब्द-स्पर्श-रसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो

आकरके उन्होंने वज्रमणियो का विक्रय किया. (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) और उसे प्राप्त द्रव्य से अनेक दासी, दास, गो महिष तथा गवेलको को खरीदा अर्थात् इनका संग्रह किया (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेंति) और आठ खण्डों से सुशोभित ऊचे २ श्रेष्ठ प्रासादो का निर्माण कराया (ण्हायाकयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करके बलिकर्म—वायसादिको अन्नादि का भाग देने रूप बलिकर्म करके एवं कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त करके वे उन (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादों के ऊपर ही रहते (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) और वहीं रहकर वे अतिवेग से ताडित किये गये मृदङ्गों के निनादों से तथा सुन्दर २ तरुणियों द्वारा अभिनीत किये गये बत्तीस प्रकार के नाटकों से (उवणच्चिज्जमाणा) उपनर्त्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान और उपलाल्यमान होते हुए (इट्ठ सद्दफरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यसंबधी कामभोगों को भोगते २ आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करने लगे (तएणं से

त्यां पहोंचीने तेमणे वज्रमणिओनुं वेचाण कर्युं (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) अने जे द्रव्य मळ्युं तेनाथी घणा दासी, दास, गो, महिष तेमज गवेलकोनी खरीदी करी. एटले के एमनो संग्रह कर्यो. (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेंति) अने आठ माळाओथी सुशोभित ऊंचा ऊंचा श्रेष्ठ प्रासादोनुं निर्माण कराव्युं (ण्हाया कयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करीने, बलिकर्म-कागडा वगेरेने अन्न वगेरेनो भाग आपीने अने कौतुक मंगल रूप प्रायश्चित्त करीने तेओ ते (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादोनी उपर ज रहेवा लाग्या (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) अने त्यांज रहीने तेओ अतिवेगथी प्रताडित करेला मृदंगोना निनादोथी तेमज सुंदर सुंदर तरुण स्त्रीओ द्वारा अभिनीत करायेल बत्रीस प्रकारना नाटकोथी (उवणच्चिज्जमाणा) उपनृत्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान अने उपलाल्यमान थता (इट्ठे सद्द फरिस—रस—रूव गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध आ पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोनो उपभोग करता आनंदपूर्वक

पुरुष यदा नो शक्नुवन्ति बहुभि आख्यापनाभिश्च प्रज्ञापनाभिश्च प्ररूपणाभिश्च आख्यापयितु वा प्रज्ञापयितु वा प्ररूपयितु वा तदा यथाऽऽनुपूर्व्या संप्रस्थिताः। एव ताम्राऽऽकर रूप्याऽऽकर सुवर्णाऽऽकर वज्राऽऽकर । ततः खलु ते पुरुषाः यत्रैव स्वानि स्वानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति, वज्रविक्रयण कुर्वन्ति, सुबहु

पुरिसा त पुरिस जाहे णो सचायति बहूहिं आघवणाहि य, पण्णवणाहि य, परूवणाहि य, आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए सपत्थिया) तब उन पुरुषों ने जब कि उसे अनेक दृष्टान्तरूप आख्यापनाओं द्वारा, हेयोपादेय–प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओं द्वारा, तथा यथार्थ स्वरूपनिरूपक प्ररूपणाओं द्वारा समझाया परन्तु वह नहीं समझा, वहां से आगे क्रमशः प्रयाण करना प्रारंभ कर दिया (एव तबागर, रुप्पागर, सुवण्णागरं, वइरागर) ज्यों २ वे आगे चले इन्होंने वैसे २ ताम्र की खान को, रूप्य की खान को सुवर्ण की खान को, रत्न की खान को और हीरे की खान को देखा (तएण ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइ साइ नगराइ तेणेव उवागच्छंति) वहां २ से अल्प मूल्य की उन २ ताम्रादिरूप वस्तुओं का परित्याग करते हुए और लोह भार ग्रहण करने में ही आदर बुद्धिवाले बने हुए उस पुरुष को उन २ वस्तुओं के भरने के विषय में समझाने पर भी उसकी दुराग्राहिता को छुडवाने में असमर्थ बने हुए वे सब पुरुष जहां अपने २ जनपद-देश थे और उनमें जहां २ अपने २ नगर थे वहां पर वज्रमणियों को लिये हुए आये (वइरविक्किणण करेंति) वहां

आघवणाहि य पण्णवणाहि य, परूवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा, तया अहाणुपुव्वीए सपत्थिया) त्यार पछी ते पुरुषोए घणां दृष्टांत रूप आख्यापनाओ द्वारा हेयोपादेय प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओ द्वारा, तेमज यथार्थ स्वरूप निरूपक प्ररूपणाओ द्वारा समजाव्यो, पण ते मान्यो नहि त्यांथी बधाओए क्रमशः आगळ वधवा मांडयुं (एव तंबागर, रुप्पागर, सुवण्णागर, रयणागर, वइरागर) जेम जेम तेओ आगळ वधता गया तेम तेम तेमणे तांबानी खाणोने चांदीनी खाणोने सुवर्णनी खाणोने रत्ननी खाणोने अने हीराओनी खाणोने जोई (तए ण ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइ साइ नगराइ तेणेव उवागच्छंति) त्यांथी अल्पमूल्यनी ते ताम्रादि वस्तुओने मूकीने अने लोढभार ग्रहण करवामां ज प्रवृत्त थयेला ते माणसने तेओए मूल्यवान वस्तुओने लेवा माटे आग्रह कर्यो छतांए तेना दुराग्रहितावने छोडाववामां अते निष्फळ थया. अने आम तेओ बधा ज्यां पोतपोतानो जनपद देश हतो अने तेमां पण ज्यां पोतपोतानु नगर हतुं त्यां वज्रमणिओ वगेरे लई पहोंची गया (वइरविक्किणण करति)

दासीदासगोमहिषगवेलकं गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रितप्रासादावतंसकान् कारयन्ति, स्नाताः कृतबलिकर्माणः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः उपरिप्रासादवरगताः स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकैर्वरतरुणीसंप्रयुक्तैरुपनर्त्यमाना उपगीयमानाः उपलाल्यमानाः इष्टान् शब्द-स्पर्श-रसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्कान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो

आकरके उन्होंने वज्रमणियो का विक्रय किया. (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) और उसे प्राप्त द्रव्य से अनेक दासी, दास, गो महिष तथा गवेलको को खरीदा अर्थात् इनका संग्रह किया (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेति) और आठ खण्डों से सुशोभित ऊचे २ श्रेष्ठ प्रासादो का निर्माण कराया (ण्हायाकयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करके बलिकर्म—वायसादिको अन्नादि का भाग देने रूप बलिकर्म करके एवं कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त करके वे उन (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादों के ऊपर ही रहते (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) और वहीं रहकर वे अतिवेग से ताडित किये गये मृदङ्गों के निनादों से तथा सुन्दर २ तरुणियों द्वारा अभिनीत किये गये बत्तीस प्रकार के नाटकों से (उवणच्चिज्जमाणा) उपनर्त्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान और उपलाल्यमान होते हुए (इट्ठ सद्दफरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यसंबधी कामभोगों को भोगते २ आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करने लगे (तएणं से

त्यां पहोंचीने तेमणे वज्रमणिओनुं वेचाणु कर्युं (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलग गिण्हंति) अने जे द्रव्य मळ्युं तेनाथी घणा दासी, दास, गो, महिष तेमज गवेलकोनी खरीदी करी. एटले के एमनो संग्रह कर्यो. (अट्ठतलमूसिय—पासायवडिंसगे कारावेति) अने आठ माळाओथी सुशोभित ऊंचा ऊंचा श्रेष्ट प्रासादोनुं निर्माण कराव्यूं (ण्हाया कयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करीने, बलिकर्म-कागडा वगेरेने अन्न वगेरेनो भाग आपीने अने कौतुक मंगल रूप प्रायश्चित्त करीने तेओ ते (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादोनी उपर ज रहेवा लाग्या (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वर तरुणी संपउत्तेहिं) अने त्यांज रहीने तेओ अतिवेगथी प्रताडित करेला मृदंगोना निनादोथी तेमज सुंदर सुंदर तरुणीओ द्वारा अभिनीत करायेल बत्रीस प्रकारना नाटकोथी (उवणच्चिज्जमाणा) उपनृत्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान अने उपलाल्यमान थता (इट्ठे सद्द फरिस—रस—रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध आ पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोनो उपभोग करता आनंदपूर्वक

पुरुष यदा नो प्रस्तुवन्ति बहुमि आख्यापनामिश्च प्रज्ञापनामिश्च प्ररूपणामिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा तदा यथाऽऽनुपूर्वि संप्रस्थिताः। एव ताम्राऽऽकर रूप्याऽऽकर सुवर्णाऽऽकर वज्राऽऽकर । ततः खलु ते पुरुषा यत्रैव स्वानि स्वानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति, वज्रविक्रयणं कुर्वन्ति, सुबहु

पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचायति बहूहिं आघवणाहि य, पण्णवणाहि य, परूवणाहि य, आघविसए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) तब उन पुरुषों ने जब कि उसे अनेक दृष्टान्तरूप आख्यापनाओं द्वारा, हेयोपादेय–प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओं द्वारा, तथा यथार्थ स्वरूपनिरूपक प्ररूपणाओं द्वारा समझाया परन्तु वह नहीं समझा, वहां से आगे क्रमशः प्रयाण करना प्रारंभ कर दिया (एव तंबागर, रुप्पागर, सुवण्णागरं, वइरागर) ज्यों २ वे आगे चले उन्होंने वैसे २ ताम्र की खान को, रूप्य की खान को सुवर्ण की खान को, रत्न की खान को और हीरे की खान को देखा (तएणं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) वहां २ से अल्प मूल्य की उन २ ताम्रादिरूप वस्तुओं का परित्याग करते हुए और लोह भार ग्रहण करने में ही आदर बुद्धिवाले बने हुए उस पुरुष को उन २ वस्तुओं के भरने के विषय में समझाने पर भी उसकी कदाग्रहिता को छुडवाने में असमर्थ बने हुए वे सब पुरुष जहां अपने२ २ जनपद-देश थे और उनमें जहां २ अपने २ नगर थे वहां पर वज्रमणियों को लिये हुए आये (वइरविक्कियणं करेंति) वहां

आघ णाहि य पण्णवणाहि य, परू णाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा, तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) त्यार पछी ते पुरुषोએ घणां दृष्टांत रूप आख्यापनाओ द्वारा हेयोपादेय प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओ द्वारा तेमज यथार्थ स्वरूप निरूपक प्ररूपणाओ द्वारा समजाव्यो पण ते मान्यो नहि त्यांथी बधाओએ क्रमशः चालवा मांड्युं (एव तंबागर, रुप्पागर, सुवण्णागर, रयणागर, वइरागर) जेम जेम तेओ आगळ वधता गया तेम तेम तेमणे तांबानी खाणोने चांदीनी खाणोने सुवर्णनी खाणोने रत्ननी खाणोने अने हीराओनी खाणोने जोई (तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) त्यांथी अल्पमूल्यनी ते ताम्रादि वस्तुओने मूकीने अने लोहभार ग्रहण करवामां ज प्रवृत्त थयेला ते माणसने तेओએ मूल्यवान वस्तुओने लेवा माटे आग्रह कर्यो छतांએ तेना कदाग्रहिताने छोडाववामां अने निष्फळ गया. अने आम तेओ बधा ज्यां पोतपोतानो जनपद देश हतो अने तेमां पण ज्यां पोतपोतानुं नगर हतुं त्यां वज्रमणिओ वगेरे लई पहोंच्या गया (वइरविक्किणणं करेंति)

दासीदासगोमहिषगवेलकं गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रितप्रासादावतंसकान् कारयन्ति, स्नाताः कृतवलिकर्माणः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः उपरिप्रासादवरगताः स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकैर्वरतरुणीसंप्रयुक्तैरुपनर्त्यमाना उपगीयमानाः उपलाल्यमानाः इष्टान् शब्द-स्पर्श-रसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्कान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो

आकरके उन्होंने वज्रमणियो का विक्रय किया. (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) और उसे प्राप्त द्रव्य से अनेक दासी, दास, गो महिष तथा गवेलको को खरीदा अर्थात् इनका संग्रह किया (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेति) और आठ खण्डों से सुशोभित ऊंचे २ श्रेष्ठ प्रासादो का निर्माण कराया (ण्हायाकयवलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करके वलिकर्म—वायसादिको अन्नादि का भाग देने रूप वलिकर्म करके एवं कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त करके वे उन (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादों के ऊपर ही रहते (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइवद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) और वहीं रहकर वे अतिवेग से ताडित किये गये मृदङ्गों के निनादों से तथा सुन्दर २ तरुणियों द्वारा अभिनीत किये गये बत्तीस प्रकार के नाटकों से (उवणच्चिज्जमाणा) उपनर्त्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान और उपलाल्यमान होते हुए (इट्ठ सद्दफरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यसंबधी कामभोगों को भोगते २ आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करने लगे (तएणं से

त्यां पहोंचीने तेमणे वज्रमणिओनुं वेचाणु कर्युं (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलग गिण्हंति) अने जे द्रव्य मळ्युं तेनाथी घणा दासी, दास, गो, महिष तेमज गवेलकोनी खरीदी करी. एटले के एमनो संग्रह कर्यो. (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेंति) अने आठ माळाओथी सुशोभित ऊंचा ऊंचा श्रेष्ठ प्रासादोनुं निर्माण कराव्युं. (ण्हाया कयवलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करीने, बलिकर्म-कागडा वगेरेने अन्न वगेरेनो भाग आपीने अने कौतुक मंगल रूप प्रायश्चित्त करीने तेओ ते (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादोनी उपर ज रहेवा लाग्या (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, वत्तीसइवद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) अने त्यांज रहीने तेओ अतिवेगथी प्रताडित करेला मृदंगोना निनादोथी तेमज सुंदर सुंदर तरुण स्त्रीओ द्वारा अभिनीत करायेल बत्रीस प्रकारना नाटकोथी (उवणच्चिज्जमाणा) उपनृत्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान अने उपलाल्यमान थता (इट्ठे सद्द फरिस—रस—रूव गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध आ पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोनो उपभोग करता आनंदपूर्वक

विहरन्ति । ततः खलु स पुरुष अयोभारेण यत्रैव स्वं नगरं तत्रैव उपागच्छन्ति, अयोभारकं गृहीत्वा योविक्रयणं करोति, तस्मिन् अल्पमूल्यनिष्ठिते क्षीण परिव्ययः तान् पुरुषान् उपरि प्रासादवरगतान् यावत् विहरतः पश्यति, दृष्ट्वा

पुरिसे अयमारेण जेणेव सए नयरे तेणेव उवागच्छइ) अब वह पहिला पुरुष कि जिसने हित वचनों की अवहेलना की और लोह के भार को ही अच्छा समझा उस लोहभार के साथ ही अपने नगर में आया (अयभारगं गहाय अयविक्किणणं करेइ) वहां आकरके उसने उस लोहे के भार को लेकर बेचना प्रारम किया (तंसि अप्पमोल्लंसि निट्ठियंसि, झीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पिं पासायवरगए जाव विहरमाणे पासइ) जब वह पूरा बिक चुका—तो उससे जो उसे द्रव्य प्राप्त हुआ, वह बहुत थोडा सा प्राप्त हुआ—क्यों कि वह लोह उसका अल्पमूल्य में बिका अतः उससे प्राप्त द्रव्य आहार वस्त्र आदि के लाने में ही समाप्त हो गया इस तरह क्षीणपरिव्ययवाले बने हुए उस पुरुष ने उन वज्रविक्रयी पुरुषों को जो कि अपने २ रम्य प्रासादों में रहकर यावत्—अतिवेग से ताडित (वद्यात) हुए मृदङ्गों के निनादों से एवं ३२ प्रकार के सुन्दर २ तरुण युवतियों द्वारा अभिनीत किये गये नाटकों से उपनृत्यमान थे और उपलाल्यमान थे एवं इष्ट शब्द-स्पर्श रस, रूप, गंध, इनपांचप्रकार के मनुष्य-भव संबंधी कामभोगों को भोगते हुए आनन्द के साथ अपना समय व्यतीत

પોતાનો સમય પસાર કરતા હતા (तए णं से पुरिसे अयभारेणं जेणेव सए नयरे तेणेव उवागच्छइ) વે તે પેલો લોખંડના ભારવાળો માણસ કે જેણે બીજા લોકોના હિત વચનો સાંભળ્યા નહિ અને લોખંડના ભારને ઉત્તમ માન્યો હતો—નગરમાં આવ્યો. (अयभारगं गहाय अयविक्किणणं करेइ) ત્યાં આવીને તેણે તે લોખંડના ભારને વેચવાનું પ્રારંભ કર્યું (तंसि अप्पमोल्लंसि निट्ठियंसि झीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पिं पासायवरगए जाव विहरमाणे पासइ) જ્યારે તે લોખંડનો ભાર વેચાઈ ગયો ત્યારે તેનાથી જે દ્રવ્ય મળ્યું હતું તે અલ્પ હતું કેમકે તે લોખંડ અલ્પ મૂલ્યમાં જ વેચાયું હતું તેનાથી જે અલ્પધન પ્રાપ્ત થયું હતું તે તો આહાર વસ્ત્ર વગેરેની ખરીદીમાં જ પૂરું થઈ ગયું હતું આ પ્રમાણે તે ક્ષીણ પરિતાપવાળા તે પુરુષે તે વજ્ર વિક્રયી પુરુષોને કે જેઓ પોત-પોતાના રમ્ય પ્રાસાદોમાં રહીને યાવત્ અતિવેગથી પ્રતાડિત થયેલ મૃદંગોના નિનાદોથી અને ૩૨ પ્રકારના સુંદર સુંદર તરુણ સ્ત્રીઓ દ્વારા અભિનીત કરાયેલા નાટકોથી ઉપનર્તમાન હતા, ઉપગીયમાન હતા અને ઉપલાલ્યમાન હતા અને ઈષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ રસ રૂપ, ગંધ, આ પાંચ જાતના મનુષ્ય ભવ સંબંધી કામ ભોગોની ઉપભોગ કરતા આનંદપૂર્વક પોતાનો સમય પસાર કરી રહ્યા હતા જોયા (पासित्ता एवं वयासी

एवमवादीत्-अहो !! खलु अहम् अधन्यः अपुण्यः अकृतार्थः अकृतलक्षणः ह्रीश्री-वर्जितः हीनपुण्यचातुर्दशो दुरन्तप्रान्तलक्षणः । यदि खलु अहं मित्राणां वा ज्ञातीनां वा निजकानां वा वचनम् अश्रोष्यं तदा खलु अहमपि एवमेव उपरि प्रासादवर-गतः यावद् व्यहरिष्यम् । तत् तेनार्थेन प्रदेशिन् ! एवमुच्यते-मा त्वं ! प्रदेशिन् ! पश्चादनुतापितो भवेः, यथा वा स पुरुषोऽयोहारक । ॥ सू० १५४ ॥

कर रहे थे देखा(पासित्ता एवं वयासी-अहोणं अहं अधन्नो, अपुन्नो, अकयत्थो, अकयलक्खणो हिरिसिरिवज्जिओ हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे) तो देखकर इस प्रकार विचार किया-अरे ! मै कितना अधन्य हूं, पुण्यहीन हूं, अकृतार्थ हूं, शुभलक्षण रहित हूं, लज्जा लक्ष्मी दोनों से वर्जित हूं, हीनपुण्यचातुर्दश हूं अर्थात् हीनपुण्यवाला हू इसी लिये कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में जन्मा हूं, दुरन्त प्रान्तलक्षणवालाहूं-दुष्टावसानवाले अमनोज्ञ लक्षणों से युक्त हूं (जइ णं अहं मित्ताण वा णाईण वा णियगाण वा वयणं सुणेतओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पिं पासायवरगए जाव विहरेतओ) यदि मै साथ गये हुए मित्रों के, अथवा पितृ-व्यादि ज्ञातिजनों के वा अपने हितैषियों के वचनों को मान लेता, तो मै भी इन्हीं साथ के आये हुए वज्रविक्रेता पुरुषों की तरह ही प्रासादों में रहता हुआ विविध सुख सम्पन्न बनकर अपने समय को आनन्दपूर्वक व्यतीत करता (से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ, मा तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भविज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए) इसी कारण हे प्रदेशिन् ! मैंने ऐसा कहा है कि

अहो णं अहं अधन्नो, अपुन्नो अकयत्थो, अकयलक्खणो हिरिसिरिव-ज्जिओ हीणपुण्णचाऊद्दसे दुरंतपंतलक्खणे) तेमने જોઈને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે અરે ! હું કેટલો અભાગિયો છું અધન્ય છું. પુણ્યહીન છું, અકૃતાર્થ છું શુભલક્ષણ રહિત છું, લજ્જા લક્ષ્મી બન્નેથી વર્જિત છું હિનપુણ્યચાતુર્દશ છું, એટલે કે હીન પુણ્યવાળો છું એથી જ કૃષ્ણ પક્ષની ચતુર્દશીના દિવસે જન્મ પામ્યો છું, દુરંત પ્રાન્ત લક્ષણવાળો છું, દુષ્ટાવસાનવાળા અમનોજ્ઞ લક્ષણોથી યુક્ત છું (जइणं अहं मित्ताण वा णाईण वा णियगाण वा वयण सुणेतओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पिं पासायवरगए जाव विहरेतओ) જો હું સાથવાળા મિત્રોના કે પિતૃવ્યાદિ જ્ઞાતિજનોના કે પોતાના હિતેચ્છુઓના વચનો માની લેતો તો હું હું પણ મારી સાથે આવેલ વજ્રવિક્રેતા પુરૂષોની જેમ જ પ્રાસાદોમાં રહીને વિવિધ સુખ સંપન્ન બનીને પોતાના સમયને આનંદ પૂર્વક પસાર કરત (से सेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ, मा तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भविज्जासि, जहाव से पुरिसे अयमारए)

એથી

विहरन्ति । तत खलु स पुरुष अयोमारेण यत्रैव स्व नगर तत्रैव उवागच्छन्ति, अयोमारक गृहीत्वा योविक्रयण करोति, तस्मिन अल्पमूल्यनिष्ठित क्षीण परिव्यय तान् पुरुषान् उपरि प्रासादवरगतान् यावद् विहरत पश्यति, दृष्ट्वा

पुरिसे अयमारेण जेणेव सए नयर तणेव उवागच्छइ) अब वह पहिला पुरुष कि जिसने हित वचनों की अवहेलना की और लोह क भार को ही अच्छा समझा उस लोहभार के साथ ही अपने नगर में आया (अयमारगं गहाय अयविक्किणण करइ) वहां आकारक उसने उस लोहे के भार को लेकर बचना प्रारम किया (तसि अप्पमोल्लसि निट्ठियसि, हीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पि पासाय वरगए जाव विहरमाणे पासइ) जब वह पूरा बिक चुका—तो उससे जो उसे द्रव्य प्राप्त हुआ, वह बहुत थोडा सा प्राप्त हुआ—क्यो कि वह लोह उसका अल्पमूल्य में बिका अतः उससे प्राप्त द्रव्य आहार वस्त्र आदि क खाने में ही समाप्त हो गया इस तरह क्षीणपरिव्ययवाले बने हुए उस पुरुष ने उन वज्र-विक्रयी पुरुषो को जो कि अपने २ रम्य प्रासादों में रहकर यावत्—अतिवेग से वादित (बजाते) हुए मृदङ्गों के निनादों से एव ३२ प्रकार क सुन्दर २ तरुण युवतियों द्वारा अभिनीत किये गये नाटकों से उपनर्त्यमान थे और उपलाल्यमान थे एव इष्ट शब्द-स्पर्श रस, रूप, गंध, इनपांचप्रकार के मनुष्य भव संबंधी कामभोगों को भोगते हुए आनन्द के साथ अपना समय व्यतीत

पोताने समय पसार करता हता (तए ण स पुरिसे अयमारेण जेणेव सए नयरे तणेव उवागच्छइ) हवे ते पेलो लोखंडना भारवाळो माणस के जेणे बीजा लोकोना हित वचनो सांभळ्या नहि अने लोखंडना भारने उत्तम मान्यो हतो—नगरमां आव्यो (अयमारग गहाय अयविक्किणण करेइ) त्यां आवीने तेणे ते लोखंडना भारने वधनि वेचवानु प्रारंभ कर्यु (तंसि अप्पमोल्लसि निट्ठियंसि हीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पि पासायवरगए जाव विहरमाणे पासइ) ज्यारे ते लोखंडनो भार वेचाई गयो त्यारे तेनाथी जे द्रव्य मळ्यु हतु ते अल्प हतु केमके ते लोखंड अल्प मूल्यमां ज वेचायु हतु तेनाथी जे अल्पधन प्राप्त थयु हतु ते तो आहार वस्त्र वगेरेनी खरीदीमां ज पूरु थई गयु हतु आ प्रमाणे ते क्षीण परिव्ययवाळा ते पुरुषे ते वज्र विक्रयी पुरुषोने के जेओ पोत-पोताना रम्य प्रासादोमां रहीने यावत् अतिवेगथी प्रताडित थयेल मृदंगोना निनादोथी अने ३२ प्रकारना सुंदर सुंदर तरुण स्त्रीओ द्वारा अभिनीत करायेला नाटकोथी उप-नर्त्यमान हता, उपगीयमान हता अने उपलाल्यमान हता अने इष्ट, शब्द स्पर्श रस, रूप, गंध, आ पांच जातना मनुष्य भव संबंधी काम भोगोनी उपभोग करता आनंदपूर्वक पोतानो समय पसार करी रह्या हता जोया. (पासित्ता एव वयासी

महतीं—विशालाम् अग्रामिकाम्—वसतिरहितां, छिन्नाऽऽपाताम्—छिन्नः—हिंसकजन्तुभयेनोपहत आपात -मनुष्याणां गमनागमनं यत्र ताम् दीर्घाध्वां—दीर्घमार्गाम्, अटवी, अनुप्रविष्टाः। ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः यावत छिन्नाऽऽपातायाः दीर्घाध्वाया अटव्याः कंचिद्देशम्-अटवीविभागम्, अनुप्राप्ताः सन्तः तत्र एकम् अयआकरं-लोहखनिम्, पश्यन्ति-दृष्टवन्तः, तमाकरम् अयसा-लोहेन सर्वत्रः-सर्वदिक्षु, समन्ता -सर्वविदिक्षु आकीर्णं-व्याप्तं, विस्तीर्ण-विस्तारप्राप्तम्, सच्छटं-सती-समीचीना छटा-चाकचिक्यं यत्र तम्, उपच्छटं-छटायुक्तम्, स्फुटं-प्रकटम्, अनुगाढं-पुञ्जरूपं पश्यति-दृष्टवन्तः, दृष्ट्वा हृष्टतुष्ट याव -यावत्पदेन "चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसपद्" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, हर्षवशविसर्पद्" इत्यस्य "हृदया" इत्यनेन योगाद् "हर्षवशविसर्पद्धृदयाः" इति, एतद्व्याख्या प्राग्वत्, एतादृशाः सन्तः अन्योऽन्यं-परस्परं, शब्दयन्ति-आह्वयन्ति, शब्दयित्वा एवमवादिषुः-उक्तवन्तः—हे देवानुप्रियाः! एषः-अयं खलु अयआकरः-लोहाऽऽकरः इष्टः कान्तः यावत् यावत्पदेन-"प्रियः, मनोज्ञः मनआम" इति पदानां संग्रहः, तत्र इष्टः-मनोरथपूरकः, कान्तः सहायकारित्वादभिलषणीयः, प्रियः-उपकारिकत्वेन प्रेमोत्पादकः, मनोज्ञः-हितकारित्वान्मनोहरः. मनआमः-आर्तिहरत्वान्मनोगम्यः, अस्ति तत्-तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः। अस्माकम् अयोभारं-लोहभारं बद्ध्वा ग्रहीतुं श्रेयः-प्रशस्तम् इतिकृत्वा-इति निश्चित्य अन्योऽन्यस्य-परस्परस्य एतम्-अयोभारग्रहणरूपम् अर्थम्-प्रतिशृण्वन्ति-कर्तव्यतया स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य अयोभारं-लोहभारं बध्नन्ति, बद्ध्वा यथानुपूर्वि-यथाक्रमं संप्रस्थिताः-अग्रे गन्तु प्रवृत्ताः। ततः खलु ते पुरुषाः अग्रामिकायाः यावत-"छिन्नाऽऽपातायाः दीर्घाध्वायाः अटव्या किञ्चिद्देशं-किञ्चिद्दूरप्रदेशम् अनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तं त्रप्वाकरं-त्रपु-धातुविशेषस्तस्याऽऽकरं, पश्यन्ति-दृष्टवन्तः तम् त्रपुकेण सर्वतः समन्ताद् आकीर्णं तदेव-पूर्वोक्तमेव "विस्तीर्णं, सच्छटम्, उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः. चित्तानन्दिताः. परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः

हैं। 'अग्गामियाए जाव" में आये हुए इस यावत्पद से "छिन्नापाताया" दीर्घाध्वायाः" इन पदों का संग्रह हुआ है. "त चेव" इस पाठ से "विस्तीर्णः सच्छटम् उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्तिः दृष्ट्वाहृष्ट तुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्हृदयाः अन्योन्यं शब्दयति" इस पाठ का यहां ग्रहण

ગમ્ય એવો થાય છે. 'अग्गामियाए, जाव' મા આવેલ આ યાવત્ પદથી छिन्ना-पातायाः,दीर्घाध्वायाः, આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે 'तंचेव' આ પાઠથી 'विस्तीर्ण सच्छटम्, उपच्छटम्, स्फुटं, गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्हृदयाः अन्योन्यं शब्दयन्ति" આ પાઠ ગ્રહણ

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—हे प्रदेशिन् ! त्वं खलु पश्चादनुतापिकः—पश्चात्तापयुक्तो मा भवः, यथा—येन प्रकारेण स—वक्ष्यमाणः अयोहारकः—लोहवणिक् पश्चादनुतापिकोऽभूत् ।, प्रदेशी तत्परिचयं पृच्छति—कः खलु हे भदन्त ! सः अयोहारकः ? इति प्रश्नः । केशीकुमारश्रमण आह—ते यथानामकाः—अनिर्दिष्टनामानः कश्चित् पुरुषाः अर्थार्थिकाः—धनार्थिनः, अर्थगवेषिकाः—धनान्वेषिणः अर्थलुब्धकाः—धनलोलुपाः अर्थकाङ्क्षिताः—धनकाङ्क्षायुक्ताः, अर्थपिपासिताः—धनपिपासायुक्ताः, अर्थगवेषणार्थं—धनगवेषणार्थं विपुलं पणितभाण्डं—क्रयाणकवस्तुजातम् आदाय तथा—सुबहु—पर्याप्तं भक्तपानपथ्यदनम् अशनपानरूपं पाथेयं गृहीत्वा एकां

ऐसा यह अयोहारक पुरुष पश्चात्तापयुक्त हुआ है—इसी प्रकार से तुम्हें न होना पड़े अतः तुम मेरे कहे हुए पर श्रद्धा करो और मानो कि जीव और शरीर भिन्न हैं इत्यादि।

टीकार्थ—इसी मूलार्थ के जैसा है-परन्तु जहां पर विशेषता है वह इस प्रकार से है "हट्ठतुट्ठा जाव हियया" में जो यावत् पद आया है उससे "चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्" इन पदों का संग्रह हुआ है इन पदों की व्याख्या पूर्वोक्त जैसी ही है "इट्ठ, कंत जाव" में जो यह यावत्-पद आया है उससे यहां पर "प्रिय, मनोज्ञ, मन आमः" इन पदों का ग्रहण हुआ है इष्ट शब्द का अर्थ-मनोरथ को पूरा करनेवाला है कान्त शब्द का अर्थ-सहायकारी होने से अभिलषणीय है, प्रिय शब्द का अर्थ उपकारक होने से प्रेम का उत्पादक है, तथा-मनोज्ञ शब्द का अर्थ हितकारी होने से मनोहर ऐसा है और मन आम शब्द का अर्थ अतिहर होने से मनोगम्य ऐसा

આ ક પુરૂષ પશ્ચાત્તાપ—યુક્ત થયો છે—તેમ તમારી પણ સ્થિતિ થાય નહિ, એથી તમે મારી વાત પર શ્રદ્ધા રાખો અને મારી વાત માની લો કે જીવ અને શરીર ભિન્ન ભિન્ન છે ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ મૂલાર્થ જેવું જ્યાં વિશેષતા છે તે આ પ્રમાણે છે 'हट्ठतुट्ठा जाव हियया" પદ છે તેથી 'चित्तानन्दिताः परमसौमनस्यिता हर्षवशविसर्पद्' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલા મુજબ જ છે 'इट्ठ कंत जाव' માં જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં 'प्रिय मनोज्ञ मनः आम" આ પદોનું ગ્રહણ થયું છે. ઇષ્ટ શબ્દનો અર્થ મનોરથ ને પૂરનાર છે કાંત શબ્દનો અર્થ સહાયકારી હોવાથી અભિલષણીય છે પ્રિય શબ્દનો અર્થ હિતકારી હોવાથી પ્રેમનો ઉત્પાદક છે તથા મનોજ્ઞ શબ્દનો અર્થ-હિતકારી હોવાથી મનોહર એવો થાય છે મન આમ શબ્દનો અર્થ અતિહર હોવાથી મનો-

महतीं—विशालाम् अग्रामिकाम्—वसतिरहितां, छिन्नाऽऽपाताम्—छिन्नः—हिंसकजन्तु-भयेनोपहत आपात -मनुष्याणां गमनागमनं यत्र ताम् दीर्घाध्वां—दीर्घमार्गाम्, अट-वीं; अनुप्रविष्टाः । ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः यावत् छिन्ना-ऽऽपातायाः दीर्घाध्वाया अटव्याः कंचिद्देशम्-अटवीविभागम्, अनुप्राप्ताः सन्तः तत्र एकम् अयआकरं-लोहखनिम्, पश्यन्ति-दृष्टवन्तः, तमाकरम् अयसा-लोहेन सर्वत्रः-सर्वदिक्षु, समन्ता -सर्वविदिक्षु आकीर्णं-व्याप्तं, विस्तीर्णं-विस्तारप्राप्तम्, सच्छटं-सती-समीचीना छटा-चाकचिक्यं यत्र तम्, उपच्छटं-छटायुक्तम्, स्फुटं-प्रकटम्, अनुगाढं-पुञ्जरूपं पश्यति-दृष्टवन्तः, दृष्ट्वा हृष्टतुष्ट याव -यावत्पदेन "चित्तान-न्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसपद्" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, हर्षवशविस-र्पद्" इत्यस्य "हृदया" इत्यनेन योगाद् "हर्षवशविसर्पद्धृदयाः" इति, एत-द्व्याख्या प्राग्वत्, एतादृशाः सन्तः अन्योऽन्यं—परस्परं, शब्दयन्ति—आह्वयन्ति, शब्दयित्वा एवमवादिषुः—उक्तवन्तः—हे देवानुप्रियाः ! एषः—अयं खलु अयआकरः-लोहाऽऽकरः इष्टः कान्तः यावत् यावत्पदेन—"प्रियः, मनोज्ञः मनआम" इति पदानां संग्रहः, तत्र इष्टः—मनोरथपूरकः, कान्तः सहायकारित्वादभिलषणीयः, प्रियः-उपकारिकत्वेन प्रेमोत्पादकः, मनोज्ञः—हितकारित्वान्मनोहरः. मनआमः—आर्तिहर-त्वान्मनोगम्यः, अस्ति तत्—तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः । अस्माकम् अयो-भारं-लोहभारं बद्धं ग्रहीतु श्रेयः—प्रशस्तम् इतिकृत्वा—इति निश्चित्य अन्योऽन्यस्य-परस्परस्य एतम्—अयोभारग्रहणरूपम् अर्थम्—प्रतिशृण्वन्ति—कर्तव्यतया स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य अयोभारं—लोहभारं बध्नन्ति, बद्ध्वा यथानुपूर्वि—यथाक्रमं संप्रस्थिताः—अग्रे गन्तु प्रवृत्ताः । ततः खलु ते पुरुषाः अग्रामिकायाः यावत्—"छिन्नाऽऽपातायाः दीर्घाध्वायाः अटव्या किञ्चिद्देशं—किञ्चिद्दूरप्रदेशम् अनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तं त्रप्वाकरं—त्रपु—धातुविशेषस्तस्याऽऽकरं, पश्यन्ति—दृष्टवन्तः तम् त्रपुकेण सर्वतः समन्ताद् आकीर्णं तदेव-पूर्वोक्तमेव "विस्तीर्णं, सच्छटम्, उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः. चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः.

हैं। 'अग्गामियाए जाव" में आये हुए इस यावत्पद से "छिन्नापाताया" दीर्घा-ध्वायाः" इन पदों का संग्रह हुआ है. "त चेव" इस पाठ से "विस्तीर्णं : सच्छटम् उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्तिः दृष्ट्वाहृष्ट तुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परम-सौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्हृदयाः अन्योन्यं शब्दयति" इस पाठ का यहां ग्रहण

ગમ્ય એવો થાય છે. 'अग्गामियाए, जाव' મા આવેલ આ યાવત્ પદથી छिन्ना-पातायाः,दीर्घाध्वायाः, આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે 'तंचेव' આ પાઠથી 'विस्तीर्ण सच्छटम्, उपच्छटम्, स्फुटं, गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्पिताः, हर्षवशविसर्पद्हृदयाः अन्योन्यं शब्दयन्ति" આ પાઠ ગ્રહણ

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि—तत खलु केशीकुमार श्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—हे प्रदेशिन्! त्वं खलु पश्चादनुतापिकः—पश्चात्तापयुक्तो मा भवः, यथा—येन प्रकारेण सः—वक्ष्यमाणः अयोहारकः—लोहवणिक् पश्चादनुतापिकोऽभूत्। प्रदेशी तत्परिचयं पृच्छति—क खलु हे भदन्त! स अयोहारकः? इति प्रश्नः। केशीकुमारश्रमण आह—ते यथानामकाः—अनिर्दिष्टनामानः केचित् पुरुषाः अर्थार्थिकाः—धनार्थिनः, अर्थगवेषिकाः—धनान्वेषिणः, अर्थलुब्धकाः—धनलोलुपाः अर्थकाङ्क्षिताः—धनकाङ्क्षायुक्ताः, अर्थपिपासिताः—धनपिपासायुक्ताः, अर्थगवेषणार्थं—धनगवेषणार्थं विपुलं पणितभाण्डं—क्रयाणकवस्तुजातम् आदाय तथा—सुबहु—पर्याप्तं भक्तपानपथ्यदनम् अशनपानरूपं पाथेयं गृहीत्वा एकां

जैसा यह अयोहारक पुरुष पश्चात्तापयुक्त हुआ है—इसी प्रकार से तुम्हें न होना पडे-अतः तुम मेरे कहे हुए पर श्रद्धा करो और मानो कि जीव और शरीर भिन्न हैं इत्यादि।

टीकार्थ—इसी मूलार्थ के जैसा है-परन्तु जहां पर विशेषता है-वह इस प्रकार से है 'हट्ठतुट्ठा जाव हियया' में जो यावत् पद आया है उससे "चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्" इन पदों का संग्रह हुआ है इन पदों की व्याख्या पूर्वोक्त जैसी ही है "इट्ठे, कंते जाव" में भी यह यावत्-पद आया है उससे यहां पर "प्रिय, मनोज्ञः, मन आमः" इन पदोंका ग्रहण हुआ है इष्ट शब्द का अर्थ-मनोरथ को पूरा करनेवाला है कान्त शब्द का अर्थ-सहायकारी होने से अभिलषणीय है, प्रिय शब्द का अर्थ-उपकारक होने से प्रेम का उत्पादक है, तथा-मनोज्ञ शब्द का अर्थ हितकारी होने से मनोहर ऐसा है और मन आम शब्द का अर्थ आत्तिहर होने से मनोगम्य ऐसा

આ ૪ પુરુષ પશ્ચાત્તાપ-યુક્ત થયો છે—તેમ તમારી પણ સ્થિતિ થાય નહિ, એથી તમે મારી વાત પર શ્રદ્ધા રાખો અને મારી વાત માની લો કે જીવ અને શરીર ભિન્ન ભિન્ન છે ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—આ મૂલાર્થ જેવો જ છે. જ્યાં વિશેષતા છે તે આ પ્રમાણે છે "હટ્ઠતુટ્ઠા જાવ હિયયા" પદ છે તેથી 'ચિત્તાનન્દિતાઃ, પરમસૌમનસ્યિતા હર્ષવશવિસર્પદ્' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં મુજબ જ છે "ઇટ્ઠે, કંતે જાવ" આ જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં 'પ્રિયઃ મનોજ્ઞ, મનઃ આમ" આ પદોનું ગ્રહણ થયું છે. ઇષ્ટ શબ્દનો અર્થ મનોરથ ને પૂરનાર છે કાંત શબ્દનો અર્થ સહાયકારી હોવાથી અભિલષણીય છે પ્રિય શબ્દનો અર્થ-હિતકારી હોવાથી પ્રેમનો ઉત્પાદક છે તથા મનોજ્ઞ શબ્દનો અર્થ-હિતકારી હોવાથી મનોહર એવો થાય છે મન આમ શબ્દનો અર્થ આર્તિહર હોવાથી મનો

प्ररूपणाभिः—यथार्थस्वरूपनिरूपिकाभिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा नो शक्नुवन्ति—समर्था नाभवन, तदा यथानुपूर्वि-यथाक्रमम्, संप्रस्थिताः—ततोऽग्रे प्रयाताः। एवम्—अनेन प्रकारेण ताम्राऽऽकरं, रूप्याऽऽकरं, सुवर्णाऽऽकरं, रत्नाऽऽकरं, वज्राऽऽकरं, हीरकखनिं पश्यन्ति इत्यादि लोहत्रप्वाकरदर्शनवदेव सर्वं वर्णन बोध्यम्। ततः—लोहभारग्रहणकृताऽऽदरदुर्वुद्धिपुरुषस्यानेकथा प्रवोधकवाक्यप्रपञ्चैः प्रबोधनासामर्थ्यानन्तरं खलु ते अल्पमूल्यकपूर्वपूर्ववस्तुपरित्यागपूर्वकबहुमूल्योत्तरोत्तरवस्तुग्रहणवद्धाऽऽदरतया गृहीतवज्रमणिभाराः पुरुषाः यत्रैव स्वाः— स्वकीयाः जनपदाः—देशाः, यत्रैव स्वानि स्वानि—निजानि निजानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति। वज्रविक्रयणं—वज्रमणिविक्रयं कुर्वन्ति—कृतवन्तः। तद्विक्रयेण लब्धबहुद्रव्यैः सुबहुदासीदासगोमहिषगवेलकं—सुबहु—अतिप्रचुरं यद् दासी—दास—गो महिष—गवेलकः—तत्र दासी—दास—गो—महिषाः प्रसिद्धाः, गवेलकाः—मेषाश्चेत्येषां समाहारस्तथा, तत् गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रित प्रासादावतंसकान —अष्टौ तलानि यत्र ते अष्टतलाः—अष्टभूमिकाः, ते च ते उच्छ्रिताः—उन्नताः गगनचुम्बिनः प्रासादावतंसकाः—श्रेष्ठप्रासादास्तान् कारयन्ति, तत्र च स्नाताः कृतस्नानाः, कृतबलिकर्माणः—कृतवायसादिनिमित्तान्नविभागाः, कृतकौतुलमङ्गलप्रायश्चित्ताः दुःस्वप्नादिफलविघाताय धृतदध्यक्षताश्रयाः सन्तः उपरि—ऊर्ध्वं प्रासादवरगताः—मनोहर प्रासादस्थिताः विहरन्तीत्युत्तरेणान्वयः, किं कुर्वन्तो विहरन्तीत्याह—स्फुटद्भिः—अतिरभसा स्फालनात् स्फुटद्भिरिवः, मृदङ्गमस्तकैः मृदङ्गमुखपुटैः, द्वात्रिंशद्बद्धैः— द्वात्रिंशत्प्रकाररचना युक्तैः नाटकैः, तैः कीदृशैः ? इत्यत्राऽऽह—वरतरुणीसंप्रयुक्तैः—विशिष्ट स्त्रीसम्पादितैः, उपनर्त्यमानाः, नृत्यंदृश्यमानाः, उपगीयमानाः गानं श्राव्यमाणाः, उपलाल्यमानाः विलास्यमानाः, इष्टान अभिलषितान, शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान, पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति तिष्ठन्ति। ततः खलु इतश्च सः—अवहेलितहितवचनो लोहभारवाहकः पुरुषः अयोभारेण सह यत्रैव स्वं-निज नगरं, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत्र अयोभारकं गृहीत्वा अयोविक्रयणं करोति। तस्मिन्—लोहविक्रयलब्धे, अल्पमूल्ये-स्वल्पद्रव्ये आहारवस्त्राद्यानयनेन निष्ठिते-समाप्ते सति स लोहवणिक् पुरुषः क्षीणपरिव्ययः-क्षीणः-मन्दः परिव्ययः-परितो व्ययः-द्रव्योपयोगो यस्य तथाभूतः, तान्-वज्रविक्रयिणपुरुषान् उपरि—ऊर्ध्वभागे, प्रासादवरगतान्—रम्यप्रासादस्थितान यावद् विहरमाणान् स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धैः नाटकैः वरतरुणीसंप्रयुक्तैः उपनर्त्यमानान् उपगीयमानान् उपलाल्यमानान् इष्ट— — — — धान् मानु-

अन्योऽन्यं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवम् अवादिषुः-हे देवानुप्रियाः ! एष खलु त्रपुकाकर यावत्-यावत्पदेन "इष्ट , कान्त , प्रियः, मनोज्ञ " मनआमम् मनआम अल्पेनैव त्रपुकेण सुबहु-अतिप्रचुरम् अय -लोहः लभ्यते-प्राप्यते, तत्-तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिया ! अयोभारं मुक्त्वा-विहाय त्रपुकभारं बद्धं श्रेय इति कृत्वा अन्योऽन्यस्य अन्तिके-समीपे एतम्-त्रपुभारग्रहणरूपम् अर्थम् प्रतिशृण्वन्ति कर्तव्यतया स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य अयोभारं मुञ्चन्ति त्यजन्ति त्रपुकभार बध्नन्ति -गृह्णन्ति तत्र-त्रपुभारग्रहणविषये खलु एक -कश्चित् पुरुष अयोभारं मोक्तुं-त्यक्तुं नो शक्नोति, तथा-त्रपुकभारं बद्धु-ग्रहीतु नो शक्नोति, ततः खलु स पुरुषाः तम्-लोहभारवन्तं पुरुषम् एवमवादिषु -हे देवानुप्रिय ! एष खलु त्रपाकर यावत्-यावत्पदेन-"इष्ट , कान्त प्रिय , मनोज्ञ , मनआम, अल्पेन त्रपुकेण" इत्येषां संग्रहो बोध्यः, सुबहु अतिप्रचुरम् अयः लोहः लभ्यते तत् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिय ! अयोभारकं-लोहभारं मुञ्च-त्यज तथा ,त्रपुकभारकं बधान-गृहाण, ततः खलु सः लोहभारवाहकः पुरुष एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः-मया अयं -लोहः दूराहृत-दूरा'-दूरप्रदेशाद् आहृतम् आनीतम्, हे देवानुप्रिया ! मया अयं -चिराहृतम् चिरात्-बहुकालाद् आहृतम् उद्धृतम्, हे देवानुप्रियाः ! मया अयं अतिगाढबन्धनबद्धम् अत्यन्तदृढबन्धनेन बद्धम् अत एव हे देवानुप्रियाः ! मया अयः अशिथिलबन्धनबद्धम्-अशिथिलबन्धनेन दृढबन्धनेन बद्धम् हे देवानुप्रियाः ! मया अयं प्रचुरबन्धनबद्धम्-"धणिय" इति प्रचुरार्था देशीयः शब्द , अतोऽहम् अयोभारं त्यक्त्वा त्रपुकभारकं बद्धु-ग्रहीतुं नो शक्नोमि । ततः खलु ते पुरुषाः तम्-लोहभारवाहकं पुरुषं यदा बहुभि -बह्वीभि आख्यापनाभिः-दृष्टान्तरूपाभि" च पुन प्रज्ञापनाभि हेयोपादेयप्रतिपादिकाभिः

किया गया है। "इट्ठ जाव मणाम" में आये हुए यावत्पद से 'इष्ट कान्तः प्रिय , मनोज्ञः" इन पदों का संग्रह हुआ है। "तउ आगर जाव" पद से भी इष्ट कान्त, प्रिय, मनोज्ञ मन आम" इन पदों का संग्रह किया गया है। धणीय" यह शब्द देशीय है और प्रचुर अर्थ का वाचक है ॥ १५४ ॥

થયો છે "इट्ठ जाव मणाम' માં આવેલ યાવત્ પદથી 'इष्ट, कान्त, प्रियः, मनोज्ञः આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. 'तउआगरे जाव' પદથી પણ 'इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मन आम' આ પદોનું ગ્રહણ થયું છે 'धणिय' આ શબ્દ દેશીય છે અને પ્રચુર અર્થનો વાચક છે ાાસૂ. ૧૫ાા

प्ररूपणाभिः—यथार्थस्वरूपनिरूपिकाभिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा नो शक्नुवन्ति—समर्था नाभवन, तदा यथानुपूर्वि-यथाक्रमम्, संप्रस्थिताः—ततोऽग्रे प्रयाताः। एवम्—अनेन प्रकारेण ताम्राऽऽकरं, रूप्याऽऽकरं, सुवर्णाऽऽकरं, रत्नाऽऽकरं, वज्राऽऽकरं, हीरकखनिं पश्यन्ति इत्यादि लोहत्रप्वाकरदर्शनवदेव सर्वं वर्णनं बोध्यम्। ततः—लोहभारग्रहणकृताऽऽदरदुर्बुद्धिपुरुषस्यानेकथा प्रबोधक-वाक्यप्रपञ्चैः प्रबोधनाऽसामर्थ्यानन्तरं खलु ते अल्पमूल्यकपूर्वपूर्ववस्तुपरित्याग-पूर्वकबहुमूल्योत्तरोत्तरवस्तुग्रहणबद्धाऽऽदरतया गृहीतवज्रमणिभाराः पुरुषाः यत्रैव स्वाः— स्वकीयाः जनपदाः—देशाः, यत्रैव स्वानि स्वानि—निजानि निजानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति। वज्रविक्रयणं—वज्रमणिविक्रयं कुर्वन्ति—कृतवन्तः। तद्विक्रयेण लब्धबहुद्रव्यैः सुबहुदासीदासगोमहिषगवेलकं—सुबहु—अतिप्रचुरं यद् दासी—दास—गो महिष—गवेलकः—तत्र दासी—दास—गो—महिषाः प्रसिद्धाः, गवेलकाः—मेषाश्चेत्येषां समाहारस्तथा, तत् गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रितप्रासादावतंसकान —अष्टौ तलानि यत्र ते अष्टतलाः—अष्टभूमिकाः, ते च ते उच्छ्रिताः—उन्नताः गगनचुम्बिनः प्रासादावतंसकाः—श्रेष्ठप्रासादास्तान् कारयन्ति, तत्र च स्नाताः कृतस्नानाः, कृतबलिकर्माणः—कृतवायसादिनिमित्तान्नविभागाः, कृतकौतुकमङ्गल-प्रायश्चित्ताः दुःस्वप्नादिफलविघाताय धृतदध्यक्षताद्याः सन्तः उपरि—ऊर्ध्वं प्रासादवरगताः—मनोहरप्रासादस्थिताः विहरन्तीत्युत्तरेणान्वयः, किं कुर्वन्तो विहरन्तीत्याह—स्फुटद्भिः—अतिरभसा स्फालनात् स्फुटद्भिरिवः, मृदङ्गमस्तकैः मृदङ्गमुखपुटैः, द्वात्रिंशद्बद्धकैः— द्वात्रिंशत्प्रकाररचनायुक्तैः नाटकैः, तैः कीदृशैः ? इत्यत्राऽऽह—वरतरुणीसंप्रयुक्तैः—विशिष्टस्त्रीसम्पादितैः, उपनर्त्यमानाः, नृत्यंदृश्यमानाः, उपगीयमानाः गानं श्राव्यमाणाः, उपलाल्यमानाः विलास्यमानाः, इष्टान अभिलषितान, शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान, पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति तिष्ठन्ति। ततः खलु इतश्च सः—अवहेलितहितवचनो लोहभारवाहकः पुरुषः अयोभारेण सह यत्रैव स्वं-निजं नगरं, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत्र अयोभारकं गृहीत्वा अयोविक्रयणं करोति। तस्मिन्—लोहविक्रयलब्धे, अल्पमूल्ये-स्वल्पद्रव्ये आहार-वस्त्राद्यानयनेन निष्ठिते-समाप्ते सति स लोहवणिक्पुरुषः क्षीणपरिव्ययः-क्षीणः-मन्दः परिव्ययः-परितो व्ययः-द्रव्योपयोगो यस्य तथाभूतः, तान्-वज्रविक्रयिण-पुरुषान् उपरि-ऊर्ध्वभागे, प्रासादवरगतान्-रम्यप्रासादस्थितान यावद् विहरमाणान् स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धैः नाटकैः वरतरुणीसंप्रयुक्तैः उपनर्त्यमानान् उपगीयमानान् उपलाल्यमानान इष्टान शब्द—स्पर्श-रस-रूप-गन्धान पञ्चविधान् मानु-

अन्योऽन्य शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवम् अवादिषु -हे देवानुप्रियाः ! एष खलु त्रप्वाकरः यावत्—यावत्पदेन "इष्ट , कान्त , प्रिय , मनोज्ञ " सग्राह्यम् मनआम अल्पार्घ त्रपुकम् सुबहु-अतिप्रचुरम् अय -लोह लभ्यते-प्राप्यते, तत्-तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः ! अयोभार मुक्त्वा-विहाय त्रपुकभार बद्धु श्रेयः इति कृत्वा अन्योऽन्यस्य अन्तिके—समीपे एतदर्थम्-त्रपुभारग्रहणरूपम् अर्थम् प्रतिशृण्वन्ति कर्तव्यतया स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य अयोभार मुञ्चन्ति त्यजन्ति त्रपुकभार बध्नन्ति -गृह्णन्ति, तत्र-त्रपुभारग्रहणविषये खलु एक —कस्मिन् पुरुष अयोभार मोक्तु-त्यक्तु नो शक्नोति तथा-त्रपुकभार बद्धु-ग्रहीतु नो शक्नोति, तत खलु त पुरुषाः तम्—लोहभारवन्त पुरुषम् एवमवादिषु —हे देवानुप्रिय ! एष खलु त्रप्वाकर यावत्-यावत्पदेन-"इष्टः, कान्तः प्रियः, मनोज्ञः, मनआम, अल्पार्घ त्रपुकम्" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्य , सुबहु अतिप्रचुरम् अयः लोहः लभ्यते तत् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिय ! अयोभारम्—लोहभार मुञ्च-त्यज तथा त्रपुकभारक बधान—गृहाण, तत खलु स लोहभारवाहक पुरुष एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः -मया अयः-लोह दूराऽऽहृत-दूरात्—दूरप्रदेशाद् आहृतम् आनीतम्, हे देवानुप्रियाः ! मया अयः-चिराऽऽहृतम् चिरात्-बहुकालात् आहृतम् उह्यम्, हे देवानुप्रियाः ! मया अयः अतिगाढबन्धनबद्धम् अत्यन्तदृढबन्धनेन बद्धम् अत एव हे देवानुप्रियाः ! मया अय अशिथिलबन्धनबद्धम् अशिथिलबन्धनेन दृढबन्धनेन बद्धम् हे देवानुप्रियाः ! मया अयः प्रचुरबन्धनबद्धम्-"धणिअ" इति प्रचुरार्थो देशीय शब्द , अतोऽहम् अयोभार त्यक्त्वा त्रपुकभारक बद्धु-ग्रहीतु नो नैव शक्नोमि । तत खलु ते पुरुषाः तम्-लोहभारवाहक पुरुष यदा बहुभि -बह्वीभि आख्यापनाभि -दृष्टान्तरूपाभि" च पुन प्रज्ञापनाभि हेयोपादेयप्रविभाविकाभिश्च

किया गया है। "इट्ठ जाव मणाम" में आये हुए यावत्पद से 'इष्ट कान्त प्रिय , मनोज्ञ" इन पदों का सग्रह हुआ है। "तउ आगर जाव" पद से भी इष्ट कान्त, प्रिय, मनोज्ञ मन आम" इन पदों का सग्रह किया गया है। "धणीय" यह शब्द देशीय है और प्रचुर अर्थ का वाचक है ॥ १५४ ॥

थयो छे "इट्ठे जाव मणाम" मा आवेल यावत् पदथी 'इष्टः, कान्तः, प्रिय , मनोज्ञ आ पदोनो सग्रह थयो छे. 'तउआगरे जाव' पदथी पण 'इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मन आम' आ पदोनु ग्रहण थयु छे 'धणिय' आ शब्द देशीय छे अने प्रचुर अर्थनो वाचक छे. ॥सू. १५४॥

प्ररूपणाभिः—यथार्थस्वरूपनिरूपिकाभिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा नो शक्नुवन्ति—समर्था नाभवन्, तदा यथानुपूर्वि-यथाक्रमम्, संप्रस्थिताः—ततोऽग्रे प्रयाताः। एवम्—अनेन प्रकारेण ताम्राऽऽकरं, रूप्याऽऽकरं, सुवर्णाऽऽकरं, रत्नाऽऽकरं, वज्राऽऽकरं, हीरकखनिं पश्यन्ति इत्यादि लोहरूप्याकरदर्शनवदेव सर्व वर्णन बोध्यम्। ततः—लोहभारग्रहणकृताऽऽदरदुर्बुद्धिपुरुषस्यानेकवचथा.प्रबोधक-वाक्यप्रपञ्चैः प्रबोधनाऽसामर्थ्यानन्तरं खलु ते अल्पमूल्यकपूर्वपूर्ववस्तुपरित्याग-पूर्वकबहुमूल्योत्तरोत्तरवस्तुग्रहणबद्धाऽऽदरतया गृहीतवज्रमणिभाराः पुरुषाः यत्रैव स्वाः— स्वकीयाः जनपदाः—देशाः, यत्रैव स्वानि स्वानि—निजानि निजानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति। वज्रविक्रयणं—वज्रमणिविक्रय कुर्वन्ति—कृतवन्तः। तद्विक्रयेण लब्धबहुद्रव्यैः सुबहुदासीदासगोमहिषगवेलकं—सुबहु—अतिप्रचुरं यद् दासी—दास—गो महिष—गवेलकः—तत्र दासी—दास—गो—महिषाः प्रसिद्धाः, गवेलकाः—मेषाश्चेत्येषां समाहारस्तथा, तत् गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रित प्रासादावतंसकान —अष्टौ तलानि यत्र ते अष्टतलाः—अष्टभूमिकाः, ते च ते उच्छ्रिताः—उन्नताः गगनचुम्बिनः प्रासादावतंसकाः—श्रेष्ठप्रासादास्तान कारयन्ति, तत्र च स्नाताः कृतस्नानाः, कृतबलिकर्माणः—कृतवायसादिनिमित्तान्नविभागाः, कृतकौतुकमङ्गल-प्रायश्चित्ताः दुःस्वप्नादिफलविघाताय धृतदध्यक्षताश्रयाः सन्तः उपरि—ऊर्ध्वं प्रासादवरगताः—मनोहर प्रासादस्थिताः विहरन्तीत्युत्तरेणान्वयः, किं कुर्वन्तो विहरन्तीत्याह—स्फुटद्भिः—अतिरभसा स्फालनात् स्फुटद्भिरिवः, मृदङ्गमस्तकैः मृदङ्गमुखपुटैः, द्वात्रिंशद्बद्धकैः— द्वात्रिंशत्प्रकाररचना युक्तैः नाटकैः, तैः कीदृशैः ? इत्यत्राऽऽह—वरतरुणीसंप्रयुक्तैः—विशिष्ट स्त्रीसम्पादितैः, उपनर्त्यमानाः, नृत्यंदृश्यमानाः, उपगीयमानाः गानं श्राव्यमाणाः, उपलाल्यमानाः विलास्यमानाः, इष्टान अभिलषितान, शब्दस्पर्शरसरूप-गन्धान, पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति तिष्ठन्ति। ततः खलु इतश्च सः—अवहेलितहितवचनो लोहभारवाहकः पुरुषः अयोभारेण सह यत्रैव स्वं-निज नगरं, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत्र अयोभारकं गृहीत्वा अयोविक्रयणं करोति। तस्मिन्—लोहविक्रयलब्धे, अल्पमूल्ये-स्वल्पद्रव्ये आहार-वस्त्राद्यानयनेन निष्ठिते-समाप्ते सति स लोहवणिक् पुरुषः क्षीणपरिव्ययः-क्षीणः-मन्दः परिव्ययः-परितो व्ययः-द्रव्योपयोगो यस्य तथाभूतः, तान्-वज्रविक्रयिण-पुरुषान् उपरि-ऊर्ध्वभागे, प्रासादवरगतान्-रम्यप्रासादस्थितान यावद् विहरमाणान् स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धैः नाटकैः वरतरुणीसंप्रयुक्तैः उपनर्त्यमानान् उपगीयमानान् उपलाल्यमानान इष्टान् शब्द—स्पर्श-रस-रूप-गन्धान् पञ्चविधान् मानु-

अन्योऽन्य शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवम् अवादिषु -हे देवानुप्रिया ! एष खलु अयआकरः यावत्-यावत्पदेन "इष्ट, कान्तः, प्रिय, मनोज्ञ" सग्राह्य मनआम अल्पेनैव अपुकेण सुबहु-अतिप्रचुरम् अय -लोह लभ्यत-प्राप्यते, तत्-तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः ! अयोभार मुक्त्वा-विहाय त्रपुकभार बद्धु श्रेयः इति कृत्वा अन्योऽन्यस्य अन्तिके-समीपे एतम्-त्रपुभारग्रहणरूपम् अर्थम् प्रतिशृण्वन्ति स्वीकृततया स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य अयोभार मुञ्चन्ति त्यजन्ति त्रपुकभार बध्नन्ति -गृह्णन्ति, तत्र-त्रपुभारग्रहणविषये खलु एकः-कश्चित् पुरुषः अयोभार मोक्तु-त्यक्तु नो शक्नोति, तथा-त्रपुकभार बद्धु-ग्रहीतु नो शक्नोति, तत खलु ते पुरुषाः तम्-लोहभारवन्त पुरुषम् एवमवादिषु —हे देवानुप्रिय ! एष खलु त्रपुकरः यावत्-यावत्पदेन-'इष्ट, कान्त प्रियः, मनोज्ञः, मनआमः, अल्पेनैव त्रपुकेण" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, सुबहु अतिप्रचुरम् अयः लोहः लभ्यते तत् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिय ! अयोभारक-लोहभारं मुञ्च-त्यज तथा त्रपुकभारकं बधान-गृहाण, ततः खलु स लोहभारवाहकः पुरुष एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः-मया अयः-लोहः दूराऽऽहृत-दूरात्-दूरप्रदेशात् आहृतम् आनीतम्, हे देवानुप्रिया ! मया अयः-चिराऽऽहृतम् चिरात्-बहुकालात् आहृतम् उद्धृतम्, हे देवानुप्रियाः ! मया अयः अतिगाढबन्धनबद्धम्-अत्यन्तदृढबन्धनेन बद्धम् अत एव हे देवानुप्रियाः ! मया अयः अशिथिलबन्धनबद्धम् अशिथिलबन्धनेन दृढबन्धनेन बद्धम् हे देवानुप्रिया ! मया अयः धणियबन्धनबद्धम्-"धणिअ" इति प्रचुरार्थो देशीयः शब्दः, अतोऽहम् अयोभार त्यक्त्वा त्रपुकभारक बद्धु-ग्रहीतु नो चव शक्नोमि। ततः खलु ते पुरुषाः तम्-लोहभारवाहक पुरुष यदा बहुभिः-बह्वीभिः आख्यापनाभिः-दृष्टान्तरूपाभिः" च पुनः प्रज्ञापनाभिः इत्यापादयमतिबोधिकाभिः

किया गया है। "इट्ठे जाव मणाम' में आये हुए यावत्पद से 'इष्ट' कान्तः प्रिय, मनोज्ञ" इन पदों का सग्रह हुआ है। "तउ आगरे जाव" पद से भी इष्ट कान्त, प्रिय, मनोज्ञ मन आम" इन पदों का संग्रह किया गया है। 'धणीय" यह शब्द देशीय है और प्रचुर अर्थ का वाचक है ॥ १५४॥

थयेो छे "इट्ठे जाव मणामं' मा आवेल यावत् पदथी 'इष्टः, कान्त, प्रियः, मनोज्ञः' आ पदोनो संग्रह थयो छे. 'तउआगर जाव' पदथी पण 'इष्ट कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मन आम' आ पदोनु ग्रहण थयु छे 'धणिय' आ शब्द देशीय छे अने प्रचुर अर्थनो वाचक छे ।।सू. १५४।।

प्ररूपणाभिः—यथार्थस्वरूपनिरूपिकाभिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा नो शक्नुवन्ति—समर्था नाभवन्, तदा यथानुपूर्वि-यथाक्रमम्, संप्रस्थिताः—ततोऽग्रे प्रयाताः। एवम्—अनेन प्रकारेण ताम्राऽऽकरं, रूप्याऽऽकरं, सुवर्णाऽऽकरं, रत्नाऽऽकरं, वज्राऽऽकरं, हीरकखनिं पश्यन्ति इत्यादि लोहत्रप्वाकरदर्शनवदेव सर्वं वर्णनं बोध्यम्। ततः—लोहभारग्रहणकृताऽऽदरदुर्बुद्धिपुरुषस्यानेकवर्था प्रबोधके-वाक्यप्रपञ्चैः प्रबोधनाऽसामर्थ्यानन्तरं खलु ते अल्पमूल्यकपूर्वं पूर्ववस्तुपरित्याग-पूर्वकबहुमूल्योत्तरोत्तरवस्तुग्रहणवद्धाऽऽदरतया गृहीतवज्रमणिभाराः पुरुषाः यत्रैव स्वाः— स्वकीयाः जनपदाः—देशाः, यत्रैव स्वानि स्वानि—निजानि निजानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति। वज्रविक्रयणं—वज्रमणिविक्रयं कुर्वन्ति—कृतवन्तः। तद्विक्रयेण लब्धबहुद्रव्यैः सुबहुदासीदासगोमहिषगवेलकं—सुबहु—अतिप्रचुरं यद् दासी—दास—गो महिष—गवेलकः—तत्र दासी—दास—गो—महिषाः प्रसिद्धाः, गवेलकाः—मेषाश्चेत्येषां समाहारस्तथा, तत् गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रित प्रासादावतंसकान्—अष्टौ तलानि यत्र ते अष्टतलाः—अष्टभूमिकाः, ते च ते उच्छ्रिताः—उन्नताः गगनचुम्बिनः प्रासादावतंसकाः—श्रेष्ठप्रासादास्तान् कारयन्ति, तत्र च स्नाताः कृतस्नानाः, कृतबलिकर्माणः—कृतवायसादिनिमित्तान्नविभागाः, कृतकौतुकमङ्गल-प्रायश्चित्ताः दुःस्वप्नादिफलविघाताय धृतदध्यक्षताद्याः सन्तः उपरि——ऊर्ध्वं प्रासादवरगताः——मनोहर प्रासादस्थिताः विहरन्तीत्युत्तरेणान्वयः, किं कुर्वन्तो विहरन्तीत्याह—स्फुटद्भिः—अतिरभसा स्फालनात् स्फुटद्भिरिव, मृदङ्गमस्तकैः मृदङ्गमुखपुटैः, द्वात्रिंशद्बद्धकैः— द्वात्रिंशत्प्रकाररचनायुक्तैः नाटकैः, ते कीदृशैः ? इत्यत्राऽऽह—वरतरुणीसंप्रयुक्तैः—विशिष्ट स्त्रीसम्पादितैः, उपनर्त्यमानाः, नृत्यं दृश्यमानाः, उपगीयमानाः गानं श्राव्यमाणाः, उपलाल्यमानाः विलास्यमानाः, इष्टान् अभिलषितान्, शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान्, पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति तिष्ठन्ति। ततः खलु इतश्च सः—अवहेलितहितवचनो लोहभारवाहकः पुरुषः अयोभारेण सह यत्रैव स्वं-निज नगरं, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत्र अयोभारकं गृहीत्वा अयोविक्रयणं करोति। तस्मिन्—लोहविक्रयलब्धे, अल्पमूल्ये-स्वल्पद्रव्ये आहार-वस्त्राद्यानयनेन निष्ठिते-समाप्ते सति स लोहवणिक् पुरुषः क्षीणपरिव्ययः-क्षीणः-मन्दः परिव्ययः-परितो व्ययः-द्रव्योपयोगो यस्य तथाभूतः, तान्-वज्रविक्रयिण-पुरुषान् उपरि-ऊर्ध्वभागे, प्रासादवरगतान्-रम्यप्रासादस्थितान् यावद् विहरमाणान् स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धैः नाटकैः वरतरुणीसंप्रयुक्तैः उपनर्त्यमानान् उपगीयमानान् उपलाल्यमानान् इष्टान् शब्द—स्पर्श-रस-रूप-गन्धान् पञ्चविधान् मानु-

प्यकान काममोगान् ... अनुभवन्तो विहरमाणान् पश्यन्ति। दृष्ट्वा एवम्-अनुपद वक्ष्यमाण वचनम् अवादीत्-अहो ! खिन्नः खलु अहम् अकन्य -धन्यो न, अपुण्य पुण्यहीन, अकृतार्थ अकृतार्थसिद्धिक, अकृतलक्षण -शुभलक्षणहीन, ह्रीश्रीवर्जित-लज्जालक्ष्मीहीन, हीनपुण्य चातुर्दश -हीनपुण्य -क्षीणपुण्य -अत एव चातुर्दश -कृष्णचतुर्दश्यां जात, दुरन्तप्रान्त लक्षण-दुरन्त-दुष्पर्यवसानम् अत एव प्रान्तम् अमनोज्ञ लक्षण यस्य स तथा-कुलक्षणयुक्त, अहमस्मि। यदि-चेत् खलु अहं मित्राणां-सहगतानां वा-अथवा ज्ञातीनां-पितृव्यादीनां वा निजकानां-हितपिणां वा वचनम् अश्रोष्य-श्रवणपथमानेष्यम् तदा तर्हि खलु अहमपि एवमेव-अस्महागतवज्रमणिविक्रयिपुरुषवद्, उपरि-ऊर्ध्वभाग, प्रासादवरगतः-सुन्दर प्रासादस्थित वज्रमणिविक्रयिसदृशो भूत्वा यावत् ... विहरिष्यम्-अस्थास्यम् विविध-सुखसम्पन्नोऽभविष्यम्। तत्-स प्रादेशी, तेन-अनन्तरोक्तेन अर्थेन-लोहवणिग्रूपण दृष्टान्तेन, हे प्रदेशिन्! एवमुच्यते-कथ्यते यत् हे प्रदेशिन्! त्वं पश्चादनुतापिको मा भवे, यथा-येन प्रकारेण स अन्तरोक्त अयोहारक पश्चादनुतापिकोऽभूत्। ॥सू० १५४॥

मूलम्-तए णं से पएसी राया संबुद्धे केसिकुमारसमणं वदइ जाव एवं वयासी-णो खलु भंते ! अहं पच्छाणुतावए भविस्सामि जहा चेव से पुरिसे अयभारए। तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। धम्मकहा, जहा चित्तस्स तहेव जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।१५५॥

छाया-ततः खलु स प्रदेशी राजा संबुद्ध केशिकुमारश्रमणं वन्दते यावत् एवमवादीत्-नो खलु भदन्त! अहं पश्चादनुतापिको भविष्यामि यथैव स पुरुषो

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तएणं से पएसी राया संबुद्धे) इस तरह से बहुत समझाने पर वह प्रदेशी राजा बोध को प्राप्त हो गया (केसिकुमारसमणं जाव वदइ

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तएणं से पएसी राया संबुद्धे) આ પ્રમાણે બહુ જ સમજાવવાથી તે પ્રદેશી રાજાને બોધ પ્રાપ્ત થયો। (केसि कुमारसमणं जाव वदइ एवं वयासी) પછી તેણે

ऽयोहारकः। तदिच्छामि खलु देवानुप्रियाणामन्तिके केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं निशमयितुम्। यथासुखं देवानुप्रियाः! मा प्रतिबन्धं कुरुत धर्मकथा, यथा चित्रस्य तथैव यावत् गृहिधर्मं प्रतिपद्यते, यत्रैव श्वेतांविका नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ॥ सू० १५५॥

एवं वयासी) फिर उसने वंदना की यावत् केशिकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(णो खलु भंते। अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा चेव से पुरिसे अयहारए) हे भदंत! मैं उस अयोहारक-लोहवणिक पुरुष की तरह पश्चादनुतापित नहीं होऊंगा (तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए) अतः मैं आप देवानुप्रिय से केवलिप्रज्ञप्त धर्म सुनने का अभिलाषी हो रहा हूं (अहा सुहं देवानुप्पिया! मा पडिबंधं करेह) तब केशीकुमारश्रमण ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय! आप को जिससे सुख ऊपजे ऐसा करो परन्तु इस विषय में विलम्ब करना ऊचित नहीं है। (धम्म कहा) प्रदेशी राजा को तब केशीकुमारश्रमण ने मुनिधर्म और गृहस्थधर्म का ऊपदेश दिया. (जहा चित्तस्स तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ) यहां वह धर्मकथा १११वे सूत्र में जैसी कही गई है वैसी जाननी चाहिये. तब प्रदेशी राजाने द्वादशविधरूप गृहीधर्म स्वीकार कर लिया (जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार गृहिधर्म धारणकर वह प्रदेशी राजा जहां श्वेतांविका नगरीथी उस ओर चलदिया-

---

કેશી કુમારશ્રમણને વંદના કરી યાવત્ કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(णो खलु भंते! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा चेव से पुरिसे अयहारए) હે ભદંત! હું તે અયોહારક લોહવણિક પુરૂષની જેમ પશ્ચાદનુતાપિક થઈશ નહિ. (तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए) એથી હું આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સાભળવાની અભિલાષા રાખું છુ. (अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेह) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું હે દેવાનુપ્રિય! તમને જેમા આનંદ થાય તેમ કરો. પણ આ વિષયમા વિલંબ ઉચિત નથી. (धम्मकहा) પ્રદેશી રાજાને ત્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે મુનિધર્મ અને ગૃહસ્થધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. (जहा चित्तस्स तहेव गिहिधम्म पडिवज्जइ) અહીં તે ધર્મકથા ૧૧ મા સૂત્ર પ્રમાણે કહેવામા આવી છે. ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ દ્વાદશ વિધરૂપ ગૃહીધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. (जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) આ પ્રમાણે ગૃહીધર્મ ધારણ કરીને તે પ્રદેશી રાજા જ્યાં શ્વેતાંબિકા નગરી હતી તે તરફ રવાના થઇ ગયો.

प्यकान कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो विहरमाणान् पश्यन्ति। दृष्ट्वा एवम्-अनुपद वक्ष्यमाण वचनम् अवादीत्-अहो! विस्मये खलु अहम् अधन्य -धन्यो न, अपुण्यः- पुण्यहीन, अकृतार्थः अकृतार्थसिद्धिक, अकृतलक्षण -शुभलक्षणहीनः, ह्रीश्रीवर्जित - लज्जालक्ष्मीहीन, हीनपुण्य चातुर्दश -हीनपुण्य -क्षीणपुण्य अत एव चातुर्दशः- कृष्णचतुर्दश्यां जातः, दुरन्तप्रान्त लक्षण -दुरन्त-दुष्टावसानम् अत एव प्रान्तम् अमनोज्ञ लक्षण यस्य स तथा-कुलक्षणयुक्त, अहमस्मि। यदि-चेत् खलु अहं मित्राणां-सहगतानां वा-अथवा ज्ञातीनां-पितृव्यादीनां वा निजकानां- हितैषिणां वा वचनम् अश्रोष्य-श्रवणपथमानेष्यम् तदा तर्हि खलु अहमपि एव मेव-मत्सहागतवज्रमणिविक्रयिपुरुषवदेव, उपरि-ऊर्ध्वभागे, प्रासादवरगत -सुन्दर प्रासादस्थितः वज्रमणिविक्रयिसदृशो भूत्वा यावत् व्यहरिष्यम्-अस्थास्यम् विविध- सुखसम्पन्नोऽभविष्यम्। तत् स प्रदेशी, तेन-अन्तरोक्तेन अर्थेन-लोहवणिग्रूपेण दृष्टान्तेन, हे प्रदेशिन्! एवम्-इत्थम्, उच्यते-कथ्यते यत् हे प्रदेशिन्! त्वं पश्चादनुतापिको मा भवेः, यथा-येन प्रकारेण स-अन्तरोक्त अयोहारक पश्चा दनुतापिकोऽभूत्। ॥सू० १५४॥

मूलम्-तए णं से पएसी राया संबुद्धे केसिकुमारसमणं वदइ जाव एवं वयासी-णो खलु भंते! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि जहा चेव से पुरिसे अयभारए। तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। धम्मकहा, जहा चित्तस्स तहेव जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥१५५॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा संबुद्धः केशिकुमारश्रमणं वन्दते यावत् एवमवादीत्-नो खलु भदन्त! अहं पश्चादनुतापिको भविष्यामि यथैव स पुरुषो

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया संबुद्धे) इस तरह से बहुत सम्मान पा वह प्रदेशी राजा बोध को-प्राप्त हो गया (केसिकुमारसमणं जाव वदइ

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया संबुद्धे) આ પ્રમાણે બહુ જ સમજાવવાથી તે પ્રદેશી રાજાને બોધ પ્રાપ્ત થયો। (केसि कुमारसमणं जाव वदइ एवं वयासी) ત્યારે તેમણે

ऽयोहारकः। तदिच्छामि खलु देवानुप्रियाणामन्तिके केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं निशमयितुम्। यथासुखं देवानुप्रियाः! मा प्रतिबन्धं कुरुत धर्मकथा, यथा चित्रस्य तथैव यावत् गृहिधर्मं प्रतिपद्यते, यत्रैव श्वेतांबिका नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ॥ सू० १५५ ॥

एवं वयासी) फिर उसने वंदना की यावत् केशिकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(णो खलु भंते। अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा चेव से पुरिसे अयहारए) हे भदंत! मैं उस अयोहारक-लोहवणिक पुरुष की तरह पश्चादनुतापित नहीं होऊंगा (तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए) अतः मैं आप देवानुप्रिय से केवलिप्रज्ञप्त धर्म सुनने का अभिलाषी हो रहा हूं (अहा सुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह) तब केशीकुमारश्रमण ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय! आप को जिससे सुख ऊपजे एसा करो परन्तु इस विषय में विलम्ब करना ऊचित नहीं है। (धम्म कहा) प्रदेशी राजाको तब केशीकुमारश्रमण ने मुनिधर्म और गृहस्थधर्म का ऊपदेश दिया. (जहा चित्तस्स तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ) यहां वह धर्मकथा १११वें सूत्र में जैसी कही गई है वैसी जाननी चाहिये. तब प्रदेशी राजाने द्वादशविधरूप गृहीधर्म स्वीकार कर लिया (जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार गृहिधर्म धारणकर वह प्रदेशी राजा जहां श्वेतांबिका नगरीथी उस ओर चलदिया-

---

કેશી કુમારશ્રમણને વંદના કરી યાવત્ કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું -(णो खलु भंते! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा चेव से पुरिसे अयहारए) હે ભદંત! હું તે અયોહારક લોહવણિક પુરૂષની જેમ પશ્ચાદનુતાપિક થઈશ નહિ. (तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए) એથી હું આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સાંભળવાની અભિલાષા રાખું છું (अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेह) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું હે દેવાનુપ્રિય! તમને જેમાં આનંદ થાય તેમ કરો. પણ આ વિષયમાં વિલંબ ઉચિત નથી. (धम्मकहा) પ્રદેશી રાજાને ત્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે મુનિધર્મ અને ગૃહસ્થધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. (जहा चित्तस्स तहेव गिहिधम्म पडिवज्जइ) અહીં તે ધર્મકથા ૧૧ મા સૂત્ર પ્રમાણે કહેવામાં આવી છે. ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ દ્વાદશ વિધરૂપ ગૃહીધર્મનો સ્વીકાર કર્યો (जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) આ પ્રમાણે ગૃહીધર્મ ધારણ કરીને તે પ્રદેશી રાજા જ્યાં શ્વેતાંબિકા નગરી હતી તે તરફ રવાના થઈ ગયો.

प्यकान काममोगान ...नुभवन्तो विहरमाणान् पश्यन्ति। दृष्ट्वा एवम्-अनुपद वक्ष्यमाण वचनम् अवादीत्-अहो! विस्मयः खलु अहम् अधन्यः-धन्यो न, अपुण्य पुण्यहीन, अकृतार्थ अकृतार्थसिद्धिकः, अकृतलक्षण -शुभलक्षणहीनः, ह्रीधीवर्जित - लज्जालक्ष्मीहीन, हीनपुण्य चातुर्दशः-हीनपुण्य -क्षीणपुण्य ...अत एव चातु... कृष्णचतुर्दश्यां जात, दुरन्तप्रान्त लक्षण.-दुरन्त-दुष्टा सानम् अत ...एव ... अमनोज्ञ लक्षण यस्य स तथा-कुलक्षणयुक्तः, अहमस्मि।..यदि-चे... अह मित्राणां-सहगतानां वा-अथवा ज्ञातीनां-पितृव्यादीनां वा हितैषिणां वा वचनम् अश्रोष्य-श्रवणपथमानेष्यम् तदा तर्हि खलु मेघ-मत्सहागतवज्रमणिविमल-पुरुषवदेव, उपरि-ऊर्ध्वभागे, माम प्रासादरिपत वज्रमणिविकषितसदृशो भूत्वा यावत् ...परिष्यम्- सुलसम्पन्नोऽभविष्यम्। तत्-त स्माद्धेतोः, तन-अनन्तरोक्त न दृष्टान्तेन, हे प्रदेशिन्! एवम्-इत्थम्, उच्यते-कथ्यते पश्चादनुतापिको मा भवे, यथा-यन प्रकारेण स ... दनुतापिकोऽभूत्। ।सू० १५४।।

मूलम्-तए णं से पएसी राया सवु जाव एवं वयासी-णो खलु भंते! अह जहा चेव से पुरिमे अयभारए। त अ तिए केवलिपन्नत्त धम्मं निसामि मा पडिबध करेह। धम्मकहा, जहा पडिवज्जइ, जेणेव सेयविया नयरी

छाया—ततः खलु स प्रदेशी रा... एवमवादीत्-नो खलु भदन्त! अह यथा...

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया ... पर वह प्रदेशी राजा बोध को-प्राप्त हो

'तए ण स पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया स... ते प्रदेशी राजाने बोध प्राप्त थयो। (केसि कुमार...

तओ आयरिआ पण्णत्ता, तं जहा–कलायरिए१, सिप्पायरिए२, धम्मायरिए३। जाणासि ण तुम पएसी! तेसिं तिण्ह आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा?। हंता! जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा, पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयावेज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्ति कप्पेज्जा२। जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढफलगसिज्जासंथारएणं उवनिमंतेज्जा३। एवं जाणासि तहावि णं तुमं मम वाम वामेणं जाव वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥ सू० १५६॥

छाया–ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवम् अवादीत्–जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! कति आचार्याः प्रज्ञप्ताः?, हन्त! जानामि त्रय

"तएणं केसी कुमारसमणे" इत्यादि।

सूत्रार्थ—"तएणं" इसके बाद "केसी कुमारसमणे" केशीकुमारश्रमणने "पएसिं" रायं एवं वयासी" प्रदेशी राजा से ऐसा कहा "जाणासि णं तुमं पएसी? कइ आयरिया पण्णत्ता–" हे प्रदेशिन्–! तुम जानते हो कितने आचार्य कहे गये हैं–? प्रदेशीने कहा—"हंता? जाणामि–तओ आयरिया

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—'तएणं' त्यार पछी 'केसी कुमारसमणे' केशी कुमार श्रमणे 'पएसिं रायं एवं वयासी' प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्यु 'जाणासि णं तुमं पएसी! कइ आयरिया पण्णत्ता" हे प्रदेशिन् तमे जाणो छो के आचार्यो केटला प्रकारना कहेवाय छे? प्रदेशीए कह्यु–'हंता? जाणामि–तओ आयरिया पण्णत्ता" हा भदंत!

टीका—'तए णं से पएसी राया' इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा समुद् बोधं प्राप्तः, सन् केशिकुमारश्रमणम् वन्दते-स्तौति, यावत्-याव दवदन 'नमस्यति सत्करोति सम्मानयति कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपास्ते' इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः। एषां व्याख्या गता। वन्दनाद्यनन्तरम् एवमवादीत्-हे भदन्त! अहं खलु पश्चादनुतापिको नो भविष्यामि यथा स पकारणः स-अनन्तरोक्तः अयोहारकः-लोहवणिक्, पुरुषः पश्चादनुतापिकोऽभवत्, तत् तस्मात् कारणाद् अहं खलु देवानुप्रियाणां भवताम् अन्तिके पार्श्वे केवलि प्रज्ञप्तं, धर्मं भवसागरनिमज्जत्प्राणिगणोद्धरणधुरीणं श्रुतचारित्रलक्षणं निशमयितुं श्रोतुम् इच्छामि अभिलषामि। केशी प्राह-हे देवानुप्रिय! यथासुखं यथा-तुभ्यं रोचते तथा कुरु इति भावः किन्तु प्रतिबन्धं विलम्बं मा कुरु। धर्मकथा अनगारागारधर्मकथा यथा चित्रस्य द्वादशाभिकैकवृततमप्रश्नोक्ता तथैव तद् नुसा रिण्येव विज्ञेया। ततः प्रदेशी गृहिधर्मं द्वादशविधं प्रतिपद्यते स्वीकरोति, प्रतिपद्य स यत्रव श्वेताम्बिका नगरी तत्रैव गमनाय प्राधारयत् मनसि निश्चितवान्।।सू०१५५।।

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-जाणासि णं तुमं पएसी! कइ आयरिया पन्नत्ता?, हंता जाणामि,

टीकार्थ—स्पष्ट है "वदइ जाव एवं वयासी" में जो-यावत्पद आया है उससे- 'नमस्यति-सत्करोति-सम्मानयति कल्याणं मङ्गलं दैवतं-चैत्यं-पर्युपास्ते' इन पदों का संग्रह हुआ है, तात्पर्य-कहने का यह है कि-जब प्रदेशी राजा बोध को प्राप्त हो गया। तब उसने केशी कुमार श्रमण की स्तुति की, उन्हें नमस्कार किया उनका सत्कार किया सन्मान किया और-कल्याणरूप मङ्गलरूप एवं देवस्वरूप उन चैत्य ज्ञान प्रदाता गुरुदेव की उसने पर्युपासना की, फिर उसने भवसागर में डूबते हुए प्राणियों का उद्धार करने में समर्थ ऐसे श्रुत चारित्ररूप धर्म को सुनने की अपनी अभिलाषा प्रकट की ॥ सू १५५ ॥

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ છે 'वदइ जाव एवं वयासी' માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે તેથી 'नमस्यति—सत्करोति सम्मानयति कल्याण—मङ्गलं—दैवत—चैत्य—पर्युपास्ते' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. તાત્પર્ય આમ છે કે જ્યારે પ્રદેશી રાજાને બોધ પ્રાપ્ત થઈ ગયો ત્યારે તેણે કેશી કુમાર શ્રમણની સ્તુતિ કરી. તેમને નમસ્કાર કર્યા તેમનો સત્કાર કર્યો સન્માન કર્યું અને કલ્યાણરૂપ મંગલરૂપ અને દેવસ્વરૂપ તે ચૈત્યજ્ઞાન પ્રદાતા ગુરુદેવની તેમણે પર્યુપાસના કરી. ત્યાર પછી તેમણે ભવસાગરમાં ડૂબતા પ્રાણીઓના ઉદ્ધારમાં સમર્થ એવા શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મને સાંભળવાની પોતાની

तओ आयरिआ पण्णत्ता, तं जहा–कलायरिए१, सिप्पायरिए२, धम्मायरिए३। जाणासि ण तुम पएसी ! तेसिं तिण्ह आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा ? । हंता ! जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा, पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयावेज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्ति कप्पेज्जा२। जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा कल्लाणं मंगलं देवय चेइयं पज्जुवासेज्जा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढफलगसिज्जासंथारएणं उवनिमंतेज्जा३। एवं जाणासि तहावि णं तुमं मम वाम वामेणं जाव वट्टित्ता ममं एयमट्टं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारत्थ गमणाए ॥ सू० १५६ ॥

छाया–ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवम् अवादीत्–जानासि खलु त्वं प्रदेशिन् ! कति आचार्याः प्रज्ञप्ताः १, हन्त ! जानामि त्रय

"तएण केसी कुमारसमणे" इत्यादि ।

सूत्रार्थ—"तएण" इसके बाद "केसी कुमारसमणे" केशीकुमारश्रमणने "पएसिं" रायं एवं वयासी" प्रदेशी राजा से ऐसा कहा "जाणासि णं तुमं पएसी ? कइ आयरिया पण्णत्ता–" हे प्रदेशिन्–! तुम जानते हो कितने आचार्य कहे गये है–? प्रदेशीने कहा—"हंता ? जाणामि–तओ आयरिया

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ—'तएणं' ત્યાર પછી 'केसी कुमारसमणे' કેશી કુમાર શ્રમણે 'पएसिं रायं एवं वयासी' પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું 'जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ आयरिया पण्णत्ता" હે પ્રદેશિન્ તમે જાણો છો કે આચાર્યો કેટલા પ્રકારના કહેવાય છે ? પ્રદેશીએ કહ્યું–'हंता ? जाणामि–तओ आयरिया पण्णत्ता" હા ભદંત !

आचार्याः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-कलाऽऽचार्यः १, शिल्पाऽऽचार्य २, धर्माऽऽचार्यः ३। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! तेषां त्रयाणामाचार्याणां कस्य का विनयप्रतिपत्ति प्रयोक्तव्या? हन्त! जानामि-कलाऽऽचार्यस्य शिल्पाऽऽचार्यस्य उपलेपनं समार्जनं वा कुर्यात्, पुरतः पुष्पाणि वा आनयेत् मापयेत् मण्डयेत् भोजयेत् वा विपुलं जीवि ताई प्रीतिदानं दद्यात् पौत्रानुपुत्रिकीं वृत्तिं कल्पयेत् २। यत्रैव धर्माऽऽचार्यं पश्येत्

पण्णत्ता-" हां भदन्त-! जानता हूं-तीन आचार्य कहे गये हैं। "तं जहा-कलायरिए-सिप्पायरिए-धम्मायरिए" जो इस प्रकार से हैं-कलाचार्य-१ शिल्पाचार्य-२ और तीसरा धर्माचार्य। 'जाणासि णं तुमं पएसी-" तेसिं तिण्हं आ रियाण कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा-" हे प्रदेशिन्-! तुम जानते हो इन तीन आचार्यों में किस आचार्य का कैसा विनय प्रकार करना कहा गया है-' प्रदेशीने कहा-"हंता? जाणामि हां भदन्त ३ जानता हूं कला यरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं समज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयाविज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा-" कलाचार्य और-शिल्पाचार्य के शरीर में तैल का मर्दन करना, उन्हें स्नान कराना, तथा-उनके समक्ष पुष्पों आदि को भेंटके रूप में रखना, पुष्पमाला आदिसे उन्हें अलंकृत करना भोजन कराना उनकी आजीविका के योग्य सहर्ष प्रीतिदान देना वस्त्रादि प्रदान करना एवं-पुत्र

જાણુ છું-ત્રણ આચાર્યો કહેવાય છે "तं जहा-कलायरिए सिप्पायरिए धम्मायरिए" તે આ પ્રમાણે છે કલાચાર્ય १ શિલ્પાચાર્ય २ અને ધર્માચાર્ય ३ " जाणासि णं तुमं पएसी तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा' હે પ્રદેશિન્ તમે જાણો છો કે આ ત્રણ આચાર્યોમાં કયા આચાર્યને કઈ જાતનો વિનય પ્રકાર કરવા કહેવામાં આવેલ છે? પ્રદેશીએ કહ્યું-"हंता? जाणामि" હાં ભદન્ત! જાણું છું "कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं समज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयावेज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा" કલાચાર્ય અને શિલ્પાચાર્યના શરીરમાં તેલની માલીશ કરવી તેમને સ્નાન કરાવવું તેમજ તેમની સામે પુષ્પોની ભેટ મૂકવી પુષ્પમાળા વગેરેથી તેમને અલંકૃત કરવા ભોજન કરાવવું તેમની આજીવિકા માટે યોગ્ય સહર્ષ પ્રીતિ દાન આપવું અને પુત્ર-પૌત્ર વગેરેના ભરણ-પોષણ યોગ્ય આજીવિકાની વ્યવસ્થા

तत्रैव वन्देत नमस्येत सत्कुर्यात् सम्मानयेत् कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपासीत, प्रासुकैषणीयेन अशन पान खादिमस्वादिमेन प्रतिलम्भयेत्, प्रातिहारिकेण पीठफलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयेत, एवं च तावत् त्वं प्रदेशिन् ! एवं जानासि तथापि खलु त्वं मम वामवामेन यावद् वर्तित्वा मम एतमर्थम् अक्षामयित्वा यत्रैव श्वेतविका नगरी तत्रैव प्राधारयत् गमनाय। ॥ सू० १५६ ॥

पौत्रादि के निर्वाह योग्य आजीविका लगा देना. इस प्रकार से यह कलाचार्य ७२ -प्रकार की कलाओं को सिखानेवालों की, और-शिल्पाचार्य विज्ञान सिखानेवालों की विनयप्रतिपत्ति है। "जत्थेव धम्मायरिय पासिज्जा, तत्थेव वंदेज्जा, णमंसेज्जा, सक्कारेज्जा, सम्माणेज्जा, कल्लाणं-मंगलं-देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा-' तथा-धर्माचार्य की विनय प्रतिपत्ति इस प्रकारसे है-जहां पर भी धर्माचार्य को देखलिया जावे, वहीं पर उनकी वन्दना करना, नमस्कार करना, सत्कार करना, सन्मान करना. कल्याण-मङ्गल-देवस्वरूप उन चेत्य ज्ञानदायक की पर्युपासना करना, तथा-"फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सिज्जा संथारएणं उवनिमंतेज्जा-" प्रासुक एषणीय अशन पान खादिम स्वादिम रूप चार प्रकारके आहार से उन्हें प्रतिलाभित करना, पडिहारिपीठफलक शय्या संस्तारक को ग्रहण करने के लिये उनसे प्रार्थना करना-३ इस प्रकार की यह धर्माचार्य की विनयप्रतिपत्ति है-। "एव ताव तुम पएसी-? एव जाणासि तहाविणं तुमं मम वामं वामेण

કરવી. આ પ્રમાણે આ કલાચાર્ય કે જે ૭૨ પ્રકારની કલાઓનું શિક્ષણ આપે છે અને શિલ્પાચાર્ય-વિજ્ઞાનનું શિક્ષણ આપનારની વિનયપ્રતિપત્તિ છે 'जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा, तत्थेव वंदेज्जा, णमंसेज्जा सक्कारेज्जा, सम्माणेज्जा, कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा" તેમજ ધર્માચાર્યની વિનયપ્રતિપત્તિ આ પ્રમાણે છે-જ્યાં ધર્માચાર્ય દેખાય કે તરતજ ત્યાં તેમને વન્દન કરવા, નમસ્કાર કરવા સત્કાર કરવો, સન્માન કરવું, કલ્યાણ-મંગળ દેવસ્વરૂપ તે જ્ઞાનદાયકની પર્યુંપાસના કરવી તે-જ "फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएण पीढफलगसिज्जा-संथारएण उवनिमंतेज्जा" પ્રાસુક એષણીય અશન-પાન ખાદિમ સ્વાદિય રૂપ ચાર પ્રકારના આહારથી તેમને પ્રતિલાભિત કરવા, સમર્પણીય પીઠફલક, શય્યાસંસ્તાર ને ગ્રહણ કરવા માટે તેમને વિનંતી કરવી ૩, આ જાતની આ ધર્માચાર્યની વિનય પ્રતિપત્તિ છે "एवं ताव तुम पएसी? एव जाणासि तहाविणं तुमं ममं वामं वामेणं जाव वट्टित्ता मम एयमट्ठ अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए" હે પ્રદેશિન્! જ્યારે તમે આ પ્રમાણે

आचार्याः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-कलाऽऽचार्यः १, शिल्पाऽऽचार्य २, धर्माऽऽचार्यः ३। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! तेषां त्रयाणामाचार्याणां कस्य का विनयप्रतिपत्तिः प्रयोक्तव्या? हन्त! जानामि-कला ऽऽचार्यस्य शिल्पाऽऽचार्यस्य उपलेपनं संमार्जनं वा कुर्यात्, पुरतः पुष्पाणि वा आनयेत् मार्जयेत् मण्डयेत् भोजयेत् वा विपुलं जीवितार्ह प्रीतिदानं दद्यात् पौत्रानुपुत्रिकीं वृत्तिं कल्पयेत् २। यत्र धर्माचार्यं पश्येत्

पण्णत्ता-" हां भदन्त-! जानता हूं-तीन आचार्य कहे गये हैं। "तं जहा-कलायरिए-सिप्पायरिए-धम्मायरिए" जो इस प्रकार से हैं-कलाचार्य-१ शिल्पाचार्य-२ और तीसरा धर्माचार्य। जाणासि णं तुमं पएसी-" तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा-" हे प्रदेशिन्-! तुम जानते हो इन तीन आचार्यों में किस आचार्यका कैसा विनय प्रकार करने का कहा गया है-! प्रदेशीने कहा-"हंता? जाणामि हां भदन्त ! जानता हूं कला यरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयाविज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा-" कलाचार्य और-शिल्पाचार्य के शरीर में तेल का मर्दन करना, उन्हें स्नान कराना, तथा-उनके समक्ष पुष्प आदि रखना, पुष्पमाला आदिसे उन्हें अलंकृत करना भोजन कराना उनकी आजीविका के योग्य सहर्ष प्रीतिदान देना वस्त्रादि प्रदान करना पुत्र-पुत्र

जाणुं छु-त्रण आचार्यो कहेवाय छे "तं जहा-कलायरिए सिप्पायरिए धम्मायरिए" ते आ प्रमाणे छे कलाचार्य १ शिल्पाचार्य २ अने धर्माचार्य ३, " जाणासि णं तुमं पएसी तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा' हे प्रदेशिन् तमो जाणो छो के आ त्रण आचार्योमां कया आचार्यने कई जातनो विनय प्रकार करवा कहेवामां आव्यो छे ?, प्रदेशीए कह्यु-"हं ता ! जाणामि" हां भदन्त ! जाणुं छु "कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयावेज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा कलाचार्य अने शिल्पाचार्यना शरीरमां तेलनी मालीश करवी, तेमने स्नान करावयु तेमज तेमनी सामे पुष्पोनी भेट मूकवी, पुष्पमाळा वगेरेथी तेमने अलंकृत करवा भोजन करावयु, तेमनी आजीविका माटे योग्य सहर्ष प्रीति दान आपवु अने पुत्र-पौत्र वगेरेना भरण-पोषण योग्य आजीविकानी व्यवस्था

तत्रैव वन्देत नमस्येत सत्कुर्यात् सम्मानयेत् कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपासीत, प्रासुकैषणीयेन अशन पान खादिमस्वादिमेन प्रतिलम्भयेत्, प्रातिहारिकेण पीठफलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयेत, एवं च तावत् त्वं प्रदेशिन ! एवं जानासि तथापि खलु त्वं मम वामवामेन यावद् वर्तित्वा मम एतमर्थम् अक्षामयित्वा यत्रैव श्वेतविका नगरी तत्रैव प्राधारयत् गमनाय। ॥ सू० १५६ ॥

पौत्रादि के निर्वाह योग्य आजीविका लगा देना. इस प्रकार से यह कलाचार्य ७२ –प्रकार की कलाओं को सिखानेवालों की, और–शिल्पाचार्य विज्ञान सिखानेवालों का विनयप्रतिपत्ति है। "जत्थेव धम्मायरिय पासिज्जा, तत्थेव वंदेज्जा, णमंसेज्जा, सक्कारेज्जा, सम्माणेज्जा, कल्लाणं–मंगलं–देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा–' तथा–धर्माचार्य की विनयप्रतिपत्ति इस प्रकारसे है–जहां पर भी धर्माचार्य को देखलिया जावे, वहीं पर उनकी वन्दना करना, नमस्कार करना, सत्कार करना, सन्मान करना. कल्याण–मङ्गल–देवस्वरूप उन चैत्य ज्ञानदायक की पर्युपासना करना, तथा–"फासुएसणिज्जेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढ–फलग–सिज्जा संथारएणं उवनिमंतेज्जा–" प्रासुक एषणीय अशन पान खादिम स्वादिम रूप चारों प्रकारके आहार से उन्हें प्रतिलाभित करना, पडिहारिपीठफलक शय्या संस्तारक को ग्रहण करने के लिये उनसे प्रार्थना करना–३ इस प्रकार की यह धर्माचार्य की विनयप्रतिपत्ति है–। "एवं ताव तुमं पएसी–! एवं जाणासि तहावि णं तुमं मम वामं वामेणं

કરવી. આ પ્રમાણે આ કલાચાર્ય કે જે ૭૨ પ્રકારની કલાઓનુ શિક્ષણ આપે છે અને શિલ્પાચાર્ય-વિજ્ઞાનનુ શિક્ષણ આપનારની વિનયપ્રતિપત્તિ છે 'जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा, तत्थेव वंदेज्जा, णमंसेज्जा सक्कारेज्जा, सम्माणेज्जा, कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा" તેમજ ધર્માચાર્યની વિનયપ્રતિપત્તિ આ પ્રમાણે છે–જ્યાં ધર્માચાર્ય દેખાય કે તરતજ ત્યાં તેમને વન્દન કરવા, નમસ્કાર કરવા સત્કાર કરવો, સન્માન કરવુ, કલ્યાણ-મંગળ દેવસ્વરૂપ તે જ્ઞાનદાયકની પર્યુપાસના કરવી તે. "फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएण पीढफलगसिज्जा संथारएण उवनिमंतेज्जा" પ્રાસુક એષણીય અશન-પાન ખાદિમ સ્વાદિમ રૂપ ચાર પ્રકારના આહારથી તેમને પ્રતિલાભિત કરવા. સમર્પણીય પીઠફલક, શય્યાસંસ્તાર ને ગ્રહણ કરવા માટે તેમને વિનતી કરવી ૩, આ જાતની આ ધર્માચાર્યની વિનય પ્રતિપત્તિ છે. "एवं ताव तुमं पएसी ? एवं जाणासि तहावि ण तुमं ममं वामं वामेणं जाव वट्टित्ता मम एयमट्ठ अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए" હે પ્રદેશિન્! જ્યારે તમે આ પ્રમાણે

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि–ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्–हे प्रदेशिन्! त्वं जानासि यत् कति–कियन्त आचार्याः प्रज्ञप्ताः ?। इति प्रश्ने प्रदेशी प्राह हन्त! जानामि, यत् त्रयः–त्रिसंख्यकाः आचार्याः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–कलाऽऽचार्यः–द्वासप्तति प्रकारकलाशिक्षकः १, शिल्पाऽऽचार्यः–विज्ञानशिक्षकः २, धर्माऽऽचार्यः–धर्मोपदेशकः ३। पुनः केशी पृच्छति–हे प्रदेशिन्! त्वं जानासि खलु यत् तेषाम्–अनन्तरोक्तानां त्रयाणामाचार्याणां मध्ये कस्याऽऽचार्यस्य–का–कीदृशी ? विनयप्रतिपत्तिः–विनयप्रकारः प्रयोक्तव्या कर्तव्या ?। हन्त! जानामि, तत्र कलाऽऽचार्यस्य शिल्पाऽऽचार्यस्य च उपलेपनं तैलाभ्यङ्गं, तथा–सम्मज्जन–स्नपनं कुर्यात्–स्नपयेदित्यर्थः, तथा पुरतः–तयोरग्रे, पुष्पाणि वा समानयेत्, मण्डयेत्–पुष्पमाल्यादिनाऽलङ्कुर्यात्, भोजयेत्–भोजनं कारयेत्, विपुलं–बहु जीविताहं–जीवनयोग्यं प्रीतिदानं सदयं वस्त्रादिदानं दद्यात्, तथा पुत्रानुपौत्रिकीं–पुत्रपौत्रादि निर्वाहयोग्यां वृत्तिं जीविकां कल्पयेत्–सम्पादयेत् २। इति कलाऽऽचार्य–शिल्पाऽऽचार्ययोर्विनयप्रतिपत्तिमुक्त्वा धर्माऽऽचार्यस्य तां कथयितुं प्रक्रमते–यत्रैव–यस्मिन्नेव स्थले धर्माऽऽचार्यं पश्येत्

जाव वट्टित्ता मम एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए–' हे प्रदेशिन् ३ अब तुम इस प्रकार से विनयप्रतिपत्ति का मानते हो तब भी तुमने मेरे प्रति प्रतिकूलरूप व्यवहार से यावत् प्रवृत्ति करके उस प्रतिकूल व्यवहार जनित अपराध को क्षमा कराये बिना श्वेताम्बिका नगरीकी तरफ जाने का निश्चय किया ॥ सू० १५६ ॥

टीकार्थ—स्पष्ट है, "कल्लाणं–मंगल–देवयं–चेइयं पज्जुवासेज्जा–" इन पदों की व्याख्या चतुर्थ सूत्रमें की जा चुकी है। "वामं वामेण–" इस यावत् पदसे–"दण्डं दण्डेन–प्रतिकूलं प्रतिकूलेन–प्रतिलोमं प्रतिलोमेन–विपर्यासं विपर्यासेन" इन पदों का संग्रह हुवा है, इन पदोंकी व्याख्या पीछे की जा चुकी है ॥सू० १५६॥

વિનય પ્રતિપત્તિ ને જાણો છો છતાં એ તમે એ મારા પ્રત્યે પ્રતિકૂળ રૂપ વ્યવહારથી યાવત્ પ્રવૃત્તિ કરીને પ્રતિકૂળ વ્યવહાર જનિત અપરાધને ક્ષમા કરાવ્યા વગર જ્યાં શ્વેતાંબિકા નગરી છે ત્યાં જવાનો તમે નિશ્ચય કર્યો. ॥ સૂ. ૧૫૬ ॥

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ છે "कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा" આ પદોની વ્યાખ્યા ચોથા સૂત્રમાં આવી છે "वामं वामेण" માં આવેલ યાવત્ પદથી "दण्डं दण्डेन प्रतिकूलंप्रतिकूलेन प्रतिलोमं प्रतिलोमेन विपर्यासं विपर्यासेन" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે ॥ ૧૫૬ ॥

तत्रैव-तस्मिन्नेव स्थले वन्देत नमस्येत सत्कुर्यात् सन्मानयेत् कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपासीत" एतेषां व्याख्या चतुर्थसूत्रतो बोध्या, तथा तं धर्माचार्यं प्रासुकैषणीयेन-अचित्तकल्पनीयेन अशन-पान-खादिम-स्वादिमेन-अशनादि चतुर्विधाऽऽहारेण प्रतिलम्भयेत्-चतुर्विधाहार तस्मै दद्यादिति भावः, तथा तं प्रातिहारिकेण-पुनः समर्पणीयेन पीठफलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयेत्-तद्ग्रहणे प्रार्थयेत् ३ । एवं तावत् प्रथमं प्रदेशिन् ! त्वमेवम्-अनन्तरोक्तप्रकारां विनयरूपां प्रतिपत्तिं जानासि, तथाऽपि खलु त्वं मम वामवामेन-प्रतिकूलतरेण व्यवहारेण यावत्-यावत्पदेन "दण्डदण्डेन, प्रतिकूलप्रतिकूलेन, प्रतिलोम-प्रतिलोमेन विपर्यासविपर्यासेन" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, व्याख्याऽपि तत्रैव विलोकनीया, वर्तित्वा-उक्तव्यवहारेण युक्तो भूत्वा मम एत-मया सह प्रतिकूलव्यवहारजनितम् अर्थम्-अपराधम् अक्षामयित्वा यत्रैव श्वेतांबिका नगरी तत्रैव गमनाय प्राधारयत्-निश्चय कृतवान् । ॥ सू० १५६ ॥

मूलम्—तए णं से पएसी राया केसि कुमारसमणं एवं वयासी एवं खलु भंते ! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामंवामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगकिंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरनलिणिसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामित्तएत्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

तए णं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते हट्टतुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए । तहेव निग्गच्छइ, अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ नमंसइ, एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामेइ ॥सू० १५७॥

छाया—तत खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्-एवं खलु भदन्त! मम एतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत-एवं खलु अहं देवानुप्रियाणां वामवामेन यावत् वर्तितः, तत् श्रेयः खलु मे कल्ये प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते अथाऽऽपाण्डुरे प्रभाते रक्ताशोक किंशुक-शुकमुख-गुञ्जार्द्धरागसदृशे कमलाकरनलिनीषण्डबोधके उत्थिते सूरे सहस्ररश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति अन्तःपुरपरिवारेण सार्द्धं संपरिवृतो देवानुप्रियान् वन्दि

मूलार्थ—"तए णं स पएसी राया—" इत्यादि

"तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—" ३५९

इसके बाद—प्रदेशी राजाने केशी कुमारश्रमण से ऐसा कहा—"एवं खलु भंते!—मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" हे भदन्त—हे भुझे ऐसा आध्यात्मिक यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ "एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल कोमलुम्मिलियम्मि अहा पंडुरे पभायाए रत्ता सो। किंसुय—सुयमुह गुंजद्धराग-सरिसे, कमलागरनलिणिसंडबोहए—" मैंने आप देवानुप्रिय के साथ प्रतिकूल रूप से यावत् व्यवहार किया है, अतः—मुझे यही श्रेयस्कर है कि—मैं कल जब रजनी प्रभातयुक्त हो जावगी, अर्थात्—रात्रि समाप्त हो जावगी और कमल तथा—हरिणविशुक नेत्र ये दोनों विकसित हो जावेंगे, अर्थात् कमल जब खिल जावेगा, और—हरिणविशुक की आंखें शयन करने के बाद खुल जावगी तथा—प्रभातका रङ्ग जब पीत धवल हो जावगा रक्ताशोक किंशुक-

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—'तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी॥१७०॥ त्यार पछी प्रदेशी राजाए केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं 'एवं खलु भंते! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था' हे भदंत! मेवो आध्यात्मिक यावत संकल्प उत्पन्न थयो. "एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोम लुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगकिंसुसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे कमलागरनलिणिसंडबोहए" मैं आप देवानुप्रियनी साथे प्रतिकूळपणाथी यावत व्यवहार कर्यो छे. तेथी मारा माटे श्रेय वात आज छे के ज्यारे आवती काले सवारे रात्रि प्रभात युक्त थई जशे, अेटले के रात्रि पूरी थई जशे अने कमळ तथा हरिण विशेषना नेत्रो विकसित थई जशे, अेटले के कमळ ज्यारे विकसित थई जशे अने हरिण विशेषनी आंखो निद्रा त्याग कर्या बाद उघडी जशे तेमज प्रभातनो रंग ज्यारे पीत धवल (पीळो अने धोळो) थई जशे, रक्ताशोक किंशुक

त्वा नमस्यित्वा एतमर्थं भूयो भूयः सम्यग् विनयेन क्षामयितुम्, इति कृत्वा यामेव दिशं प्रादुर्भूतः, तामेव दिशं प्रतिगतः ।

ततःखलु स प्रदेशी राजा कल्य प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति हृष्टतुष्ट यावद् हृदयः यथैव कूणिकः तथैव निर्गच्छति अन्तःपुरपरि-

पलाश-शुकमुख एवं-गुञ्जा-रत्ती के अघस्तन का अर्धभाग जैसा लाल. तथा-सरोवरों में कमलिनी कुल का विकाशक, "उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते—" ऐसा सहस्रकिरणोंवाला एवं-दिनकर्ता सूर्य जब अपने तेज से प्रज्वलित होता हुवा आकाश में उदित हो जावेगा, तब—"अंतेउर परियालसद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठं भुज्जो—२ सम्मं विणएणं—खामित्तए त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए. तामेव दिसिं पडिगए" मैं अन्तःपुर परिवार से युक्त होकर आप देवानुप्रिय की वन्दना—नमस्कार और—पूर्वोक्त अपराध रूप अर्थ को विनय के साथ प्रशस्त नम्र भावसे बार—२ क्षमापना के लिये आऊंगा. इस प्रकार केशी स्वामी से निवेदन कर वह जिस दिशा से आया था-उसी दिशा की ओर चला गया. "तएणं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते-" इसके बाद दूसरे दिन जब रजनी रात्री प्रभातप्राय-समाप्त हो चुकी और—प्रभात हो गया यावत् सूर्य अपने तेज से देदीप्यमान हो उठा-तब वह-"हट्ठ तुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ—" हृष्ट-तुष्ट यावत् हृदयवाला होकर कूणिक नरेश की तरह अपने स्थान से निकला

પલાશ, શુકમુખ અને ગુંજાના નીચેના અર્ધા ભાગ જેવો લાલ તેમજ સરોવરોમાં કમલીની કુલનો વીનાશક 'उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते" એવા સહસ્ર કીરણોવાળો અને દીનકર્તા સૂર્ય જ્યારે પોતાના તેજથી પ્રજ્વલીત થતો આકાશમા ઉદય પામશે, ત્યારે अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठं भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामित्तए त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए" ત્યારે અંતઃપુર પરિવારની સાથે આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન અને નમસ્કાર કરવા માટે અને પૂર્વોક્ત અપરાધરૂપ અર્થને સવિનય પ્રશસ્ત નમ્ર ભાવથી વારવાર ક્ષમાપના માટે આવીશ. આ પ્રમાણે કેશીકુમારને વિનંતી કરીને તે જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તેજ દિશા તરફ જતો રહ્યો. "तएणं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते" ત્યાર પછી બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પૂરી થઇ અને પ્રભાત થયું યાવત્ સૂર્ય પોતાના તેજથી પ્રકાશિત થઇ ગયો. ત્યારે તે "हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ" હૃષ્ટ તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઇને કુણિક રાજાની જેમ પોતાના સ્થાનથી

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्-एवं खलु भदन्त ! मम एतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत-एवं खलु अहं देवानुप्रियाणां वामवामेन यावत् वर्तितः, तत् श्रेयः खलु मे कल्ये प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते अथापाण्डुरे प्रभाते रक्ताशोक-किंशुक-शुकमुख-गुञ्जार्धरागसदृशे कमलाकरनलिनीषण्डबोधके उत्थिते सूरे सहस्ररश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति अन्तःपुरपरिवारेण सार्द्धं संपरिवृतो देवानुप्रियान् वन्दि

मूलार्थ—"तए णं से पएसी राया—" इत्यादि

"तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—" २५९

इसके बाद—प्रदेशी राजाने केशी कुमारश्रमण से ऐसा कहा—"एवं खलु भंते !—मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" हे भदन्त—हे पूज्य ! मुझे ऐसा आध्यात्मिक यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ "एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहा पांडुरे पभायाए रत्तासोग-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धराग सरिसे, कमलागरनलिणिसंडबोहए—" मैंने आप देवानुप्रिय के साथ प्रतिकूल रूप से यावत् व्यवहार किया है, अतः—मुझे यही श्रेयस्कर है कि—मैं कल जब रजनी प्रभातयुक्त हो जावेगी, अर्थात्—रात्रि समाप्त हो जावेगी और कमल तथा—हरिणविशेषके नेत्र ये दोनों विकसित हो जावेंगे, अर्थात् कमल जब खिल जावेगा और—हरिणविशेष की आंखें शयन करलेने के बाद खुल जावेगी तथा—प्रभातका रङ्ग जब पीत धवल हो जावेगा रक्ताशोक-किंशुक-

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—'तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी ॥२५९॥ त्यार पछी प्रदेशी राजाओ केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं 'एवं खलु भंते ! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था' हे भदंत ! मने आ जातनो आध्यात्मिक यावत् संकल्प उत्पन्न थयो "एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापांडुरे पभाए रत्तासोगकिंसुयसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे कमलागरनलिणिसंडबोहए" में आप देवानुप्रियनी साथे प्रतिकूलरूपथी यावत् व्यवहार कर्यो छे. तेथी मारा माटे ओज वात श्रेयस्कर छे के हुं आवती काले ज्यारे रात्रि प्रभात युक्त थई जशे, ओटले के रात्रि पूरी थई जशे, अने कमळ तथा हरिण विशेषना नेत्रो विकसित थई जशे ओटले के कमळ ज्यारे विकसित थई जशे अने हरिण विशेषनी आंखो निद्रा त्याग कर्या बाद उघडी जशे तेमज प्रभातनो रंग ज्यारे पीत धवल (पीळो अने सफेद) थई जशे, रक्ताशोक किंशुक

त्वा नमस्यित्वा एतमर्थं भूयो भूयः सम्यग् विनयेन क्षामयितुम्, इति कृत्वा यामेव दिशं प्रादुर्भूतः, तामेव दिशं प्रतिगतः ।

ततःखलु स प्रदेशी राजा कल्य प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति हृष्टतुष्ट यावद् हृदयः यथैव कूणिकः तथैव निर्गच्छति अन्तःपुरपरि-

पलाश-शुकमुख एवं-गुञ्जा-रत्ती के अधस्तन का अर्धभाग जैसा लाल. तथा-सरोवरों में कमलिनी कुल का विकाशक, "उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते—" ऐसा सहस्रकिरणोंवाला एवं-दिनकर्ता सूर्य जब अपने तेज से प्रज्वलित होता हुवा आकाश में उदित हो जावेगा, तब-"अंतेउर परियाल-सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठ भुज्जो-२ सम्मं विण-एणं-खामित्तए त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए. तामेव दिसिं पडिगए" मैं अन्तःपुर परिवार से युक्त होकर आप देवानुप्रिय की वन्दना-नमस्कार और-पूर्वोक्त अपराध रूप अर्थ को विनय के साथ प्रशस्त नम्र भावसे वार-२ क्षमापना के लिये आऊंगा. इस प्रकार केशी स्वामी से निवेदन कर वह जिस दिशा से आया था-उसी दिशा की ओर चला गया. "तएणं से पएसी राया कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते-" इसके बाद दूसरे दिन जब रजनी रात्री प्रभातप्राय-समाप्त हो चुकी और-प्रभात हो गया यावत् सूर्य अपने तेज से देदीप्यमान हो उठा-तब वह-"हट्ठ तुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ—" हृष्ट-तुष्ट यावत् हृदयवाला होकर कूणिक नरेश की तरह अपने स्थान से निकला

પલાશ, શુકમુખ અને ગુંજાના નીચેના અર્ધા ભાગ જેવો લાલ તેમજ સરોવરોમાં કમલીની કુલનો વીનાશક 'उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते" એવા સહસ્ત્ર કીરણોવાળો અને દીનકર્તા સૂર્ય જ્યારે પોતાના તેજથી પ્રજ્વલીત થતો આકાશમા ઉદય પામશે, ત્યારે अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठ भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामित्तए त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए" ત્યારે અંતઃપુર પરિવારની સાથે આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન અને નમસ્કાર કરવા માટે અને પૂર્વોક્ત અપરાધરૂપ અર્થને સવિનય પ્રશસ્ત નમ્ર ભાવથી વારંવાર ક્ષમાપના માટે આવીશ. આ પ્રમાણે કેશીકુમારને વિનંતી કરીને તે જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તેજ દિશા તરફ જતો રહ્યો. "तएणं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते" ત્યાર પછી બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પૂરી થઇ અને પ્રભાત થયું યાવત્ સૂર્ય પોતાના તેજથી પ્રકાશિત થઇ ગયો. ત્યારે તે "हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ" હૃષ્ટ તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઇને કુણિક રાજાની જેમ પોતાના સ્થાનથી

वारे सार्द्धं सपरिवृत्त पञ्चविधेन अभिगमेन वन्दते नमस्यति, एतमर्थं भूयोभूय सम्यग् विनयेन क्षामयति ॥ सू० १५७ ॥

टीका—"तए ण पएसी राया" इत्यादि—तत सल्लु स प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणम्, एवमवादीत्—हे भदन्त ! एव खलु मम एतद्रूपः-अनुपद वक्ष्यमाण स्वरूप आध्यात्मिक—आत्मगत क्षमापनारूपोऽङ्कुर इव, यावत्-यावत्पदेन "चिन्तितः, कल्पित , प्रार्थितः, मनोगत सङ्कल्पः' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्य , तत्र

"अंतेउरपरियालसद्धिं सपरिवुडे पचविहेण अभिगमेण वदइ-नमसइ—" निकल ते ही वह अन्तःपुर परिवार से परिवेष्टित हो गया इस तरह से प्रदेशी राजाने पांच प्रकारक अभिगम से केशीकुमार श्रमण की वन्दनाकी उनकी स्तुति की "एयमट्ठ मुज्जो मुज्जो-सम्म विणएण खामेइ—" स्तुति नमस्कार करके फिर उसने अपने प्रतिकूल आचरण से जनित अपराध की वार-२ अच्छी तरह स विनम्र भावसे युक्त हो कर क्षमा कराई, अर्थात्-क्षमा मांगी—

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! अब मुझ इस प्रकार का यह आध्यात्मिक विचार उत्पन्न हुआ कि-मैं अपने प्रतिकूल आचरण से जनित अपराध की आप से वार-वार क्षमा कराये, यहविचार आत्मगत होन स पहले तो अंकुर की तरह उत्पन्न हुआ अत —उस आध्यात्मिक रूपस प्रकट किया गया है बाद में यावत् पदसे चिन्तित-कल्पित—प्रार्थित-मनोगत इन विशेषणों वाला हुआ है कि—यह विचार स्मरणरूप बन

નીકળ્યો. "अंतेउरपरियालसद्धि संपरिवुडे पचविहेण अभिगमेण वदइ-नमसइ" નીકળતાં જ તે પોતાના અંતઃપુર પરિવારથી વીંટળાઈ ગયો આ પ્રમાણે તૈયાર થયેલા પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમારશ્રમણની પાસે જઈને પાંચ પ્રકારના અભિગમથી કેશી કુમારશ્રમણની વન્દના કરી તેમની સ્તુતિ કરી નમસ્કાર કર્યા. "एयमट्ठ मुज्जो २ सम्म विणएण खामेई" સ્તુતિ તેમજ નમસ્કાર કરીને પછી તેણે પોતાના પ્રતિકૂળ આચરણથી થયેલ અપરાધની વારવાર સારી રીતે વિનમ્ર ભાવથી યુક્ત થઈને ક્ષમા માગી

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમારશ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યુ—હે ભદંત ! હવે મને આ જાતનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે હું મારા પ્રતિકૂળ આચરણથી થયેલ અપરાધ બદલ આપશ્રી પાસેથી વારંવાર ક્ષમા માગુ આ વિચાર આત્મગત હોવાથી પહેલાં તો અંકુરની જેમ ઉત્પન્ન થયો. એથી તેને આધ્યાત્મિક રૂપે પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે ત્યાર પછી યાવત્ પદથી "चिन्तितः, कल्पितः प्रार्थित मनोगत', આ વિશેષણોથી યુક્ત થયો છે, વિચારને જે ચિંતિત પદથી

चिन्तितः-पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारो द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः स एव व्यवस्थायुक्तः 'क्षामयेयम्' इति परिणतो विचारः पल्लवित इव, स एव प्रार्थितः-इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव, मनोगतः मनसि दृढरूपेण निश्चयः ''इत्थमेव मया कर्तव्यम्' इति विचारः फलित इव समुदपद्यत-समुत्पन्नः-एवं खलु अहं देवानुप्रियाणां-भवतां वामवामेन यावत्-यावत्पदेन ''दण्डदण्डेन प्रतिकूलप्रतिकूलेन प्रतिलोम प्रतिलोमेनविपर्यासविपर्यासेन' इत्येषां संग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या पूर्वं गता, वर्तितः-प्रवृत्तः तत्-तस्मात्कारणात् मे मम श्रेयः-प्रशस्तं यत्

गया. अर्थात्-मुझे अपने अपराध की आपसे क्षमा कराना है. ऐसी स्मृति मुझे वारंवार आने लगी. इसलिये-यह विचार द्विपत्रित अङ्कुर की तरह प्रथम अवस्था की अपेक्षा कुछ विशेष पुष्ट होने से चिन्तित प्रकट किया गया है। तथा वही विचार जब व्यवस्थायुक्त हो गया. कि मुझे अवश्य ही इस रूपसे क्षमा कराना है तो द्वितीय अवस्थाकी अपेक्षा और-अधिक पुष्ट हो जाने के कारण यह पल्लवित हुवे अंकुर की तरह कल्पित पद से विशेषित किया गया है. तथा जब वही विचार इष्ट रूप से स्वीकृत कर लिया गया. तो वह पुष्पित हुवे अंकुर की तरह हो गया. और जब वही विचार मनमें दृढ रूपसे निश्चय की स्थिति में परिणत हो गया के ऐसा ही मुझे करना है. तो फलित हुवे अंकुर की तरह वह हो गया. क्या विचार उत्पन्न हुवा इसी वात को वह अब प्रकट करता है कि हे भदन्त-! मैंने आप देवानुप्रिय के साथ बहुत अधिक प्रतिकूलरूपसे. यावत् दण्ड दण्डरूपसे. अतिशय प्रतिकूलरूपसे व्यवहार किया है.

વિશેષિત કરવામા આવ્યો છે તેનુ કારણ આ છે કે તે વિચાર સ્મરણરૂપ થઇ ગયો હતો એટલે કે મને મારા અપરાધની આપશ્રીના પાસેથી ક્ષમા કરાવવી છે, એવી સ્મૃતિ વારંવાર આવવા લાગી, એથી આ વિચાર દ્વિ પત્રિત અંકુરની જેમ પ્રથમ અવસ્થા કરતા કંઇક વિશેષ પુષ્ટ હોવાથી ચિંતિત રૂપમા પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે. તથા તેજ વિચાર જ્યારે વ્યવસ્થાયુકત થઈ ગયો-કે મારે ચોક્કસ આવિને ક્ષમા યાચના કરવી છે તો દ્વિતીય અવસ્થા કરતા વધારે તે વિચાર પુષ્ટ થઇ જવાથી એ પલ્લવિત થયેલા અંકુરની જેમ કલ્પિત પદથી વિશેષિત કરવામા આવ્યો છે. તેમજ જ્યારે તે જ વિચાર ઈષ્ટ રૂપથી સ્વીકૃત થઇ ગયો તો તે પુષ્પિત થયેલ અંકુરની જેમ થઇ ગયો અને જ્યારે તે વિચાર મનમા દૃઢરૂપથી નિશ્ચયની સ્થિતિમા પરિણત થઇ ગયો કે એવું જ મારે કરવુ છે તો ફલિત થયેલ અંકુરની જેમ તે થઇ ગયો. શો વિચાર ઉત્પન્ન થયો? એજ વાતને હવે સ્પષ્ટ કરતા કહે છે કે-હે ભદંત! મે આપ દેવાનુપ્રિયની સાથે બહુજ અતીકૂળ રૂપથી યાવત્ દંડ દંડ રૂપથી-અતિશય પ્રતીકૂળરૂપથી

वारे सार्द्ध सपरिवृता पञ्चविधेन अभिगमेन वन्दते नमस्यति, एतमर्थं भूयोभूयः सम्यग् विनयेन क्षामयति ॥ सू० १५७ ॥

टीका—"तए णं पएसी राया" इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणम्, एवमवादीत्—हे भदन्त ! एवं खलु मम एतद्रूपः—अनुपदं वक्ष्यमाण स्वरूपः आध्यात्मिकः—आत्मगतः क्षमापनारूपोऽङ्कुर इव, यावत् यावत्पदेन "चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः सङ्कल्पः" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, तत्र

"अंतेउरपरियालसद्धिं सपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ-नमसइ—" निकले ते ही वह अन्तःपुर परिवार से परिवेष्टित हो गया इस तरह से प्रदेशी राजाने पांच प्रकारके अभिगम से केशीकुमार श्रमण की वन्दनाकी उनकी स्तुति की "एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो-सम्मं विणएणं खामेइ—" स्तुति नमस्कार करके फिर उसने अपने प्रतिकूल आचरण से जनित अपराध की बार-२ अच्छी तरह से विनम्र भावसे युक्त हो कर क्षमा कराई, अर्थात् क्षमा मांगी—

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! अब मुझे इस प्रकार का यह आध्यात्मिक विचार उत्पन्न हुआ कि-मैं अपने प्रतिकूल आचरण से जनित अपराध की आप से बार-बार क्षमा कराये, यह विचार आत्मगत होने से पहले तो अंकुर की तरह उत्पन्न हुआ अतः—उसे आध्यात्मिक रूपसे प्रकट किया गया है बाद में यावत् पदसे चिन्तितः-कल्पितः—प्रार्थितः-मनोगतः इन विशेषणों वाला हुआ है कि—यह विचार स्मरणरूप बन

नीકળ્યો. "અંતેઉરપરિયાલસદ્ધિં સપરિવુડે પંચવિહેણં અભિગમેણં વંદઇ-નમસઇ" નીકળતાં જ તે પોતાના અંતઃપુર પરિવારથી વીંટળાઈ ગયો આ પ્રમાણે તૈયાર થયેલા પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમારશ્રમણની પાસે જઈને પાંચ પ્રકારના અભિગમથી કેશી કુમારશ્રમણની વન્દના કરી તેમની સ્તુતિ કરી નમસ્કાર કર્યા. "एयमट्ठं भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामेइ" સ્તુતિ તેમજ નમસ્કાર કરીને પછી તેણે પોતાના પ્રતિકૂળ આચરણથી થયેલ અપરાધની વારંવાર સારી રીતે વિનમ્ર ભાવથી યુક્ત થઈને ક્ષમા માંગી.

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમારશ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યુ-હે ભદન્ત ! હવે મને આ જાતનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે હું મારા પ્રતિકૂળ આચરણથી થયેલ અપરાધ બદલ આપશ્રી પાસેથી વારંવાર ક્ષમા માંગુ આ વિચાર આત્મગત હોવાથી પહેલાં તો અંકુરની જેમ ઉત્પન્ન થયો. એથી તેને આધ્યાત્મિક રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે ત્યાર પછી યાવત્ પદથી "चिन्तितः, कल्पितः प्रार्थितः मनोगतः", આ વિશેષણોથી યુક્ત થયો છે, વિચારને જે ચિંતિત પદથી

चिन्तितः-पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारो द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः स एव व्यवस्थायुक्तः 'क्षामयेयम्' इति परिणतो विचारः पल्लवित इव, स एव प्रार्थित.- इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव, मनोगतः मनसि दृढरूपेण निश्चयः "इत्थमेव मया कर्तव्यम्' इति विचारः फलित इव समुदपद्यत-समुत्पन्नः-एवं खलु अहं देवानुप्रियाणां-भवतां वामवामेन यावत्-यावत्पदेन "दण्डदण्डेन प्रतिकूलप्रतिकूलेन प्रतिलोम प्रतिलोमेनविपर्यासविपर्यासेन' इत्येषां संग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या पूर्वं गता, वर्तितः-प्रवृत्तः तत्-तस्मात्कारणात् मे मम श्रेयः-प्रशस्तं यत्

गया. अर्थात्-मुझे अपने अपराध की आपसे क्षमा कराना है. ऐसी स्मृति मुझे वार-वार आने लगी. इसलिये-यह विचार द्विपत्रित अङ्कुर की तरह प्रथम अवस्था की अपेक्षा कुछ विशेष पुष्ट होने से चिन्तित प्रकट किया गया है। तथा वही विचार जब व्यवस्थायुक्त हो गया. कि मुझे अवश्य ही इस रूपसे क्षमा कराना है तो द्वितीय अवस्थाकी अपेक्षा और-अधिक पुष्ट हो जाने के कारण यह पल्लवित हुवे अङ्कुर की तरह कल्पित पद से विशेषित किया गया है. तथा जब वही विचार इष्ट रूप से स्वीकृत कर लिया गया. तो वह पुष्पित हुवे अङ्कुर की तरह. हो गया. और जब वही विचार मनमें दृढ रूपसे निश्चय की स्थिति में परिणत हो गया के ऐसा ही मुझे करना है. तो फलित हुवे अङ्कुर की तरह वह हो गया. क्या विचार उत्पन्न हुवा इसी बात को वह अब प्रकट करता है कि हे भदन्त-! मैंने आप देवानुप्रिय के साथ बहुत अधिक प्रतिकूलरूपसे. यावत् दण्ड दण्डरूपसे. अतिशय प्रतिकूलरूपसे व्यवहार किया है.

વિશેષિત કરવામા આવ્યો છે તેનુ કારણુ આ છે કે તે વિચાર સ્મરણુરૂપ થઇ ગયો હતો એટલે કે મને મારા અપરાધની આપશ્રીના પાસેથી ક્ષમા કરાવવી છે, એવી સ્મૃતિ વાર'વાર આવવા લાગી, એથી આ વિચાર દ્વિ પત્રિત અ'કુરની જેમ પ્રથમ અવસ્થા કરતા ક'ઇક વિશેષ પુષ્ટ હોવાથી ચિ તિત રૂપમા પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે. તથા તેજ વિચાર જ્યારે વ્યવસ્થાયુકત થઈ ગયો-કે મારે ચોક્કસ આવિને ક્ષમા યાચના' કરવી છે તો દ્વિતીય અવસ્થા કરતા વધારે તે વિચાર પુષ્ટ થઇ જવાથી એ પલ્લવિત થયેલા અ કુરની જેમ કલ્પિત પદથી વિશેષિત કરવામા આવ્યો છે તેમજ જ્યારે તે જ વિચાર ઇષ્ટ રૂપથી સ્વીકૃત થઇ ગયો તો તે પુષ્પિત થયેલ અ કુરની જેમ થઇ ગયો અને જ્યારે તે વિચાર મનમાં દઢરૂપથી નિશ્ચયની સ્થિતિમા પરિણુત થઇ ગયો કે એવુ' જ મારે કરવુ છે તો ફલિત થયેલ અ કુરની જેમ તે થઇ ગયો. શો વિચાર ઉત્પન્ન થયો? એજ વાતને હવે સ્પષ્ટ કરતા કહે છે કે-હે ભદ ત! મે આપ દેવાનુપ્રિયની સાથે બહુજ પ્રતીકૂળ રૂપથી યાવત્ દ ંડ દ ડ રૂપથી-અતિશય પ્રતીકૂળરૂપથી અતિશય પ્રતિલોમરૂપથી અને અતિશય વિપરીત રૂપથી વ્યવહાર કર્યો છે, એથી મારા

कल्ये-श्वः प्रादुष्प्रभातायां प्रकाशप्रकाशितायाम्, रजन्यां रात्रौ फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते-फुल्लं विकसितं यद् उत्पल-कमलं, तच्च कमलश्च हरिणविशेषस्तौ फुल्लोत्पलकमलौ, तयोः कोमलं मृदु उन्मीलितं यत्र फुल्लोत्पलपत्राणां विकसनं हरिणनयनयोः स तथा तस्मिन् उन्मीलनं च यस्मिन् सति फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते तस्मिन्, अथ प्रभाते ततः आ-समन्तात् पाण्डुरे पीतधवले प्रभाते रक्ताशोककिंशुक शुकमुख गुञ्जार्धरागसदृशे तत्र रक्ताशोकः रक्तवर्णाशोकः, किंशुकः पलाशः, शुकमुखं, गुञ्जार्धरागः गुञ्जायाअर्धभागस्तद्वद् रागः, एतैः रक्तवर्णैः सदृशे तुल्ये, अस्य "सूरे" इति पदेन सम्बन्धः, तथा कमलाकरनलिनीषण्डबोधके सूरे सहस्ररश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति उत्थिते

इसलिए मेरा कल्याण अब इसी में है कि मैं दूसरे दिन जब कि रात्रि प्रभात के रूप में परिणत हो जाय अर्थात् प्रातःकाल हो जाय और इसमें कमल उत्पल एवं हरिण विशेष की आंखें निद्राविगम के बाद प्रफुल्लित हो जाय कमल विकसित हो जाय एवं हरिणों के नेत्र अच्छी तरह से खुल जाय तथा वह प्रभात समन्तात् पीत धवल प्रकाशवाला हो जाय, एवं सहस्रकिरणों से सम्पन्न तथा दिवसविधायक सूर्य जो कि कमलाकर सरोवर में नलिनी कुल का बोधक विकसित करनेवाला होता है रक्ताशोक किंशुक शुकमुख और गुञ्जार्ध गुञ्जा के सदृश उदित हो जाय तथा उसका प्रकाश अच्छी तरह से फैल जाय तब मैं अन्तःपुर परिजनों से परिवृत होकर आप देवानुप्रिय की वन्दना के लिए नमस्कार के लिए आऊं और अपने पूर्वोक्ति अपराधरूप अर्थ की आपसे बार २ विनय युक्त हो कर क्षमा मांगूं, इस प्रकार से वह मन्त्री गुणा अभयकुमार के प्रति निवेदन कर अपने स्थान पर गया। दूसरे दिन जब पूर्वोक्तिरूप से प्रभात

તેથી હવે મારું શ્રેય છે કે હું આવતી કાલે જ્યારે રાત્રે પ્રભાતમાં પરિણત થઈ જાય એટલે કે સવાર થઈ જાય કમળ ઉત્પલ અને હરિણ વિશેષની આંખો નિદ્રા રહિત થઈને પ્રફુલ્લિત થઈ જાય, કમળો વિકસિત થઈ જાય અને હરિણોના નેત્રો સારી રીતે ખુલી જાય તથા પ્રભાત સમવાત પીતધવલ પ્રકાશયુક્ત થઈ જાય અને સહસ્ર કિરણોથી સંપન્ન તેમજ દિવસ વિધાયક સૂર્ય કે જે કમળાકર સરોવરમાં નલિની કુલને વિકસિત કરનાર છે રક્તાશોક, કિંશુક, શુક મુખ અને ગુંજાર્ધની જેમ તે ઉદિત થઈ જાય તેમજ તેનો પ્રકાશ સારી રીતે પ્રસરી જાય, ત્યારે હું અન્તઃપુર પરિજનોથી પરિવૃત્ત થઈને આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરવા માટે અહીં આવું અને પૂર્વોક્ત અપરાધ બદલ આપથી ફરીથી વિનમ્ર થઈને વારંવાર ક્ષમા યાચના કરું. આ પ્રમાણે તે મંત્રી ગુણા અભયકુમારને વિનતી કરીને સ્વસ્થાને ગયો. બીજા દિવસે જ્યારે પૂર્વોક્તરૂપથી પ્રભાત પ્રકટ થઈને નિર્મળ થઈ ગયું ત્યારે તે

उदिते सति, पुनः कीदृशे तस्मिन ? सहस्ररश्मौ-किरणसहस्रसम्पन्ने दिनकरे-दिवसकरणशीले तेजसा-दीप्त्या ज्वलति-देदीप्यमाने सति, अन्तःपुरपरिवारैः राज्ञीपरिवारैः संपरिवृतः-युक्तः सन् अहं देवानुप्रियान् वन्दितुं नमस्यितुम्, एतमर्थं-पूर्वोक्तापराधरूपमर्थं भूयोभूयः-पुनः पुनः सम्यग् विनयेन-प्रशस्तनम्रभावेन क्षामयितुम्।"इतिकृत्वा-केशिस्वामिने इति निवेद्य यामेव दिशं समाश्रित्य प्रादुर्भूतः तामेव दिशं प्रतिगतः।

ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्यं-श्वः प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत्-यावत्पदेन अनन्तरप्रोक्तोपरितनपदानां फुल्लोत्पलादीनां सङ्ग्रहो बोध्यः, तदर्थश्च तत्रैव ज्ञेयः। तेजसा ज्वलति हृष्टतुष्ट यावत्-यावत्पदेन चित्तानन्दितः, परमसौमनस्यितः, हर्षवश विसर्पद्हृदयः, इत्येतत्पदसङ्ग्रहो बोध्यः। यथा-येन प्रकारेण कूणिकः-तन्नामा श्रेणिकराजपुत्र औपपातिकसूत्रे वर्णितो निर्गतः, तथैव-तेनैव प्रकारेण निर्गच्छति-स्वभवनान्निःसरति, तन्निर्गमनवर्णनमौपपातिकसूत्रतो बोध्यमिति तात्पर्यम्। निर्गत्य अन्तःपुरपरिवारैः संपरिवृतः-वेष्टितः पञ्चविधेन-पञ्चप्रकारेण सचित्तानां द्रव्याणां व्युत्सर्जनेन १, अचित्तानां द्रव्याणामव्युत्सर्जनेन २,

---

काल का सूर्य उदित हो गया. तब वह हृष्टतुष्ट यावत् चित्तानन्दित हुवा. परमसौमयित हुवा हर्षवश विसर्पत् हृदयवाला (परम आनंदयुक्त हुवा) औपपातिकसूत्र में वर्णित श्रेणिक राजपुत्र कूणिक नरेशकी तरह अपने भवन से निकला. कूणिक नरेश के निकलने का वर्णन औपपातिक सूत्र में किया गया है। निकलते ही वह अन्तःपुर परिवार जनों से परिवेष्टित कर लिया गया. और पांच प्रकार के अभिगम से युक्त हो कर वह प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणकी वन्दना आदि करने के लिये चल दिया. वहां पहूंचकर उसने उनका वन्दना की नमस्कार किया. और स्वकृत तिकूल आचरणजनित अपराधो की बडे विनम्रभावयुक्त होकर क्षमा मांगी. । पांच प्रकारके अभिगम इस प्रकारसे १ सचित्तद्रव्योंका परित्यागकर

હૃષ્ટ તુષ્ટ યાવત્ ચિત્તાનંદિત થયો, પરમસૌમનસ્યિત થયો, હર્ષ વિસર્પત હૃદયવાળો થયો. ઔપપાતિકસૂત્રમાં વર્ણિત શ્રેણિક રાજપુત્ર કૂણિક નરેશના જેમ પોતાના ભવનથી તે નીકળ્યો. કૂણિક નરેશના નીકળવાનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે બહાર નીકળતાં જ તે અન્તઃપુર પરિવાર જનોથી વીંટળાઇ ગયો-ઘેરાઇ ગયો અને પાંચ પ્રકારના અભિગમથી યુક્ત થઇને તે પ્રદેશી રાજા કેશી કુમારશ્રમણની વંદના વગેરે કરવામાં માટે નીકળી પડયો ત્યાં પહોંચીને તેણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા અને સ્વકૃત પ્રતિકૂળ આચરણજ જનિત અપરાધો બદલ તેણે વિનમ્રભાવ યુક્ત થઇને ક્ષમા માગી પાંચ પ્રકારના અભિગમો આ પ્રમાણે છે ૧, સચિત્ત દ્રવ્યોનો

कल्प-यः प्रादुष्प्रभातायां प्रकाशप्रकाशितायाम्, रजन्यां रात्रौ फुल्लोत्पलकमलकाम लोन्मीलित—फुल्ल विकसित यद् उत्पल-कमल, तच्च कमलं च हरिणविशेषमेति फुल्लोत्पलकमलौ, तयोयत् कोमल मृदु उन्मीलन तत्र फुल्लोत्पलपत्राणां विकसन हरिणनयनयोः च नन्तरं पुष्पोदनम् च यस्मिन् सत फुल्लोत्पलकमलकोमलो *न्मीलित तस्मिन्, अथ प्रभातानन्तरम् आ—समन्तात् पाण्डुरं पीतधवलं प्रभात* प्रातःकाले रक्ताशोककिंशुक शुकमुख गुञ्जार्धरागसदृशे तत्र रक्ताशोकः रक्तवर्णो शोकः, किंशुकः पलाशः, शुकमुख, गुञ्जार्धरागः गुञ्जायाअर्धरक्तभागस्य रागः, पतं रक्तवर्णः सदृशं तुल्य, अस्य "सूरे" इति परेण सम्बन्धः, पायप्रभातानामपि, कमलाकरनलिनीषण्डबोधक सरोवरगतकमलिनीकुलविकाशक सूरे सूर्य उत्थित

इसलिये मेरा कल्याण अब इसी में है कि मैं दूसरे दिन जबकि रात्रि प्रभात के रूप में परिणत हो जावे अर्थात् प्रातःकाल हो जाय और इसमें कमल उत्पल एवं हरिण विशेष की आंखें निद्राविगम के बाद प्रफुल्लित हो जाय कमल विकसित हो जाय एवं हरिणों के नेत्र अच्छी तरह से खुल जाय तथा यह प्रभात समन्तात् पीत धवल प्रकाशवाला हो जावे, एवं सहस्रकिरणों से सम्पन्न तथा दिवसविधायक सूर्य जो कि कमलाकर सरोवर में नलिनी कुलकाबोधक वि काश करनेवाला होता है जब रक्ताशोक किंशुक शुकमुख और गुञ्जार्ध गुंञ्चा के सदृश उदित हो जाय तथा उसका प्रकाश अच्छी तरह से फैल जावे तब मैं अन्तःपुर परिजनों से परिवृत होकर आप देवानुप्रिय, की वन्दना के लिये नमस्कार के लिये आऊं और अपने पूर्वोक्त अपराधरूप अर्थको आपसे बार २ विनम्र भाव युक्त हो कर क्षमा मांगूं, इस प्रकार से यह प्रदेशी राजा केशीश्रमणकुमार के प्रति निवेदन कर अपने स्थान पर गया। दूसरे दिन जब पूर्वोक्तरूप से प्रभात

તેથી હવે એ મારે કલ્યાણ છે કે હું આવતી કાલે જ્યારે રાત્રે પ્રભાતમાં પરિણત થઈ જાય એટલે કે સવાર થઈ જાય કમળ ઉત્પલ અને હરિણ વિશેષની આંખો નિદ્રા રહિત થઈને પ્રફુલ્લિત થઈ જાય. કમળો વિકસિત થઈ જાય અને હરિણોના નેત્રો સારી રીતે ઉઘડી જાય તથા પ્રભાત સમન્તાત્ પીતધવલ પ્રકાશયુક્ત થઈ જાય અને સહસ્ર કિરણોથી સંપન્ન તેમજ દિવસ વિધાયક સૂર્ય કે જે કમલાકર સરોવર માં નલિની કુલને વિકસિત કરનાર છે. રક્તાશોક કિંશુક, શુક મુખ અને ગુંજાર્ધની સદશ તે ઉદિત થઈ જાય તેમજ તેનો પ્રકાશ સારી રીતે પ્રસરી જાય ત્યારે હું અંતઃપુર પરિજનોથી પરિવૃત્ત થઈને આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરવા માટે અહીં આવું અને પૂર્વોક્ત અપરાધ બદલ આપની પાસેથી વિનમ્ર થઈને વારંવાર ક્ષમા યાચના કરું. આ પ્રમાણે તે પ્રદેશી રાજા કેશીકુમારશ્રમણને નિવેદન કરીને સ્વસ્થાને ગયો. બીજા દિવસે જ્યારે પૂર્વોક્તરૂપથી પ્રભાત પૂર્ણરૂપે વિકસિત થઈ ગયું ત્યારે તે

उदिते सति, पुनः कीदृशे तस्मिन ? सहस्ररश्मौ-किरणसहस्रसम्पन्ने दिनकरे-दिवसकरणशीले तेजसा-दीप्त्या ज्वलति-देदीप्यमाने सति, अन्तःपुरपरिवारैः राज्ञीपरिवारैः संपरिवृतः-युक्तः सन् अहं देवानुप्रियान् वन्दितुं नमस्यितुम्, एतमर्थं-पूर्वोक्तापराधरूपमथ भूयोभूयः-पुनः पुनः सम्यग् विनयेन-प्रशस्तनम्रभावेन क्षामयितुम्।" इतिकृत्वा-केशिस्वामिने इति निवेद्य यामेव दिशं समाश्रित्य प्रादुर्भूतः तामेव दिशं प्रतिगतः।

ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्यं-श्वः प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत्-यावत्पदेन अनन्तरप्रोक्तोपरितनपदानां फुल्लोत्पलादीनां सङ्ग्रहो बोध्यः, तदर्थश्च तत्रैव ज्ञेयः। तेजसा ज्वलति हृष्टतुष्ट यावत्-यावत्पदेन चित्तानन्दितः, परमसौमनस्यितः, हर्षवश विसर्पद्हृद यः, इत्येतत्पदसङ्ग्रहो बोध्यः। यथा-येन प्रकारेण कूणिकः-तन्नामा श्रेणिकराजपुत्र औपपातिकसूत्रे वर्णितो निर्गतः, तथैव-तेनैव प्रकारेण निर्गच्छति-स्वभवनान्निःसरति, तन्निर्गमनवर्णनमौपपातिकसूत्रतो बोध्यमिति तात्पर्यम्। निर्गत्य अन्तःपुरपरिवारैः संपरिवृतः-वेष्टितः पञ्चविधेन-पञ्चप्रकारेण सचितानां द्रव्याणां व्युत्सर्जनेन १, अचित्तानां द्रव्याणामव्युत्सर्जनेन २,

---

काल का सूर्य उदित हो गया. तब वह हृष्टतुष्ट यावत् चित्तानन्दित हुवा. परमसौमनस्यित हुवा हर्षवश विसर्पत् हृदयवाला (परम आनंदयुक्त हुवा) औपपातिकसूत्र में वर्णित श्रेणिक राजपुत्र कूणिक नरेशकी तरह अपने भवन से निकला. कूणिक नरेश के निकलने का वर्णन औपपातिक सूत्र में किया गया है। निकलते ही वह अन्तःपुर परिवार जनों से परिवेष्टित कर लिया गया. और पांच प्रकार के अभिगम से युक्त हो कर वह प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणकी वन्दना आदि करने के लिये चल दिया. वहां पहूंचकर उसने उनका वन्दना की नमस्कार किया. और स्वकृत प्रतिकूल आचरणजनित अपराधों की बडे विनम्रभावयुक्त होकर क्षमा मांगी.। पांच प्रकारके अभिगम इस प्रकारसे १ सचित्तद्रव्योंका परित्यागकर

હૃષ્ટ તુષ્ટ યાવત્ ચિત્તાનંદિત થયો, પરમસૌમનસ્યિત થયો, હર્ષ વિસર્પિત હૃદયવાળો થયો ઔપપાતિકસૂત્રમાં વર્ણિત શ્રેણિક રાજપુત્ર કૂણિક નરેશની જેમ પોતાના ભવનથી તે નીકળ્યો. કૂણિક નરેશના નીકળવાનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યુ છે બહાર નીકળતા જ તે અન્તઃપુર પરિવાર જનોથી વીંટળાઇ ગયો-ઘેરાઇ ગયો અને પાંચ પ્રકારના અભિગમથી યુક્ત થઇને તે પ્રદેશી રાજા કેશી કુમારશ્રમણની વંદના વગેરે કરવામાં માટે નીકળી પડયો ત્યાં પહોંચીને તેણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા અને સ્વકૃત પ્રતિકૂળ આચરણજ જનિત અપરાધો બદલ તેણે વિનમ્રભાવ યુક્ત થઇને ક્ષમા માગી પાંચ પ્રકારના અભિગમો આ પ્રમાણે છે ૧, સચિત્ત દ્રવ્યોનો

एकशाटिकोत्तरासङ्गकरणेन३, चक्षुःस्पर्शे अञ्जलिकरणेन४, मनस एकत्वकरणेन५, पञ्चविधेन अभिगमेन-विनयविधिविशेषेण, वन्दते-स्तौति नमस्यति-नमस्करोति वन्दित्वा नमस्यित्वा च एतमर्थ-प्रतिकूलाचरणजनितापराधरूपं भूयोभूयः-वारं वारं सम्यग् विनयेन-प्रशस्तविनयप्रभावेन क्षामयति-क्षमां कारयति। ॥सू १५७॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिस्स रण्णो सूरिकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महइमहालियाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ। तए णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठइ केसिकुमारसमणं वंदइ नमसइ जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १५८ ॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ताप्रमुखानां देवीनां तस्यां च महातिमहालयायां परिषदि चातुर्यामं धर्मं परिकथयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा धर्मं श्रुत्वा निशम्य उत्थया उत्तिष्ठति केशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति यत्रैव श्वेतविका नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ॥सू १५८॥

रना, ग अचित्त द्रव्यों का परित्याग नहीं करना, ३ एक शाटिका उत्तरासङ्ग करना-बिना सीए वस्त्रसे उत्तरासंग करना, ४-दर्शन होते ही हाथ जोड लेना, और-५ मनको एकाग्र करना ॥सू १५७॥

सूत्र-"तए णं केसीकुमारसमणे-" इत्यादि-॥१५८॥

मूलार्थ—"तएणं" इसके बाद "केसीकुमारसमणे" केशीकुमारश्रमणने "पएसिस्स रण्णो सूरिकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसेय महइमहालियाए परिसाए-" प्रदेशी राजा के समक्ष एवं उसकी सूर्यकान्ता आदि प्रमुख रानियों के समक्ष उस विशाल परिषदा में "चाउज्जामधम्मं" अहिंसा-सत्य-अस्तेय, एवं-अपरिग्रह रूप चातुर्याम धर्मका उपदेश दिया। "तएणं से पएसी राया धम्मं सोच्चा

પરિત્યાગ કરવો, ૨ અચિત્ત દ્રવ્યોનો પરિત્યાગ નહિ કરવો, ૩ એક શાટિકા ઉત્તરાસંગ કરવો, ૪ વગર સીવેલા વસ્ત્રોથી ઉત્તરાસંગ કરવો. જોતાની સાથે જ હાથ જોડી લેવા અને ૫, મનની એકાગ્રતા કરવી ॥ સૂ ૧૫૭ ॥

સૂત્રાર્થ—"तए णं केसीकुमारसमणे इत्यादि"

મૂલાર્થ—"तएणं" ત્યાર પછી "केसी कुमारसमणे" કેશી કુમાર શ્રમણે "पएसिस्स रण्णो सूरिकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसेय महइ महालियाए परिसाए" પ્રદેશી રાજાની સામે તેમજ તેની સૂર્યકાન્તા વગેરે પ્રમુખ રાણીઓની સામે તે વિશાળ પરિષદામાં 'चाउज्जाम धम्मं" અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય અને અપરિગ્રહ ચાતુર્યામ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. "तएणं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म

टीका—"तए णं केशिकुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता प्रमुखानां देवीनां तस्यां तत्र स्थितायां च महाऽतिमहालयायाम् अतिबृहत्याम्, परिषदि चातुर्यामम्—अहिंसा-सत्या ऽस्तेया-ऽपरिग्रहैर्विभक्तचतुर्महाव्रतरूपं धर्मं परिकथयति—प्ररूपयति। उपलक्षणाद् द्वादशविधं गृहिधर्मं परिकथयति ततः खलु स प्रदेशी राजा धर्मम्-अनगारागारधर्मं श्रुत्वा सामान्यतः श्रवणगोचरं कृत्वा निशम्य—विशेषतो हृद्यवधार्य उत्थया—उत्थानप्रयासेन उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिकुमारश्रमणं वन्दते—स्तौति, नमस्यति—नमस्करोति, वन्दित्वा नमस्यित्वा च यत्रैव श्वेतांबिका नगरी तत्रैव गमनाय प्राधारयत्—निश्चितवान्। ॥सू. १५८॥

मूलम्—तएणं केसी कुमारसमणे पएसिराय एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा से वणसंडेइ वा णट्टसालाइ वा इक्खुवाडएइ वा खलवाडएइ वा। कहं णं भंते! वणसंडे पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवइ? पएसी! जहा णं वणसंडे पत्तिए

निसम्म उट्ठाए उट्ठेइ—" इसके बाद प्रदेशी राजा धर्म सुन कर और उसे हृदय में धारणकर अपने आप वहां से उठा—"केसीकुमारसमणं वंदइ नमंसइ—" उठकर उसने केशीकुमार श्रमण की वन्दना की उन्हें नमस्कार किया. "जेणेव सेयंविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए—" वन्दना-नमस्कार कर फिर वह अपनी नगरी की ओर चलदिया। टीकार्थ—स्पष्ट है-केशीकुमारश्रमणने चातुर्याम धर्म के उपदेश और-साथ-साथ १२ प्रकाररूप गृहस्थ धर्म का भी उपदेश दिया. ऐसा कथन उपलक्षण से जान लेना चाहिये ॥ सू. १५८॥

उट्ठाए उट्ठेइ" त्यार पछी प्रदेशी राजा धर्म सांभळीने अने तेने हृदयमां धारण करीने पोतानी मेळे ज त्यांथी ऊभो थयो "केसीकुमारसमणं वंदइ नमंसइ" ऊभा थईने तेणे केशी कुमारश्रमणनी वंदना करी तेमने नमस्कार कर्या. "जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए" वंदना तेमज नमस्कार करीने पछी ते पोतानी नगरी तरफ रवाना थई गयो.

टीकार्थ—स्पष्ट छे केशीकुमारश्रमणे चातुर्याम धर्मनो उपदेश अने तेनी साथे साथे १२ प्रकाररूप गृहिधर्मनो पण उपदेश आप्यो हतो, एवु कथन उपलक्षणथी जाणी लेवुं जोईए. ॥ सू १५८ ॥

एकशाटिकोत्तरासङ्गकरणेन३, चक्षु स्पर्शे अञ्जलिकरणेन४, मनस एकत्वकरणेन५, येत्यव रूपेण अभिगमेन-विनयविधिविशेषेण, वन्दते-स्तौति नमस्यति-नमस्करोति वन्दित्वा नमस्यित्वा च एतमर्थं-प्रतिकूलाचरणजनितापराधरूप भूयोभूय -वारं वारम् सम्यग् विनयेन-प्रशस्ततरविनम्रभावेन क्षामयति-क्षमां कारयति। ।सू १५७।

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिस्स रण्णो सूरिक तप्पमुहाणं देवीण तीसे य महइमहालयाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ। तए णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेइ केसिकुमारसमणं वदइ नमसइ जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १५८ ॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता-प्रमुखानां देवीनां तस्यां च महाऽतिमहालयायां परिषदि चातुर्याम धर्मं परिकथयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा धर्मं श्रुत्वा निशम्य उत्थया उत्तिष्ठति केशिकुमार-श्रमणं वन्दते नमस्यति यत्रैव श्वेतविका नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।।सू. १५८।।

त्ना, ण अचित्त द्रव्यों का परित्याग नहीं करना, २ एक शाटिका उत्तरा सङ्ग करना-विना सीमे वस्त्रसे उत्तरासंग करना, है-देखने ही हाथ जोड लेना, और-५ मनकी एकाग्रता करना ।।सू १५७।।

सूत्र-"तए णं केसीकुमारसमणे-" इत्यादि-।।१५८।।

मूलार्थ—"तएणं" इसके बाद 'केसीकुमारसमणे' केशीकुमारश्रमणने "पए सिस्स रण्णो सूरिकतप्पमुहाणं देवीण तीसेय महइ महालयाए परिसाए-" प्रदेशी राजा के समक्ष एवं उसकी सूर्यकान्ता आदि प्रमुख रानियों के समक्ष उस विशाल परिषदा में "चाउज्जाम धम्मं" अहिंसा-सत्य-अस्तेय, एवं-अपरिग्रह रूप चातुर्याम धर्मका उपदेश दिया "तएणं से पएसी राया धम्मं सोच्चा

परित्याग करवो २ अचित्त द्रव्योनो परित्याग नहि करवो ३ एक शाटिक उत्तरासङ्ग करवो ४ वगर सीवेला वस्त्रोथी उत्तरासङ्ग करवो. जोतानी साथे ज हाथ जोडी लेवा अने ५, मननी एकाग्रता करवी ॥ सू १५७ ॥

सूत्रार्थ—"तए णं केसीकुमारसमणे इत्यादि"

मूलार्थ—"त एणं" त्यार पछी 'केसी कुमारसमणे' केशी कुमार श्रमणे "पएसिस्स रण्णो सूरिकंप्प मुहाणं देवीणं तीसेय महइ महालयाए परिसाए" प्रदेशी राजानी सामे तेमज तेनी सूर्यकान्ता वगेरे प्रमुख राणीओनी सामे ते विशाळ परिषदामां 'चाउज्जाम धम्मं" अहिंसा सत्य, अस्तेय अने अपरिग्रहरूप चातुर्याम धर्मनो उपदेश आप्यो "तएणं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म

टीका—"तए णं केसिकुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता प्रमुखानां देवीनां तस्यां तत्र स्थितायां च महाऽतिमहालयायाम् अतिबृहत्याम्, परिषदि चातुर्यामम्–अहिंसा-सत्या ऽस्तेया-ऽपरिग्रहैर्विभक्तचतुर्महाव्रतरूपं धर्मं परिकथयति–प्ररूपयति। उपलक्षणाद् द्वादशविधं गृहिधर्मं परिकथयति ततः खलु स प्रदेशी राजा धर्मम्-अनगारागारधर्मं श्रुत्वा सामान्यतः श्रवणगोचरं कृत्वा निशम्य–विशेषतो हृद्यवधार्य उत्थया–उत्थानप्रयासेन उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिकुमारश्रमणं वन्दते–स्तौति, नमस्यति–नमस्करोति, वन्दित्वा नमस्यित्वा च यत्रैव श्वेतांबिका नगरी तत्रैव गमनाय प्राधारयत्–निश्चितवान्। ॥सू. १५८॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिराय एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी! पुव्वि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा से वणसंडेइ वा णट्टसालाइ वा इक्खुवाडएइ वा खलवाडएइ वा। कहं णं भंते! वणसंडे पुव्वि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवइ? पएसी! जहा णं वणसंडे पत्तिए

निसम्म उट्ठाए उट्ठेइ–" इसके बाद प्रदेशी राजा धर्म सुन कर और उसे हृदय में धारणकर अपने आप वहां से उठा–"केसीकुमारसमणं वंदइ नमंसइ–" उठकर उसने केशीकुमार श्रमण की वन्दना की उन्हें नमस्कार किया. "जेणेव सेयंविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए–" वन्दना-नमस्कार कर फिर वह अपनी नगरी की ओर चलदिया। टीकार्थ–स्पष्ट है–केशीकुमारश्रमणने चातुर्याम धर्म के उपदेश और–साथ–साथ १२ प्रकाररूप गृहस्थ धर्म का भी उपदेश दिया. ऐसा कथन उपलक्षण से जान लेना चाहिये ॥ सू. १५८॥

उट्ठाए उट्ठेइ" त्यार पछी प्रदेशी राजा धर्म साभळीने अने तेने हृदयमा धारण करीने पोतानी मेळे ज त्याथी उभो थयो "केसीकुमारसमणं वंदइ नमंसइ उभा थईने तेणे केशी कुमारश्रमणनी वंदना करी तेमने नमस्कार कर्या "जेणेव सेयंविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए" वंदना तेमज नमस्कार करीने पछी ते पोतानी नगरी तरफ रवाना थई गयो.

टीकार्थ––स्पष्ट छे केशीकुमारश्रमणे चातुर्याम धर्मनो उपदेश अने तेनी साथे साथे १२ प्रकाररूप गृहिधर्मनो पण उपदेश आप्यो हतो, एवु कथन उपलक्षणथी जाणी लेवु जोईए ॥ सू. १५८ ॥

पुप्फिए फलिए हरिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ, तया णं वणसंडे रमणिज्जे भवइ, जया णं वणसंडे नो पत्तिए नो पुप्फिए नो फलिए नो हरिए नो हरियगरेरिज्जमाणे णो सिरीए अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ जया णं जुन्ने झडे परिसडिय पंडुपत्ते सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ तयाणं वणसंडे अरमणिज्जे भवइ १। जया णं णट्टसाला वि गिज्जइ वाइज्जइ नच्चिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ तयाणं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ, जया णं नट्टसाला णो गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ, तया णं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ २। जया ण इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ पीलिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जया णं इक्खुवाडे णो छिज्जइ जाव तया इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ ३, जयाणं खलवाडे उच्छुब्भइ मलिज्जइ खज्जइ दिज्जइ तया णं खलवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाणं खलवाडे नो इच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे भवइ ४। से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मा णं तुमं पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडेइ वा जाव खलवाडेइ वा ॥ सू० १५९॥

छाया—ततः खलु केशिकुमारश्रमण प्रदेशिराजमेवमवादीत्—मा खलु त्वं प्रदेशिन्! पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चात् अरमणीयो भवेः, यथा स वनषण्ड इति

"तए णं केसीकुमारसमणे—" इत्यादि—॥ सू. १५९ ॥

मूलार्थ—"तए णं—" इसके बाद 'केसी कुमारसमणे—" केशी कुमारश्रमणने पएसी रायं एवं वयासी—" प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—"मा णं तुम पएसी?

सूत्रार्थ—"तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ॥ सू १५९ ॥

મૂલાર્થ—"તएणं" त्यार पछी "केसीकुमारसमणे" કેશી કુમાર શ્રમણે "पएसी राय एवं वयासी" પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું—"मा णं तुम पएसी! पुव्वि

वा नाट्यशाला इति वा इक्षुवाटकम् इति वा खलवाटकम् इति वा कथं खलु भदन्त ! वनषण्डः पूर्व रमणीयो भूत्वा पश्चाद् अरमणीयो भवति ? । प्रदेशिन् ! यथा खलु वनषण्डः । पत्रितः पुष्पितः फलितः हरितः हरितकराराज्यमानः श्रिया अतीव उपशोभमानः तिष्ठति, तदा खलु वनषण्डो रमणीयो भवति, यदा खलु

पुव्वि रमणीए भवित्ता पच्छा-अरमणिज्जे भविज्जासि-" हे प्रदेशिन्-! तुम पहले रमणीय होकर बाद में अरमणीय मत बनना. अर्थात्-धार्मिक होकर अधार्मिक मत बन जाना "जहा से वणसंडेइवा-णट्टसालाइवा-इक्खुवाडएइवा-खलवाडएइ वा-" जैसे पूर्व में रमणीय होकर वनषण्ड अरमणीय बन जाता है, अथवा नाटयशाला, या इक्षु पीडन स्थान या-खलवाटक पूर्व में रमणीय होकर अरमणीय बनजाते है. अब प्रदेशी पूछता है-"कहं णं भंते ? वणसंडे पुव्वि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवइ-" हे भदन्त ? वनषण्ड पूर्व में रमणीय होकर बाद में अरमणीय किस प्रकार से हो जाता है-३ "उत्तर में प्रभु कहते हैं-"पएसी जहा णं वणसंडे पत्तिए-पुप्फिए-फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव उवसोभेमाणे-तयाणं वणसंडे रमणिज्जे भवइ-" हें प्रदेशिन् ? वनषण्ड जब पत्रों से युक्त होता है-पुष्प सम्पन्न होता है-फलित फलों से सहित होता है, हरियाली से युक्त होता है. हरे हरे पत्ते आदि से अतिशय सुहावना होता है तब वनषण्ड अपनी शाभासे सुशोभित होता हुवा रमणीय होता है,

---

रमणीए भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि" હે પ્રદેશિન્ ! તમે પહેલા રમણીય થઇને પછી અરમણીય બનશો નહિ, એટલે કે ધાર્મિક થઇને અધાર્મિક બનશો નહિ, "जहा से वणसंडेइ वा णट्टसरलाइवा इक्खुवाडएइ वा खलवाडइ वा" જેમ પહેલા રમણીય થઈને વનખંડ પછી અરમણીય થઇ જાય છે અથવા નાટયશાળા કે ઇક્ષુ-પીડનસ્થાન કે ઇક્ષનાટક પહેલા રમણીય થઇને પછી અરમણીય થઇ જાય છે. હવે પ્રદેશી પ્રશ્ન કરે છે "कहणं भंते! वणसंडे पुव्वि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवइ" હે ભદંત! વનષંડ પહેલા રમણીય થઇને પછી અરમણીય કઇ રીતે થઇ જાય છે ૩, ઉત્તરમા કહે છે "पएसी जहाणं वणसंडे पत्तिए पुप्फिए फलिए हरिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव उवसोभेमाणे तयाणं वणसंडे रमणिज्जे भवइ" હે પ્રદેશિન્-વનષંડ જ્યારે પત્રોથી યુકત હોય છે, પુષ્પ સંપન્ન હોય છે, ફળ યુકત હોય છે હરીતિમાંથી યુકત હોય છે તેમજ લીલા પાદડાઓ વગેરેથી આ અતિશય સોહામણો હોય છે, ત્યારે તે વનખંડ પોતાની શોભાથી સુશોભિત થતો રમણીય હોય છે. એટલે કે આ પ્રમાણે વનખંડ રમણીય કહેવાય છે

वनषण्डो नो पत्रितो नो पुष्पितो नो फलितो नो हरित नो हरित हराराज्यमाना नो श्रिया अतीव उपशोभमानः तिष्ठति, यदा खलु जीर्णे झन्नः परिशटित पाण्डुपत्र शुष्कवृक्ष इव म्लायन तिष्ठति तदा खलु वनषण्डो नो खलु रमणीयो भवति।

यदा खलु नाटयशालाऽपि गीयते वाद्यते नर्त्यते हस्यते रम्यते तदा खलु नाटयशाला रमणीया भवति, यदा खलु नाटयशाला नो गीयते यावत् नो रम्यते तदा खलु नाटयशाला अरमणीया भवति।

अर्थात्—इस प्रकार से वनषण्ड रमणीय कहा जाता है जयाण वणसंडे नो पत्तिए—नो पुष्फिए—नो फलिए नो हरिए—नो हरियगरेरिज्जमाण, णो सिरीए अईव उव सोममाणे चिट्ठइ—परन्तु—जब वही वनषण्ड पत्रित (पत्रवाला) नहीं रहता है पुष्पित (पुष्पवाला) नहीं रहता है—फलित नहीं रहता है—हरा नहीं रहता है, एवं हरे २ पत्तों आदिसे अतिशय सुहावना नहीं रहता है तब अपनी शोभा से रहित हो जाता है, तथा—"जयाण झुन्ने झडे पडिसडियपण्डुपत्ते सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ—" जब वही वन जीर्ण पत्रादिकों से रहित हो जाता है, पत्र आदि सब जब झर जाते हैं, विकृत पाण्डुवर्णवाले पत्र जब उसमें हो जाते हैं, तथा—शुष्क वृक्ष की तरह जब वह म्लान हो जाता है "तयाण वणसंडे अरमणिज्जे भवई—" तब वह वनखण्ड अरमणीय बन जाता है—? "जयाण णट्टसाला गिगिज्जइ—वाइज्जइ—नच्चिज्जइ—हसिज्जइ रमिज्जइ—तयाण णट्टसाला रमणिज्जा भवइ—" इसी तरहसे हे प्रदेशिन् ! जब तक नाटय शाला गानयुक्त होती रहती है वादित्रों की ध्वनि से वाचालित होती है,

---

"जयाण वणसडे नो पत्तिए—नो पुष्फिए—नो फलिए नो हरिए—नो हरियगरेरिज्जमाणे, णो सिरीए अईव उवसोममाणे चिट्ठइ" પણ તે વનખંડ જ્યારે પત્રિત રહેતો નથી પુષ્પિત રહેતો નથી, ફલિત રહેતો નથી, લીલો રહેતો નથી અને લીલા લીલા પાંદડાઓ વગેરેથી અતિશય શોભાયમાન રહેતો નથી ત્યારે તે પોતાની શોભાથી રહિત થઈ જાય છે તથા "જયાણ ઝુન્ને ઝડે પડિસડિયપણ્ડુપત્તે સુક્કરુક્ખે ઇવ મિલાયમાણે ચિટ્ઠઇ" જ્યારે તે વન જીર્ણ પત્ર વગેરેથી યુક્ત થઈ જાય છે પાંદડાઓ વગેરે બધાં ખરી પડે છે, તેમાં પાંદડાઓ વિકૃત તેમજ પાંડુવર્ણવાળા થઈ જાય છે તેમજ શુષ્ક વૃક્ષની જેમ જ્યારે તે મ્લાન થઈ જાય છે "તયાણ વણસડે અરમણિજ્જે ભવઇ" ત્યારે તે વનખંડ અરમણીય થઈ જાય છે."જયાણ ણટ્ટસાલા ગિગિજ્જઇ વાઇજ્જઇ નચ્ચિજ્જઇ હસિજ્જઇ રમિજ્જઇ તયાણ ણટ્ટસાલા રમણિજ્જા ભવઇ" આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જ્યાં નાટ્યશાળામાં સંગીત થાતું રહે છે, તેમાં વાજિંત્રો વાગતા રહે છે તેમાં નાચ થતું રહે છે, પાત્રોના હાસ્યથી જ્યાં સુધી તે મુખરિત થતી રહે છે અને વિલાસ

यदा खलु इक्षुवाटकं छिद्यते भिद्यते पीडयते खाद्यसे पीयते दीयते तदा खलु इक्षुवाटकं रमणीयं भवति, यदा खलु इक्षुवाटकं नो छिद्यते यावत् तदा इक्षुवाटकम् अरमणीयं भवति।

यदा खलु खलवाटकम् अवक्षिप्यते मर्द्यते उद्वाप्यते खाद्यते दीयते तदा खलु खलवाटकं रमणीयं भवति तत् तेनार्थेन प्रदेशिन्! एवमुच्यते मा खलु त्वं

उसमें नाच होता रहता है. पात्रों की हस्सी से जब तक वह खिल खिलाती रहती है, एवं विविध प्रकार की क्रीडाओं की क्रीडास्थला बनी रहती है. तब तक वह नाटयशाला सुहावनी लगती है. "जयाणं णट्टसाला णो गिज्जइ, जाव णो रमिज्जइ, तयाणं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ–२" और-जब वह नाटयशाला गीतों से रहित हो जाती है, वादित्रों की तुमुल ध्वनि से विहीन हो जाती है. यावत्-विविध प्रकार की क्रीडाओं से वह शून्य हो जाती है, तब वही नाटयशाला अरमणीक हो जाती है–२। "जयाणं इक्खुवाडे छिज्जइ-भिज्जइ–पीलिज्जइ-खज्जइ–पिज्जइ–दिज्जइ, तयाण इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाण इक्खुवाडे णो–छिज्जइ-जाव तया इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ–३" इसी तरह जब तक हे प्रदेशिन्! इक्षु-सेलडी क्षेत्रमें इक्षु कटते रहते हैं पत्ते आदि उनसे दूर किये जाते रहते हैं उन्हें यन्त्रद्वारा पीडित कर उनका रस निकाला जाता रहता है बना हुवा गुड वहा चखा जाता रहता है लोग वहां निकाले हुवे रस को पीते रहते है, तथा–मिलने जुलने वालों को इक्षु दिया जाता रहता है. तब तक तो वह इक्षुवाट रमणीय बना रहता है और जब तक इक्षु-

પ્રકારની ક્રીડાઓની તે ક્રીડા સ્થલી રહે છે ત્યા સુધી તે નાટયશાળા સોહામણી લાગે છે "जयाणं णट्टसाला णो गिज्जइ, जाव णो रमिज्जइ तयाणं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ २" અને જ્યારે નાટયશાળા ગીતરહીત થઇ જાય છે વાજિંત્રોની તુમુલ તુમુલ ધ્વનિ રહિત્ થઇ જાય છે યાવત વિવિધ પ્રકારની ક્રીડાઓથી શૂન્ય થઇ જાય છે, ત્યારે તે જ નાટયશાળા અરમણીક થઇ જાય છે ૨ "जयाणं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ, पीलिज्जइ खज्जइ पिज्जइ, दिज्जइ, तयाण इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाणं इक्खुवाडे णो छिज्जइ जाव तजा इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ ३" આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! જ્યાં સુધી ઇક્ષુ શેરડીના ખેતરમા શેરડી કપાતી રહે છે, પાંદડાઓ વગેરેની સાફસૂફી થતી રહે છે, યંત્રમા નાખીને તેમાથી રસ નીકળતો રહે છે, તૈયાર થયેલ ગોળ ત્યા લોકો વડે ચખાતો રહે છે, ત્યાંથી પસાર થતા લોકો શેરડીમાથી નીકળેલો રસ પીતા રહે છે, તથા મળવા માટે આવનારાઓને શેરડી અપાતી રહે છે ત્યાસુધી તો તે ઇક્ષુવાટ રમણીય રહે છે અને જ્યારે તે ઇક્ષવાટમા પૂર્વોક્ત

प्रदेशिन् ! पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चात् अरमणीयो भवे यथा वनषण्ड इति वा यावत् खलवाटम् इति वा ॥सू १५९॥

टीका—"तए ण केसी कुमारसमणे" इत्यादि—तत खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—मा खलु प्रदेशिन् ! त्वं पूर्वम्—आदौ रमणीय —धार्मिको भूत्वा पश्चात् अरमणीय —अधार्मिको मा भवेः, यथा—वन प्रकारक वन षण्ड इति वा नाट्यशाला—नाट्यभवनम् इति वा इक्षुवाटकम्—इक्षुपीलनस्थानम्

वाटमें ये पूर्वोक्त सब काम बन्द कर दिये जाते हैं,—अर्थात्—इन कार्यों से वह रहित बन जाता है तब यही इक्षुवाट अरमणीय लगने लगता है "जयाण खलवाडे उच्छुब्भइ—मलिज्जइ उड्डिज्जइ खज्जइ दिज्जइ, तयाण खलवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाण खलवाडे णो उच्छुब्भइ जाव—अरमणिज्जे भवइ ४' इसी प्रकार से हे प्रदेशिन्—? खलिहान जबतक धान्य के ढेर लग रहते हैं दाय कण मर्दन होती रहती है, उडावनी होती रहती है, वहाँ पर उसकी यथार्थ रक्षक के निमित्त लाया हुवा भोजन खाया जाता रहता है दूसरों की वहीं पर जब तक अनाज दिया जाता रहता है तबतक तो वह खलिहान रमणीय लगता रहता है, और जब यह सब काम होना उसमें बन्द हो जाता है तब वह अरमणीय लगने लगता है—४ 'से तेणट्ठेण पएसी! एव वुच्चइ—मा ण तुम पए—सी? पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा—अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडे वा जाव खलवाडेइ वा—" इसी लिये हे प्रदेशिन्—? मैंने ऐसा कहा है कि—तुम पहले रमणीय होकर अरमणीय मत बन जावो, जैसे—कि वनखण्ड यावत् खलवाट हो जाते हैं—

બધી ક્રિયાઓ બંધ થઈ જાય છે ત્યારે તે ઇક્ષુવાટ અરમણીય લાગવા માંડે છે "जयाण खलवाडे उच्छुब्भइ—मलिज्जइ, उड्डिज्जइ, खज्जइ, दिज्जइ, तयाण खलवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाण खलवाडे णो उच्छुब्भइ, जाव—अरमणिज्जे भवइ ४' આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! ખળામાં જ્યાં સુધી ધાન્યના ઢગલાઓ રહે છે, કણસલાં ચૂંદીને અનાજ કઢાતું રહે છે અનાજ ઉપણાતું રહે છે ત્યાંના રખેવાળ માટે ત્યાં પહોંચાડેલું ભોજન જમાતું રહે છે બીજાઓને ત્યાં જ્યાં સુધી અનાજ વગેરે અપાતાં રહે છે ત્યાં સુધી તે ખળું રમણીય લાગે છે અને જ્યારે આ બધું કામ બંધ થઈ જાય છે ત્યારે તે અરમણીય લાગવા માંડે છે ૪ "से तेणट्ठेण पएसी! एव वुच्चइ—मा ण तुम पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा—अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडे वा जाव खलवाडेइ वा" એટલા માટે હે પ્રદેશિન્! મેં આમ કહ્યું છે કે તમે પહેલાં રમણીય થઈને પછી અરમણીય બનશો નહિ જેવી રીતે વનષંડ યાવત્

इति वा खलवाटकम् इति वा पूर्वं रमणीयं भूत्वा पश्चादरमणीयं भवतीति ! तत्र प्रदेशी पृच्छति—हे भदन्त ! कथं—केन प्रकारेण वनषण्डः पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो भवति ? । एवं नाटयशालेक्षुवाट—खलवाटविषयेऽपि प्रश्नयोजना कर्तव्या। तत्र क्रमेण तेषां रमणीयत्वारमणीयत्वे प्रदर्शयितु केशी प्राह—'पएसी' इत्यादि—हे प्रदेशिन् ! यथा वनषण्डः पत्रितः—पत्रसम्पन्नः, पुष्पितः—पुष्पसम्पन्नः फलितः—फलसम्पन्नः, हरितः—हरितत्वसम्पन्नः हरितकराराज्यमानः—हरितवर्ण पत्रपल्लवादिभिरतिशयेन शोभमानः, अत एव श्रिया—शोभया, अतीव—अत्यन्तम् उपशोभमानः—शोभां प्राप्नुवन् यदा तिष्ठति—वर्तते, तदा—तस्मिन् काले च स वनषण्डो नो पत्रितः नो पुष्पितः नो फलितः नो हरितः नो हरितकराज्यमानः अत एव नो श्रियाऽतीवोपशोभमानो भवति, यदा च जीर्णः—जीर्णपत्र पल्लवादियुक्तः शन्नः—प्रपतितपत्रादिकः, अत्र शदो झडादेशः, परिशटितपाण्डुपत्रः—विकृतपाण्डुवर्णपत्रयुक्तः शुष्कवृक्ष इव म्लायन्—म्लानतां गच्छन् सन् तिष्ठते, तदा खलु वनषण्डो नो रमणीयो भवति १। प्रदेशी पृच्छति—हे भदन्त ! नाटयशाला कथं रमणीया भूत्वा चारमणीया भवति ? केशी प्राह—हे प्रदेशिन्! यदा खलु नाटयशालाऽपि गीयते—गानयुक्ता भवति वाद्यते—वाद्यवादनयुक्ता भवति नृत्यते—नृत्ययुक्ता भवति, हस्यते—हास्ययुक्ता भवति, रम्यते—क्रीडनयुक्ता भवति, तदा खलु सा रमणीया भवति, यदा खलु नो गीयते—यावत् नो वाद्यते ना नर्त्यते नो हस्यते नो रम्यते, तदा खलु सा अरमणीया भवति २।

अथेक्षुवाटविषयकप्रश्ने केशी प्राह—हे प्रदेशिन ! यदा खलु इक्षुवाटम् इक्षुक्षेत्रे इक्षुः छिद्यते—द्विधा क्रियते, भिद्यते—विदार्यते, पीडयते—यन्त्रेण रसो निःसार्यते, खाद्यते-गुडादिकम्, पीयते—रसः, दीयते—इक्ष्वादिकं, तदा खलु इक्षुवाटं रमणीयं भवति । यदा खलु इक्षुवाटं नो छिद्यते यावत् नो पीडयते नो खाद्यते नो पीयते नो दीयते, तदा इक्षुवाटम् अरमणीयं भवति । ३ ।

टीकार्थ—स्पष्ट है, "झडे" यहांपर शद् के स्थान में झड आदेश हुवा है. संस्कृत में इस की छाया "शन्नः" ऐसी होती हैं। केशीने—इस सूत्र द्वारा प्रदेशी राजा को पहिले रमणीय होकर अरमणीय बन जाने वाले वनषण्ड आदि-चार को दृष्टांतरूप में रखकर यह समझाया है कि—तुम ऐसे मत बन जाना. ॥१५९॥

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ છે 'झड' અહીં 'शद'ના સ્થાને 'झड' આદેશ થયો છે સંસ્કૃત મા એની છાયા 'शन्न' હોય છે. કેશીએ આ સૂત્ર વડે પ્રદેશી રાજાને પહેલા રમણીય થઈને પછી અરમણીય થઈ જનારા વનષડ વગેરેને દૃષ્ટાંત રૂપમા આપીને આ સમજાવવામા આવ્યુ છે કે તમે એવા થશો નહિ. ॥સૂ. ૧૫૯॥

अथ खलवाटविषयप्रश्ने केशी प्राह-हे प्रदेशिन्! यदा खलु खल ।? मस्यकणमर्दनपरिष्करणस्थानम् तत्र धान्यम्-अवक्षिप्यते-पुञ्जीक्रियते, मर्द्यते-बली वर्दादिभिः, उड्डाप्यते-पवने पू त, खाद्यते, दीयते तदा खलु खलवाट रमणीय भवति । यदा खलु नो अवक्षिप्यते यावत् नो मर्द्यते नो उड्डाप्यते, नो खाद्यते नो दीयते तदा अरमणीय भवति ४। यद् हे प्रदेशिन ! तेन-वनषण्डादि दृष्टान्तरूपेण अर्थेन एवम् उच्यते-कथ्यते-यत् हे प्रदेशिन ! त्वं पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो मा भवे यथा वनषण्ड इति वा यावत्-नाट्यशालेति वा इक्षुवाटम् इति वा खलवाटम् इति वा ॥सू० १५९॥

मूलम्—तए णं पएसी केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-णो खलु भंते! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवि स्सामि जहा वणसंडे वा जाव खलवाडेइ वा, अहं सेयविया नयरीपमुक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि, एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एगं भागं कुट्ठागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महइमहालयं कूडागारसालं करिस्सामि, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्त वेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समण माहणभिक्खुयाणं पथियपहियाणं परिभाएमाणे बहूहिं सीलव्वयगुण व्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे वि हरिस्सामित्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए । ॥ सू० १६० ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-नो खलु भदन्त! अहं पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो भविष्यामि, [यथा वनखण्ड इति वा यावत् खलवाटमिति वा अहं खलु श्वेतविकानगरी प्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि चतुरो भागान करिष्यामि, एकं भागं बलवाहनस्य दास्यामि, एकं भागं कोष्ठागारे क्षेप्स्यामि, एकं भागमन्तःपुराय दास्यामि, एकेन भागेन महा तिमहालयां कूटाकारशालां करिष्यामि, तत्र खलु बहुभिः पुरुषैः दत्तभृतिभक्त

"तए णं पएसी के-सिं" इत्यादि ॥१६० सूत्र॥

सूत्रार्थ—'तएणं' इसके बाद 'पएसी' प्रदेशी राजाने-"केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-" केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा—"णो खलु भंते ! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि जहा वणसंडेइ वा जाव-खलवाडेइ वा-" हे भदन्त ! मैं पहले रमणीय होकर अब वनषण्ड, अथवा यावत खलवाट सेलडीका खेत की तरह अरमणीय नहीं बनूंगा. "अहं सेयविया नयरी पमुक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारिभागे करिस्सामि-" मैं श्वेताम्बिका नगरी प्रमुख सातहजार ग्रामों को चार विभागों में विभक्त करूंगा. "एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि-" इन में से एक भाग तो बल-और वाहन के लिये दूंगा. "एगं भागे कुट्ठागारे छुभिस्सामि-" दूसरा भाग कोष्ठागार में प्रजापालन के लिये रक्खूंगा. "एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि-" एक भाग को तीसरेको मैं अन्तःपुर रक्षा के लिये दूंगा. "एगेणं-भागेणं महइमहालयं कूडागारसालं करिस्सामि-" एक भाग से चौथे से मैं एक बहुत ही विशाल कूटागारशाला बनवाऊंगा —"तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्तवेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-भिक्खुयाणं पंथिय पहियाणं परिभाएमाणे-" उसमें अनेक पुरुषों को सवेतनिक रूपमें रक्खूंगा.

"तए णं पएसी केसिं" इत्यादि ॥१६०॥

सूत्रार्थ—'तए णं' त्यार पछी 'पएसी' प्रदेशी राजाએ 'केसिं कुमारसमणं एवं वयासी" કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું. "णो खलु भंते ! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि जहा वणसंडेइ वा जाव खलवाडेइ वा" હે ભદંત ! હું પહેલા રમણીય થઈને હવે વનષંડ કે યાવત્ ખળાની જેમ અરમણીય થઈશ નહિ "अहं सेयंविया नयरी पमुक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि" હું શ્વેતવિકા નગરી પ્રમુખ સાત હજાર ગામોને ચાર ભાગોમા વિભાજિત કરીશ, "एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि" આમાથી એક ભાગ બલ (સેના) અને વાહન માટે આપીશ. "एगे भागे कुट्ठागारे छुभिस्सामि" બીજો ભાગ કોષ્ઠાગારમાં પ્રજા પાલન માટે જુદો રાખીશ. "एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि" ત્રીજા એક ભાગને હું અન્તઃપુરની રક્ષા માટે આપીશ "एगेणं भागेणं महइमहालयं कूडागारसालं करिस्सामि" ચોથા એક ભાગથી હું એક વિશાળ કૂટાગાર શાળા બનાવડાવીશ "तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्त-वेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समणमाहण-भिक्खुयाणं पंथियपहियाणं परिभाएमाणे" તેમા ઘણા પુરૂષોને હું પગાર આપીને નીમીશ. તેઓ ત્યાં જમશે. તે માણસો પાસેથી હું વિપુલ માત્રામા અશન-પાન-

यतन विपुलम् अशन पान खादिम स्वादिमम् उपस्कार्य बहुभ्य श्रमण ब्राह्मण-भिक्षुकेभ्य पथिकप्राघुणेभ्य परिभाजयन् बहुभि शीलव्रतगुणमतविरमणप्रत्याख्यानपोषधोपवासै आत्मान भावयमानो विहरिष्यामि, इति कृत्वा यामेव दिश प्रादुर्भूत तामेव दिश प्रतिगत' ॥सू १६०॥

टीका—"तए ण पएसी" इत्यादि—तत खलु प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणम् एवमवादीत्—हे भदन्त ! अह पूर्व रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो नो भविष्यामि यथा—येन प्रकारेण वनपण्ड इति वा यावत् नाटयशालेतिवा इक्षुवाटमिति वा खलवाटमिति वा, वनपण्डादिवत् पूर्व रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो नो भविष्यामीति, तदेव स्पष्टयति अह खलु श्वेतविकानगरी प्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि-सप्त सहस्रपरिमितग्रामान् चतुरो भागान्-चतुर्धा विभक्तान्

वहीं वे भोजन करेंगे उनसे मैं विपुल मात्रा में अशन-पान-खादिम स्वादिम रूप चारों प्रकारके आहार को तैयार कराऊंगा फिर—अनेक श्रमण माहण भिक्षुकों के लिये तथा पथिकरूप प्राघूर्णिकों के (अतिथिविशेष) लिये उस आहार को दता हुवा, एवं-'बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाण पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरिस्सामि त्तिकट्टु जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए—" अनेकशील व्रतों से गुणव्रतों से प्रत्याख्यान और-पौषधोपवासोंसे आत्मा को भावित करता हुवा इस प्रकार कह कर वह प्रदेशी राजा, जिस दिशा से आया था उसी दिशा को चला गया

टीकार्थ—स्पष्ट है प्रदेशी राजाने जो इस सूत्र द्वारा अपना अभिप्राय प्रकटित किया है वह मैं वनपण्डादि कों की तरह पूर्वमें रमणीय होकर अरमणीय नहीं होने की पुष्टि के निमित्त प्रगट किया है इसी बात की पुष्टि अपने सात हजार ग्रामों को चार विभागों में विभक्त करने की है इसमें एक-२

खादिम-स्वादिमरूप चारे प्रकारना आहारो तैयार करावडावीश. पछी घणा श्रमण माहण भिक्षुको माटे तेमज पथिकरूप प्राघूर्णिकोने ते आहार आपतो एवं बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणव्वयपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरिस्सामि त्ति कट्टु जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए" घणा शील-व्रतो थी गुणव्रतोथी प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासोथी आत्माने हु भावित करतो रहीश. आ प्रमाणे कहीने प्रदेशी राजा जे दिशा तरफथी आव्यो हतो ते दिशा तरफ ज जतो रह्यो.

टीकार्थ—स्पष्ट ज छे प्रदेशी राजाए आ सूत्रवडे जे पोताना अभिप्राय प्रकट कर्यो छे ते वनषंड जेम पहेलां रमणीय थईने पछी अरमणीय थई जाय छे तेम हु थईश नहि ए वातने स्पष्ट करवामा आवी छे पोताना सात हजार ग्रामोने चार भागोमां जे राजाए विभाजित कर्या छे ते पण ए वातने ज पुष्ट करे छे एमां

करिष्यामि, तत्र भागान् इत्यत्र 'भज्यन्त इति भागाः' इति कर्मव्युत्पत्तिर्बोध्या, भावव्युत्पत्त्या तु कर्मणि षष्ठयापत्तिः स्यात्। तेषु चतुर्षु भागेषु एकं भागं पादोनसहस्रद्वयरूपं बलवाहनाय-तत्र बलाय-सैन्याय-वाहनाय-हस्त्यश्वाद्यर्थं दास्यामि १, एकं-द्वितीयं भाग कोष्ठागारे-प्रजापालनाय कोशे क्षेप्स्यामि२, मूले क्षिपे श्छुभादेशः, एकं-तृतीय भागम् अन्तः पुराय-अन्तःपुररक्षणाय दास्यामि३, चतुर्थेन भागेन महातिमहालयाम्-अतिमहतीं-परमविशालाम, कूटाऽऽकारशालां करिष्यामि, तत्र कूटाऽऽकारशालायां बहुभिः-बहुसंख्यैः पुरुषैः, कीदृशैः? दत्त-भृतिभक्तवेतनैः-दत्ताः भृतयो-जीविकाः, भक्तानि-आहाराः, वेतनानि-मासिक वृत्तयश्च येभ्यस्ते दत्तभृतिभक्तवेतनास्तैः पुरुषैरिति सम्बन्धः, विपुलं-प्रचुरम् अशनं पानं खादिमं स्वादिमम्' इति चतुर्विधाऽऽहारम् उपस्कार्य-सम्पाद्य बहुभ्यः श्रमण-ब्राह्मणभिक्षुकेभ्यः, तथा-पथिकप्राघुणेभ्यः-पथिकरूपाः प्राघुणाः पथिकप्राघुणाः, न तु सम्बन्धमाश्रित्य प्राघुणाः, तेभ्यः, परिभाजयन्-ददत्, बहुभिः शीलव्रत-गुणव्रत-विरमणव्रत-प्रत्याख्यान पोषधोपवासैः आत्मानं भावयमानो विहरिष्यामि, इति कृत्वा-इति कथयित्वा यामेव दिशं समाश्रित्य प्रादुर्भूतः तामेव दिशं प्रतिगतः। ॥सू० १६०॥

भाग में पोते दो-दो हजार ग्राम आते हैं। सैन्यका नाम-बल, और हस्ती अश्व आदिका नाम वाहन है। प्रजाओं की अच्छी तरह से पालन हो इस अभिप्राय से उसने एक भाग कोश-भण्डार में रखदिया "छुभिस्सामि" की संस्कृत छाया "क्षेप्स्यामि" है क्षिप् को प्राकृत में छुभादेश हुवा है. भृति शब्द का अर्थ जीविका. भक्त शब्द का अर्थ आहार एव-वेतन शब्द का अर्थ पगार है। पयिक प्रघूर्ण से पथिकरूप से प्राघुण लिये गये हैं नकि-सम्बन्ध को आश्रित करके प्राघूर्ण लिये गये है ॥सू० १६०॥

દરેકે દરેક વિભાગમા પોણા બે-બે હજાર ગામ છે સૈન્યનું નામ બલ અને હાથી ઘોડા વગેરેનુ નામ વાહન છે. પ્રજાનું સારી રીતે પાલન થઇ શકે તેટલા માટે તેણે એક ભાગ કોશ-ભંડારમા મૂકયો છે "छुभिस्सामि" ની સસ્કૃત છાયા "क्षेप्स्यामि" છે. क्षिप् ને પ્રાકૃતમા છુભાદેશ થયો છે ભૃતિ શબ્દનો અર્થ જીવિકા ભકત શબ્દનો અર્થ આહાર અને વેતન શબ્દનો અર્થ પગાર છે પથિક પ્રાઘૂર્ણ-(અતિથિરૂપ મહેમાન)થી પથિકરૂપથી પ્રાઘૂર્ણ (મહેમાન) લેવામા આવ્યા છે સબધને આશ્રિત કરીને પ્રાઘૂર્ણ લેવામા આવ્યા નથી ॥સૂ ૧૬૦॥

यतनैः विपुलम् अशन पान स्वादिम स्वादिमम् उपस्कार्य बहुभ्य श्रमण माहन-भिक्षुकेभ्य पथिकप्राघुर्णेभ्य परिभाजयन् बहुभिः शीलव्रतगुणव्रतविरमणव्रत प्रत्याख्यानपोषधोपवासैः आत्मानं भावयमानो विहरिष्यामि, इति कृत्वा यामेव दिश प्रादुर्भूतः तामेव दिश प्रतिगतः ॥सू. १६०॥

टीका—"तए ण पएसी" इत्यादि—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणम् एवमवादीत्—हे भदन्त! अहं पूर्व रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो नो भविष्यामि यथा—वन प्रकारेण वनपण्ड इति वा यावत् नाट्यशालेतिवा इक्षु वाटमिति वा खलवाटमिति वा, वनपण्डादिवत् पूर्व रमणीयो भूत्वा पश्चादर मणीयो नो भविष्यामीति, तदेव स्पष्टयति अहं खलु श्वेताम्बिकानगरी प्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि-सप्त सहस्रपरिमितग्रामान् चतुरो भागान्—चतुर्धा विभक्तान्

पढ़ी से भोजन करेंगे उनमें से विपुल मात्रा में *अशन-पान-खादिम स्वादिम* रूप चारों प्रकारके आहार को तैयार कराऊंगा फिर—अनेक श्रमण माहण भिक्षुकों के लिये तथा पथिकरूप प्राघूर्णिकों के (अतिथिरूप) लिये उस आहार को देता हुआ, एवं-'*बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणव्वयपच्चक्खाण पोसहोववासेहिं* अप्पाण भावेमाणे विहरिस्सामि त्तिकट्टु जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए-" अनेकशील व्रतों से गुणव्रतों से प्रत्याख्यान और पौषधोपवासोंसे आत्मा को मैं वासित करता हुआ इस प्रकार कह कर वह प्रदेशी राजा, जिस दिशा से आया था उसी दिशा को चला गया

टीकार्थ—स्पष्ट है प्रदेशी राजाने जो इस सूत्र द्वारा अपना अभिप्राय प्रकटित किया है वह में वनपण्डादि कों की तरह पूर्वमें रमणीय होकर अरम णीय नहीं होने की पुष्टि के निमित्त प्रगट किया है इसी बात की पुष्टि अपने सात हजार ग्रामों को चार विभागों में विभक्त करने की है इसमें एक-२

ખાદિમ-સ્વાદીમરૂપ ચારે પ્રકારના આહારો તૈયાર કરાવડાવીશ પછી ઘણા શ્રમણ માહણ ભિક્ષુકો માટે તેમ જ પથિકરૂપ પ્રાઘૂર્ણિકોને તે આહાર આપતો एवं बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणव्वयपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सामि त्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए" ઘણા શીલ વ્રતોથી ગુણવ્રતોથી પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસોથી આત્માને હું વાસિત કરતો રહીશ આ પ્રમાણે કહીને પ્રદેશી રાજા જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે દિશા તરફ જ જતો રહ્યો.

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે પ્રદેશી રાજાએ આ સૂત્રવડે જે પોતાનો અભિપ્રાય પ્રકટ કર્યો છે તે વનષંડ જેમ પહેલાં રમણીય થઈને પછી અરમણીય થઈ જાય છે તેમ તે થશે નહિ એ વાતને સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે પોતાના સાત હજાર ગ્રામોને ચાર ભાગોમાં જે રાજાએ વિભાજિત કર્યા છે તે પણ એ વાતને જ પુષ્ટ કરે છે એમાં

ततः खलु स प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः अभिगत-जीवाजीवः यावद् विहरति, यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति च खलु राज्यं च राष्ट्रं च बलं च वाहनं च कोशं च कोष्ठागारं च अन्तःपुरं च जनपदं च अनाद्रियमाणश्चापि विहरति । ॥सू० १६१॥

टीका—"तए णं से पएसी" इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्यं यावत् एकोनषष्ट्यधिकैकशततम १५९ सूत्रोक्तपाठानुसारेण सूर्ये तेजसा-दीप्त्या ज्वलति-प्रकाशमाने सति श्वेतांविकाप्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि-ग्रामाणां सप्त

कूटागार शाला बनकर तैयार हो गई तब उसमें उसने अनेक पुरुषों द्वारा यावत् चारों प्रकार का अशन-आहार निष्पन्न कराकर उससे अनेक श्रमणादि जनोंको प्रतिलाभित करता था याने देता था "तएणं से पएसी राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ—" इसके बाद वह प्रदेशी राजा श्रमणोपासक हो गया. जीव तत्त्व और अजीव तत्त्व के स्वरूप का भलीभांति से ज्ञाता बन गया. इत्यादि. जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च-कोसं च-कोट्ठागारं च-पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ—" अब वह प्रदेशी राजा जिस दिन से श्रमणोपासक बना. उसी दिन से अपने राज्य के प्रति. राष्ट्र के प्रति बल के प्रति. वाहन के प्रति, कोष के प्रति, कोष्ठागार के प्रति अंतःपुर के प्रति और जनपद के प्रति उपेक्षाभाव धारण करलिया. इस सूत्र का टीकार्थ—स्पष्ट है. यहां यावत्पद से—"कल्लं जाव" के इस यावत् पदसे १५९ वें सूत्र है जो पाठ इसके विषय में

જ્યારે કૂટાગારશાળા તૈયાર થઈ ગઈ ત્યારે તેમાં તેણે ઘણા પુરૂષો વડે યાવત્ ચારે જાતનો અશન આહાર બનાવડાવ્યા અને તેનાથી ઘણા શ્રમણ વગેરેને પ્રતિલાભિત કર્યા "तएणं से पएसी राया समणोवासए जाव अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ" ત્યાર પછી તે પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયો, જીવતત્ત્વ અને અજીવતત્ત્વના સ્વરૂપનો સારી રીતે જ્ઞાતા થઈ ગયો વગેરે. "जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च, बलं च वाहणं च, कोसं च, कोट्ठागारं च, पुरं अंतेउरं च, जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ" હવે તે પ્રદેશી રાજાએ જે દિવસથી શ્રમણોપાસક થયો, તેજ દિવસથી પોતાના રાજ્ય તરફ, રાષ્ટ્ર તરફ, સેના તરફ, વાહન તરફ, ભંડાર (કોષ) તરફ કોષ્ઠાગાર પ્રતિ, અંતઃપુર પ્રતિ અને જનપદ પ્રતિ ઉપેક્ષા ભાવ ધારણ કરી લીધો.

ટીકાર્થ-આ સૂત્રનો સ્પષ્ટ જ છે. અહીં યાવત્ પદથી "कल्लं जाव" ના આ યાવત પદથી ૧૫૯ મા સૂત્રમાં જે પાઠ એના વિષે ગૃહીત થયો છે તે જાણવો.

मूलम्—तए णं से पएसी राया कल्लं जाव तेयसा जलते सेयावि पामोक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भाए कीरइ, एगं भागं बल वाहणस्स दलइ जाव कूडागारसालं करेइ, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता बहूणं समण० जाव परिभाएमाणे विहरइ।

तए णं से पएसी राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ। ॥ सू० १६१ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्यं यावत् तेजसा ज्वलति श्वेताम्बिकाप्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि चतुरो भागान् करोति, एकं भागं बलवाहनाय ददाति यावत् कूटाऽऽकारशालां करोति, तत्र खलु बहुभिः पुरुषैः यावत् उपस्कार्य बहुभ्यः श्रमण० यावत् परिभाजयन् विहरति।

"तए णं पएसी राया—" इत्यादि।

सूत्रार्थ—"तएणं" इसके बाद "पएसी राया कल्लं" प्रदेशी राजाने दूसरे ही दिन "जाव, तेयसा जलते" यावत् तेजसे सूर्य प्रकाशित होजाने पर "सेयविया पामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भाए किरइ—" श्वेताम्बिका प्रमुख सातहजार ग्रामों को चार विभागों में विभाजित कर दिया 'एगे भागे बलवाहणस्स दलयइ" इनमें एक भाग बल वाहन के लिये वितरण करदिया "जाव-कूडागार साल करेइ" यावत् चतुर्थ भाग कूटागारशाला को बनवाने के निमित्त दे दिया "तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता बहूणं समण० जाव परिभाएमाणे विहरइ—" बहु

'तएणं पएसी राया' इत्यादि

સૂત્રાર્થ—તએણં ત્યાર બાદ (પએસી રાયા કલ્લં) પ્રદેશી રાજાએ બીજા દિવસે જાવ તેયસા જલંતે' યાવત તેજથી જ્યારે સૂર્ય પ્રકાશિત થઈ ગયો ત્યારે "સેયવિયા પામોક્ખાઇં સત્તગામસહસ્સાઇં ચત્તારિ ભાએ કીરઇ" શ્વેતાંબિકા પ્રમુખ સાત હજાર ગામોને ચાર ભાગોમાં વહેંચી નાખ્યા. 'એગં ભાગં બલવાહણસ્સ દલયઇ' આમાં એક ભાગ-બલ-વાહન માટે આપ્યો "જાવ કૂડાગારસાલં કરેઇ' યાવત્ ચોથો ભાગ કૂટાગારશાળા બનાવવા માટે આપ્યો. તત્થ ણં બહૂહિં પુરિસેહિં જાવ ઉવક્ખડાવેત્તા બહૂણં સમણ૰ જાવ પરિભાએમાણે વિહરઇ"

ततः खलु स प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः अभिगत-जीवाजीवः यावद् विहरति, यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति च खलु राज्यं च राष्ट्रं च बलं च वाहनं च कोशं च कोष्ठागारं च अन्तःपुरं च जनपदं च अनाद्रियमाणश्चापि विहरति । ॥सू० १६१॥

टीका—"तए णं से पएसी" इत्यादि–ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्यं यावत् एकोनषष्ट्यधिकैकशततम १५९ सूत्रोक्तपाठानुसारेण सूर्ये तेजसा-दीप्त्या ज्वलति-प्रकाशमाने सति श्वेतांबिकाप्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि-ग्रामाणां सप्त

कूटागार शाला बनकर तैयार हो गई तब उसमें उसने अनेक पुरुषों द्वारा यावत् चारों प्रकार का अशन-आहार निष्पन्न करा कर उससे अनेक श्रमणादि जनोंको प्रतिलाभित करता था याने देता था "तएणं से पएसी राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ—" इसके बाद वह प्रदेशी राजा श्रमणोपासक हो गया. जीव तत्व और अजीव तत्त्व के स्वरूप का भलीभांति से ज्ञाता बन गया. इत्यादि. जप्पमिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च-कोसं च-कोट्ठागारं च-पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ—" अब वह प्रदेशी राजा जिस दिन से श्रमणोपासक बना. उसी दिन से अपने राज्य के प्रति. राष्ट्र के प्रति बल के प्रति. वाहन के प्रति, कोष के प्रति, कोष्ठागार के प्रति अंतःपुर के प्रति और जनपद के प्रति उपेक्षामात्र धारण करलिया. इस सूत्र का टीकार्थ—स्पष्ट है. यहां यावत्पद से— "कल्लं जाव" के इस यावत् पदसे १५९ वें सूत्र है जो पाठ इसके विषय में

જ્યારે કૂટાગારશાળા તૈયાર થઈ ગઈ ત્યારે તેમાં તેણે ઘણા પુરૂષો વડે યાવત્ ચારે જાતનો અશન આહાર બનાવડાવ્યા અને તેનાથી ઘણા શ્રમણ વગેરેને પ્રતિલાભિત કર્યા "तएणं से पएसी राया समणोवासए जाव अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ" ત્યાર પછી તે પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયો. જીવતત્ત્વ અને અજીવતત્ત્વના સ્વરૂપનો સારી રીતે જ્ઞાતા થઈ ગયો વગેરે. "जप्पमिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च, बलं च वाहणं च, कोसं च, कोट्ठागारं च, पुरं अंतेउरं च, जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ" હવે તે પ્રદેશી રાજાએ જે દિવસથી શ્રમણોપાસક થયો, તેજ દિવસથી પોતાના રાજ્ય તરફ, રાષ્ટ્ર તરફ, સેના તરફ, વાહન તરફ, ભંડાર (કોષ) તરફ કોષ્ઠાગાર પ્રતિ, અંતઃપુર પ્રતિ અને જનપદ પ્રતિ ઉપેક્ષા ભાવ ધારણ કરી લીધો.

ટીકાર્થ-આ સૂત્રનો સ્પષ્ટ જ છે. અહીં યાવત્ પદથી "कल्लं जाव" ના આ યાવત્ પદથી ૧૫૯ મા સૂત્રમાં જે પાઠ એના વિષે ગૃહીત થયો છે તે જાણવો.

सहस्राणि चतुरो भागान्-चतुर्धा विभक्तानि करोति, कृत्वा तेषु चतुर्षु भागेषु एकं-प्रथम भाग बलवाहनाय ददाति, द्विषष्ट्यधिकशततम-सूत्रोक्तानुसारेण कूटा-ऽऽकारशालां करोति। तत्र खलु बहुभिः पुरुषैः यावत् उपस्कार्य बहुभ्य श्रमण० यावत् द्विषष्ट्यधिकैकशततमसूत्रोक्तानुसारेण श्रमणमाहणभिक्षुकेभ्यः पथिक प्राघुणेभ्यः परिभाजयन् विहरति।

ततः खलु स प्रदेशी राजा श्रमणोपासक—श्रावको जातः कीदृशः? इत्याह—अभिगतजीवाजीवः चतुर्दशोत्तरशततमसूत्रोक्तविशेषणविशिष्टो भूत्वा विह रति। यत्प्रभृति च-यद्दिनादारभ्य खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति—तद्दिनादारभ्य च खलु राज्य—राष्ट्र, बल, वाहन, कोश, कोष्ठागारम् पुरम् जनपद च अनाद्रियमाणः-उपेक्षमाणः चापि विहरति ॥सू० १६१॥

मूलम्—तए णं तीसे सूरियकताए देवीए इमेयारूवे अज्झ त्थिए जाव समुप्पज्जित्था—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणो वासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च जाव अंतेउरं च ममं च जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे पएसिं रायं केणवि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विस प्पओगेण वा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्ज सिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपे हित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विह

कहा गया है वह गृहीत किया गया है "जाव कूडागारसाल-" में आगत यावत् पद से १६२ सूत्र में जो पाठ कहा गया है वह यहां गृहीत किया गया है। इसी तरह से "पुरिसेहिं जाव-" में आगत यावत् पद से भी १६० वें सूत्र में कथित इस विषय का पाठ ग्रहण किया गया है ॥१६१॥

'जाव कूडागारसालं" માં આવેલ યાવત્ પદથી ૧૬૨ મા સૂત્રમાં જે પાઠ છે તેહ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે આ પ્રમાણે 'पुरिसेहिं जाव' મા આવેલ યાવત પદથી ૧૬૨માં સૂત્રમાં કથિત આ વિષ ના પાઠનું ગ્રહણ થયું છે. ॥૧૬૧॥

रइ त सेय खलु तव पुत्ता। पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगे" वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए। तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं तीए सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रण्णो रहस्सभेयं करिस्सइत्ति कट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणिय य विवराणिय अंतराणि य पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ ॥ सू० १६२॥

छाया—ततः खलु तस्याः सूर्यकान्ताया देव्याःअयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत—यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातस्तत्प्रभृति च खलु राज्यं च राष्ट्रं च यावत् अन्तःपुरं च मां च जनपदं च अनाद्रियमाणो विहरति, तच्छ्रेयः खलु मे प्रदेशिनं राजानं केनापि शस्त्रप्रयोगेण वा अग्निप्रयो-

---

"तएणं तीसे सूरियकंताए देवीए" इत्यादि ॥

मूलार्थ—'तए णं—' इसके बाद 'तीसे सूरियकंताए देवीए—' उस सूर्यकान्ता देवी को 'इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—' यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् विचार उत्पन्न हुवा—'जप्पभिइ च ण पएसी राया समणोवासए जाए—' जिस दिन से प्रदेशी राजा श्रमणोपासक हुवे हैं 'तप्पभियं च ण रज्ज च—' उसी दिन से उन्होंने राज्य के प्रति, राष्ट्र के प्रति. यावत् अन्तःपुर के प्रति, तथा—मेरे प्रति, और-जनपद देश के प्रति उपेक्षा

"तएण तीसे सूरियकंताए देवीए" इत्यादि।

મૂલાર્થ—"तए ण" ત્યાર પછી "तीसे सूरियकंताए देवीए" તે સૂર્યકાન્તા દેવીને "इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત વિચાર ઉત્પન્ન થયો "जपभियं च णं पएसी राया समणोवासए जाए" જે દિવસ થી પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થયા છે, "तप्पभियं च णं रज्जं च" તે જ દિવસથી તેમણે રાજ્ય પ્રતિ, રાષ્ટ્રના પ્રતિ, યાવત અંતપુર પ્રતિ તેમજ મારા પ્રતિ અને જનપદ—દેશના પ્રતિ ઉપેક્ષા ધારણ કરી લીધી છે "तं सेयं खलु मे पएसिं रायं

सहस्राणि चतुरो भागान्—चतुर्धा विभक्त नि करोति, कृत्वा तेषु चतुर्षु भागेषु एकं-प्रथमं भागं बलवाहनाय ददाति, द्विपष्टयधिकशततम-सूत्रोक्तानुसारेण कूटा-ऽऽकारशालां करोति । तत्र खलु बहुभिः पुरुषैः यावत् उपस्कार्य बहुभ्य श्रमण० यावत् द्विषष्टयधिकशततमसूत्रोक्तानुसारेण श्रमणमाहनभिक्षुकेभ्यः पथिक प्राघुर्णेभ्यः परिभाजयन् विहरति ।

ततः खलु स प्रदेशी राजा श्रमणोपासकः—श्रावको जातः कीदृश ? इत्याह—अभिगतजीवाजीवः चतुर्दशसूत्रोपवर्णितसमस्तोक्तविशेषणविशिष्टो भूत्वा विहरति । यत्प्रभृति च-यद्दिनादारभ्य खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति—तद्दिनादारभ्य च खलु राज्य—राष्ट्रं, बलं, वाहनं, कोशं, कोष्ठागारम् पुरम् जनपदं च अनाद्रियमाणः—उपशमाप्तः चापि विहरति ॥सू० १६१॥

मूलम्——तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झ त्थिए जाव समुप्पज्जित्था—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणो वासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च जाव अंतेउरं च ममं च जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे पएसिं रायं केणवि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विस प्पओगेण वा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्ज सिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपे हित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विह

कहा गया है वह गृहीत किया गया है "जाव कूडागारसाल—" में आगत यावत् पद से १६२ सूत्र में जो पाठ कहा गया है वह यहां गृहीत किया गया है । इसी तरह से "पुरिसेहिं जाव—" में आगत यावत् पद से भी १६२ वें सूत्र में कथित इस विषय का पाठ ग्रहण किया गया है ॥१६१॥

'जाव कूडागारसालं" માં આવેલ યાવત્ પદથી ૧૬૨ માં સૂત્રમાં જે પાઠ છે તેનું ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે આ પ્રમાણે 'पुरिसेहिं जाव" માં આવેલ યાવત પદથી ૧૬૨મા સૂત્રમાં કથિત આ વિષે ના પાઠનું ગ્રહણ થયું છે. ॥૧૬૧॥

तच्छ्रेयः खलु तव पुत्र ! प्रदेशिनं राजानं केनापि शस्त्रप्रयोगेण वा यावत् उप-द्रुत्य स्वयमेव राज्यश्रियं कारयतः पालयतो विहर्तुम्। ततः खलु सूर्यकान्तः कुमारः सूर्यकान्तया देव्या एवमुक्तः सन् सूर्यकान्ताया देव्या एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति तूष्णीकः संतिष्ठते। ततः खलु तस्याः सूर्यकान्तायाः देव्या अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत—मा खलु सूर्यकान्तः कुमारः

सम्बन्धी कामभोग की ओर लक्ष्य देना बन्द करदिया है, अर्थात्—इन सब बातों को अब वे आदर की दृष्टि से नही देखते हैं "तं सेयं खलु वि पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए—" अतः-हे पुत्र-३ अब यही योग्य है कि तुम प्रदेशी राजा को किसी भी शस्त्र के प्रयोग से अथवा अग्निप्रयोग से—यावत् विषय के प्रयोग से मारकर स्वयं राज्यश्री का भोग करो उसका पालन करो 'तएणं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ—" इस प्रकार सूर्य कान्ता देवी द्वारा कहे गये सूर्यकान्तकुमारने उसकी इस बात को आदर की दृष्टि से नहीं देखा. औरन्न तो उसकी उसने अनुमोदना ही की, किन्तु इस बात को सुनकर वह केवल चुपचाप ही रहा—"तएणं तीए सूरियकंताए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—" इसके बाद उस सूर्यकान्ता देवी को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् संकल्प-विचार उत्पन्न हुवा-"मा णं

એટલે કે તેઓ હવે આ બધી વસ્તુઓને આદરની દૃષ્ટિએ જોતા નથી. "तं सेयं खलु वि पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए" એથી હે પુત્ર ! હવે એજ ઉચિત જણાય છે કે તમે પ્રદેશી રાજાને કોઇ પણ શસ્ત્રના પ્રયોગથી કે યાવત્ વિષ પ્રયોગથી મારી નાખો અને પોતે રાજ્યલક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરો, તેનું રક્ષણ કરો. "तएणं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवंवुत्ते समाणे सूरिय-कंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ" આ પ્રમાણે સૂર્યકાન્તા દેવી વડે કહેવાયેલ સૂર્યકાંત કુમારે તેની વાત પ્રત્યે આદર બતાવ્યો નહિ અને તેની વાતની તેણે અનુમોદના પણ કરી નહિ પણ તે તેની સામે મૂંગો થઇને ઉભો જ રહ્યો "तएणं तीए सूरियकंताए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" ત્યાર પછી તે સૂર્યકાંતા દેવીને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે "माणं सूरियकंते कुमारे-

'गेण वा मन्त्रप्रयोगेण वा विषप्रयोगेण वा उपद्रुत्य सूर्यकान्त कुमार राज्ये स्थापयित्वा स्वयमेव राज्यश्रियं कारयन्त्या पालयन्त्या विहर्तुम्, इतिकृत्वा एव सप्रेक्षते सम्प्रेक्ष्य सूर्यकान्त कुमारं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति च खलु राज्यं च यावत् अन्तःपुर च खलु जनपद च मानुष्यकांश्च कामभोगान् अनाद्रियमाणो विहरति

धारण कर रक्खा है "तं सेयं खलु मं पएसिं रायं केणवि सत्थप्पओगेण वा— अग्गिप्पओगेण वा—मंतप्पओगेणवा विसप्पओगेण वा—उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता—" अतः—अब मुझे यही उचित है कि मैं प्रदेशी राजा को किसी अस्त्र के प्रयोग से अथवा—अग्नि के प्रयोग से मारकर सूर्यकान्त पुत्र को राज्य में स्थापित करके "सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ—" अपने आप स्वयं ही राज्य लक्ष्मी का भोग करती हुई, उसका पालन करती हुई, आनन्द से रहूं—? इस प्रकार का उसने विचार किया—"संपेहित्ता-सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ—" ऐसा विचार करके फिर उसने अपने सूर्यकान्त पुत्रको बुलाया "सद्दावित्ता एवं वयासी—" बुलाकर उससे ऐसा कहा—"जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतउरं च जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ—जिस दिन से प्रदेशी राजा श्रमणोपासक बने हैं उस दिन से उन्होंने राज्य की ओर—यावत् अन्तःपुर की ओर और जनपद की ओर, एवं—मनुष्य भव

केण वि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा—मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता" એથી મારે માટે હવે એજ ઉચિત છે કે હું પ્રદેશી રાજાને કોઈ શસ્ત્રના પ્રયોગથી કે અગ્નિના પ્રયોગથી કે મંત્રના પ્રયોગથી કે વિષના પ્રયોગથી મારી નાખીને સૂર્યકાંત પુત્રને રાજ્યાસને બેસાડીને 'सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ" પોતેજ રાજ્ય લક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરીને તેનું રક્ષણ કરતાં આનંદપૂર્વક સમય પસાર કરું આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો. "संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ" આ જાતનો વિચાર કરીને પછી તેણે પોતાના સૂર્યકાંત પુત્રને બોલાવ્યો "सद्दावित्ता एवं वयासी" બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું "जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतउरं च जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ" જે દિવસથી પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થયા છે તે દિવસથી તેમણે રાજ્ય તરફ, યાવત્ અંતઃપુર તરફ જનપદ તરફ મનુષ્યભવ સંબંધી કામભોગો તરફ ધ્યાન આપવું બંધ કર્યું છે

तच्छ्रेयः खलु तव पुत्र ! प्रदेशिनं राजानं केनापि शस्त्रप्रयोगेण वा यावत् उपद्रुत्य स्वयमेव राज्यश्रियं कारयतः पालयतो विहर्तुम्। ततः खलु सूर्यकान्तः कुमारः सूर्यकान्तया देव्या एवमुक्तः सन् सूर्यकान्ताया देव्या एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति तूष्णीकः संतिष्ठते। ततः खलु तस्याः सूर्यकान्तायाः देव्या अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत—मा खलु सूर्यकान्तः कुमारः

सम्बन्धी कामभोग की ओर लक्ष्य देना बन्द करदिया है, अर्थात्—इन सब बातों को अब वे आदर की दृष्टि से नहीं देखते हैं "तं सेयं खलु वि पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए—" अतः-हे पुत्र-! अब यही योग्य है कि तुम प्रदेशी राजा को किसी भी शस्त्र के प्रयोग से अथवा अग्निप्रयोग से—यावत् विषय के प्रयोग से मारकर स्वयं राज्यश्री का भोग करो उसका पालन करो 'तएणं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ—" इस प्रकार सूर्यकान्ता देवी द्वारा कहे गये सूर्यकान्तकुमारने उसकी इस बात को आदर की दृष्टि से नहीं देखा. और न तो उसकी उसने अनुमोदना ही की, किन्तु इस बात को सुनकर वह केवल चुपचाप ही रहा—"तएणं तीए सूरियकंताए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—" इसके बाद उस सूर्यकान्ता देवी को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् संकल्प-विचार उत्पन्न हुवा-"मा णं

એટલે કે તેઓ હવે આ બધી વસ્તુઓને આદરની દૃષ્ટિએ જોતા નથી. "तं सेयं खलु वि पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए" એથી હે પુત્ર ! હવે એજ ઉચિત જણાય છે કે તમે પ્રદેશી રાજાને કોઈ પણ શસ્ત્રના પ્રયોગથી કે યાવત્ વિષ પ્રયોગથી મારી નાખો અને પોતે રાજ્યલક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરો, તેનું રક્ષણ કરો. "तएणं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवंवुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ" આ પ્રમાણે સૂર્યકાન્તા દેવી વડે કહેવાયેલ સૂર્યકાંત કુમારે તેની વાત પ્રત્યે આદર બતાવ્યો નહિ અને તેની વાતની તેણે અનુમોદના પણ કરી નહિ પણ તે તેની સામે મૂંગો થઈને ઉભો જ રહ્યો "तएणं तीए सूरियकंताए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" ત્યાર પછી તે સૂર્યકાંતા દેવીને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે "माणं सूरियकंते कुमारे-

प्रदेशिनो राज्ञ इम रहस्यभेद करिष्यति, इति कृत्वा प्रदेशिनो राज्ञः छिद्राणि च मर्माणि च रहस्यानि च विवराणि च अन्तराणि च प्रतिजाग्रती प्रतिजाग्रती विहरति ॥ सू० १६२ ॥

टीका—"तए णं सीसे" इत्यादि—तत खलु तस्याः सूर्यकान्ताया देव्या मदशिराजस्य पट्टराज्या अयमेतद्रूप —वक्ष्यमाणप्रकारक आध्यात्मिक —आत्मगतो विचार यावत्—यावत्पदेन "चिन्तितः कल्पितः प्रार्थितः मनोगतः सङ्कल्पः" इति सग्राह्यम् अर्थस्तु पूर्वसूत्रे गत, समुदपद्यत—सञ्जातः, तदेव दर्शयति—यत्प्रभृते—यद्दिनादारभ्य च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासक —श्रावको जात, तत्प्रभृति यद्दिनादारभ्य च खलु राज्य—स्वाम्यमात्य—सुहृत् कोष—राष्ट्र—दुर्ग

सूरियकंत कुमारे पएसि स रण्णो रहस्समेयं करिस्सइ त्ति कट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणिय-मम्माणिय-रहस्साणिय विवराणिय—अंतराणिय पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ—" सूर्यकान्तकुमार प्रदेशी राजा के पास, अर्थात्—प्रदेशी राजा से मेरी इस मन्त्रणा को प्रकाशित न करदे ? अत —वह इस विचार से प्रदेशी राजा के छिद्रों को, दोषों को, मर्मो को, कुकृत्यरूप लक्षणों को-रहस्यों को एकान्तस्थान में सेवित निषिद्ध आचरणों को, विवरों को, निर्जनस्थानों को, और—अवकाश लक्षणरूप अन्तरों को बड़ी सावधानी के साथ बार-२ देखने लगी—अर्थात्— न सब पर वह कड़ी दृष्टि रखने लगी ॥

टीकार्थ—स्पष्ट है "अज्झत्थिए जाव" में आगत इस यावत् पदसे—चिन्तित कल्पित प्रार्थित मनोगत संकल्प, इन पदों का सग्रह हुआ है। इन विचार के विशेषणों का अर्थ पहले प्रकट किया जा चुका है। "रज्जं च जाव अंतेउरं च—" में आगत यावत् पद से "बल वाहन कोष कोष्ठागार

पएसि स रण्णो रहस्समेयं करिस्सइ त्ति कट्टु पएसि स रण्णो छिद्दाणिय मम्माणिय रहस्साणिय, विवराणिय अंतराणिय पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ" सूर्यकांत कुमार प्रदेशी राजानी पासे—એટલે કે પ્રદેશી રાજાને મારી આ વાત કહી દે નહિ એથી તે પ્રદેશી રાજાના છિદ્રોને દોષોને, મર્મોને, કુકૃત્યરૂપ લક્ષણોને રહસ્યોને એકાન્ત સ્થાનમાં સેવિત નિષિદ્ધ આચરણોને વિવરોને નિર્જન સ્થાનોને અને અવકાશ લક્ષણરૂપ અન્તરોને ખૂબજ સાવધાનીપૂર્વક વાર વાર જોવા લાગી. એટલે કે બધી હિલચાલ પર દૃષ્ટિ રાખવા માંડી.

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે "अज्झत्थिए जाव"માં આવેલા યાવત્ પદથી "चिन्तितः, कल्पितः प्रार्थितः मनोगत सङ्कल्पः" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોનો અર્થ પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. "रज्जं च जाव अंतेउरं च" માં આવેલ યાવત પદથી

बलरूपेण समाङ्गम् राष्ट्रं-देशं यावत्-यावच्छब्देन "बलं-सैन्यं, वाहनं-रथादिकम्, कोषं-रत्नादिभाण्डागारम्, 'कोष्ठागारं-धान्यस्थापनगृहम्, पुरं-नगरम्" इति संग्राह्यम्, अन्तःपुरम्-अन्तःपुरस्थपरिवारम् च पुनः मां च-तथा जनपदं-विजितदेशं च अनाद्रियमाणः-तच्चिन्तामकुर्वाणा विहरति-तिष्ठति, तत् तर्हि मे-मम श्रेय-समीचीन खलु पदेशिनं राजनं केनापि शस्त्रप्रयोगेण-खड्गादिप्रयोगेण, वा-अथवा अग्निप्रयोगेण-अग्निना दाहनरूपेण,-मन्त्रप्रयोगेण-मन्त्रजापरूपेण, वा-अथवा, विषप्रयोगेण-विषप्रदानरूपेण, उपद्रुत्य-मारयित्वा सूर्यकान्तं सूर्यकान्तनामकं, कुमारं-मम पुत्रं राज्ये स्थापयित्वा संनिवेश्य स्वयमेव-अहं स्वयं राज्यश्रियं-राज्यलक्ष्मीं कारयन्त्याः-बलवाहनादिभिः संवर्धयन्त्याः. पालयन्त्याः-रक्षयन्त्याः विहर्तुं-स्थातुम । इतिकृत्वा-इति वितर्क्य एवं-पूर्वोक्तानुसारेण सप्रेक्षते-निर्धारयति, निर्धार्य सूर्यकान्तं कुमार शब्दयति आह्वयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यप्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जात-

---

पुर-" इन पदों का संग्रह हुवा है. । अन्तःपुर शब्द से अन्तःपुरस्थ परिवार का ग्रहण किया गया है । तथा-जनपद से विजित देश लिया गया है, इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि-जब सूर्यकान्ता देवीने यह जान लिया कि प्रदेशी राजा श्रमणोपासक बन चुका है, और-अपने बल-वाहन आदि की संभाल करने आदि की ओर उसका जैसा ध्यान होना चाहिये अब वैसा नहीं रहा है, और न वह मेरी भी अब कुछ चाहना करता है, तब उसके मनमें इस को दूर करने के लिये ऐसा विचार उठाकि-जैसे भी बने, चाहे-अग्निप्रयोग से हो, या शस्त्रादि से हो, अवश्य ही इस प्रदेशी राजा का विनाश कर देना चाहिये, तथा-उसके स्थान पर सूर्यकान्त पुत्र को स्थापित कर देना चाहिये. इसी में अब भलाई है। ऐसा विचार कर उसने पुत्र को बुलाया

"बल वाहन कोष कोष्ठागारं पुरं" આ પદોનો સંગ્રહ થયો. અન્તઃપુર શબ્દથી અન્તઃપુરસ્થ પરિવારનું ગ્રહણ થયું છે તેમજ જનપદથી વિજિત (જીતેલા) દેશનો અર્થ લેવામાં આવ્યો છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે સૂર્યકાંતા દેવીએ આ વાત જાણી લીધી કે પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયો છે અને પોતાના બલ-વાહન વગેરેની સંભાળ રાખતો નથી અને મારી તરફ પણ તેનું ધ્યાન નથી ત્યારે તેના મનમાં તે કાંટાને દૂર કરવાનો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે ગમે તે રીતે અગ્નિ-પ્રયોગથી, કે શસ્ત્રાદિ પ્રયોગથી આ રાજાને મારી નાખવો જોઈએ તથા તેની ખાલી પડેલી જગ્યાપર સૂર્યકાંત પુત્રને ગાદીએ બેસાડવો જોઈએ. આમાં જ હવે રાજ્યની ભલાઈ છે, આમ વિચાર કરીને તેણે પુત્રને બોલાવ્યો. અને પોતાના આ જાતના

स्तमृति च खलु राज्यं च यावत् अन्तःपुरं च जनपदं च तथा मानुष्यकान्—मनुष्यसम्बन्धिन कामभोगान्-अनाद्रियमाणः-अनादरदृष्टया पश्यन् विहरति, तच्छ्रेयः खलु तव हे पुत्र ! प्रदेशिन राजान केनापि शस्त्रप्रयोगेण वा यावत् अग्न्यादिप्रयोगेण वा उपद्रुत्य मारयित्वा स्वयमेव राज्यश्रियं कारयतः पालयतो विहर्तुम् । ततः खलु स सूर्यकान्तः कुमारः सूर्यकान्ताया देव्याः स्वमातुः एतमर्थं नो आद्रियते—कामपि स्वीकृतिचेष्टां न दर्शयति, नो परिजानाति—नानुमोदयति । तर्हि किं करोति ? इत्याह—तूष्णीकः-किञ्चिदप्यवदन्नेव सतिष्ठते । ततः खलु तस्याः सूर्यकान्ताया देव्या अयमेतद्रूपः वक्ष्यमाणप्रकारकः आध्यात्मिकः—आ भगवती विचारः यावत् चिन्तितः कल्पितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत-समुत्पन्नः, तदेवाऽऽह—सूर्यकान्तः खलु कुमारः प्रदेशिनो राज्ञः समीपे इमं मत्कथितं रहस्यमेव—गुप्तमन्त्रणाप्रकाशनं मा करिष्यति—मा कुर्यात्, इति कृत्वा—इति विचार्य प्रदेशिनो राज्ञः छिद्राणि—दूषणानि, मर्माणि—कुत्सितलक्षणानि, एकान्तस्थानसेवितनिषिद्धाचरणानि, विवराणि—निर्जनस्थानरूपाणि, अन्तराणि-अ काललक्षणानि प्रतिजाग्रती प्रतिजाग्रती—अन्वेषयन्ती २ विहरति-तिष्ठति ।।सू० १६२।।

मूलम्—तए णं सा सूरियकंता देवी अन्नया कयाइ पएसिस्स रण्णो अंतरं जाणइ असण-पाण-खाइम-साइम-सव्ववत्थगंधमल्लालंकारेसु विसप्पओगं पउंजइ । पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स जाव सुहासणवरगयस्स से विससंजुत्ते असण-पाण-खाइम-साइम-सव्ववत्थगंधमल्लालंकारे निसिरेइ । तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं-पाणं-खाइम-साइमं आहारेमाणस्स समाणस्स

और—अपने इस प्रकार के विचारों को उसे सुनाया, पर उस विचार को पुत्र ने अच्छा नहीं समझा तब—सूर्यकान्ता के हृदय को उस विचार ने आलोडित करदिया की—कहीं ऐसा न हो कि यह इस विचार को सूर्यकान्त, प्रदेशी राजा से प्रकट कर दे, अतः—यह प्रदेशी राजा के छिद्रादिकों को देखने की ताकमें रहनेलगी ।।१६२

विचारो तेनी सामे स्पष्ट कर्या. पण पुत्रे आ वातने सारी मानी नहि त्यारे सूर्यकान्ताना मनमां आ जातनो विचार थयो के मारी आ वात को प्रदेशी राजा सामे प्रकट करी देशे तो शु थशे ? एथी माटे ते हवे प्रदेशी राजाना छिद्रो वगेरे जोवा लागी. ।।सू १६२।।

सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा कक्कसा कडुया फरुसा निट्ठुरा चंडा तिव्वा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा पित्तज्जरपरिगय-सरीरे दाहवक्कंते यावि विहरइ ॥ सू० १६३ ॥

छाया—ततः खलु सा सूर्यकान्ता देवी अन्यदा कदाचित् प्रदेशिनो राज्ञः अन्तरं जानाति अशन-पान-खादिम-स्वादिम- सर्ववस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेषु विष प्रयोगं प्रयुनक्ति, प्रदेशिने राज्ञे स्नाताय यावत् सुखासनवरगताय तान् विषसंयुक्तान् अशन-पान-खादिम-स्वादिम-सर्ववस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारान् निसृजति। ततः खलु तस्य

"तएणं सूरियकंता देवी" इत्यादि—

मूलार्थ—'तएणं' इसके बाद 'सूरियकंता देवी' सूर्यकान्तादेवीने 'अन्नया-कयाइ' किसी एकदिन 'पएसिस्स रन्नो' प्रदेशी राजाके 'अतरं जाणइ' षष्ठ-पारणा के अवसररूप अन्तर को जान लिया और असण- पाणखाइम- साइम सव्व वत्थगंधमल्लालंकारेसु विसप्पओगं पउंजइ—" अशन- पान खाद्यरूप आहारों में, तथा—वस्त्र—गन्ध—माला अलङ्कारों मे विष का संप्रयोग करदिया. पएसिस्स रण्णो ण्हाए जाव सुहासणवरगयस्स ते विससंजुत्ते असण पाण खाइमसाइमसव्व-वत्थगंधमल्लालंकारे निसिरेइ—" प्रदेशी राजा जब स्नान करके यावत् सुखदरूप श्रेष्ठ आसनपर आसीन था, तब उसके लिये उसने—उन विषसंप्रयुक्त अशन पान-खाद्य-स्वाद्यरूप आहार को परोसा. तथ-पहिरने के लिये वस्त्र-गन्ध-माला. एवं-अलङ्कारों को दिया. 'तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो ते विससंजुत्तं असणं-

---

"तए णं सूरियकंता देवी" इत्यादि।

मूलार्थ—"तएणं" त्यार पछी "सूरियकंता देवी" सूर्यकांता देवीએ-"अन्नया कयाइ" કોઇ એક દિવસે "पएसिस्स रन्नो" પ્રદેશી રાજાને "अंतरं जाणइ" ષષ્ઠ પારણાનો અવસર રૂપ અંતર (તક) જાણી લીધો અને "असणपाणखाइम-साइमसव्ववत्थगंधमल्लालंकारेसु विसप्पओग पउंजइ" અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ આહારોમા તેમજ વસ્ત્ર ગન્ધ માલા અલંકારોમા વિષ સંપ્રયોગ કરી દીધો. "पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स जाव सुहासणवरगयस्स ते विससंजुत्ते असणपाण-खाइमसाइमसव्ववत्थगंधमल्लालंकारे निसिरेइ" પ્રદેશી રાજા જ્યારે સ્નાન કરીને યાવત્ સુખદરૂપ શ્રેષ્ઠ આસન પર આસીન હતા ત્યારે તેમના માટે તેણે તે વિષસપ્રયુક્ત અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યરૂપ આહાર પીરસ્યુ, તેમજ પહેરવા માટે વસ્ત્ર-ગન્ધ-માળા અને અલંકારો આપ્યા "तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो ते विस-

प्रदेशिनो राज्ञः तद्विषमयुक्तम् अशनं पानं खादिमं स्वादिमम् आहरत सत शरीरे वेदना प्रादुर्भूता-उज्ज्वला विपुला प्रगाढा कर्कशा कटुका परुषा निष्ठुरा चण्डा तीव्रा दुःखा दुर्गा दुरध्यासा पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तश्चापि विहरति ॥ सू० १६३ ॥

पाणं-खाइम-साइम आहारेमाणस्स समाणस्स सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउल -पगाढा-कक्कस-कडुया-फरुस -निट्ठुर-चंडा तिव्वा दुक्खा दुग्ग-दुहियासा-पित्तज्जरपरिगयसरीरे-दाहवक्कंते यावि विहरइ—" इसके बाद उस प्रदेशी राजा के शरीर में उस विषसंप्रयुक्त आहार के करने से वेदना उत्पन्न हो गई । यह वेदना उज्ज्वलथी दुःखद होने से सुखलेश से रहितथी-विपुलथी सकल शरीर में व्याप्त होने से विस्तीर्ण थी, अतएव गाढ थी, कर्कश-कठोर थी । जैसे-कर्कशपाषाण मनुष्य शरीर की सन्धियों को तोड़ देता है, उसी प्रकार इसे कर्कश कहा गया है अप्रीति जनक होने से यह कटुक थी मन में अति रूक्षता की जनक होने से परुष थी चण्ड-रौद्र थी तीव्र-तीक्ष्ण थी दुःखद स्वरूप होने से दुःखरूप थी चिकित्सा से भी दुर्गम होने के कारण दुर्गथी दुस्सह होने से दुरध्यास थी । इस प्रकार की वेदनाउत्पन्न होने के कारण वह राजा पित्तज्वर से आक्रान्त शरीरवाला हो गया और-समस्त शरीर भर में उसको दाह पड़ने लगी । टीकार्थ-स्पष्ट है-॥१६३॥

समुत्त अशण पाण खाइम साइम आहारेमाणस्स समाणस्स सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा कक्कसा- कडुया-फरुसा-निट्ठुरा-चंडा तिव्वा-दुक्खा-दुग्गा-दुहियासा-पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंते यावि विहरइ' त्यार पछी ते प्रदेशी राजाना शरीरमां ते विष संप्रयुक्त आहार करवाथी वेदना उत्पन्न थई गई. आ वेदना उज्ज्वल हती, दुःख होवाथी सुख रहित हती, विपुल हती, समस्त शरीरमां व्याप्त होवाथी विस्तीर्ण हती, प्रगाढ हती; कर्कश-कठोर हती जेम कठोर पथ्थरनी रज शरीरना संधि भागोने तोडी नाखे छे तेम ते वेदना पण आत्म प्रदेशोने तोडती हती. एथी ज एने कर्कश कहेवामां आवी छे अप्रीतिजनक होवाथी ए कटुक हती, मनमां अति रूक्षताजनक होवाथी परुष हती, र निष्ठुर हती, असह्य हती, चंड रौद्र तीव्र तीक्ष्ण हती दुःखद स्वरूप होवाथी दुःखरूप हती. चिकित्साथी पण दुर्गम्य हती एथी ते दुर्ग हती, दुस्सह होवाथी दुरध्यास हती आ जातनी वेदना उत्पन्न थई होवाथी ते राजा पित्तज्वराक्रान्त शरीरवाळो थई गयो. अने तेना आखा शरीरमां बळतरा थवा माडी

टीकार्थ—स्पष्ट ज छे ॥ सू० १६३॥

टीका—"तए णं सा" इत्यादि—ततः खलु सा सूर्यकान्ता देवी अन्यदा कदाचित्—कस्मिंश्चित् काले प्रदेशिनो राज्ञः अंतरम्—अवकाश—पारणावसरमित्यर्थः, जानाति, अशन-पान-खादिम-सर्ववस्त्र-गन्ध-माल्यालङ्कारेषु—अशनादिसर्ववस्तुषु विषप्रयोगं—विषसंयोगं, प्रयुनक्ति—करोति एवं कृत्वा स्नाताय—कृतस्नानाय, यावत्—सुखासनवरगताय—सुखदरूपश्रेष्ठासनोपविष्टाय प्रदेशिने राज्ञे तान् विषसंयुक्तान् अशनपान-खादिम स्वादिम-सर्ववस्त्र-गन्ध-माल्या-ऽलङ्कारान् निसृजति-ददाति। ततः तदनन्तरं खलु तस्य प्रदेशिनो राज्ञः तं विषसंयुक्तम् अशनं-पानं-खादिमं स्वादिममिति चतुर्विधाऽऽहारम् आहरतः गृह्णतः सतः शरीरे वेदना प्रादुर्भूता—समुत्पन्ना, सा कीदृशी ? इत्याह—उज्ज्वला—दुःखदतया उग्रा सुखलेशरहितेत्यर्थः, विपुला-सकलशरीरव्यापकत्वाद् विस्तीर्णा, अतएव प्रगाढा-अतिशयिता, कर्कशा कठोरा, यथा कर्कशपाषाणसंघर्षः शरीरसन्धींस्त्रोटयति तथैवात्मप्रदेशांस्त्रोटयन्ती या वेदना जायते सा कर्कशेत्युच्यते, कटुका—अप्रीतिजनिका, परुषा मनसोऽतीव रूक्षत्वोत्पादिका निष्ठुरा—अशक्यप्रतीकारत्वेन दुर्भेद्या, अत एव चण्डा-रौद्रा, तीव्रा—तीक्ष्णा दुःखा-दुःखदस्वरूपा, दुर्गा—चिकित्सादुर्गम्या, दुरध्यासा-दुःसहा, एवम्भूता वेदना समुद्भूता, तेन कारणेन स राजा पित्तज्वरपरिगतशरीरः—पित्तज्वरेण परिगतम्—आक्रान्त शरीर यस्य स तथा, अत एव दाहव्युत्क्रान्तः—दाहव्याप्तः सन् चापि विहरति—तिष्ठति। ॥ सू० १६३ ॥

मूलम्—तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अयाणं संपलद्धं जाणित्ता सूरियकंताए देवीए मणसावि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, पोसहसालं पमज्जेइ, उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ दब्भसंथारगं संथरेइ, दब्भसंथारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं-त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ, पुव्विंपि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए जाव थूल-

प्रदेशिनो राज्ञः तद्विषसंयुक्तम् अशनं पानं खादिमं स्वादिमम् आहरत ततः शरीरे वेदना प्रादुर्भूता-उज्ज्वला विपुला प्रगाढा कर्कशा कटुका परुषा निष्ठुरा चण्डा तीव्रा दुःखा दुर्गा दुरध्यासा पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तश्चापि व्यहरत् ॥ सू० १६३ ॥

पाणं-खाइम-साइम आहारेमाणस्स समाणस्स सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला-पगाढा-कक्कसा-कडुया-फरुसा-निट्ठुरा-चंडा तिव्वा दुक्खा दुग्गा-दुहियासा-पित्तज्जरपरिगयसरीरे-दाहवक्कंते यावि विहरइ—" इसके बाद उस प्रदेशी राजा के शरीर में उस विषसंयुक्त आहार के करने से वेदना उत्पन्न हो गई। यह वेदना उज्ज्वलथी दुःखद होने से सुख लेश से रहितथी- पुरुषी सकल शरीर में व्याप्त होने से विस्तीर्ण थी, अतएव गाढ थी, कर्कश-कठोर थी। जैसे कर्कश पाषाण का स्पर्श शरीर की सन्धियों को तोड देता है, उसी प्रकार इसे कर्कश कहा गया है अप्रीति जनक होने से यह कटुक थी मन में अति रूक्षता की जनक होने से दुर्भेद्य थी चण्ड-रौद्र थी तीव्र-तीक्ष्ण थी दुःखद स्वरूप होने से दुःख थी चिकित्सा से भी दुर्गम होने के कारण दुर्गथी दुस्सह होने से दुरध्यास थी। इस प्रकार की वेदना उत्पन्न होने के कारण वह राजा पित्तज्वर से आक्रान्त शरीर वाला हो गया और समस्त शरीर भर में उसको दाह पड़ने लगी। टीकार्थ-स्पष्ट है-॥१६३॥

संजुत्त असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेमाणस्स समाणस्स सरिरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा कक्कसा— कडुया—फरुसा—निट्ठुरा—चंडा तिव्वा—दुक्खा दुग्गा—दुहियासा—पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंते यावि विहरइ' त्यार पछी ते प्रदेशी राजना शरीरमां ते विष संप्रयुक्त आहार करवाथी वेदना उत्पन्न थई गई. आ वेदना उज्ज्वल हती, दुःखद होवाथी सुख रहित हती. विपुल हती, समस्त शरीरमां व्याप्त होवाथी विस्तीर्ण हती प्रगाढ हती कर्कश-कठोर हती जेम कठोर पथ्थरनो स्पर्श शरीरना संधि भागोने तोडी नाखे छे, तेम ते वेदना पण आत्म प्रदेशोने तोडती हती एथी ज एने कर्कश कहेवामां आवी छे अप्रीतिजनक होवाथी ए कटुक हती, मनमां अति रूक्षताजनक होवाथी परुष हती, २ निष्ठुर हती, अशक्य हती, चंड रौद्र तीव्र तीक्ष्ण हती दुःखद स्वरूप होवाथी दुःखरूप हती चिकित्साथी पण दुर्गम्य हती एथी ते दुर्ग हती दुस्सह होवाथी दुरध्यास हती आ जातनी वेदना उत्पन्न थई होवाथी ते राजा पित्तज्वराक्रान्त शरीरवाळो थई गयो अने तेना आखा शरीरमां बळतरा थवा मांडी

टीकार्थ—स्पष्ट छे ॥ सू १६३ ॥

शिर आवर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावत् संप्राप्तेभ्यः नमोऽस्तु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माऽऽचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्रगतम् इहगतः, पश्यतु मां भगवान् तत्रगतः इह गतम्' इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, पूर्वमपि खलु मया केशिनः कुमारश्रमणस्यान्तिके स्थूलप्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् स्थूलपरिग्रहः प्रत्याख्यातः,

की-"दब्भसंथारगं संथरेइ-" और फिर दर्भ का संथारा बिछाया "दब्भसंथारगं दुरूहइ-" उसे बिछा कर वह उस पर बैठ गया. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने-" वहां आरूढ होकर वह पूर्व दिशा की ओर मुह करके पर्यङ्कासन से बैठ गया. "करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु एवं वयासी-' और दोनों हाथों की अंजली बनाकर एवं-उसे मस्तक पर घुमाकर इस प्रकार से कहने लगा. "नमो थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमो थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स-" अर्हन्त भगवन्तों के लिये नमस्कार हो, मेरे धर्मोपदेशक धर्माचार्य केशीकुमार श्रमण के लिये नमस्कार हो. "वंदामि णं भगवंतं तत्थ य इहगए-" यहां रहा हुवा मैं वहां पर रहे हुवे भगवान् को वन्दना करता हूं, "-पासउ मे भगवं तत्थगए इहगय त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ-" वहां पर रहे हुवे वे भगवान् यहां रहे हुवे मुझे देखे-इस प्रकार कह कर उस प्रदेशी राजाने उनकी वन्दना की नमस्कार किया. 'पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूल-पाणाइवाए पच्चक्खाए. जाव थूलपरिग्गहे पच्चक्खाए '' पहलेभी मैंने केशी

પ્રતિલેખના કરી "दब्भसंथारगं संथरेइ" અને પછી દર્ભનું આસન ત્યાં પાથર્યું. "दब्भसंथारगं दुरूहइ' તેને પાથરીને તે તેના પર ઉભો થઈ ગયો. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने" ત્યાં આરૂઢ થઈને તે પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી બેસી ગયો. 'करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी" અને બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક પર ફેરવી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. "नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स" અર્હંત ભગવંતને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્મોપદેશક ધર્માચાર્ય કેશીકુમાર શ્રમણને મારા નમસ્કાર છે "वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए" અહીં રહીને હું ત્યાં વર્તમાન ભગવાનને વંદન કરૂં છું "पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं त्ति कट्टु वंदइ, नमंसइ" ત્યાં રહેતા ભગવાન મને અહીં જુએ આ પ્રમાણે કહીને તે પ્રદેશી રાજાએ તેમને વંદન કર્યા, નમસ્કાર કર્યા "पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए, जाव थूल परिग्गहे पच्चक्खाए"

परिग्गहे पच्चक्खाए त इयाणिं पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि, सव्वं असणं० चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि, जंपि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतु त्ति एवंपि य णं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने । ॥सू० १६४॥

इति पएसिरायस्स वण्णणं समत्तं ।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा सूर्यकान्ताया देव्या आत्मानं सम्प्रलब्धं ज्ञात्वा सूर्यकान्ताया देव्या मनसाऽपि अप्रद्विषन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैव उपागच्छति पौषधशालां प्रमार्जयति, उच्चारप्रस्रवणभूमिं प्रतिलेखयति, दर्भसंस्तारकं संस्तृणाति, दर्भसंस्तारकम् दूरोहति पौरस्त्याभिमुखः सपर्यङ्कनिषण्णः करतलपरिगृहीतं

"तए णं से पएसी राया" इत्यादि ।

मूलार्थ—"तए णं" इसके बाद "से पएसी राया" वह प्रदेशी राजा "सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं, जाणित्ता—" सूर्यकान्ता देवी की यह उत्पात (कारामन) है इस प्रकार जान कर भी—"सूरियकंताए देवीए मणसा वि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ—" उस सूर्यकान्ता देवी के प्रति मनसे भी द्वेषभाव नहीं करता हुआ जहां पौषधशाला थी वहां पर गया—"पोसहसालं पमज्जइ" वहां जा करके उसने पौषधशाला की प्रमार्जना की "उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ—" उच्चार प्रस्रवण भूमि की प्रतिलेखना

"तए णं से पएसी राया" इत्यादि

મૂલાર્થ 'તએણં' ત્યાર પછી 'से पएसी राया' તે પ્રદેશી રાજા 'सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं जाणित्ता' સૂર્યકાન્તા દેવીએ આ બધું કર્યું છે આમ જાણવા છતાંએ "सूरियकंताए देवीए मणसा वि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ" તે સૂર્યકાન્તા દેવી પ્રત્યે મનથી પણ દ્વેષભાવ ન કરતાં જ્યાં પૌષધશાળા હતી ત્યાં ગયો (पोसहसालं पमज्जेइ) ત્યાં જઈને તેણે પૌષધશાળાની પ્રમાર્જના કરી 'उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ' ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ભૂમિની

शिर आवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽतु खलु अर्हद्भयः यावत् संप्राप्तेभ्यः नमोऽतु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माऽऽचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्रगतम् इहगतः, पश्यतु मां भगवान् तत्रगतः इह गतम्' इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, पूर्वमपि खलु मया केशिनः कुमारश्रमणस्यान्तिके स्थूलप्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् स्थूलपरिग्रहः प्रत्याख्यातः,

की-"दब्भसंथारगं संथरेइ-" और फिर दर्भ का संथारा बिछाया। "दब्भसंथारगं दुरूहइ-" उसे बिछा कर वह उस पर बेठ गया. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने-" वहां आरूढ होकर वह पूर्व दिशा की ओर मुह करके पर्यङ्कासन से बैठ गया. "करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु एवं वयासी-' और दोनो हाथो की अंजली बनाकर एवं-उसे मस्तक पर घुमाकर इस प्रकार से कहने लगा. "नमो थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमो थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स-" अर्हन्त भगवन्तों के लिये नमस्कार हो, मेरे धर्मोपदेशक धर्माचार्य केशीकुमार श्रमण के लिये नमस्कार हो. "वंदामि णं भगवंतं तत्थ य इहगए-" यहां रहा हुवा मैं वहां पर रहे हुवे भगवान् को वन्दना करता हूं, "-पासउ मे भगवं तत्थगए इहगय त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ-" वहां पर रहे हुवे वे भगवान् यहां रहे हुवे मुझे देखे-इस प्रकार कह कर उस प्रदेशी राजाने उनकी वन्दना की नमस्कार किया. 'पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए. जाव थूलपरिग्गहे पच्चक्खाए " पहलेभी मैंने केशी

પ્રતિલેખના કરી "दब्भसंथारगं संथरेइ" અને પછી દર્ભનું આસન ત્યાં પાથર્યું. "दब्भसंथारगं दुरूहइ' તેને પાથરીને તે તેના પર ઉભો થઈ ગયો. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने" ત્યાં આરૂઢ થઈને તે પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી બેસી ગયો 'करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी" અને બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક પર ફેરવી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો "नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स" અર્હંત ભગવતને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્મોપદેશક ધર્માચાર્ય કેશીકુમાર શ્રમણને મારા નમસ્કાર છે "वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए" અહીં રહીને હું ત્યાં વર્તમાન ભગવાનને વંદન કરૂં છું "पासउ मे भगवं तत्थगए इहगय त्ति कट्टु वंदइ, नमंसइ" ત્યાં રહેતા ભગવાન મને અહીં જુએ આ પ્રમાણે કહીને તે પ્રદેશી રાજાએ તેમને વંદન કર્યાં, નમસ્કાર કર્યાં "पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए, जाव थूल परिग्गहे पच्चक्खाए"

परिग्गहे पच्चक्खाए त इयाणि पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्व पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गहं पच्चक्खामि सव्व कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि, सव्वं असणं० चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि, जंपि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतु त्ति एयंपि य णं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने । ॥सू० १६४॥

इति पएसिरायस्स वण्णणं समत्तं ।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा सूर्यकान्ताया देव्या आत्मानं संप्रलब्धं ज्ञात्वा सूर्यकान्तायाः देव्याः मनसाऽपि अप्रद्विषन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैव उपागच्छति पौषधशालां प्रमार्जयति, उच्चारप्रस्रवणभूमिं प्रतिलेखयति, दर्भसंस्तारकं संस्तृणाति, दर्भसंस्तारकम् दुरोहति पौरस्त्याभिमुखः संपल्यङ्कनिषण्णः करतलपरिगृहीतं

"तए णं से पएसी राया" इत्यादि ।

मूलार्थ—"तए णं" इसके बाद "से पएसी राया" वह प्रदेशी राजा "सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं जाणित्ता—" सूर्यकान्ता देवी की यह उत्पात (कारामन) है इस प्रकार जान कर भी—"सूरियकंताए देवीए मणसा वि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ—" उस सूर्यकान्ता देवी के प्रति मनसे भी द्वेषभाव नहीं करता हुआ जहां पौषधशाला थी वहां पर गया—"पोसहसालं पमज्जेइ" वहां जा करके उसने पौषधशाला की प्रमार्जना की "उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहइ—" उच्चार प्रस्रवण भूमि की प्रतिलेखना

"तए णं से पएसी राया" इत्यादि

मूलार्थ 'तए णं' त्यार पछी 'से पएसी राया' ते प्रदेशी राजा 'सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं जाणित्ता'' सूर्यकान्ता देवीओ आ बधुं कर्युं छे आम जाणीने पण तेओ ''सूरियकंताए देवीए मणसा वि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ'' ते सूर्यकांता देवी प्रत्ये मनथी पण द्वेषभाव न करतां ज्यां पौषधशाळा हती त्यां गयो. (पोसहसालं पमज्जइ) त्यां जईने तेणे पौषधशाळानी प्रमार्जना करी 'उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ' "उच्चार प्रस्रवण भूमिनी

शिर आवर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्–नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावत् संप्राप्तेभ्यः नमोऽस्तु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माऽऽचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्रगतम् इहगतः, पश्यतु मां भगवान् तत्रगतः इह गतम्' इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, पूर्वमपि खलु मया केशिनः कुमारश्रमण स्यान्तिके स्थूलप्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् स्थूलपरिग्रहः प्रत्याख्यातः,

---

की–"दब्भसंथारगं संथरेइ–" और फिर दर्भ का संथारा बिछाया "दब्भसंथारगं दुरूहइ–" उसे बिछा कर वह उस पर बैठ गया. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने–" वहां आरूढ होकर वह पूर्व दिशा की ओर मुह करके पर्यङ्कासन से बैठ गया. "करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु एवं वयासी–' और दोनों हाथों की अंजली बनाकर एवं–उसे मस्तक पर घुमाकर इस प्रकार से कहने लगा. "नमो थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमो थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स–" अर्हन्त भगवन्तों के लिये नमस्कार हो, मेरे धर्मोपदेशक धर्माचार्य केशीकुमार श्रमण के लिये नमस्कार हो. "वंदामि णं भगवंतं तत्थगय इहगए–" यहां रहा हुवा मैं वहां पर रहे हुवे भगवान् को वन्दना करता हूं, "–पासउ मे भगवं तत्थगए इहगय त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ–" वहां पर रहे हुवे वे भगवान् यहां रहे हुवे मुझे देखे–इस प्रकार कह कर उस प्रदेशी राजाने उनकी वन्दना की नमस्कार किया. 'पुव्वि पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूल–पाणाइवाए पच्चक्खाए. जाव थूलपरिग्गहे पच्चक्खाए" पहलेभी मैंने केशी

प्रतिलेખना કરી "दब्भसंथारगं संथरेइ" અને પછી દર્ભનું આસન ત્યાં પાથર્યું. "दब्भसंथारगं दुरुहइ' તેને પાથરીને તે તેના પર ઉભો થઈ ગયો. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने" ત્યાં આરૂઢ થઈને તે પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી બેસી ગયો. 'करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी" અને બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક પર ફેરવી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. "नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स" અર્હંત ભગવતને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્મોપદેશક ધર્માચાર્ય કેશીકુમાર શ્રમણને મારા નમસ્કાર છે "वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए" અહીં રહીને હું ત્યાં વર્તમાન ભગવાનને વંદન કરૂં છું' "पासउ मे भगवं तत्थगए इहगय त्ति कट्टु वंदइ, नमंसइ" ત્યાં રહેતા ભગવાન મને અહીં જુએ આ પ્રમાણે કહીને તે પ્રદેશી રાજાએ તેમને વંદન કર્યા, નમસ્કાર કર્યા "पुव्वि पि ण मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए, जाव थूल परिग्गहे पच्चक्खाए"

तदू इदानीमपि खलु तस्यैव भगवत अन्तिके सर्व प्राणातिपात प्रत्याख्यामि यावत् सर्व परिग्रहम् प्रत्याख्यामि, सर्व क्रोध यावत् मिथ्यादर्शनशल्य प्रत्याख्यामि अकरणीय योग प्रत्याख्यामि, सर्वम् अशन० चतुर्विधमपि आहार यावज्जीव प्रत्याख्यामि, यद पि च मे शरीरम् इष्ट यावत् स्पृशन्तु इति एतदपि च खलु चरमैः उच्छ्वासनि श्वास व्युत्सृजामि, इति कृत्वा आलोचितप्रतिक्रान्ता समाधि

कुमारश्रमण के पास स्थूल प्राणातिपातका यावत् स्थूल परिग्रह का प्रत्याख्यान किया है–'त इयाणिं पि ण तस्सेव भगवओ अंतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि–" अब भी मैं उन्ही भगवान् के पास उसी सर्व प्राणातिपात का प्रत्याख्यान करता हू, "जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामि–" यावत् समस्त परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हू। सव्व कोह जाव मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि–" समस्त क्रोध का प्रत्याख्यान करता हू यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान करता हू। "अकरणिज्ज जोगे पच्चक्खामि–" अकरणीय योग (अशुभ योगका) का प्रत्याख्यान करता हू, "सव्व असण० चउव्विह वि आहार जाव ज्जीवाए पच्चक्खामि–" अशन–पान आदि रूप चारों प्रकार के आहार का यावज्जीव त्याग करता हू "ज पिय मे सरीर इट्ठ जाव फुसतु त्ति एव पिय ण चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु" मैंने पहले जिस इष्टादि विशेषण विशिष्ट शरीर की रक्षा की इस अभिप्राय से कि–इसे शीत उष्ण आदि परिषह तथा–सर्पादिकृत उपसर्ग आदिकी बाधा न पहुंचाये–उस मैं उसी शरीर का अन्तिम उच्छ्वास–निश्वासों तक परित्याग करता हू इस प्रकार विचार करके–"आलो-

પહેલાં પણ મે કેશીકુમારશ્રમણની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું યાવત સ્થૂલ પરિગ્રહનુ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતુ "त इयाणिं पि ण तस्सेव भगवओ अंतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि" હવે પણ હુ તે જ ભગવાનની પાસે તેજ સમસ્ત પ્રાણાતિપાતનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ "जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामि" યાવત સમસ્ત પરિગ્રહનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ "सव्व कोह जाव मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि" સમસ્ત ક્રોધનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ યાવત મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ "अकरणिज्ज जोगे पच्चक्खामि" અકરણીય યોગનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ "सव्व असण० चउव्विह वि आहार जावज्जीवाए पच्चक्खामि" અશન પાન વગેરે રૂપ ચાર પ્રકારના આહારનો યાવત જીવન ત્યાગ કરૂ છુ "ज पि य मे सरीर इट्ठ जाव फुसतु त्ति एव पिय ण चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु" મે પહેલાં જે ઇષ્ટ વગેરે વિશેષણ વિશિષ્ટ શરીરની રક્ષા કરી તે આ પ્રયોજનથી કે આને શીતઉષ્ણ વગેરે પરીષહો તથા સર્પાદિકૃત ઉપસર્ગ વગેરે બાધા પહોંચાડે નહિ હવે હુ તે જ શરીરનો અંતિમ ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસો સુધી પરિત્યાગ કરૂ છુ આ

प्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे सूर्याभे विमाने उपपातसभायां देवतया उपपन्नः ॥ सू० १६४ ॥

इति प्रदेशिराजस्य वर्णनं समाप्तम् ।

टीका—"तए णं से पएसी" इत्यादि—ततःखलु स प्रदेशी राजा सूर्यकान्ताया देव्या-स्वराज्ञ्या आत्मानं-स्व संप्रलब्धं—विषप्रदानेन वञ्चितं सूर्यकान्तया मा णार्थं महाविषं दत्तमिति ज्ञात्वा सूर्यकान्ताया देव्या मनसाऽपि—मनोमात्रेणापि अप्रद्विषन्—द्वेषमकुर्वन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, पौषधशालां प्रमार्जयति, उच्चारप्रस्रवणभूमिं प्रतिलेखयति, दर्भसंस्तारकं संस्तृणाति दर्भसंस्तारकं दूरोहति-अधिरोहति दर्भसंस्तारकोपर्युपविशतीत्यर्थः, पौरस्त्याभिमुखः—पूर्वदिगभि-

इय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने—" उसने पहले गुरु को सम्मुख करके जिन अतिचारों का प्रत्याख्यान किया था अब उन्हें पुनः अकरण विषय से अतिक्रान्त करके, अर्थात्—आलोचनापूर्वक मिथ्यादुष्कृत देकरके चित्त की समाधि प्राप्त करता हूं. और—उसी स्थिति में वह कालमास में काल करके सूर्याभविमान में उपपात सभा में देव पर्याय से उत्पन्न हो गया. ॥

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने जब जाना कि मेरी रानी सूर्यकान्ताने ही मुझे मारने के लिये विष प्रदान कर इस स्थिति पर पहुचाने का निमित्त उपस्थित किया है तो वह इस हालत में भी उसके प्रति द्वेषभाव से रहित बना रहकर जहां पौषधशाला थी वहां पर चला गया. वहां जाकर उसने पौषधशाला की प्रमार्जना की उच्चार प्रस्रवण भूमि की प्रतिलेखना की. और—दर्भ का संस्तारक बिछाया. बिछाकर फिर वह उसपर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके

પ્રમાણે વિચાર કરીને 'आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने" તેણે પહેલા ગુરુની સામે જે અતિચારોનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતુ હવે તેમને ફરી અકરણ વિષયથી અતિક્રાંત કરીને-એટલે કે 'આલોચનાપૂર્વક મિથ્યા દુષ્કૃત આપીને ચિત્તની સમાધિ પ્રાપ્ત કરૂં છું' અને આવી સ્થિતિમા તે કાલમાસમા કાલ કરીને સૂર્યાભવિમાનમા ઉપપાત સભામા દેવ પર્યાયથી જન્મ પામ્યો.

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ જ્યારે આ વાત જાણી કે મારી રાણી સૂર્યકાન્તાએજ મને મારવા માટે વિષ આપ્યુ છે અને મારી આ દશા કરી છે. તો તે પરિસ્થિતિમા પણ સૂર્યકાન્તા પ્રત્યે અદ્વેષભાવથી વ્યવહાર કરીને જ્યાં પૌષધશાળા હતી ત્યા ગયો. ત્યા જઇને તેણે પૌષધશાળાની પ્રમાર્જના કરી ઉચ્ચારપ્રસ્રવણ ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી અને દર્ભસંસ્તારક પાથર્યો ત્યારપછી તે તેની ઉપર પૂર્વ દિશા તરફ

तद् इदानीमपि खलु तस्यैव भगवत अन्तिके सर्व प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् सर्व परिग्रहम् प्रत्याख्यामि, सर्व क्रोध यावत् मिथ्यादर्शनशल्य प्रत्याख्यामि अकरणीय योग प्रत्याख्यामि, सर्वम् अशन० चतुर्विधमपि आहार यावज्जीव प्रत्याख्यामि, यद पि च म शरीरम् इष्ट यावत् स्पृशन्तु इति एतदपि च खलु चरमैः उच्छ्वासनिःश्वासैः व्युत्सृजामि, इति कृत्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधि

कुमारश्रमण क पास स्थूल प्राणातिपात का यावत् स्थूल परिग्रह का प्रत्याख्यान किया है—'त इयाणि पि ण तस्सेव भगवओ अंतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि—" अब भी मैं उन्ही भगवान् क पास उसी सब प्राणातिपात का प्रत्याख्यान करता हू, "जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामि—" यावत् समस्त परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हू। सव्व कोह जाव मिच्छादंसणसल्ल पच्चक्खामि—" समस्त क्रोध का प्रत्याख्यान करता हू यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान करता हू। "अकरणिज्ज जोगे पच्चक्खामि—" अकरणीय योग (अशुभ योगका) का प्रत्याख्यान करता हू, "सव्व असण० चउव्विह पि आहार जावज्जीवाए पच्चक्खामि—" अशन-पान आदि चार प्रकार क आहार का यावज्जीव त्याग करता हू "ज पिय मे सरीर इट्ठ जाव फुसतु त्ति एयं पि य ण चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु" मैने पहले जिस इष्टादि विशेषण विशिष्ट शरीर की रक्षा की इस अभिप्राय से कि—इस शीत उष्ण आदि परिषह तथा-सर्पादिकृत उपसर्ग आदिकी बाधा न पहुचाय—अब म उसी शरीर का अन्तिम उच्छ्वास-निश्वासों तक परित्याग करता हू इस प्रकार विचार करके—"आलो-

पहेलां पण मे केशीकुमारश्रमणनी पासे स्थूल प्राणातिपातनु यावत स्थूल परिग्रहनु प्रत्याख्यान कर्युं हतु "त इयाणि पि ण तस्सेव भगवओ अंतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि" हवे पण हु ते ज भगवाननी पासे तेज समस्त प्राणातिपातनु प्रत्याख्यान करु छु "जाव सव्व परिग्गहं पच्चक्खामि" यावत समस्त परिग्रहनु प्रत्याख्यान करु छु 'सव्वं कोह जाव मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि' समस्त क्रोधनु प्रत्याख्यान करु छु यावत मिथ्यादर्शन शल्यनु प्रत्याख्यान करु छु "अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि" अकरणीय योगनु प्रत्याख्यान करु छु "सव्वं असणं० चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि" अशन-पान वगेरे रूप चार जातना आहारनो यावत जीवन त्याग करु छु "ज पि य म सरीर इट्ठं जाव फुसतु त्ति एवं पि य ण चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु" मे पहेलां जे इष्ट वगेरे विशेषण विशिष्ट शरीरनी रक्षा करी ते आ अभिप्रायथी के आने शीतउष्ण वगेरे परीषहो तथा सर्पादिकृत उपसर्ग वगेरे बाधा पहोचाडे नहि हवे हु ते ज शरीरनो अंतिम उच्छ्वास निश्वासो सुधी परित्याग करु छु आ

प्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे सूर्याभे विमाने उपपातसभायां देवतया उपपन्नः ॥ सू० १६४ ॥

इति प्रदेशिराजस्य वर्णनं समाप्तम् ।

टीका—"तए णं से पएसी" इत्यादि—ततःखलु स प्रदेशी राजा सूर्यकान्ताया देव्या-स्वराज्ञ्या आत्मानं-स्वं संप्रलब्धं—विषप्रदानेन वञ्चितं सूर्यकान्तया मारणार्थं महाविषं दत्तमिति ज्ञात्वा सूर्यकान्ताया देव्या मनसाऽपि—मनोमात्रेणापि अप्रद्विषन्—द्वेषमकुर्वन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, पौषधशालां प्रमार्जयति, उच्चारप्रस्रवणभूमिं प्रतिलेखयति, दर्भसंस्तारकं संस्तृणाति दर्भसंस्तारकं दूरोहति—अधिरोहति दर्भसंस्तारकोपर्युपविशतीत्यर्थः, पौरस्त्याभिमुखः—पूर्वदिगभि-

इ पडिकंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववाय भाए देवत्ताए उववन्ने—" उसने पहले गुरु को सम्मुख करके जिन अतिचारों का प्रत्याख्यान किया था अब उन्हें पुनः अकरण विषय से अतिक्रान्त करके, अर्थात्—आलोचनापूर्वक मिथ्यादुष्कृत देकरके चित्त की समाधि प्राप्त करता हू. और—उसी स्थिति में वह कालमास में काल करके सूर्याभविमान में उपपात सभा में देव पर्याय से उत्पन्न हो गया. ॥

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने जब जाना कि मेरी रानी सूर्यकान्ताने ही मुझे मारने के लिये विष प्रदान कर इस स्थिति पर पहुचाने का निमित्त उपस्थित किया है तो वह इस हालत में भी उसके प्रति द्वेषभाव से रहित बना रहकर जहां पौषधशाला थी वहां पर चला गया. वहां जाकर उसने पौषधशाला की प्रमार्जना की उच्चार प्रस्रवण भूमि की प्रतिलेखना की. और—दर्भ का संस्तारक बिछाया. बिछाकर फिर वह उसपर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके

પ્રમાણે વિચાર કરીને 'आलोइयपडिकंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने' તેણે પહેલા ગુરૂની સામે જે અતિચારોનુ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતુ હવે તેમને ફરી અકરણ વિષયથી અતિક્રાંત કરીને—એટલે કે 'આલોચનાપૂર્વક મિથ્યા દુષ્કૃત આપીને ચિત્તની સમાધિ પ્રાપ્ત કરૂ છુ' અને આવી સ્થિતિમા તે કાલમાસમા કાલ કરીને સૂર્યાભવિમાનમા ઉપપાત સભામા દેવ પર્યાયથી જન્મ પામ્યો.

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ જ્યારે આ વાત જાણી કે મારી રાણી સૂર્યકાન્તાએજ મને મારવા માટે વિષ આપ્યુ છે અને મારી આ દશા કરી છે તો તે પરિસ્થિતિ મા પણ સૂર્યકાન્તા પ્રત્યે અદ્વેષભાવથી વ્યવહાર કરીને જ્યાં પૌષધશાળા હતી ત્યા ગયો. ત્યા જઇને તેણે પૌષધશાળાની પ્રમાર્જના કરી ઉચ્ચારપ્રસ્રવણ ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી અને દર્ભસંસ્તારક પાથર્યો ત્યારપછી તે તેની ઉપર પૂર્વ દિશા તરફ

तद् इदानीमपि खलु तस्यैव भगवतः अन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् सर्वं परिग्रहम् प्रत्याख्यामि, सर्वं क्रोधं यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं प्रत्याख्यामि अकरणीयं योगं प्रत्याख्यामि, सर्वम् अशन० चतुर्विधमपि आहारं यावज्जीवं प्रत्याख्यामि, यदपि च मे शरीरम् इष्टं यावत् स्पृशन्तु इति एतदपि च खलु चरमैः उच्छ्वासनिःश्वासैः व्युत्सृजामि, इति कृत्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधि

कुमारश्रमण के पास स्थूल प्राणातिपात का यावत् स्थूल परिग्रह का प्रत्याख्यान किया है—'तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि—" अब भी मैं उन्हीं भगवान् के पास उसी सब प्राणातिपात का प्रत्याख्यान करता हूं, "जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि—" यावत् समस्त परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हूं। सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि—" समस्त क्रोध का प्रत्याख्यान करता हूं यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान करता हूं। "अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि—" अकरणीय योग (अशुभ योगों) का प्रत्याख्यान करता हूं, "सव्वं असणं० चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि—" अशन-पान आदि इन चार प्रकार के आहार का यावज्जीव त्याग करता हूं "जंपि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतु त्ति एयं पि य णं चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु—' मैंने पहले जिस इष्टादि विशेषण विशिष्ट शरीर की रक्षा की इस अभिप्राय से कि—इसे शीत उष्ण आदि परिषह तथा—सर्पादिकृत उपसर्ग आदिकी बाधा न पहुंचाय—इस में उसी शरीर का अन्तिम उच्छ्वास-निश्वासों तक परित्याग करता हूं इस प्रकार विचार करके—"आलो

પહેલાં પણ મેં કેશીકુમારશ્રમણની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું યાવત સ્થૂલ પરિગ્રહનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે "तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि" હવે પણ હું તે જ ભગવાનની પાસે તેજ સમસ્ત પ્રાણાતિપાતનું પ્રત્યાખ્યાન કરું છું "जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि" યાવત સમસ્ત પરિગ્રહનું પ્રત્યાખ્યાન કરું છું 'सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि' સમસ્ત ક્રોધનું પ્રત્યાખ્યાન કરું છું યાવત મિથ્યાદર્શન શલ્યનું પ્રત્યાખ્યાન કરું છું "अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि" અકરણીય યોગનું પ્રત્યાખ્યાન કરું છું "सव्वं असणं० चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि" અશન-પાન વગેરે ચાર પ્રકારના આહારનો યાવત જીવન ત્યાગ કરું છું "जंपि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतु त्ति एयं पि य णं चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु" મેં પહેલાં જે ઇષ્ટ વગેરે વિશેષણ વિશિષ્ટ શરીરની રક્ષા કરી તે આ પ્રયોજનથી કે આને શીતઉષ્ણ વગેરે પરીષહો તથા સર્પાદિકૃત ઉપસર્ગ વગેરે બાધા પહોંચાડે નહિ હવે હું તે જ શરીરનો અંતિમ ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસો સુધી પરિત્યાગ કરું છું આ

भगव :-केशिकुमारश्रमणस्यैव अन्तिके तदाज्ञावर्तित्वेन तस्मिन् भगव त विद्यमाने सति समीपे इव समीपे सम्प्रति सर्व प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि या-त्-याव-च्छब्देन ·वं मृषावादं प्रत्याख्यामि, सर्वमदत्तादानं प्रत्याख्यामि, इति सग्राह्यम्, सर्व परिग्रहं प्रत्याख्यामि तथा क्रोधं यावत् यावच्छब्देन-मानं-मायां लोभं रागं द्वेषं कलहमभ्याख्यान पैशुन्य परपरिवादं रत्यरती माया-मृषा' इति सग्राह्यम्, मिथ्यादर्शनशल्यं प्रत्याख्यामि, सर्वम् अशनमिति-अशन खाद्यं स्वाद्यं चतुर्विध-माहारं यावज्जीवं-प्राणधारणपर्यन्तं प्रत्याख्यामि यद पि च मे शरीरम् इष्टं यावत् स्पृश तु अत्र यावच्छब्देन का तत्वादिविशेषणविशिष्टं शरीर शीतोष्णादयः परीषहाः सर्पादिकृता उप गर्गाः कर्कशकठोरादयः स्पर्शाश्च मा स्पृश तु इत्यन्तं संग्रा-

है. अब मैं उसी केशीकुमारश्रमण के पास उनकी आज्ञा के वशवर्ती होने के कारण उन्हें अपने समीप रहा हुवा जैसा मानकर समस्त प्राणातिपात का प्रत्याख्यान करता हूं. समस्त मृषावाद का प्रत्याख्यान करता हूं और समस्त अदत्तादान का प्रत्याख्यान करता हू और समस्त परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हूं । तथा क्रोधको यावत् मान मायो लोभका राग-द्वेष, कलह का प्रत्याख्यान पैशून्य परिवाद अरति माया मृषा का, एवं-मिथ्यादर्शनशल्य का प्रत्याख्यान करता हूं। तथा—समस्त अशनका पानका खाद्यका स्वाद्यका, याव जीव-प्राणधारण पर्यन्त परित्याग करता हूं, तथा—कान्तत्वादि विशेषणों से युक्त जिस शरीर की मैंने शीतोष्ण आदिपरीपहों से सर्पादिकृत उपसर्गों से एव-कर्कश कठोर आदि स्पर्शों से ये सब इसे स्पर्श न करे इस ख्याल से रक्षा की इसका भी मै अब अन्तिम श्वासोच्छ्वास तक यावज्जीव तक परित्याग करता हू । तात्पर्य इसका इस प्रकार से है—मैं ने इस शरीर

કુમારશ્રમણની પાસે તેમની આજ્ઞાને વશ હોવાને લીધે તેઓ મારી પાસે જ છે એમ માનીને સમસ્ત પ્રાણાતિપાતનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું. સમસ્ત મૃષાવાદનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું સમસ્ત અદત્તાદાનનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું અને સમસ્ત પરિગ્રહનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું તેમજ ક્રોધનું યાવત્ માન માયા લોભ રાગ દ્વેષ કલહનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું પૈશૂન્ય પરિવાદ અરતિ માયા મૃષા અને મિથ્યાદર્શનશલ્યનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું તેમજ સમસ્ત અશનનું પાનનું, ખાદ્યનું, સ્વાદ્યનું, યાવત્ જીવન પ્રાણ ધારણ પર્યન્ત વિસર્જન કરૂં છું. તેમજ કાન્ત ઇત્યાદિ વિશેષણોથી યુકત જે શરીરની મેં શીતોષ્ણ વગેરે પરીષહોથી સર્પાદિકૃત ઉપસર્ગોથી અને કર્કશ કઠોર વગેરે સ્પર્શોથી—'એઓ આ શરીરને સ્પર્શે નહિ એ ઇચ્છાએ રક્ષા કરી' આનો પણ હું હવે અંતિમ શ્વાસોચ્છવાસ સુધી પરિત્યાગ કરૂં છું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે

मुखः सन् पर्यङ्कनिषण्णः—पर्यङ्कासनेन समुपविष्टः सन् करतलपरिगृहीतं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्—नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावत् संप्राप्तेभ्यः। अत्र यावच्छब्देन "नमोऽत्थु णं" पाठः सर्वोऽपि वाच्यः। तथा नमोऽस्तु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्र गतम् इह गतः—अत्र स्थितोऽहम्, पश्यतु मे—मम मामित्यर्थः, भगवान् केशि कुमारश्रमणस्तत्रगत इहगतम्, इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, कथयति—पूर्वमपि खलु मया केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके—समीपे स्थूलप्राणातिपातः प्रत्याख्यातः १ यावत्—यावच्छब्देन "स्थूलमृषावादः प्रत्याख्यातः २ स्थूलादत्तादानं प्रत्याख्यातम् ३, इति संग्राह्यम्, स्थूलपरिग्रहः प्रत्याख्यातः ४, तद् इदानीमपि खलु तस्यैव

पर्यङ्कासन से बैठ गया। दोनों हाथों को जोड़ा और—आवर्त कर इस प्रकार कहने लगा अर्हन्तों को नमस्कार हो यहां—यावत् शब्द से "नमोत्थुणं" पाठ पूरा ग्रहण कर लेना चाहिये। इस प्रकार कहते कहते उसने ऐसा भी कहा कि—मुझे धर्म का उपदेश देने वाले जो मेरे धर्माचार्य केशी कुमारश्रमण हैं उन्हें भी मेरा नमस्कार हो, वे यद्यपि—इस समय मेरे पास वर्तमान में नहीं हैं अतः जहां पर भी वे विराजमान हों मैं यहां रहा हुआ उन्हें नमस्कार करता हूं वहां रहे हुए वे भगवान् केशीकुमारश्रमण यहां रहे हुए मुझे देखें इस प्रकार कहकर उसने उन को वन्दना की—नमस्कार किया, वन्दना—नमस्कार कर फिर वह इस प्रकार से कहने लगा मैंने पहले भी केशीकुमारश्रमण के समीप स्थूल प्राणातिपात का प्रत्याख्यान किया है—यावत् स्थूल मृषावाद का प्रत्याख्यान किया है स्थूल अदत्तादान का प्रत्याख्यान किया है और—स्थूल परिग्रह का प्रत्याख्यान किया

મુખ કરીને પર્યંકાસનની મુદ્રામાં બેસી ગયા. ત્યાર બાદ તેણે બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક પર ફેરવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. અર્હંતોને નમસ્કાર છે, અહીં યાવત્ પદથી "નમોત્થુણં" પૂરો પાઠ તે ગ્રહણ થયો એ વાત સમજવી જોઈએ. આ પ્રમાણે કહેતાં કહેતાં તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે મને ધર્મોપદેશ આપનાર મારા ધર્માચાર્ય કેશીકુમાર શ્રમણને મારા નમસ્કાર છે તેઓ અહીં હમણાં વર્તમાન નથી છતાંએ તેઓશ્રી જ્યાં વિરાજતા હોય હું અહીં રહીને તેમને નમસ્કાર કરું છું ત્યાં રહેતા તે ભગવાન કેશીકુમારશ્રમણ અહીં રહેતા મને જુવે. આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેમને વંદન કરી નમસ્કાર કર્યા. વંદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તે આમ કહેવા લાગ્યો કે મેં પહેલાં પણ કેશીકુમારશ્રમણની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે યાવત્ સ્થૂલ મૃષાવાદનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે સ્થૂલ અદત્તાદાનનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે અને સ્થૂલ પરિગ્રહનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે હવે હું તેજ કેશી

भगव :-केशिकुमारश्रमणस्यैव अन्तिके तदाज्ञावर्तित्वेन तस्मिन् भगव त विद्यमाने सति समीपे इव समीपे सम्प्रति सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि या-त्-याव-च्छब्देन -वं मृषावादं प्रत्याख्यामि, सर्वमदत्तादानं प्रत्याख्यामि, इति सग्रा-ह्यम्, सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि तथा क्रोधं यावत् यावच्छब्देन-मानं-मायां लोभं रागं द्वेषं कलहमभ्याख्यानं पैशुन्यं परपरिवादं रत्यरती माया-मृषा' इति सग्राह्यम्, मिथ्यादर्शनशल्यं प्रत्याख्यामि, सर्वम् अशनमिति-अशन खाद्यं स्वाद्यं चतुर्विध-माहारं यावज्जीवं-प्राणधारणपर्यन्तं प्रत्याख्यामि यद पि च मे शरीरम् इष्टं यावत् स्पृश तु अत्र यावच्छब्देन का तत्वादिविशेषणविशिष्टं शरीर शीतोष्णादयः परी षहाः सर्पादिकृता उप र्गाः कर्कशकठोरादयः स्पर्शाश्च मा स्पृश तु इत्यन्तं संग्रा-

है, अब मैं उसी केशीकुमारश्रमण के पास इनकी आज्ञा के वशवर्ती होने के कारण उन्हें अपने समीप रहा हुवा जैसा मानकर समस्त प्राणातिपात का प्रत्याख्यान करता हूं, समस्त मृषावाद का प्रत्याख्यान करता हूं और समस्त अदत्तादान का प्रत्याख्यान करता हू और समस्त परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हूं । तथा क्रोधको यावत् मान माया लोभका राग-द्वेष, कलह का प्रत्याख्यान पैशून्य परिवाद अरति माया मृषा का, एवं-मिथ्यादर्शनशल्य का प्रत्याख्यान करता हूं। तथा—समस्त अशनका पानका खाद्यका स्वाद्यका, यावज्जीव-प्राणधारण पर्यन्त परित्याग करता हूं, तथा—कान्त-त्वादि विशेषणों से युक्त जिस शरीर की मैंने शीतोष्ण आदिपरीषहों से सर्पा-दिकृत उपसर्गों से एव-कर्कश कठोर आदि स्पर्शों से ये सब इसे स्पर्श न करे इस ख्याल से रक्षा की इसका भी मैं अब अन्तिम श्वासोच्छ्वास तक यावज्जीव तक परित्याग करता हू । तात्पर्य इसका इस प्रकार से है—मैंने इस शरीर

કુમારશ્રમણની પાસે તેમની આજ્ઞાને વશ હોવાને લીધે તેઓ મારી પાસે જ છે એમ માનીને સમસ્ત પ્રાણાતિપાતનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું. સમસ્ત મૃષાવાદનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું સમસ્ત અદત્તાદાનનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું અને સમસ્ત પરિગ્રહનું પ્રત્યા-ખ્યાન કરૂં છું તેમજ ક્રોધનું યાવત્ માન માયા લોભ રાગ દ્વેષ કલહનું પ્રત્યા-ખ્યાન કરૂં છું પૈશુન્ય પરિવાદ અરતિ માયા મૃષા અને મિથ્યાદર્શનશલ્યનું પ્રત્યા-ખ્યાન કરૂં છું તેમજ સમસ્ત અશનનું પાનનું, ખાદ્યનું, સ્વાદ્યનું, યાવત્ જીવન પ્રાણ ધારણ પર્યન્ત વિસર્જન કરૂં છું તેમજ કાન્ત ઇત્યાદિ વિશેષણોથી યુક્ત જે શરીરની મેં શીતોષ્ણ વગેરે પરીષહોથી સર્પાદિકૃત ઉપસર્ગોથી અને કર્કશ કઠોર વગેરે સ્પર્શોથી-'એઓ આ શરીરને સ્પર્શે નહિ એ ઇચ્છાએ રક્ષા કરી' આનો પણ હું હવે અન્તિમ શ્વાસોચ્છ્વાસ સુધી પરિત્યાગ કરૂં છું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે

म, तथाहि—कान्त, प्रिय मनोज्ञ, मनआम, धैर्य-धैर्यस्वरूप वैश्वासिक विश्वास योग्य, समतम्, अनुमत बहुमत, माण्डकरण्डकसमान, रत्नकरण्डकमूतमिद शरीर मा खलु शीत मा खलु उष्ण, मा खलु क्षुधा मा खलु पिपासा, मा खलु व्याला—सर्पाः, मा खलु चोराः, मा खलु दंशाः, मा खलु मशकाः, मा खलु वातिकाः-वातसम्बन्धी रोगातङ्क एव पैत्तिकः श्लैष्मिक सान्निपातिकः इत्यादि का विविधा रोगातङ्का, तत्र रोगा—ज्वरादय आतङ्का—सद्योघातिशूलादय, तथा परीषहाः—क्षुधादय, उपसर्गा सर्पादिकृता उपद्रवाः स्पर्शाः—कर्कशकठोरा दय मा स्पृशन्तु-मे शरीरे मा मलम्ना भवन्तु इति—इति बुद्ध्या संरक्षितम् एतदपि च खलु शरीर चरमैः-अन्तिमैः उच्छ्वासनिःश्वासैः व्युत्सृजामि—त्यजामि,

को कान्त प्रिय-मनोज्ञ मन आम धैर्यस्वरूप विश्वासयोग्य, समत अनुमत, तथा—बहु मत माना एव-रत्न रखने के पिटार क जैसा बहुमूल्य माना। अतः—इस को तरह से मैंने समाल रखी इस शीत से बाधा न हो जावे, उष्णसे सताप न हो जावे, क्षुधा से कष्ट न हो जावे पिपासा से यह आकुलित न हो जावे सर्पादि कृत उपद्रवों से यह पीडित न हो जावे चोरों द्वारा इसे आपत्ति में पडना न पडे दंश—मशक इसे काट न लवे वात सम्बन्धी रोगातङ्को—ज्वरादि रोगों सद्योघाति शूलादिकों से यह दुःखित न हो जावे पैत्तिक-श्लैष्मिक—सान्निपातिक रोगातङ्क इसे मलिन न करदे कर्कश—कठोर आदि स्पर्श करके इसके सौन्दर्य का अपहरण न करे, इस प्रकार से मैंने इसकी हरतरह से खूब रक्षाकीथी, परन्तु—अब मैं एसे प्रिय इस शरीर के साथ अपना सम्बन्ध जीवन के अन्तिमक्षण तक यावज्जीव तक विच्छेद

છે મેં આ શરીરને કાંત પ્રિય મનોજ્ઞ મન આમ, ધૈર્યસ્વરૂપ, વિશ્વાસ યોગ્ય, સંમત-અનુમત તેમજ બહુમત માન્યો અને રત્ન મૂકવાની પેટીની જેમ બહુ મૂલ્યવાન માન્યું એથી જ આની મેં બધી રીતે સંભાળ રાખી. આને ઠંડીથી પીડા ન થાય ઉષ્ણતાથી સંતાપ ન થાય ક્ષુધાથી કષ્ટ ન થાય, તરસથી આકુળ ન થાય સર્પાદિકૃત ઉપદ્રવોથી આ પીડિત ન થાય ચોરો વડે આ આપત્તિમાં ન ફસાઈ પડે, દંશ મશક આને કષ્ટ ન આપે વાત સંબંધી રોગાતંકો-જ્વરાદિ રોગો સદ્યોઘાતિ શૂલાદિકોથી આ શરીર દુઃખિત ન થાય, પૈત્તિક શ્લૈષ્મિક સાન્નિપાતિક રોગાતંક આ શરીરને મલિન ન કરે, કર્કશ કઠોર વગેરેના સ્પર્શથી એના સૌન્દર્યનું અપહરણ ન કરે આ પ્રમાણે મેં બધી રીતે આ શરીરની ખૂબ રક્ષા કરી હતી પણ હવે હું આ એવા પ્રિય શરીરની સાથે પોતાનો સંબંધ જીવનના અંતિમ ક્ષણ સુધી છિન્ન કરું છું આમ વિચાર કરીને તે પ્રદેશી

इति कृत्वा—इत्यालोच्य स प्रदेशी राजा आलोचितप्रतिक्रान्तः—आलोचिताः—पूर्वं गुरुमभिमुखीकृत्य प्रकाशिताः अतिचाराः ते पश्चात् प्रतिक्रान्ताः—पुनरकरणविषयीकृता येनासौ तथा-आलोचनापूर्वकप्रदत्तमिथ्यादुष्कृत इत्यर्थः समाधि-प्राप्तचित्त समाधिकः सन् कालमासे—कालावसरे कालं कृत्वा—मृत्युं प्राप्य सूर्याभे विमाने उपपातसभायां देवतया—देवत्वेन उपपन्नः—समुत्पन्नः । ॥सू० १६४॥

इति प्रदेशिराजस्य वर्णनं समाप्तम् ॥

अथ प्रदेशिराजजीवस्य सूर्याभदेवस्याऽऽगामिभववर्णनमाह—

मूलम्—तए णं सूरियाभे देवे अहुणोववन्नमए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए, तं एवं खलु भो ! सुरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए । ॥सू० १६५॥

छाया—ततः खलु स सूर्याभो देवः अधुनोपपन्नक एव सन् पञ्चविधया पर्याप्तिभावं गच्छति, तद्यथा आहारपर्याप्त्या१, शरीरपर्याप्त्या२, इन्द्रियपर्याप्त्या३, आन-

---

करता हूं. इस तरह विचार कर वह प्रदेशी राजा आलोचित प्रतिक्रान्त होकर समाधि में तल्लीन हो गया. और—काल मास में मरण प्राप्त कर सूर्याभविमान में—उपपात सभा में देव पर्याय से उत्पन्न हो गया. ॥सू० १६४॥

(प्रदेशी राजा वर्णनसमाप्त.)

"प्रदेशी राजा के जीव-सूर्याभ देव के आगामी भवका वर्णन

"तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए—" इत्यादि

मूलार्थ—"तए णं सूरियाभे देवे—" इसकेबाद तत्काल उत्पन्न हुवा ही वह सूर्याभदेव पांच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त हो गया. "तं जहा—आहार

રાજા આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઇને સમાધિમાં તલ્લીન થઇ ગયો અને કાલ માસમાં મરણ પામીને સૂર્યાભવિમાનમાં ઉપપાત સભામાં દેવ પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો ॥સૂ ૧૬૪॥

પ્રદેશી રાજાનું વર્ણન સમાપ્ત

"પ્રદેશી રાજાના જીવ—સૂર્યાભદેવનું આગામી ભવનું વર્ણન"

"तएणं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए" इत्यादि.

મૂલાર્થ—"तएणं सूरियाभे देवे" ત્યાર પછી ઉત્પન્ન થતા જ તે સૂર્યાભદેવ પાંચ પ્રકારની પર્યાપ્તિઓથી યુક્ત થઇ ગયો "तं जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीर

मम, तथाहि—कान्त, प्रिय मनोज्ञ, मनआम, धय-धैर्यस्वरूप वैश्वासिकं विश्वास योग्य, सम्मतम्, अनुमत बहुमत, भाण्डकरण्डकसमान, रत्नकरण्डकभूतमिद शरीर मा खलु शीत मा खलु उष्ण, मा खलु क्षुधा मा खलु पिपासा, मा खलु व्याला—सर्पाः, मा खलु चोरा, मा खलु दंशा, मा खलु मशका, मा खलु वातिकाः-वातसम्बन्धी रोगातङ्क एव पैत्तिकः श्लैष्मिकः सान्निपातिकः इत्यादि का विविधा रोगातङ्का, तत्र रोगाः—ज्वरादय आतङ्काः—सद्योघातिशूलादय, तथा परीषहा —क्षुधादय, उपसर्गाः सर्पादिकृता उपद्रवाः स्पर्शाः—कर्कशकठोरा दय मा स्पृशन्तु-मे शरीरे मा सलग्ना भवन्तु इति—इति बुद्ध्या संरक्षितम् एतदपि च खलु शरीरं चरमैः-अन्तिमैः उच्छ्वासनिःश्वासैः व्युत्सृजामि—त्यजामि,

को कान्त प्रिय-मनोज्ञ मन आम धैर्यस्वरूप विश्वासयोग्य, सम्मत अनुमान, तथा—बहुमत माना एव-रत्न रखने के पिटार के जैसा बहुमूल्य माना। अतः—इस की तरह से मैंने सभाल रक्खी इसे शीत से बाधा न हो जावे, उष्णसे सताप न हो जावे, क्षुधा से कष्ट न हो जाव पिपासा से यह आकुलित न हो जावे सर्पादि कृत उपद्रवों से यह पीडित न हो जावे चोरों द्वारा इसे आपत्ति में पडना न पडे दंश-मशक इसे काट न लेवे वात सम्बन्धी रोगातङ्को—ज्वरादि रोगों सद्योघाति शूलादिकों से यह दुःखित न हो जावे पैत्तिक-श्लैष्मिक—सान्निपातिक रोगातङ्क इसे मलिन न करदे कर्कश—कठोर आदि स्पर्श करके इसके सौन्दर्य का अपहरण न करे, इस प्रकार से मैंने इसकी हरतरह के खूब रक्षा कीथी, परन्तु—अब मैं एसे प्रिय इस शरीर के साथ अपना सम्बन्ध जीवन के अन्तिमक्षण तक यावज्जीव तक विच्छेद

કે મે આ શરીરને કાંત પ્રિય, મનોજ્ઞ, મન આમ ધૈર્યસ્વરૂપ, વિશ્વાસ યોગ્ય સંમત—અનુત્તમ તેમજ બહુમત માન્યો અને રત્ન મૂકવાની પેટીની જેમ બહુ મૂલ્ય વાન માન્યું એથી જ મેં સારી રીતે સંભાળ રાખી. આને ઠંડીથી પીડા ન થાય ઉષ્ણતાથી સંતાપ ન થાય ક્ષુધાથી કષ્ટ ન થાય, તરસથી આકુળ ન થાય સર્પાદિકૃત ઉપદ્રવોથી આ પીડિત ન થાય ચોરો વડે આ આફતમાં ન ફસાઈ પડે, દંશ મશક આને કષ્ટ ન આપે વાત સંબંધી રોગાતંકો—જ્વરાદિ રોગો સદ્યોઘાતિ શૂલાદિકોથી આ શરીર દુઃખિત ન થાય પૈત્તિક શ્લૈષ્મિક સાન્નિપાતિક રોગાતંક આ શરીરને મલિન ન કરે કર્કશ કઠોર વગેરેના સ્પર્શથી એના સૌન્દર્યનું અપહરણ ન કરે આ પ્રમાણે મેં બધી રીતે આ શરીરની ખૂબ રક્ષા કરી હતી પણ હવે હું આ એવા પ્રિય શરીરની સાથે પોતાનો સંબંધ જીવનના અંતિમ ક્ષણ સુધી છોડી દઉં છું આમ વિચાર કરીને તે પ્રદેશી

इति कृत्वा—इत्यालोच्य स प्रदेशी राजा आलोचितप्रतिक्रान्तः—आलोचिताः—पूर्वं गुरुमभिमुखीकृत्य प्रकाशिताः अतिचाराः ते पश्चात् प्रतिक्रान्ताः—पुनरकरणविषयीकृता येनासौ तथा—आलोचनापूर्वकप्रदत्तमिथ्यादुष्कृत इत्यर्थः समाधि-प्राप्तचित्त समाधिकः सन् कालमासे—कालावसरे कालं कृत्वा—मृत्युं प्राप्य सूर्याभे विमाने उपपातसभायां देवतया—देवत्वेन उपपन्नः—समुत्पन्नः । ॥सू० १६४॥

इति प्रदेशिराजस्य वर्णनं समाप्तम् ॥

अथ प्रदेशिराजजीवस्य सूर्याभदेवस्याऽऽगामिभववर्णनमाह—

मूलम्—तए णं सूरियाभे देवे अहुणोववन्नमए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए, तं एवं खलु भो ! सुरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए । ॥सू० १६५॥

छाया—ततः खलु स सूर्याभो देवः अधुनोपपन्नक एव सन् पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभावं गच्छति, तद्यथा आहारपर्याप्त्या१, शरीरपर्याप्त्या२, इन्द्रियपर्याप्त्या३, आन-

---

करता हूं. इस तरह विचार कर वह प्रदेशी राजा आलोचित प्रतिक्रान्त होकर समाधि में तल्लीन हो गया. और—काल मास में मरण प्राप्त कर सूर्याभविमान में—उपपात सभा में देव पर्याय से उत्पन्न हो गया. ॥सू० १६४॥

(प्रदेशी राजा वर्णनसमाप्त.)

"प्रदेशी राजा के जीव-सूर्याभ देव के आगामी भवका वर्णन

"तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए—" इत्यादि

मूलार्थ—"तए णं सूरियाभे देवे—" इसकेबाद तत्काल उत्पन्न हुवा ही वह सूर्याभदेव पांच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त हो गया. "तं जहा—आहार

રાજા આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને સમાધિમાં તલ્લીન થઈ ગયો અને કાલ માસમાં મરણ પામીને સૂર્યાભવિમાનમાં ઉપપાત સભામાં દેવ પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો ॥સૂ ૧૬૪॥

પ્રદેશી રાજાનું વર્ણન સમાપ્ત.

"પ્રદેશી રાજાના જીવ—સૂર્યાભદેવનું આગામી ભવનું વર્ણન"

"तएणं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए" इत्यादि.

મૂલાર્થ—"तएणं सूरियाभे देवे" ત્યાર પછી ઉત્પન્ન થતા જ તે સૂર્યાભદેવ પાંચ પ્રકારની પર્યાપ્તિઓથી યુક્ત થઈ ગયો. "तं जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीर

मम, तद्यथा—कान्त, प्रिय मनोज्ञ, मनआम, धर्य-धैर्यस्वरूप वैश्वासिक विश्वास योग्य, समतम्, अनुमत बहुमत, भाण्डकरण्डकसमान, रत्नकरण्डकभूतमिद शरीर मा खलु शीत मा खलु उष्ण, मा खलु क्षुधा मा खलु पिपासा, मा खलु व्यालाः—सर्पाः, मा खलु चोराः, मा खलु दंशा, मा खलु मशकाः, मा खलु वातिकः-वातसम्बन्धी रोगातङ्क एव पैत्तिक श्लैष्मिकः सान्निपातिकः इत्यादि का विविधा रोगातङ्का, तत्र रोगाः—ज्वरादय आतङ्काः—सद्योघातिशूलादय, तथा परीषहाः—क्षुधादयः, उपसर्गा सर्पादिकृता उपद्रवाः, स्पर्शाः—कर्कशकठोरादय मा स्पृशन्तु—म शरीर मा संलग्ना भवन्तु इति—इति बुद्धया संरक्षितम् एतदपि च खलु शरीर चरमं—अन्तिमं उच्छ्वासनिःश्वासैः व्युत्सृजामि—त्यजामि,

को कान्त प्रिय-मनोज्ञ मन आम धर्यस्वरूप विश्वासयोग्य, समत-अनुमात, तथा—बहुमत माना एव-रत्न रखने के पिटार के जैसा बहुमूल्य माना। अतः—इस की तरह से मैंने समाल रक्खी इस शीत से बाधा न हो जावे, उष्णसे सताप न हो जावे, क्षुधा से कष्ट न हो जावे पिपासा से यह आकुलित न हो जावे सर्पादि कृत उपद्रवों से यह पीडित न हो जावे चोरों द्वारा इसे आपत्ति में पडना न पडे दंश—मशक इसे काट न लेवे वात सम्बन्धी रोगातङ्को—ज्वरादि रोगों सद्योघाति शूलादिकों से यह दुःखित न हो जावे पत्तिक-श्लेष्मिक—सान्निपातिक रोगातङ्क इसे मलिन न करदे कर्कश—कठोर आदि स्पर्श करके इसके सौन्दर्य का अपहरण न करे, इस प्रकार से मैंने इसकी हरतरह के खूब रक्षाकीथी, परन्तु—अब मैं एस प्रिय इस शरीर के साथ अपना सम्बन्ध जीवन के अन्तिमक्षण तक यावज्जीव तक विच्छेद

કે મે આ શરીરને કાંત પ્રિય મનોજ્ઞ મન આમ ધૈર્યસ્વરૂપ, વિશ્વાસ યોગ્ય સંમત—અનુમત તેમજ બહુમત માન્યો અને રત્ન મૂકવાની પેટીની જેમ બહુ મૂલ્ય વાન માન્યું એથી જ આની મે બધી રીતે સંભાળ રાખી. આને ઠંડીથી પીડા ન થાય ઉષ્ણતાથી સંતાપ ન થાય ક્ષુધાથી કષ્ટ ન થાય, તરસથી આકુળ ન થાય સર્પાદિકૃત ઉપદ્રવોથી આ પીડિત ન થાય ચોરો વડે આ આફતમાં ન ફસાઈ પડે, ડંશ મશક આને કષ્ટ ન આપે વાત સંબંધી રોગાતંકો—જ્વરાદિ રોગો સદ્યોઘાતિ શૂલાદિકોથી આ શરીર દુઃખિત ન થાય પૈત્તિક શ્લૈષ્મિક, સાન્નિપાતિક રોગાતંક આ શરીરને મલિન ન કરે, કર્કશ કઠોર વગેરેના સ્પર્શથી એના સૌન્દર્યનું અપહરણ ન કરે આ પ્રમાણે મે બધી રીતે આ શરીરની ખૂબ રક્ષા કરી હતી પણ હવે હું આ એવા પ્રિય શરીરની સાથે પોતાનો સંબંધ જીવનના અંતિમ ક્ષણ સુધી છોડી રહ્યો છું આમ વિચાર કરીને તે પ્રદેશી

मूलम्—सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । से णं भंते ! सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति तं जहा—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजायरूवरययाइं आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं, तत्थ अन्नयरम्मि कुलम्मि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ ॥ सू० १६६ ॥

छाया—सूर्याभस्य खलु भदन्त ! देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता । स खलु भदन्त ! सूर्याभो देव तस्माद्देवलोकाद् आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण अनन्तरं चयं च्यवत्वा कुत्र

सूरियाभस्स णं भंते ? देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता—" इत्यादि

मूलार्थ—प्रश्न—"सूरियाभस्स णं भंते ? देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त—? सूर्याभदेव की स्थिति कितनी कही गई है—? उत्तर—"गोयमा ? चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता—" हे गौतम ? चार पल्योपम की सूर्याभदेव की स्थिति कही गई है । प्रश्न—"से ण भंते ? सूर्याभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ—" हे भदन्त ? वह सूर्याभ देव उस देवलोकसे आयु क्षय-

---

"सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं काल ठिई पण्णत्ता" इत्यादि.

મૂલાર્થ—પ્રશ્ન "सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता" હે ભદન્ત ! સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ કેટલી કહેવામા આવી છે ? ઉત્તર—"गोयमा ? चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता—" હે ગૌતમ ! સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ ચારપલ્યોપમ જેટલી કહેવામા આવી છે પ્રશ્ન—'से ण भंते ! सूरियामे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ—" હે ભદન્ત ! તે સૂર્યાભદેવ તે દેવલોકથી આયુક્ષય–ભવક્ષય

प्राणपर्याप्त्या४, भाषामनःपर्याप्त्या ५, तद् एवं खलु भो ! सूर्याभेन देवेन दिव्या देवर्द्धिः, दिव्या देवद्युतिः दिव्यो देवानुभावः लब्धः प्राप्तः अभिसमन्वागतः ॥ सू० १६५॥

टीका— 'तए णं से सूरियाभे देवे" इत्यादि—ततः खलु स सूर्याभो देवः अधुनोपपन्नक एव—तत्कालोत्पन्नक एव सन् पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभावं गच्छति पर्याप्तिपञ्चकस्वरूपं यथाः पूर्वं व्यशीतितमसूत्रे गतः। एवम् अनेन कारणेन प्रदेशिराजभवे आदि क्रमावपूर्वकश्रावकधर्माराधनरूपेण आलोचितप्रतिलोचितसमाधिमरणादिरूपेण च कारणेन भो—हे गौतम! सूर्याभदेवेन इय दिव्या देवर्द्धिः—विमानादिरूपा दिव्या देवद्युतिः—शरीराभरणादिकान्तिः, दिव्यो देवानुभावः—देवप्रभावः, लब्धः उपार्जितः, प्राप्तः—स्वाधीभूतः अभिसमन्वागतः—भोग्यत्वेन सम्यगभिमुखमागतः ॥सू० १६५॥

पज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए इंदि पज्जत्तीए, आण पाणपज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए—' ये पांच पर्याप्ति। इस प्र ार से हैं—आहारपर्याप्ति-शरीरपर्याप्ति-इन्द्रियपर्याप्ति-श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति और-भाषा मनःपर्याप्ति,"त एवं खलु भो? सूरियाभेण देवेण दिव्वा देविड्ढी-दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे-लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए—" इस तरह से इस सूर्याभदेवने प्रदेशी राजा के भवमें अन्तिम भवपूर्वक श्रावक धर्म की आराधना की थी फिर-आलोचित प्रतिक्रान्त होकर यह समाधि प्राप्त हुआ था इन्हीं सब कारणों से इसने सूर्याभदेव के पर्याय में यह दिव्य देवर्द्धि विमानादि दिव्य देवद्युति-शरीराभरणादि कान्ति और दिव्यदेवानुभाव-देवप्रभाव उपार्जित किया है प्राप्त किया है अपने अधीन किया है और उसे योग्यरूप होने के कारण अच्छी तरह से उसे भोगा है—

टीकार्थ—स्पष्ट है पांच प्रकार की पर्याप्तियों का स्वरूप पहिले ८३ वें सूत्रमें प्रगट किया गया है ॥सू० १६५॥

पज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणपाण पज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए" ते पांच पर्याप्तिओ आ प्रमाणे छे—आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति ઇन्द्रिय पर्याप्ति श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति अने भाषा मन पर्याप्ति 'तं एवं खलु भो ! सूरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी—दिव्वा देवज्जुई—दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए" आ प्रमाणे ते सूर्याभदेवे प्रदेशी राजाना भवमां अन्तिम भवपूर्वक श्रावक धर्मनी आराधना करी हती अने पछी आलोचित प्रतिक्रांत थईने ते समाधि प्राप्त थयो हतो. आ बधा कारणोथी तेणे सूर्याभदेवना पर्यायमां दिव्य देवर्द्धि विमानादि दिव्यदेवद्युति शरीराभरणादि कांति अने दिव्य देवानुभाव देवप्रभाव उपार्जित कर्या छे, मेळव्या छे स्वाधीन बनाव्यां छे. अने तेने योग्यरूप होवाथी सारी रीते तेनो उपभोग कर्यो छे

टीकार्थ स्पष्ट छे पांच प्रकारनी पर्याप्तिओनुं स्वरूप पहेला ८३ मा सूत्रमां प्रगट करवामां आव्युं छे ॥सू०१६५॥

मूलम्—सूरियाभस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं भंते! सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति तं जहा—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजायरूवरययाइं आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं, तत्थ अन्नयरम्मि कुलम्मि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ ॥ सू० १६६ ॥

छाया—सूर्याभस्य खलु भदन्त! देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता? गौतम! चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। स खलु भदन्त! सूर्याभो देवः तस्माद्देवलोकाद् आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण अनन्तरं चयं च्यवित्वा कुत्र

सूरियाभस्स णं भंते? देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता—" इत्यादि

मूलार्थ—प्रश्न—"सूरियाभस्स णं भंते? देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता-" हे भदन्त—? सूर्याभदेव की स्थिति कितनी कही गई है—? उत्तर—"गोयमा-? चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता—" हे गौतम-? चार पल्योपम की सूर्याभदेव की स्थिति कही गई है। प्रश्न—"से ण भंते-? सूर्याभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ-" हे भदन्त-? वह सूर्याभ देव उस देवलोकसे आयु क्षय-

---

"सूरियाभस्स णं भंते! देवस्स केवइयं काल ठिई पण्णत्ता" इत्यादि.

मूलार्थ—प्रश्न "सूरियाभ स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त! सूर्याभदेवनी स्थिति केटली कहेवामा आवी छे? उत्तर—"गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता—" हे गौतम! सूर्याभदेवनी स्थिति चारपल्येोपम जेटली कहेवामा आवी छे प्रश्न-'से ण भंते! सूरियामे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ—" हे भदन्त! ते सूर्याभदेव ते देवलोकथी आयुक्षय-भवक्षय

प्राणपर्याप्त्या४, भाषामन पर्याप्त्या ५, तद् एष खलु भो ! सूर्याभेन देवेन दिव्या देवर्द्धिः, दिव्या देवद्युतिः दिव्यो देवानुभावः लब्धः प्राप्तः अभिसमन्वागतः ॥ सू० १६५॥

टीका— 'तए ण से सूरियाभे देव" इत्यादि—तत खलु स सूर्याभो देव अधुनोपपन्नक एव—तत्कालोत्पन्नक एव सन पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभाव गच्छति पर्याप्तिपञ्चकस्वरूपं पूर्व त्र्यशीतितमसूत्रे गतं । एवम् अनेन कारणेन प्रदेशिराजभव आस्तिकभावपूर्वकश्रावकधर्माराधनरूपेण आलोचितप्रतिलोचि तसमाधिमरणादिरूपेण च कारणेन भो—हे गौतम ! सूर्याभदेवेन इय दिव्या देवर्द्धि —विमानादिरूपा दिव्या देवद्युति —शरीराभरणादिकान्तिः, दिव्यो देवानुभाव —देवप्रभावः, लब्ध उपार्जितं, प्राप्त —स्वाधीनीभूत अभिसमन्वागतः—भोग्यत्वेन सम्यगभिमुखमागत ॥सू० १६५॥

पञ्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणपाणपज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए—" ये पांच पर्याप्ति । इस प्रकार से हैं—आहारपर्याप्ति-शरीरपर्याप्ति-इन्द्रियपर्याप्ति-श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति और भाषा मन पर्याप्ति,"से एवं खलु गोयमा ! सूरियाभेण देवेण दिव्वा देविड्ढी-दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे-लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए—" इस तरह से इस सूर्याभदेव ने प्रदेशी राजा के भवमें आस्तिकभावपूर्वक श्रावक धर्म की आराधना की थी फिर आलोचित प्रतिक्रान्त होकर यह समाधि प्राप्त हुआ था इन्हीं सब कारणों से इसने सूर्याभदेव के पर्याय में यह दिव्यदेवर्द्धि विमानादि दिव्य देवद्युति-शरीराभरणादि कान्ति और दिव्यदेवानुभाव-देवप्रभाव उपार्जित किया है प्राप्त किया है और स्वाधीन किया है और उस योग्यरूप होने के कारण अच्छी तरह से उस भोगा है—

टीकार्थ—स्पष्ट है पांच प्रकार की पर्याप्तियों का स्वरूप पहिले ८३-वें सूत्रमें प्रकट किया गया है ॥सू० १६५॥

पज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणपाण पज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए" ते पांच पर्याप्तिओ आ प्रमाणे छे-आहार पर्याप्ति शरीर पर्याप्ति ઇन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति अने भाषा मन पर्याप्ति "से एवं खलु गोयमा ! सूरियामेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी—दिव्वा देवजुई-दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए" आ प्रमाणे ते सूर्याभदेव प्रदेशी राजाना भवमां आस्तिक भावपूर्वक श्रावक धर्मनी आराधना करी हती अने पछी आलोचित प्रतिक्रांत थईने ते समाधि प्राप्त थयो हतो. आ बधा कारणोथी तेणे सूर्याभदेवना पर्यायमां दिव्य देवर्द्धि विमानादि दिव्यदेवद्युति शरीराभरणादि कांति अने दिव्य देवानुभाव देवप्रभाव उपार्जित कर्यो छे मेळव्या छे स्वाधीन बनाव्या छे अने तेने योग्यरूप होवाथी सारी रीते तेनो उपभोग कर्यो छे

टीकार्थ स्पष्ट छे पांच प्रकारनी पर्याप्तिओनुं स्वरूप पहेला ८३ मा सूत्रमां प्रकट करवामां आव्युं छे ॥१६५॥

मूलम्—सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । से णं भंते ! सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति तं जहा—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजायरूवरययाइं आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं, तत्थ अन्नयरम्मि कुलम्मि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ ॥ सू० १६६ ॥

छाया—सूर्याभस्य खलु भदन्त ! देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता । स खलु भदन्त ! सूर्याभो देव तस्माद्देवलोकाद् आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेग अनन्तरं चयं च्यवत्वा कुत्र

सूरियाभस्स णं भंते-? देवस्स केव यं कालं ठिई पण्णत्ता—" इत्यादि

मूलार्थ—प्रश्न—"सूरियाभस्स णं भंते-? देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता-" हे भदन्त—? सूर्याभदेव की स्थिति कितनी कही गई है—? उत्तर—"गोयमा-? चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता—" हे गौतम-? चार पल्योपम की सूर्याभदेव की स्थिति कही गई है । प्रश्न—"से ण भंते-? सूर्याभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतर चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ-" हे भदन्त-? वह सूर्याभ देव उस देवलोकसे आयु क्षय-

---

"सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं काल ठिई पण्णत्ता" इत्यादि.

मूलार्थ—प्रश्न "सूरियाभ स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" હે ભદન્ત ! સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ કેટલી કહેવામા આવી છે ? ઉત્તર—"ગોયમા ? चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता—" હે ગૌતમ ! સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ ચારપલ્યોપમ જેટલી કહેવામા આવી છે પ્રશ્ન-'से ण भंते ! सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ—" હે ભદન્ત ! તે સૂર્યાભદેવ તે દેવલોકથી આયુક્ષય-ભવક્ષય

प्राणपर्याप्त्या४, भाषामनःपर्याप्त्या ५, तद् एवं खलु भोः ! सूर्याभेन देवेन दिव्या देवर्द्धिः, दिव्या देवद्युतिः दिव्यो देवानुभावः लब्धः प्राप्तः अभिसमन्वागतः ॥ सू० १६५॥

टीका— 'तए णं से सूरियाभे देवे' इत्यादि—ततः खलु स सूर्याभो देवः अधुनोपपन्नक एव—तत्कालोत्पन्नक एव सन् पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभावं गच्छति पर्याप्तिपञ्चकस्य यः पूर्वं चतुरशीतितमसूत्रे गतः । एवम् अनेन प्रकारेण प्रदेशिराजभवे आर्हत्कभावपूर्वकश्रावकधर्माराधनरूपेण आलोचितप्रतिक्रान्तसमाधिमरणादिरूपेण च कारणेन भोः—हे गौतम ! सूर्याभदेवेन इयं दिव्या देवर्द्धिः—विमानादिरूपा दिव्या देवद्युतिः—शरीराभरणादिकान्तिः, दिव्यो देवानुभावः—प्रभावः, लब्धः उपार्जितः, प्राप्तः—स्वाधीनः, अभिसमन्वागतः—भोग्यत्वेन सम्यगभिमुखमागत ॥सू० १६५॥

पज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणपाणपज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए—' पांच पर्याप्ति । इस प्रकार से है—आहारपर्याप्ति-शरीरपर्याप्ति-इन्द्रियपर्याप्ति-श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति और भाषा मन पर्याप्ति, "तं एवं खलु भो ! सूरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी-दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए—" इस तरह से इस सूर्याभदेवने प्रदेशी राजा के भवमें अर्हन्त भवपूर्वक श्रावक धर्म की आराधना की थी फिर आलोचित प्रतिक्रान्त होकर यह समाधि प्राप्त हुआ था इन्हीं सब कारणों से इसने सूर्याभदेव के पर्याय में यह दिव्य देवर्द्धि-विमानादि दिव्य द्युति-शरीराभरणादि कान्ति और दिव्यदेवानुभाव-देवप्रभाव उपार्जित किया है प्राप्त किया है अपने अधीन किया है और उसे भोग्यरूप होने के कारण अच्छी तरह से उसे भोगा है—

टीकार्थ—स्पष्ट है पांच प्रकार की पर्याप्तियों का स्वरूप पहिले ८३-वें सूत्रमें प्रकट किया गया है ॥सू० १६५॥

पज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणपाणपज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए' ते पांच पर्याप्तिओ आ प्रमाणे छे—आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासो च्छ्वास पर्याप्ति अने भाषा मन पर्याप्ति "तं एवं खलु भो ! सूरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी—दिव्वा देवजुई—दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए" आ प्रमाणे ते सूर्याभदेवे प्रदेशी राजाना भवमां आर्हत श्रावक धर्मनी आराधना करी हती अने पछी आलोचित प्रतिक्रान्त थईने ते समाधि प्राप्त थयो हतो आ बधा कारणोथी तेणे सूर्याभदेवना पर्यायमां दिव्य देवर्द्धि विमानादि दिव्यदेवद्युति शरीराभरणादि कांति अने दिव्य देवानुभाव देवप्रभाव उपार्जित कर्यो छे, मेळव्यो छे स्वाधीन बनाव्यो छे अने तेने भोग्यरूप होवाथी सारी रीते तेनो उपभोग कर्यो छे

टीकार्थ स्पष्ट छे पांच प्रकारनी पर्याप्तिओनुं स्वरूप पहेलां ८३ मा सूत्रमां प्रकट करवामां आव्युं छे ॥१६५॥

टीका—"सूरियाभस्स णं" इत्यादि—गौतमस्वामी पृच्छति—हे भदन्त ! सूर्याभस्य खलु देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? । भगवानाह—हे गौतम ! सूर्याभस्य देवस्य सौधर्मदेवलोके चत्वारि पल्योपमानि—चतुःपल्योपमपरिमिता स्थितिः प्रज्ञप्ता । गौतमस्वामी प्राह—हे भदन्त ! स खलु सूर्याभो देवस्तस्माद् देवलोकात् आयुःक्षयेण—देवसम्बन्ध्यायुः कर्मदलिकनिर्जरणेन, भवक्षयेण देवभवगत्यादिकर्मनिर्जरणेन स्थितिक्षयेण-सौधर्मे कल्पे सूर्याभे विमाने देवानां या दश-सागरोपमस्थितिः प्रोक्ता तत्क्षयेण, अनन्तरं-तत्पश्चात् चयं-देवशरीरं त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? भगवानाह-हे गौतम ! स सूर्याभदेवजीवः सौधर्मदेवलोकाच्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे यानि इमानि-वक्ष्यमाणानि कुलानि भवन्ति, तद्यथा तान्येव दर्शयति आढयानि-समृद्धानि, दीप्तानि-प्रशंसनीय वादुज्ज्व-

टीकार्थ—गौतम स्वामीने प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-! सूर्याभदेव की कितने काल की स्थिति कही गई है—? इसके उत्तर में प्रभुने उनसे कहा—गौतम-! सूर्याभदेवकी चार पल्योपम की स्थिति सौधर्म देवलोक में कही गई है। उसके बाद गौतमने पुनः प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-! जब सूर्याभदेव के देव सम्बन्धी आयुकर्म के दलिकों की निर्जरा हो जावेगी, देव भवरूप गत्यादि कर्म की निर्जरा हो जावेगी, तथा स्थितिक्षय-सौधर्म कल्प में सूर्याभविमान में कितनेक देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है, उनमें—सूर्याभदेव की भी चार पल्योपम की स्थिति वह भी जब क्षपित हो जावेगी तब वह देव शरीर से चवकर कहां जावेगा—? कहां उत्पन्न होगा—? इसके उत्तर में प्रभुने कहा—हे गौतम ? सूर्याभदेव जीव सौधर्म देवलोक से चवकर महाविदेह क्षेत्र में जो ये कुल हैं कि जो—आढय—समृद्ध है, दीप्त

ટીકાર્થ---ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને આ જાતનો પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત ! સૂર્યાભ દેવની સ્થિતિ કેટલા કાલની કહેવાય છે ? એના ઉત્તરમાં પ્રભુએ કહ્યું-ગૌતમ ! સૌધર્મ દેવલોકમાં સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ ચાર પલ્યોપમ જેટલી કહેવામાં આવી છે. ત્યારપછી ગૌતમે ફરી પ્રભુને પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત ! જ્યારે સૂર્યાભદેવના દેવ સંબંધી આયુકર્મના દલિકોની નિર્જરા થઇ જશે ભવક્ષય-દેવભવરૂપ ગત્યાદિ કર્મની નિર્જરા થઇ જશે, તેમજ સ્થિતિક્ષય સૌધર્મ કલ્પમાં સૂર્યાભવિમાનમાં કેટલાક દેવોની ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિમાં કહેવાય છે, તેમાં સૂર્યાભદેવની પણ ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિ કહેવાય છે તે પણ જ્યારે ક્ષપીત થઇ જશે, ત્યારે તે દેવ શરીર ત્યજીને ક્યાં જશે ? ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ? એના જવાબમાં પ્રભુએ કહ્યુ હે ગૌતમ ! સૂર્યાભદેવનો જીવ સૌધર્મ દેવ લોકથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જે કુલો આઢય-સમૃદ્ધ છે,

गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? महाविदेहे वर्षे यानि इमानि कुलानि भवन्ति तद्यथा-आढ्यानि दीप्तानि विपुलानि विस्तीर्णविपुलभवनशयनासनयानवाहनानि बहुधन-बहुजातरूपरजतानि आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तानि विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानानि बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतानि बहुजनस्य अपरिभूतानि तत्र अन्यतमस्मिन् कुले पुत्रतया प्रत्यास्यति ॥ सू० १६६ ॥

भदन्त, एव—स्थितिक्षय के बाद अनन्तर देव शरीर को छोडकर कहां जावेगा ३ कहां उत्पन्न होवेगा ?३ उत्तर—"गोयमा ? महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं जहा—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजायरूवरययाइं—" हे गौतम—? महाविदेह क्षेत्र में जो ये कुल हैं, कि जो—आढ्य हैं—दीप्त हैं—विपुल हैं, विस्तीर्ण—विपुल भवनवाले हैं विस्तीर्ण विपुलशयनासनवाले हैं विस्तीर्ण विपुल यान-वाहनवाले हैं, बहुधनवाले हैं बहुतर जातरूपवाले हैं बहुरजतवाले हैं 'आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहु दासीदास गो महिस गवेलगप्पभूयाइं', बहुजणस्स अपरिभूयाइं— आयोग प्रयोग जिन से व्याप्त हैं रहते हैं, दीनजनों के लिये जहां से प्रचुर मात्रा में भक्तपान प्राप्त होता है, जिन के पास दासी-दास अनेक संख्या में सेवा करने के लिये उपस्थित रहता है, प्रचुर मात्रा में जहां गो—महिष, एवं—अजा भेष आदि पशु कायम बने रहते हैं, तथा—कोईभी जन जिनका तिरस्कार नहीं कर सकता है, 'तत्थ अन्नयरंसि कुलम्मि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ'—' उन कुलों में से किसी एक कुल में पुत्ररूप से उत्पन्न होगा ॥

અને નિશ્ચય પછી દેવ શરીરને ત્યજીને ક્યાં જશે ? ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ? ઉત્તર "गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं जहा—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिन्न विउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधण बहुजायरूव रययाइं" હે ગૌતમ ! મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જે કુલો છે—જે આઢ્ય છે દીપ્ત છે વિપુલ છે, વિસ્તીર્ણ ભવનોવાળા છે વિસ્તીર્ણ વિપુલ શયનાસનવાળાઓ છે વિસ્તીર્ણ વિપુલ યાન-વાહન વાળાઓ છે બહુધન સંપન્ન છે બહુતર જાતરૂપવાળા છે બહુરજતવાળા છે आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगो महिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं" તેમનાથી આયોગ પ્રયોગ વ્યાપૃત થતો રહે છે દીનજનો માટે જ્યાંથી પ્રચુર માત્રામાં ભક્ત-પાન પ્રાપ્ત થતા રહે છે જેમની પાસે દાસીદાસ ઘણી સંખ્યામાં સેવા—ચાકરી કરવા ઉપસ્થિત રહે છે જ્યાં પુષ્કળ માત્રામાં ગાય મહિષ અને અજા, મેષ વગેરે પશુઓ વિદ્યમાન રહે છે તેમજ કોઈ પણ માણસ જેમનો અનાદર કરી શકતો નથી. "तत्थ अन्नयरंसि कुलम्मि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ" તે કુલોમાંથી તે કોઈ પણ એક કુલમાં પુત્રરૂપે ઉત્પન્ન થશે.

टीका—"सूरियाभस्स णं" इत्यादि—गौतमस्वामी पृच्छति—हे भदन्त ! सूर्याभस्य खलु देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? । भगवानाह—हे गौतम ! सूर्याभस्य देवस्य सौधर्मदेवलोके चत्वारि पल्योपमानि—चतुःपल्योपमपरिमिता स्थितिः प्रज्ञप्ता । गौतमस्वामी प्राह—हे भदन्त ! स खलु सूर्याभो देवस्तस्माद् देवलोकात् आयुःक्षयेण—देवसम्बन्ध्यायुः कर्मदलिकनिर्जरणेन, भवक्षयेण देवभवगत्यादिकर्मनिर्जरणेन स्थिति क्षयेण-सौधर्मे कल्पे सूर्याभे विमाने देवानां या दशसागरोपमस्थितिः प्रोक्ता तत्क्षयेण, अनन्तरं-तत्पश्चात् चयं-देवशरीरं त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? भगवानाह-हे गौतम ! स सूर्याभदेवजीवः सौधर्मदेवलोकाच्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे यानि इमानि-वक्ष्यमाणानि कुलानि भवन्ति, तद्यथा तान्येव दर्शयति आढयानि-समृद्धानि, दीप्तानि-प्रशंसनीयत्वादुज्ज्व-

टीकार्थ—गौतम स्वामीने प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-? सूर्याभदेव की कितने काल की स्थिति कही गई है—? इसके उत्तर में प्रभुने उन से कहा—गौतम-? सूर्याभदेवकी चार पल्योपम की स्थिति सौधर्म देवलोक में कही गई है। उसके बाद गौतमने पुनः प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-? जब सूर्याभदेव के देव सम्बन्धी आयुकर्म के दलिकों की निर्जरा हो जावेगी, देव भवरूप गत्यादि कर्म की निर्जरा हो जावेगी, तथा स्थितिक्षय-सौधर्म कल्प में सूर्याभविमान में कितनेक देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है, उनमें—सूर्याभदेव की भी चार पल्योपम की स्थिति वह भी जब क्षपित हो जावेगी तब वह देव शरीर से चवकर कहा जावेगा—? कहा उत्पन्न होगा —? इसके उत्तर में प्रभुने कहा—हे गौतम ? सूर्याभदेव जीव सौधर्म देवलोक से चवकर महाविदेह क्षेत्र मे जो ये कुल है कि जो—आढय—समृद्ध है, दीप्त

ટીકાર્થ--ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને આ જાતનો પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત ! સૂર્યાભ દેવની સ્થિતિ કેટલા કાલની કહેવાય છે ? એના ઉત્તરમા પ્રભુએ કહ્યું-ગૌતમ ! સૌધર્મ દેવલોકમા સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ ચાર પલ્યોપમ જેટલી કહેવામા આવી છે. ત્યારપછી ગૌતમે ફરી પ્રભુને પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત ! જ્યારે સૂર્યાભદેવના દેવ સબધી આયુકર્મના દલિકોની નિર્જરા થઇ જશે ભવક્ષય-દેવભવરૂપ ગત્યાદિ કર્મની નિર્જરા થઇ જશે, તેમજ સ્થિતિક્ષય સૌધર્મ કલ્પમા સૂર્યાભવિમાનમા કેટલાક દેવોની ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિમા કહેવાય છે, તેમા સૂર્યાભદેવની પણ ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિ કહેવાય છે તે પણ જ્યારે ક્ષપીત થઇ જશે, ત્યારે તે દેવ શરીર ત્યજીને ક્યા જશે ? ક્યા ઉત્પન્ન થશે ? એના જવાબમા પ્રભુએ કહ્યુ હે ગૌતમ ! સૂર્યાભદેવનો જીવ સૌ ધર્મ દેવ લોકથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જે કુલો આઢય-સમૃદ્ધ છે,

गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? महाविदेहे वर्षे यानि इमानि कुलानि भवन्ति तद्यथा-आढ्यानि दीप्तानि विपुलानि विस्तीर्णविपुलभवनशयनासनयानवाहनानि बहुधन-बहुजातरूपरजतानि आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तानि विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानानि बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतानि बहुजनस्य अपरिभूतानि तत्र अन्यतरस्मिन् कुले पुत्रतया यास्यति ॥ सू० १६६ ॥

भगवन्, एवं-निश्चितरूप से भव के अनन्तर देव शरीर को छोडकर कहां जावेगा? कहां उत्पन्न होवेगा? उत्तर-"गोयमा? महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं जहा-अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजायरूवरययाइं-" हे गौतम-! महाविदेह क्षेत्र में जो ये कुल हैं, कि जो-आढ्य हैं-दीप्त हैं-विपुल हैं, विस्तीर्ण विपुल भवनवाले हैं विस्तीर्ण विपुलशयनासनवाले हैं विस्तीर्ण विपुल यानवाहनवाले हैं, बहुधनवाले हैं बहुतर जातरूपवाले हैं बहुरजतवाले हैं 'आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं' बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं', बहुजणस्स अपरिभूयाइं- आयोग प्रयोग जिन से व्याप्त रहते हैं, दीनजनों के लिये जहां से प्रचुर मात्रा में भक्तपान प्राप्त होता है, जिन के पास दासी-दास अनेक संख्या में सेवा करने के लिये उपस्थित रहता है, प्रचुर मात्रा में जहां गो-महिष, एवं-अजा भेष आदि पशु कायम बने रहते हैं, तथा-कोईभी जन जिनका तिरस्कार नहीं कर सकता है, "तत्थ अन्नयरंसि कुलंमि पुत्ताए पच्चायाइस्सइ"- उन कुलों में से किसी एक कुल में पुत्ररूप से उत्पन्न होगा ॥

અને નિશ્ચય પછી દેવ શરીરને ત્યજીને ક્યાં જશે? ક્યાં ઉત્પન્ન થશે? ઉત્તર "गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं जहा-अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिन्न विउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधण बहुजायरूव रययाइं" હે ગૌતમ! મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જે કુલો છે- જે આઢ્ય છે દીપ્ત છે વિપુલ છે વિસ્તીર્ણ ભવનોવાળા છે વિસ્તીર્ણ વિપુલ શયનાસનવાળાઓ છે વિસ્તીર્ણ વિપુલ યાન-વાહનવાળાઓ છે બહુધન સંપન્ન છે બહુતર જાતરૂપવાળા છે બહુરજતવાળા છે आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं' તેમનાથી આયોગ પ્રયોગ વ્યાપ્ત થતો રહે છે દીનજનો માટે જ્યાંથી પ્રચુર માત્રામાં ભક્ત-પાન પ્રાપ્ત થતાં રહે છે જેમની પાસે દાસીદાસ ઘણી સંખ્યામાં સેવા-ચાકરી કરવા ઉપસ્થિત રહે છે, જ્યાં પુષ્કળ માત્રામાં ગાય મહિષ અને અજા મેષ વગેરે પશુઓ વિદ્યમાન રહે છે, તેમજ કોઈ પણ માણસ જેમનો અનાદર કરી શકતો નથી. "तत्थ अन्नयरंसि कुलंमि पुत्ताए पच्चायाइस्सइ" તે કુલોમાંથી તે કોઈ પણ એક કુલમાં પુત્રરૂપે ઉત્પન્ન થશે.

टीका—"सूरियाभस्स णं" इत्यादि—गौतमस्वामी पृच्छति—हे भदन्त! सूर्याभस्य खलु देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ?। भगवानाह—हे गौतम! सूर्याभस्य देवस्य सौधर्मदेवलोके चत्वारि पल्योपमानि—चतुःपल्योपमपरिमिता स्थितिः प्रज्ञप्ता। गौतमस्वामी प्राह—हे भदन्त! स खलु सूर्याभो देवस्तस्माद् देवलोकात् आयुःक्षयेण—देवसम्बन्ध्यायुः कर्मदलिकनिर्जरणेन, भवक्षयेण देवभव-गत्यादिकर्मनिर्जरणेन स्थितिक्षयेण-सौधर्मे कल्पे सूर्याभे विमाने देवानां या दश-सागरोपमस्थितिः प्रोक्ता तत्क्षयेण, अनन्तरं-तत्पश्चात् चयं-देवशरीरं त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? भगवानाह-हे गौतम ! स सूर्याभदेवजीवः सौधर्मदेवलोकाच्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे यानि इमानि-वक्ष्यमाणानि कुलानि भवन्ति, तद्यथा तान्येव दर्शयति आढ्यानि-समृद्धानि, दीप्तानि-प्रशंसनीय वादुज्ज्व-

टीकार्थ—गौतम स्वामीने प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-! सूर्याभदेव की कितने काल की स्थिति कही गई है—? इसके उत्तर में प्रभुने उन से कहा—गौतम-! सूर्याभदेवकी चार पल्योपम की स्थिति सौधर्म देवलोक में कही गई है। उसके बाद गौतमने पुनः प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-! जब सूर्याभदेव के देव सम्बन्धी आयुकर्म के दलिकों की निर्जरा हो जावेगी, देव भवरूप गत्यादि कर्म की निर्जरा हो जावेगी, तथा स्थितिक्षय-सौधर्म कल्प में सूर्याभविमान में कितनेक देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है, उनमें—सूर्याभदेव की भी चार पल्योपम की स्थिति वह भी जब क्षपित हो जावेगी तब वह देव शरीर से चवकर कहां जावेगा—? कहां उत्पन्न होगा —? इसके उत्तर में प्रभुने कहा—हे गौतम? सूर्याभदेव जीव सौधर्म देवलोक से चवकर महाविदेह क्षेत्र मे जो ये कुल हैं कि जो—आढय—समृद्ध है, दीप्त

ટીકાર્થ--ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને આ જાતનો પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત! સૂર્યાભ દેવની સ્થિતિ કેટલા કાલની કહેવાય છે? એના ઉત્તરમા પ્રભુએ કહ્યું-ગૌતમ! સૌધર્મ દેવલોકમા સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ ચાર પલ્યોપમ જેટલી કહેવામા આવી છે. ત્યારપછી ગૌતમે ફરી પ્રભુને પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત! જ્યારે સૂર્યાભદેવના દેવ સબંધી આયુકર્મના દલિકોની નિર્જરા થઇ જશે ભવક્ષય-દેવભવરૂપ ગત્યાદિ કર્મની નિર્જરા થઇ જશે, તેમજ સ્થિતિક્ષય સૌધર્મ કલ્પમા સૂર્યાભવિમાનમા કેટલાક દેવોની ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિમા કહેવાય છે, તેમા સૂર્યાભદેવની પણ ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિ કહેવાય છે તે પણ જ્યારે ક્ષપીત થઇ જશે, ત્યારે તે દેવ શરીર ત્યજીને કયા જશે? કયા ઉત્પન્ન થશે? એના જવાબમા પ્રભુએ કહ્યુ હે ગૌતમ! સૂર્યાભદેવનો જીવ સૌ ધર્મ દેવ લોકથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જે કુલો આઢય-સમૃદ્ધ છે,

लानि विपुलानि परिवारादिना विशालानि, तथा विस्तीर्णविपुलभवनशयनाऽऽसन यानवाहनानि, तत्र विस्तीर्णानि-क्षेत्रेण महान्ति, विपुलानि-संख्यया प्रचुराणि भवनानि-गृहाणि शयनानि-शयनीयानि, आसनानि पीठफलकादीनि, यानानि-रथ शकटादीनि, वाहनानि गजाश्वादीनि येषु (कुलेषु) तानि, तथा बहुधनबहुजात रूपरजतानि-तत्र-बहूनि-प्रचुराणि धनानि-गरिम धरिम-मेय-परिच्छेद्यरूपाणि, बहूनि-प्रचुराणि जातरूपाणि-सुवर्णानि रजतानि-रूप्याणि येषु तानि, तथा-आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तानि, तत्र आयोगस्य-अर्थलाभ य प्रयोगा उपाया, संयुक्ता-व्यापृता ये तानि, तथा-विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानानि विच्छर्दितानि-उदारबुद्ध्या बहुपाकेनावक्षिप्तानि अथवा-विच्छर्दितानि-त्यक्तानि दीनेभ्यो दत्तानि प्रचुराणि बहूनि भक्तपानानि यस्तानि, तथा बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतानि-तत्र बहवो दासी-दासा प्रसिद्धाः, प्रभूतानि-प्रचुरा गोमहिषगवेलका-तत्र गो-महिषः प्रसिद्धा गवेलका-अजा येषां येषां तानि, तथा-बहुजनस्य अपरिभूतानि-अपरिभवनीयानि एतादृशानि यानि कुलानि सन्ति तत्र-तेषां कुलेषु मध्य

प्रशंसनीय होने से उज्ज्वल है, विपुल-परिवार आदि जनों की अपेक्षा विशाल है क्षेत्र की अपेक्षा विस्तीर्ण, एवं संख्या की अपेक्षा प्रचुर गृहों वाले हैं, विस्तीर्ण विपुल शयन शय्या-एवं-आसन वाले हैं, पीठ-फलक आदि वाले हैं, रथ शकट-आदिरूप यानों वाले हैं-एवं-गज अश्वादिरूप वाहनों वाले हैं, तथा-प्रचुर गरिम धरिम मेय परिच्छेद्यरूप धनवाले हैं, प्रचुर जातरूप-सुवर्णवाले हैं, प्रचुर रजत-चान्दीवाले हैं, तथा अर्थ के लाभरूप प्रयोग जिनसे व्यापृत हुवे हैं उदार बुद्धि से जिनमें बहुतसा अन्नपान बनवाया जाता है, और—खाने के बाद अवशिष्ट बचता है। अर्थात्-दीनों को देने के लिये जिनमें प्रचुर अन्न-पान तैयार किया जाता है, जिस में बहुत दासी-दास हैं, बहुतही गो महिष और

પ્રશંસનીય હોવાથી ઉજ્જ્વળ છે, વિપુલ-પરિવાર વગેરેના લોકોની દૃષ્ટિએ વિશાળ છે ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ વિસ્તીર્ણ છે, સંખ્યાની દૃષ્ટિએ પ્રચુર ગૃહોવાળા છે, વિસ્તીર્ણ વિપુલ શયન શય્યા અને આસનો વાળા છે પીઠ ફલક વગેરેવાળા છે અને અશ્વ વગેરે રૂપ વાહનો વાળા છે તેમજ પ્રચુર ગરિમ ધરિમ મેય પરિચ્છેદ્યરૂપ ધનવાળા છે પ્રચુર જાતરૂપ-સુવર્ણવાળા છે પ્રચુર રજત-ચાંદીવાળા છે, તથા અર્થલાભરૂપ પ્રયોગ જેમનાથી વ્યાપૃત થયેલ છે, ઉદાર બુદ્ધિથી જેઓ પુષ્કળ અન્નપાન બનાવડાવે છે અને જમ્યા પછી પણ ત્યાં અવશિષ્ટ રહે છે એટલે કે ગરીબોને આપવા માટે જેઓ પ્રચુર અન્નપાન તૈયાર કરાવડાવે છે જેમની પાસે ઘણાં દાસી

अन्यतमस्मिन्—कस्मिंश्चिदेकस्मिन् कुले पुत्रतया—पुत्रत्वेन पुत्रो भूत्वेत्यर्थः प्रत्या यास्यति प्रत्यागमिष्यति पुनर्मानुष भवे जन्म ग्रहीष्यतीत्यर्थः ॥सू० १६६॥

मूलम्—तए णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ। तए णं तस्स दारगस्स माया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोम्माकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि ॥सू०१६७॥

छाया—ततः खलु तस्मिन् दारके गर्भगते एव सति अम्बापित्रोः धर्मे दृढा प्रतिज्ञा भविष्यति। ततः खलु तस्य दारकस्य माता नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अर्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सुकुमालपाणिपादम् अहीनप्रतिपूर्ण-

---

गवेलक अजा-मेष हैं, एवं-जो अनेक जनों द्वारा भी अपरिभूत हैं ऐसे कुलों में से किसी एक कुल में पुत्ररूप से-उत्पन्न होगा. ॥सू० १६६॥

"तएणं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि" इत्यादि

मूलार्थ—"तएणं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि-" जब वह दारक गर्भ में आवेगा-तब इस को गर्भ में आते ही-"अम्मापिउण धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ-" माता-पिता को-धर्म में दृढ प्रतिज्ञा होगी "तएणं तस्स दारगस्स माया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं-" नौ मास साढे सात दिन जब पूरा हो जावेगे तब उस दारक की माता सुकुमार हाथ-पग वाले-"अहीणपडिपुण्णपंचिंदिय-

---

-દાસો છે, ઘણી ગાયો તેમજ મહિષ, ગવેલક અજા, મેષ છે અને જે ઘણા માણસો વડે પણ અપારિભૂતછે એવા કુળોમાંથી તે કોઈ એક કુળમા પુત્રરૂપે જન્મ પામશે ॥સૂ૦૧૬૬॥

"त एणं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि इत्यादि।

મૂલાર્થ—"त एणं तंसिं दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि" જ્યારે તે દારક ગર્ભમા આવશે-ત્યારે તેને ગર્ભમા આવતા જ "अम्मापिउणं धम्मे दढा पइण्णा भाविस्सइ" માતાપિતાને ધર્મમા દૃઢ પ્રતિજ્ઞા થશે "तएणं तस्स दारगस्स माया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टमाण राइंदियाण विइक्कंताण सुकुमालपाणियायं" નવ માસ અને સાઢા સાત દિવસો જ્યારે પૂરા થઈ જશે ત્યારે તે દારકની માતા સુકુમાર હાથપગવાળા "अहीणपडिपुण्णपंचिंदिय सरीर"

पञ्चेन्द्रियशरीर लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेतं मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्ण सुजातसर्वाङ्ग सुन्दराङ्ग शशिसौम्याऽऽकार कान्तं प्रियदर्शन सुरूप दारक प्रजनिष्यते ॥सू० १६७॥

टीका—"तए णं तुसि दारगंसि" इत्यादि-व्याख्या निगदसिद्धा ॥सू० १६७

मूलम्——तए णं तस्स दारगस्स अम्मा पियरो पढमे दिवसे ठिइवडिय करेहिंति, तइयदिवसे चंदसूरदसणिय करिस्सति, छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्सति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइजायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओव लित्ते विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडाविस्सति, मित्त णाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया तेणं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेण सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परि भुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्सति, जिमियभुत्त

सरीर' अहीन परिपूर्ण पांचों इन्द्रियों से युक्त शरीर से "लक्खण० वंजण गुणोववेयं, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंग ससिसोमाकार कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि-" लक्षणव्यञ्जन गुणों वाले, मानोन्मान प्रमाण प्रतिपूर्ण सुजात सर्वाङ्ग सुन्दर शरीर वाले चन्द्रमा के जैसे सौम्य आकार वाले, कान्त प्रियदर्शनयुक्त, रूप-सुरूप सम्पन्न ऐसे, पुत्र को जन्म देगी टीकार्थ-स्पष्ट है ॥सू० १६७॥

અહીન પરિપૂર્ણ પાંચે ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત શરીર વાળા "લક્ખણવંજણગુણોવવેય, માણુમ્માણપ્પમાણપડિપુણ્ણસુજાયસવ્વંગસુંદરંગં સસિસોમાકાર કંતં પિયદંસણ સુરૂવ દારયં પયાહિસિ' લક્ષણ વ્યંજન ગુણોવાળા, માનોન્માન પ્રમાણ પ્રતિપૂર્ણ, સુજાત સર્વાંગ સુંદર શરીરવાળા ચન્દ્ર જેવા સૌમ્ય આકારવાળા કાંત-પ્રિયદર્શન યુક્ત અને સુરૂપ સંપન્ન એવા પુત્રને જન્મ આપશે

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે ॥સૂ૦ ૧૬૭॥

रागयावि य णं समाणा आयता चोक्खा परमसुइभूया त मित्तणाइ-णियगसयणसंबंधिपरिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्का-रिस्संति, सम्माणिस्संति, तस्सेव मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरि-जणस्स पुरओ एव वइस्संति-जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्ह इमं सि दारगंसि गब्भगयंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया तं होउ णं अम्हं एस दारए दढपइण्णे णामेणं। तए णं तस्स दारगस्स अम्मा पियरो नामधेज्ज करिस्संति-दढपइ-ण्णेति। तए णं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेण ठिइवडियं च १, चंदसूरियदंसणावणियं च २, धम्मजागरियं च ३, नामधिज्जकरणं च ४, परंगमणं च ५, पचंकमणं च ६, पच्चक्खाणयं च ७, जेमं-णगं च ८, परिवड्ढावणगं च ९ पजं पावणगं च १०, कन्नवेहणं च ११, संवच्छरपडिलेहणगं च १२ चूडावणयणं च १३, उवणयणं च १४, अन्नाणि य बहूणि गब्भाहाण जम्मणाइयाइ कोउगाइं हया इड्ढिसक्कारसमुदएणं करिस्संति ॥ सू० १६८ ॥

छाया—ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ प्रथमे दिवसे स्थिति-पतितां करिष्यतः, तृतीयदिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनिकां करिष्यतः, षष्ठे दिवसे

'तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो-" इत्यादि

मूलार्थ—"तएणं-" इसके बाद "तस्स दारगस्स-" उस दारकके, "अम्मापियरो-" मातापिता—"पढमे दिवसे—" प्रथम दिवस "ठिइवडिय—" कुलपरम्परा से आगत पुत्र जन्मोत्सव रूप क्रिया-"करेहिंति—" करेंगे-तइयदिवसे "तृतीय दिवस—"चंदसूर दसणावणिय करिस्संति—" चन्द्रदर्शनरूप एवं—सूर्यदर्शनरूपक्रिया

"तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो" इत्यादि।

મૂલાર્થ—"तए णं" ત્યાર પછી "तस्स दारगस्स" તે દારકના "अम्मापियरो" માતાપિતા "पढमे दिवसे" પ્રથમ દિવસે "ठिइपडिय" કુલ પરંપરાગત પુત્ર-જન્મોત્સવ રૂપ વિધિઓ "करेहिंति" કરશે. "तइयदिवसे" ત્રીજા દિવસે "चंदसूर दसणावणियं करिस्संति" ચન્દ્રદર્શન રૂપ અને સૂર્યદર્શનરૂપ ક્રિયાઓ કે જે

जागरिकां जागरिष्यत, एकादशे दिवसे व्यतिक्रान्ते, सम्प्राप्ते द्वादशाहे दिवसे, निर्वृत्ते अशुचिजातकर्मकरणे चोक्ष समार्जितोपलिप्त (गृहं) विपुलम् अशनपान-खाद्यस्वाद्यम् उपस्कारयिष्यत, मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्र्य

जो कि-पुत्र जन्मोत्सव पर की जाती है-करेंगे, "छट्ठे दिवसे जागरियं जागरि सति-' छट्ठ दिन रात्रि जागरणरूप क्रिया करेंगे। "एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे निव्वित्ते असुइ जायकम्मकरणे-" ग्यारहवां दिन जब व्यतीत हो जायेगा और-१२-वां दिन जब प्रारम्भ होगा तब उस दिन जन्म सम्बन्धी अशुचिता की निवृत्ति हो चुकने के बाद-"चोक्खे संमज्जिओवलित्ते विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडाविस्संति-' गृह की शुद्धि क्रिया करेंगे। पहले उसे वे सम्मार्जनी-बुहारी से कूड़ा-कचरा निकाल कर साफ करेंगे और-फिर उसे गोमय-आदि से लीप-पोते करेंगे। इस प्रकार शुद्धिक्रिया हो जाने पर फिर वे अशन-पान-खाद्य, एवं-स्वाद्यरूप चार प्रकार के आहार को पकावेंगे-"मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता, तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता-" इसके बाद वे मित्रजनों को-ज्ञाति जनों को-मातापिता आदिकों को, अपने पुत्रादिकों को, पितृव्यादिक स्वजनों को श्वसुर-पुत्रश्वसुर आदिकों दासी-दास आदिरूप परिजनों को आमन्त्रित करेंगे, फिर-स्नानकर बलिकर्म-काक आदि को अन्न

પુત્ર જન્મોત્સવ સમયે કરવામાં આવે છે કરશે. "छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्संति" છઠ્ઠા દિવસે રાત્રિ જાગરણ કરશે. "एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइ जायकम्म करणे" અગિયારમો દિવસ જ્યારે પૂરો થશે અને બારમો દિવસ પ્રારંભ થશે ત્યારે તે દિવસે જન્મ સંબંધી અશુચિતાની નિવૃત્તિ થઈ જશે તે પછી "चोक्खे संमज्जिओवलित्ते विउलं असणपाणखाइम साइमं उवक्खडाविस्संति" ઘરને શુદ્ધ કરવાનાં કામો કરશે. પહેલાં તેઓ સમ્માર્જની-સાવરણી-થી કચરો સાફ કરશે અને પછી તેને ગોમય વગેરેથી લીંપીને સ્વચ્છ બનાવશે. આ પ્રમાણે શુદ્ધિ ક્રિયા થઈ જવા બાદ પછી તે અશન પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર પ્રકારના આહારોને બનાવડાવશે. मित्तणाइ णियग सयण संबंधि परिजणं आमंतेत्ता, तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय मंगल पायच्छित्ता" ત્યાર પછી તેઓ મિત્રજનોને જ્ઞાતિજનોને, માતાપિતા વગેરેને, પોતાના પુત્રાદિકોને પિતૃવ્યાદિક સ્વજનોને શ્વશુર પુત્ર-શ્વશુર વગેરેને, દાસી દાસ વગેરે પરિજનોને આમંત્રિત કરશે. પછી સ્નાન કરીને બલિકર્મ-કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપશે. કૌતુક મંગલ પ્રાયશ્ચિત્ત કરશે. सुद्धप्पावेसाइं

ततः पश्चात् स्नातौ कृतबलिकर्माणौ कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तौ शुद्धप्रवेश्यानि माङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितौ अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरौ भोजनमण्डपे सुखासनवरगतौ तेन मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्धं विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आस्वादयन्तौ विस्वादयन्तौ परिभुञ्जानौ परिभाजयन्तौ एवमेव खलु विहरिष्यतः। जिमितभुक्तोत्तरागतावपि च खलु सन्तौ आचान्तौ चोक्षौ परमशुचिभूतौ तं मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं विपुलेन वस्त्र-गन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करिष्यतः सम्मानयिष्यतः, तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजन-

---

आदिका भाग करेंगे कौतुक-मङ्गलप्रायश्चित्त करेंगे-"सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा भोयणमंडवंसि-" फिर शुद्ध माङ्गलिकवस्त्रों को जो कि-राजसभा में जानेके लिये पहिरने योग्य होते हैं उन्हें पहिरेंगे, बाद में अल्प वजनवाले-और-विशेष मूल्यवाले ऐसे अलङ्कारों को धारण करेंगे, इस तरह सब प्रकारसे सजधजकर, फिर-भोजनमण्डप में-भोजनशाला में-"सुहासणवरगया-" अपने-अपने श्रेष्ठ आसन पर बैठ कर-"तेणं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विह-रिस्संति-" उन मित्र ज्ञाति निजक स्वजन सम्बन्धिजन एवं-परिजन के साथ उस विपुल अशन-पान खाद्य, एवं-स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का पहले आस्वादन करेंगे-फिर विशेष आस्वादन करेंगे, उसे रुचिपूर्वक खायेंगे, एक दूसरे को देंगे-"जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा, परमसुइभूया तं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति,

---

मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा भोयणमंडवंसि" પછી રાજ્યસભામાં જવા માટે પહેરવા યોગ્ય શુદ્ધ માંગલિક વસ્ત્રો ધારણ કરશે ત્યાર બાદ અલ્પભારવાળાં અને વિશેષ કીમતી એવા અલંકારો ધારણ કરશે આ પ્રમાણે સર્વ રીતે સુસજ્જ થઈને પછી તેઓ ભોજન મંડપમાં-ભોજનશાળામાં-"सुहासणवरगया" પોતપોતાના શ્રેષ્ઠ આસનો પર બેસીને "तेणं मित्तणाइणियग-सयणसंबंधिपरिजणेणं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति" તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધિજનો અને પરિજનોની સાથે તે વિપુલ અશન પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહારનો પહેલા આસ્વાદન કરશે પછી વિશેષ આ-સ્વાદન કરશે તેને સુરૂચિપૂર્ણ થઈને જમશે પરસ્પર એક બીજાઓને આપશે जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा, परमसुइभूया तं मित्तणाइ-णियगसयणसंबंधि परिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति,

जागरिका जागरिष्यतः, एकादशे दिवसे व्यतिक्रान्ते, सम्प्राप्त द्वादशाह दिवसे, निर्वृत्ते अशुचिजातकर्मकरणे चोक्षे समार्जितोपलिप्त (गृह) विपुलम् अशनपान खाद्यस्वाद्यम् उपस्कारयिष्यतः, मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्र्य

जो कि–पुत्र जन्मोत्सव पर की जाती है–करेंगे, "छट्ठे दिवसे जागरिय जागरिं सति–' छठे दिन रात्रि जागरणरूप क्रिया करेंगे। "एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे निव्वित्ते असुइ जायकम्मकरणे–" ग्यारहवां दिन जब व्यतीत हो जावेगा और–१२–वां दिन जब प्रारम्भ होगा तब उस दिन जन्म सम्बन्धी अशुचिता की निवृत्ति हो चुकने के बाद–"चोक्खे सम्मज्जि ओवलित्ते विउलं असण पाण खाइम साइम उवक्खडाविस्सति–' गृह की शुद्धि क्रिया करेंगे। पहले उस वे सम्मार्जनी–बुहारी से कूडा–कचरा निकाल कर साफ करेंगे और–फिर उसे गोमय–आदि से लीप–पोत करेंगे। इस प्रकार शुद्धिक्रिया हो जाने पर फिर वे अशन–पान–खाद्य, एवं–स्वाद्यरूप चार प्रकार के आहार को पकावेंगे–"मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता, तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता–" इसके बाद वे मित्रजनों को–ज्ञाति के जनों को–मातापिता आदिकों को, अपने पुत्रादिकों को, पितृव्यादिक स्वजनों को श्वश्वशुर-पुत्रश्वशुर आदिको दासी-दास आदिरूप परिजनों को आमन्त्रित करेंगे, फिर–स्नानकर बलिकर्म-काक आदि को अन्न

પુત્ર જન્મોત્સવ સમયે કરવામાં આવે છે કરશે. "छट्ठे दिवस जागरिय जागरि स्सति" છઠ્ઠા દિવસે રાત્રિ જાગરણ કરશે. "एक्कारसमे दिवस वीइक्कंत संपत्त बार ह दिवसे णिव्वित्त असुइ जायकम्म करण" અગિયારમો દિવસ જ્યારે પૂરો થશે અને બારમો દિવસ પ્રારંભ થશે ત્યારે તે દિવસે જન્મ સંબંધી અશુચિતાની નિવૃત્તિ થઈ જશે તે પછી "चोक्ख सम्मज्जिओवलित्त विउलमसणपाणखाइम साइम उवक्खडा विस्सति' ઘરને શુદ્ધ કરવાના કામો કરશે. પહેલાં તેઓ સમ્માર્જની–સાવરણી–થી કચરો સાફ કરશે અને પછી તેને ગોમય વગેરેથી લીંપીને સ્વચ્છ બનાવશે આ પ્રમાણે શુદ્ધિ ક્રિયા થઈ જવા બાદ પછી તે અશન પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર પ્રકારના આહારોને બનાવડાવશે. मित्तणाइ णियग सयण संबंधि परिजण आमंतेत्ता, तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय मंगल पायच्छित्ता' ત્યાર પછી તેઓ મિત્રજનોને જ્ઞાતિજનોને માતાપિતા વગેરેને, પોતાના પુત્રાદિકોને પિતૃવ્યાદિક સ્વજનોને, શ્વશુર પુત્ર શ્વશુર વગેરેને, દાસી દાસ વગેરે પરિજનોને આમંત્રિત કરશે. પછી સ્નાન કરીને બલિકર્મ–કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપશે કૌતુક મંગલ પ્રાયશ્ચિત્ત કરશે. गुढप्पावमार

धयक्करणं च ४, परगमनं च (पर्यङ्गनं च) ५ प्रचङ्क्रमणकं च ६ प्रत्याख्यानकं च ७ जेमनकं च ८ प्रतिवर्धापनकं च ९ प्रजल्पनकं च १० कर्णवेधनं च ११ संवत्सरप्रतिलेखनकं १२ चूडापनयनं च १३ उपनयनं च १४ अन्यानि च बहूनि गर्भाधानजन्मादिकानि कौतुकानि महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन करिष्यतः ॥ सू० १६८ ॥

टीका-"तए णं तस्स" इत्यादि-ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ प्रथमे दिवसे-जन्मदिने स्थितिपतितां-स्थित्या-कुलमर्यादया पतिता-समागता

-२ धम्मजागरियं च-३ नामधिज्जकरणं च-४ परंगमणं च-५ पचंकमणं च-६ पच्चक्खाणयं च-७ जेमणगं च-८ पडिवद्धावणगं च-९ पजंपावणगं च-१० कन्नवेहणं च-११ संवच्छरपडिलेहणग च-१२" क्रमशः-जब वे स्थितिपतित-१चंद्रसूर्यदर्शन-२ धर्मजागरण-३ नामकरण-४ इन उत्सवों को करचुकेगे-तब इनके बाद-परमगमन५ प्रचङ्क्रमण-६ प्रत्याख्यान-७ अन्नप्राशन-८ प्रतिवर्धापन-९ प्रजल्पनक-१० कर्णवेधन-११ संवत्सर प्रतिलेखनक-१२ "चूडावणयणं-१३ उवणयणं च-१४ अन्नाणिय बहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइं कोउगाइं महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं करिस्संति-" चूडानपयन, और-१४ उपनयल इन अवशिष्ट उत्सवों को करेगे. तथा-इनके अतिरिक्त और भी बहुत से गर्भाधानादि सम्बन्धी अपनी ऋद्धि के अनुरूप सत्कार करने आदिरूप से करेगे-।

टीकार्थ-उस दारक के बालक मातापिता प्रथम जन्मदिवस के समय कुल मर्यादासे चली आई पुत्रजन्मोत्सव क्रिया करेंगे, इसी के निमित्त तीसरे दिन वे

च ३ नामधिज्जकरणं च ४, परंगमणं च ५, पचंकमणं च ६, पच्चक्खाणयं च ७, जेमणग च ८, पडिबद्धावणगं च ९, पजंपावणगं च १०, कन्नवेहणं च ११, संवच्छरपडिलेहणगं च १२," અનુક્રમે જ્યારે તેઓ સ્થિતિ પ્રતિજ્ઞ ૧ ચન્દ્ર સૂર્યદર્શન ૨, ધર્મજાગરણ ૩, નામકરણ ૪, આ ઉત્સવો ઉજવી લેશે ત્યાર બાદ પરગમન ૫, પ્રચંક્રમણ ૬, પ્રત્યાખ્યાન ૭, અન્ન પ્રાશન ૮, પ્રતિવર્ધાપન ૯, પ્રજલ્પનક ૧૦ કર્ણવેધન ૧૧, સંવત્સર પ્રતિલેખનક ૧૨, "चूडावणपणं १३, उवणयणं च १४, अन्नाणिय बहूणि गब्भाहाण जम्मणाइयाइं कोउगाइं महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं करिस्संति" ચૂડાપનયન અને ૧૪ ઉપનયન આ અવશિષ્ટ ઉત્સવો ઉજવશે તેમજ બીજા પણ ઘણા ગર્ભાધાન, સંબંધી સત્કાર કરવારૂપ કાર્યો પોતાની ઋદ્ધિ અનુસાર કરશે.

ટીકાર્થ:—તે દારકના માતાપિતા જન્મને પહેલે દિવસે કુલપરંપરાગત પુત્ર જન્મોત્સવ ક્રિયાઓ કરશે. એ નિમિત્તે જ ત્રીજા દિવસે તેઓ ચન્દ્ર-સૂર્યદર્શન કરશે

स्वधिपरिजनस्य पुरतः एवं वदिष्यतः—यस्मात् खलु देवानुप्रियाः ! आवयोः अस्मिन् दारके गर्भगते एव सति धर्मे दृढा प्रतिज्ञा जाता, तद् भवतु खलु आवयोः एष दारको दृढप्रतिज्ञो नाम्ना । ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बा पितरौ नामधेयं करिष्यतः दृढप्रतिज्ञ इति । ततः खलु तस्य अम्बापितरौ अनुपूर्वेण स्थितिपतितां च १, चन्द्रसूर्यदर्शनिकां च २, धर्मजागरिकां च ३, नाम

समाणिस्संति—" भोजन कर चुकने के अनन्तर फिर वे अपने-अपने उपवेशन (बैठने के) स्थानपर बैठ कर शुद्ध जल से आचमन कर चोखे होंगे, इस तरह परमशुचिभूत हुए वे—मित्र, ज्ञाति, निजक स्वजन, सम्बन्धि परिजनों को विपुल वस्त्र गन्ध माल्य अलङ्कारों से सत्कृत करेंगे । एवं—मानपूर्वक उनका आदर करेंगे—"त सव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ एवं वइस्संति—" फिर वे उन्हीं मित्र ज्ञाति-निजक-स्वजन सम्बन्धी परिजनों के समक्ष इस प्रकार कहेंगे "जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया" हे देवानुप्रियो ! जिस कारण से इस दारक के गर्भ में आते ही हम लोगों की धर्म में दृढ प्रतिज्ञा हुयी, "तं होउ णं अम्हं एस दारए दढपइण्णे णामेणं—" इस कारण यह हमारा दारक दृढप्रतिज्ञ इस नामवाला हो—"तएणं तस्स दारगस्स अम्मा पियरो नामधेज्जं करिस्संति दढपइण्णत्ति—" इस तरह उस दारक के मातापिता उसका दृढ प्रतिज्ञ ऐसा नाम करेंगे । "तएणं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं च १ चंदसूरियदंसणावणियं च

समाणिस्संति" भोजन बाद तेओ पोतपोताना उपवेशन स्थानपर बेसीने शुद्ध जळथी आचमन करीने पवित्र थशे. आ प्रमाणे परमशुचिभूत थयेला ते मित्र ज्ञाति निजक, स्वजन, संबंधी परिजनोने विपुल वस्त्र गंध माल्य अलंकारोथी सत्कृत करशे. अने सन्मानपूर्वक तेमनो आदर करशे "तासेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ एवं वइस्संति" पछी तेओ ते मित्र ज्ञाति निजक स्वजन-संबंधी परिजनोनी सामे आ प्रमाणे कहेशे—"जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया" हे देवानुप्रियो ! आ दारक ज्यारथी अमारा मनमां आव्यो छे त्यारपछी अमारी मनमां धर्म प्रत्ये दृढ प्रतिज्ञा थयी छे "तं होउ णं अम्हं एस दारए दढपइण्णे णामेणं" आथी अमारो आ दारक दृढ प्रतिज्ञ आ नामवाळो थाय "तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करिस्संति दढपइण्णोत्ति" आ प्रमाणे ते दारकना मातापिता तेनुं दृढप्रतिज्ञ एवुं नाम राखशे. "तएणं तस्स अम्मा पियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं च १ चंदसूरियदंसणावणियं च २ धम्मजागरियं

धेयकरणं च ४, परगमनं च (पर्यङ्गनं च) ५ प्रचङ्क्रमणकं च ६ प्रत्याख्यानकं च ७ जेमनकं च ८ प्रतिवर्धापनकं च ९ प्रजल्पनकं च १० कर्णवेधनं च ११ संवत्सरप्रतिलेखनकं १२ चूडापनयनं च १३ उपनयनं च १४ अन्यानि च बहूनि गर्भाधानजन्मादिकानि कौतुकानि महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन करिष्यतः ॥ सू० १६८ ॥

टीका-"तए णं तस्स" इत्यादि-ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ प्रथमे दिवसे-जन्मदिने स्थितिपतितां-स्थित्या-कुलमर्यादया पतिता-समागता

-२ धम्मजागरियं च-३ नामधिज्जकरणं च-४ परंगमणं च-५ पचंकमणं च-६ पच्चक्खाणयं च-७ जेमणगं च-८ पडिवद्धावणगं च-९ पजपावणगं च-१० कन्नवेहण च-११ संवच्छरपडिलेहणग च-१२" क्रमशः-जब वे स्थितिपतित -१चंद्रसूर्यदर्शन-२ धर्मजागरण-३ नामकरण-४ इन उत्सवों को करचुकेंगे-तब इनके बाद-परमगमन५ प्रचङ्क्रमण-६ प्रत्याख्यान-७ अन्नप्राशन-८ प्रतिवर्धापन-९ प्रजल्पनक-१० कर्णवेधन-११ संवत्सर प्रतिलेखनक-१२ "चूडावणयणं-१३ उवणयणं च-१४ अन्नाणिय बहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइ कोउगाइ महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं करिस्संति-" चूडानपयन, और-१४ उपनयन इन अवशिष्ट उत्सवों को करेगे. तथा-इनके अतिरिक्त और भी बहुत से गर्भाधानादि सम्बन्धी अपनी ऋद्धि के अनुरूप सत्कार करने आदिरूप से करेगे-।

टीकार्थ-उस दारक के बालक मातापिता प्रथम जन्मदिवस के समय कुल मर्यादासे चली आई पुत्रजन्मोत्सव क्रिया करेंगे, इसी के निमित्त तीसरे दिन वे

च ३ नामधिज्जकरणं च ४, परंगमणं च ५, पचंकमणं च ६, पच्चक्खाणय च ७, जेमणग च ८, पडिबद्धावणगं च ९, पजंपावणगं च १०, कन्नवेहणं च ११, सवच्छरपडिलेहणग च १२," અનુક્રમે જયારે તેઓ સ્થિતિ પ્રતિત ૧ ચન્દ્ર સૂર્યદર્શન ૨, ધર્મજાગરણ ૩, નામકરણ ૪, આ ઉત્સવો ઉજવી લેશે ત્યાર બાદ પરગમન ૫, પ્રચઙ્ક્રમણ ૬, પ્રત્યાખ્યાન ૭, અન્ન પ્રાશન ૮, પ્રતિવર્ધાપન ૯, પ્રજલ્પનક ૧૦ કર્ણવેધન ૧૧, સવત્સર પ્રતિલેખનક ૧૨, "चूडावणयणं १३, उवणयणं च १४, अन्नाणिय बहूणि गब्भाहाण जम्मणाइयाइं कोउगाइं महया इड्ढि सक्कारसमुदएणं करिंसति" ચૂડાપનયન અને ૧૪ ઉપનયન આ અવશિષ્ટ ઉત્સવો ઉજવશે તેમજ બીજા પણ ઘણા ગર્ભાધાન સબધી સત્કાર કરવારૂપ કાર્યો પોતાની ઋદ્ધિ અનુસાર કરશે.

ટીકાર્થ:—તે દારકના માતાપિતા જન્મને પહેલે દિવસે કુલપરંપરાગત પુત્ર જન્મોત્સવ ક્રિયાઓ કરશે. એ નિમિત્તે જ ત્રીજા દિવસે તેઓ ચન્દ્ર-સૂર્યદર્શન કરશે

पुत्रजन्म रसवरूपा क्रिया, तां करिष्यतः, तृतीयदिवसं चन्द्रसूर्यदर्शनिकां—चन्द्र दर्शन-सूर्यदर्शनरूपां पुत्रस्य मोत्सवविशेषलक्षणां प्रक्रियां करिष्यतः, षष्ठ दिवस जागरिका रात्रिजागरणरूपां क्रियां जागरिष्यत —करिष्यतः, एकादशे दिवसे व्य तिक्रान्ते—व्यतीते समाप्ते—समागते द्वादशाह-द्वादशम् अहो यस्मिन् तस्मिन् सादृशे दिवसे द्वादशाहे दिवसे इत्यर्थः, अशुचिजातकर्मकरणे—अशुचीतां—जन्मा शौचवतां कुटुम्बितां जातकर्मणः —नवजातशिशुसम्बन्धिसंस्कारस्य करण—विधान, तस्मिन् निवृत्ते समाप्ते सति जन्माशौचनिवर्तनानन्तरमित्यर्थः, चोक्षे-स्वच्छ, समार्जितोपलिप्ते-समार्जित—मार्जन्या कचवरापनयनेन सशोधिते उपलिप्ते—गोमया दिना कृतलेप गृहे, विपुलं—प्रचुरम् अशनपानखाद्यस्वाद्यम् उपस्कारयिष्यत —पाच यिष्यतः मित्रज्ञाति निजक-स्वजन-सम्बन्धि-परिजन-तत्र मित्राणि—सुहृद, ज्ञातय मातापिताभ्रात्रादय, निजकाः—स्वकीयाः पुत्रादय, स्वजनाः—पितृव्य दयः सम्ब न्धिन स्वश्रुरपुत्रश्वशुरादयः, परिजनो-दासी-दासादि, एतेषा समाहारे तद् आमन्त्र्य, तत पश्चात् स्नातौ-कृतस्नानौ कृतबलिकर्माणौ—काकादिभ्यः कृता-

चन्द्र—सूर्य दर्शनरूप क्रिया करेंगे। अर्थात्—नव जात शिशु को चन्द्र—सूर्यका दर्शन करावेंगे—। जब ग्यारहवां दिन व्यतीत हो जायगा, और—१२ बारहवां दिन प्रारम्भ हो जावेगा तब वे जातकर्म क्रिया करेंगे, इस क्रिया में—नव जात शिशु के उत्पन्न हो जाने से अशुचिता कुटुम्ब के लोगों में मानी जाती है, अर्थात् जन्म सम्बन्धी अशुचिता इस दिन समाप्त हो जाती है, घर वगैर ह की लिपाई पोताई की जाती है वस्त्रों को धुलवाकर स्वच्छ कराया जाता है। इस तरह अशुचि व्यपरोपण करके फिर वे अशन आदिरूपचारों प्रकार क आहार को बनवायेंगे और—अपने मित्र—सुहृज्जनों को माता-पिता-भाई आदिरूप ज्ञातिजनों को, पुत्रादिरूप निजजनों को, पितृव्य—आदिरूप—स्वजनों को, अपन श्वशुर एव-पुत्र श्वशुर आदि सम्बन्धिजनोंको, एव—दासीदास आदि परिवारक

એટલે કે નવજાત શિશુને ચન્દ્ર-સૂર્યના દર્શન કરાવશે જ્યારે અગિયારમો દિવસ પૂરો થશે અને બારમો દિવસ આરંભ થશે ત્યારે તેઓ જાતકર્મ વિધિ કરશે. આ વિધિમાં નવજાત શિશુના જન્મથી કુટુંબના લોકોમાં જે અશુચિતા મનાય છે તેને સાફ-સફાઈ વગેરે કરીને દૂર કરવામાં આવે છે એટલે કે જન્મ સંબંધી અશુચિતા આ દિવસે મટી જાય છે ઘર વગેરે લીંપવામાં આવે છે વસ્ત્રો ધોવડાવી સ્વચ્છ કરવામાં આવે છે આ પ્રમાણે અશુચિ વ્યપરોપણ કરીને પછી તેઓ અશન પાન વગેરે રૂપ ચાર પ્રકારના આહારો બનાવડાવશે અને પોતાના મિત્ર સુહૃદ્ જન માતા પિતા ભાઈ વગેરે રૂપ જ્ઞાતિજનોને પુત્રાદિરૂપ નિજજનોને પિતૃવ્ય વગેરે રૂપ સ્વ જનોને પોતાના શ્વશુર અને પુત્ર શ્વશુર વગેરે સંબંધીજનોને અને દાસીદાસ વગેરે

न्नभागौ कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तौ—कृतानि सम्पादितानि कौतुकानि—मषीतिलकादीनि मङ्गलानि-मङ्गलकराणि दुःस्वप्नादिफलनिवारणार्थं सर्षपदध्यक्षतादीनि तान्येव प्रायश्चित्तानि अवश्यकरणीयत्वात् याभ्यां तौ तथा, शुद्धप्रवेश्यानि-शुद्धानि पवित्राणि स्वच्छानि च प्रवेश्यानि राजसभाप्रवेशयोग्यानि, मङ्गल्यानि-मङ्गलजनकानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितौ-सुष्ठुतया स्वशरीरे धारितवन्तौ, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरौ-तत्र अल्पानि-स्तोकभाराणि महार्घाणि-महामूल्यानि आभरणानि-भूषणानि, तैः अलङ्कृतं-भूषितं शरीरं ययोस्तौ तथा, भोजनमण्डपे-भोजनशालायां, सुखासनवरगतौ—निजनिजश्रेष्ठासने सुखरूपेण समुपविष्टौ सन्तौ तेन मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्धं विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आस्वादयन्तौ, परिभुञ्जानौ-रुचिपूर्वकं भुञ्जानौ, परिभाजयन्तौ—अन्येभ्यः प्रयच्छन्तौ एवमेव-अनयैव रीत्या खलु विहरिष्यतः-स्थास्यतः। जिमितभुक्तोत्तरागतावपि-जिमितौ भुक्तवन्तौ भुक्तोत्तर-भोजनोत्तरकालम् आगतौ-निजनिजोपवेशनस्थाने समागतौ

परिजनों को जीमने के लिये आमन्त्रित करेगे.। फिर स्नान से, काकआदिकों के लिये-कृतान्न विभागसे मषीतिलकादिकरूप कौतुकों से, मङ्गलकर दुःस्वप्न आदि अवाञ्छनीय फल की निवृत्ति के लिये सरसों-दधि-अक्षतरूप प्रायश्चित्त से निपटकर राजसभा मे प्रवेश के समय पहनने योग्य स्वच्छ-पवित्र-माङ्गलिकवस्त्रों को अच्छी तरह पहनकर, एवं—अल्पभारवाले अमोल अलङ्कारों से शरीर को सुशोभित करनेके वाद भोजनशालामें आवे गे, और—वहांपर अपने योग्य स्थापित श्रेष्ठ आसनपर बैठकर आमन्त्रित होकर आये हुवे उन मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन सम्बन्धीजन के साथ रुचिपूर्वक भोजन करेगे, एक दूसरे के लिये मने विनोद करते हुवे भोजन करलेने की क्रिया समाप्त हो जावेगी, तब वे हाथ मुख धोकर अपने स्थानपर आकर विराजमान हो जावेगे, वहां शुद्धोदक

પરિજનોને જમવા માટે આમંત્રિત કરશે. પછી સ્નાનથી, કાગડા વગેરેને અન્નભાગ આપવાથી મષીતિલક વગેરેરૂપ કૌતુકોથી મંગલ કરીને દુઃસ્વપ્ન વગેરે અવાછનીય ફળની નિવૃત્તિ માટે સરસવ, દધિ, અક્ષતરૂપ પ્રાયશ્ચિતથી નિવૃત્ત થઈને રાજસભામા જવા યોગ્ય વસ્ત્રો સારી રીતે પહેરીને અને અલ્પભારયુક્ત બહુ કીમતી અલંકારોથી શરીરને સુશોભિત કરીને પછી તે ભોજનશાળામા જશે, અને ત્યા પોતાને યોગ્ય સ્થાપિત શ્રેષ્ઠ આસનો પર બેસીને આમંત્રિત મહેમાનો—મિત્ર—જ્ઞાતિ-નિજક સ્વજન-સંબંધીજન અને પરિજનોની સાથે રૂચિપૂર્વક જમશે. મનોવિનોદ કરતા એકબીજાને પીરસાવશે આ પ્રમાણે આનંદપૂર્વક જમવાનું કામ પુરૂં થઈ જશે ત્યાર પછી તેઓ હાથ મુખ ધોઈને પોતપોતાના સ્થાનપર આવીને વિરાજમાન થઈ જશે. ત્યા શુદ્ધોદ-

पुत्रजन्म रसवरूपा क्रिया, तां करिष्यत, तृतीयदिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनिकां—चन्द्र दर्शन-सूर्यदर्शनरूपां पुत्रज मोत्सवविशेषलक्षणां प्रक्रियां करिष्यत, षष्ठे दिवस जागरिका रात्रिजागरणरूपां क्रियां जागरिष्यतः—करिष्यत, एकादश दिवसे व्य तिक्रान्ते—व्यतीत सम्प्राप्त—समागत द्वादशाह—द्वादशम् अहो यस्मिन् तत्तस्मिन् तादृशे दिवसे द्वादशाहे दिवसे इत्यर्थ, अशुचिजातकर्मकरणे—अशुचीता—जन्मा शौचवतां कुटुम्बितां जातकर्मण—नवजातशिशुसम्बन्धिसंस्कारस्य करणे—विधान, तस्मिन् निवृत्ते समाप्त सति जन्माशौचनिवर्तनानन्तरमित्यर्थः, चोक्षे-स्वच्छ, समार्जितोपलिप्ते-संमार्जिते—मार्जन्या कचवरापनयनेन सशोभित उपलिप्ते—गोमयादिना कृतलेप गृहे, विपुलं—प्रचुरम् अशनपानखाद्यस्वाद्यम् उपस्कारयिष्यतः—पाचयिष्यत मित्र-ज्ञाति निजक-स्वजन-सम्बन्धि-परिजन-तत्र मित्राणि—सुहृद',ज्ञातय मातापितृभ्रात्रादयः, निजकाः—स्वकीया पुत्रादयः, स्वजनाः—पितृव्य दय सम्बन्धिन स्वश्वशुरपुत्रश्वशुरादयः, परिजनो-दासी-दासादि, एतेषां समाहारे तद् आमन्त्र्य, तत पश्चात् स्नातौ—कृतस्नानौ कृतबलिकर्माणौ—काकादिभ्यः कृता

चन्द्र—सूर्य दर्शनरूप क्रिया करेग। अर्थात्—नव जात शिशु को चन्द्र—सूर्यका दर्शन करायेगे—। जब ग्यारहवां दिन व्यतीत हो जायेगा, और-१२ बारहवां दिन प्रारम्भ हो जावेगा तब वे जातकर्म क्रिया करेग, इस क्रिया में—नव जात शिशु के उत्पन्न हो जाने से अशुचिता कुटुम्ब क लोगों में मानी जाती है, अर्थात् जन्म सम्बन्धी अशुचिता इस दिन समाप्त हो जाती है, घर वगैर ह की लिपाइ पोताइ की जाती है वस्त्रों को धुलवाकर स्वच्छ कराया जाता है। इस तरह अशुचि व्यपरोपण करके फिर व अशन आदिरूप चारों प्रकार क आहार को बनवायेंगे और-अपने मित्र—सुहृज्जनों को माता पिता-भाइ आदिरूप ज्ञातिजनों को, पुत्रादिरूप निजजनों को, पितृव्य—आदिरूप—स्वजनों को, अपने श्वशुर एव-पुत्र श्वशुर आदि सम्बन्धिजनोंको, एवं—दासीदास आदि परिचारक

એટલે કે નવજાત શિશુને ચન્દ્ર-સૂર્યના દર્શન કરાવશે જ્યારે અગિયારમો દિવસ પૂરો થશે અને બારમો દિવસ પ્રારંભ થશે ત્યારે તેઓ જાતકર્મ વિધિ કરશે. આ વિધિમાં નવજાત શિશુના જન્મથી કુટુંબના લોકોમાં જે અશુચિતા મનાય છે તેને સાફ-સફાઈ વગેરે કરીને દૂર કરવામાં આવે છે એટલે કે જન્મ સંબંધી અશુચિતા આ દિવસે મટી જાય છે. ઘર વગેરે લીંપવામાં આવે છે વસ્ત્રો ધોવડાવી સ્વચ્છ કરવામાં આવે છે આ પ્રમાણે અશુચિ વ્યપરોપણ કરીને પછી તેઓ અશન પાન વગેરે રૂપ ચાર પ્રકારના આહારો બનાવડાવશે અને પોતાના મિત્ર સુહૃદ્ જન માતા પિતા ભાઈ વગેરે રૂપ જ્ઞાતિજનોને પુત્રાદિરૂપ નિજજનોને પિતૃવ્ય વગેરે રૂપ સ્વજનોને પોતાના શ્વશુર અને પુત્ર શ્વશુર વગેરે સંબંધીજનોને અને દાસીદાસ વગેરે

नभागौ कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तौ—कृतानि सम्पादितानि कौतुकानि—मषीतिलकादीनि मङ्गलानि-मङ्गलकराणि दुःस्वप्नादिफलनिवारणार्थं सर्षपदध्यक्षतादीनि तान्येव प्रायश्चित्तानि अवश्यकरणीयत्वात् याभ्यां तौ तथा, शुद्धप्रवेश्यानि-शुद्धानि पवित्राणि स्वच्छानि च प्रवेश्यानि राजसभाप्रवेशयोग्यानि, मङ्गल्यानि-मङ्गलजनकानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितौ-सुष्ठुतया धारीति धारितवन्तौ, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरौ-तत्र अल्पानि-स्तोकभाराणि महार्घाणि-महामूल्यानि आभराणिनि-भूषणानि, तैः अलङ्कृतं-भूषितं शरीरं ययोस्तौ तथा, भोजनमण्डपे-भोजनशालायां, सुखासनवरगतौ—निजनिजश्रेष्ठासने सुखरूपेण समुपविष्टौ सन्तौ तेन मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्धं विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आस्वादयन्तौ, परिभुञ्जानौ-रुचिपूर्वकं भुञ्जानौ, परिभाजयन्तौ—अन्येभ्यः प्रयच्छन्तौ एवमेव-अनयैव रीत्या खलु विहरिष्यतः-स्थास्यतः। जिमितभुक्तोत्तरागतावपि-जिमितौ भुक्तवन्तौ भुक्तोत्तर-भोजनोत्तरकालम् आगतौ-निजनिजोपवेशनस्थाने समागतौ

परिजनों को जीमने के लिये आमन्त्रित करेंगे। फिर स्नान से, काकआदिकों के लिये-कृतान्न विभागसे मषीतिलकादिरूप कौतुकों से, मङ्गलकर दुःस्वप्न आदि अवाञ्छनीय फल की निवृत्ति के लिये सरसों-दधि-अक्षतरूप प्रायश्चित्त से निपटकर राजसभा मे प्रवेश के समय पहनने योग्य स्वच्छ- पवित्र -माङ्गलिकवस्त्रों को अच्छी तरह पहनकर, एवं—अल्पभारवाले अमोल अलङ्कारों से शरीर को सुशोभित करनेके वाद भोजनशालामें आवेगे, और—वहांपर अपने योग्य स्थापित श्रेष्ठ आसनपर बैठकर आमन्त्रित होकर आये हुवे उन मित्र-ज्ञाति-निजक -स्वजन-सम्बन्धीजन के साथ रुचिपूर्वक भोजन करेगे, एक दूसरे के लिये मनोविनोद करते हुवे भोजन करलेने की क्रिया समाप्त हो जावेगी, तब वे हाथ मुख धोकर अपने स्थानपर आकर विराजमान हो जावेगे, वहां शुद्धोदक

પરિજનેને જમવા માટે આમંત્રિત કરશે પછી સ્નાનથી, કાગડા વગેરેને અન્નભાગ આપવાથી મષીતિલક વગેરેરૂપ કૌતુકોથી મંગલ કરીને દુઃસ્વપ્ન વગેરે અવાછનીય ફળની નિવૃત્તિ માટે સરસવ, દધિ, અક્ષતરૂપ પ્રાયશ્ચિતથી નિવૃત્ત થઇને રાજસભામાં જવા યોગ્ય વસ્ત્રો સારી રીતે પહેરીને અને અલ્પભારયુકત બહુ કીમતી અલંકારોથી શરીરને સુશોભિત કરીને પછી તે ભોજનશાળામાં જશે, અને ત્યાં પોતાને યોગ્ય સ્થાપિત શ્રેષ્ઠ આસનો પર બેસીને આમંત્રિત મહેમાનો—મિત્ર—જ્ઞાતિ—નિજક સ્વજન-સંબંધીજન અને પરિજનોની સાથે રૂચિપૂર્વક જમશે. મનોવિનોદ કરતા એકબીજાને પીરસાવશે આ પ્રમાણે આનંદપૂર્વક જમવાનું કામ પુરૂં થઇ જશે ત્યાર પછી તેઓ હાથ મુખ ધોઇને પોતપોતાના સ્થાનપર આવીને વિરાજમાન થઇ જશે. ત્યાં શુદ્ધોદ-

सन्तौ आचान्तौ शुद्धोदकयोगेन कृताऽऽचमनौ चोक्षौ—लेपसिक्थाद्यपनयनेन स्वच्छौ,—अत एव परमशुचिभूतौ अतीव पवित्रौ, स मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजन विपुलेन प्रचुरेण, वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण—अत्र वस्त्राणि-सौ मक-कार्पासिक दुकूलरूपाणि, गन्धा पुष्पनिर्यासामोदपरिमलरूपाणि सुगन्धद्रव्याणि, माल्यानि पुष्पमाला, अलङ्काराणि-कटककुण्डलाद्याभरणानि सर्वा समाहार, तेन सत्कारयिष्यत तत्प्रदानेन सत्कार करिष्यत, सम्मान यिष्यत —मानपूर्वकमादरिष्येते, ततः तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः—अग्रे एव वक्ष्यमाणप्रकारेण वदिष्यतः—कथ यिष्यत, वदेवाह—हे देवानुप्रिया ! मित्रादय ! यस्मात् खलु कारणात् अस्मिन् नवजाते दारके शिशौ गर्भगते एतस्मिन्—गर्भगते सति आवयो धर्म-जिनप्ररूपित धर्म प्रतिष्ठा-मति दृढा-निश्चला जाता, तत्—तस्मात् कारणात् आवयो एष दारको नाम्ना दृढप्रतिज्ञो भवतु । तत —तदन्तर खलु तस्य दृढप्रतिज्ञ य दारकस्य अम्बा पितरौ अनुपूर्वेण-अनुक्रमेण स्थितिपतितां१, चन्द्र

स आचमन कर परमशुचि बन हुवे वे अपने मित्रजनों का, ज्ञातिजनों का, निजकजनों का, स्वजनों का, सम्बन्धिजनों का, और परिजनों का विपुल प्रचुर वस्त्रसे, रेशमी-एव-सूतीवस्त्रोंसे गन्धसे, पुष्परस के आमोद परिमल से, पुष्पमालाओं से, कटककुण्डल आदिरूप अलङ्कारों से सत्कारकरेंगे एव मान पूर्वक उनका आदर करेंगे । फिर वे—उन्हीं मित्र-ज्ञाति निजक-स्वजन-सम्बन्धी परिजनों के समक्ष ऐसा कहेंगे—हे देवानुप्रिय ! मित्रादिको ! जिस कारण से यह दारक जब गर्भ में आया था तब से हमलोगों की धर्ममें-जिन प्ररूपित मार्ग में म ति दृढ—निश्चल हो गई थी, इस कारण हमलोगों का यह—पुत्र नाम से दृढप्रतिज्ञ हो' एसा कहकर व ल उसका "दृढ प्रतिज्ञ—' नाम रक्खेंगे उस दृढप्रतिज्ञ बालक के मातापिता क्रमश —स्थिति पतिता—१ चन्द्र सूर्य

पछी आचमन करीने परमशुचि थयेला तेओ पोताना मित्रजनोनो, निजकजनोनो, स्वजनोनो, सबंधीजनोनो अने परिजनोनो विपुल प्रचुर वस्त्रोथी रेशमी अने सुती वस्त्रोथी पुष्परसना आमोद परिमलथी पुष्पमालाओथी कटक कुंडलरूप अलंकारोथी सत्कार करशे. अने सन्मानपूर्वक तेमनो आदर करशे. पछी तेओ पोताना मित्र ज्ञाति निजक स्वजन संबंधी परिजनोनी सामे आ प्रमाणे कहेशे के हे देवानु प्रिये ! मित्रवरो ! ज्यारथी आ दारक गर्भमां आव्यो छे त्यारथी अमारी धर्ममां जिन प्ररूपित मार्गमां मति दृढ निश्चल थई गई छे माटे अमारो आ पुत्र दृढ प्रतिज्ञ नामथी संबोधित थाय. आम कहीने तेओ दृढप्रतिज्ञ ए प्रमाणे तेनु नाम राखशे. ते दृढ प्रतिज्ञदारकना मातापिता अनुक्रमे स्थिति पतिता १, चन्द्रसूर्य दर्शनिका २,

सूर्यदर्शनिकां२, धर्मजागरिकां३, नामधेयकरणं४, 'परंगमणं' इत्यस्य परगमनं पर्यङ्गनं चेतिच्छाया, तत्र परगमनं- वगृहाद् वहिर्गमनम्, पर्यङ्गनम्,-अङ्गुलिग्रहण-पूर्वकं भवनाङ्गणे भ्रामणं ५, प्रचङ्क्रमणं-स्वतोभ्रमणम् ६, प्रत्याख्यानकम्-आरोग्याद्यर्थं व्रतादिकरणम् ७, जेमनकम्-अन्नप्राशनम्८, प्रतिवर्धापनकम्-आशीर्वाद-दायकेभ्यो द्रव्यादिदानम्९ प्रजल्पनकं-'माता, पिता' इत्यादिशब्दपाठनम्१०; कर्णवेधनम्११, संवत्सरप्रतिलेखनकम् जन्मदिनोत्सवम्१२, चूडापनयनं-मुण्डनोत्सवम्१३, उपनयनम्—अध्ययनार्थं कलाचार्यसमीपे नयनम्१४, एतांश्चतुर्दशोत्सवान् करिष्यतः अन्यानि च बहूनि गर्भाधानजन्मादिकानि गर्भाधानादिसम्बन्धीनि कौतुकानि—उत्सवजातानि महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन—ऋद्धिः वस्त्रसुवर्णादिसम्पत् त। सत्कारः-जनसत्कार करणं, तस्य समुदयः—समूहः, तेन करिष्यतः ।सू०१६८।

मूलम्—तए णं से दढपइण्णे दारगे पंचधाईपरिक्खित्ते, तं जहा खीरधाईए१, मज्जणधाईए२, मंडणधाईए३, अंकधाईए४, किला-

दर्शनिका—२ धर्म जागरिका—३ नामकरण—४ परंगमण—५ परगृहगमन—अपने घरसे बाहर निकलने रूप परगमन, अथवा—अंगुलिग्रहणपूर्वक भवनाङ्गणमें फिरने रूप पर्यङ्गमन, प्रचंक्रमण—स्वतःभ्रमण—६ प्रत्याख्यान-आरोग्य आदिके लिये व्रतादिकरण—७ जेमनक—अन्नप्राशन—८ प्रतिवर्धापनक—आशीर्वाददायकों के लिये द्रव्यादि देना—९ प्रजल्पनक—मातापिता—इत्यादि शब्दों का उच्चारण कराना—१० कर्णवेधन—११ संवत्सर प्रतिलेखनक—जन्म दिनोत्सव-वर्षगांठ,१२ चूडापनयन—मुंण्डनोत्सव—१३ और-उपनयन अध्ययनार्थ कलाचार्य के पास ले जाना १४ इन चौदह प्रकारके उत्सवों को, तथा—इनसेभिन्न और भी अनेक गर्भाधानादि सम्बन्धी कौतुकों को-उत्सवों को, ऋद्धि सत्कार समुदायसे करेंगे. ।सू०१६८।

धर्मजागरिका ३, नामकरण ४, परंगमण ५, परगमन—पर्यंगमन-पोताना घेरथी बीजा घेर जवु ते परगमन, अथवा अंगुलि ग्रहणपूर्वक भवनांगणमां ज फरवु ते पर्यंगमन, प्रचंक्रमण-स्वत भ्रमण ६, प्रत्याख्यान आरोग्य वगेरे माटे व्रतादिकरण ७. जेमनक अन्नप्राशन ८, प्रतिवर्धापनक आशीर्वाद आपनाराओने द्रव्य वगेरे आपवुं ९, प्रजल्पनक-मातापिता वगेरे शब्दोनु उच्चारण करवुं. १०, कर्णवेधन ११, संवत्सर प्रतिलेखनक जन्म दिनोत्सव—वर्षगांठ चूडापनयन, मुंडनोत्सव १३ अने उपनयन अध्ययन कलाचार्य-पासे लई जवुं ते १४, आ चौद प्रकारना उत्सवोने तेमज एमनाथी भिन्न बीजा पण घणा गर्भाधान संबंधी कौतुकोने उत्सवोने ऋद्धि सत्कार समुदायपूर्वक करशे. ।।सू० १६८।।

वणधाईए५, अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं१, वडभियाहिं२, बब्बरिहिं३, बाउसियाहिं४, जोण्हियाहिं५, पल्हवियाहिं ६, ईसिणियाहिं७, वासिणियाहिं८, लासियाहिं९, लउसियाहिं १०, दविडीहिं११, सिंहलीहिं१२, आरबीहिं १३, पक्कणीहिं १४, बहलीहिं १५, मुरुंडीहिं १६, सबरीहिं१७, पारसीहिं१८, णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालतरुणीवंदपरियालपरिवुडे वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे २ अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे २ उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २ अवयासिज्जमाणे २ परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे २ रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २ गिरिकंदरमल्लीणेविव चंपगवरपायवे निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढिस्सइ ॥ सू० १६९॥

छाया—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः पञ्चधात्रीभिः परिक्षिप्तः, तद्यथा—क्षीरधात्र्या१ मज्जनधात्र्या२, मण्डनधात्र्या ३ अङ्कधात्र्या४ क्रीडनधात्र्या ५.

“तए णं से दढपइण्णे दारगे”—इत्यादि—

मूलार्थ—“तए णं—” इसके बाद—“से दढपइण्णे—” दृढप्रतिज्ञ बालक—“पंचधाईपरिक्खित्ते” इन पांच धायमाताओं से युक्त—“तं जहा—खीरधाइए—मज्जणधाइए—मंडणधाइए—अंकधाइए—किलावणधाइए—” जैसे—क्षीरधायमाता से, दूध पिलानेवाली उप माता से, मज्जनधायमाता से, स्नान करानेवाली उप

“तए णं से दढपइण्णे दारगे” इत्यादि।

મૂલાર્થ—‘तए णं’ ત્યાર પછી ‘‘से दढपइण्णे’’ તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ બાળક ‘‘पंचधाइपरिक्खित्ते’ આ પાંચ ધાય માતાઓથી ‘‘तं जहा—खीरधाइए-मज्जणधाइए—मंडणधाइए—अंकधाइए किलावणधाइए’’ જેમકે ક્ષીરધાય માતાથી ધવડાવનાર ઉપમાતાથી મજ્જનધાય માતાથી સ્નાન કરાવનાર ઉપમાતાથી મંડનધાયમાતાથી

अन्याभिश्च बहुभिः कुब्जाभिश्चिलातिकाभि:वामनिकाभिः १, वटभिकाभिः२, बर्बरीभिः३, बकुशिकाभिः ४, यौनिकाभिः५, पल्हविकाभिः६, इसिनिकाभिः७, वासिनिकाभिः८ लासिकाभिः ९, लाकुशिकाभिः १० द्राविडीभिः ११. सिंहलीभिः १२, आरबीभिः १३, पक्कणीभिः १४, वहलीभिः १५, मुरुण्डीभिः १६, शबरीभिः १७, पारसीभिः १८, नानादेशीयाभिः विदेशपरिमण्डिताभिः स्वदेशनेपथ्यगृहीतवेषाभिः इङ्गितचिन्तितप्रार्थित विज्ञायिकाभिः

माता से, मण्डन धाय माता से—मषीतिलक आदि द्वारा मण्डन 'अलङ्कृत' करानेवाली उपमाता से अङ्कधात्री माता से—उत्सङ्ग—गोद में लेकर खिलाने वाली—उप—माता से, क्रीडनधात्री माता से—विविध प्रकार की क्रीडाएं करानेवाली उपमाता से. इन पांच प्रकार की धात्रियों से युक्त हुवा—"अन्नाहिय बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणयाहिं वडभियाहिं बब्बराहिं बाउसयाहिं जोण्हियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणियाहिं वासिणियाहिं लासियाहि—" तथा—इन से अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार की वक्रपृष्ठवाली—एवं अनार्यदेशोत्पन्न ठुमकी—ह्रस्वशरीरवाली—१ वटभिका—२ हीन एकपार्श्व भागवाली बर्बरा—३ बर्बरदेशोत्पन्ना बकुशिका—४ यौनिका—५ पल्हविका—६—ईसिनिका—७ वासिनिका—८ लासिका-९ "लउसियाहिं" लकुशिका १० "दविडीहिं—" द्राविडी—११ "सिंहलीहिं आरबीहिं—पक्कणीहिं—बहलीहिं—मुरुडीहिं—सब्बरीहिं—" पारसीहिं सिंहिली—१३ आरबी, पक्कणी—१४ वहली—१५ मुरण्डी—१६ शबरा—१७ पारसी—१८ 'णाणादेसीहिं—' अपने—अपने नामानुरूप देशों में उत्पन्न हुवी—तथा—"विदेसपरिमंडियाहिं—"

मषीतिलક વગેરે દ્વારા મંડન કરાવનાર ઉપમાતાથી, અંકધાત્રી માતાથી, ઉત્સંગ ખોળામા બેસાડીને રમાડનાર ઉપમાતાથી યુકત થયેલો "अन्नाहिय बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं वडभियाहिं बब्बराहिं बउसियाहिं जोण्हियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणियाहिं वासिणियाहिं लासियाहिं" તેમજ બીજી પણ અનેક પ્રકારની વક્રપૃષ્ઠવાળી અને અનાર્ય દેશોત્પન્ન ઠીંગણી ૧, વટભિકા ૨, હીન એક પાર્શ્વભાગવાળી, બર્બરા ૩ બર્બર દેશોત્પન્ના, બકુશિકા ૪ યૌનિકા ૫, પલ્હવિકા ૬, ઇસિનિકા ૭, વાસિનિકા ૮, લાસિકા ૯ "लउसियाहिं" લકુશીકા ૧૦, "दविडीहिं" દ્રાવિડી ૧૧, "सिंहलीहिं आरबीहिं पक्कणीहिं वहलीहिं मुरुंडिहिं सब्बरीहिं पारसीहिं" સિંહલી ૧૩. આરબી. પકકણી ૧૪. વહલી ૧૫. મારૂંડી ૧૬, શબરા ૧૭. પારસી ૧૮. "णाणादेसीहिं" પોતપોતાના દેશોમા ઉત્પન્ન થયેલી તથા "विदेसपरिमंडियाहिं" વીદેશી વેશભૂષામા સુસજજ "सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं, इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं, निउणकुसलाहिं,

निपुणकुशलाभिः विनीताभिः चेटिकाचक्रवालतरुणीवृन्दपरिवार—परिवृतः वर्ष धरकञ्चुकिमहत्तरकवृन्दपरिक्षिप्तः हस्ताद् हस्तं संह्रियमाणः २ अङ्कात् अङ्कं परिभोज्यमानः २ उपनृत्यमानः २ उपगीयमानः २ उपलाल्यमानः २ उपगूह्यमानः २ शिष्यमाणः २ परिवन्द्यमानः २ परिचुम्ब्यमानः २ रम्येषु मणिकुट्टिमतलेषु पर्यङ्क्यमाणः २ गिरिकन्दरालीन इव चम्पकवरपादप निर्व्याघाते सुखसुखेन परिवर्धिष्यते ॥ सू० १६९ ॥

विदेश के वेष से सजी हुवी, 'सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं, इंगिय चिंतियपत्थियवियाणियाहिं निउणकुसलाहिं, विणीयाहिं—' और अपने देश में वस्त्राभूषणों को जिस तरह से पहिना जाता है, उस तरह से वेष को धारण करनेवाली, तथा—इङ्गित—चिन्तित-प्रार्थित को अच्छी तरह से समझ लेने वाली, नारियों के बीच कुशल, विनय सम्पन्न, स्त्रियों से, तथा 'चेडिया चक्कवालतरुणीवंदपरियालपरिवुडे, वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते—' और भी दासियों के समूह से एवं युवतियों के समूह से परिवेष्टित हुवा, तथा वर्षधर, कञ्चुकी, और महत्तरक इन के समूह से, परिवेष्टित हुवा, एवम्—'हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे-२ उवलालिज्जमाणे-२—उवगूहिज्जमाणे-२ अवयासिज्जमाणे-परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे-२ रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २" एक हाथ से दूसरे हाथों में बारबार लाया हुवा, एक गोदी से दूसरी गोदी में बारबार नृत्य क्रिया दिखाने से सतुष्ट किया गया बारबार-मधुर वचनादि द्वारा लाड लडाया गया, बारबार-२ दृष्टि दोष को, दूर करने के लिये वस्त्रादिकोंद्वारा ढांका गया, बारबार हृदय से लगाकर आलि

विणीयाहिं' અને પોતપોતાના દેશમાં વસ્ત્રાભૂષણો જે રીતે પહેરાય છે તે રીતે વેષધારણ કરનારી તથા ઇંગિત ચિંતિત અને પ્રાર્થિત ને સારી રીતે સમજનારી સ્ત્રી વર્ગમાં કુશળ. વિનય સંપન્ન. સ્ત્રીઓથી તેમજ 'चेडियाचक्कवालतरुणीवंद परियालपरिवुडे, वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते' ઓછ પણ દાસી ઓના સમૂહથી અને યુવતીઓના સમૂહથી પરિવેષ્ટિત થયેલો અને વર્ષધર કંચુકી અને મહત્તરક એમના સમૂહોથી પરિવેષ્ટિત થયેલો અને "हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २, उवगूहिज्जमाणे २, अवयासिज्जमाणे २, परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे २, रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २" એક હાથેથી બીજા હાથમાં વારંવાર જતો એકના ખોળામાંથી બીજાના ખોળામાં વારંવાર લઈ જવાતો. વારંવાર નૃત્ય ક્રિયા બતાવીને સંતુષ્ટ કરાયેલો, વારંવાર મધુર વચનો વડે લાડ કરીને, વારંવાર દૃષ્ટિ દોષને દૂર કરવા માટે વસ્ત્રાદિકોથી ઢાંકેલો

टीका:—"तए णं से दढपइण्णे" इत्यादि—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः पञ्चधात्रीभिः-बालस्य स्तन्यपानादिकारिकाभिः पञ्चभिर्धात्रीभिः रिक्षिप्तः—परिवृतः, मूले "पंचधाईपरिविखत्ते" इत्यत्र 'पंचधाई' इति लुप्ततृतीयान्तं पदं, तेन 'पञ्चधात्रीभिः' इतिच्छाया, तद्यथा—क्षीरधात्र्या- स्तन्यपायिकया १, मज्जनधात्र्या—स्नपनकारिकया २, मण्डनधात्र्या—मषीतिलकादिभिर्मण्डनकारिकया ३, अङ्कधात्र्या उत्सङ्गस्थापिकया ४, क्रीडनधात्र्या—क्रीडनकारिकया ५। एवं प्रकाराभिः पञ्चभिर्धात्रीभिः परिवृतः-युक्तः। तथा—अन्याभिः-तदतिरिक्ताभिरपि बहुभिः—बहुप्रकाराभिः, कुब्जाभिः—वक्रपृष्ठाभिः, चिलातिकाभिः—अनार्यदेशोत्पन्नाभिः, काभिः ? इत्याह—वामनिकाभिः—ह्रस्वकायाभिः१, वटभिकाभिः—मडहकोष्ठाभिः—हीनैकपार्श्वभागाभिरित्यर्थः२, बर्बरीभिः—बर्बरदेशोद्भवाभिः३, बकुशिकाभिः४, यौनिकाभिः५, पल्हविकाभिः ६, इसिनिकाभिः ७, वासिनिकाभिः ८, लासिकाभिः ९, लकुशिकाभिः १०, द्राविडीभिः ११, सिंहलीभिः १२, आरबीभिः १३, पक्कणीभिः १४, बहलीभिः १५ मुरुण्डीभिः १६ शबरीभिः १७, पारसीभिः १८, एवमेताभिः तत्तन्नामानुरूपनानादेशीयाभिः-अनेकदेशोद्भवाभिः विदेशपरिमण्डि-

---

ङ्गन किया गया. "चिरकाल तक जीवित रहो—" इस तरह के शुभाशीर्वादों से वधाया गया, वारवार चुम्बन किया गया—"रमेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे-२ गिरिकंदरमल्लीणे विव चंपगवरपायवे निव्वाघायंसि, सुहं सुहेणं परिवड्ढिस्सइ—" तथा रम्य—रमणीय मणिकुट्टिमतलों में रत्न जडित- अङ्गणों में बार-२ चलता हुवा. गिरिगुहा में स्थित चंपकवृक्ष की तरह निराबाध स्थान में सुखपूर्वक वृद्धि को प्राप्त करेगा.

टीकार्थ—मूलार्थ जैसा ही है, परन्तु फिर भी जो विशेषता है वह ऐसी है-"पंचधाई परिविखत्ते-" यहां-पंचधाई. पद लुप्त तृतीयाविभक्ति वाला है, अतः—इसकी छाया-पंच धात्रीभिः ऐसी करनी चाहिये। "विदेशपरिमण्डि-

---

वारंवार हृदयने चांपीने आलिंगन करेलो "घणुं जीवो" आ जातना शुभाशीर्वादोथी वधामणी आपेलो वारंवार चुंबित करेलो, "रंमेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २ गिरिकंदरमल्लीण -विव चंपगवरपायवे निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढिस्सइ" तेमज रम्य-रमणीय मणिकुट्टिमतलोमां, रत्नजडित आगणाओमां वारवार चालतो, गिरिगुहामां स्थित चंपक वृक्षनी जेम सुखपूर्वक मोटो थतो गयो

टीकार्थ—मूलार्थ प्रमाणे ज छे पण छतांए जे विशेषता जणाय छे ते आ प्रमाणे छे "पंचधाई परिक्खित्ते" अही "पंचधाई" पद लुप्ततृतीया विभक्तियुक्त छे, एथी "पंचधात्रीभिः" एवी छाया करवी जोइए. "विदेशपरिमण्डिताभिः"

निपुणकुशलाभिः विनीताभिः चटिकाचक्रवालतरुणीवृन्दपरिवारपरिवृत सन् वर्षधरकञ्चुकिमहत्तरकवृन्दपरिक्षिप्तः हस्तात् हस्तं संह्रियमाणः २ अङ्कात् अङ्कं परिभोज्यमानः २ उपनृत्यमानः २ उपगीयमानः २ उपलाल्यमानः २ उपगूह्यमानः २ क्षिप्यमाणः २ परिवन्द्यमानः २ परिचुम्ब्यमानः २ रम्येषु मणिकुट्टिमतलेषु पर्यक्ष्यमाण २ गिरिकन्दरालीन इव चम्पकवरपादपः निर्व्याघाते सुखसुखेन परिवर्धिष्यते ॥ सू० १६९ ॥

विदेश के वष से सजी हुयी, 'सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं, इंगिय चिंतियपत्थियवियाणियाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं-' और अपने देश में वस्त्राभूषण को जिस तरह से पहिरा जाता है, उस तरह से वेष को धारण करनेवाली, तथा—इङ्गित—चिन्तित—प्रार्थित को अच्छी तरह से समझने वाली, नारियों के बीच कुशल, विनय सम्पन्न, स्त्रियों से, तथा "चेडिया चक्कवालतरुणीवंदपरियालपरिवुडे, वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते—' और भी दासियों के समूह से एवं युवतियों के समूह से परिवेष्टित हुआ, तथा वर्षधर, कञ्चुकी, और महत्तरक इन के समूह से परिवेष्टित हुआ, एवम्—'हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे-२ उपलालिज्जमाणे-२ उवगूहिज्जमाणे २ अवयासिज्जमाणे-परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे-२ रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २" एक हाथ से दूसरे हाथ में बार बार लाया हुआ, एक गोदी से दूसरी गोदी में बारबार नृत्य क्रिया दिखाने से संतुष्ट किया गया बारबार-मधुर वचनादि द्वारा लाड लडाया गया, बारबार २ दृष्टि दोष को दूर करने के लिये वस्त्रादिकों द्वारा ढांका गया, बारबार हृदय से लगाकर आलि

विणीयाहिं' અને પોતપોતાના દેશમાં વસ્ત્રાભૂષણો જે રીતે પહેરાય છે તે રીતે વેષધારણ કરનારી તથા ઇંગિત ચિંતિત અને પ્રાર્થિત ને સારી રીતે સમજનારી, સ્ત્રી વર્ગમાં કુશળ વિનય સંપન્ન સ્ત્રીઓથી તેમજ 'चडियाचक्कवालतरुणीवंद परियालपरिवुडे, वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते' બીજી પણ દાસીઓના સમૂહથી અને યુવતીઓના સમૂહથી પરિવેષ્ટિત થયેલા અને વર્ષધર કંચુકી અને મહત્તરક એમના સમૂહોથી પરિવેષ્ટિત થયેલા અને "हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २, उवगूहिज्जमाणे २, अवयासिज्जमाणे २, परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे २, रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २" એક હાથમાંથી બીજા હાથમાં વારંવાર જતો, એકના ખોળામાંથી બીજાના ખોળામાં વારંવાર લઇ જવાતો વારંવાર નૃત્ય ક્રિયા બતાવીને સંતુષ્ટ કરાયેલો, વારંવાર મધુર વચનો વડે લાડ કરીને, વારંવાર દૃષ્ટિ દોષને દૂર કરવા માટે વસ્ત્રાદિકોથી ઢાંકેલો,

रमणियेषु मणिकुट्टीमतलेषु रत्नजटिताङ्गणेषु परिङ्गमाणः२=पुनः पुनश्चङ्क्रम्यमाणः, संन् गिरीकन्दरालीनः गिरिगुहास्थितः चम्पकवर इव श्रेष्ठ चम्पकवृक्ष इव नीर्व्याघाते नीराबाधे स्थाने सुखपूर्वकं परिवर्धिष्यते वृद्धिं प्राप्स्यति ॥सू० १६९॥

मूलम्—तए णं त दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेग अट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्त सव्वालकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिति। तए णं से कलायरिए तं दढपण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ यकरणओ य सिक्खावेहिइ य, सेहावेहिइ य तं जहा—लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्ट ४ गीय ५ वाइय ६ सरगय ७ पुक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवाय ११ पासग १२ अट्ठा यं १३ पोरेवच्च १४ दगमट्टियं १५ अन्नविहिं १६ पाणविहिं १७ वत्थविहिं १८ विलेवणविहिं १९ सयणविहिं २० अज्जं २१ पहेलियं २२ मागहियं २३ णिद्दाइयं २४ गाहं २५ गीइय २६ सिलोग २७ हिरण्णजुत्तिं २८ सुवण्णजुत्तिं २९ आभरणविहिं ३० तरुणीपडिकम्म ३१ इत्थिलक्खणं ३२ पुरिसलक्खण ३३ हयलक्खणं ३४ गयलक्खणं ३५ कुक्कुडलक्खणं ३६ छत्तलक्खणं ३७ चक्कलक्खणं ३८ दंडलक्खणं ३९ असिलक्खणं ४० मणिलक्खणं ४१ कागणिलक्खणं ४२ वत्थुविज्जं ४३ णगरमाणं ४४

कहलाते हैं, अन्तःपुर में क्या क्या कार्य होता है, इत्यादिका चिन्तवन करने वाले होते हैं. वे-महत्तरक है ॥ सू० १६९ ॥

કહેવાય છે. અંતઃપુરમાં શું શું કામ થવાનું છે, તેની વિચારણા કરનારા મહત્તરક કહેવાય છે ॥ સૂ૦ ૧૬૯ ॥

ताभिः-विदश इति विदशवेष, तेन परिमण्डिताभिः विभूषिताभिः, स्वदेशे नेपथ्यगृहीतवेषाभिः — स्वदेशे निजदेशे यन्नेपथ्यस्याऽऽभूषणानां परिधानादिरचना तद्वत् गृहीतो वेषो याभिस्तास्तथा, ताभिः इङ्गितचिन्तितप्रार्थितविज्ञायिकाभिः तत्र इङ्गितं निपुणमतिगम्य अभिप्रायरूप प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकमीषद् मूर्धशिरः कम्पादिकं, चिन्तितं-हृदयगत, प्रार्थितम्-अभिलषितं च विजानन्ति यास्तास्तथा ताभिः, निपुणकुशलाभिः निपुणानां चतुरनारीणां मध्ये या कुशला-दक्षास्ताभिः, विनीताभिः-विनयसम्पन्नाभिः परिक्षिप्त इति पूर्वेण सम्बन्धः। पुनश्च चेटिकाचक्रवालतरुणीवृन्दपरिवारपरिवृतः-चेटिकाचक्रवालं दासीसमूहः, तरुणीवृन्दं युवतिसमूहः, तस्य परिवारेण परिवृतः परिवेष्टितः, पुनः वर्षधरकञ्चुकिमहत्तरकवृन्दपरिक्षिप्तः, तत्र वर्षधराः अन्तःपुरकार्यकारिणो नपुंसकाः, कञ्चुकिनः अन्तःपुरप्रयोजननिवेदकाः अन्तःपुरप्रतीहारा वा, महत्तरकाः अन्तःपुरकार्यचिन्तकाः, तेषां वृन्देन-समूहेन परिक्षिप्तः परिवृतः स हस्ताद् हस्तम् एक हस्ताद् अन्यहस्तं संह्रियमाणः वारंवारं नीयमानः अत्र विप्सायां द्वित्वम्, एवमग्रेऽपि एवम् अङ्काद् अङ्कम् एकस्याः उत्सङ्गाद् अन्यस्या उत्सङ्गं परिभोज्यमानः-पाल्यमानः, उपनृत्यमानः, नर्तनदर्शनेन परितोष्यमाणः उपगीयमानः गानं श्राव्यमाणः, उपलाल्यमानः ललितमधुरवचनादिभिः लाल्यमानः उपगूह्यमानः दृष्टिदोषादिनिवारणार्थं वस्त्रादिभिराच्छाद्यमानः, श्लिष्यमाणः हृदयसंलग्नेन आलिङ्ग्यमानः परिवन्द्यमानः 'चिरंजीव्यात्' इत्याद्याशीर्वचनैः स्तूयमानः, परिचुम्ब्यमानः परिचुम्ब्यमानः रम्येषु

ताभि' में जो विदश शब्द आया है वह "विदेश वेष" अर्थ में है, इङ्गित यह, चेष्टा विशेष है जो निपुणमतिद्वारा ही जाना जाता है, यह प्रवृत्ति निवृत्ति का सूचक होता है, तथा इस में थोडे से-कपसें-शिरकम्पाना द किया जाता है। हृदयङ्ग अभिप्राय का नाम चिन्तित है, तथा-अभिलषित का नाम प्रार्थित है। अन्तःपुर में जो कार्य करने के लिए नियुक्त किये जाते हैं, एवं-जो नपुंसक होते हैं-इनका नाम वर्षधर है। अन्तःपुर सम्बन्धी प्रयोजनों का निवेदक होते हैं, अथवा-अन्तःपुर में जो प्रतिहारका काम करते हैं वे-कञ्चुकी

માં જે વિદેશ શબ્દ આવેલ છે તે 'વિદેશ વેષ' અર્થમાં વપરાયેલ છે. ઇંગિત-તે, તે ચેષ્ટા વિશેષ છે. જે નિપુણમતિ વડે જ જાણી શકાય છે, આ પ્રવૃત્તિ નિવૃત્તિ સૂચક હોય છે. તથા એમાં ધીમેધીમે શિરકંપનાદિ કરવામાં આવે છે. હૃદયગત અભિપ્રાય ને ચિંતિત કહે છે તથા અભિલષિતને પ્રાર્થિત કહે છે. અન્તઃપુરમાં જે કામ કરે છે અને જે નપુંસક હોય છે તે વર્ષધર છે. અંતઃપુર સંબંધી પ્રયોજનો નો જે નિવેદ હોય છે અથવા અંતઃપુરમાં જે પ્રતિહારનું કામ કરે છે તે કંચુકી

रमणियेषु मणिकुट्टीमनलेपु रत्नजटिताङ्गणेषु पर्यङ्गमाणः२=पुनः पुनश्चङ्क्रम्यमाणः, सन् गिरीन्द्र लीनः गिरिगुहास्थितः चम्पकवर पादप इव श्रेष्ठ चम्पकवृक्ष इव नीर्व्याघाते नीराबाधे स्थाने सुखपूर्वकं परिवर्धिष्यते वृद्धिं प्राप्स्यति ॥सू० १६९॥

मूलम्—तए णं त दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेग अट्ठ-वासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्त सव्वालकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिति। तए णं से कलायरिए तं दढपण्णं दारग लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउण-रुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ यकरणओ य सिक्खावेहिइ य, सेहावेहिइ य तं जहा—लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्ट ४ गीय ५ वाइय ६ सरगयं ७ पुक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पासगं १२ अट्ठावयं १३ पोरेवच्च १४ दगमट्टियं १५ अन्नविहिं १६ पाणविहिं १७ वत्थविहिं १८ विलेवणविहिं १९ सयणविहिं २० अज्जं २१ पहेलियं २२ मागहियं २३ णिद्दाइयं २४ गाहं २५ गीइय २६ सिलोग २७ हिरण्णजुत्तिं २८ सुवण्णजुत्तिं २९ आभरणविहिं ३० तरुणीपडिकम्म ३१ इत्थिलक्खणं ३२ पुरिसल-क्खण ३३ हयलक्खणं ३४ गयलक्खणं ३५ कुक्कुडलक्खणं ३६ छत्त-लक्खणं ३७ चक्कलक्खणं ३८ दंडलक्खणं ३९ असिलक्खणं ४० मणिलक्खणं ४१ कागणिलक्खणं ४२ वत्थुविज्जं ४३ णगरमाणं ४४

कहलाते हैं, अन्तःपुर मे क्या क्या कार्य होता है, इत्यादिका चिन्तन करने वाले होते हैं वे-महत्तरक है ॥ सू० १६९ ॥

કહેવાય છે. અંતઃપુરમાં શું શું કામ થવાનુ છે, તેની વિચારણા કરનારા મહત્તરક કહેવાય છે ॥ સૂ० १६९ ॥

ताभिः–विदश इति विदक्षेप, तेन परिमण्डिताभिः विभूषिताभिः, स्वदेशनेपथ्यगृहीतवेषाभिः – स्वदेशे निजदेशे यन्नेपथ्यं वस्त्राऽऽभूषणानां परिधानादिरचना तद्वत् गृहीतो वेषो याभिस्ताभिस्तथा, ताभिः इङ्गितचिन्तितप्रार्थितविज्ञायिकाभिः तत्र इङ्गितं निपुणमतिगम्य अभिप्रायसूचकं चेष्टाविशेषः किञ्चिन्मुखविकारशिरःकम्पादिकं, चिन्तित-हृदयगतं, प्रार्थितम् अभिलषितं च विजानन्ति यास्तास्तथा ताभिः, निपुणकुशलाभिः निपुणानां चतुरनारीणां मध्ये या कुशला दक्षास्ताभिः, विनीताभिः विनयसम्पन्नाभिः परिक्षिप्तः इति पूर्वेण सम्बन्धः । पुनश्च चेटिकाचक्रवालवर्षधरवृन्दपरिवारपरिवृतः चेटिकाचक्रवालैः दासीसमूहैः, तरुणीवृन्द युवति समूह, तस्य परिवारेण परिवृतः परिवेष्टितः, पुनः वर्षधरकञ्चुकिमहत्तरकवृन्दपरिक्षिप्तः, तत्र वर्षधराः अन्तःपुरकार्यकारिणो नपुंसकाः, कञ्चुकिनः अन्तःपुरप्रयोजननिवेदकाः अन्तःपुरप्रतीहारा वा, महत्तरकाः अन्तःपुरकार्यचिन्तकाः, तेषां वृन्देन–समूहेन परिक्षिप्तः परिवृतः स ह वाद् हस्तम् एक हस्तात् अन्यहस्तं संह्रियमाणः वारंवारं नीयमानः अत्र विप्सायां द्वित्वम्, एवमग्रेऽपि एवम् अङ्कात् अङ्कम् एकस्या उत्सङ्गात् अन्यस्या उत्सङ्गं परिभोज्यमानः–पाल्यमानः, उपनृत्यमानः, नर्तनदर्शनेन परितोष्यमाणः उपगीयमानः गानं श्राव्यमाणः, उपलाल्यमानः ललितमधुरवचनादिना लाल्यमानः उपगूह्यमानः दृष्टिदोषादिनिवारणार्थं वस्त्रादिभिराच्छाद्यमानः, श्लिष्यमाणः हृदयसंलग्नेन आलिङ्ग्यमानः परिवन्द्यमानः चिरंजीव्याः इत्याद्याशीर्वचनैः स्तूयमानः, परिचुम्ब्यमानः, परिचुम्ब्यमानः, रम्येषु

ताभि' में जो विदश शब्द आया है वह "विदेश वेष" अर्थ में है, इङ्गित यह चेष्टा विशेष है जो निपुणमतिद्वारा ही जाना जाता है, यह प्रायः निराग का सूचक होता है, तथा इस में थोड़े से रूपमें शिरकम्पनादि किया जाता है । हृदयगत अभिप्राय का नाम चिन्तित है, तथा–अभिलषित का नाम प्रार्थित है । अन्तःपुर में जो कार्य करने के लिये नियुक्त किये जाते हैं, एवं जो नपुंसक होते हैं इनका नाम वर्षधर है । अन्तःपुर सम्बन्धी प्रयोजनों का निवेदक होते हैं, अथवा अन्तःपुर में जो प्रतिहारका काम करते हैं वे कञ्चुकी

માં જે વિદેશ શબ્દ આવેલ છે તે વિદેશ વેષ અર્થમાં વપરાયેલ છે ઇંગિત–ને, તે ચેષ્ટા વિશેષ છે જે નિપુણમતિ વડે જ જાણી શકાય છે આ, પ્રવૃત્તિનું [illegible] સૂચક હોય છે. તથા એમાં ધીમેધીમે શિરઃકમ્પનાદિ કરવામાં આવે છે. હૃદયગત અભિપ્રાય ને ચિંતિત કહે છે તથા અભિલષિતને પ્રાર્થિત કહે છે. અંતઃપુરમાં જે કામ કરે છે અને જે નપુંસક હોય છે તે વર્ષધર છે. અંતઃપુર સંબંધી પ્રયોજનો ને, જે નિવેદક હોય છે અથવા અંતઃપુરમાં જે પ્રતિહારનું કામ કરે છે તે કંચુકી

रमणियेषु मणिकुट्टीमनलेषु रत्नजटिताङ्गणेषु पर्यङ्कमाणः२=पुनः पुनश्चङ्क्रम्यमाणः, सन् गिरीन्द्रालीनः गिरिगुहास्थितः चम्पकवर ादप इव श्रेष्ठ चम्पकवृक्ष इव नीव्याघाते नीरावाधे स्थाने सुखपूर्वकं परिवर्धिष्यते वृद्धिं प्राप्स्यति ॥सू० १६९॥

मूलम्—तए णं त दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेग अट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्म कयकोउयमंगलपायच्छित्त सव्वालकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिति। तए णं से कलायरिए तं दढपण्णं दारग लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेहिइ य, सेहावेहिइ य तं जहा—लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्ट ४ गीय ५ वाइय ६ सरगयं ७ पुक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पासग १२ अट्ठावयं १३ पोरेकच्च १४ दगमट्टियं १५ अन्नविहिं १६ पाणविहिं १७ वत्थविहिं १८ विलेवणविहिं १९ सयणविहिं २० अज्जं २१ पहेलियं २२ मागहियं २३ णिद्दाइय २४ गाहं २५ गीइय २६ सिलोग २७ हिरण्णजुत्तिं २८ सुवण्णजुत्तिं २९ आभरणविहिं ३० तरुणीपडिकम्म ३१ इत्थिलक्खणं ३२ पुरिसलक्खण ३३ हयलक्खणं ३४ गयलक्खणं ३५ कुक्कुडलक्खणं ३६ छत्तलक्खणं ३७ चक्कलक्खणं ३८ दंडलक्खणं ३९ असिलक्खणं ४० मणिलक्खणं ४१ कागणिलक्खणं ४२ वत्थुविज्जं ४३ णगरमाणं ४४

कहलाते है, अन्तःपुर मे क्या क्या कार्य होता है, इत्यादिका चिन्तन करने वाले होते हैं, वे-महत्तरक है ॥ सू० १६९ ॥

કહેવાય છે. અંતઃપુરમાં શું શું કામ થવાનું છે, તેની વિચારણા કરનારા મહત્તરક કહેવાય છે ॥ સૂ० १६९ ॥

खधावारमाणं ४५ चार ४६ पडिचार ४७ वूह ४८ चक्कवूह ४९ गरुलवूह ५० सगडवूह ५१ जुद्ध ५२ नियुद्ध ५३ जुद्धजुद्ध ५४ अट्ठिजुद्ध ५५ मुट्ठिजुद्ध ५६ बाहुजुद्ध ५७ लयाजुद्ध ५८ ईसत्थ ५९ छरुप्पवाय ६० धणुवेय ६१ हिरण्णपाग ६२ सुवण्णपाग ६३ मणिपागं ६४ धाउपाग ६५ सुत्तखेड ६६ वट्टखेड ६७ णालियाखेड ६८ पत्तच्छेज्ज ६९ कडगच्छेज्ज ७० सजीवनिज्जीव ७१ सउणरुय ७२ इति। ॥सू० १७०॥

छाया—तत खलु त वृद्धप्रतिज्ञ दारकम् अम्बापितरौ सातिरं [illegible] ज्ञात्वा शोभन तिथिकरणनक्षत्रमुहूर्त स्नात कृतबलिकर्माण कृतकौतुकमङ्गलप्राय श्चित्त सर्वालङ्कारविभूषित कृत्वा महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन कलाचार्यस्य उप

"तए ण त दढपइण्णं" इत्यादि

मूलार्थ—"तए णं" इसके बाद—"दढपइण्ण—" दृढ प्रतिज्ञ "दारगं" दारक बालक को—"अम्मापियरो" मातापिता "साइरेगअट्ठवासजायग जाणित्ता—" आठ वर्ष से कुछ अधिक का हुवा जानकर—'सोममसि तिहिकरणणक्खत्त मुहुत्तंसि ण्हाय" शोभनतिथि नक्षत्र मुहूर्त में उसे स्नान कराकर 'कयबलिकम्म कयकोउयमगलपायच्छित्त, सव्वालकारविभूसिय करेत्ता—" उससे बलिकर्म काकआदि का अन्नादि का भाग दिला कर, कौतुकमङ्गलरूप प्रायश्चित्त करा कर, एव—उसे समस्त अलङ्कारों से विभूषितकर—"महया इड्ढीसक्कारसमुदएण कला यरियस्स उवणेहिंति—" अपनी विशाल ऋद्धि के अनुरूप सत्कारपूर्वक कला-

"तए ण त दढपइण्ण" इत्यादि ।

મૂલાર્થ—'तए ण' त्यार पछी 'दढपइण्ण' દૃઢપ્રતિજ્ઞ 'दारग' દારક બાળકને 'अम्मा पियरो' માતાપિતાઓએ "साइरगअट्ठवासजायग जाणित्ता' આઠ વર્ષ કરતાં થોડી થોડી વધુ ઉંમરનો જાણીને 'सोममसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तसि ण्हाय' શોભનતિથિ નક્ષત્ર મુહૂર્તમાં તેને સ્નાન કરાવીને, 'कयबलिकम्म, कयकोउयमगल पायच्छित्त, सव्वालकारविभूसिय करेत्ता' તેના વડે બલિકર્મ—કાગડા વગેરેને અન્ન વગેરેનો ભાગ અપાવડાવીને કૌતુક મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરાવીને અને તેને સમસ્ત અલંકારોથી વિભૂષિત કરીને 'महया इड्ढिसक्कारसमुदएण कलायरियस्स उवणेहिंति' પોતાની વિશાળ ઋદ્ધિના અનુરૂપ સત્કારપૂર્વક કલાચાર્યની પાસે મોકલ્યો.

नः । ततः खलु स कलाचार्यः तं दृढप्रतिज्ञं दारकं लेखादिका गणित-प्रधानाः शकुनरुतपर्यवसानाः द्वासप्तति कलाः सूत्रतश्च अर्थतश्च करणतश्च शिक्षयिष्यति च साधयिष्यति च, तद्यथा—लेखं १, गणितं २ रूपं ३ नाटयं ४, गीतं ५, वादितं ६. स्वरगतं ७ पुष्करगतं ८, समतालं ९, द्यूत १०, जनवादं ११, पाशकम् १२, अष्टापदं १३, पौरकृत्य १४, दकमृत्तिकाम् १५, अन्नविधि १६, पानविधि १७, वस्त्रविधि १८ विलेपनविधि १९, शयनविधिम् २०, आर्या २१, प्रहेलिका २२, मागधिकां २३, निद्रायिका २४, गाथां २५,

चार्य के पास भेजेगे। "तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सिक्खावेहिइ सेहावेहिइ य—" वह कलाचार्य उस दृढप्रतिज्ञ दारक को लेखादिक गणित प्रधान कलासे लेकर शकुनरुत तक की ७२ कलाओं को सूत्र-अर्थ और तदुभय, एवं करणरूप सिखावेगा, एवं उन्हे सिद्ध भी करावेगा, "तं जहा—लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्टं ४ गीय-५-वाययं—६ सरगयं—७ पुक्खरगयं—८ समतालं—९—" वे बहत्तर कला इस प्रकार से हैं लेखन—१ गणित—२ रूप—३ नाटय—४ गीत—५ वादित्र—६ स्वरगत—७ पुष्करगत—८ समताल—९ "जूयं—" द्यूत-१० "जणवाय-" जनवाद-११ "पासगं" पायक—"अट्ठावय-" अष्टापद—"पोरेकच्चं-" पौरकृत्य-"दगमट्टिय-" दकमृत्तिका—"अन्नविहिं" अन्नविधि- पाणविहिं- पानविधि-'वत्थविहिं' वस्त्रविधि 'विलेवणविहिं-' विलेपनविधि-'सयणविहिं-' शयनविधि-'अज्जं-' आर्या-'पहेलियं-' प्रहेलिका-'मागहियं-' मागधिका-'णिद्दाइयं-' निद्रायिका-'गाहं-' गाथा-'गीइयं-'

'तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओय अत्थओय गंथओय करणओय सिक्खावेहिइय सेहावेहिइय' તે કલાચાર્ય તે દૃઢપ્રતિજ્ઞદારકને લેખાદિક ગણિત પ્રધાન કલાથી માંડીને શકુનરૂત સુધીની ૭૨ કલાઓને સૂત્ર અર્થ અને તદુભય અને કરણરૂપથી શીખવશે અને એમને સિદ્ધ પણ કરાવશે तं जहा लेहं १, गणियं २, रूवं ३, नट्टं ४ गीयं ५, वाइयं ६, सरगयं ७, पुक्खरगयं ८, समतालं ९, તે ૭૨ કલાઓ આ પ્રમાણે છે—લેખન ૧, ગણિત ૨, રૂપ ૩, નાટય ૪, ગીત ૫, વાદિત્ર ૬, સ્વરગત ૭, પુષ્કરગત ૮, સમતાલ ૯, 'जूयं' દ્યૂત १० 'जणवाय' જનવાદ ૧૧, 'पासगं' પાશક, 'अट्ठावयं' અષ્ટાપદ 'पोरेकच्चं' પૌરકૃત્ય 'दगमट्टियं' દકમૃત્તિકા, 'अन्नविहिं' અન્નવિધિ, 'पाणविहिं' પાનવિધિ 'वत्थविहिं' વસ્ત્રવિધિ, 'विलेवणविहिं' વિલેપનવિધિ, 'सयणविहिं' શયનવિધિ, 'अज्जं' આર્યા, 'पहेलियं' પ્રહેલિકા, 'मागहियं' માગધિકા, 'णिद्दाइयं' નિદ્રાયિકા. 'गाहं' ગાથા, गीइयं ગીતિકા

गीतिकां २६, श्लोक २७, हिरण्ययुक्ति २८, सुवर्णयुक्तिम् २९, आभरणविधि ३०, तरुणीप्रतिकर्म ३१ स्त्रीलक्षण ३२, पुरुषलक्षण ३३, हयलक्षण ३४, गज-लक्षण ३५, कुक्कुटलक्षण ३६ छत्रलक्षण ३७ चक्रलक्षण ३८, दण्डलक्षण् ३९, असिलक्षण ४०, मणिलक्षण ४१ काकिणीलक्षण ४२, वास्तुविद्या ४३ नगर-मान ४४, स्कन्धावारमान ४५, चार ४६ प्रतिचार ४७ व्यूह ४८, चक्रव्यूह ४९, गरुडव्यूह ५०, शकटव्यूह ५१, युद्ध ५२ नियुद्ध ५३ युद्धयुद्धम् ५४, अस्थियुद्ध ५५ मुष्टियुद्ध ५६ बाहुयुद्ध ५७ लतायुद्धम् ५८, इष्वस्त्र ५९, त्सरुप्रवाद ६० धनुर्वेद ६१ हिरण्यपाक ६२ सुवर्णपाक ६३ मणिपाक—६४,

---

गीतिया 'सिलोग' श्लोक-'हिरण्णजुत्ति' हिरण्ययुक्ति—'सुवण्णजुत्ति' सुवर्णयुक्ति 'आभरणविहिं' आभरणविधि—'तरुणीपडिकम्म' तरुणीप्रतिकर्म—'इत्थिलक्खण' स्त्रीलक्षण 'पुरिसलक्खण' पुरुषलक्षण 'हयलक्खण' हयलक्षण-'गयलक्खण' गज लक्षण 'कुक्कुडलक्खणं' कुक्कुटलक्षण—'छत्तलक्खण' छत्रलक्षण—'चक्कलक्खण' चक्रलक्षण 'दंडलक्खण' दण्डलक्षण 'असिलक्खण' असिलक्षण 'मणिलक्खण' मणिलक्षण—'कागणिलक्खण' काकिणीलक्षण 'वत्थुविज्ज' वास्तुविद्या—'नगर माण'—नगरमान—'खंधावारमाण' स्कन्धावारमान—'चार—पडिचार-वूह—चक्कवूह' चार-प्रतिचार-व्यूह-चक्रव्यूह, 'गरुलवूहं-सगडवूह-जुद्ध-निजुद्ध जुद्धजुद्ध—अट्ठिजुद्ध मुट्ठिजुद्ध-बाहुजुद्ध-लयाजुद्ध—इसत्थ-छरुप्पवाय' गरुडव्यूह-युद्ध-नियुद्ध-युद्धयुद्ध अस्थियुद्ध-मुष्टियुद्ध-बाहुयुद्ध-लतायुद्ध-इष्वस्त्र-त्सरुप्रवाद, 'धणुव्वेय-हिरण्णपाग-सुवण्णपाग मणिपाग-धाउपाग-सुत्तखेड-वट्टखेड-नालियाखेड-पत्तच्छेज्ज—' धनुर्वेद-हिरण्यपाक

'सिलोग' श्लोक हिरण्णजुत्ति हिरण्ययुक्ति 'सुवण्णजुत्ति' सुवर्णयुक्ति, आभरण-विहिं' आभरणविधि, 'तरुणीपडिकम्म' तरुणी प्रतिकर्म 'इत्थिलक्खण' स्त्रीलक्षण 'पुरिसलक्खण' पुरुषलक्षण 'हयलक्खण' हयलक्षण 'गयलक्खणं' गजलक्षण 'कुक्कुडलक्खणं' कुक्कुटलक्षण. 'छत्त लक्खण' छत्र लक्षण. 'चक्कलक्खण' चक्रलक्षण 'दंडलक्खणं' दंड लक्षण. 'असिलक्खण' असि लक्षण 'मणिलक्खण' मणिलक्षण 'कागणिलक्खणं' काकिणी लक्षण. 'वत्थुविज्ज' वास्तुविद्य 'णगरमाण' नगरमान. 'खंधावारमाण' स्कंधावार मान. 'चार पडिचार वूह-चक्कवूह' चार-प्रतिचार-व्यूह-चक्रव्यूह. 'गरुलवूहं'—सगडवूह—जुद्ध—निजुद्ध—जुद्धजुद्ध—अट्ठिजुद्ध—मुट्ठिजुद्ध—बाहुजुद्ध लयाजुद्ध—इसत्थ—छरुप्पवाय' गरुड व्यूह शकट व्यूह. युद्ध नियुद्ध युद्ध-युद्ध अस्थि युद्ध. मुष्टियुद्ध. बाहुयुद्ध लतायुद्ध इष्वस्त्र. त्सरु प्रवाद. 'धणुव्वेय हिरण्णपाग सुवण्णपाग मणिपाग धाउपाग सुत्तखेड वट्टखेड णालियाखेड पत्तच्छेज्जं" धनुर्वेद हिरण्यपाक सुवर्णपाक मणिपाक. सूत्रखेल वृ

धातुपाकं ६५ सूत्रखेलं ६६ वर्तखेलं ६७ नालिकाखेलं ६८ पत्रच्छेद्य ६९, कटकच्छेद्यं ७० सजीवनिर्जीव ७१ शकुनरुतम् ७२, इति ॥ सू० १७० ॥

टीका—'तए णं त दढपइण्णं' इत्यादि—ततः खलु तं दृढप्रतिज्ञ दारकम् अम्बा-पितरौ-तन्माता-पितरौ, सातिरेकाष्टवर्षजातकं-संजातकिञ्चिदधिकाष्टवर्षक ज्ञात्वा-परिभाव्य शोभने तिथिकरण-नक्षत्रमुहूर्ते—तिथिश्च करणं च नक्षत्रं च मुहूर्तं चेत्येतेषां समाहारः तिथिकरण-नक्षत्रमुहूर्तं, तत्र शोभनशब्दस्य सर्वत्र सम्बन्धात् शोभनायां तिथौ—नन्दा जया पूर्णारूपायां, शोभने करणे—स्थिरसंज्ञके, शोभने नक्षत्रे—विद्याऽध्ययनयोग्ये ज्ञान-वृद्धिकारके मृगशीर्षाऽऽर्द्रापुष्यः-अश्लेषा-मूल,-पूर्वाफाल्गुनी,-पूर्वाषाढा,-पूर्वाभाद्रपद,-हस्त-चित्रा-रूपे नक्षत्रदशकेऽन्यतमे-शोभने मुहूर्ते-शुभायां वेलायां स्नातं—कृत स्नानं कृतबलिकर्माणं—काकादिभ्यः कृतान्नभागं कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तं—कृता-नि—सम्पादितानि कौतुकानि—मषीतिलकादीनि मङ्गलानि—मङ्गलविधायकानि दध्य-क्षतादीनि तान्येव प्रायश्चित्तानि—दुःस्वप्नादि विघातार्थमवश्यकरणीयत्वात् प्रा-

सुवर्णपाक-मणिपाक-धातुपाक-सूत्रखेल वर्त्तखेल—नालिकाखेल—पत्रच्छेद्य. 'कडग च्छेज्जं-सजीवनिज्जीवं—सउणरुयं-७२-त्ति-' कटकच्छेद्य सजीवनिर्जीव-और शकुनरुत.७२।

टीकार्थ—जब दढप्रतिज्ञ दारक आठ वर्ष से अधिक वय का हो जावेगा—तब उसके मातापिता उसे शुभ तिथि में—नन्दा—जया—पूर्णरूप तिथि में, शुभकरण में—स्थिरनामके शुभकरण में, तथा—विद्याध्ययनयोग्य—ज्ञानवृद्धिकारक मृगशीर्ष—आर्द्रा—पुष्य-अश्लेषा-मूल-फाल्गूनी-पूर्वाषाढा-पूर्वाभाद्रपद-हस्त-और चित्रा रूप नक्षत्र दशकमें, और शुभवेलामें कलाचार्य के पास ले जावेगे। इसके पहले वे उस बालक को स्नान करावेंगे, वायस—काक आदिकों को देने के लिये उससे अन्न का विभाग कराकर वितरित करावेगे. वह मषी तिलक आदि रूप कौतुक को तथा—दुःस्वप्न आदिरूप अमंगल के विघातक—होने से अवश्य करणीय ऐसे दध्यक्षतादिरूप प्रायश्चित्तको करेगा. और फिर वह समस्त

ખેલ નાલિકા ખેલ પત્રચ્છેદ્ય "कडगच्छेज्जं सजीवनिज्जीवं सउणरुयं ७२ ति कटकच्छेद्य. सजीवनिर्जीव અને શકુન રુત ૭૨

ટીકાર્થ:—જ્યારે દૃઢપ્રતિજ્ઞદારક આઠ વર્ષ કરતા મોટો થઇ જશે ત્યારે તેના માતાપિતા તેને શુભતિથિમા નંદા જયા પૂર્ણારૂપ તિથિમા, શુભકરણમા, સ્થિર નામના શુભકરણમા, તથા વિદ્યાધ્યયન યોગ્ય જ્ઞાનવૃદ્ધિકારક મૃગશીર્ષા આર્દ્રા પુષ્ય અશ્લેષા મૂલ-પૂર્વાફાલ્ગુની પૂર્વાષાઢા પૂર્વાભાદ્રપદ હસ્ત અને ચિત્રા એ નક્ષત્રદશકમા અને શુભવેલામા કલાચાર્યની પાસે લઈ જશે. અને પહેલા તેઓ તે બાળકને સ્નાન કરાવશે, વાયસ વગેરેને આપવા માટે તેની પાસેથી અન્નવિભાગ કરાવીને વિતરિત કરશે તે મષીતિલક વગેરે રૂપ કૌતુકને તેમજ દુઃખસ્વપ્ન વગેરે રૂપ અમંગલના વિઘાતક હોવાથી અવશ્યકરણીય એવા દધ્યક્ષતાદિ રૂપ પ્રાયશ્ચિત્તને કરશે અને

गीतिका २६, श्लोक २७, हिरण्ययुक्ति २८, सुवर्णयुक्तिम् २९, आभरणविधि ३०, तरुणीप्रतिकर्म ३१ स्त्रीलक्षण ३२, पुरुषलक्षण ३३, हयलक्षण ३४, गज लक्षणं ३५, कुक्कुटलक्षण ३६, छत्रलक्षण ३७ चक्रलक्षण ३८, दण्डलक्षण् ३९, असिलक्षण ४०, मणिलक्षण ४१ काकिणीलक्षण ४२, वास्तुविद्या ४३, नगर मान ४४, स्कन्धावारमानं ४५, चार ४६ प्रतिचार ४७ व्यूह ४८, चक्रव्यूह ४९, गरुडव्यूह ५०, शकटव्यूह ५१, युद्ध ५२ नियुद्ध ५३ युद्धयुद्धम् ५४, अस्थियुद्ध ५५ मुष्टियुद्ध ५६ बाहुयुद्ध ५७ लतायुद्धम् ५८, इष्वस्त्र ५९, त्सरुप्रवाद ६० धनुर्वेद ६१ हिरण्यपाक ६२ सुवर्णपाक ६३ मणिपाक-६४,

---

गीतिया 'सिलोग' श्लोक-'हिरण्णजुत्ति' हिरण्यपुक्ति-'सुवण्णजुत्ति' सुवर्णयुक्ति 'आभरणविहि' आभरणविधि-'तरुणीपडिकम्म' तरुणीप्रतिकर्म-'इत्थिलक्खण' स्त्रीलक्षण 'पुरिसलक्खण' पुरुषलक्षण 'हयलक्खण' हयलक्षण 'गयलक्खण' गज लक्षण 'कुक्कुडलक्खण' कुक्कुटलक्षण-'छत्तलक्खण' छत्रलक्षण-'चक्कलक्खण' चक्रलक्षण 'दण्डलक्खण' दण्डलक्षण 'असिलक्खण' असिलक्षण 'मणिलक्खण मणिलक्षण-'कागणिलक्खण' काकिणीलक्षण 'वत्थुविज्ज' वास्तुविद्या-'नगर माण'-'नगरमान-'खंधावारमाण' स्कन्धावारमान-'चार-पडिचार-वूहं-चक्कवूह चार-प्रतिचार-व्यूह-चक्रव्यूह, 'गरुडवूह-सगडवूह-जुद्ध-निजुद्ध जुद्धजुद्ध-अट्ठिजुद्ध मुट्ठिजुद्ध-बाहुजुद्ध-लयाजुद्ध-इसत्थ-छरुप्पवाय' गरुडव्यूह-युद्ध-नियुद्ध-युद्धयुद्ध अस्थि युद्ध-मुष्टियुद्ध-बाहुयुद्ध-लतायुद्ध-इष्वस्त्र-त्सरुप्रवाद, 'धणुव्वेय हिरण्णपाग-सुवण्णपाग मणिपाग धाउपाग-सुत्तखेड्ड-वट्टखेड्ड-नालियाखेड्ड-पत्तच्छेज्ज-' धनुर्वेद हिरण्यपाक

'सिलोग' श्लोक, 'हिरण्णजुत्ति' हिरण्ययुक्ति 'सुवण्णजुत्ति' सुवर्णयुक्ति आभरण-विहि' आभरणविधि 'तरुणीपडिकम्म' तरुणी प्रतिकर्म 'इत्थिलक्खण' स्त्रीलक्षण 'पुरिसलक्खण पुरुषलक्षण 'हयलक्खण' हयलक्षण 'गयलक्खणं' गजलक्षण कुक्कुडलक्खण' कुक्कुटलक्षण 'छत्तलक्खण छत्रलक्षण 'चक्कलक्खण चक्रलक्षण 'दण्डलक्खण' दण्डलक्षण 'असिलक्खण' असि लक्षण 'मणिलक्खण' मणिलक्षण 'कागणिलक्खण काकिणी लक्षण 'वत्थुविज्जं' वास्तुविद्या 'णगरमाण' नगरमान खंधावारमाण' स्कन्धावार मान 'चारं पडिचारं वूहं चक्कवूहं' चार-प्रतिचार-व्यूह-चक्रव्यूह 'गरुडवूह-सगडवूह-जुद्ध-निजुद्ध-जुद्धजुद्ध-अट्ठिजुद्ध-मुट्ठिजुद्ध-बाहुजुद्ध लयाजुद्ध-इसत्थ-छरुप्पवाय" गरुड व्यूह शकट व्यूह. युद्ध नियुद्ध युद्ध-युद्ध अस्थि युद्ध मुष्टियुद्ध. बाहुयुद्ध लतायुद्ध इष्वस्त्र. त्सरु प्रवाद 'धणुव्वेय हिरण्णपाग सुवण्णपाग मणिपाग धाउपाग सुत्तखेड्ड वट्टखेड्ड नालियाखेड्ड पत्तच्छेज्जं" धनुर्वेद हिरण्यपाक सुवर्णपाक मणिपाक धातुपाक

ऽऽचार्यः शिक्षयिष्यतीति सम्बन्धः एवमग्रेऽपि संयोजना कर्तव्या। लेखो लिपि विषयभेदाद् द्विविधः तत्र लिपिः ब्राह्म्यादिभेदेनाष्टादशविधा. सा च समवायाङ्गसूत्रगताऽष्टादशसमवायोक्ता बोध्या। अथवा लाटादिदेशभेदतोऽनेकविधा भवति। पुनश्च वल्कलकाष्ठदन्तलोहताम्ररजतपाषाणाद्याधारेषु लेखनोत्किरणस्यूतव्यूतच्छिन्नभिन्नदग्धसंक्रान्तितोऽक्षरविन्यासरूपा लिपिरनेकविधा भवति। विषयमाश्रित्य स्वामिभृत्यपितापुत्रकलत्रपतिगुरुशिष्यशत्रुमित्रादिविषया कार्श्यं स्थौल्यंवैषम्यपङ्क्तिवक्रत्वपदच्छेदादिभेदभिन्ना चानेकविधा भवति १. गणितम्–पट्टिकादि प्रसिद्धमेकद्वयादि संकलनगुणभागादिरूपम् २. रूपम् लेप्यशिलासुवर्णरजतमणिवस्त्रचित्रादिलक्षणम् ३। नाटयम्–साभिनयनिरभिनयभेदभिन्नं

जो विज्ञान हो जाता है वह भी लेख ही है, इस लेख में अक्षरादिके लिखने में निपुण हो जाना यह–लेखकला है, यह लेख-लिपि, एवं-विषय भेदसे दो प्रकार का है. इनमें–ब्राह्मी आदि के भेद से लिपि १८–प्रकार की है. यह–विषय "समवायाङ्गसूत्र में १८–वें समवान में कहा गया है। अथवा–लाटादि के भेद से लिपि अनेक प्रकार भी होती है, पुनः–वल्कल–काष्ठदन्त–लोह–ताम्र–रजत–पाषाण–आदि आधारों के ऊपर अक्षरों का लिखना, उन पर अक्षरों का टांकी आदि से अङ्कित–(उकेरना) इत्यादिरूप से अक्षरविन्यासरूप लिपि अनेक प्रकार की है। विषय की अपेक्षा भी स्वामी–भृत्य–पिता–पुत्र–कलत्र–पति–गुरु–शिष्य–शत्रु और–मित्रादि को विशय करने वाली जो लिपि है वहभी कृशता स्थूलता आदिरूप से विन्यास की अपेक्षा अनेक प्रकार होती है १। गणितरूप कला गुणा–भाग, वीजगणित-रेखागणित आदि होती है २। रूपकला-लेख्य, शिला, सुवर्ण, रजत–आदि के ऊपर चित्र को उतारनेरूप या–

વામા કુશળતા મેળવવી તે લેખકલા છે આ લેખ–લિપિ અને વિષયભેદથી બે પ્રકારનો છે આમા બ્રાહ્મી વગેરેના ભેદથી ૧૮ પ્રકારની લિપિ છે આ વિષય 'समवायाङ्ग' સૂત્રમા ૧૮ મા સમવાયમા આવેલ છે અથવા લાટાદિના ભેદથી લિપિના ઘણા પ્રકારો છે. અને વલ્કલ, કાષ્ઠ, દંત, લોહ, તામ્ર, રજત, પાષાણ વગેરે આધારો પર અક્ષરો લખવા, તેમની ઉપર ટાંકણુથી ટાંકવુ વગેરે રૂપમા અક્ષર વિન્યાસ લિપિ ઘણા પ્રકારની છે વિષયની અપેક્ષાએ પણ સ્વામી, ભૃત્ય, પિતા, પુત્ર, કલત્ર, પતિ, ગુરૂ, શિષ્ય, શત્રુ અને મિત્ર વગેરેને વિશય કરનારી જે લિપિ છે તે પણ કૃશતા સ્થૂલતા વગેરે રૂપથી વિન્યાસની અપેક્ષાએ અનેક પ્રકારની હોય છે ૧, ગણિતકલા ગુણુ–ભાગ-બીજ ગણિત, રેખા ગણિત વગેરે પ્રકારની હોય છે. ૨, રૂપકલા–લેખ્ય, શિલા, સુવર્ણ, રજત, વગેરેની ઉપર ચિત્રને ઉતારવા રૂપ કે લેખન રૂપ હોય છે. ૩ નાટયકલા અભિનય સહિત, વગર

भिसम्मणि यत्र स तम्, सर्वालङ्कारविभूषित–परिहितकटककुण्डलाद्याभरणम् सर्वे-समस्ताः हस्तन्यसकण्ठादिसमस्तावयवयोग्या अलङ्काराः-भूषणसमूहाः तैः विभूषितं सज्जितं परिहितशुद्धप्रवेश्यवस्त्रं परिहितकटककुण्डलाद्याभरणं च, एतादृशं सुसज्जितं दृढप्रतिज्ञं दारकं कृत्वा महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन-ऋद्धिः धनसुवर्णादिसम्पत् तया सत्कारः सम्मानः तद्युक्तः समुदयः-समागतजनसमुदायो यत्र स तेन-महोत्सवपूर्वकमित्यर्थः कलाचार्यस्य-कलाशिक्षकस्य समीपं उपनेष्यतः। ततः खलु स कलाऽऽचार्यः तं दृढप्रतिज्ञं दारकं लेखादिकाः गणितप्रधानाः शकुनरुतपर्यवसानाः द्वासप्ततिं कलाः सूत्रतः-मूलतः अर्थतः-अर्थोपदर्शनतः ग्रन्थतः-ग्रन्थपठनपाठनतः करणतः-प्रयोगतश्च शिक्षयिष्यति-अभ्यासयिष्यति साधयिष्यति साध्याः कारयिष्यति। तद्यथा-ताः कला यथा-लेखम् लेखः अक्षरविन्यासः तद्विषया कलाविज्ञानं लक्षणयोच्यते तं लेखम्-लेखविज्ञानम् कला

अलङ्कारों से कटक-कुण्डलादिरूप आभरणों से अपने को सुसज्जित करेगा तत्पश्चात्—यह सभा में प्रवेश योग्य शुद्ध वस्त्रों को धारण करेगा इस प्रकार से सुसज्जित हुवे उस दृढप्रतिज्ञ कुमार को वे मातापिता अपनी ऋद्धि के अनुसार धन सुवर्णादि सम्पत्ति के अनुरूप समागत जन—समुदाय के साथ सत्कारपूर्वक—महोत्सव पूर्वक उसे कलाचार्य के पास ले जावेंगे। तब वह—कलाशिक्षक उस दृढप्रतिज्ञ दारक को गणितप्रधान लेखादिक कलाओं को शकुनिरुतान्त (पक्षिके शब्द ज्ञान तककी) कलावक यथावत् सिखायेगा ये सब कलाएँ ७२-होती हैं। सूत्र से तथा अर्थोपदर्शन से, ग्रन्थ सद्भाव से–अर्थात् सूत्र और अर्थ दोनों प्रकार से और—प्रयोगरूप से वह इन सब कलाओं को। उसे पढावेगा पढाकर वह इन कलाओं में क्रियात्मकरूप से उसे निपुण भी करेगा। उन ७२ कलाओं के नाम इस प्रकार से हैं—लेख अक्षरविन्यास, इस विषय का

પછી તે સમસ્ત અલંકારોથી કટક કુંડલ આદિ રૂપ આભરણોથી પોતાના શરીરને સુસજ્જિત કરશે. ત્યાર પછી તે શુદ્ધ વસ્ત્રો ધારણ કરશે. આ પ્રમાણે સુસજ્જિત થયેલા તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમારને તેના માતાપિતા પોતાની ઋદ્ધિ મુજબ ધનસુવર્ણ વગેરે સંપત્તિના અનુરૂપ આવેલ જનસમુદાયની સાથે સત્કારપૂર્વક મહોત્સવપૂર્વક તેને કલાચાર્ય પાસે લઈ જશે. ત્યારે તે કલાચાર્ય તે દૃઢપ્રતિજ્ઞદારકને ગણિત પ્રધાન લેખાદિક કલાઓથી શકુનિરુતાન્ત સુધીની સમસ્ત કલાઓને યથાવત શીખવાડશે. આ બધી કલાઓ ૭૨ છે. સૂત્રરૂપ અર્થોપદર્શનરૂપે ગ્રન્થરૂપે અને પ્રયોગરૂપે તે કલાચાર્ય તેને સમસ્ત કલાઓનો અભ્યાસ કરાવશે. અભ્યાસ કરાવીને તે તેને ક્રિયાત્મક રૂપમાં પણ નિપુણ બનાવશે. તે ૭૨ કલાઓના નામ આ પ્રમાણે છે લેખ-અક્ષરવિન્યાસ આ વિષયનું જે વિજ્ઞાન હોય છે તે પણ 'લેખ' જ છે. આ 'લેખ'માં અક્ષર વગેરે લેખ

ऽऽचार्यः शिक्षयिष्यतीति सम्बन्धः एवमग्रेऽपि संयोजना कर्तव्या। लेखो लिपि विषयभेदाद् द्विविधः तत्र लिपिः ब्राह्म्यादिभेदेनाष्टादशविधा. सा च समवायाङ्गसूत्रगताऽष्टादशसमवायोक्ता बोध्या। अथवा लाटादिदेशभेदतोऽनेकविधा भवति। पुनश्च वल्कलकाष्ठदन्तलोहताम्ररजतपाषाणाद्याधारेषु लेखनोत्किरणस्यूतव्यूतच्छिन्नभिन्नदग्धसंक्रान्तितोऽक्षरविन्यासरूपा लिपिरनेकविधा भवति। विषयमाश्रित्य स्वामिभृत्यपितापुत्रकलत्रपतिगुरुशिष्यशत्रुमित्रादिविषया कार्श्य स्थौल्यंवैषम्यपङ्क्तिवक्रत्वपदच्छेदादिभेदभिन्ना चानेकविधा भवति १. गणितम्—पट्टिकादि प्रसिद्धमेकद्वयादि संकलनगुणभागादिरूपम् २. रूपम् लेप्यशिलासुवर्णरजतमणिवस्त्रचित्रादिलक्षणम् ३। नाट्यम्—साभिनयनिरभिनयभेदभिन्नं

जो विज्ञान हो जाता है वह भी लेख ही है, इस लेख में अक्षरादिके लिखने में निपुण हो जाना यह—लेखकला है, यह लेख-लिपि, एवं-विषय भेदसे दो प्रकार का है. इनमें—ब्राह्मी आदि के भेद से लिपि १८—प्रकार की है. यह—विषय "समवायाङ्गसूत्र में १८—वें समवान में कहा गया है। अथवा—लाटादि के भेद से लिपि अनेक प्रकार भी होती है, पुनः-वल्कल—काष्ठदन्त—लोह—ताम्र—रजत—पाषाण—आदि आधारों के ऊपर अक्षरों का लिखना, उन पर अक्षरों का टांकी आदि से अङ्कित—(उकेरना) इत्यादिरूप से अक्षरविन्यासरूप लिपि अनेक प्रकार की है। विषय की अपेक्षा भी स्वामी—भृत्य—पिता—पुत्र—कलत्र—पति—गुरु—शिष्य—शत्रु और—मित्रादि को विशय करने वाली जो लिपि है वहभी कृशता स्थूलता आदिरूपसे विन्यास की अपेक्षा अनेक प्रकार होती है १। गणितरूप कला गुणा—भाग, वीजगणित-रेखागणित आदि होती है २। रूपकला-लेख्य, शिला, सुवर्ण, रजत—आदि के ऊपर चित्र को उतारनेरूप या—

વામા કુશળતા મેળવવી તે લેખકલા છે. આ લેખ—લિપિ અને વિષયભેદથી બે પ્રકારનો છે આમા બ્રાહ્મી વગેરેના ભેદથી ૧૮ પ્રકારની લિપિ છે આ વિષય 'समवायाङ्ग' સૂત્રમા ૧૮ મા સમવાયમા આવેલ છે અથવા લાટાદિના ભેદથી લિપિના ઘણુા પ્રકારો છે અને વલ્કલ, કાષ્ઠ, દત, લોહ, તામ્ર, રજત, પાષાણ વગેરે આધારો પર અક્ષરો લખવા, તેમની ઉપર ટાકણુથી ટાકવુ વગેરે રૂપમા અક્ષર વિન્યાસ લિપિ ઘણુા પ્રકારની છે વિષયની અપેક્ષાએ પણ સ્વામી, ભૃત્ય, પિતા, પુત્ર, કલત્ર, પતિ, ગુરૂ, શિષ્ય, શત્રુ અને મિત્ર વગેરેને વિશય કરનારી જે લિપિ છે તે પણ કૃશતા સ્થૂલતા વગેરે રૂપથી વિન્યાસની અપેક્ષાએ અનેક પ્રકારની હોય છે ૧, ગણિતકલા ગુણુા—ભાગ-બીજ ગણિત, રેખા ગણિત વગેરે પ્રકારની હોય છે. ૨, રૂપકલા—લેપ્ય, શિલા, સુવર્ણ, રજત, વગેરેની ઉપર ચિત્રને [illegible] ...ત, વગર

भिवत्स्यामि येन स तम्, सर्वालङ्कारविभूषित—परिहितकटककुण्डलाद्याभरणम् सर्वे-समस्ता हस्तपादकण्ठादिसमस्तावयवयोग्या अलङ्कारा —वस्त्राभरणरूपाः तैः विभूषित-सज्जित परिहितशुद्धप्रवेश्यवस्त्र परिहितकटककुण्डलाद्याभरण च, एतादृश सुसज्जित दृढप्रतिज्ञ दारक कृत्वा महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन-ऋद्धि वस्त्रसुवर्णादिसम्पत् तथा सत्कार सत्कारयुक्तः समुदयः—समागतजनसमुदायो यत्र स तेन-महोत्सवपूर्वकमित्यर्थ कलाचार्यस्य—कलाशिक्षकस्य समीपे उपनेष्यतः। ततः खलु स कलाऽऽचार्यः त दृढप्रतिज्ञ दारक लेखादिका गणितप्रधाना शकुनरुत पर्यवसाना द्वासप्तति कला सूत्रत —मूलतः अर्थत —अर्थोपदर्शनत ग्रन्थत — ग्रन्थरूपेण तासां लेखनत करणत —प्रयोगतश्च शिक्षयिष्यते—अध्यापयिष्यति साधयिष्यति साध्याः कारयिष्यतिश्च। तद्यथा—ताः कला यथा-लेखम् लेख अक्षर विन्यास तद्विषया कलाविज्ञान लेखमेवोच्यते स लेखम्-लेखविज्ञानम् कला-

अलङ्कारों से कटक-कुण्डलादिरूप आभरणों से अपने को सुसज्जित करेगा तद् पश्चात्—शुद्ध सभा में प्रवेश योग्य शुद्ध वस्त्रों को धारण करेगा इस प्रकार से सुसज्जित हुवे उस दृढप्रतिज्ञ कुमार को वे मातापिता अपनी ऋद्धि के अनुसार वस्त्र सुवर्णादि सम्पत्ति के अनुरूप समागत जन—समुदाय के साथ सत्कारपूर्वक—महोत्सव पूर्वक उसे कलाचार्य के पास ले जावेंगे। तब वह—कलाशिक्षक उस दृढप्रतिज्ञ दारक को गणितप्रधान लेखादिक कलाओं को शकुनिरुतान्त (पक्षिक शकुन देखने तककी) कलातक यथावत् सिखावेगा ये सब कलाएँ ७२-होती हैं। सूत्र से तथा अर्थोपदर्शन से, एव तदुभय से-अर्थात् सूत्र और अर्थ दोनों प्रकार से और—प्रयोगरूप से वह इन सब कलाओं को। उसे पढावेगा पढाकर वह इन कलाओं में क्रियात्मकरूप से उसे निपुण भी करवेगा। उन ७२ कलाओं के नाम इस प्रकार से हैं—लेख अक्षरविन्यास, इस विषय का

પછી તે સમસ્ત અલંકારોથી કટક કુંડલાદિ રૂપ આભરણોથી પોતાના શરીરને સુસજ્જિત કરશે ત્યાર પછી તે શુદ્ધ વસ્રો ધારણ કરશે. આ પ્રમાણે સુસજ્જિત થયેલા તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમારને તેના માતાપિતા પોતાની ઋદ્ધિ મુજબ વસ્ત્રસુવર્ણ વગેરે સંપત્તિના અનુરૂપ આવેલ જનસમુદાયની સાથે સત્કારપૂર્વક મહોત્સવપૂર્વક તેને કલાચાર્ય પાસે લઈ જશે. ત્યારે તે કલાશિક્ષક તે દૃઢપ્રતિજ્ઞદારકને ગણિત પ્રધાન લેખાદિક કલાઓથી શકુનિરુતાન્ત સુધીની સમસ્ત કલાઓને યથાવત શીખવાડશે. આ બધી કલાઓ ૭૨ છે સૂત્રરૂપે અર્થોપદર્શનરૂપે, ગ્રન્થરૂપે અને પ્રયોગરૂપે તે કલાચાર્ય તેને સમસ્ત કલાઓનો અભ્યાસ કરાવશે. અભ્યાસ કરાવીને તે તેને ક્રિયાત્મક રૂપમાં પણ નિપુણ બનાવશે. તે ૭૨ કલાઓના નામ આ પ્રમાણે છે લેખ-અક્ષરવિન્યાસ આ વિષયનું જે વિજ્ઞાન હોય છે તે પણ લેખ' જ છે આ 'લેખ'માં અક્ષર વગેરે લખ

पूर्विका त पृथक्करणकलाऽप्युपचाराद् दकमृत्तिका ताम् १५। अन्नविधिम्—अन्न पाककलाम् १६। पानविधि—जलोत्पादनकलां तत्संशोधनकलां वा १७। वस्त्र-विधिम्-वस्त्रोत्पादनकलां तद्धारणकलां वा १८। विलेपनविधि-शरीरोपरिचन्दना-दिलेपकलां यक्षकर्दमादिलेप परिज्ञानम् १९। शयनविधिम् शयनं-शय्या पल्यङ्कादि. तद्विपया कला ताम् २०। आर्याम्-मात्राच्छन्दो विशेपनिर्माणकलाम् २१। प्रहेलिकाम्—गूढाशयपद्यरूपाम् २२। मागधिकाम्—भाषाच्छन्दोविशेपाम् २३।

है. १४। उदक में मिली हुई मिट्टीं को दूर करनेवाले द्रव्य का ज्ञान होना, और-उसका सम्बन्ध कराकर पानी और मिट्टी को दूर कर देना यह—दकमृत्तिका कला है जैसे-निर्मली—फिटकिडी डालकर गन्दे पानी को निर्मल करदिया जाता है. १५। भोजन वनाने की चतुराई का नाम अन्नविधि कला है, १६। भूमि का देखकर यहां जलनिकलेगा इस प्रकारके विज्ञान का नाम पानविधि कला है. १७। वस्त्रों का निर्माण करने की चतुराई का नाम, या—वस्त्रों को सुन्दर ढग से पहनने की चतुराई का नाम वस्त्रविधि कला है. १८। शरीर के ऊपर चन्दनादि का लेप करने की चतुराई का नाम-विलेपनविधि है, १९। पल्यङ्कआदि विपयक ज्ञान होना—अर्थात् इस प्रकारका पल्यङ्क शुभ होता है—इस प्रकार का पल्यङ्क शुभ नहीं होता है, ऐसा ज्ञान होना इसका नाम—शयनविधि कला है २०। मात्रावाले छन्दों का निर्माण करना. यह—आर्या कला हैं, २१। गूढआशयवाले पद्यों की निर्माणकला प्रहेलिका कला है. २२। भाषाछन्द विशेप का नाम-मागधिका है, इसके निर्माण की चतुराई का नाम मागधिकाकला है, २३। निद्रा लाने की विद्या

દ્રવ્યથી જુદી પાડી શકાય તેનું જ્ઞાન થવુ અને તેને સબંધ કરાવીને પાણી અને માટીને જુદા જુદા કરવા આ દકમૃત્તિકા કલા છે જેમકે નિર્મલી-ફટકડી નાખીને ગદા પાણીને સાફ કરવામા આવે છે ૧૫ ભોજન તૈયાર કરવાની કુશળતાનુ નામ અન્ન-વિધિ કલા છે ૧૬ જમીનને જોઇને અહીંથી પાણી નીકળશે આ જાતના વિજ્ઞાનનું નામ 'પાનવિધિ કલા' છે ૧૭ વસ્ત્રોના નિર્માણની કુશળતાનુ નામ અથવા તો વસ્ત્રોને સુદર ઢંગથી પહેરવાની કળાનુ નામ વસ્ત્રવિધિ કળા છે ૧૮ શરીરની ઉપર ચન્દન વગેરેને લેપ કરવાની કુશળતાનું નામ વિલેપનવિધિ છે ૧૯ પલ્યકાદિ વિષયકજ્ઞાન થવુ એટલે કે આ જાતનો પલ્યઙ્ક શુભ હોય છે, આ જાતનો પલ્યક શુભ નથી હોતો આવુ જ્ઞાન થવું, આનુ નામ શયનવિધિ કલા છે ૨૦માત્રાવાળા છદાનુ નિર્માણ કરવું તે આર્યાકલાછે ૨૧ ગૂઢ આશયયુકત પદ્યોની નિર્માણકળા 'પ્રહેલિકા-કલા' છે. ૨૨ ભાષા છન્દ વિશેષનું નામ માગધિકા છે. એની નિર્માણ કુશળત ાવવાની વિદ્યાનુ

नर्तनम् ४। गीतम्—गन्धर्वकलाज्ञानविज्ञानरूपम् ५। वादितम्—ततविततादि भेदभिन्न वाद्यम् ६। स्वरगतम्—षड्जऋषभादिस्वरज्ञानम् ७। पुष्करगतम्—मृदङ्गमुरजादिभेदयुक्त विज्ञानम् अस्य वाद्यान्तर्गतत्वेऽपि यत्पृथक्कथन तत् परम-सङ्गीताङ्गस्यापनार्थम् ८। समतालम्—सम अन्यूनाधिकमात्रः ताल -गीतादि मानकालो यत्र तत् समतालविज्ञानमित्यर्थ ९। द्यूत—प्रसिद्धम् १०। जन वाद—द्यूतविशेष ११। पाशकम्—पाशैः खेलनरूप द्यूतम् १२। अष्टापदम्-सारि फलद्यूतमेव १३। पौरकाव्यम्—पुरस्य कामः—निर्माण तद्विषय विज्ञान पौरकाव्य पुरनिर्माणमित्यर्थ तत् अत्र विविधः पाठ उपलभ्यते तथाहि-पोरेकच्च ' 'पोरेवच्चं' 'पोरकव्व' इति। प्रत्येकस्य छायापि तदनुसारेणैव भवति—'पोरकृत्यम् पौरपत्यम् 'पुर काव्यम्' इति। तत्र पोरेकच्च' इत्यस्य व्याख्यातोऽर्थः कृतः 'पोरेवच्च' पौरपत्यम्—नगररक्षणकला, 'पोरकव्व' पुर काव्यम्—पुरत पुरत काव्यरचनाणी निरन्तरण शीघ्रकवित्वमित्यर्थ ।१४। दकमृत्तिकम्-उदकसंयुक्तमृत्तिका विवेकद्रव्यप्रयोग-

लिखने रूप होती है ३। नाटयकला-अभिनयसहित, विना अभिनय के भेद से दो प्रकार की होती है ४। गीतकला—गान आदि में निपुणता प्राप्त करनेरूप होती है ५। वादित्रकला—तत वितत आदिरूप वादित्रों के बजाने रूप होती है ६। स्वरकला-षड्ज, ऋषभ—आदि के ज्ञान करानेरूप होती है ७। पुष्करगतकला—मृदंग, मुरज आदि के बजानेरूप होती है। यद्यपि—यह कला वादित्रकला में अन्तर्भूत हो जाती है, फिर भी—इसे जो स्वतन्त्ररूप से अलग कला कही गई है सो-यह सङ्गीतकला में उसका उत्कृष्ट अङ्ग है इस बात को प्रकट करने के लिये कहा गया है ८। गीतादिकों का मान काल जहां होता है, उसका नाम ताल है, इस ताल का जो विज्ञान है वह समताल विज्ञान है ९। जुआ खेलने की चतुराई का नाम द्यूतकला है १०। जनवाद-यह भी एक प्रकार का विशेष जुआ है, ११। पासों से खेलने की विशेषनिपुणता का नाम पाशककला है १२। सारिफलद्यूतरूप अष्टापद कला होती है १३। नगर के निर्माण करने की कला का नाम पौरकृत्यक ला

અભિનય આમ બે પ્રકારની હોય છે ગીતકલા-સંગીત વગેરેમાં નિપુણતા પ્રાપ્ત કરવી તે છે ૫. વાદિત્રકલા તત વિતત વગેરે વાજિંત્રોને વગાડવા તે છે ૬ સ્વરકલા-ષડ્જ, ઋષભ વગેરેનું જ્ઞાન મેળવવું તે છે ૭ પુષ્કરગત કલા મૃદંગ, મુરજ વગાડવા તે છે, જો કે આ કલા વાજિંત્રકલાની અન્તર્ભૂત થઈ જાય છે પણ કલાએ આને જે સ્વતંત્ર રૂપમાં જુદી કલા ગણી છે તેનું કારણ આ છે કે આ કલાનું સંગીત કલામાં અતીવ મહત્ત્વપૂર્ણ સ્થાન છે ૮ ગીત વગેરેનો જે માનકાલ હોય છે તેનું નામ તાલ છે આ તાલનું જે વિજ્ઞાન છે તે સમતાલ વિજ્ઞાન છે ૯ જુગાર રમવાની કુશળતાનું નામ દ્યૂત કલા છે ૧૦ જનવાદ પણ એક જાતનો વિશેષ જુગાર છે ૧૧ પાસાઓથી જુગાર રમવામાં વિશેષ નિપુણતા મેળવવાનું નામ પાશકકલા છે ૧૨ સારિફલ દ્યૂતરૂપ અષ્ટાપદકલા હોય છે ૧૩ નગરની નિર્માણકલા પૌરકૃત્યકલા છે ૧૪ દકા (પાણી)માં મળેલી માટીને જે

पूर्विका त पृथक्करणकलाऽप्युपचाराद् दकमृत्तिका ताम् १५। अन्नविधिम्—अन्न पाककलाम् १६। पानविधि—जलोत्पादनकलां तत्संशोधनकलां वा १७। वस्त्रविधिम्-वस्त्रोत्पादनकलां तद्धारणकलां वा १८। विलेपनविधि-शरीरोपरिचन्दनादिलेपकलां यक्षकर्दमादिलेप परिज्ञानम् १९। शयनविधिम् शयनं-शय्या पल्यङ्कादि. तद्विषया कला ताम् २०। आर्याम्-मात्राच्छन्दो विशेषनिर्माणकलाम् २१। प्रहेलिकाम्—गूढाशयपद्यरूपाम् २२। मागधिकाम्—भाषाच्छन्दोविशेषाम् २३।

है. १४। उदक में मिली हुई मिट्टी को दूर करनेवाले द्रव्य का ज्ञान होना, और उसका सम्बन्ध कराकर पानी और मिट्टी को दूर कर देना यह—दकमृत्तिका कला है जैसे—निर्मली—फिटकिडी डालकर गन्दे पानी को निर्मल करदिया जाता है. १५। भोजन बनाने की चतुराई का नाम अन्नविधि कला है, १६। भूमि का देखकर यहां जल निकलेगा इस प्रकारके विज्ञान का नाम पानविधि कला है. १७। वस्त्रों का निर्माण करने की चतुराई का नाम, या—वस्त्रों को सुन्दर ढग से पहनने की चतुराई का नाम वस्त्रविधि कला है. १८। शरीर के ऊपर चन्दनादि का लेप करने की चतुराई का नाम-विलेपनविधि है, १९। पल्यङ्कआदि विषयक ज्ञान होना—अर्थात् इस प्रकारका पल्यङ्क शुभ होता है—इस प्रकार का पल्यङ्क शुभ नहीं होता है, ऐसा ज्ञान होना इसका नाम—शयनविधि कला है २०। मात्रावाले छन्दों का निर्माण करना. यह—आर्या कला हैं, २१। गूढ आशयवाले पद्यों की निर्माणकला प्रहेलिका कला है. २२। भाषाछन्द विशेष का नाम-मागधिका है, इसके निर्माण की चतुराई का नाम मागधिकाकला है, २३। निद्रा लाने की विद्या

द्रव्यथी जुदी पाडी शकाय तेनुं ज्ञान थवु अने तेनो सबंध करावीने पाणी अने माटीने जुदा जुदा करवा आ दकमृत्तिका कला छे जेमके निर्मली-फटकडी नाखीने गंदा पाणीने साफ करवामा आवे छे १५ भोजन तैयार करवानी कुशळतानु नाम अन्न-विधि कला छे १६ जमीनने जोईने अहीथी पाणी नीकळशे आ जातना विज्ञाननुं नाम 'पानविधि कला' छे १७ वस्त्रोना निर्माणनी कुशळतानु नाम अथवा तो वस्त्रोने सुदर ढंगथी पहेरवानी कळानु नाम वस्त्रविधि कळा छे १८ शरीरनी उपर चन्दन वगेरेने लेप करवानी कुशळतानुं नाम विलेपनविधि छे १९ पल्यकादि विषयकज्ञान थवु एटले के आ जातनो पल्यकं शुभ होय छे, आ जातनो पल्यक शुभ नथी होतो आवु ज्ञान थवु, आनु नाम शयनविधि कला छे २०मात्रावाळा छदोनु निर्माणु करवुं ते आर्याकलाछे २१ गूढ आशययुक्त पद्योनी निर्माणकळा प्रहेलिका-कला' छे २२ भाषा छन्द विशेषनु नाम मागधिका छे. एनी निर्माणु कुशळता मागधिका कला छे २३ निद्रा आववानी विद्यानु

निद्रायिकाम्–अवस्वापनी विद्यारूपां कलाम् २४। गाथागीतिका चवि कलाद्वय मार्याभेदरूपाम २५ २६। श्लोकम्–श्लोकरचनाकलाम् कवित्वकलामिति यः २७। हिरण्ययुक्तिम्–हिरण्यस्य–रजतस्य युक्तिः–निर्माणविधिस्ताम् २८। सुवर्ण युक्तिम् सुवर्णस्य युक्तिः–निर्माणविधिस्ताम् २९। आभरणविधिम्–भूषणनिर्माणकलाम् ३०। तरुणीपरिकर्म–स्त्रीणां वर्णादिवृद्धिरूपाम् ३१। स्त्री लक्षणम्, पुरुषलक्षणम्, एतद्द्वय सामुद्रिकशास्त्रप्रसिद्ध विज्ञानम् ३२–३३। हय-गज-कुक्कुट-छत्र-चक्र-दण्डानां प्रसिद्धानां सप्तानां तत्तल्लक्षणज्ञानकला' ३४–४०। मणिलक्षणम्-रत्नादि–परीक्षणम् ४१। काकिणीलक्षणम्–काकिणी–चक्रवर्तिनो

का ज्ञान होना उसका नाम–निद्रायिका कला है, इस कलावाला दूसरे को इस कला के प्रभाव से निद्रा में मग्न कर देता है २४। गाथा और गीतिका ये दोनों कलाएं आर्या का ही भेदरूप होती है,२५-२६ श्लोकरचना करने की चतुराई का नाम—श्लोक कला है, इसका दूसरा नाम–कवित्वकला भी है २७। हिरण्य युक्ति–चान्दी बनाने की कला २८ सुवर्णयुक्ति-सोना बनाने की कला २९ भूषणों के निर्माण की विधि का जानना आभरणविधि कला है ३०। स्त्रियों के वर्णादिक में विधान का जानना तरुणीपरिकर्मकला है ३१। स्त्रीयों के शुभाऽशुभ लक्षणों का जानना स्त्रीलक्षणकला है ३२। पुरुषलक्षणों का जानना यह पुरुष लक्षणकला है ३३। दोनों कलाएँ सामुद्रिकशास्त्र से सम्बन्धित हैं। घोडा–हाथी–कुकुट–छत्र–चक्र-दण्ड असि (तलवार) इन सातों के शुभाऽशुभ लक्षणों का जानना इसका नाम उस उस नाम की कला है ३४–४०। रत्नादिकों की परीक्षा करना इसका नाम मणिलक्षण कला है ४१। काकिनी कला में—चक्रवर्ती के रत्न विशेष की परीक्षा

જ્ઞાન થવું તે નિદ્રાયિકા કલા છે આ કલાને જાણનારને બીજાને આ કલાના પ્રભાવથી નિદ્રામગ્ન કરે છે૨૪ ગાથા અને ગીતિકા આ બન્ને કલાઓ આર્યાનાજ ભેદરૂપમાં છે ૨૫-૨૬ શ્લોક રચનામાં કુશળતાનું નામ શ્લોક કલા છે આનું બીજું નામ કવિત્વકલા પણ છે ૨૭ હિરણ્ય યુક્તિ ચાંદી બનાવવાની કલા ૨૮ સુવર્ણયુક્તિ-સોનું બનાવવાની કલા૨૯ આભરણવિધિ-આભૂષણોને બનાવવાની વિધીને જાણવી તે આભરણવિધિ કલા છે ૩૦ સ્ત્રીઓના વર્ણાદિકમાં વૃદ્ધિવિધાન જાણવું તે તરુણી પરિકર્મ કલા છે૩૧ સ્ત્રીઓના શુભાશુભ લક્ષણો જાણવાં તે સ્ત્રીલક્ષણ કલા છે૩૨. પુરુષ લક્ષણે જાણવા એ પુરુષ લક્ષણ કલા છે૩૩ એ બન્ને કલાઓ સામુદ્રિકશાસ્ત્રની સાથે સંબંધ રાખે છે ઘોડા-હાથી-કુકુટ-છત્ર ચક્ર-દંડ-અસિ-(તલવાર) એ સાતેના શુભા શુભ લક્ષણો જાણવા તેના નામો તે તે કલા વિશિષ્ટ સમજવા ૩૪-૪ રત્નાદિકોની પરીક્ષા તે મણિલક્ષણ કલા છે૪૧ કાકિણી કલામાં-ચક્રવર્તીના રત્નવિશેષની પરીક્ષા તેના લક્ષણોના

रत्नविशेषस्तस्य लक्षणम् ४२। वास्तुविद्या—गृहभूमेर्गुणदोषज्ञानस्वपाम् ४३। नगरमानम्—नगरस्य दश योजनाऽऽयाम-नवयोजनव्यासादि-प्रमाणज्ञानम् ४४। स्कन्धावारमानम्-सेनानिवेशप्रमाणज्ञानम् ४५। चारम्-चारो-ज्योतिश्चारः, तद्विज्ञानम् ४६। प्रतिचारम्—प्रतिचरण प्रतिचारः—रोगिणः प्रतीकारकरणं, तद्विषयकज्ञानम् ४७। व्यूहम्—सामान्यतः सैन्यरचनं, तद्विषयज्ञानम् ४८। चक्रव्यूहम्—चक्राऽऽकृतिकसैन्यरचनाम् ४९। गरुडव्यूहम्—गरुडाऽऽकृतिकसैन्यरचनाम् ५०। शकटव्यूहम्—शकटाऽऽकृतिकसैन्यरचनाम् ५१। युद्धम्—युद्धकलाम् ५२। नियुद्धम्—मल्लयुद्धकरणकलाम् ५३। युद्धयुद्धम्-खड्गादिप्रक्षेपणपूर्वकमहायुद्धकलाम् ५४। अस्थियुद्धम-अस्थिभिः—कूर्परादिभिः प्रहरणं, तत्कलाम्। यद्वा 'दृष्टियुद्धम्' इति

करने के लक्षणों को जानना ४२। गृहभूमि के गुण दोषों का ज्ञान होना इसका नाम वास्तु विद्या कला है,४३ नगरकी दशयोजन लम्बाई और नौ योजन चौडाई आदि प्रमाण का ज्ञान होना यह नगरमान कला है ४४। सेनानिवेश के प्रमाण का होना—स्कन्धावार मानकला है ४५। नक्षत्रादिक ज्योतिष्कों की चाल का ज्ञान होना चारककला है.४६। रोगों के प्रतिकार करने के उपायों का ज्ञान होना प्रतिचारकला है. ४७। सामान्यरूप में सैन्यरचना का ज्ञान होना, यह व्यूह कला है. ४८। चक्राकाररूप में सैन्य की रचना करना चक्रव्यूहकला है. ४९। गरुड के आकार में सैन्य की रचना करना यह गरुड व्युहकला है. ५०। शकट के रूपमें सैन्य की रचना करने का ज्ञान होना यह शकटव्यूहकला है ५१। युद्ध करने का ज्ञान होना यह युद्धकला है, ५२। मल्लयुद्ध करने का ज्ञान होता यह मल्लयुद्ध या नियुद्धकला है ५३। तलवार आदि चलाते हुवे घमासान युद्ध करना यह युद्धयुद्धकला है. ५४। अस्थि—टोहनी आदि से प्रहार करने की चतुराई का

આધારે કરવામા આવે છે ૪૨ ગૃહભૂમિના ગુણદોષોનું જ્ઞાન થવું તે વાસ્તુવિદ્યાકલા છે ૪૩ નગરની દશ યોજન લંબાઈ અને નવયોજન પહોળાઇ વિગેરે પ્રમાણનું જ્ઞાન થવું તે 'નગરમાન કલા' છે.૪૪ સેનાનિવેશના પ્રમાણનું જ્ઞાન થવુ તે સ્કંધાવારમાન કલા છે.૪૫ નક્ષત્રાદિક જ્યોતિષ્કોની ગતિનુ જ્ઞાન થવુ તે ચાર કલા છે ૪૬ રોગોને મટાડવાના ઉપાયોનુ જ્ઞાન તે પ્રતિચાર કલા છે ૪૭ સામાન્ય રૂપથી સૈન્યરચનાનુ જ્ઞાન થવુ તે ચક્ર વ્યૂહ કલા છે ૪૮ચક્રાકારરૂપમા સૈન્યરચના કરવી ચક્રવ્યૂહ કલા છે ૪૯ ગરૂડના આકારથી સૈન્યની રચના કરવી તેનું નામ ગરૂડવ્યૂહ કલા છે. ૫૦ શકટના રૂપમા સૈન્યની રચના કરવાનુ જ્ઞાન થવું તે શકટવ્યૂહ કલા છે ૫૧ યુદ્ધ કરવાનુ જ્ઞાન થવું તે યુદ્ધ કલા છે ૫૨ મલ્લયુદ્ધ કરવાનું જ્ઞાન થવુ તે મલ્લયુદ્ધ કે નિયુદ્ધકલા છે ૫૩ તરવાર વગેરે ફેરવતા ભયકર યુદ્ધ કરેવુ તે યુદ્ધ યુદ્ધ કલા છે ૫૪ અસ્થિ-ટોહની વગેરેથી પ્રહાર કરવાની કુશળતાનુ નામ અસ્થિયુદ્ધ કલા છે અથવા 'દૃષ્ટિ યુદ્ધ' આ ૫૯મા

निद्रायिकाम्-अवस्वापनी विद्यारूपां कलाम् २४। गाथागीतिका चेति कलाद्वय-मार्याभेदरूपाम् २५ २६। श्लोकम्-श्लोकरचनाकलाम् कवित्वकलामित्यर्थः २७। हिरण्ययुक्तिम्-हिरण्यस्य-रजतस्य युक्ति-निर्माणविधिस्ताम् २८। सुवर्ण युक्तिम् सुवर्णस्य युक्तिः-निर्माणविधिस्ताम् २९। आभरणविधिम्-भूषणनिर्माणकलाम् ३०। तरुणीपरिकर्म-स्त्रीणां वर्णादिवृद्धिरूपाम् ३१। स्त्री लक्षणम्, पुरुषलक्षणम्, एतद्द्वय सामुद्रिकशास्त्रप्रसिद्ध विज्ञानम् ३२-३३। हय-गज-कुक्कुट-छत्र-चक्र-दण्डानां असिद्वानां सप्तानां तत्तल्लक्षणज्ञानकला ३४-४०। मणिलक्षणम्-रत्नादि-परीक्षणम् ४१। काकिणीलक्षणम्-काकिणी-चक्रवर्तिनो

का ज्ञान होना उसका नाम-निद्रायिका कला है, इस कलावाला दूसरे को इस कला के प्रभाव से निद्रा में मग्न कर देता है २४। गाथा और गीतिका ये दोनों कलाएं आर्या का ही भेदरूप होती हैं,२५ २६ श्लोकरचना करने की चतुराई का नाम-श्लोककला है, इसका दूसरानाम-कवित्वकला भी है २७। हिरण्य युक्ति-चान्दी बनाने की कला २८ सुवर्णयुक्ति-सोना बनाने की कला २९ भूषणों के निर्माण की विधि का जानना आभरणविधि कला है ३०। स्त्रियों के वर्णादिकमें विधान का आनना तरुणीपरिकर्मकला है ३१। स्त्रीयों के शुभाऽशुभ लक्षणों का जानना स्त्रीलक्षणकला है ३२। पुरुषलक्षणों का जानना यह पुरुष लक्षणकला है ३३। दोनों कलाएँ सामुद्रिकशास्त्र से सम्बन्धित हैं। घोडा-हाथी-कुक्कुट-छत्र-चक्र-दण्ड असि (तलवार) इन सातों के शुभाऽशुभ लक्षणों को जानना इसका नाम उस उस नाम की कला है ३४-४०। रत्नादिकों की परीक्षा करना इसका नाम मणिलक्षण कला है ४१। काकिनी कला में—चक्रवर्ती के रत्न विशेष की परीक्षा

જ્ઞાન થવુ તે નિદ્રાયિકા કલા છે આ કલાને જાણનારને બીજાને આ કલાના પ્રભાવ-થી નિદ્રામગ્ન કરે છે૨૪ ગાથા અને ગીતિકા આ બન્ને કલાઓ આર્યાનાજ ભેદરૂપમાં છે ૨૫-૨૬ શ્લોક રચનામાં કુશળતાનું નામ શ્લોક કલા છે આનુ બીજુ નામ કવિત્વકલા પણ છે ૨૭ હિરણ્ય યુક્તિ ચાંદી બનાવવાની કલા ૨૮ સુવર્ણ યુક્તિ-સોનું બનાવવાની કલા ૨૯ આભરણવિધિ-આભૂષણોને બનાવવાની વિધીને જાણવી તે આભરણવિધિ કલા છે ૩ સ્ત્રીઓના વર્ણાદિકમાં વૃદ્ધિવિધાન જાણવુ તે તરુણી પરિકર્મ કલા છે૩૧ સ્ત્રીઓના શુભાશુભ લક્ષણો જાણવાં તે સ્ત્રીલક્ષણ કલા છે૩૨. પુરુષ લક્ષણો જાણવા એ પુરુષ લક્ષણ કલા છે૩૩. એ બન્ને કલાઓ સામુદ્રિકશાસ્ત્રની સાથે સબંધ રાખે છે ઘોડા-હાથી-કુકુટ-છત્ર ચક્ર-દંડ-અસિ-(તલવાર) એ સાતેના શુભા શુભ લક્ષણો જાણવા તેના નામો તે તે કલા વિશિષ્ટ સમજવા ૩૪-૪૦રત્નાદિકોની પરીક્ષા તે મણિલક્ષણ કલા છે૪૧ કાકિણી કલામાં-ચક્રવર્તીના રત્નવિશેષની પરીક્ષા તેના લક્ષણોના

च्छेद्यम् शत्रुसैन्येषु विवक्षित शत्रुहननम् ७० सजीवनिर्जीवं-सजीवं मृतधात्वादीनां मजीवकरणं सहजस्वरूपापादनम्, निर्जीवम् सुवर्णादिधातूनां प्रयोगविशेषेण मारणम्, पारदस्य मूर्च्छाप्रापणं वा ७१। शकुनरुतम्-पक्षिशब्दम्ः, पक्षिशब्दज्ञानम, यद्वा 'शकुनरुत'-शब्देन शकुनशास्त्रं गृह्यते, तेन वसन्तराजादिशकुनशास्त्रोक्तसर्वशकुनज्ञानं वा ७२। इति आसा द्वासप्ततिकलानां क्रमन्यासः, कुत्रचिन्नामनिर्देशोऽपि च सग्रहसमयविपर्यासेन पृथक् पृथगुपलभ्यतेऽतो यत्र यद्रूपः पाठो लभ्यते तत्र

करना यह-धातुपाक कला है, ६५। नटों की तरह सूत्रपर-वर्चपर, और-नालिका पर चढ कर खेलना-ये तत्-तत् नामवाली कलाएं हैं ६६-६८। अनेकपत्रों में से किसी विवक्षित पत्र का छेदन करना पत्रच्छेद्य कला है. ६९। शत्रु की सेना में रह कर फिर विवक्षित शत्रु को मार देना यह कटकच्छेद्य कला है. ७०। भस्मसात् किये गये सुवर्णादि धातुओं को निरुत्थ भस्म होने से पहले तक प्रयोजन विशेष के आजाने पर उस भस्म को पुनः सुवर्ण कर देना, तथा-एक राज्य से दूसरे राज्य में सुवर्ण को ले जाने का राजकीय प्रतिबन्ध रहने पर उन वाञ्छनीय सुवर्णादिधातुओं को प्रयोगविशेष से मारना, अथवा-पारे को मूर्च्छित करना-अर्थात्-अजीर्णत्व-नपुंसकत्व आदि अट्ठारह दोषों को पारों से निकाल देना यह सजीव निर्जीव कला है. ७१। पक्षियों की बोली को पहिचान लेना. अर्थात्-वसन्त राज आदि कृत शकुनशास्त्रदृष्टि से सब पक्षियों का ज्ञान होना यह-शकुनरुत कला हैं ७२। इन बहत्तर कलाओं का क्रम और कहीं कहीं उनका नाम निर्देश भी संग्रह समय की भिन्नता से पृथक् पृथक् रूपसे उपलब्ध-प्राप्त

वर्तपर અને નાસીકાપર ચઢીને રમવુ એ તત્-તત્ નામવાળી કળાઓ છે.૬૬-૬૮અનેક પત્રોમાથી કોઇ ખાસ પત્રનુ છેદન કરવું પત્રચ્છેદ્યકલા છે. ૬૯ શત્રુની સેનામા રહીને પછી કોઇ વિશેષ શત્રુને જ મારવુ કટકચ્છેદ્ય કલાછે ૭૦ ભસ્મરૂપમા પરિણત થયેલા સુવર્ણાદિ ધાતુઓને નિરૂત્થ ભસ્મ હોવાથી પહેલા પ્રયોજન વિશેષને લીધે ફરી ભસ્મ ને સુવર્ણ વગેરે બનાવવુ તેમજ એક રાજ્યમાથી બીજા રાજયમા સુવર્ણને લઇ જવાનો રાજકીય પ્રતિબધ હોવા છતા એ તે વાછનીય સુવર્ણાદિ ધાતુઓને પ્રયોગ વિષયથી મારવો કે પારાને મૂર્છિત કરવો એટલે કે અજીર્ણત્વ વગેરે અઢાર દોષોને પારામાથી કાઢવા આ સજીવ નિર્જીવકલા છે ૭૧ પક્ષીઓની બોલીને સમજી લેવી એટલે કે વસતરાજ વગેરે કૃત શકુનશાસ્ત્રની દૃષ્ટિએ બધા પક્ષીઓની બોલીને સમજવી શુભાશુભ જાણવુ તે શકુનરુત કલા છે. ૭૨ આ બોતેર કલાઓનો ક્રમ અને તેના નામ નિર્દેશ

पाठ प्रतिद्वन्द्विनोमक्षुणो निर्निमेषावस्थान, तत्कलाम् ५५। मुष्टियुद्धम–मुष्टिभिः प्रहरणम् ५६। बाहुयुद्धम्-बाहुभि प्रहरणम ५७। लतायुद्धम–लतावृक्षमिव शत्रु गात्र परिवेष्ट्य प्रहरणम् ५८। इष्वस्त्रम् नागवाणादिदिव्यास्त्रप्रक्षेपणम् ५९। त्सरुप्रवादम्–त्सरु –खड्गमुष्टिः, अवयवे समुदायोपचारात् त्सरुशब्दनात्र खड्गो गृह्यते, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत् त्सरुप्रवाद-खड्गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थः ६०। धनुर्वेदम धनु शिक्षाशास्त्रम् ६१। हिरण्य पाक-सुवर्णपाकौ–रजत–सुवर्णयो रसायन क्रिया व द्वयपक्ष कलाद्वयम् ६२ ६३। मणिपाकम्–म णिनिर्माणकलाम् ६४। धातुपाकम्–रजत ताम्रादिधातुनिर्माण, लाम् ६५। सूत्रखेल-वर्चखेल-नालिकाखेला लोकतः प्रत्येत-व्या ६६–६८। पत्रच्छेद्यम अनेकपत्रेषु ।व्यवस्थित पत्रच्छेदनकलाम् ६९। कटक-

नाम अक्षियुद्धकला है। अथवा 'दृष्टियुद्ध' इस पाठ में प्रतिस्पर्धी की आंखों का अपनी चितवन से निमेषरहित कर दना सो दृष्टियुद्ध है ५५। मुष्टियों से प्रहार करना इसका नाम मुष्टियुद्धकला है ५६। बाहुओं स प्रहार करना इसका नाम-बाहु युद्धकला है ५७। लता जैसे वृक्षों का लपेट लेती है इसी प्रकार से शत्रु का घेरे में डालते हुवे गात्ररूप से लपेटकर फिर उस पर प्रहार करना लतायुद्ध है ५८। नागवाण आदि दिव्यरत्नों का प्रक्षेपण करना, इसका नाम-इष्वस्त्रकला है ५९। त्सरुशब्द का अर्थ तलवार की मूठ है यहां अवयव में समुदाय के उपचार से त्सरुशब्द से खड्ग का ग्रहण किया गया है-इस खड्ग—तलवार को चलाने में निपुण होना इसका नाम–त्सरु प्रवाद है ६०। धनुष चलाने की क्रिया में निपुणता प्राप्त करना यह–धनुर्वेद कला है, ६१। रजत और सोना को रसायन क्रिया जानना यह हिरण्यरूप, सुवर्ण पाक कला है ६२-६३। मणियों का निर्माण विधान का जानना मणि निर्माण कला है, ६४ अथवा–रजत ताम्रादि धातुओं का निर्माण

શત્રુની આંખોને પોતાની દૃષ્ટિથી નિમેષ રહિત કરવી તે દૃષ્ટિયુદ્ધ છે ૫૫. મુષ્ટિઓથી પ્રહાર કરીને લડવું તે મુષ્ટિ યુદ્ધ કલા છે ૫૬ બાહુઓથી લડવું તે બાહુ યુદ્ધ કલા છે ૫૭ લતા જેમ વૃક્ષોને પરિવેષ્ટિત કરી લે છે તેમજ શત્રુને ચારે તરફ ઘેરીને ગાત્રરૂપથી તેને વશમાં લઈને તેનાપર હુમલો કરવો તે લતાયુદ્ધ છે ૫૮. નાગબાણ વગેરે દિવ્યાસ્ત્રોનું પ્રક્ષેપણ કરવું તેનું નામ ઇષ્વસ્ત્રકલા છે ૫૯. ત્સરુ શબ્દનો અર્થ તરવારની મૂઠ છે. અહીં અવયવમાં સમુદાયના ઉપચારથી ત્સરુ શબ્દથી ખડ્ગ ગ્રહણ કર્યું છે ખડ્ગને ચલાવવામા કુશળતા મેળવવી તેનું નામ ત્સરુપ્રવાદ છે ૬૦ ધનુષ ચલાવવામાં નિપુણતા મેળવવી તે ધનુર્વેદ કલા છે ૬૧ રજત અને સુવર્ણના રસાયણની ક્રિયા જાણીને રજત અને હિરણ્ય પાક કલા છે ૬૨ ૬૩ મણિઓના નિર્માણની કલા જાણવી તે મણિ નિર્માણકલા છે ૬૪ અથવા રજત તામ્ર વગેરે ધાતુઓનું નિર્માણ કરવું આ ધાતુપાકકલા છે ૬૫। નદીની જેમ સૂત્રખેલ–

च्छेद्यम् शत्रुसैन्येषु विवक्षित शत्रुहननम् ७० सजीवनिर्जीवं-सजीवं मृतधात्वादीनां सजीवकरणं सहजस्वरूपापादनम्, निर्जीवम् सुवर्णादिधातूनां प्रयोगविशेषेण मारणम्, पारदस्य मूर्च्छाप्रापणं वा ७१। शकुनरुतम-पक्षिशब्दम्:, पक्षिशब्दज्ञानम, यद्वा 'शकुनरुत'-शब्देन शकुनशास्त्रं गृह्यते, तेन वसन्तराजादिशकुनशास्त्रोक्तसर्वशकुनज्ञानं वा ७२। इति आसां द्वासप्ततिकलानां क्रमन्यासः, कुत्रचिन्नामनिर्देशोऽपि च सग्रहसमयविपर्यासेन पृथक् पृथगुपलभ्यतेऽतो यत्र यद्रूपः पाठो लभ्यते तत्र

करना यह-धातुपाक कला है, ६५। नटों की तरह सूत्रपर-चर्मपर, और-नालिका पर चढ कर खेलना-ये तत्-तत् नामवाली कलाएं हैं ६६-६८। अनेकपत्रों में से किसी विवक्षित पत्र का छेदन करना पत्रच्छेद्य कला है. ६९। शत्रु की सेना में रह कर फिर विवक्षित शत्रु को मार देना यह कटकच्छेद्य कला है. ७०। भस्मसात् किये गये सुवर्णादि धातुओं को निरुत्थ भस्म होने से पहले तक प्रयोजन विशेष के आजाने पर उस भस्म को पुनः सुवर्ण कर देना, तथा-एक राज्य से दूसरे राज्य में सुवर्ण को ले जाने का राजकीय प्रतिबन्ध रहने पर उन वाञ्छनीय सुवर्णादिधातुओं को प्रयोगविशेष से मारना, अथवा-पारे को मूर्च्छित करना-अर्थात्-अजीर्णत्व-नपुंसकत्व आदि अट्ठारह दोषों को पारों से निकाल देना यह सजीव निर्जीव कला है. ७१। पक्षियों की बोली को पहिचान लेना. अर्थात्-वसन्त राज आदि कृत शकुनशास्त्रदृष्टि से सब पक्षियों का ज्ञान होना यह-शकुनरुत कला हैं ७२। इन बहत्तर कलाओं का क्रम और कहीं कहीं उनका नाम निर्देश भी संग्रह समय की भिन्नता से पृथक् पृथक् रूपसे उपलब्ध-प्राप्त

वर्तपर अने नासीकापर चढीने रमवु ए तत्-तत् नामवाळी कळाओ छे.६६-६८अनेक पत्रोमाथी कोइ खास पत्रनुं छेदन करवुं पत्रच्छेद्यकला छे ६९ शत्रुनी सेनामा रहीने पछी कोइ विशेष शत्रुने ज मारवु कटकच्छेद्य कलाछे ७० भस्मरूपमा परिणुत थयेला सुवर्णादि धातुओने निरुत्थ भस्म होवाथी पहेला प्रयोजन विशेषने लीधे फरी भस्म ने सुवर्ण वगेरे बनाववु तेमज एक राजयमाथी बीजा राजयमा सुवर्णने लई जवानो राजकीय प्रतिबध होवा छतां ए ते वाछनीय सुवर्णादि धातुओने प्रयोग विषयथी मारवी के पाराने मूर्छित करवो. एटले के अजीर्णत्व वगेरे अढार दोषोने पारामाथी काढवा आ सजीव निर्जीवकला छे ७१ पक्षीओनी बोलीने समजी लेवी एटले के वसतराज वगेरे कृत शकुनशास्त्रनी दृष्टिए बधा पक्षीओनी बोलीने समजवी शुभाशुभ जाणवु ते शकुनरुत कला छे. ७२ आ बोतेर कलाओनो क्रम अने तेना नाम निर्देश

पाठ प्रतिद्वन्द्विनोमक्ष्णो र्निर्निमेषावस्थान, तत्कलाम् ५५। मुष्टियुद्धम्—मुष्टिभिः प्रहरणम् ५६। बाहुयुद्धम्-बाहुभिः प्रहरणम् ५७। लतायुद्धम्—लतावत्समिव शत्रुं गात्रं परिवेष्ट्य प्रहरणम् ५८। इष्वस्त्रम् नागवाणादिदिव्यास्त्रप्रक्षेपणम् ५९। त्सरुप्रवादम्—त्सरु —खड्गमुष्टि, अवयवे समुदायोपचारात् त्सरुशब्देनात्र खड्गो गृह्यते, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत् त्सरुप्रवादं-खड्गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थः ६०। धनुर्वेदम् धनुःशिक्षणशास्त्रम् ६१। हिर० पाक-सुवर्णपाकौ—रजत—सुवर्णयो रसायन क्रिया तद्रूपयकर लाद्वयम् ६२-६३। मणिपाकम्—मणिनिर्माणकलाम् ६४। धातुपाकम्—रजत ताम्रादिधातुनिर्माण•लाम् ६५। सूत्रखेल-वर्त्तखेल-नालिकाखेला लोकतः प्रत्येतव्याः ६६—६८। पत्रच्छेद्यम् अनेकपत्रेषु।व्यवस्थित पत्रच्छेदनकलाम् ६९। कटक-

नाम अस्थियुद्धकला है। अथवा 'दृष्टियुद्ध' इस पाठ में प्रतिस्पर्धी की आंखों को अपनी चितवन से निमेषरहित कर देना सो दृष्टियुद्ध है ५५। मुष्टियों से प्रहार करना इसका नाम मुष्टियुद्धकला है ५६। बाहुओं से प्रहार करना इसका नाम-बाहु युद्धकला है ५७। लता जैसे वृक्षों को लपेट लेती है इसी प्रकार से शत्रु को घेरे में डालते हुवे गात्ररूप से लपेटकर फिर उस पर प्रहार करना लतायुद्ध है ५८। नागबाण आदि दिव्यरत्नों का प्रक्षेपण करना, इसका नाम-इष्वस्त्रकला है ५९। त्सरुशब्द का अर्थ तल्वार की मूठ है यहां अवयव में समुदाय के उपचार से त्सरुशब्द से खड्ग का ग्रहण किया गया है+इस खड्ग—तलवार को चलाने में निपुण होना इसका नाम—त्सरुप्रवाद है ६०। धनुष चलाने की क्रिया में निपुणता प्राप्त करना यह—धनुर्वेद कला है, ६१। रजत और सोना को रसायन क्रिया जानना वह हिरण्यपाक, सुवर्ण पाक कला है ६२-६३। मणियों का निर्माण विधान को जानना मणि निर्माण कला है, ६४ अथवा—रजत ताम्रादि धातुओं का निर्माण

शत्रुनी आंखोने पोतानी दृष्टिथी निमिष रहित करवी ते दृष्टयुद्ध छे ५५. मुष्टिओथी प्रहार करीने लडवु ते मुष्टि युद्ध कला छे ५६ बाहुओथी लडवु ते बाहु युद्ध कला छे ५७ लता जेम वृक्षोने परिवेष्टित करे छे तेमज शत्रुने चारे तरफ घेरीने आकारथी तेने वश्मां लइने तेनापर हुमलो करवो ते लतायुद्ध छे ५८. नागबाण वगेरे दिव्यरत्नोनुं प्रक्षेपण करवु तेनुं नाम इष्वस्त्रकला छे ५९. त्सरु शब्दनो अर्थ तरवारनी मूठ छे. अहीं अवयवमां समुदायना उपचारथी त्सरु शब्दथी खड्ग ग्रहण कर्युं छे खड्गने चलाववामां कुशळता मेळववी तेनु नाम त्सरुप्रवाद छे ६० धनुष चलाववामां निपुणता मेळववी ते धनुर्वेद कला छे ६१ रजत अने सुवर्ण ना रसायननी क्रिया जाणीने रजत अने सुवर्ण पाक कला छे ६२ ६३. मणिओना निर्माणनी कला जाणवी ते मणि निर्माणकला छे ६४ अथवा रजत ताम्र वगेरे धातुओनुं निर्माण करवु आ धातुपाककला छे ६५ नटोनी जेम सूत्रपर-

च्छेद्यम् शत्रुसैन्येषु विवक्षित शत्रुहननम् ७० सजीवनिर्जीवं–सजीव मृतधात्वादीनां सजीवकरणं सहजस्वरूपापादनम्, निर्जीवम् सुवर्णादिधातूनां प्रयोगविशेषेण मारणम्, पारदस्य मूर्च्छापणं वा ७१। शकुनरुतम–पक्षिशब्दम्ः, पक्षिशब्दज्ञानम, यद्वा 'शकुनरुत'-शब्देन शकुनशास्त्रं गृह्यते, तेन वसन्तराजादिशकुनशास्त्रोक्तसर्वशकुनज्ञानं वा ७२। इति आसां द्वासप्ततिकलानां क्रमन्यासः, कुत्रचिन्नामनिर्देशोऽपि च संग्रहसमयविपर्यासेन पृथक् पृथगुपलभ्यतेऽतो यत्र यद्रूपः पाठो लभ्यते तत्र

करना यह–धातुपाक कला है, ६५। नटों की तरह सूत्रपर–वर्त्तपर, और–नालिका पर चढ कर खेलना–ये तत्–तत् नामवाली कलाएं हैं ६६-६८। अनेकपत्रों मे से किसी विवक्षित पत्र का छेदन करना पत्रच्छेद्य कला है. ६९। शत्रु की सेना में रह कर फिर विवक्षित शत्रु को मार देना यह कटकच्छेद्य कला है. ७०। भस्मसात् किये गये सुवर्णादि धातुओं को निरुत्थ भस्म होने से पहले तक प्रयोजन विशेष के आजाने पर उस भस्म को पुनः सुवर्ण कर देना, तथा–एक राज्य से दूसरे राज्य में सुवर्ण को ले जाने का राजकीय प्रतिबन्ध रहने पर उन वाञ्छनीय सुवर्णादिधातुओं को प्रयोगविशेष से मारना, अथवा-पारे को मूर्च्छित करना–अर्थात्–अजीर्णत्व–नपुंसकत्व आदि अट्ठारह दोषों को पारों से निकाल देना यह सजीव निर्जीव कला है. ७१। पक्षियों की बोली को पहिचान लेना, अर्थात्–वसन्त राज आदि कृत शकुनशास्त्रदृष्टि से सब पक्षियों का ज्ञान होना यह–शकुनरुत कला हैं ७२। इन बहत्तर कलाओं का क्रम और कहीं कहीं उनका नाम निर्देश भी संग्रह समय की भिन्नता से पृथक् पृथक् रूप उपलब्ध–प्राप्त

वर्तपर अने नासीकापर चढीने रमवु ए तत्–तत् नाम[illegible] छे ६६-६८ [illegible]
पत्रोमांथी कोइ खास पत्रनु छेदन करवु पत्रछेद्यकला छे [illegible] सेनामां [illegible]
कोइ विशेष शत्रुने ज मारवु कटकछेद्य कलाछे.७० [illegible]
धातुओने निरुत्थ भस्म होवाथी पहेला प्रयो[illegible]
वगेरे बनाववुं तेमज एक राज्यमांथी [illegible]
कीय प्रतिबंध होवा छतां ए ते वा[illegible]
के पाराने मूर्छित करवो एटले के [illegible]
आ सजीव निर्जीवकला छे ७१ प[illegible]
कृत शकुनशास्त्रनी दृष्टिए [illegible]
ते शकुनरुत कला. [illegible]

स
के
प्रमाणे-
जहिंति-'
ज हाथवडे
शे 'तए णं
लेगं असणपाण-
बाद ते दढप्रतिज्ञ
अने स्वादिमरूप चार
सत्कृत करशे. "सम्मा-
त्ता पडिविसिज्जेहिति"

तद्रूपम व्याख्या विधेयेति तत्त्वम्। पूर्वोक्तप्रकारेण द्वासप्ततिकला कलाचार्यो दृढप्रतिज्ञं शिक्षयिष्यतीति भावः ॥ सू० १७० ॥

मूलम्—तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ । तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारिस्सति, सम्माणिस्सति, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्सति, दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति ॥ सू० १७१ ॥

छाया—ततः खलु स कलाचार्यस्तं दृढप्रतिज्ञं दारकं लेखादिकाः गणितप्रधानाः शकुनरुतपर्यवसानाः द्वासप्ततिं कलाः सूत्रतश्च अर्थतश्च ग्रन्थतश्च करणतश्च शिक्षयित्वा साधयित्वा अम्बा-पित्रोः उपनेष्यति । ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य

होता है इसलिये जहां जहां जिस जिस रूप से पाठ मिले वहां। उस उस रूपसे व्याख्या समझनी चाहिए ॥ सू० १७० ॥

"तए णं से दढपइण्णे—' दारए इत्यादि—

मूलार्थ—'तए णं' इसके बाद 'कलायरिए—' कलाचार्य ने 'तं दढपइण्णं—' उस दृढप्रतिज्ञकुमार को लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ—' गणित प्रधान लेखादिक कलाए—'सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ गंथओ य करणओ य—सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ—' पहली लेख कला से लेकर अन्तिम शकुनरुत कलातक जिन की संख्या ७२—प्रगट की जा चुकी है

पणु संग्रह समयना भिन्नपणाथी लुदाजुदारूपे प्राप्त थाय छे ओथी ज्यां ज्यां जे जे रूपथी पाठ मळेल छे त्यां त्यां ते ते रूपथी तेनी व्याख्या समजवी. ॥सू०१७०॥

"तएणं से कलायरिए—इत्यादि ।

मूलार्थ—'तए णं' त्यार पछी 'कलायरिए' कलाचार्ये 'तं दढपइण्णं' ते दृढ प्रतिज्ञ कुमारने 'लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ' गणित प्रधान लेखादिक कलाओ 'सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ" अंतिम शकुनरुत कला सुधीनी समस्त ७२ कलाओने सौथी पहेलां सूत्र रूपमां त्यारपछी अर्थरूपमां अने ग्रन्थरूपमां

दारकस्य अम्बा-पित्रोः उपनेष्यति । ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य दारकस्य अम्बापितरौ तं कलाचार्यं विपुलेन अशनपानखादिमस्वादिमेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कारयिष्यतः, सम्मानयिष्यतः, विपुलं जीविकार्हं प्रीतिदानं दास्यतः दत्त्वा प्रतिविसर्जयिष्यतः ॥ सू० १७१ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि—ततः खलु स कलाचार्यः तं दृढप्रतिज्ञं दारकं लेखादिकाः—लेखः—अक्षरविन्यासः आदौ—प्राथम्ये यासां ताः—लेखप्रथमा इत्यर्थः, तथा—गणितप्रधानाः—गणितं प्रधानं यासु ता—गणितमुख्या इत्यर्थः, तथा शकुनरुतपर्यवसानाः—शकुनरुतं—पक्षिशब्दः पर्यवसाने-अन्ते यासां तास्तथा—पक्षिशब्दपरिज्ञानान्ताः, द्वासप्तति—द्वासप्ततीसंख्यकाः पूर्वोक्ताः कला सूत्रतः शब्दतश्च, अर्थतश्च ग्रन्थतः ग्रन्थरूपेण तासां लेखनतश्च, करणतः प्रयोगतश्च शिक्षयित्वा-अध्याप्य, साधयित्वा साध्याः कारयित्वा तस्य दृढप्रतिज्ञस्य, अम्बापित्रोरन्तिके उपनेष्यति प्रापयिष्यति । ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य दारकस्य अम्बापितरौ तं कलाचार्यं विपुलेन प्रचुरेण अशनपानखादिमस्वादिमेन वस्त्रगन्धःमाल्यालङ्कारेण च सत्कारयिष्यतः सम्मानयिष्यतः, विपुलं प्रचुरं जिवितार्हं यावज्जीवं जीवितयोग्यं प्रीतिदानम् उपहारं, दास्यतः, दत्त्वा प्रतिविसर्जयिष्यतः ॥सू.१७१॥

प्रथमतः सूत्र रूप से—बाद में अर्थ रूप से—ग्रन्थरूप से, एवं—तदुभय-सूत्र और अर्थ दोनों रूप से सिखलाकर, एवं—उन्हें पहले उन्हीं के हाथ से सिद्ध कराकर उसके माता पिता के पास उसको ले आवेगा—'तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारयस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालकारेणं सक्कारिस्संति—' तब उस दृढप्रतिज्ञ कुमार के मातापिता उस कलाचार्य का विपुल अशन-पान-खादिम, एवं-स्वादिमरूप चार प्रकार के आहार से, तथा-वस्त्र-गन्ध-माला और-अलङ्कारों से सत्कार करेंगे—'सम्माणेस्संति—' विउलं जीवियारिहं, पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसिज्जेहिंति—'

અને કરણરૂપમા પ્રયોગરૂપમા શીખવી અને તે કલાઓને પહેલા તેના જ હાથવડે પ્રયોગરૂપમા સિદ્ધ કરાવીને પછી તેને તેના માતાપિતાની પાસે લઇ જશે 'तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारयस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाण-खाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति" ત્યારબાદ તે દઢપ્રતિજ્ઞ કુમારના માતાપિતા તે કલાચાર્યને વિપુલ અશન-પાન-ખાદિમ-અને સ્વાદિમરૂપ ચાર પ્રકારના આહારથી તેમજ વસ્ત્ર ગન્ધ માલા અને અલંકારોથી સત્કૃત કરશે "सम्माणेस्संति विउलं जीवियारिहं, पीइयाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसिज्जेहिंति"

मूलम्—तए णं से दढपइण्णे दारए उम्मुकबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते बावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहए अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिंगारागारचारुवेसे संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहस्सिए वियालचारी यावि भविस्सइ ॥सू० १७२॥

छाया—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारक उन्मुक्तबालभावः विज्ञातपरिणतमात्रो यौवनकमनुप्राप्तो द्वासप्ततिकलापण्डितो नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधक अष्टादश

सत्सम्मान करेंगे, फिर-विपुल प्रीतिदान भी देंगे-उनको जीवनभर के लिये जीविका के योग्य हो सकेगा-देंगे, यह सब कुछ करके, फिर वे उन कलाचार्य को विसर्जित कर देंगे, । टीकार्थ—स्पष्ट है ॥ सू० १७१ ॥

"तए णं से दढपइण्णे दारए-इत्यादि—

मूलार्थ - "तए णं से दढपइण्णे—" इसके बाद वह दृढप्रतिज्ञ कुमार जिसका "उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते—" बालभाव व्यतीत हो चुका है, और —विज्ञान जिसका परिपक्वता से परिपूर्ण अवस्था में पहुंच गया है "जोव्वणगमणुपत्ते—"यौवनावस्थावाली हुआ "बावत्तरि कलापंडिए—णवंगसुत्तपडिबोहए—अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए—" ७२—कलाओं में विशेषरूपसे निष्णात हुआ सुप्त अपने नवाङ्गों को दो कान-दो नेत्र-दो नासिकाछिद्र-एक जीभ

સન્માનીત કરશે પછી તેમની જીવિકા માટે પર્યાપ્ત થાય તેટલું પ્રીતિદાન તેમને આપશે. આ બધું કરીને પછી તેઓ તેમને વિસર્જિત કરશે.

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે ॥સૂ ૧૭૧॥

"तए णं से दढपइण्णे दारए' इत्यादि ।

મૂલાર્થ—तए णं से दढपइण्णे" ત્યાર પછી તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર-કે જેમનું "उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते" બાળપણું પસાર થઈ ગયું છે અને જેમનું વિજ્ઞાન એકદમ પરિપક્વાવસ્થા સુધી પહોંચી ગયું છે "जोव्वणगमणुपत्ते" યુવાવસ્થા સંપન્ન થશે. "बावत्तरि कलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहए-अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए" ૭૨ કલાઓમાં વિશેષરૂપથી નિષ્ણાત થયેલો તે પોતાના સુપ્ત નવાંગોને-બે કાન, બે નેત્ર, બે નાસિકાછિદ્ર, એક જીભ, એક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય, અને

विधदेशीप्रकारभापाविशारदो गीतरतिः गान्धर्वनाटयकुशलः शृङ्गारागारचारुवेपः संगतगतहसितभणितचेष्टितविलाससंलापोल्लापनिपुणयुक्तोपचारकुशलो हययोधी रथयोधी। बाहुयोधी बाहुप्रमर्दी अलंभोगसमर्थः साहसिको विकालचारी चापि भविष्यति ।सू० १७२

एक स्पर्शन, एवं-एक मन—इनको व्यक्त-जागृत करता हुवा, अट्ठारह प्रकारकी भापाओं में विशारद हुवा. "गीयरई-गंधव्वणट्टकुसले—सिंगारागारचारुवेसे-संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसले-" गीत—एवं-रति में अनुरागयुक्त हुवा, गान्धर्व गान में—एवं नाटय क्रिया में पारङ्गत हुवा, तथा—शृङ्गारके गृह की तरह सुन्दर वेप से युक्त हुवा, समुचित गमनमें—समुचितहास में—समुचित बोलने में—वातचीत करने में—समुचित चेष्टा में समुचित विलास में—नेत्र जनित विकार में—समुचित संलाप में—एवं समुचित काकुभापण में-दक्ष हुवा, तथा—समुचित व्यवहारों में कुशल हुवा, तथा—"हय जोही गयजोही-रहजोही-बाहुजोही-बाहुप्पमद्दी—अलं भोगसमत्थे-साहसिए—वियालचारी यावि भविस्सइ—" हययुद्ध करने में कुशल हुवा गजयुद्ध करने में कुशल हुवा, रथयोधी हुवा, बाहुप्रयोधी हुवा, बाहुप्रमर्दी हुवा, बाहु से कठिन भी वस्तु को चूर—२ करने में समर्थ हुवा, भोग में समर्थ हुवा. । अकेलाही सहस्र संख्यक भटों के साथ युद्ध करने में समर्थ हुवा, । अथवा—साहसिक—अधिक साहस से युक्त हुवा, मध्यरात्रि में भी विचरण करनेवाला होगा. ।

એકમત-વ્યકત જાગૃત કરતો અઢાર પ્રકારની દેશીય ભાષાઓમાં વિશારદ થશે. "गीयरई—गंधव्वणट्टकुसले सिंगारागारचारुवेसे संगयगयहसियभणियचेट्ठिय विलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसले" ગીત અને રતિમા અનુરાગયુકત થયેલો, ગાધર્વગાનમા અને નાટયક્રિયામા પારગત થયેલો તેમજ શૃંગાર ગૃહની જેમ સુદર વેષથી સુસજ્જ થયેલો તે દઢપ્રતિજ્ઞ સમુચિત ગમનમા, સમુચિત હાસમા સમુચિત બોલવામા વાતચીત કરવામા, સમુચિત ચેષ્ટામા, સમુચિત વિલાસમાં-નેત્ર-જનિતવિકારમા, સમુચિત સલાપમા અને સમુચિત કાકુ-ભાષણમા પણ દક્ષ થઇ જશે આ પ્રમાણે તે સમુચિત વ્યવહારોમા કુશળ થશે. તેમજ "हयजोही-गयजोही-रहजोही-बाहुजोही बाहुप्पमद्दी—अलंभोगसमत्थे—साहसिए वियालचारी यावि भविस्सइ" હયયુદ્ધ કરવામા ગજ યુદ્ધ કરવામા કુશળ થશે. તે રથયોધી થશે, બાહુયોધી થશે, બાહુમર્દી થશે, બાહુથી અતિ કઠોર વસ્તુને ચૂર્ણ વિચૂર્ણ કરવામા સમર્થ થશે ભોગમાં સમર્થ થશે એકલો જ તે સહસ્ર સખ્યક ભટોની સાથે યુદ્ધ કરવામા સમર્થ થશે અથવા સાહસિક-અધિક સાહસયુકત થશે. આમ તે મધ્યરાત્રિમા પણ વિચરણ કરનાર થશે.

टीका—"तए णं से" इत्यादि-ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो नाम दारकः उन्मुक्तबालभावः-व्यतिक्रान्तबाल्यावस्थो विज्ञातपरिणतमात्रः-विज्ञात-विज्ञानं परिणतमात्र-मत्र परिपक्वं यस्य स तथा-परिपक्वविज्ञान इत्यर्थः, यौवनकम् युवावस्थाम् अनुप्राप्तः-अनुगतो द्वासप्ततिकलापण्डितः पूर्वोक्तद्वासप्ततिकलाऽभिज्ञो नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकः-द्वे श्रोत्रे, द्वे नेत्रे, द्वे, नासिके, एका जिह्वा एका त्वग् एकं मन' इत्येतेषां नवानां-नवसंख्यकानाम्-अङ्गानाम्-अवयवानां सुप्तानां बाल्यादव्यक्तचेतनावत्त्वात् सुप्तसदृशानां प्रतिबोधकः यौवनाऽऽगमने व्यक्तचैतन्यं यस्य स तथा=स्व स्व विषयग्रहणसमर्थ नवाङ्गयुक्त इत्यर्थः, तथा अष्टादशविध देशीप्रकार भाषाविशारदः—अष्टादशविधायाम्-अष्टादशभेदायां देशीप्रकारायां-देशीयस्वरूपायां भाषायां विशारदः-निष्णातः-अष्टादशभाषाऽभिज्ञ इत्यर्थः, तथा-गीतरतिः गीते गाने रतिः अनुरागो यस्य स तथा=गीतानुरागयुक्त इत्यर्थः, तथा गान्धर्वनाट्यकुशलः-गान्धर्वे-गन्धर्वस्य गा यत्र तस्मिन् गाने, नाट्ये-नृत्यकर्मणि च कुशलः-गान्धर्वविद्यायां च पारङ्गत इत्यर्थः, तथा-शृङ्गारागारचारुवेषः-शृङ्गारः-अलङ्कारादिकृता शोभा तस्य अगारमिव=गृहमिव चारुवेषः-रुचिरवेषो यस्य स तथा-सविच्छित्तिलङ्कारालङ्कृतशरीर इत्यर्थः, तथा-संगतगतहसितभणितचेष्टितविलाससंलापोल्लापनिपुणयुक्तोपचारकुशलः-संगतम्-उचितं गतं गमनं हसितं-हासः भणितम्-उक्तिः चेष्टितं-चेष्टा, विलासः-नेत्रजन्यो विकारः, तदुक्तम्-"विलासो नेत्रजो ज्ञेयः" इति, संलापः-परस्परभाषणम्, उक्तं च-"संलापो भाषणं मिथः" इति, उल्लापः-काक्वा भाषणम्, उक्तं च-"उल्लापः काकुभाषणम्" इति, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः,

भावार्थ—इसका स्पष्ट है "नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकः" का—मतलब ऐसा है कि बाल्यावस्था में जो—श्रोत्र आदि अङ्ग अव्यक्त चेतनावाले होने से सुप्त जैसे रहते हैं, वही—यौवन अवस्था में व्यक्त चेतनावाले हो जाने से जागृत जैसे हो जाते हैं। तात्पर्य कहने का यह है कि यौवनावस्था में अपने अपने विषय को ग्रहण करने में वे समर्थ हो जाते हैं। "विलासो नेत्रजो ज्ञेयः—संलापो भाषणं मिथः— इस कथन के अनुसार नेत्र विकार का नाम विलास, और भाषण का नाम संलाप है। 'उल्लापः काकुभाषणम्' के अनुसार काकु भाषण

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો અર્થ સ્પષ્ટ છે "नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधक"નો અર્થ આ છે કે બાલ્યપણામાં શ્રોત્ર (કાન) વગેરે અંગો સુપ્ત જેવા હોય છે તેજ યુવાવસ્થામાં જાગૃત જેવા થઇ જાય છે તાત્પર્ય આ છે કે યુવાવસ્થામાં એ અંગો પોતપોતાના વિષયને ગ્રહણ કરવામાં સમર્થ થઇ જાય છે 'विलासो नेत्रजो ज्ञेयः संलापो भाषणं मिथः' આ કથન મુજબ નેત્રજ વિકારનું નામ વિલાસ અને ભાષણનું નામ સંલાપ છે "उल्लापः काकुभाषणम्" મુજબ કાકુભાષણ ભાવગર્ભિત ભાષણ વચનોને ઉલ

तेषु निपुणः—दक्षः, तथा-युक्तोपचारकुशलः—युक्तेषु-समुचितेषु उपचारेषु-व्यवहारेषु कुशलः—चतुरः, पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा-हययोधी-हयेन युध्यते इत्येवंशीलः-हययुद्धकलाकुशल इत्यर्थः, एवं गजयोधी—रथयोधी बाहुयोधी—इतिपदत्रयमुन्नेयम्, तथा-बाहुप्रमर्दी—बाहुभ्यां प्रमर्दतीत्येवंशीलः—बाह्वाघातेन कठिनस्यापि वस्तुनः चूर्णीकरणशील इत्यर्थः, तथा-अलंभोगसमर्थः—अत्यर्थं भोगानुभवसमर्थः साहस्रिक-सहस्रेण युध्यते इति-सहस्रसंख्यकभटैः सह एकाकयेव युद्धकर्ता, 'साहसिकः इतिच्छायापक्षेतु, अतिसाहसयुक्तः, तथा-विकालचारी-विकालेऽपि मध्यरात्रेऽपि चरतीत्येवं शीलः अतिसाहसवत्त्वाद् मध्यरात्रेऽपि विचरणशीलश्चापि भविष्यतीति ।सू०१७२।

मूलम्—तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जाव वियालयारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अन्नभोगेहि य पाणभोगेहि य लयणभोगेहि य वत्थभोगेहि य सयणभोगेहि य उवनिमंतिहिंति । ॥ सू० १७३ ॥

छाया—ततः खलु तं दृढप्रतिज्ञं दारकम् अम्बापितरौ उन्मुक्तबालभावं यावद् विकालचारिणं च विज्ञाय विपुलैः अन्नभोगैश्च पानभोगैश्च लयनभोगैश्च वस्त्रभोगैश्च शयनभोगैश्च उपनिमन्त्रयिष्यतः । ॥ सू० १७३ ॥

सारगर्भित व्यङ्गवचन को कहते हैं, या—बच्चों के द्वारा का-का, कु-कु आदि तोतली बोली को भी काक भाषण कहते हैं ।॥सू० १७२ ॥

"तए णं दढपइण्णं दारगं—" इत्यादि—

मूलार्थ—"तए णं—" इसके बाद "तं दढपइण्णं दारगं—" उस दृढ प्रतिज्ञ दारक को "अम्मापियरो—" मातापिता "उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारिं च वियाणित्ता—" उन्मुक्तबालभाववाला यावत्—विकालचारी जानकर—"विउलेहिं अन्नभोगेहिय—पाणभोगेहिं—" विपुल अन्न भोगों से विपुल पानभोगों से—"लयणभोगेहिं य वत्थभोगेहिय सयणभोगेहिय उवनिमंतिहिंति—" विपुल लयन—

છે અથવા બાળકો વડે કા—કા—કુ કુ વગેરે જે તોતડી બોલીને પણ કાકુ ભાષણ કહે છે સૂ ॥ ૧૭૨ ॥

"तए णं दढपइण्णं दारगं" इत्यादि ।

મૂલાર્થ—"तए णं" ત્યાર પછી "तं दढपइण्णं दारगं" તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ દારકને "अम्मापियरो" માતા પિતા 'उम्मुक्कबालभावं जाव वियालयारिं च वियाणित्ता" ઉન્મુક્ત બાલભાવયુક્ત યાવત્ વિકાલચારી જાણીને 'विउलेहिं अन्नभोगेहिं य पाणभोगेहिं'

टीका—"तए ण" इत्यादि—ततः खलु तं दृढप्रतिज्ञं दारकं अम्मा पितरौ माता-पितरौ उन्मुक्तबालभाव-व्यतिक्रान्तबाल्यावस्थं यावत्—यावत्पदेन 'विज्ञातपरिणतमात्रं यौवनकमनुप्राप्तं द्वासप्ततिकलापण्डितं—नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकम् अष्टादशविधदेशीप्रकारभाषाविशारदं गीतरतिं गान्धर्वनाट्यकुशलं शृङ्गारागारचारुवेषं सङ्गतगतहसितभणितचेष्टितविलाससंलापोल्लापनिपुणयुक्तोपचारकुशलं हययोधिनं गजयोधिनं रथयोधिनं बाहुयोधिनं बाहुप्रमर्दिनम् अलम्भोगसमर्थं साहसिकम्' इत्येतानि पदानि सङ्ग्राह्याणि, तथा विकालचारिणं च विज्ञाय विपुलैः—प्रचुरैः अन्नभोगैः अन्नरूपभोग्यपदार्थैः पानभोगैः—पेयरूपभोग्यपदार्थैः, लयनभोगैः—प्रासादरूपभोग्यपदार्थैः, वस्त्रभोगैः—वसनरूपभोग्यपदार्थैः शयनभोगैः—शयनरूपभोग्यपदार्थैश्च उपनिमन्त्रयिष्यत इति। दृढप्रतिज्ञं दारकं यौवनोन्मुखं दृष्ट्वा तन्मातापितरौ अन्नादिभोगानुभोक्तुं प्रेरयिष्यत इति भावः इति। ।सू० १७३॥

तनुभोगों से विपुलपरूप भोग्य पदार्थों से उपनिमन्त्रित करेंगे। अर्थात् उसे अब अन्नादि भोग्य विषय के लिये स्वतन्त्रता देंगे।

टीकार्थ—स्पष्ट है "उम्मुक्कबालभाव जाव—" में जो यह यावत् पद आया है, उससे—"विज्ञातपरिणतमात्र, यौवनकमनुप्राप्तम्, द्वादश प्रतिकला पण्डितम्, नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकम्, अष्टादशविधदेशी प्रकार भाषाविशारद गीतरति, गन्धर्वनाट्य कुशलम् शृङ्गारागारचारुवेष, सङ्गतगतहसितभणित चेष्टितविलाससंलापोल्लाप निपुण युक्तोपचार कुशल, हययोधिनम्, गजयोधिनम् रथयोधिन बाहुयोधिन, बाहुप्रमर्दिनम् अलंभोगसमर्थम्, साहसिकम् साहसिकम् इन पीछे के पाठों का ग्रहण हुआ है ॥ सू० १७३ ॥

વિપુલ અન્ન ભોગોથી વિપુલ પાન ભોગોથી 'लयणभोगेहिं य वत्थभोगेहिं य सयणभोगेहिं य उवनिमंतिहिंति' વિપુલ લયન વસ્ત્રભોગોથી, વિપુલ શયનરૂપ ભોગ્ય પદાર્થોથી ઉપનિમન્ત્રિત કરશે એટલે કે તેને અન્ન વગેરે ભોગ્ય વિષયો પદાર્થોને ભોગવવાની છૂટ આપશે.

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે 'उम्मुक्कबालभाव जाव' માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે તેથી "विज्ञातपरिणतमात्र, यौवनकमनुप्राप्तम्, द्वादशप्रतिकलापण्डितम् नवाङ्गसुप्त प्रतिबोधकम्, અષ્ટાદશવિધ દેશી પ્રકાર ભાષા વિશારદ, ગીતરતિ, ગન્ધર્વ નાટ્ય કુશલમ્ શૃંગારાગાર ચારુવેષ, સંગતગતહસિત ભણિત ચેષ્ટિત વિલાસ સંલાપોલ્લાપ નિપુણ યુક્તોપચારકુશલ હયયોધિનમ્ ગજયોધિનમ્ રથયોધિનમ્ બાહુયોધિનમ્ બાહુપ્રમર્દિનમ્, અલંભોગસમર્થમ્, સાહસિકમ્ સાહસિકમ્ આ પાઠનું ગ્રહણ થયું છે ॥ ૧૭૩ ॥

मूलम्—तए णं दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अन्नभोएहिं जाव सयणभोएहिं णो सज्जिहिइ णो गिज्झिहिइ णो मुच्छिहिइ णो अज्झोववज्जिहिइ। से जहा णामए पउमुप्पलेइ वा पउमेइ वा जाव सयसहस्सपत्तेइ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं, णोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहि संवुड्ढे णोवलिप्पिहिइ कामरएणं, णोवलिप्पिहिइ भोगरएणं, णोवलिप्पिहिइ मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं। से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ। से णं अणगारे भविस्सइ-ईरियासमिए जाव सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलते। तस्स णं भगवओ अणुत्तरेणं णाणेणं, एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजमसुचरियतवफलणिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे णिव्वाघाए, केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिइ। तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ, सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणिहिइ, तं जहा—आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं कडं मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ। ॥ सू० १७४ ॥

टीका—"तए ण" इत्यादि–ततः खलु त दृढप्रतिज्ञ दारक अम्बा पितरौ-माता-पितरौ उन्मुक्तबालभाव-व्यतिक्रान्तबाल्यावस्थं यावत्—यावत्पदेन 'विज्ञातपरिणतमात्र यौवनकमनुप्राप्त द्वासप्ततिकलापण्डित—नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकम् अष्टादशविधदेशीप्रकारभाषाविशारद गीतरतिं गान्धर्वनाट्यकुशल शृङ्गारागारचारुवेष सङ्गतगत-हसितभणितचेष्टितविलासलापोल्लापनिपुणयुक्तोपचारकुशल हययोधिन गजयोधिन रथयोधिन बाहुयोधिन बाहुप्रमर्दिनम् अलम्भोगसमर्थं साहसिकम्' इत्येतानि पदानि सग्राह्याणि तथा विकालचारिण च विज्ञाय विपुलै -प्रचुरै अन्नभोग अन्नरूपभोग्यपदार्थ पानभोगैः—पेयरूपभोगपदार्थैः, शयनभोगैः—प्रासादरूपभोग्यपदार्थैः, वस्त्रभोगैः—वसनरूपभोग्यपदार्थ शयनभोग –शयनरूपभोग्यपदार्थैः उपनिमन्त्रयिष्यत इति। दृढप्रतिज्ञ दारक यौवनोन्मुख दृष्ट्वा तन्मातापितरौ अन्नादिभोगानुभोक्तुं प्रेरयिष्यत इति भावार्थ इति। ॥सू० १७३॥

तनुभोगों से विपुलवस्त्ररूप भोग्य पदार्थों से उपनिमन्त्रित करेंगे। अर्थात् उस अब अन्नादि भोग्य विषय के लिए स्वतन्त्रता देंगे।

टीकार्थ—स्पष्ट है "उम्मुक्कबालभाव जाव—" में जो यह यावत् पद आया है, उससे—"विज्ञातपरिणतमात्र, यौवनकमनुप्राप्तम, द्वादश प्रतिकलापण्डितम, नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकम, अष्टादशविधदेशी प्रकार भाषाविशारद गीतरति, गन्धर्वनाट्य कुशलम शृङ्गारागारचारुवेष, सङ्गतगतहसितभणित चेष्टितविलासलापोल्लाप निपुण युक्तोपचार कुशल, हययोधिनम्, गजयोधिनम्, रथयोधिन, बाहुयोधिन, बाहुप्रमर्दिनम् अल भोगसमर्थम्, साहसिकम् साहसिकम्, इन पीछे के पाठों का ग्रहण हुआ है ॥ सू० १७३ ॥

विपुल અન્ન ભોગોથી, વિપુલ પાન ભોગોથી 'सयणभोगेहिं य वत्थभोगेहिं य सयणभोगेहिं य उवनिमंतिहिंति' विपुल शयन वस्त्रભોગોથી વિપુલ વસ્ત્રરૂપ ભોગ્ય પદાર્થોથી ઉપનિમંત્રિત કરશે એટલે કે તેને અન્ન વગેરે ભોગ્ય વિષયક પદાર્થોનો ભોગવવાની છૂટ આપશે.

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે 'उम्मुक्कबालभाव जाव' માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે તેથી "विज्ञातपरिणतमात्र, यौवनकमनुप्राप्तम, द्वादशप्रतिकलापण्डितम् नवाङ्गसुप्त प्रतिबोधकम्, અષ્ટાદશવિધ દેશી પ્રકાર ભાષા વિશારદ ગીતરતિ, ગન્ધર્વ નાટ્ય કુશલમ્ શૃંગારાગાર ચારુવેષ, સંગતગત હસિત ભણિત ચેષ્ટિત વિલાસ સલ્લાપોલ્લાપ નિપુણ યુક્તોપચારકુશલ હયયોધિનમ્ ગજયોધિનમ્ રથયોધિનમ્, બાહુયોધિનમ્ બાહુપ્રમર્દિનમ્, અલભોગસમર્થમ્, સાહસિકમ્ સાહસિકમ્ આ પાઠનું ગ્રહણ થયું છે ॥ ૧૭૩ ॥

स खलु तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके केवलां बोधिं भंत्स्यते, मुण्डो भूत्वा आगारात् अनगारितां प्रव्रजिष्यति । स खलु अनगारो भविष्यति ईर्यासमितो यावत् सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन् । तस्य खलु भगवतोऽनुत्तरेण ज्ञानेन, एवं दर्शनेन चरित्रेण आलयेन विहारेण, आर्जवेन मार्दवेन लाघवेन क्षान्त्या गुप्त्या मुक्त्या अनुत्तरेण सर्व संयमसुचरिततपः फल निर्वाणमार्गेण आत्मानं भाव-

से उत्पन्न होगा—भोगों से वर्धित होगा, फिर भी वह काम से लिप्त नहीं होगा, भोगों से लिप्त नहीं होगा, मित्र-ज्ञाति-निजक-सम्बन्धि जन, और-परिजनों में लिप्त नहीं होगा. । "से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ-" वह तो केवल तथारूपवाले स्थविरों के पास केवल बोधि को प्राप्त होगा "से णं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव सुहुय हुयासणो इव तेयसा जलंते-" इस अगारावस्था में वह ईर्यासमिति आदि पांच समिति का पालन करेगा, यावत् अच्छीतरह जलती हुयी अग्नि की तरह वह अपने तेज से चमकेगा "तस्स णं भगवओ अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजम सुचरियतवफलणिव्वाण-मग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स—" अनुत्तरज्ञान से-अनुत्तरदर्शन से-अनुत्तरचारित्र से-अप्रतिबद्ध विहार से-आर्जवसे—मार्दव से-लाघव से-क्षमा से गुप्ति से-त्यागसे-अनुत्तर सर्वसंयम से सुचरित्र से-तप से फल से-एवं निर्वाण मार्ग से आत्मा को

ઉત્પન્ન થશે, ભોગથી વર્દ્ધિત થશે, છતા એ કામથી લિપ્ત થશે નહિ, ભોગોથી લિપ્ત થશે નહિ, મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક સંબંધિજન અને પરિજનોમાં લિપ્ત થશે નહિ" "से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए—केवलं बोहिं बुज्झिहिइ—मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ" તે તો ફક્ત તથારૂપ સ્થાવિરોની પાસે કેવલ બોધિને પ્રાપ્ત કરશે મુંડિત થશે એટલે કે અગારાવસ્થામાથી અનગારાવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે से णं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते" આ અણગારાવસ્થામા તે ઇર્યાસમિતિ વગેરે પાચ સમિતિનું પાલન કરશે યાવત સારી રીતે પ્રજ્વલિત અગ્નિની જેમ તે પોતાના તેજથી ચમકશે. "तस्स णं भगवओ—अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेण खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेण सव्वसंजमसुचरिय तव फल णिव्वाण-मग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स" અનુત્તર જ્ઞાનથી, અનુત્તર દર્શનથી, અનુત્તર ચારિત્રથી, અપ્રતિબદ્ધ વિહારથી, આર્જવથી, માર્દવથી, લાઘવથી, ક્ષમાથી, ગુપ્તિથી ત્યાગથી, અનુત્તર સર્વ સંયમથી, સુચરિત્રથી, તપથી, ફળથી, અને નિર્માણ માર્ગથી

छाया—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः तेषु विपुलेषु अन्नभोगेषु यावच्छ-यनभोगेषु नो सङ्क्ष्यति, नो गर्धिष्यति, नो मूर्च्छिष्यति, नो अध्युपपत्स्यते। तद्यथानाम-पद्मोत्पलमिति वा पद्ममिति वा यावत् शतसहस्रपत्रमिति वा पङ्के जातं जले वृद्धं नोपलिप्यते पङ्करजसा, नोपलिप्यते जलरजसा, एवमेव दृढप्रतिज्ञोऽपि दारकः कामैर्जातो भोगैः संवर्द्धितो नोपलेप्स्यते कामरजसा, नो पलेप्स्यते भोगरजसा, नोपलेप्स्यते मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन।

"तए णं दढपइण्णे दारए—" इत्यादि—

मूलार्थ—'तए णं' उसके बाद— दढपइण्णे दारए तहिं विउलहिं अन्नभोगहिं जाव सयणभोगेहिं—' वह दृढप्रतिज्ञ दारक उन विपुल अन्नरूप भोग्य पदार्थों में यावत्—शयनरूप भोग्य पदार्थों में—"णो सज्जिहिइ णो गिज्झिहिइ, णो मुच्छिहिइ, णो अज्झोववज्जिहिइ—"आसक्ति नहीं करेगा, गृद्धिभावको प्राप्त नहीं होगा, मूर्च्छाभाव को प्राप्त नहीं होगा, उनमें—एक मनवाला नहीं बनेगा। 'से जहाणामए पउमुप्पलेइ वा, पउमेइ वा, जाव सयसहस्सपत्तेइ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरयेण णोवलिप्पइ जलरएण—" जैसे-पद्म, अथवा—उत्पल, यावत्—शत सहस्रपत्रोंवाला कमल पङ्क में पैदा होता है, जल में बढता है, परन्तु—वह कीचड से जरा भी अंश में लिप्त नहीं होता है, पानीसे लिप्त नहीं होता है, "एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामहिं जाए भोगहिं संवुड्ढे, णो-वलिप्पिहिइ—कामरएण णोवलिप्पिहिइ भोगरएण, णोवलिप्पिहिइ मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरिजणेण— इसी तरह से वह दृढप्रतिज्ञ दारक भी काम

"तए णं दढपइण्णे दारए" इत्यादि।

भूलार्थ—'तए णं' पछी "दढपइण्णे दारए तहिं विउलहिं अन्नभोगहिं जाव सयणभोगहिं' ते दृढप्रतिज्ञ दारक ते विपुल अन्नरूप भोग्य पदार्थोमां यावत शय नरूप भोग्य पदार्थोमां "णो सज्जिहिइ, णो गिज्झिहिइ, णो मुच्छिहिइ, णो अज्झोव-वज्जिहिइ" आसक्ति बतावशे नहि. गृद्धभाव प्राप्त करशे नहि, मूर्च्छाभाव प्राप्त करशे नहि, तेमां तल्लीन थशे नहि 'से जहाणामए पउमुप्पलेइवा, पउमेइवा जाव सयसहस्सपत्तेइवा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरयेण णोवलिप्पइ जलरएण" जेम पद्म के उत्पल, यावत शत सहस्रपत्र कमळ पंक (कादव)मां उत्पन्न थाय छे, पाणीमां वृद्धि प्राप्त करे छे पण ते जरेजर पंक कादवथी लिप्त थतुं नथी "एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे, णोवलिप्पिहिइ कामरएण, णोवलिप्पिहिइ भोगरएण णोवलिप्पिहिइ, मित्त णाइ-णियगसयणसंबंधिपरिजणेण" — आ प्रमाणे ते दृढप्रतिज्ञ दारकपण कामथी

स खलु तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके केवलां बोधिं मंस्यते, मुण्डो भूत्वा आगारात् अनगारितां प्रव्रजिष्यति । स खलु अनगारो भविष्यति ईर्यासमितो यावत् सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन् । तस्य खलु भगवतोऽनुत्तरेण ज्ञानेन, एवं दर्शनेन चरित्रेण आलयेन विहारेण, आर्जवेन मार्दवेन लाघवेन क्षान्त्या गुप्त्या मुक्त्या अनुत्तरेण सर्वसंयमसुचरिततपः फल निर्वाणमार्गेण आत्मानं भाव-

से उत्पन्न होगा—भोगों से वर्धित होगा, फिर भी वह काम से लिप्त नहीं होगा, भोगों से लिप्त नहीं होगा, मित्र-ज्ञाति-निजक-सम्बन्धि जन, और-परिजनो में लिप्त नहीं होगा. । "से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ-" वह तो केवल तथारूपवाले स्थविरों के पास केवल बोधि को प्राप्त होगा "से णं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव सुहुय हुयासणो इव तेयसा जलंते-" इस अगारावस्था में वह ईर्यासमिति आदि पांच समिति का पालन करेगा, यावत् अच्छीतरह जलती हुयी अग्नि की तरह वह अपने तेज से चमकेगा "तस्स णं भगवओ अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजम सुचरियतवफलणिव्वाण-मग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स—" अनुत्तरज्ञान से-अनुत्तरदर्शन से-अनुत्तरचारित्र से-अप्रतिबद्ध विहार से-आर्जवसे—मार्दव से-लाघव से-क्षमा से गुप्ति से-त्यागसे-अनुत्तर सर्वसयम से सुचरित्र से-तप से फल से-एवं निर्वाण मार्ग से आत्मा को

ઉત્પન્ન થશે, ભોગથી વર્દ્ધિત થશે, છતા એ કામથી લિપ્ત થશે નહિ, ભોગોથી લિપ્ત થશે નહિ, મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક સંબંધિજન અને પરિજનોમાં લિપ્ત થશે નહિ" "से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए—केवल बोहिं बुज्झिहिइ—मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ" તે તો ફક્ત તથારૂપ સ્થાવિરોની પાસે કેવલ બોધિને પ્રાપ્ત કરશે. મુંડિત થશે એટલે કે અગારાવસ્થામાથી અનગારાવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે से णं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते" આ અણુગારાવસ્થામા તે ઈર્યાસમિતિ વગેરે પાચ સમિતિનું પાલન કરશે યાવત સારી રીતે પ્રજ્વલિત અગ્નિની જેમ તે પોતાના તેજથી ચમકશે. "तस्स णं भगवओ—अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजमसुचरिय तव फल णिव्वाण-मग्गेण अप्पाण भावेमाणस्स" અનુત્તર જ્ઞાનથી, અનુત્તર દર્શનથી, અનુત્તર ચારિત્રથી, અપ્રતિબદ્ધ વિહારથી, આર્જવથી, માર્દવથી, લાઘવથી, ક્ષમાથી, ગુપ્તિથી ત્યાગથી, અનુત્તર સર્વ સયમથી, સુચરિત્રથી, તપથી, ફળથી, અને નિર્માણ માર્ગથી

यमानस्य अनन्तम अनुत्तर कृत्स्न प्रतिपूर्ण निरावरण निर्व्याघात केवलवरज्ञान दर्शन समुत्पत्स्यते। तत खलु स भगवान अर्हन् जिनः केवली भविष्यति, सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य पर्याय ज्ञास्यति, तद्यथा आगतिं गतिं स्थितिं च्यवनम् उपपात तर्कं कृत मनोमानसिक खादित भुक्त प्रतिसेवितम् आविष्कर्म रह कर्म अर्हा अरहस्य भागी तस्मिंस्तस्मिन् काले मनोवाक्काययोगे वर्तमानानां सर्वलोके सर्वजीवानां सर्वभावान् जानन् पश्यन् विहरिष्यति। ॥सू० १७४॥

भावित करते हुए उस भगवान दृढकुमार को "अणते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिइ—' अनन्त अनुत्तर-कृत्स्न प्रतिपूर्ण-निरावरण निर्व्याघात ऐसे केवल ज्ञान, और केवलदर्शन उत्पन्न होंगे 'तए ण से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ" तब वे दृढकुमार भगवान अर्हन्त जिन केवली हो जावेंगे। "सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियाय जाणिहिइ, त जहा आगइं, गइं ठिइं चवणं, उववायं, तक्कं, कडं मणोमाणसिय खाइय भुत्त-पडि सेविय—' मनुज-देव असुर सहित लोक की पर्याय को जान लेंगे, जैसे—आगति को-गति को स्थिति को-च्यवन को-उपपात को तर्क को-कृत को मनोमानसिक को-खादित को-भुक्त को प्रतिसेवित को प्रत्यक्ष में कृत को एकान्त में कृत को, इस तरह से मनुज देव, असुर सहित लोक की पर्याय को वे जानेंगे। "अरहा अरहस्स भागी त त काल मणवयणकायजोगे वट्टमाणाण सव्व लोए सव्वजीवाण सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ' इस तरह वे अनगार कि जिनका अप्रत्यक्ष कोई भी वस्तु नहीं रहेगी सामयाचार से

આત્માને ભાવિત કરતા તે ભગવાન્ દૃઢકુમારને "अणते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिइ' અનંત અનુત્તર કૃત્સ્ન પ્રતિપૂર્ણ નિરાવરણ નિર્વ્યાઘાત એવા કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થશે 'तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ" ત્યારે તે દૃઢકુમાર ભગવાન અર્હત જિન કેવલી થઈ જશે "सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियाय जाणिहिइ, त जहा आगइं, गइं, ठिइं, चवणं उववायं, तक्कं, कडं, मणोमाणसियं खाइयं भुत्तं पडिसेवियं" મનુજ દેવ અસુર સહિત લોકની પર્યાયને જાણી લેશે જેમકે આગતિને ગતિને, સ્થિતિને ચ્યવનને ઉપપાતને તર્કને, કૃતને, મનોમાનસિકને ખાદિતને ભુક્તને, પ્રતિસેવિતને પ્રત્યક્ષમાં કૃતને, એકાન્તકૃતને આમ તે મનુજ દેવ અસુર સહિત લોકની પર્યાયને જાણશે. 'अरहा अरहस्स भागी त त काल मणवयणकायजोगे वट्टमाणाण सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वभाव जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ" આ પ્રમાણે તે અનગાર કે જેમના માટે પ્રત્યક્ષ એવી કોઈ

टीका-'तए णं से'' इत्यादि-ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः तेषु पूर्वोक्तेषु विपुलेषु-प्रचुरेषु अन्नभोगेषु 'यावत्'-यावत्पदेन-पानभोगेषु लयनभोगेषु वस्त्रभोगेषु'' इति सङ्गृह्यते, तथा-शयनभोगेषु च नो सङ्क्षं यति-आसक्तिं न करिष्यति नो गर्धिष्यति-गृद्धिमान न भविष्यति, नोमूर्च्छिष्यति-मूर्च्छाभावं नो करिष्यति नो अध्युपपत्स्यते-तदेकमना नो भविष्यति। अमुमेवार्थं स दृष्टान्तमाह-''से जहा णामए'' इत्यादि-यथा-येन प्रकारेण उत्पलं लोकप्रसिद्धं 'नामकं इति वाक्यालङ्कारे, पद्मोत्पलमिति वा, पद्ममिति वा-'यावत्'-यावत्पदेन-'कुसुममिति वा नलिनमिति वा सुभगमिति वा सुगन्धमिति वा पुण्डरीकमिति वा महापुण्डरीकमिति वा शतपत्रमिति वा सहस्त्रपत्रमिति वा' इति सङ्गृह्यते, तथा-शं सहस्त्रमिति वा-अत्र इतिशब्दः स्वरूपनिर्देशे, वा शब्दो विकल्पे, पङ्के-कर्दमे जातं-

वर्जित होने के कारण सुस्पष्ट सकल आचारवाले होते हुवे उस उस काल में मन-वचन-काय-योग मे वर्तमान इस लोक के समस्त जीवों के समस्त भावों को जानते हुवे, और-देखते हुवे भूमण्डल में विहार करेंगे।

टीकार्थ—स्पष्ट है, परन्तु—इस में जो विशेषता है, वह इस प्रकार से है-वे दृढप्रतिज्ञदारक उन पूर्वोक्त विपुल अन्नभोगों मे यावत—पानभोगों में,- तथा-लयनयोगो में वस्त्रभोगों में आसक्ति नहीं करेंगे, गृद्धियुक्त नहीं बनेगे, मूर्च्छाभाव को नहीं धारण करेंगे, और-न उन में तल्लीन मन वाले होंगे, इस बात को दृष्टान्त द्वारा यों समझाया गया है-जैसे-पद्मोत्पल अथवा-पद्म, यावत् कुसुम, अथवा-नलिन या-सुभग, या-सुगन्ध, या-पुण्डरीक, या -महापुण्डरीक, या-शतपत्र, या-सहस्त्रपत्र, ये सब कमलजाति के भेदरूप कमल

વસ્તુ બાકી રહેશે નહિ સાવદ્યાચારથી વર્જિત હોવા બદલ સુસ્પષ્ટ સકલ આચારવાળા થઈને તે તે કાલમાં મનવચન, કાય, યોગમાં વર્તમાન આ લોકના સમસ્ત જીવોને સમસ્ત ભાવોને જાણતા અને જોતાં ભૂમંડલમાં વિહાર કરશે

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે પણ આમાં જે વિશેષતા છે તે આ પ્રમાણે છે તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ દારક તે વિપુલ અન્નભોગોમાં યાવત્ પાનભોગોમાં, લયભોગોમાં, વસ્ત્રભોગોમાં તેમજ શયનભોગોમાં આસક્ત થશે નહિ ગૃદ્ધિયુક્ત બનશે નહિ, મૂર્ચ્છાભાવયુક્ત થશે નહિ અને તેમાં તલ્લીન પણ થશે નહિ. એજ વાતને દૃષ્ટાંત વડે આ પ્રમાણે સમજાવવામાં આવી છે કે જેમ પદ્મોત્પલ અથવા પદ્મ યાવત્ કુસુમ, અથવા નલિન કે સુભગ, કે સુગંધ, કે પુંડરીક, કે મહાપુંડરીક, કે શતપત્ર, કે સહસ્ત્રપત્ર આ બધા કમલ જાતિના કમળો કર્દમ (કાદવ)માં ઉત્પન્ન હોય છે, પાણીમાં વૃદ્ધિ પામે છે

यमानस्य अनन्तम् अनुत्तर कृत्स्न प्रतिपूर्ण निरावरण निर्व्याघात केवलवरज्ञान दर्शन समुत्पत्स्यते। ततः खलु स भगवान् अर्हन् जिनः केवली भविष्यति, सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य पर्यायं ज्ञास्यति, तद्यथा आगतिं गतिं स्थितिं च्यवनम् उपपातं तर्कं कृतं मनोमानसिकं खादितं भुक्तं प्रतिसेवितम् आविष्कर्म रहः कर्म अरहा अरहस्य भागी तस्मिंस्तस्मिन् काले मनोवाक्कायययोगे वर्तमानानां सर्वलोके सर्वजीवानां सर्वभावान् जानन् पश्यन् विहरिष्यति। ।।सू० १७४।।

भावित करते हुवे उस भगवान् दृढकुमार को "अणंत अणुत्तर कसिण पडिपुण्ण निरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिइ—' अनन्त अनुत्तर-कृत्स्न-प्रतिपूर्ण निरावरण निर्व्याघात ऐसे केवल ज्ञान, और केवलदर्शन उत्पन्न होंगे 'तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ" तब वे दृढकुमार भगवान अर्हन्त जिन केवली हो जायेंगे। "सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियाय जाणिहिइ, तं जहा आगइ, गइं, ठिइं चवणं, उववायं, तक्कं, कडं मणोमाणसियं खाइयं भुत्त-पडिसेवियं—' मनुज देव असुर सहित लोक की पर्याय को जान लेंगे, जैसे—आगति को-गति को स्थिति को-च्यवन को उपपात को तर्क को-कृत को मनोमानसिक को-खादित को भुक्त को प्रतिसेवित को प्रत्यक्ष में कृत को एकान्त में कृत को, इस तरह से मनुज देव, असुर सहित लोक की पर्याय को वे जानेंगे। "अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ" इस तरह वे अनगार कि जिन का अप्रत्यक्ष कोई भी वस्तु नहीं रहेगी सामयागार स

आत्माने भावित करतां ते भगवान् दृढकुमारने "अणंत अणुत्तर कसिण पडिपुण्ण निरावरण णिव्वाघाए केवलवरनाणदंसण समुप्पज्जिहिइ' अनंत अनुत्तर कृत्स्न प्रतिपूर्ण निरावरण निर्व्याघात એવા કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થશે 'तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ" ત્યારે તે દૃઢકુમાર ભગવાન અર્હંત જિન કેવલી થઈ જશે "सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियाय जाणिहिइ, तं जहा आगइं, गइं, ठिइं, चवणं उववायं, तक्कं, कडं, मणोमाणसियं खाइयं भुत्त पडिसेवियं" મનુજ દેવ અસુર સહિત લોકની પર્યાયને જાણી લેશે જેમકે આગતિને ગતિને, સ્થિતિને, ચ્યવનને ઉપપાતને તર્કને, કૃતને મનોમાનસિકને ખાદિતને ભુક્તને પ્રતિસેવિતને પ્રત્યક્ષમાં કૃતને, એકાન્તકૃતને, આમ તે મનુજ દેવ અસુર સહિત લોકની પર્યાયને જાણશે. 'अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्व भावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ" આ પ્રમાણે તે અનગાર કે જેમના માટે પ્રત્યક્ષ એવી કોઈ

छिण्णसोए निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखे इव निरंजणे जीवे विव अप्पाडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पगडभावे कुम्मे इव गुत्तिंदिए, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे, गगणमिव णिरालंबणे, अणिलो इव निरालए, चंदोइव सोमलेसे, सूरो इव दित्ततेए, सागरो इव गंभीरे, विहग इव सव्वआ विप्पमुक्के, मंदरो इव अप्पकंपे, सारयसलिलं इव सुद्धहियए, खग्गिविसाणं इव एगजाए, भारंडपक्खीव अप्पमत्ते, कुंजरो इव सोंडीरे, वसभो इव जायत्थामे, सीहो इव दुद्धरिसे, वसुन्धरा इव सव्वफासविसहे' इति संग्राह्यम्। एतच्छाया च—भाषासमित एषणासमित आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमितः उच्चारप्रस्रवणखेलशिङ्घाणजल्लपरिष्ठापनिकासमितो मनोगुप्तो वचोगुप्तः कायगुप्तो गुप्तो गुप्तेन्द्रियो गुप्तब्रह्मचारी अममः अकिञ्चनः, छिन्नग्रन्थः, छिन्नस्रोताः, निरुपलेपः, कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः, शङ्ख इव निरञ्जनः, जीव इव अप्रतिहतगतिः, जात्यकनकमिव जातरूपः, आदर्शफलक इव प्रकटभावः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः पुष्करपत्रमिव निरुपलेपः गगनमिव निरालम्बनः अनिल इव निरालयः, चन्द्र इव सोमलेश्यः, सूर इव दीप्ततेजाः, सागर इव गम्भीरः, विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः, मन्दर इव अप्रकम्पः शारदसलिलमिव शुद्धहृदयः, खड्गिविषाणमिव एकजातः, भारण्डपक्षीव अप्रमत्तः, कुञ्जर इव शौण्डीरः, वृषभ इव जातस्थामा, सिंह इव दुर्द्धर्षः, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविषहः-इति। तत्र भाषासमित—भाषासमितियुक्तः, एषणासमितः-एषणायां-भक्ताद्येषणायाम् उद्गमादिदोषवर्जनपूर्वकं समितः—समितियुक्तः, विशुद्धाहारादिग्रहणान्वेषणोपयोगयुक्त इत्यर्थः। तथा आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमितः—आदाने ग्रहणे—अस्य भाण्डामात्रयोरित्यनेन सम्बन्धः, प्रत्यासत्तिन्यायात् साहचर्यात् देहली दीपन्यायाद् वा, भाण्डस्य—पात्रस्य मात्रस्य—वस्त्राद्युपकरणस्य च निक्षेपणायाम्—अवस्थापने समितः—प्रतिलेखनप्रमार्जनपूर्वकं प्रवृत्ति-

समिति से युक्त होना इसका नाम भाषासमिति युक्त है। भक्त आदि की एषणा में उद्गमादि दोषवर्जनपूर्वक जो समित होना, इसका नाम एषणासमिति है, अर्थात् विशुद्ध आहार आदि का ग्रहण करने और अन्वेषण करने मे उपयोगयुक्त होना, उसका नाम—एषणासमित है। भाण्ड—पात्र—मात्र वस्त्रादि उपकरण का निक्षेपण रखने में एवं—अवस्थापन में समित होना, इसका

ભક્ત વગેરેની એષણામા ઉદ્ગમાદિ દોષવર્જનપૂર્વક સમિત થશે તેનુ નામ એષણા સમિતિ છે એટલે કે વિશુદ્ધ આહાર વગેરે ગ્રહણ કરવા અને અન્વેષણ કરવામા ઉપયોગ યુક્ત થવું તેનુ નામ એષણા સમિતિ છે. ભાંડ-પાત્ર-માત્ર-વસ્ત્રાદિ ઉપકરણના નિક્ષેપણમા અને અવસ્થાનમા સમિતિયુક્ત થવુ તેનુ નામ આદાનભાંડમાત્ર નિક્ષેપણા

समुत्पन्न, जले संवृद्ध वृद्धिं गतमपि नोपलिप्यते—नेपलिप्त भवति, पङ्करजसा, नोपलिप्यत जलरजसा, इत्य दृष्टान्तमुक्त्वा दार्ष्टान्तिकमाह—'एवमेव' इत्यादि। एवमेव अनेन प्रकारेणैव दृढप्रतिज्ञोऽपि दारक कामे जातोऽपि भोगे संवृद्धो वृद्धिं गतोऽपि कामरजसा नोपलेप्स्यत-उपलिप्तो न भविष्यति, भोगरजसा नोपलेप्स्यत उ लिप्तो न भविष्यति, तथा मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन—तत्र मित्राणि-सुहृद, ज्ञातय माता-पिता-भ्रात्रादय निजका-स्वकीया पुत्रादय स्वजना' पितृव्यादय सम्बन्धिन —श्वसुरपुत्रश्वसुरादय., परिजना दासीदासादय एतर्पा समाहारस्तेन सह नापलेप्स्यत-उपलिप्तो नो भविष्यति। अपितु स खलु दृढप्रतिज्ञ अनगारो भविष्यति, कीदृशोऽनगारो भविष्यति? 'इरियासमिए' इत्यादि। ईर्यासमित ईर्यासमिति न—युक्त, 'यावत् यावत्पदेन भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिठावणिया समिए मणगुत्त वयगुत्त कायगुत्त गुत्त गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिण्णगंथे

यद्यपि कीचड म उत्पन्न होते हैं, जल में वृद्धिगत हैं, परन्तु फिर भी कीचड रज स लिप्त नहीं होते हैं। जलरज स सम्बन्धित नहीं होते हैं, इसी प्रकार से दृढप्रतिज्ञ भी दारक काम से उत्पन्न हुआ है भोगों से संवर्धित हुआ है, फिर भी वह काम रज स उपलिप्त नहीं बनेगा, मित्रजनों से ज्ञातिजनों स माता पिता भ्राता आदि कों स निजजनों स पुत्रादिकों से स्वजनों से पितृव्यादि कों स सम्बन्धित जनों से श्वसुर पुत्रश्वसुर आदि स, एव परिजनों स दासीदास आदि कों स सम्बद्ध नहीं होगा। किन्तु वह दृढप्रतिज्ञ अनगार होगा। ईर्यासमिति का पालन करेगा, यावत् भाषा समिति का एषणा समिति का आदानभण्डमात्र निक्षेपणसमिति का उच्चारप्रस्रवण खेल सिंघाण जल्ल परिष्ठापनिका समिति का पालन करेगा, मनोगुप्ति का वचन गुप्ति का कायगुप्तिका पालन करेगा यहाँ यथा समभावना चाहिये। हित मितप्रिय वचन बोलना इसका नाम भाषासमिति है। इस

पણ છતાં એ કાદવથી લિપ્ત થતાં નથી આમ તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ દારક પણ કામથી ઉત્પન્ન થશે અને ભોગોથી સંવર્ધિત થશે છતાંએ તે કામરજથી ઉપલિપ્ત નહિ થશે મિત્રજનોથી પુત્રાદિકોથી સ્વજનોથી પિતૃવ્યાદિકોથી સંબંધીજનોથી શ્વશુર પુત્રશ્વશુર વગેરેથી અને પરિજનોથી દાસીદાસ વગેરેથી સંબદ્ધ થશે નહિ પણ તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ અનગાર થશે. ઈર્યાસમિતિનું પાલન કરશે યાવત્ ભાષા સમિતિનું એષણા સમિતિનું આદાન ભાંડ માત્ર નિક્ષેપણસમિતિનું ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ-ખેલ, સિંઘાણ જલ્લ-પરિસ્થાપનિકા સમિતિનું પાલન કરશે. મનોગુપ્તિનું વચનગુપ્તિનું કાયગુપ્તિનું પાલન કરશે. આમ અહીં સમજવું જોઈએ હિત-મિત પ્રિયવચન બોલવું તેનું નામ ભાષા સમિતિ છે

छिण्णसोए निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखे इव निरंजणे जीवे विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पगडभावे कुम्मे इव गुत्तिंदिए, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे, गगणमिव णिरालंवणे, अणिलो इव निरालए, चंदोइव सोमलेसे, सूरो इव दित्ततेए, सागरो इव गंभीरे, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के, मंदरो इव अप्पकंपे, सारयसलिलं इव सुद्धहियए, खग्गिविसाणं इव एगजाए, भारंडपक्खीव अप्पमत्ते, कुंजरो इव सोंडीरे, वसभो इव जायत्थामे, सीहो इव दुद्धरिसे, वसुन्धरा इव सव्वफासविसहे' इति संग्राह्यम्। एतच्छाया च—भाषासमित एपणासमित आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमितः उच्चारप्रस्रवणखेलशिङ्घाणजल्लपरिष्ठापनिकासमितो मनोगुप्तो वचोगुप्तः कायगुप्तो गुप्तो गुप्तेन्द्रियो गुप्तब्रह्मचारी अममः अकिञ्चनः, छिन्नग्रन्थः, छिन्नस्रोताः, निरुपलेपः, कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः, शङ्ख इव निरञ्जनः, जीव इव अप्रतिहतगतिः, जात्यकनकमिव जातरूपः, आदर्शफलक इव प्रकटभावः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः पुष्करपत्रमिव निरुपलेपः गगनमिव निरालम्बनः अनिल इव निरालयः, चन्द्र इव सोमलेश्यः, सूर इव दीप्ततेजाः, सागर इव गम्भीरः, विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः, मन्दर इव अप्रकम्पः शारदसलिलमिव शुद्धहृदयः, खड्गिविषाणमिव एकजातः, भारण्डपक्षीव अप्रमत्तः, कुञ्जर इव शौण्डीरः, वृषभ इव जातस्थामा, सिंह इव दुर्द्धर्षः, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविषहः-इति। तत्र भाषासमित —भाषासमितियुक्तः, एषणासमितः-एषणाया-भक्ताद्येषणायाम् उद्गमादिदोषवर्जनपूर्वकं समितः—समितियुक्तः, विशुद्धाहारादिग्रहणान्वेषणोपयोगयुक्त इत्यर्थः। तथा आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमितः—आदाने ग्रहणे—अस्य भाण्डामात्रयोरित्यनेन सम्बन्धः, प्रत्यासत्तिन्यायात् साहचर्यात् देहली दीपन्यायाद् वा, भाण्डस्य—पात्रस्य मात्रस्य—वस्त्राद्युपकरणस्य च निक्षेपणायाम्—अवस्थापने समितः—प्रतिलेखनप्रमार्जनपूर्वकं प्रवृत्ति-

समिति से युक्त होना इसका नाम भाषासमिति युक्त है। भक्त आदि की एषणा में उद्गमादि दोषवर्जनपूर्वक जो समित होना, इसका नाम एषणासमिति है, अर्थात् विशुद्ध आहार आदि का ग्रहण करने और अन्वेषण करने में उपयोगयुक्त होना, उसका नाम—एषणासमित है। भाण्ड—पात्र—मात्र वस्त्रादि उपकरण का निक्षेपण रखने में एवं—अवस्थापन में समित होना, इसका

ભક્ત વગેરેની એષણામાં ઉદ્ગમાદિ દોષવર્જનપૂર્વક સમિત થશે, તેનું નામ એષણા સમિતિ છે એટલે કે વિશુદ્ધ આહાર વગેરે ગ્રહણ કરવા અને અન્વેષણ કરવામાં ઉપયોગ યુક્ત થવું તેનુ નામ એષણા સમિતિ છે. ભાંડ-પાત્ર-માત્ર-વસ્ત્રાદિ ઉપકરણના નિક્ષેપણમાં અને અવસ્થાનમાં સમિતિયુક્ત થવું તેનુ નામ આદાનભાંડમાત્ર નિક્ષેપણા

युक्त इत्यर्थः, तथा—उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठापनिकासमितः—तत्र उच्चार—पुरीषं, प्रस्रवण—मूत्रं, खेल—श्लेष्मा-उपलक्षणत्वान्निष्ठीवनस्यापि ग्रहणमिति भावः, सिंघाणस्यापि ग्रहणम्, सिंघाणं नासिकामलं, जल्ल—स्वेदजमलम्, एतेषां परिष्ठापनिका, परिष्ठापना-परित्यागः, सैव परिष्ठापनिका, तस्यां समितः—सम्यक् प्रवृत्तः, तथा—मनोगुप्तः—मनोगुप्तिस्त्रिधा—तत्र आर्तरौद्रध्यानानुबन्धिकल्पनाजालवियोगरूपा प्रथमा १, शास्त्रानुसारिणी परलोकसाधिका धर्मध्यानानुबन्धिनी माध्यस्थ्यपरिणतिर्द्वितीया २, मनोवृत्तिनिरोधेन योगनिरोधावस्थाभाविनी आत्मरमणरूपा तृतीया ३, तदुक्तं योगशास्त्रे—

"विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितम् ।
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता ॥१॥" इति ।

नाम आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमिति है, अर्थात् प्रतिलेखन, प्रमार्जनपूर्वक प्रवृत्ति से युक्त होना इसका नाम आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणा समिति है। उच्चार नाम-पुरीषका है, प्रस्रवण नाम-मूत्र का है, खेल नाम श्लेष्मा का है, उपलक्षण से थूक का भी यहां ग्रहण किया गया है । सिंघाणनाम से यहां नासिका का मल गृहीत होता है, (नासामल तु सिंघाण इति अमरः)। स्वेदज मल का नाम—जल्ल है इनकी परिष्ठापनिका में त्यागमें समित होना, उसका नाम—उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठापनसमिति है । मनोगुप्ति-तीन प्रकार की है, इनमें आर्त रौद्र ध्यानानुबंधी कल्पनाजाल का परित्याग करना इसका नाम प्रथम मनोगुप्ति है—१ शास्त्रानुसारिणी-परलोक साधिका-धर्मध्यानानुबन्धिनी एवं माध्यस्थ परिणतिरूप द्वितीय मनोगुप्ति है-२ मनोवृत्ति के निरोध से योग निरोधकरनेवाली भाविनी जो आत्मरमणरूप गुप्ति है वह तृतीय मनोगुप्ति है । योगशास्त्र में कहा है—

સમિતિ છે એટલે કે પ્રતિલેખન, પ્રમાર્જનપૂર્વક પ્રવૃત્તિયુક્ત થવું તે આદાન ભાંડમાત્ર નિક્ષેપણા સમિતિ છે પુરીષનું નામ ઉચ્ચાર મૂત્રનું નામ પ્રસ્રવણ શ્લેષ્માનું નામ ખેલ છે ઉપલક્ષણથી થૂંકનું પણ અહીં ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે સિંઘાણ નામ અહીં નાસિકા મલ માટે પ્રયુક્ત થયેલ છે (સિંઘાણ નાસામલ ઇતિ નાસિક્ય મલ ઇતિ મેદિની કોષઃ) સ્વેદજમલનું નામ જલ્લ છે એમની પરિષ્ઠાપનિકામાં ત્યાગમાં સમિત થવું તેનું નામ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ખેલ સિંઘાણ જલ્લ પરિષ્ઠાપન સમિતિ છે મનોગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે. આમાં આર્તરૌદ્રધ્યાનાનુબન્ધી કલ્પનાઓનો પરિત્યાગ કરવો તે પ્રથમ મનોગુપ્તિ છે શાસ્ત્રાનુસારિણી પરલોક સાધિકા ધર્મધ્યાનાનુબન્ધિની અને માધ્યસ્થ પરિણતિરૂપ દ્વિતીય મનોગુપ્તિ છે ૨, મનોવૃત્તિના નિરોધાવસ્થાભાવિની જે આત્મરમણ ગુપ્તિ છે તે તૃતીય મનોગુપ્તિ છે યોગશાસ્ત્રમાં

एवंविधया त्रिविधयाऽपि मनोगुप्त्या युक्त इत्यर्थः, तथा—वचोगुप्तः=वचनगुप्तियुक्तः, वचनगुप्तिश्चतुर्विधा तथाहि- सत्या १, मृषा २, सत्यामृषा ३, असत्यामृषा चेति। उक्तं च—

'सच्चा तहेव मोसा य, सच्चा-मोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा य वयगुत्ती चउव्विहा। (उत्त० २४ २२ गा०)इति,

छाया—"सत्या तथैव मृषा च, सत्यामृषा तथैव च।
चतुर्थ्यसत्यमृषा च, वचोगुप्तिश्चतुर्विधा। इति।

तथा-कायगुप्तः कायगुप्तियुक्तः, कायगुप्तिस्तु गमनागमनप्रचलनादि क्रियाणां गोपनम्, सा द्विविधा— चेष्टानिवृत्तिरूपं १, यथागमं

जिसमें-कल्पना जाल विमुक्त हो, और—समत्व में जो सुप्रतिष्ठित हो—ऐसा मन आत्माराम है—आत्मारूपी उद्यान (बाग) है, इसमें-रमण करना मनोगुप्ति है। इस प्रकार की तीन गुप्तियों से मनका युक्त होना इसका-नाम मनोगुप्ति से गुप्त होना है। इसी प्रकार से वचनगुप्ति से युक्त होना सो—वचनगुप्ति से गुप्त होना है, वचनगुप्ति चार प्रकार की है,—सत्यावचोगुप्ति—१ मृषावचोगुप्ति—२ सत्यामृषावचोगुप्ति—३ और—असत्यामृषावचो गुप्ति है—४ उक्तञ्च—"सच्चा तहेव मोसाय सच्चामोसा तहेवय।

चउत्थी असच्च मोसा-य वयगुत्ती चउव्विहा—॥१॥

(उत्त० २४—२२ गाथा-) कायगुप्ति से युक्त होना इसका नाम—काय गुप्त है—१ गमनाऽऽगमनादिरूप प्रचलनादि क्रियाओं का गोपन करना कायगुप्ति है—२ यह कायगुप्ति चेष्टानिवृत्तिरूप, एवं—यथागम चेष्टा नियमनरूप से दो प्रकार की

કહ્યુ છે કે જેમા કલ્પનાજાલ વિમુક્ત હોય અને સમત્વમા જે સુપ્રતિષ્ઠિત હોય એવુ મન આત્મારામ છે આત્મારૂપી ઉદ્યાન છે આમા રમણ કરવું તે મનોગુપ્તિ છે. "विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितम्। आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्ति-रुदाहृता ॥१॥ આ જાતની ત્રણ ગુપ્તિઓથી મનયુક્ત થવું તેનુ નામ મનોગુપ્તિથી ગુપ્ત થવુ છે આ પ્રમાણે વચનગુપ્તિથી યુક્ત થવુ તે વચનગુપ્તિથી ગુપ્ત થવું છે. વચનગુપ્તિ ચાર પ્રકારની છે સત્યામનો ગુપ્તિ ૧, મૃષા મનોગુપ્તિ ૨, સત્યામૃષામનોગુપ્તિ ૩, અને અસત્યામૃષામનો ગુપ્તિ ૪

કહ્યું છે,—"सच्चा तहेव मोसाय सच्चामोसा तहेव य।

चउत्थी असच्चमोसाय वय गुत्ती चउव्विहा ॥१॥

(ઉત્ત૦ ૨૪-૨૨ ગાથા) કાયગુપ્તિથી યુક્ત થવું તેનું નામ કાયગુપ્ત છે. ૧, ગમનાગમન-વગેરે રૂપ પ્રચલન વિગેરે ક્રિયાઓનુ ગોપન કરવુ કાયગુપ્તિ છે. ૨. આ કાય-ગુપ્તિ ચેષ્ટા નિવૃત્તિરૂપ અને યથાગમ ચેષ્ટા નિયમનરૂપથી બે પ્રકારની હોય છે.

युक्त इत्यर्थः, तथा—उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठापनिकासमिति—तत्र उच्चार—पुरीष, प्रस्रवण—मूत्र, खेल—श्लेष्मा-उपलक्षणत्वान्निष्ठीवनस्यापि ग्रहणमिति भाषाप्रसिद्धस्यापि ग्रहणम् सिंघाण नासिकामल, जल्लः—स्वेदसमलम्, एतपां परिष्ठापनिका, परिष्ठापना-परित्यागः सैव परिष्ठापनिका, तस्या समिति—सम्यगुपयुक्तः, तथा—मनोगुप्तः—मनोगुप्तिस्त्रिधा—तत्र आर्तरौद्रध्यानानुबन्धि कल्पनाजालवियोगरूपा प्रथमा १, शास्त्रानुसारिणी परलोकसाधिका धर्मध्यानानुबन्धिनी माध्यस्थ्यपरिणतिर्द्वितीया २, मनोवृत्तिनिरोधेन योगनिरोधावस्थाभाविनी आत्मरमणरूपा तृतीया ३, तदुक्तं योगशास्त्रे—

"विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितम्।
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता॥१॥" इति।

नाम-आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमिति है, अर्थात् प्रतिलेखन, प्रमार्जनपूर्वक प्रवृत्ति से युक्त होना इसका नाम आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणा समिति है। उच्चार नाम-पुरिषका है, प्रस्रवण नाम-मूत्र का है, खेल नाम श्लेष्मा का है, उपलक्षण से थूक का भी यहां ग्रहण किया गया है। सिंघाणनाम से यहां नासिका का मल गृहीत होता है, (नासामलं तु सिंघाणं इति अमरः)। स्वेदयुक्त मैल का नाम—जल्ल है इनकी परिष्ठापनिका में त्यागमें समित होना, उसका नाम—उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठापनसमिति है। मनोगुप्ति-तीन प्रकार की है, इनमें-आर्त रौद्र ध्यानानुबन्धी कल्पनाजाल का परित्याग करना इसका नाम प्रथम मनोगुप्ति है—१ शास्त्रानुसारिणी-परलोक साधिका धर्मध्यानानुबन्धिनी एवं माध्यस्थ परिणतिरूप द्वितीय मनोगुप्ति है—२ मनोवृत्ति के निरोध से योग निरोधकरनवाली भाविनी जो आत्मरमणरूप गुप्ति है वह तृतीय मनोगुप्ति है। योगशास्त्र में कहा है—

समिति છે એટલે કે પ્રતિલેખન, પ્રમાર્જનપૂર્વક પ્રવૃત્તિયુક્ત થવું તે આદાન ભાંડ માત્ર નિક્ષેપણા સમિતિ છે પુરીષનું નામ ઉચ્ચાર મૂત્રનું નામ પ્રસ્રવણ, શ્લેષ્માનું નામ ખેલ છે ઉપલક્ષણથી થૂંકનું પણ અહીં ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે સિંઘાણ નામ અહીં નાસિકા મલ માટે પ્રયુક્ત થયેલ છે (સિંઘાણ કાચપાત્ર ચ સ્યાત્ નાસિક્યમલે ઇતિ મેદિની કોષઃ) સ્વેદમલનું નામ જલ્લ છે એમની પરિષ્ઠાપનિકામાં-ત્યાગમાં સમિત થવું તેનું નામ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ખેલ સિંઘાણ જલ્લ પરિષ્ઠાપન સમિત છે મનોગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે આમાં આર્તરૌદ્રધ્યાનાનુબન્ધી કલ્પનાઓનો પરિત્યાગ કરવો તે પ્રથમ મનોગુપ્તિ છે. શાસ્ત્રાનુસારિણી પરલોક સાધિકા ધર્મધ્યાનાનુબન્ધિની અને માધ્યસ્થ પરિણતિરૂપ દ્વિતીય મનોગુપ્તિ છે ૨, મનોવૃત્તિના નિરોધાવસ્થાભાવિની જે આત્મરમણ ગુપ્તિ છે તે તૃતીય મનોગુપ્તિ છે યોગશાસ્ત્રમાં

एवंविधया त्रिविधयाऽपि मनोगुप्त्या युक्त इत्यर्थः, तथा—वचोगुप्तः=वचनगुप्तियुक्तः, वचनगुप्तिश्चतुर्विधा तथाहि- सत्या १, मृषा २, सत्यामृषा ३, असत्यामृषा चेति। उक्तं च—

'सच्चा तहेव मोसा य, सच्चा-मोसा तहेव य।

चउत्थी असच्चमोसा य, वयगुत्ती चउव्विहा। (उत्त० २४ २२ गा०)इति,

छाया—"सत्या तथैव मृषा च, सत्यामृषा तथैव च।

चतुर्थ्यसत्यमृषा च, वचोगुप्तिश्चतुर्विधा। इति।

तथा-कायगुप्तः कायगुप्तियुक्तः, कायगुप्तिस्तु गमनागमनप्रचलनादिक्रियाणां गोपनम्, सा द्विविधा— चेष्टानिवृत्तिरूपं १, यथागमं

जिसमें-कल्पना जाल विमुक्त हो, और—समत्व में जो सुप्रतिष्ठित हो—ऐसा मन आत्माराम है—आत्मारूपी उद्यान (बाग) है. इसमें-रमण करना मनोगुप्ति है.। इस प्रकार की तीन गुप्तियों से मनका युक्त होना इसका-नाम मनोगुप्ति से गुप्त होना है.। इसी प्रकार से वचनगुप्ति से युक्त होना सो—वचनगुप्ति से गुप्त होना है, वचनगुप्ति चार प्रकार की है,—सत्यावचोगुप्ति—१ मृषावचोगुप्ति—२ सत्यामृषावचोगुप्ति—३ और—असत्यामृषावचोगुप्ति है—४ उक्तञ्च—"सच्चा तहेव मोसाय सच्चामोसा तहेवय.।

चउत्थी असच्च मोसा-य वयगुत्ती चउव्विहा—॥१॥

(उत्त० २४—२२ गाथा-) कायगुप्ति से युक्त होना इसका नाम—काय गुप्त है—१ गमनाऽऽगमनादिरूप प्रचलनादि क्रियाओं का गोपन करना कायगुप्ति है—२ यह कायगुप्ति चेष्टानिवृत्तिरूप. एवं—यथागम चेष्टा नियमनरूप से दो प्रकार की

કહ્યુ છે કે જેમા કલ્પનાજાલ વિમુક્ત હોય અને સમત્વમા જે સુપ્રતિષ્ઠિત હોય એવુ મન આત્મારામ છે આત્મારૂપી ઉદ્યાન છે. આમા રમણુ કરવુ તે મનોગુપ્તિ છે.

"विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितम्। आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता ॥१॥ આ જાતની ત્રણ ગુપ્તિઓથી મનયુક્ત થવુ તેનુ નામ મનોગુપ્તિથી ગુપ્ત થવુ છે આ પ્રમાણે વચનગુપ્તિથી યુક્ત થવુ તે વચનગુપ્તિથી ગુપ્ત થવુ છે. વચનગુપ્તિ ચાર પ્રકારની છે સત્યામનો ગુપ્તિ ૧, મૃષા મનોગુપ્તિ ૨, સત્યામૃષામનોગુપ્તિ ૩, અને અસત્યામૃષામનો ગુપ્તિ ૪

કહ્યુ છે,—"सच्चा तहेव मोसाय सच्चामोसा तहेव य।

चउत्थी असच्चमोसाय वय गुत्ती चउव्विहा ॥१॥

युक्त इत्य, तथा—उच्चारप्रस्रवणखेलशिङ्घाणजल्लपरिष्ठापनिकासमिति -तत्र उच्चार -पुरीष, प्रस्रवण—मूत्र, खेल —श्लेष्मा-उपलक्षणत्वान्निष्ठीवनस्यापि ग्रहणमिति मापाप्रसिद्धस्यापि ग्रहणम शिङ्घाण नासिकामल, जल्ल —स्वेदसमलम्, एतपा परिष्ठापनिका, परिष्ठापना-परित्यागः, सैव परिष्ठापनिका, तस्या समिति'—सम्यगुपयुक्त , तथा—मनोगुप्त —मनोगुप्तिस्त्रेधा—तत्र आर्तरौद्र ध्यानानुबन्धि कल्पनाजालवियोगरूपा प्रथमा १, शास्त्रानुसारिणी परलोकसाधिका धर्म ध्यानानुबन्धिनी माध्यस्थ्यपरिणतिर्द्वितीया २, मनोवृत्तिनिरोधन योगनिरोधावस्थाभाविनी आत्मरमणरूपा तृती । ३, तदुक्त योगशास्त्रे—

"विमुक्तकल्पनाजाल समत्वे सुप्रतिष्ठितम् ।
आत्माराम मनस्तज्ज्ञ र्मनोगुप्तिरुदाहृता ।१।" इति ।

नाम-आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमिति है, अर्थात् प्रतिलेखन, प्रमार्जनपूर्वक प्रवृत्ति से युक्त होना। इसका नाम आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणा समिति है। उच्चार नाम-पुरिपका है, प्रस्रवण नाम-मूत्र का है, खेल नाम श्लेष्मा का है, उपलक्षण से थूक का भी यहा ग्रहण किया गया है । शिङ्घाणनाम से यहा नासिका का मल गृहीत होता है, (नासामल तु सिंघाण इति अमर)। स्वेदज मल का नाम—जल्ल है इनकी परिष्ठापनिका में त्यागमें समित होना, उसका नाम—उच्चारप्रस्रवणखेलशिङ्घाणजल्लपरि ष्ठापनसमिति है । मनोगुप्ति-तीन प्रकार की है, इनमें आर्त रौद्र ध्यानानु बन्धी कल्पनाजाल का परित्याग करना इसका नाम प्रथम मनोगुप्ति है—१ शास्त्रानुसारिणी-परलोक साधिका-धर्मध्यानानुबन्धिनी एव माध्यस्थ परिणतिरूप द्वितीय मनोगुप्ति है—२ मनोवृत्ति के निरोध से योग निरोधकरनेवाली भाविनी जो आत्मरमणरूप गुप्ति है वह तृतीय मनोगुप्ति है । योगशास्त्र में कहा है—

समिति છે એટલે કે પ્રતિલેખન, પ્રમાર્જનપૂર્વક પ્રવૃત્તિયુક્ત થવું તે આદાન-ભાંડ માત્ર નિક્ષેપણા સમિતિ છે. પુરીષનું નામ ઉચ્ચાર મૂત્રનું નામ પ્રસ્રવણ શ્લેષ્માનું નામ ખેલ છે ઉપલક્ષણથી થૂંક પણ અહીં ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે શિંઘાણ નામ અહીં નાસિકા મલ માટે પ્રયુક્ત થયેલ છે (શિંઘાણં કાચપાત્ર ચ સ્યાદ્ માસિક્ય મલે ઇતિ મેદિની કોષ) સ્વેદજમલનું નામ જલ્લ છે એમની પરિષ્ઠા પનિકામાં-ત્યાગમાં સમિત થવું તેનું નામ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ખેલ શિંઘાણ જલ્લ પરિષ્ઠાપન સમિત છે મનોગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે આમાં આર્તરૌદ્રધ્યાનાનુબંધી કલ્પનાઓનો પરિત્યાગ કરવો તે પ્રથમ મનોગુપ્તિ છે શાસ્ત્રાનુસારિણી પરલોક સાધિકા ધર્મધ્યાનાનુબંધિની અને માધ્યસ્થ પરિણતિરૂપ દ્વિતીય મનોગુપ્તિ છે ૨ મનોવૃત્તિ ના નિરોધાવસ્થાભાવિની જે આત્મરમણ ગુપ્તિ છે તે તૃતીય મનોગુપ્તિ છે. યોગશાસ્ત્રમાં

तथा—गुप्तः—अशुभयोगनिग्रहरूपगुप्त्या युक्तः, गुप्तब्रह्मचारी—गुप्तं नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभी रक्षितं ब्रह्म=मैथुनविरमणं चरति तच्छीलः, अममः—ममत्वरहितः, अकिञ्चनः—धर्मोपकरणातिरिक्तवस्तुरहितः, छिन्नग्रन्थः-ग्रथ्नाति—बध्नाति आत्मानं कर्मणेति ग्रन्थः, स द्विविधो द्रव्यभावभेदात् द्रव्यतो-हिरण्यादि, भावतो मिथ्यात्वादिः, स द्विविधो ग्रन्थश्छिन्नो येन स तथा, छिन्नस्रोताः—छिन्नसंसारप्रवाहः, निरुपलेपः—कर्मबन्धहेतुरुपलेपो रागादिस्तेन रहितः. निरुपलेपत्वमेव सदृष्टान्तमाह—कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः—मुक्तं—त्यक्त तोयमिव तोयं संसारबन्ध-

---

शयनासन इत्यादि—शयन में, आसन में, लेने में रखने में, चलने में
काय को यतना पूर्वक रखना यह कायगुप्ति है

इस प्रकार से वे दृढप्रतिज्ञ अनगार इन पूर्वोक्त समितियों का तथा—गुप्तियों का पालन करनेवाले होंगे। तथा—वे गुप्त होंगे, अशुभ योगनिग्रहरूप गुप्ति से युक्त बनेंगे, गुप्तब्रह्मचारी होंगे, नौ वाटिका (वाड) द्वारा मैथुन विरमणरूप ब्रह्म की रक्षा करेंगे उत्तम-ममत्व रहित होंगे, वे-अकिञ्चन होंगे, धर्मोपकरण से अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से विहीन होंगे। जो आत्मा को कर्म के साथ बान्धता है. वह ग्रन्थ है, यह—ग्रन्थ द्रव्य-ग्रन्थ, और-भावग्रन्थ के भेद से दो प्रकार का है। हिरण्य-सुवर्ण आदि बाह्यग्रन्थ है, एवं-मिथ्यात्व आदि भावग्रन्थ है. इन दोनों प्रकार के ग्रन्थ से वे रहित होंगे। संसारप्रवाह जिनका नष्ट हो चुका है. ऐसे होंगे, निरुपलेप होंगे, कर्मबन्धन का हेतु जो रागादिक उपलेप हैं उससे रहित होंगे। इसी बात को सूत्रकार दृष्टान्तद्वारा पुष्ट करते

शयनासननिक्षेपादाऽऽनसंक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टा नियमः कायगुप्तिस्तु सऽपरा ॥२॥

આ પ્રમાણે તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ અનગાર આ પૂર્વોક્ત સમિતિઓનું તથા ગુપ્તિઓનું પાલન કરશે. તેમજ તેઓ ગુપ્ત થશે. અશુભયોગ નિગ્રહરૂપ ગુપ્તિથી યુક્ત બનશે. ગુપ્ત બ્રહ્મચારી થશે, નવ વાટિકાદ્વારા મૈથુન વિરમણરૂપ બ્રહ્મની રક્ષા કરશે ઉત્તમ મમત્વરહિત થશે, તે અકિંચન હશે. ધર્મોપકરણાતિરિક્ત વસ્તુઓથી રહિત થશે જે આત્માને કર્મની સાથે બાંધે છે તે ગ્રન્થ છે. આ ગ્રંથ દ્રવ્યગ્રંથ અને ભાવગ્રંથના રૂપમાં બે પ્રકારનો છે હિરણ્ય-સુવર્ણ વગેરે બાહ્ય ગ્રંથ છે અને મિથ્યાત્વ વગેરે ભાવગ્રંથ છે. આ બન્ને પ્રકારોના ગ્રંથોથી તે રહિત થશે જેમનો સંસારપ્રવાહ નાશ પામ્યો છે એવા તેઓ થશે. નિરૂપલેપ થશે. કર્મબંધનના હેતુરૂપ રાગાદિક ઉપલેપોથી તેઓ રહિત થશે એજ વાતને સૂત્રકાર દૃષ્ટાંત દ્વારા પુષ્ટ કરે છે કે

चेष्टानियमरूपा च २। तत्र परीषहोपसर्गादि समवेऽपि यत्कायोत्सर्गादि करणादिना कायस्य निश्चलताकरणम् सर्वयोगनिरोधावस्थायां वा सर्वथा यत् कायचेष्टानिरोधनं सा प्रथमा। गुरुमापृच्छय शरीरसंस्तारकभूम्यादिप्रतिलेखना प्रमार्जनादिसमयोक्तक्रियाकलापपुरस्सरं शयनासनादिर्विधेयम्, ततः शयनासन निक्षेपादानादिषु स्वच्छया चेष्टापरिहारेण नियता—शास्त्रनियमानुसारिणी या कायचेष्टा सा द्वितीयेति। उक्तं च—

"उपसर्गप्रसङ्गेऽपि कायोत्सर्गजुषो मुनेः।
स्थिरीभावः शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते। १॥
शयनाऽऽसननिक्षेपाऽऽदानसंक्रमणेषु च।
स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा। २। इति,

होती है। इनमें परीषह-और उपसर्ग के आने पर भी कायोत्सर्ग करणरूप क्रिया से शरीर को निश्चल कर देना होता है, अथवा-सर्वयोग निरोधावस्था में सर्वथा जो काय की चेष्टा का निरोध किया जाता है वह चेष्टा निवृत्तिरूप प्रथम कायगुप्ति है। गुरु को पूछ कर शरीर संस्तारक, भूमि आदि की प्रतिलेखना प्रमार्जना आदि के समय में उक्त क्रियाकलाप पुरस्सर जो—शयन आसन आदि करना होते हैं—सो उन शयनासनादिकों के निक्षेपण रखने में, एवं—आदान आदि कों में अपनी इच्छा से चेष्टा के परिहार से नियत(रखन में) अर्थात् गुरु को पूछकर के शयनादि करना—शास्त्रनियमानुसारिणी जो काय चेष्टा है वह—यथागमचेष्टा नियमनरूप द्वितीयकायगुप्ति है। २

उक्त भी है—"उपसर्गप्रसङ्गेऽपि" इत्यादि

अर्थात्—"उपसर्ग आने पर कायोत्सर्ग में मनको
स्थिर रखना यह कायगुप्ति है। तथा

આમાં પરીષહ અને ઉપસર્ગની સ્થિતિમાં પણ કાયોત્સર્ગ કરણરૂપ ક્રિયાથી શરીરને નિશ્ચલ કરવામાં આવે છે અથવા સર્વયોગ નિરોધાવસ્થામાં જે સર્વથા કાયચેષ્ટાનો નિરોધ કરવામાં આવે છે અથવા સર્વયોગ નિરોધાવસ્થામાં જે સર્વથા કાયચેષ્ટાનો નિરોધ કરવામાં આવે છે તે ચેષ્ટા નિવૃત્તિરૂપ પ્રથમ કાયગુપ્તિ છે ૧ ગુરુની આજ્ઞા મેળવીને શરીર સંસ્તારક ભૂમિ વગેરેની પ્રતિલેખના, પ્રમાર્જના વગેરેના સમયે ઉપર્યુક્ત ક્રિયાકલાપ પુરસ્સર જે શયન આસન વગેરે વિધેય હોય છે તો તે શય નાસનાદિકોના નિક્ષેપમાં અને આદાન આદિકોમાં પોતાની ઇચ્છાથી ચેષ્ટાના પરિહારથી નિયત શાસ્ત્રનિયમાનુસારિણી જે કાયચેષ્ટા છે તે દ્વિતીય યથાગમ ચેષ્ટા નિયમનરૂપ દ્વિતીય કાયગુપ્તિ છે ૨

કહ્યું છે—ઉપસર્ગ પ્રસઙ્ગેઽપિ કાયોત્સર્ગજુષોમુનેઃ।
સ્થિરીભાવઃ શરીરસ્ય કાયગુપ્તિર્નિગદ્યતે ॥૧॥

तथा—गुप्तः—अशुभयोगनिग्रहरूपगुप्त्या युक्तः, गुप्तब्रह्मचारी—गुप्तं नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभी रक्षितं ब्रह्म=मैथुनविरमणं चरति तच्छीलः, अममः—ममत्वरहितः, अकिञ्चनः—धर्मोपकरणातिरिक्तवस्तुरहितः, छिन्नग्रन्थः-ग्रथ्नाति—बध्नाति आत्मानं कर्मणेति ग्रन्थः, स द्विविधो द्रव्यभावभेदात् द्रव्यतो-हिरण्यादि, भावतो मिथ्यात्वादिः, स द्विविधो ग्रन्थश्छिन्नो येन स तथा, छिन्नस्रोताः—छिन्नसंसारप्रवाहः, निरुपलेपः—कर्मबन्धहेतुरुपलेपो रागादिस्तेन रहितः. निरुपलेपत्वमेव सदृष्टान्तमाह—कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः—मुक्तं—त्यक्तं तोयमिव तोयं संसारबन्ध-

---

शयनासन इत्यादि—शयन में, आसन में, लेने में रखने में, चलने में
काय को यतना पूर्वक रखना यह कायगुप्ति है

इस प्रकार से वे दृढप्रतिज्ञ अनगार इन पूर्वोक्त समितियों का तथा—गुप्तियों का पालन करनेवाले होंगे। तथा—वे गुप्त होंगे, अशुभ योगनिग्रहरूप गुप्ति से युक्त बनेंगे, गुप्तब्रह्मचारी होंगे, नौ वाटिका (वाड) द्वारा मैथुन विरमणरूप ब्रह्म की रक्षा करेंगे उत्तम-ममत्व रहित होंगे, वे-अकिञ्चन होंगे, धर्मोपकरण से अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से विहीन होंगे। जो आत्मा को कर्म के साथ बान्धता है. वह ग्रन्थ है, यह—ग्रन्थ द्रव्य-ग्रन्थ, और-भावग्रन्थ के भेद से दो प्रकार का है। हिरण्य-सुवर्ण आदि बाह्यग्रन्थ है, एवं-मिथ्यात्व आदि भावग्रन्थ है. इन दोनों प्रकार के ग्रन्थ से वे रहित होंगे। संसारप्रवाह जिनका नष्ट हो चुका है. ऐसे होंगे, निरुपलेप होंगे, कर्मबन्धन का हेतु जो रागादिक उपलेप हैं उससे रहित होंगे। इसी बात को सूत्रकार दृष्टान्तद्वारा पुष्ट करते

शयनासननिक्षेपादाऽऽनसंक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टा नियमः कायगुप्तिस्तु साऽपरा ॥२॥

આ પ્રમાણે તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ અનગાર આ પૂર્વોકત સમિતિઓના તથા ગુપ્તિઓનું પાલન કરશે. તેમજ તેઓ ગુપ્ત થશે. અશુભયોગ નિગ્રહરૂપ ગુપ્તિથી યુકત બનશે. ગુપ્ત બ્રહ્મચારી થશે, નવ વાટિકાદ્વારા મૈથુન વિરમણરૂપ બ્રહ્મની રક્ષા કરશે ઉત્તમ મમત્વરહિત થશે, તે અકિંચન હશે. ધર્મોપકરણાતિરિકત વસ્તુઓથી રહિત થશે જે આત્માને કર્મની સાથે બાંધે છે તે ગ્રન્થ છે આ ગ્રંથ દ્રવ્યગ્રંથ અને ભાવગ્રંથના રૂપમાં બે પ્રકારનો છે હિરણ્ય-સુવર્ણ વગેરે બાહ્ય ગ્રંથ છે અને મિથ્યાત્વ વગેરે ભાવગ્રંથ છે. આ બન્ને પ્રકારોના ગ્રંથોથી તે રહિત થશે જેમનો સંસારપ્રવાહ નાશ પામ્યો છે એવા તેઓ થશે નિરૂપલેપ થશે કર્મબંધનના હેતુરૂપ રાગાદિક ઉપલેપોથી તેઓ રહિત થશે એજ વાતને સૂત્રકાર દૃષ્ટાંત દ્વારા પુષ્ટ કરે છે કે

चेष्टानियमरूपा च । १ । तत्र परीषहोपसर्गादि समवेऽपि यत्कायोत्सर्गादि करणान्निना कायस्य निश्चलताकरणम् सर्वयोगनिरोधावस्थायां वा सर्वथा यत् कायचेष्टानिरोधन सा प्रथमा । गुरुमापृच्छय शरीरसंस्तारकभूम्यादिप्रतिलेखना प्रमार्जनादिसमयोक्तक्रियाकलापपुरस्सरशयनासनादिविषयम्, ततः शयनासन निक्षेपादानादिषु स्वेच्छया चेष्टापरिहारेण नियता-शास्त्रनियमानुसारिणी या कायचेष्टा सा द्वितीयेति । उक्त च-

"उपसर्गप्रसक्तेऽपि कायोत्सर्गजुषो मुनेः ।
स्थिरीभावः शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते । १ ॥
शयनाऽऽसननिक्षेपाऽऽदानसंक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा । २ । इति,

होती है । इसमें परीषह-और उपसर्ग के आने पर भी कायोत्सर्गकरणरूप क्रिया से शरीर को निश्चल कर देना होता है, अथवा-सर्वयोग निरोधावस्था में सर्वथा जो काय की चेष्टा का निरोध किया जाता है वह चेष्टा निवृत्तिरूप प्रथम कायगुप्ति है । गुरु को पूछ कर शरीर संस्तारक, भूमि आदि की प्रतिलेखना प्रमार्जना आदि के समय में उक्त क्रियाकलाप पुरस्सर जो-शयन आसन आदि करना होते हैं-सो उन शयनासनादिकों के निक्षेपन रखने में, एवं-आदान आदि करने में अपनी इच्छा से चेष्टा के परिहार से नियत(रखने में) अर्थात् गुरु को पूछकर के शयनआदि करना-शास्त्रनियमानुसारिणी जो काय चेष्टा है वह-यथागमचेष्टा नियमनरूप द्वितीयकायगुप्ति है । २
उक्त भी है-"उपसर्गप्रसक्तेऽपि" इत्यादि

अर्थात्-"उपसर्ग आने पर कायोत्सर्ग में मनको
स्थिर रखना यह कायगुप्ति है । तथा

આમાં પરીષહ અને ઉપસર્ગની સ્થિતિમાં પણ કાયોત્સર્ગકરણરૂપ ક્રિયાથી શરીરને નિશ્ચલ કરવામાં આવે છે અથવા સર્વયોગ નિરોધાવસ્થામાં જે સર્વથા કાયચેષ્ટાનો નિરોધ કરવામાં આવે છે અથવા સર્વયોગ નિરોધાવસ્થામાં જે સર્વથા કાયચેષ્ટાનો નિરોધ કરવામાં આવે છે તે ચેષ્ટા નિવૃત્તિરૂપ પ્રથમ કાયગુપ્તિ છે ૧. ગુરુની આજ્ઞા મેળવીને શરીર સંસ્તારક ભૂમિ વગેરેની પ્રતિલેખના, પ્રમાર્જના વગેરેના સમયે ઉપર્યુક્ત ક્રિયાકલાપ પુરસ્સર જે શયન આસન વગેરે વિષય હોય છે તો તે શયનાસનાદિકના નિક્ષેપમાં અને આદાન આદિકોમાં પોતાની ઇચ્છાથી ચેષ્ટાના પરિહારથી નિયતા-શાસ્ત્રનિયમાનુસારિણી જે કાયચેષ્ટા છે તે દ્વિતીય યથાગમ ચેષ્ટા નિયમનરૂપ દ્વિતીય કાયગુપ્તિ છે, ૨

કહ્યુ છે-ઉપસર્ગ પ્રસક્તેઽપિ કાયોત્સર્ગજુષોમુનેઃ ।
સ્થિરીભાવઃ શરીરસ્ય કાયગુપ્તિર્નિગદ્યતે ॥૧॥

तथा—गुप्तः-अशुभयोगनिग्रहरूपगुप्त्या युक्तः, गुप्तब्रह्मचारी—गुप्तं नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभी रक्षितं ब्रह्म=मैथुनविरमणं चरति तच्छीलः, अममः—ममत्वरहितः, अकिञ्चनः—धर्मोपकरणातिरिक्तवस्तुरहितः, छिन्नग्रन्थः-ग्रग्नाति—बध्नाति आत्मानं कर्मणेति ग्रन्थः, स द्विविधो द्रव्यभावभेदात् द्रव्यतो-हिरण्यादि, भावतो मिथ्यात्वादिः, स द्विविधो ग्रन्थश्छिन्नो येन स तथा, छिन्नस्रोताः—छिन्नसंसारप्रवाहः, निरुपलेपः—कर्मबन्धहेतुरुपलेपो रागादिस्तेन रहितः, निरुपलेपत्वमेव सदृष्टान्तमाह—कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः—मुक्त—त्यक्त तोयमिव तोयं संसारबन्ध-

---

शयनासन इत्यादि—शयन में, आसन में, लेने में रखने में, चलने में
काय को यतना पूर्वक रखना यह कायगुप्ति है

इस प्रकार से वे दृढप्रतिज्ञ अनगार इन पूर्वोक्त समितियों का तथा—गुप्तियों का पालन करनेवाले होंगे। तथा—वे गुप्त होंगे, अशुभ योगनिग्रहरूप गुप्ति से युक्त बनेंगे, गुप्तब्रह्मचारी होंगे, नौ वाटिका (वाड) द्वारा मैथुन विरमणरूप ब्रह्म की रक्षा करेंगे उत्तम-ममत्व रहित होंगे, वे-अकिञ्चन होंगे, धर्मोपकरण से अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से विहीन होंगे। जो आत्मा को कर्म के साथ बान्धता है. वह ग्रन्थ है, यह—ग्रन्थ द्रव्य-ग्रन्थ, और-भावग्रन्थ के भेद से दो प्रकार का है। हिरण्य-सुवर्ण आदि बाह्यग्रन्थ है, एवं-मिथ्यात्व आदि भावग्रन्थ है. इन दोनों प्रकार के ग्रन्थ से वे रहित होंगे। संसारप्रवाह जिनका नष्ट हो चुका है. ऐसे होंगे, निरुपलेप होंगे, कर्मबन्धन का हेतु जो रागादिक उपलेप हैं उससे रहित होंगे। इसी बात को सूत्रकार दृष्टान्तद्वारा पुष्ट करते

शयनासननिक्षेपादाऽऽनसंक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टा नियमः कायगुप्तिस्तु साऽपरा ॥२॥

આ પ્રમાણે તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ અનગાર આ પૂર્વોકત સમિતિઓનું તથા ગુપ્તિઓનું પાલન કરશે. તેમજ તેઓ ગુપ્ત થશે. અશુભયોગ નિગ્રહરૂપ ગુપ્તિથી યુકત બનશે. ગુપ્ત બ્રહ્મચારી થશે, નવ વાટિકાદ્વારા મૈથુન વિરમણરૂપ બ્રહ્મની રક્ષા કરશે ઉત્તમ મમત્વરહિત થશે, તે અકિંચન હશે. ધર્મોપકરણાતિરિકત વસ્તુઓથી રહિત થશે. જે આત્માને કર્મની સાથે બાંધે છે તે ગ્રન્થ છે. આ ગ્રંથ દ્રવ્યગ્રંથ અને ભાવગ્રંથના રૂપમાં બે પ્રકારનો છે. હિરણ્ય–સુવર્ણ વગેરે બાહ્ય ગ્રંથ છે અને મિથ્યાત્વ વગેરે ભાવગ્રંથ છે. આ બન્ને પ્રકારોના ગ્રંથોથી તે રહિત થશે. જેમનો સંસારપ્રવાહ નાશ પામ્યો છે એવા તેઓ થશે. નિરૂપલેપ થશે. કર્મબંધનના હેતુરૂપ રાગાદિક ઉપલેપોથી તેઓ રહિત થશે એજ વાતને સૂત્રકાર દૃષ્ટાંત દ્વારા ...

द्वतुत्वात् स्नहा यन स तथा। यथा-कांस्यपात्र्यां पतितमपि जल लिप्त न भवति तथा ससारब भहेतुस्वस्मिन्नुपलिप्ता न भविष्यती यथैः, शङ्ख इव निरञ्जन – अञ्जनमिवाञ्जन-द्वेषादिक तस्माभिर्गत –तद्रहित, यथा–शङ्खे किमपि कज्जलादिद्रव्य स्थितिं न लभत तथैव तस्मिन्ननगारं द्वेषादिक न यथा यतीयर्थे, जीव इ। अप्रतिहतगतिः–जीवो यथा अव्याहतगत्या सर्वत्र याति, तथाऽसौ देशनगरादिषु अप्रतिब घविहारित्वेन वादादिषु कुतीर्थिकमतनिराकरणसामर्थ्यातत्वेन च अस्खलितगतिर्भविष्यतीति। जात्यकनकमिव जातरूपः–तप सयमादिसमुद्भूतनैर्मल्यः यथा शोधित सुवर्ण निर्मल भवति तथैवासौ रागादिरहितत्वेन निर्मलो भविष्यतीति आदर्शफलक इव प्रकटभाव–आदर्शफलका यथा प्रतिबिम्बितान् मुखाद्यवयवान् यथाऽवस्थित प्रकटी करोति, तथा तत्कुलघमदेश-

है– 'कांस्यपात्रीव मुक्ततोय –'' कांस क पात्र म पड़ा हुआ पानी जिस प्रकार पात्र में लिप्त नहीं होता ह–उसी प्रकार से ससार बन्धन का हेतु राग–द्वेष इनमें–उपलिप्त नहीं होंगे। शङ्ख की तरह वे निरञ्जन होंगे, जैसे–शङ्खमें कज्जलादि द्रव्य ठहर नहीं सकता है, उसी प्रकार स इनमें राग द्वेषादिक नहीं ठहरेंगे जीव की तरह व अप्रतिहतगतिवाले होंगे, जीव जिस प्रकार अपनी अव्याहतगतिद्वारा सर्वत्र चला जाता है, उसी प्रकार से-देश नगरादिकों में अप्रतिबन्धविहारी होने से, एव-वादादिकों में कुतीर्थिक मत निराकरण करने की सामर्थ्य से युक्त होने से अस्खलित गतिवाले होंगे। वे जातिमान् कनक क प्रकार होंगे, जिस प्रकार जात्यकनक–श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मल होता है–उसी प्रकार से ये तपः सयमादि से समुत्पन्न निर्मलतावाले होंगे,। आदर्श–दर्पण जिस प्रकार अपने में प्रतिबिम्बित हुवे मुखादि अवयवों को यथाऽवस्थित प्रकट करता

"कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः" कांसाना पात्रमां पडेलु पाणी जेम तेमां लिप्त थतु नथी. तेमज ससार बधन हेतु रागद्वेषमां तेओ उपलिप्त थता नथी शखनी जेम तेओ निरजन थशे जेम शखमां कज्जल वगेरे द्रव्यो स्थिर थतां नथी. तेमज तेओमां राग द्वेषादिक स्थिर थशे नहि जीवनी जेम तेओ अप्रतिहत गतिवाळा थशे. जीव जेम पोतानी अव्याहत गतिद्वारा सर्वत्र गतिशील होय छे तेमज देशनगरादिकोमां अप्रतिबध विहारी होवाथी अने वादादिकोमा कुतीर्थिकमत निराकरणमा सामर्थ्ययुक्त होवाथी तेओ अस्खलित गतिवाळा थशे. तेओ जात्यकनकनी जेम थशे. जेम जात्यकनक–श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मळ होय छे, तेम तेओ तप सयम वगेरेथी समुत्पन्न निर्मलतायुक्त थशे आदर्श–दर्पण जेम स्वप्रतिबिंबित मुखादि अवयवो ते यथावस्थित प्रकट करे छे तेम तेओमांनी धर्मदेशनाथी मद्धर्मचिरुप दर्पणमां जीवाजीवादि

नया जनानां चित्तदर्पणे जीवाजीवादिसकलपदार्थाः प्रकाशिष्यन्ते, इत्यर्थः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः—कूर्मः-कच्छपः. यथा कूर्मो भयकारणे समुपागते संवृतसर्वेन्द्रियो भवति, तथैवासौ संसारभ्रमणभयाद् विषयकषायसंरक्षितसकलेन्द्रियो भविष्यतीति। पुष्करपत्रमिव निरुपलेपः—यथा कमलपत्रं जलसंयोगेऽपि जलेन लिप्तं न भवति, तथैवासौ जलतुल्यस्वजनविषये वसन्नपि तत्सम्बन्धरहितो भविष्यतीति, गगनमिव निरालम्बनः—यथाऽऽकाशो निरवलम्बस्तिष्ठति तथैवासौ कुलग्रामनगराद्यालम्बनवर्जितो भविष्यतीति, अनिल इव निरालयः पवन-इव गृहरहितः, अप्रतिबन्धविहारित्वात्, चन्द्र इव सौम्यलेश्यः—अनुपतापपरिणामसम्पन्नः, सूर इव दीप्ततेजाः द्रव्यतः शरीरदीप्त्या, भावतस्तपःप्रभृतिना देदीप्यमानः, सागर इव गम्भीरः—

है. उसी प्रकार उनकी धर्मदेशना से मनुष्यों के चित्तरूप दर्पण में जीव जीवादिरूप सकलपदार्थ प्रकाशित होंगे,। कूर्म—कच्छप जिस प्रकार भयकारणों के उपस्थित होने पर अपनी इन्द्रियों को गुप्त कर लेता है, उसी प्रकार से यह भी संसारपरिभ्रमणभयसे—विषय तापों से अपनी इन्द्रियों की रक्षा करने वाले होंगे.। जैसे—कमलपत्र जल के संयोग में भी उस से लिप्त नहीं होता है.उसी प्रकार से ये जल तुल्य स्वजनों के वीच में रहते हुवे भी उनके विषय में सम्बन्ध विहीन होंगे.। गगन की तरह ये निरालम्ब होंगे.। अनिल—वायु की तरह ये निरालय होंगे, अनिल को जैसे कोई गृह नहीं होता है, उसी प्रकार से अप्रतिबन्धविहारी होंगे.। चन्द्र के समान ये सौम्यलेश्यावाले होंगे सूर्य की तरह दीप्ततेज होंगे तेज द्रव्य—और भाव की अपेक्षा दो प्रकार का कहा गया है. इनमें शरीरादि की दीप्तिरूप द्रव्य तेज. और तप-आदि से होनेवाला तेज भावतेज है.। सागर की तरह ये गम्भीर होंगे, हर्ष—शोक

रूप सकल पदार्थ प्रकाशित थशे कूर्म-कच्छप जेम भय उपस्थित थाय त्यारे पोताना अंगोने संकोची ले छे तेम तेओ पण संसार-परिभ्रमण भयथी विषयतापोथी पोतानी इन्द्रियोनी रक्षा करनार थशे जेम कमलपत्र पाणीनी संयोगावस्थामा पण तेथी लिप्त थतु नथी तेम तेओ पाणीनी जेम स्वजनोनी वच्चे रहेवा छतांये तेमना विषयमा संबंध विहीन थशे गगननी जेम तेओ निरालंब थशे आकाश जेम अवलंबन वगर छे तेम तेओ कुल, ग्राम नगर वगेरे अवलंबथी रहित थशे. अनिलवायुनी जेम तेओ निरालय थशे अनिलने जेम कोई घर नथी तेम तेओ पण अप्रतिबंध विहारी थशे चन्द्रनी जेम एओ सौम्य लेश्यायुकत थशे सूर्यनी जेम तेओ दीप्त तेजवाळा थशे तेज द्रव्य अने भावनी अपेक्षाये बे प्रकारनु छे आमा शरीरादिनी दीप्तिरूप द्रव्यतेज अने तप प्रभृतिथी जायमान तेज भावतेज छे

हेतुत्वात् स्नेहा यन स तथा। यथा-कांस्यपात्र्यां पतितमपि जलं लिप्तं न भवति तथा संसारबन्धहेतुस्तस्मिन्नुपलिप्ता न भविष्यन्ती यूयं, शङ्ख इव निरञ्जनः— अञ्जनमिवाञ्जनं-द्वेषादिकं तस्मान्निर्गतः —तद्रहितः, यथा—शङ्खे किमपि कज्जला दिद्रव्यं स्थितिं न लभते तथैव तस्मिन्ननगारे द्वेषादिकं न स्थास्यति यूयं, जीव इव अप्रतिहतगतिः —जीवो यथा अव्याहतगत्या सर्वत्र याति, तथाऽसौ देशनगरादिषु अप्रतिबन्धविहारित्वेन वादादिषु कुतीर्थिकमतनिराकरणसामर्थ्या यत्तत्वेन च अस्खलितगतिर्भविष्यतीति। जात्यकनकमिव जातरूपः —तप संयमादि समुद्भूतनैर्मल्य यथा शोधितं सुवर्णं निर्मलं भवति तथैवासौ रागादिरहितत्वेन निर्मलो भविष्यतीति आदर्शफलक इव प्रकटभावः—आदर्शफलकं यथा प्रतिबिम्बितान् मुखाद्यवयवान् यथाऽवस्थितं प्रकटीकरोति, तथा तत्तद्धर्मस्व-

---

है— 'कांस्यपात्रीव मुक्ततोय —'' कांसे के पात्र में पड़ा हुआ पानी जिस प्रकार पात्र में लिप्त नहीं होता है—उसी प्रकार से संसार बन्धन का हेतु राग—द्वेष इनमें—उपलिप्त नहीं होंगे। शङ्ख की तरह वे निरञ्जन होंगे, जैसे—शङ्ख में कज्जलादि द्रव्य ठहर नहीं सकता है, उसी प्रकार से इनमें राग द्वेषादिक नहीं ठहरेंगे जीव की तरह ये अप्रतिहतगतिवाले होंगे, जीव जिस प्रकार अपनी अव्याहतगतिद्वारा सर्वत्र चला जाता है, उसी प्रकार से—देश नगरादिकों में अप्रतिबन्धविहारी होने से, एवं-वादादिकों में कुतीर्थिक मत निराकरण करने की सामर्थ्य से युक्त होने से अस्खलित गतिवाले होंगे। ये जातिमान् कनक के प्रकार होंगे, जिस प्रकार जात्यकनक-श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मल होता है—उसी प्रकार से ये तप संयमादि से समुत्पन्न निर्मलतावाले होंगे,। आदर्श—दर्पण जिस प्रकार अपने में प्रतिबिम्बित हुये मुखादि अवयवों को यथाऽवस्थित प्रकट करता

''कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः'' કાંસાના પાત્રમાં પડેલું પાણી જેમ તેમાં લિપ્ત થતું નથી. તેમજ સંસાર બંધન હેતુ રાગદ્વેષમાં તેઓ ઉપલિપ્ત થતા નથી શંખની જેમ તેઓ નિરંજન થશે જેમ શંખમાં અંજન વગેરે દ્રવ્યો સ્થિર થતાં નથી. તેમજ તેઓમાં રાગ દ્વેષાદિક સ્થિર થશે નહિ. જીવની જેમ તેઓ અપ્રતિહત ગતિવાળા થશે. જીવ જેમ પોતાની અવ્યાહત ગતિદ્વારા સર્વત્ર ગતિશીલ હોય છે તેમજ દેશનગરાદિકોમાં અ-પ્રતિબંધ વિહારી હોવાથી અને વાદાદિકોમાં કુતીર્થિકમત નિરાકરણમાં સામર્થ્યયુક્ત હોવાથી તેઓ અસ્ખલિત ગતિવાળા થશે. તેઓ જાત્યકનકની જેમ થશે. જેમ જાત્ય કનક-શ્રેષ્ઠ સુવર્ણ નિર્મળ હોય છે, તેમ તેઓ તપ સંયમ વગેરેથી સમુત્પન્ન નિર્મલતાયુક્ત થશે. આદર્શ—દર્પણ જેમ સ્વપ્રતિબિંબિત મુખાદિ અવયવો તે યથાવસ્થિત પ્રકટ કરે છે તેમ તેઓશ્રીની ધર્મદેશનાથી મનુષ્યચિત્તરૂપ દર્પણમાં જીવાજીવાદિ

नया जनानां चित्तदर्पणे जीवाजीवादिसकलपदार्थाः प्रकाशिष्यन्ते, इत्यर्थः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः—कूर्मः-कच्छपः, यथा कूर्मो भयकारणे समुपागते संवृतसर्वेन्द्रियो भवति, तथैवाऽसौ संसारभ्रमणभयाद् विषयकषायसंरक्षितसकलेन्द्रियो भविष्यतीति। पुष्करपत्रमिव निरुपलेपः—यथा कमलपत्रं जलसंयोगेऽपि जलेन लिप्तं न भवति, तथैवासौ जलतुल्यस्वजनविषये वसन्नपि तत्सम्बन्धरहितो भविष्यतीति, गगनमिव निरालम्बनः—यथाऽऽकाशो निरवलम्बस्तिष्ठति तथैवासौ कुलग्रामनगराद्यालम्बन-वर्जितो भविष्यतीति, अनिल इव निरालयः पवन-इव गृहरहितः, अप्रतिबन्ध-विहारित्वात, चन्द्र इव सौम्यलेश्यः—अनुपतापपरिणामसम्पन्नः, सूर इव दीप्ततेजाः द्रव्यतः शरीरदीप्त्या, भावतस्तपःप्रभृतिना देदीप्यमानः, सागर इव गम्भीरः—

है. उसी प्रकार उनकी धर्मदेशना से मनुष्यों के चित्तरूप दर्पण में जीवाजीवादिरूप सकलपदार्थ प्रकाशित होंगे,। कूर्म—कच्छप जिस प्रकार भयकारणों के उपस्थित होने पर अपनी इन्द्रियों को गुप्त कर लेता है, उसी प्रकार से यह भी संसारपरिभ्रमणभयसे—विषय तापों से अपनी इन्द्रियों की रक्षा करने वाले होंगे.। जैसे—कमलपत्र जल के संयोग में भी उस से लिप्त नहीं होता है.उसी प्रकार से ये जल तुल्य स्वजनों के बीच में रहते हुवे भी उनके विषय में सम्बन्ध विहीन होंगे.। गगन की तरह ये निरालम्ब होंगे.। अनिल—वायु की तरह ये निरालय होंगे, अनिल को जैसे कोई गृह नहीं होता है, उसी प्रकार से अप्रतिबन्धविहारी होंगे.। चन्द्र के समान ये सौम्यलेश्यावाले होंगे सूर्य की तरह दीप्ततेज होंगे तेज द्रव्य—और भाव की अपेक्षा दो प्रकार का कहा गया है. इनमें शरीरादि की दीप्तिरूप द्रव्य तेज. और तप-आदि से होनेवाला तेज भावतेज है.। सागर की तरह ये गम्भीर होंगे, हर्ष—शोक

રૂપ સકલ પદાર્થ પ્રકાશિત થશે. કૂર્મ—કચ્છપ જેમ ભય ઉપસ્થિત થાય ત્યારે પોતાના અંગોને સંકોચી લે છે તેમ તેઓ પણ સંસાર—પરિભ્રમણ ભયથી વિષયતાપોથી પોતાની ઇન્દ્રિયોની રક્ષા કરનાર થશે જેમ કમલપત્ર પાણીની સંયોગાવસ્થામાં પણ તેથી લિપ્ત થતું નથી તેમ તેઓ પાણીની જેમ સ્વજનોની વચ્ચે રહેવા છતાંએ તેમના વિષયમાં સંબંધ વિહીન થશે ગગનની જેમ તેઓ નિરાલંબ થશે આકાશ જેમ અવલંબન વગર છે તેમ તેઓ કુલ, ગ્રામ નગર વગેરે અવલંબથી રહિત થશે. અનિલવાયુની જેમ તેઓ નિરાલય થશે અનિલને જેમ કોઈ ઘર નથી તેમ તેઓ પણ અપ્રતિબંધ વિહારી થશે ચન્દ્રની જેમ એઓ સૌમ્ય લેશ્યાયુક્ત થશે સૂર્યની જેમ તેઓ દીપ્ત તેજવાળા થશે તેજ દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ બે પ્રકારનું છે આમાં શરીરાદિની દીપ્તિરૂપ દ્રવ્યતેજ અને તપ પ્રભૃતિથી જાયમાન તેજ ભાવતેજ છે.

हेतुत्वात् स्नेहो येन स तथा। यथा-कांस्यपात्र्यां पतितमपि जलं लिप्तं न भवति तथा संसारबन्धहेतुस्तस्मिन्नुपलिप्तो न भविष्यतीत्यर्थः, शङ्ख इव निरञ्जन - अञ्जनमिवाञ्जनं-द्वेषादिकं तस्मान्निर्गतं -तद्रहितं, यथा-शङ्खे किमपि कज्जला दिद्रव्यं स्थितिं न लभते तथैव तस्मिन्ननगारे द्वेषादिकं न स्थास्यतीत्यर्थः, जीव इव अप्रतिहतगतिः -जीवो यथा अप्रतिहतगत्या सर्वत्र याति, तथाऽसौ देशनगरादिषु अप्रतिबन्धविहारित्वेन वादादिषु कुतीर्थिकमतनिराकरणसामर्थ्यो पेतत्वेन च अस्खलितगतिर्भविष्यतीति। जात्यकनकमिव जातरूपः-तपःसंयमादि समुद्भूतनैर्मल्यः यथा शोधितं सुवर्णं निर्मलं भवति तथैवाऽसौ रागादिरहितत्वेन निर्मलो भविष्यतीति आदर्शफलक इव प्रकटभावः-आदर्शफलकः यथा प्रतिबिम्बितान् मुखाद्यवयवान् यथाऽवस्थितं प्रकटी करोति, तथा तत्तत्वधर्मदश-

---

है- 'कांस्यपात्रीव मुक्ततोय -'' कांसे के पात्र में पड़ा हुआ पानी जिस प्रकार पात्र में लिप्त नहीं होता है-उसी प्रकार से संसार बन्धन का हेतु राग-द्वेष इनमें-उपलिप्त नहीं होंगे। शङ्ख की तरह वे निरञ्जन होंगे, जैसे-शङ्खमें कज्जलादि द्रव्य ठहर नहीं सकता है, उसी प्रकार से इनमें राग द्वेषादिक नहीं ठहरेंगे जीव की तरह ये अप्रतिहतगतिवाले होंगे, जीव जिस प्रकार अपनी अप्रति हतगतिद्वारा सर्वत्र चला जाता है, उसी प्रकार से-देश नगरादिकों में अप्रति बन्धविहारी होने से, एवं-वादादिकों में कुतीर्थिक मत निराकरण करने की सामर्थ्य से युक्त होने से अस्खलित गतिवाले होंगे। ये जातिमान् कनक के प्रकार होंगे, जिस प्रकार जात्यकनक-श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मल होता है-उसी प्रकार से ये तप संयमादि से समुत्पन्न निर्मलतावाले होंगे,। आदर्श-दर्पण जिस प्रकार अपने में प्रतिबिम्बित हुवे मुखादि अवयवों को यथाऽवस्थित प्रकट करता

"कांस्यपात्रीव मुक्ततोय" કાંસાના પાત્રમાં પડેલું પાણી જેમ તેમાં લિપ્ત થતું નથી. તેમજ સંસાર બંધન હેતુ રાગદ્વેષમાં તેઓ ઉપલિપ્ત થતા નથી શંખની જેમ તેઓ નિરંજન થશે જેમ શંખમાં કાજલ વગેરે દ્રવ્યો સ્થિર થતાં નથી. તેમજ તેઓમાં રાગ દ્વેષાદિ સ્થિર થશે નહિ જીવની જેમ તેઓ અપ્રતિહત ગતિવાળા થશે. જીવ જેમ પોતાની અપ્રતિહત ગતિદ્વારા સર્વત્ર ગતિશીલ હોય છે તેમજ દેશનગરાદિકોમાં અ પ્રતિબંધ વિહારી હોવાથી અને વાદાદિકોમાં કુતીર્થિકમત નિરાકરણમાં સામર્થ્યયુક્ત હોવાથી તેઓ અસ્ખલિત ગતિવાળા થશે. તેઓ જાત્યકનકની જેમ થશે. જેમ જાત્ય કનક-શ્રેષ્ઠ સુવર્ણ નિર્મળ હોય છે, તેમ તેઓ તપ સંયમ વગેરેથી સમુત્પન્ન નિર્મળતાયુક્ત થશે આદર્શ-દર્પણ જેમ પ્રતિબિંબિત મુખાદિ અવયવો તે યથાવસ્થિત પ્રકટ કરે છે તેમ તેઓશ્રીની ધર્મદેશનાથી મતુષ્યજિનરૂપ દર્પણમાં જીવાજીવાદિ

अप्रमत्तः-तपःसंयमादिधर्मरक्षणे प्रमादरहितः । कुञ्जर इव शौण्डीरः-हस्तीव शूरः-कषायादिरिपुभञ्जनशीलः । वृषभ इव जातस्थामा-वृषभवत् संजातपराक्रमः। सिंह इव दुर्धर्षः-सिंहवत् परीषहादि मृगैर्दुरतिक्रमः । वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविषहः-वसुन्धरा-पृथ्वी यथा सर्वं सह्यमसह्यं वा स्पर्शं सहते तथैवाऽयम् अनुकूलप्रतिकूलपरीषहोपसर्गसहनशीलः । तथा-सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन्-यथा घृताद्याहुतिभिरग्निः प्रदीप्तो भवति तथैवाऽयमपि तपःसंयमतेजसा ज्वलन्-दीप्यमानोऽनगारो भविष्यतीति पूर्वेण सम्बन्ध, तस्य-पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टस्य खलु भगवतोऽनगारस्य अनुत्तरेण-सर्वोत्कृष्टेन ज्ञानेन, एवम्-अनेन प्रकारेण-अनुत्तरत्वविशिष्टेन दर्शनेन 'अनुत्तर' शब्दस्य चारित्रादौ प्रत्येकत्र सम्बन्धः, ततश्च अनु-

---

प्रकार ये भी तपसंयम आदिके संरक्षण में प्रमाद रहित होंगे । कुञ्जर-हाथी के समान ये शूर होंगे, अर्थात्-कषाय आदि रिपुपुञ्जो का भञ्जन शील होंगे। वृषभ की तरह ये जात स्थामा होंगे-उत्पन्न पराक्रमवाले होंगे, सिंह की तरह दुर्धर्ष परीषहादिमृगो द्वारा दुर्धर्ष होंगे, पृथवि की तरह सर्व स्पर्श सह होंगे-पृथ्वी जिस प्रकार सर्वसहा एवं-असह्य स्पर्श को भी सहन करती है-उसी प्रकार से अनुकूल-प्रतिकूल परीषह एवं-उपसर्ग का ये सहन कर्त्ता होंगे । सुहुत हुताशन की तरह ये तेज से सदा जाज्वल्यमान रहेंगे. । जिस प्रकार घृतादिक आहुति से अग्नि अधिकाधिक प्रज्वलित हो जाती है, उसी प्रकार ये भी तप-संयम के तेज से देदीप्यमान अनगार होंगे, इस प्रकार से इन पूर्वोक्त विशेषणों से विशिष्ट हुवे उन अनगार भगवान् दृढप्रतिज्ञ के सर्वोत्कृष्ट ज्ञानसे-सर्वोत्कृष्ट दर्शन से सर्वोत्कृष्ट चारित्र से-सर्वोत्कृष्ट

આ અપ્રમત્ત થઈને વિચરણશીલ હોય છે. તેમ તેઓ પણ તપ સંયમ વગેરેનું રક્ષણ કરવામા પ્રમાદ રહિત થશે, કુંજર-હાથી ની જેમ તેઓ શૂર હશે. એટલે કે કષાય વગેરે રિપુઓને નષ્ટ કરવામા સમર્થ થશે. વૃષભની જેમ તેઓ જાતસ્થામા થશે ઉત્પન્ન પરાક્રમવાળા થશે. સિંહની જેમ દુર્ધર્ષ-પરીષહાદિરૂપ મૃગો વડે દુર્ધર્ષ હશે વસુંધરાની જેમ સર્વસ્પર્શ સહ થશે, પૃથ્વી જેમ સર્વે સહ-અસહ્ય સ્પર્શને પણ સહન કરે છે તેમ અનુકૂલ-પ્રતિકૂલ પરીષહ અને ઉપસર્ગને તેઓ સહન કરતા થશે સુહુત હુતાશનની જેમ તેઓ તેજથી સદા જાજવલ્યમાન રહેશે જેમ ઘૃત વગેરેની આહુતિથી અગ્નિ વધારે અને વધારે પ્રજવલિત થઇ જાય છે તેમ તેઓ પણ તપ સંયમના તેજથી દૈદીપ્યમાન અનગાર થશે આ પ્રમાણે આ પૂર્વોક્ત વિશેષણોથી વિશિષ્ટ થયેલા તે ભગવાન અનગાર દૃઢપ્રતિજ્ઞ સર્વોત્કૃષ્ટ જ્ઞાનથી, સર્વોત્કૃષ્ટ દર્શનથી, સર્વોત્કૃષ્ટ ચારિત્રથી સર્વોત્કૃષ્ટ

हर्षशोकादिकारणसंयोगेऽपि निर्विकारचित्तः, विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः- पक्षिवत्सङ्गरहितः, परिवारपरित्यागात् नियतवासरहितत्वाच्च, मन्दर इव अप्रकम्पः-मेरुवत् परिषहोपसर्गपवनैरविचलितः, शारदसलिलमिव शुद्धहृदय -यथा शरदृतौ जलं निर्मलं भवति तथा रागद्वेषरहितत्वान्निर्मलचित्तो भविष्यतीति, खड्गविषाणमिव एकजातः खड्गी-आरण्यजीवः तस्य विषाण-शृङ्गं तद्वत् एकजातः-एकाकी रागादिसहायरहितः । तथा-भारण्डपक्षीव-भारण्डश्चासौ पक्षी च भारण्डपक्षी, अयं द्विजीवकस्त्रिचरणश्च द्वाभ्यां ग्रीवाभ्यां द्वाभ्यां मुखाभ्यां च युक्तः, द्वयोर्जीवयोरेकमेवोदरं भवति, स चाप्रमत्त एव विहरति, तद्वत्

आदि कारणों के मिलने पर भी इनके चित्त में कोई क्षोभ उत्पन्न नहीं हो सकेगा निर्विकार चित्तवाले होंगे। पक्षी की तरह सर्वतः विप्रमुक्त होंगे, सर्वसङ्ग से रहित रहेंगे, परिवार आदि के परित्याग से और-नियत आवास से रहित होने से इनका ममत्वरूप सम्बन्ध किसी के साथ नहीं रहेगा । मेरु-मन्दर की तरह ये अप्रकम्प होंगे, अर्थात् परीषह उपसर्गरूप पवन इन्हें विचलित नहीं कर सकेगा, शारद सलिल की तरह शुद्ध होंगे-जिस प्रकार शारदऋतु में जल निर्मल रहता है उसी प्रकार राग-द्वेष रहित से ये निर्मल चित्त रहेंगे खड्गी विषाण-गेंडोंकाशृङ्ग की समान ये एकजात होंगे रागादिरूप सहायकों से रहित होने के कारण एकाकी रहेंगे,। तथा-भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमत्त होंगे, भारण्डपक्षी दो जीववाला होता है, इसके चरण तीन होते हैं-दो ग्रीवाओं से-दो मुखों से यह युक्त होता है, इन दो जीवों का पेट एक होता है यह अप्रमत्त होकर विचरणशील होता है, इसी

સાગરની જેમ તેઓ ગંભીર થશે હર્ષ શોક વગેરે કારણો હોવા છતાં એ તેમના ચિત્તમાં કોઈપણ જાતનો વિકાર ઉત્પન્ન થશે નહિ. તેઓ નિર્વિકાર ચિત્તવાળા થશે, વિહગની જેમ તેઓ સર્વતઃ વિપ્રમુક્ત થશે. તેઓ સર્વસંગથી રહિત થશે. પરિવાર વગેરેના ત્યાગથી અને નિયત આવાસથી રહિત હોવાથી તેઓ મમત્વરૂપ સંબંધ કોઈની સાથે બાંધશે નહિ મેરૂ-મંદરની જેમ તેઓ અપ્રકંપ થશે. એટલે કે પરીષહ ઉપસર્ગ રૂપ પવન તેમને વિચલિત કરી શકશે નહિ શારદ સલીલની જેમ તેઓ શુદ્ધ થશે. જેમ શરદઋતુમાં પાણી નિર્મળ રહે છે તેમ તેઓ પણ રાગદ્વેષ રહિત હોવાથી નિર્મળ ચિત્તવાળા થશે ખડ્ગી વિષાણ-એ ગેંડાના શીંગડાની જેમ તેઓ એક જાત થશે. રાગાદિરૂપ સહાયકોથી રહિત હોવા બદલ એકાકી રહેશે. તેમજ ભારંડ પક્ષીની જેમ અપ્રમત્ત થશે, ભારંડપક્ષી બે જીવયુક્ત હોય છે. તેને ત્રણ પગ હોય છે બે ગ્રીવાઓ, બે મુખોથી તે યુક્ત હોય છે આ બન્ને જીવોનું પેટ એકજ હોય છે,

अप्रमत्तः-तपःसंयमादिधर्मरक्षणे प्रमादरहितः। कुञ्जर इव शौण्डीरः-हस्तीव शूरः-कषायादिरिपुभञ्जनशीलः। वृषभ इव जातस्थामा-वृषभवत् संजातपराक्रमः। सिंह इव दुर्धर्षः-सिंहवत् परीषहादि मृगैर्दुरतिक्रमः। वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविषहः-वसुन्धरा-पृथ्वी यथा सर्वं सह्यमसह्यं वा स्पर्शं सहते तथैवायम् अनुकूलप्रतिकूलपरीषहोपसर्गसहनशीलः। तथा-सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन्-यथा घृताद्याहुतिभिरग्निः प्रदीप्तो भवति तथैवायमपि तपःसंयमतेजसा ज्वलन्-दीप्यमानोऽनगारो भविष्यतीति पूर्वेण सम्बन्ध, तस्य-पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टस्य खलु भगवतोऽनगारस्य अनुत्तरेण-सर्वोत्कृष्टेन ज्ञानेन, एवम्-अनेन प्रकारेण-अनुत्तरत्वविशिष्टेन दर्शनेन 'अनुत्तर' शब्दस्य चारित्रादौ प्रत्येकत्र सम्बन्धः, ततश्च अनु-

---

प्रकार ये भी तपसंयम आदिके संरक्षण में प्रमाद रहित होंगे। कुञ्जर-हाथी के समान ये शूर होंगे, अर्थात्-कषाय आदि रिपुपुञ्जो का भञ्जन शील होंगे। वृषभ की तरह ये जात स्थामा होंगे-उत्पन्न पराक्रमवाले होंगे, सिंह की तरह दुर्धर्ष परीषहादिमृगो द्वारा दुर्धर्ष होंगे, पृथ्वि की तरह सर्व स्पर्श सह होंगे-पृथ्वी जिस प्रकार सर्वसहा एवं-असह्य स्पर्श को भी सहन करती है-उसी प्रकार से अनुकूल-प्रतिकूल परीषह एवं-उपसर्ग का ये सहन कर्त्ता होंगे। सुहुत हुताशन की तरह ये तेज से सदा जाज्वल्यमान रहेंगे.। जिस प्रकार घृतादिक आहुति से अग्नि अधिकाधिक प्रज्वलित हो जाती है. उसी प्रकार ये भी तप-संयम के तेज से देदीप्यमान अनगार होंगे, इस प्रकार से इन पूर्वोक्त विशेषणों से विशिष्ट हुवे उन अनगार भगवान् दृढप्रतिज्ञ के सर्वोत्कृष्ट ज्ञानसे-सर्वोत्कृष्ट दर्शन से सर्वोत्कृष्ट चारित्र से-सर्वोत्कृष्ट

આ અપ્રમત્ત થઈને વિચરણશીલ હોય છે તેમ તેઓ પણ તપ સંયમ વગેરેનું રક્ષણ કરવામા પ્રમાદ રહિત થશે, કુંજર-હાથી ની જેમ તેઓ શૂર હશે. એટલે કે કષાય વગેરે રિપુઓને નષ્ટ કરવામા સમર્થ થશે. વૃષભની જેમ તેઓ જાતસ્થામા થશે ઉત્પન્ન પરાક્રમવાળા થશે. સિંહની જેમ દુર્ધર્ષ-પરીષહાદિરૂપ મૃગો વડે દુર્ધર્ષ હશે વસુંધરાની જેમ સર્વસ્પર્શ સહ થશે, પૃથ્વી જેમ સર્વે સહ્ય-અસહ્ય સ્પર્શને પણ સહન કરે છે તેમ અનુકૂલ-પ્રતિકૂલ પરીષહ અને ઉપસર્ગને તેઓ સહન કરતા થશે સુહુત હુતાશનની જેમ તેઓ તેજથી સદા જાજવલ્યમાન રહેશે જેમ ઘૃત વગેરેની આહુતિથી અગ્નિ વધારે અને વધારે પ્રજ્વલિત થઈ જાય છે તેમ તેઓ પણ તપ સંયમના તેજથી દૈદીપ્યમાન અનગાર થશે આ પ્રમાણે આ પૂર્વોક્ત વિશેષણોથી વિશિષ્ટ થયેલા તે ભગવાન અનગાર દૃઢપ્રતિજ્ઞ સર્વોત્કૃષ્ટ જ્ઞાનથી, સર્વોત્કૃષ્ટ દર્શનથી, સર્વોત્કૃષ્ટ ચારિત્રથી તથા...

त्तरेण चारित्रेण अनुत्तरेण आलयेन–स्त्रीपशुपण्डकादिरहितवसतिसेवनेन, अनुत्तरेण विहारेण–विचरणेन, अनुत्तरेण आर्जवेन–सारल्येन, अनुत्तरेण मार्दवेन–मृदुत्वेन, अनुत्तरेण–लाघवेन द्रव्यतोऽल्पोपकरणरूपेण, भावतः–कषायतनुत्वरूपेण, अनुत्तरया क्षान्त्या–क्षमागुणेन, अनुत्तरया गुप्त्या–मनोवाक्कायगुप्त्या अनुत्तरया मुक्त्या निर्लोभतया, अनुत्तरेण सर्वसंयमसुचरिततपःफलनिर्वाणमार्गेण–सर्वसंयमस्य सर्वथा मनोवाक्कायानां निरोधस्य, तथा सुचरितस्य–आशंसादिदोषरहितस्य तपसो यत्फलं निर्वाणं–निर्वाणरूपं फलं तस्य मार्गेण आत्मानं भावयमानस्य अनन्तम्–निरवसानम् अनुत्तरम्–सर्वोत्कृष्टं कृत्स्नं–सकलं, प्रतिपूर्णं–निःशेषं, निरावरणम्–आवरणवर्जितम् निर्व्याघातम्–अव्याहतम् केवलं ज्ञानदर्शनं–केवल–सर्वोत्कृष्टत्वात् सहायवर्जितम् अतएव वर–श्रेष्ठं यद् ज्ञानदर्शनं तत्–केवलज्ञानं केवलदर्शनं च समुत्पत्स्यते। ततः खलु स भगवान् अर्हन् जिनः केवली भविष्यति, तथा सोऽनगारः सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य पर्यायं ज्ञास्यति, तद्यथा–आगतिं–देवलोका

निलय स्थान से–पशु पण्डकादि वर्जित वसति के सेवन से–अनुत्तर विहार से अनुत्तर आर्जव से–सरलता से–अनुत्तर अल्पोपकरणरूप द्रव्य से, एवं–कषाय तनूकरणरूप भाव से–अनुत्तर क्षमागुण से अनुत्तरगुप्ति से अनुत्तर निर्लोभतारूप मुक्ति से अनुत्तर सर्वसंयम के–मन वचन काय के निरोध के तथा–सुचरित–आशंसादि दोष रहित तप के निर्वाणरूप फल के मार्ग से आत्मा को भावित करने से अनन्त निर्जरा से उभयलोक की भावना रहित मोक्षमार्ग से आत्मा को भावित करने से अनुत्तर, सर्वोत्कृष्ट, कृत्स्न–सकल परिपूर्ण, आवरण वर्जित और–अव्याहत ऐसा सर्वोत्कृष्ट होने से सहायवर्जित, अतएव–श्रेष्ठ केवलज्ञान और–केवलदर्शन को प्राप्त करेंगे, तब–वे भगवान् अर्हन् जिन केवली हो जावेंगे, तथा सदेव मनुजासुर लोक की पर्याय के ज्ञाता हो जावेंगे, तथा वे आगति को–देवलोकादि से मनुष्य गति

આલયથી પશુપંડકાદિ વર્જિત વસતિકાના સેવનથી, અનુત્તર વિહારથી, અનુત્તર આર્જવથી સરલતાથી. અનુત્તર અલ્પોપકરણરૂપ દ્રવ્યથી અને કષાય તનૂકરણરૂપ ભાવથી. અનુત્તર ક્ષમાગુણથી અનુત્તર ગુપ્તિથી અનુત્તર નિર્લોભતારૂપ મુક્તિથી અનુત્તર સર્વ સંયમથી. મન વચન કાયના નિરોધના તેમજ સુચરિત આશંસાદિ દોષરહિત તેમના નિર્વાણરૂપ ફળના માર્ગથી આત્માને ભાવિત કરવાથી. અનંત નિરવસાન, અનુત્તર સર્વોત્કૃષ્ટ કૃત્સ્ન સકલ પ્રતિપૂર્ણ આવરણ વર્જિત અને અવ્યાહત એવા સર્વોત્કૃષ્ટ હોવાથી સહાય વર્જિત એવા શ્રેષ્ઠ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શનને પ્રાપ્ત કરશે. ત્યારે તે ભગવાન અર્હન જિન કેવલી થઈ જશે. તથા સદેવ મનુજાસુરલોકની

दिभ्यो मनुजगतावागमनं, गतिं-मनुष्यलोकाद् देवादिगतिषु गमनम्, स्थितिं-देवलोकादिष्ववस्थितिम्, च्यवनं-देवलोकादायुःक्षयेण पतनम्, उपपातं-देवनारकयोर्जन्म, तर्कं-विचारम्, कृतं विहितं, मनोमानसिकम्-मनस्येव व्यवस्थितं मानसिकं-मनोगतं विचारं, क्षयितं-क्षयं प्राप्तं, भुक्तं-खादितं, प्रतिसेवितं-भोग्यवस्तुजातसेवनम्, आविष्कर्म-प्रत्यक्षे कृतम्, रहःकर्म-एकान्ते कृतम्। एवं स सदेवासुरमनुजस्य सर्वान् पर्यायान् ज्ञास्यतीति। अत एव सोऽनगारः अरहा-नास्ति रहः-अप्रत्यक्षं किमपि यस्य स तथा-सर्वज्ञः, तथा अरहस्यभागी-सावद्याचरणवर्जितत्वेन न रहस्यम्-एकान्तं भजते यः स तथा=सुस्पष्टसकलाचारश्च सन् तस्मिंस्तस्मिन् काले मनोवाकाययोगवर्तमानानां सर्वलोके स्थितानां सर्व जीवानां सर्वभावान्-समस्तान् भावान् जानन् पश्यंश्च विहरिष्यति-विहारं करिष्यतीति। ॥सू० १७४॥

में आगमन को, गति को-मनुष्य लोक से देवादिगतियों में गमन को, स्थिति को-देवलोकादिकों में अवस्थिति को च्यवन को-देवलोक से आयुःक्षय के बाद चवन को, उपपात को-देवनारकों के जन्म को, तर्क को-विचार को कृत-किये हुवे को, मनोमानसिक को, मन में व्यवस्थित विचारधारा को, क्षपित को क्षयप्राप्त को, भुक्त को-खादित को, प्रतिसेवित को-भोग्यवस्तु जात के सेवन को, आविष्कर्म को-प्रत्यक्ष में किये हुवे को, रहःकर्म को-एकान्त में किये गये को-इस तरह से वे देव-मनुजाऽसुर सहित लोक की सब पर्यायों को जानेगे। अतएव-वे अनगार अरहाजिन की दृष्टि में अप्रत्यक्ष कुछ भी नहीं रहेगा. सर्वज्ञ अरहस्यभागी-सावद्याचरणवर्जित होने के कारण सुस्पष्ट सकलाचार के पालक बने हुवे, उस उस काल में मनोवाकाय योग में वर्तमान इसलोक सम्बन्धी सर्वजनों के सर्व भावों को जानते हुवे और-देखते हुवे विहार करेंगे।सू०१७४।

પર્યાયના જ્ઞાતા થશે ત્યારે તે આગતિને-દેવ લોકાદિથી મનુષ્ય ગતિમા આગમનને મનુષ્ય લોકમાથી દેવદિ ગતિઓમાં ગમનને સ્થિતિને-દેવલોકાદિકોમા અવસ્થિતિને ચ્યવનને દેવલોકથી આયુક્ષય પછી પતનને ઉપપાતને-દેવનારકોના જન્મને-તર્કને-વિચારને કૃત-કહેલાઓને. મનોમાનસિકને મનમાં વ્યવસ્થિત વિચારધારાને ક્ષપિતને-ક્ષય પ્રાપ્તને ભુકતને-ખાદિતને પ્રતિસેવિતને-ભોગ્યવસ્તુ જાતના સેવનને આવિષ્કર્મને-પ્રત્યક્ષમા કરેલા કર્મોને. રહઃકર્મને, એકાન્તમા આચરેલા કર્મોને આ પ્રમાણે તે દેવ મનુજ અસુર સહિત લોકની સર્વ પર્યાયો તે જાણશે તેથી તે અનગાર અરહાજીનની દષ્ટિમા અપ્રત્યક્ષ એવુ કઇ રહેશે નહિ તેમને સર્વ-પ્રત્યક્ષ થઇ જશે સર્વજ્ઞ અરહસ્યભાગી સાવદ્યાચરણ વર્જિત હોવાથી સુસ્પષ્ટ સકલાચારોના પાલક થયેલા કાળમા મનોવાકકાય યોગમા વર્તમાન ઇહલોક સબધી સર્વજનોના સર્વભાવોને જાણતા અને જોતાં વિહાર કરશે ॥૧૭૪॥

मूलम्—तए णं दढपइन्ने केवली एयारूवेण विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलिपरियायं पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ–जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे केसलोए बंभचेरवासे अण्हाणग अदंतवण अणुवहाणग भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेसिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ तज्जणाओ तालणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा बावीसं परीसहा उवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहिस्सइ, चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ । ॥ सू० १७५ ॥

छाया—ततः खलु दृढप्रतिज्ञः केवली एतद्रूपेण विहारेण विहरन् बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं पालयित्वा आत्मनः आयुःशेषम् आभुज्य बहूनि भक्तानि प्रत्याख्यास्यति बहूनि भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति यस्यार्थाय क्रियते नग्न

"तए णं दढपइण्णे केवली–" इत्यादि—

मूलार्थ–"तए णं" इसके बाद–"दढपइन्ने केवली–" वे दृढप्रतिज्ञ केवली–"एयारूवेण विहारेणं विहरमाणे–" इस प्रकार के विहार से विहार करते हुवे–"बहूइं वासाइं केवलिपरियायं–" अनेक वर्षों तक केवलीपर्याय को–"पाउणित्ता–" पालकर के–"अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता–" एवं अपने आयु के अन्त को जान करके–"बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ–" अपने अनेक भक्तों का प्रत्याख्यान करेंगे–"बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ–" अनेक भक्तो

"तए णं दढपइण्णे केवली" इत्यादि।

મૂલાર્થ—"तएणं" ત્યાર પછી "दढपइन्ने केवली" તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી "एगारूवेण विहारेण विहरमाणे" આ પ્રમાણે વિહાર કરતાં "बहूइं वासाइं केवलिपरियायं" ઘણાં વર્ષો સુધી કેવલી પર્યાયનું "पाउणित्ता" પાલન કરશે. "अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता" અને પોતાના આયુષ્યના અંત સમયને જાણીને "बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ" પોતાના ઘણા આહારોનું પ્રત્યાખ્યાન કરશે "बहूइं भत्ताइं अण

भावः केशलोचो ब्रह्मचर्यवासः अस्नानकम् अदन्तवर्णः अनुपानत्कम् भूमिशय्याः फलकशय्याः परगृहप्रवेशः लब्धोपलब्धानि मानापमानाः परेषांहीलनाः निन्दनाः खिसनाः तर्जनाः ताडनाः गर्हणाः उच्चावचाः विरूपरूपाः द्वाविंशतिः परीषहा उपसर्गाः ग्रामकण्टकाः अधिसह्यन्ते, तमर्थम् आराधयिष्यति, चरमैरुच्छ्वासनिःश्वासैः सेत्स्यति भोत्स्यते मोक्ष्यते परिनिर्वास्यति सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति॥सू. १७५॥

का अनशन द्वारा छेदन करेंगे-अर्थात् संथारा करेंगे "जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे केसलोए बंभचेरवासे-" इस प्रकार भक्तो का प्रत्याख्यान करके, और-अनशन द्वारा उनका छेदन करके वे दृढप्रतिज्ञ केवली जिस अर्थ को सिद्ध करने के लिये साधुजनों द्वारा नग्नभाव-अचेलत्व-परिमित-वस्त्रधारणत्व-केशलुञ्चन ब्रह्मचर्य-वास-" "अण्हाणगं, अदंतवणं-अणुवहाणगं, भूमिसेज्जाओ, फलहसेज्जाओ, पर-घरपवेसो, लद्धावलद्धाइं, माणावमाणाइं-" स्नान नहीं करना-दन्तधावन करने का त्याग करना-पग में पगरखां मोझा आदि को नहीं पहनना-भूमिपर शयन करना-प्रसंगवश पाट पर सोना-भिक्षादिके निमित्त पर घर में प्रवेश करना-लाभाऽलाभ-मानाऽपमान-"परेसिंहीलणाओ -निंदणाओ - खिंसणाओ - तज्जणाओ - ताडणाओ - गरहणाओ-उच्चावया - विरूवरूवा-" दूसरोंद्वाराकृत हीलना-निन्दना-खिसना तर्जना-ताडना-गर्हणा-अनुकूल प्रतिकूल नाना प्रकार के -"बावीसपरीसहा उवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति-" बाइस परीषह, तथा-उपसर्ग एवं-इन्द्रियों के प्रतिकूल कंटक के समान शब्दादिक सहन किये जाते हैं-" तमट्ठ आराहिस्सइ, चरमेहिं ऊसासनीसासेहिं

सणाए छेइस्सइ" घणा ભકતોનું અનશનો વડે છેદન કરશે. "जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे केसलोए, बंभचेरवासे" આ પ્રમાણે ભકતોનું પ્રત્યાખ્યાન કરીને અને અનશન દ્વારા તેમનું છેદન કરીને તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી જે અર્થની સિદ્ધિ માટે સાધુજનો વડે નગ્નભાવ અચેલત્વ પરિમિત વસ્ત્ર ધારત્વ, કેશલુંચન, બ્રહ્મચર્યવાસ, "अण्हाणगं अदंतवणं अणुवहाणगं, भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ, परघरपवेसो. लद्धावलद्धाइ, माणावमाणाइ-" સ્નાન રહિત રહેવું, દન્તધાવનનો ત્યાગ કરવો, પગરખાંઓ પહેરવા નહિ, ભૂમિપર શયન કરવું ફલક પર સુવું ભિક્ષાદિ માટે પર ઘરમાં જવું લાભ અલાભ, માન અપમાન-"परेसिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा" બીજાઓ વડે કરાયેલ હીલના-નિંદના, ખિંસના, તર્જના, તાડના ગર્હણા અનુકૂલ પ્રતિકૂલ અનેક જાતની "बावीसपरीसहा उवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति" બાવીશ પરીષહો તેમજ ઉપસર્ગ અને ઇન્દ્રિયોના પ્રતિકૂલ શબ્દ વગેરે સહન કરવામાં આવે છે, 'तमट्ठं आराहिस्सइ, चरमेहिं, ऊसासनीसासेहिं सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ

टीका—"सए णं" इत्यादि-ततः खलु दृढप्रतिज्ञः केवली एतद्रूपेण-पूर्वोक्तविधेन विहारेण विहरन्-विचरन् बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं पालयित्वा आत्मनः-स्वस्य, आयुःशेषम्-आयुषोऽवसानम् आभुज्य-परिज्ञाय बहूनि भक्तानि प्रत्याख्यास्यति, ततो बहूनि भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति। इत्थं भक्तानि प्रत्याख्याय अनशनेन छित्वा च स दृढप्रतिज्ञः केवली, यस्यार्थाय-यन्मोक्षनिमित्तं क्रियते साधुभिः-नग्नभावः-अचेलत्वं-परिमितवस्त्रधारित्वं केशलोचः-स्वपरहस्तेन केशोत्पाटनं, ब्रह्मचर्यवासः-ब्रह्मचर्यधारित्वम्, अस्नानकम्-स्नानाभावः अदन्तवर्णः-दन्तोज्ज्वलीकरणाभावः, अनुपानत्कम्-उपानत्परिधानाभावः,

---

सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ-" उस मोक्षरूपी अर्थ की आराधना करेंगे और-आराधना करके अन्तिमश्वासोच्छ्वास से सिद्ध हो जावेंगे, बुद्ध हो जावेंगे, मुक्त हो जावेंगे, परिनिर्वात शिथिलीभूत हो जावेंगे, एवं समस्त दुःखों का अन्त करेंगे।

टीकार्थ-इस प्रकार के विहार से विचरते हुवे वे दृढप्रतिज्ञ केवली अनेक वर्षों तक केवली पर्याय में विराजमान रहेंगे। अब उनके आयुकर्मका पूर्ण रूप से अन्त होने का समय आ जावेगा, तब-वे इस बात को जानकर अनेक भक्तों का प्रत्याख्यान करेंगे, अनशन द्वारा अनेक भक्तों का छेदन कर देंगे। इस प्रकार भक्त प्रत्याख्यान करके-एवं-अनशन द्वारा उसका छेदन करके, वे दृढप्रतिज्ञ केवली जिसके लिये साधुजन नग्नभाव धारण करते हैं। अर्थात्-परिमित वस्त्रों को रखते हैं-अपने हाथों से केशों का लुञ्चन करते हैं पूर्णरूप से ब्रह्मचर्यावस्था में रहते हैं मनवचनकाय से स्नान करने का परित्याग करते हैं-दन्तधावन का सर्वथा परिहार करते हैं, पगरखे-मोजा का पहिरना

परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ' ते અર્થની આરાધના કરીને અંતિમ શ્વાસોચ્છ્વાસથી સિદ્ધ થઈ જશે. બુદ્ધ થઈ જશે. મુક્ત થઈ જશે. પરિનિર્વાતશીતલી ભૂત થઈ જશે. અને સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે.

ટીકાર્થ—આ પ્રમાણે વિહરતા દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી ઘણાં વર્ષો સુધી કેવલી પર્યાયમાં વિરાજમાન રહેશે. જ્યારે તેમના આયુષ્યની સમાપ્તિનો સમય આવશે ત્યારે તેઓ આ વાત જાણીને અનેક ભક્તોનું પ્રત્યાખ્યાન કરશે અનશન વડે ઘણાં ભક્તોનું છેદન કરશે. આ પ્રમાણે ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કરીને અને અનશન વડે તેમનું છેદન કરીને તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી જેના માટે સાધુજન નગ્નભાવ ધારણ કરે છે એટલે કે પરિમિત વસ્ત્રો રાખે છે પોતાના હાથો વડે કેશલુંચન કરે છે પૂર્ણરૂપથી બ્રહ્મચર્યાવસ્થામાં રહે છે મન વચન. કાયથી સ્નાન કરવાનો પરીત્યાગ કરે છે દંતધાવનનો સર્વથા

उपलक्षणात् शकटाश्वादि वाहनराहित्यम्, भूमिशय्याः-भूमौ शयनानि, फलकशय्याः-फलकेषु शयनानि, आहाराद्यर्थं परगृहप्रवेशश्च । 'भूमिशय्याः-फलकशय्याः' इति पदद्वये 'क्रियते' इति बहुत्वेन विपरिणमय्य समन्वेतव्यमिति । तथा-तैः साधुभिः लब्धापलब्धानि-लाभालाभाः, मानापमानाः-सम्मानतिरस्काराः, तया-परेषाम्-अन्येषाम्-परकृता इत्यर्थः, हीलनाः-मर्मोद्घाटनानि, निन्दनाः-निन्दाः-जुगुप्साभाषणरूपाः, खिंसना -धिक् त्वां मुण्ड !' इत्यादिरूपाः, तर्जनाः- अङ्गुलि-प्रदर्शन-पूर्वकं 'ज्ञास्यसि रे जाल्म !' इत्यादिकवचनरूपाः, गर्हणाः-'चौरोऽयं लम्पटोऽयम्' इत्यादिवचनरूपाः-तथा-उच्चावचाः-अनुकूलप्रतिकूलाः, विरूपरूपाः-नाना प्रकाराः, द्वाविंशतिः-द्वाविंशतिसंख्यकाः परीषहाः-क्षुधादिरूपाः, उपसर्गाः-

छोड देते हैं । उपलक्षण से गाडी की सवारी करना, घोडे आदि वाहन पर बैठना आदि-आदि को छोड देते हैं, भूमि पर शयन करते हैं, अथवा काठ के पट्टियों-तख्था आदिपर शयन करते हैं, आहार आदि प्रयोजन से परघर प्रवेश करते हैं, लाभाऽलाभ में जो समान भाव रखते हैं, मानाऽपमान की जो थोडी सी भी अपेक्षा नहीं रखते हैं । तथा दूसरों द्वारा कृत हीलनाओ को-मर्मोद्घाटन वचनों को-निन्दाओ को जुगुप्सा भाषणरूप वचनों को-खिंसनाओ को-"हे मुण्ड-! तुझे धिक्कार" इत्यादिरूप वचनो को तर्जनाओं को, अङ्गुली प्रदर्शनपूर्वक "हे जाल्म ! तुझे खबर पडेगी-" इत्यादि रूप वचनों को-गर्हणाओं को, "यह चोर है, यह-लम्पट है-" इत्यादिरूप वचनों को तथा-अनुकूल प्रतिकूल नाना प्रकार के क्षुधादिरूप २२ बाईस-परीषहों को, तथा देवादिकृत उपसर्गों को, एवं-ग्रामकण्टकों को-ग्रामों को-इन्द्रिय समूह

ત્યાગ કરે છે પગરખા મોજા પહેરતા નથી ઉપલક્ષણથી ગાડીની સવારી કરવી ઘોડા વગેરે વાહન પર બેસવુ વગેરેને ત્યજી દે છે. ભૂમિ પર શયન કરે છે લાકડાના પાટિયા વગેરે પર સૂવે છે આહાર આદિ પ્રયોજનોને લીધે જ પરઘરમા પ્રવેશ કરે છે. લાભ અલાભમા. સમાનભાવ રાખે છે માન અપમાનની જે લગીરે દરકાર રાખતા નથી. તેમજ બીજાઓ દ્વારા કરાયેલ હીલનાઓને. મર્મોદ્ઘાટક વચનોને. નિંદાઓને જુગુપ્સા ભાષણરૂપ વચનોને ખિંસનાઓને હે મુણ્ડ તને ધિક્કાર છે !" વગેરે રૂપ વચનોને તર્જનાઓને અંગુલી પ્રદર્શનપૂર્વક હે જાલ્મ ! પછી તને ખબર ખબર પડશે" વગેરે રૂપ વચનોને. ગર્હણાઓને. 'આ ચોર છે આ લંપટ છે" ઇત્યાદિરૂપ વચનોને તેમજ અનુકૂલ પ્રતિકૂલ નાના પ્રકારની ક્ષુધાદિરૂપ ૨૨ પ્રકારના પરિષહોને તથા દેવાદિકૃત ઉપદ્રવોને અને ગ્રામકંટકોને ગ્રામોને ઇન્દ્રિયસમૂહને દુઃખોત્પાદક

त्यादिरूपास्तया, ग्रामकण्टका —ग्राम इन्द्रियसमूहस्तस्य कण्टका इव कण्टकाः इन्द्रियप्रतिकूलशब्दादयः, दुःखोत्पादकत्वात् मुक्तिमार्गे विघ्नहेतुत्वाद्वा कण्टकत्वम् क्षुद्रजनकृताऽऽलापा वा तस्य कृते अधिसह्यन्ते, तम्-मोक्षरूपम् अर्थम् आराधयिष्यति, आराध्य चरमैः अन्तिमैः उच्छ्वासनिश्वासैः सेत्स्यति, सकलकार्यकारितया सिद्धो भविष्यति, भोत्स्यते—विमलकेवलज्ञानालोकेन सकललोकालोकं ज्ञास्यति मोक्ष्यते—सकलकर्मभ्यो मुक्तो भविष्यति-परिनिर्वास्यति समस्तकर्मकृतविकाररहितत्वेन स्वस्थो भविष्यति सर्वदुःखानाम्—शरीरमनःसम्बन्धिसमस्तक्लेशानाम् अन्तं नाशं करिष्यति—अव्याबाधसुखभाग् भविष्यतीत्यर्थः । ॥सू० १७५॥

शास्त्रमुपसंहरन्नाह—

मूलम्—सेव भते ! सेव भते ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । ॥सू० १७६॥

छाया—तदेव भदन्त ! तदेव भदन्त ! इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयमानो विहरति ॥सू० १७६॥

का दुःखोत्पादक होने से एवं मुक्तिमार्ग में विघ्न के हेतुभूत होने से कण्टक रूप प्रतिकूल शब्दादिकों का, अथवा—क्षुद्रजनों के कुआलापों का, जिसके निमित्त सहते हैं उस मोक्षरूप अर्थ की आराधना करके फिर वे अन्तिम श्वासोच्छ्वास से सफल कार्य करने वाले कृतकृत्य हो जाने से सिद्ध हो जावेंगे, विमल केवल ज्ञानालोक से सकल लोकालोक को जानने वाले हो जावेंगे, समस्त कर्मों से छूट जावेंगे, स्वस्थ हो जायेंगे, और—शरीरसम्बन्धी एवं मन सम्बन्धी समस्त क्लेशों का नाश करेंगे, अर्थात्—अव्याबाधसुख के भोक्ता बनेंगे ॥ सू० १७५ ॥

હોવાથી અને મુક્તિમાર્ગમાં વિઘ્નના હેતુભૂત હોવાથી અને કંટકરૂપ પ્રતિકૂળ શબ્દાદિકોને અથવા ક્ષુદ્રજનોના કુઆલાપોને જેના માટે સહન કરે છે તે મોક્ષરૂપ અર્થની આરાધના કરશે. આરાધના કરીને પછી તેઓ અંતિમ શ્વાસોચ્છ્વાસથી સકલ કર્મોને ક્ષય કરી દેવાથી કૃતકૃત્ય થઈ જવાથી સિદ્ધ થઈ જશે. વિમલ કેવલજ્ઞાનાલોકથી સકલ લોકાલોકના જ્ઞાતા થઈ જશે સમસ્ત કર્મોથી મુક્ત થઈ જશે સ્વસ્થ થઈ જશે અને શરીર સંબંધી અને મન સંબંધી સમસ્ત ક્લેશોનો નાશ કરશે અર્થાત્ તેઓ અવ્યાબાધ સુખ ભોક્તા થઈ જશે. ॥સૂ. ૧૭૫॥

पुरे वीरमगामेऽस्मिन् सङ्घप्रार्थनया ऽप्यहम् ।
राजप्रश्नीयसूत्रस्य टीकामेनां सुबोधिनीम् ॥ ३ ॥
वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयायां गुरोर्दिने ।
त्रयोदशाधिके वर्षे द्विसहस्रे च वैक्रमे ॥ ४ ॥
अत्रत्यः सद्यो मिलत्समुदयः श्री जैनसङ्घो मिथः-
प्रेमाऽभक्तहृदः सदा निजकृतौ धर्मे च बद्धाऽऽदरः ॥
शुद्धस्थानकवासिधर्ममहिमप्रोद्भावकः श्रावका-
ऽऽचारैः ख्यातिमुपागतो विजयते सम्यक्त्वसंशोभिनः ॥५॥

"प्रशस्ति का अर्थ"

गुजरात प्रान्त में वीरमगाम नामका शहर है, यहां के मार्ग दूकानों एवं श्रावकजनों के सुन्दर-सुन्दर घरों से युक्त हैं। एक गाम से दूसरे गाम में विहार करते हुवे छह मुनियों के साथ-यहां संयम यात्रा का निर्वाह करने के लिये गतवर्ष के वैशाख मास में अर्थात् वि.संवत् २०१२ के वैशाखमें आये। यहां के श्रीसंघ की यहीं पर विराजने की विनन्ती से यहां मैंने राजप्रश्नीय सूत्र की इस सुबोधिनी टीका को सम्पूर्ण किया. । यह समय वैशाख शुक्ला अक्षय तृतीया गुरुवार विक्रम संवत् २०१३ का था. । यहां का जैन श्रीसंघ शुद्ध स्थानकवासी धर्म में तत्पर है, धर्म के प्रति इसके हृदय से बहुत अधिक आदरभाव है, और-यह श्री संघ प्रेमालु है, तथा शुद्ध स्थानकवासी धर्म का दिपाने वाला है. हृदय में इसके अति अधिक दयाभाव बना रहता है। श्रावक सम्बन्धी आचार विचार से यह प्रसिद्धि को प्राप्त कर लिया है, जैनधर्म के प्रति अधिक

પ્રશસ્તિનો અર્થ:—

ગુજરાત પ્રાંતમા વીરમગામ નામક એક નગર છે આ નગરની શેરીઓ અને દુકાનો શ્રાવકજનોના ભવ્ય મકાનોથી યુકત છે એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા કરતા છ મુનિઓની સાથે વૈશાખ માસમા અહીં સંયમયાત્રાના નિર્વાહ માટે આવ્યા અહીં-ના "શ્રીસંઘે" આપશ્રીને અહીંજ બિરાજવાની વિનંતી કરી તો તે સમયમા જ મેં ત્યા રહીને રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર'ની આ સુબોધિની ટીકા સંપૂર્ણ કરી આ સમય વૈશાખ શુકલ અક્ષય તૃતીયા વિક્રમ સંવત્ ૨૦૧૩ ગુરૂવારનો હતો અહીંનો 'જૈન શ્રીસંઘ' શુદ્ધ સ્થાનકવાસી છે, ધર્મ પ્રત્યે એના હૃદયમા ખૂબજ આદરભાવ છે આ શ્રીસંઘ' પ્રેમળ છે તેમજ શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મને દીપાવનાર છે એના હૃદયમા અત્યધિક દયાભાવ નિવાસ કરે છે શ્રાવક સંબંધી આચારવિચારોથી આ જગત્માં પ્રસિદ્ધ છે જૈનધર્મ પ્રત્યે અધિકાધિક અનુરાગી હોવા બદલ સમ્યકત્વથી સુશોભિત

टीका—"सेव भंते" इत्यादि—हे भदन्त ! यद् भवद्भिरुक्तं तद् एवम् इत्थम्, यास्तविकमिति यावत्, सत्यं भदन्त ! इति विपत्सा भगवद्वचने श्रद्धातिशय प्रकटयति, इति—अनेन प्रकारेण उक्त्वा भगवान् गौतम श्रमण भगवन्तं महावीर वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयमानो विहरतीति ॥सू० १७६॥

श्री

अथ राजप्रश्नीयसूत्रस्य प्रशस्तिः—

गुर्जराभिधदेशेऽस्मिन् पुरं श्रीरमगामकम् ।
आरण-श्राव-श्रेणिसौधमण्डितवीथिकम् ॥ १ ॥
ग्रामाद् ग्रामान्तरं पद्भिः साधुभिर्विहरन्निह ।
निर्णेतुं साधर्मी यात्रां पश्चाशास्त्र आगमम् ॥ २ ॥

'सेवं भंते ! सेवं भंते !' भगवं गोयमे—"इत्यादि—

मूलार्थ— सेवं भंते ! सेवं भंते !' हे भदन्त ! जैसा आपने कहा है वह वैसा ही है, अर्थात्—आपने जो अपनी दिव्यध्वनि द्वारा प्रकट किया है वह वास्तविक ही है सर्वथा सत्य ही है । इस प्रकार कहकर—"भगवं गोयमे—" भगवान् गौतमने 'समणं भगवं वंदइ नमसइ—" श्रमण भगवान् को वन्दना की गुणस्तुति की, और—उन्हें नमस्कार किया—"वंदित्ता नमंसित्ता संजमेण तपसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ—" वन्दना नमस्कार कर फिर—वे संयम से और—तप से आत्मा को भावित करते हुवे अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

टीकार्थ—स्पष्ट है—'सेवं भंते ! सेवं भंते !" ऐसा जो दो बार कहा गया है वह भगवद्वचन में श्रद्धातिशय प्रकट करने के लिए कहा गया है ।सू०१७६

सेवं भंते ! सेवं भंते ! भगवं गोयमे इत्यादि ।

મૂલાર્થ—"સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે !" હે ભદંત ! જે પ્રમાણે આપશ્રીએ કહ્યું છે તે તેમજ છે એટલે કે આપશ્રીએ પોતાની દિવ્યધ્વનિદ્વારા જે કંઈ કહ્યું છે તે વાસ્તવિક જ છે સર્વથા સત્ય છે આ પ્રમાણે કહીને "ભગવં ગોયમે" ભગવાન ગૌતમે સમણં ભગવં વંદઇ નમંસઇ' શ્રમણ ભગવાનને વંદના કરી, ગુણ સ્તુતિ કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા "વંદિત્તા નમંસિત્તા સંજમેણ તપસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરઇ" વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી આત્માને ભાવિત કરતાં પોતાના સ્થાને બિરાજમાન થઈ ગયા

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે "સેવં ભંતે ! સેવં ભંતે !" આમ જ બે વખત કહેવામાં આવ્યું છે તે ભગવદ્ વચનમાં અતિ શ્રદ્ધા પ્રગટ કરવા માટે છે. ॥ ૧૭૬ ॥

देवाधिदेवे भुवनैकनाथे तीर्थङ्करे तत्कथिते च धर्मे ।
श्रद्धां दधानं प्रतिवेश्म भाति सुश्राविकाश्रावकवृन्दमत्र ॥६॥
आचारपूताः समदृष्टिभूता जैनागमाऽऽचारनिदर्शरूपाः ॥
अस्मिन् पुरे सन्ति मृदुस्वाभावा जैनाः समस्ता गुरुभक्तिभाजः॥७॥

इतिश्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थ-निर्मापक-वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति-कोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुर-राजगुरु - बालब्रह्मचारि - जैनशास्त्राचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां सुबोधिन्याख्यायां व्याख्यायां "राजप्रश्नीयसूत्रम्" सम्पूर्णम्

अनुरागी होने के कारण यह सम्यक्त्व से सुशोभित है. । भुवनैकनाथ देवाधिदेव तीर्थकर के ऊपर, एवं-तीर्थङ्कर प्रतिपादित धर्म के ऊपर श्रद्धाशील श्रावक-एवं-श्राविकाएं हरएक घर में यहां हैं। इन सवों का आचार-विचार जैन-मर्यादा के अनुरूप है दूसरों के लिये ये-इस विषय में सर्वथा अनुकरनीय हैं। इनका स्वभाव मृदु है. यहां के श्रावको काचित्त गुरु की धर्मभक्ति में सदा प्रेमयुक्त बना रहता है. इन्ही सब कारणों से ये समदृष्टि हैं॥

श्री जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत
राजप्रश्नीयसूत्र की 'सुबोधिनी' व्याख्या समाप्त ॥
॥ राजप्रश्नीयसूत्र समाप्त ॥

છે ભુવનૈકનાથ—દેવાધિદેવ તીર્થંકર પર અને તીર્થંકર પ્રતિપાદિત ધર્મ પર શ્રદ્ધાશીલ શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ અહીં દરેકેદરેક ઘરમા નિવાસ કરે છે આ સર્વના આચાર-વિચારો જૈન મર્યાદાનુરૂપ છે બીજાઓના માટે એઓ આ બાબતમા સંપૂર્ણપણે અનુકરણીય છે એમનો સ્વભાવ મૃદુ છે અહીના શ્રાવકોનુ ચિત્ત ગુરૂની ધર્મભક્તિમા સદા પ્રેમયુકત બની રહે છે આ બધા કારણોથી એ બધા સમદૃષ્ટિ છે ”

શ્રી જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર-પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત
રાજપ્રશ્નીયસૂત્રની સુબોધિની વ્યાખ્યા સમાપ્ત

परुद्वैशाखो इति गतवर्षवैशाखे इत्यर्थः